पिता–पुत्र

पाचव पुत्र को

बापू के आशीर्वाद

पांचवें पुत्र को बापू के आशीर्वाद

महात्मा गांधी का जमनालाल बजाज व उनके परिवार के अन्य लोगों के साथ हुआ पत्र-व्यवहार

संपादक
काका कालेलकर

प्रस्तावना
जवाहरलाल नेहरू

•

१९५३

मुख्य विक्रेता
सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली

प्रकाशक का निवेदन

पूज्य गाधीजीके श्री जमनालाल बजाज तथा उनके परिवारके लोगोके साथ हुए पत्र-व्यवहारके इस सग्रहको हिन्दी-जनताके सामने रखते हुए हमें बडी प्रसन्नता हो रही है। जमनालालजी गाधीजीके पाचवे पुत्र बने थे। इस दृष्टिसे इस सग्रहमे अपने पुत्र-पौत्रोंके प्रति गाधीजीकी अनुपम वत्सलताके दर्शन होते है।

पूज्य काकासाहबने इसका सपादन करके तथा बीच-बीचमें सलाह आदि देकर हमारा जो मार्गदर्शन किया उसके लिए हम कृतज्ञ है।

पूज्य गाधीजीके पत्रो तथा लेखो आदिको प्रकाशित करनेकी स्वीकृति देनेके लिए नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद, के भी हम आभारी है।

प्रस्तुत पुस्तक तीन भागोमे विभक्त है। पहले भागमें गाधीजी व जमनालालजीका पत्र-व्यवहार है। इसमे पूज्य बा, श्री महादेवभाई देसाई तथा श्रीमती जानकीदेवी बजाजके पत्र भी ले लिये हैं। दूसरे भागमे बजाज परिवारके अन्य लोगोको गाधीजीने जो पत्र लिखे है उनका सग्रह दिया गया है। तीसरे भागमे गाधीजी व जमनालालजी सबधित पत्र व अन्य सामग्री दी गई है।

अतमे परिशिष्ट है। इसके चार भाग है। पहले परिशिष्टमें मूल पुस्तकके भाग १ और २ के चुने हुए पत्रोका हिन्दी अनुवाद है। मूल पुस्तकमें जिन पत्रोकी सख्याके नीचे 'अ' सकेत दिया है सिर्फ उन्ही पत्रोका अनुवाद दिया गया है। जमनालालजी रोज डायरी लिखते थे। उसमे वे दिनभरके काम तथा अपने मनोभावोका वर्णन लिखा करते थे। गाधीजी-सबधी उल्लेखोसे

ये डायरिया भरी पडी है। शुरूमे सन् १९३२ के अत तककी डायरिया खो गई है। उसके बादसे उनकी मृत्युसे एक दिन पहले तककी डायरिया सुरक्षित है। परिशिष्टके दूसरे भागमे उन डायरियोमेंसे तथा परिवार वालोंको लिखे पत्रोमेंसे गाधीजी-सबधी चुने हुए अश तथा विचार उद्धृत किये गये है। परिशिष्टके तीसरे भागमे "हिन्दी नवजीवन" "यग इडिया" "हरिजन सेवक" तथा "हरिजन" पत्रोंसे जमना-लालजीके सबधमे समय-समय पर लिखे गये लेखो और सस्मरणोमेंसे चुने हुए अश दिये गये है।

गाधीजीने जो पत्र स्वय अपने हाथो लिखे है उनकी भाषा बिना कुछ फरक किए ज्यो की त्यो रखी गई है। ऐसे पत्रोकी असमरूशा परिशिष्ट ४ मे दी गई है।

सपादकके वक्तव्यके बाद "मार्गदर्शककी खोज" तथा "पाचवे पुत्रको" ये दो शीर्षक आप पायेगे। पहलेमे जमनालालजी मार्गदर्शककी खोजमे बापू-तक कैसे पहुचे यह उन्हीके शब्दोमे दिया गया है। दूसरेमे बापूने अपने 'पाचवे पुत्र' के प्रति समय-समय पर जो उद्गार व्यक्त किये है उनमेंसे कुछ उद्धरण दिये गये है।

"परिचय" मे गाधीजी और जमनालालजीके 'परिवार' में से उन्ही लोगोका परिचय दिया है जिनके नाम पत्र-व्यवहार हुआ है।

सारा पत्र-व्यवहार मूलमे जिस भाषामे लिखा गया है उसी भाषामें दिया गया है। गुजराती पत्र नागरी लिपिमें छापे गये है। हरेक भागमे पत्र आदि तारीखवार दिये गये है।

पुस्तकमे कही कही विशेष पत्रोंके ब्लाक बनाकर भी दिये गये है।

जिन पत्रोके नीचे हस्ताक्षर ब्लाकमे दिये गये है, उनकी मूल प्रतिया मौजूद है। जिनको नकल परसे लिया गया है उनके नीचे लेखकका नाम दे दिया गया है।

पत्रोके बीचमें जहा तारक चिह्न (* * *) आये है उसका अर्थ है कि वहा सपादकने कुछ अश छोड दिया है। अक्षर अस्पष्ट हो जाने या

प्रकाशक का निवेदन

नष्ट हो जानेसे जो अश पढा नही जाता है, वहा विन्दु चिह्न (   ) दिये गये है। कई पत्रोमें पूरी तारीखें व स्थान नही है। उनको खोजकर या सदर्भसे जानकर कौसमे दे दिये है।

इस सग्रहमे वे ही पत्र दिये जा सके है जो हमे प्राप्त हो सके है। जमनालालजी-सबधी गाधीजीके तथा गाधीजी-सबधी जमनालालजीके अनेक पत्र मित्रो एव सबधियोके पास होगे। उन सबसे हमारी प्रार्थना है कि उनके पास इस तरहके जो भी पत्र हो उनको या उनकी नकले हमे भेजनेकी कृपा करे ताकि दूसरे सस्करणमें उनका उपयोग किया जा सके।

इस सग्रहको तैयार करनेमे जिन भाइयोने प्रेमपूर्वक हमें सहायता प्रदान की है उनके हम हृदयसे आभारी है। इन सहायकोमे सर्वश्री हरिभाऊ उपाध्याय, नीलकठ मशरूवाला, यू एस मोहन राव, के वी कामत, चिमनलाल शाह तथा रामलाल परीख मुख्य है।

मार्तण्ड उपाध्याय

प्रस्तावना

सन् १९१९ ईसवीमे भारतके लबे इतिहासमे एक नये युगकी शुरूआत हुई। इससे पहले ही भारतमे ही नही बल्कि विदेशोमे भी गाधीजी काफी प्रख्यात हो चुके थे। पर सन् १९१९ मे तो वे एक तेज सितारेकी तरह भारतके विशाल रगमच पर चमक उठे। लाखो लोगोकी श्रद्धाका केन्द्र तो वे बन ही चुके थे, साथ ही इस समय तक जुदा-जुदा प्रवृत्तियो वाले श्रद्धालु लोगोका एक बडा मजमा भी उनके आसपास आ जुटा था।

हमारा यह जमघट बडा अजीबो-गरीब था। हमलोग एक दूसरेसे बिलकुल अलग थे, हमारी पृष्ठ-भूमिया अलग थी, जीवनप्रणालिया अलग थी, विचारधारायें भी अलग थी। लेकिन इसके बावजूद हममे कुछ-न-कुछ समानता जरूर रही होगी जो हमे उस अद्भुत विभूतिकी ओर बरबस खीचती थी।

उस समय गाधीजीके नजदीक आने और उनके गिने-चुने आत्मीय जनोमें निकटका स्थान पाने वालोमे जमनालाल बजाज एक थे। जहा तक मेरा खयाल है उनसे मेरी पहली मुलाकात सन् १९२० के काग्रेस अधिवेशनमे हुई थी। गाधीजीके नेतृत्वमे चल रहे राष्ट्रीय आन्दोलनमे सहयोगियोके तौर पर काम करते हुए हम अकसर मिलते रहे, और हमारा परिचय काफी घनिष्ठ होता गया। स्वभावत हम एक दूसरेसे बहुत भिन्न थे, और मुमकिन है कि दूसरी परिस्थितियोमें यह घनिष्टता

गाधीजी व जमनालालजीका पत्र-व्यवहार अग्रेजीमें *To a Gandhian Capitalist* नामसे प्रकाशित हो चुका है। यह प्रस्तावना वहासे अनुवाद करके ली गई है।

पैदा होनेका मौका ही न आता। मेरे खयालसे हमने एक-दूसरेकी कीमत समझी और हमारा आपसी प्रेम और आदर आहिस्ते-आहिस्ते बढता ही गया। जमनालालजीके प्रति निश्चय ही मेरा आदर बढ गया और प्रेमवश मैं उनको एक निकटका पारिवारिक व्यक्ति समझने लगा। हमारी विचार प्रणालिया भिन्न होनेके बावजूद मै अपने घरेलू तथा सार्वजनिक मामलोमे सलाह लेने अकसर उनके पास जाया करता था। क्योंकि मैने यह देख लिया था कि वह बडे ध्येयनिष्ठ और व्यवहारकुशल व्यक्ति थे।

हम दोनो अपने अपने दृष्टिकोणमे गाधीजीको श्रेष्ठ तथा महान व्यक्ति मानते थे। उनके नेतृत्वमे उनके साथ ही हम दोनो भी एक ही ध्येयकी साधनामे बढते गये। जिस महान आन्दोलनमें हमने हिस्सा लिया उसके कई पहलू थे और सभी ढगके लोग उसकी ओर आकर्षित हुए। उसमे भारतकी अनगिनत जनता थी, बुद्धिजीवी और समाजवादी, जमीनदार और किसान, पूजीपति और मजदूर, व्यापारी और कारीगर, सभी थे। एक अजीब मेला था। सबका समावेश करनेवाले उस आन्दोलनमे हम सबने अपना अपना छोटा-बडा हिस्सा अदा किया। यह कहना मुनासिब होगा कि जमनालालजी इस आन्दोलनमें एक विशेष और अनोखी प्रतिभा लेकर आये। हममेंसे लगभग सभी लोग औरोकी तरह ही थे। हमारे बिना शायद काम चल भी जाता। पर जमनालालजी तो अपने ढगके एक ही थे। उनके जैसे और लोग इस आन्दोलनमें उनकीसी निष्ठाके साथ शरीक नही हुए थे। इस वजहसे वे हमारे लिए और भी कीमती थे। सत्यके प्रति निष्ठा और कर्तव्य-परायणताके कारण वे हमारे प्रिय बन गये थे।

जब भरी जवानीमे वे हमसे जुदा हो गये, हम सबको जबर्दस्त सदमा पहुचा। उनकी जगह लेनेवाला कोई नही था। मुझे निहायत खुशी है कि उनके पत्रोका यह सग्रह प्रकाशित हो रहा है। इससे इस बातका कुछ पता लगता है कि जमनालालजी क्या थे। साथ ही गाधीजीके जीवन और कार्यके अनेक पहलुओमेंसे एकको कुछ झलक भी दिखाई देती है।

पहलगाव (कश्मीर),
२६ जून १९५१

जवाहरलाल नेहरू

अनोखा संबंध

पूज्य गांधीजी और जमनालालजीका संबंध पूरे पच्चीस सालका और अत्यन्त घनिष्ट था। हम यह भी कह सकते हैं कि एक तरहसे अद्वितीय था। बचपनमें उनके जन्मदाताने जमनालालजीको गोद दे दिया था। प्रौढ अवस्थामें उन्होंने स्वयं अपनेको महात्मा गांधीजीकी गोदमें अर्पण किया और महात्माजीने उनको अपने पांचवें पुत्रके तौर पर स्वीकार किया। जमनालालजीने न केवल अपने हृदयको, अपनी संपत्तिको और सेवा-शक्तिको गांधीजीके चरणोंमें अर्पित किया, बल्कि जहां तक हो सका, उन्होंने अपना सारा परिवार ही गांधीजीके हाथोंमें सौंप दिया। गांधीजीने भी न केवल जमनालालजीकी, किन्तु उनके सारे परिवारकी, व्यावहारिक तथा आध्यात्मिक चिन्ता अपने सिर पर ले ली। सचमुच यह संबंध अनोखा था।

गांधीजी आदर्शवादी महात्मा होते हुए भी व्यवहार-कुशल नेता थे। जमनालालजी अत्यन्त व्यवहार-कुशल व्यापारी और समाज-सेवक होते हुए भी आदर्श-परायण थे। इसीलिए इन दोनों अद्भुत बनियोंका संबंध इतना घनिष्ट हो सका।

बचपनमें पिताका कुछ कडा रुख देखते ही धन-संपत्तिका सब मोह छोडनेकी तेजस्विता जिन्होंने बताई थी, उन्होंने लगातार पचीस वर्ष तक अपनी बुद्धि-शक्ति, हृदय-शक्ति, और शारीरिक-शक्ति गांधी-कार्यमें लगाकर अपनी आत्मनिवेदनकी, स्वात्मार्पणकी श्रद्धा व निष्ठा भी बताई। ऐसे शिष्यको, और उनके परिवारके व्यक्तियोंको भी, गांधीजीने जो अनेक पत्र लिखे थे, उनका यह संग्रह है।

इन पाच-छ सौ पत्रोको पढते और उनमे अवगाहन करते ऐसा अनुभव होता है, मानो हम पवित्र गगाजीके प्रवाहमे स्नान और पान कर रहे हैं। क्षण-क्षण हम उसकी पावनता और प्रसन्नता अनुभव करते है और पढते-पढते उसमेंसे नया बल भी मिलता है। सत-चरित्रके श्रवणका जो माहात्म्य बताया है उससे भी बढकर सत-सवादोका होना चाहिये। और ये पत्र तो मानो नित्यके लिखित सवाद ही है। इन पत्रोके साथ सबध रखनेवालोमेसे आज श्री महादेवभाई नही है, राष्ट्रमाता कस्तूरबा नही है, इन पत्रोके प्रधान लेखक राष्ट्र-हृदयके नेता महात्मा गाधी भी नही है और उनके पचम पुत्र, जो अपनी साधनाके जरिये उनके उत्तम पुत्र हुए थे, वे भी नही है। किन्तु इन चारोके साधक-जीवनकी प्रेरणा हमारे पास है, जो इन पत्रोके अन्दर प्रतिबिम्बित हुई है, और वह दीर्घकाल तक दुनियाके अनेक देशोके और अनेक जमानोके श्रेयार्थियोको कृतार्थ करती रहेगी।

महात्माजीके जीवनके हम तीन प्रधान अग मान सकते है। एक उनका राजनैतिक जीवन, जिसमे प्रधानतया सत्याग्रहकी आत्मशक्ति और बलिदानकी दिव्य-शक्ति प्रकट होती है। दूसरा उनका रचनात्मक जीवन, जिसके जरिये वे हिन्द जैसे एक गिरे हुए विस्खलित, निराश और अध राष्ट्रको नवजीवनकी दीक्षा देते रहे और मानो धीरे-धीरे उसकी सब हड्डिया इकट्ठी करके उसमे प्राण फूकते गये। रचनात्मक कार्य केवल सस्था-रचनाका नही, राष्ट्र-निर्माणका कार्य था। रचनात्मक सस्थाओके द्वारा असख्य कार्यकर्त्ता-ओको नये आदर्शकी दीक्षा देना, कदम-कदम पर उनमे शुद्ध दृष्टि और अदम्य शक्तिका विकास करना, और उनके द्वारा सारे राष्ट्रमे नया चारित्र्य और नया तेज पैदा करना, यह कोई सामान्य काम नही था।

महात्माजीके जीवनका तीसरा पहलू है, असख्य व्यक्तियोके जीवनमे, उनके व्यक्तिगत सवालोमे, पारिवारिक सबधोमे और व्यवहारकी अनेक बातोमे पिता और माताके हृदयसे प्रवेश करना और पूरी आत्मीयताके द्वारा असख्य परिवारोकी अखड सेवा करते रहना।

भारतके आम लोग गाधीजीके प्रथम दो पहलुओको अच्छी तरह जानते है। बाहरी दुनिया गाधीजीके राजनैतिक और सत्याग्रही कार्योको देख कर चकित

हो गई और उसीसे अब भी प्रेरणा ले रही है। हिन्दुस्तानके लोग, और कुछ हद तक हिन्दुस्तानके अग्रेज-राज्यकर्त्ता भी, गाधीजीके रचनात्मक कार्यक्रमकी संजीवनीको बहुत कुछ समझ सके। लेकिन गाधीजीके तीसरे पहलूका कार्य, उसकी गहराई, उसका विस्तार और उसकी तेजाब जैसी शुद्धि-शक्ति बहुत कम लोग जानते है। गाधीजीके इस तीसरे कार्यसे जिन परिवारोको लाभ हुआ वे ही उसकी लोकोत्तरता जानते है। लेकिन वे भी उसका विस्तार कहासे जाने? गुप्त दानका माहात्म्य जिस तरह सबसे बडा है, वैसे ही इस आध्यात्मिक, उत्कट, व्यक्तिगत और पारिवारिक सेवाका माहात्म्य भी असाधारण है। मै तो मानता हू कि गाधीजीके ऊपर बताये हुए विविध कार्योमे इस आखिरी अप्रकट सेवा-कार्यका महत्त्व दूसरे प्रकट कार्योसे तनिक भी कम नही है।

सद्भाग्यसे इन तीनो पहलुओका परिचय हमें यहा इन पत्रोमें मिलता है। और विशेष तो यह कि जो पहलू हम या जगतके लोग अन्यथा नही समझ सकते वह इस पत्र-सग्रहमे विशेष रूपसे प्रकट हो रहा है। इतिहासकी दृष्टिसे और आध्यात्मिक दृष्टिसे भी यह मसला एक असाधारण दस्तावेज है।

हम यहा यह भी देखते है कि जिस तरह गाधीजीने जमनालालजीके जीवनमें और परिवारमे प्रवेश किया उसी तरह या उससे भी अधिक जमनालालजीने भी गाधीजीके जीवनमें, उनके जीवन-कार्यमें, उनके कुटुबमें और उनके विशाल राष्ट्रीय एव अन्तर्राष्ट्रीय परिवारमे प्रवेश किया। इसी परसे हम अन्दाज लगा सकते है कि जमनालालजीकी विभूति भी कितनी उत्तुग और मर्मस्पर्शी थी। अगर गाधीजीने जमनालालजीकी कई उलझने सुलझाई तो जमनालालजीने भी गाधीजीकी व्यक्तिगत तथा सस्थागत उलझनें सुलझानेमें अपनी असाधारण निष्ठा और कुशलता दिखलाई है। ऐसा करते-करते उन्होंने इतना अधिकार पाया था कि कभी-कभी उनको गाधीजीसे कडी शिकायत करते और उनके रुखको सुधारते हुए भी देखा गया है। ऐसे समय गाधीजीकी प्रसन्नता एव धन्यता कुछ अजीब ढगसे उनके चेहरे पर प्रकट होती थी। जब-जब गाधीजी जमनालालजीकी बात मान जाते थे तब जमनालालजीके मुह पर भी सच्छिष्य होनेका आनन्द प्रगट होता था। इन निस्स्वार्थ, निरभिमान और समान दृष्टिके सेवकोके बीच जो सवाद चलते थे, उनको सुननेका अधिकार या मौका मिलना भी एक भाग्य था।

श्री महादेवभाई भी कभी-कभी ऐसी ही बाते महात्माजीसे करते थे, किन्तु उनका रुख अनुव्रताके जैसा था। उसमे गाधीजीके साथ असाधारण हार्दिक और आध्यात्मिक एकताकी झलक मिलती थी, और जमनालालजीके सवादोमे उत्तराधिकारी सत्पुत्रकी निष्ठाकी झलक। इसीलिए जब जमनालालजीका अकस्मात् देहान्त हुआ तब गाधीजीने जमनालालजीके सब परिचित मित्रोको उनके कार्य-भारको उठानेका आमन्त्रण देते हुए लिखा था –

"आप जानते है कि जमनालाल और मेरे बीचमे कितना घनिष्ठ सबध था। कोई काम मैने नही किया जिसमे उनका पूरा सहयोग तन, मन और धनसे न रहा हो। जिसको राजकाज कहते है वह न मेरा शौक था न उनका। वे उसमे पडे, क्योकि मै उसमे था। लेकिन मेरा सच्चा राजकाज तो था रचनात्मक कार्य। और उनका भी राजकाज यही था। मेरी आशा थी कि मेरे बाद जो मेरे खास काम माने जाय, उन्हे वे सपूर्णतया चलावेगे। उन्होने मुझे ऐसा आश्वासन भी दे रखा था।"

और सचमुच जमनालालजीमे वह शक्ति थी। दो तपकी याने चौबीस वर्षकी अवधि तक ऐसा कार्य करके उन्होने वह अधिकार भी प्राप्त कर लिया था।

गाधीजी और जमनालालजीमे यह एक समान विशेषता पाई जाती है कि दोनोका हृदय-विकास इतना असाधारण था कि केवल विस्तार ही नही किन्तु उत्कटता से भी वे सारे राष्ट्रको अपना कौटुबिक परिवार बनानेकी शक्ति रखते थे। जहा इन दोनोको प्रवेश मिला वहा वे तुरन्त ही अपने कौटुबिक सद्गुणोकी सुगध फैला देते थे। और वह केवल दिखावेके शिष्टाचारमे नही, किन्तु सचमुच प्रेम, आत्मीयता और सेवाके द्वारा। जब गाधीजीने जमनालालजीको शिमलामे राजकुमारीजीके यहा ठहरनेके लिए भेजा तबका इन दोनोका पत्र-व्यवहार पढने लायक है। ऐसा लगता है कि वहाँका इन दोनोका विनोद मानो कौटुबिक गुणोके विकासकी होड ही है।

जमनालालजी, जानकीमैया या उनके पुत्र-पुत्रियोके बारेमे जब गाधीजी पूछताछ करते है तब उनके लिए एक भी चीज कम महत्त्वकी नही है। उनके शरीर-स्वास्थ्यसे लेकर हरेककी पढाई, उसका विकास, खासकर व्यक्तित्वका विकास, सब पहलुओ पर गाधीजीकी वात्सल्यपूर्ण दृष्टि पाई जाती है।

चि कमलनयनको गाधीजीने समय-समय पर जो पत्र लिखे हैं उनके अन्दर उसके क्रमिक विकासकी झलक पाई जाती है। छोटी उम्रके पत्र अलग है। सीलोन जानेका तय हुआ तबके अलग है, और उसकी महत्त्वाकाक्षा देखकर ही गाधीजी मातापिताको सलाह देते पाये जाते हैं।

चि कमला, मदालसा और ओम् तीनो मीठी लडकिया है। प्रेमल है। किन्तु तीनो अपने-अपने नमूनेकी स्वतत्र व्यक्तिया है। गाधीजी तीनोको अलग-अलग ढगसे प्रेरणा देते है और उनके विकासमे मददगार होते है।

मिठास तो सबसे ज्यादा रामकृष्णकी है, लेकिन वह अपनी सस्कारी नम्रताके पीछे अपनी स्वतत्रताको सभाल लेता है। यही कारण है कि उसके नाम गाधीजीके खत कम है। किन्तु प्रेम और इतजारी सबकी ओर एकसी ही है। जानकीमैयामे आत्म-विश्वास पैदा करनेका काम तो गाधीजी ही कर सके। यहा तक कि जमनालालजीके स्वर्गवासके बाद जो जानकीमैया सती होकर अपने जीवनका अत चाहती थी उनके सिर पर बापूजीने गोसेवाका भार डाला। इतना ही नही, किन्तु उन्हे उर्दूके हर्फ सीखनेके लिए भी बिठा दिया। यह तो गाधीजी ही का काम था।

भारतका आतरिक इतिहास अगर हम ध्यानसे पढे तो हम देख सकते है कि हमारे राष्ट्रके सास्कृतिक धुरधर सबके-सब विशाल परिवार, याने अविभक्त कुटुब पद्धतिके ही कायल थे। "वसुधैव कुटुम्बकम्" ही उन सबका आदर्श था। हम यह भी जानते है कि आदर्श कौटुबिक सद्गुणोका विकास किये बिना, परिवारकी परिधि बढाते जाना खतरेसे खाली नही है। अपने देशमे हमने अविभक्त कुटुब पद्धतिका पुरस्कार करते-करते कई व्यक्तियोके विकासमे बाधा डाली है और चद व्यक्तियोके व्यक्तित्वको कुचल डाला है। कई बार गाधीजीने चद व्यक्तियोका नेतृत्व मजबूत करनेके लिए दूसरोंके व्यक्तिगत विकास पर अकुश रखा है, और अगर उन्होने अपने विकासके लिए अलग क्षेत्र नही ढूढा तो उनका व्यक्तित्व बढनेमे रुक भी गया है। जमनालालजीका तरीका कुछ अलग था। उन्हीके मुहसे मैंने सुना है कि जब कभी उन्होने देखा कि दो व्यक्तियोंके स्वभावमें परस्पर मेल नही है तो वे दोनोके लिए अलग-अलग भिन्न-भिन्न क्षेत्र बना देते थे ताकि दोनोकी शक्तिका पूर्ण विकास हो सके। यही कारण था

कि ऐसे मामलोमे जमनालालजीको ज्यादा सफलता मिलती थी। अगर हम इतिहासमें ढूढे तो गाधीजी और जमनालालजीने मिलकर जिस विशाल कुटुवकी स्थापना की, उसके जैसा विशाल कुटुव, कुटुवके रूपमें शायद ही और कही चला होगा।

जब गाधीजीने राजकोटका सवाल अपने हाथमें लिया और जमनालालजीने जयपुरका, तब दोनोमे यही मध्यकालीन खानदानी-वृत्ति काम कर रही थी। गाधीजी और जमनालालजी बारबार कहते थे कि वे स्वय जितने प्रजाके हितचिंतक थे उतने ही देशी राजाओके भी मित्र थे। देशी राजाओने कभी गौरसे सोचा ही नही कि इन वचनोमें कितनी गहराई भरी हुई थी। अगर देशी राजाओके सब सवाल इन्हीके द्वारा और इन्हीके ढगसे हल किये जाते तो देशका राजनैतिक जीवन, हमारी सस्कृतिके लिए अधिक हितकर हो जाता। लेकिन पश्चिमकी शिक्षाने अपना प्रभाव इतना फैलाया था कि राजा और प्रजा दोनो गाधीजीकी पद्धति और जमनालालजीकी मनोवृत्ति या महत्त्वाकाक्षाको समझ नही सके, झेल न सके। और अग्रेजोकी मौजूदगी और नीतिके कारण भी मामला हमेशा विगडता गया।

जो बात देशी राजाओके बारेमें थी वही हिन्दुस्तानके समाजके बारेमें भी सही थी। गाधीजीमें धार्मिक या सामाजिक तगदिली तनिक भी नही थी, किन्तु हिन्दू-धर्म और हिन्दू-समाज दोनोके प्रति उनकी आत्मीयता कम न थी। जमनालालजीके बारेमें भी यही कहा जा सकता है। जो निष्ठा जमनालालजीमें हिन्दू-धर्मके प्रति पाई जाती है वैसी निष्ठा बहुत कम लोगोमें देखनेको मिली है। इस धर्मनिष्ठाके कारण ही वे गाधीजीके भक्त बने। जमनालालजीमें यदि हिन्दू-धर्मके प्रति औरोके जैसी विकृत निष्ठा होती तो वे गाधीजीको अपना हृदय अर्पण नही कर सकते। गो-सेवा, अस्पृश्यता-निवारण, आतर्जातीय-विवाह, हिन्दू-मुस्लिम एकता, राष्ट्रभाषा-प्रचार, सर्व-धर्म-समभाव और ट्रस्टीशिपका सिद्धात (सपत्तिकी और विश्वस्त-वृत्ति), इन सब बातोमें जमनालालजीने गाधीजीके साथ अपनी पूर्ण एकता सिद्ध की थी। कितने आश्चर्यकी बात है कि गाधीजीके पचीस वर्षके इन पत्रोमें उनको ऊपर बताई बातोमे जमनालालजीसे कभी भी दलील नही करनी पडी।। ऐसा लगता है कि दोनोके बीच ये सब बाते पहले ही मान्य थी। इसी

लिए इन सब बातोमे जमनालालजी गाधीजीका कार्य पूर्ण हृदयसे करके उनको सतोष दे सकते थे और स्वय भी सतोष पा सकते थे।

सचमुच जमनालालजी गाधीजीकी कामधेनु थे। पैसे देने या लानेकी दृष्टिसे ही नही, किन्तु गाधीजीके आदर्श और मनोरथ समझकर उनकी सब कामनायें सिद्ध करनेके लिए अपनी समस्त शक्ति, अपना समस्त बल — द्रव्य-बल, मनुष्य-बल, बुद्धि-बल और व्यवस्था-बल — लगानेवाली कामधेनु थे।

गाधीजीको रचनात्मक कार्यक्रमके लिए पैसे तो कई लोगोने दिये है। बिडला-बधु, अहमदाबादके व्यापारी, रगूनवाले डा प्राणजीवन मेहता, उत्कलके जीवराम कोठारी आदिसे लेकर डा रजबअली पटेल तक असख्य लोगोने गाधीजीको आर्थिक सहायता दी है, किन्तु गाधीजीके कार्यको अपना ही कार्य बनानेकी शक्ति तो जमनालालजीने ही दिखाई। खादी हो या इतर ग्रामोद्योग, गुजरात विद्यापीठ हो या राष्ट्रभाषा प्रचार, अस्पृश्यता-निवारण हो या गो-रक्षा, सब कार्योमे जो कुछ भी जोश या जिन्दापन आया उसमें जमनालालजीके व्यक्तित्वका भाग कमोवेश अवश्य था। गाधीजीके इन सब पत्रोमे इतना विश्वास पाया जाता है कि राष्ट्र हितकी हर बातमे जमनालालजी उनके साथ है ही।

खादी और गो-रक्षा दोनोमे वैश्य-धर्मका चरम उत्कर्ष है। जब जमनालालजीने गाधीजीके पास आत्मशुद्धिके लिए कोई साधना मागी तब गाधीजीने उनको गोसेवाका ही काम सौंपा। हमारे शास्त्रकारोने कहा है कि गो-रक्षाका काम भगवानने वैश्योको सौपा है। गो-रक्षा वैश्य ढगसे ही हो सकती है, क्षात्र ढगसे नही। फिर कौनसा आश्चर्य है कि गाधीजी और जमनालालजी दोनो वैश्य इस कार्यमे अपनी अधिकसे-अधिक शक्ति लगा सके।

सन् १९२२ मे ही गाधीजीने जमनालालजीको लिखा था यदि विदेशी सूत और कपडोका व्यापार करनेवाले लोग अपने व्यापारको नही छोडेंगे, और जनता विदेशी कपडोका मोह नही छोडेगी तो मुल्ककी महाबीमारी—भूख हरगिज हट नही सकती। दर्दनाक अनुभवसे कहना पडता है कि आज भी वह बात उतनी ही सही है। गाधीजीने तीस बरस पहले जो स्पष्ट देखा था उसका विश्वास आज भी न हमारे व्यापारी वर्गको हुआ है,

न, हमारी जनताको, न प्रजाकीय सरकारको। महाबीमारी—भूख घटी नहीं, बढती ही जाती है। तो भी लोग और सरकार अपनी सारी शक्ति खादी और ग्रामोद्योग के पीछे नही लगा रहे है।

श्रेयार्थी जमनालालजीके आत्मशुद्धिके सतत प्रयत्नका संपूर्ण चित्र हमें कौन दे सकेगा? श्री विनोबाजी शायद कुछ दे सके। लेकिन ऐसे चित्रका दर्शन करके पावन होनेके अधिकारी भी तो कौन और कितने है?

जीवन-शुद्धिका प्रयत्न मनुष्य-जीवनकी सर्वोच्च साधना है। अधिकांश जनता इस बारेमे जागृत ही नहीं होती। बहुतसे लोग तो कानूनके डरसे स्थूल बातोंमे अपनेको स्वच्छ मार्ग पर रखते है। थोडे ऐसे भी होते है जो अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा बनाये रखनेके लिए अपनेको सीधे मार्ग पर रखते है। चंद लोग अपने बाल-बच्चोंके लिए अच्छी विरासत छोडनेके खयालमे सदाचारके रास्ते पर चलते है और इतनी सिद्धि हासिल की तो अपने आपको कृतार्थ मानते है। पर जमनालालजीको इतनी सिद्धिमे संतोष नही था। वे कहते थे कि अशुभ वासना मनमें पैदा ही क्यो हो?

समय-समय पर जमनालालजी बापूजीको अपनी मानसिक स्थितिकी रिपोर्ट देते थे, और गांधीजी भी उन्हे उचित सलाह और प्रोत्साहन देते रहते थे। अगर यह सारा पत्र-व्यवहार अविकल रूपमे मिल जाता तो आत्मोन्नतिके मार्गमें सतत प्रयत्न करनेवाले तमाम विश्वके यात्रियोंके लिए वह एक दिशादर्शक नक्शा हो जाता। आज भी जो कुछ हिस्सा यहा पर हमे उपलब्ध है, उसमे उपनिषत्कालके साधक और महर्षियोंके संवादकी झलक और भव्यता पाई जाती है। नारद या प्रतर्दन राजा अपने गुरुके पास जाकर अपनी हालत बताते है और आगेका रास्ता पूछते है, वैसा ही वायुमंडल यहा दीख पडता है।

गांधीजीने अपना प्रधान जीवन-सिद्धान्त और व्यापक जीवन-दृष्टि जमनालालजीको सबसे पहले उस एक ही पत्रमे लिख भेजी, जो उन्होंने भारतमे प्रथम बार जेल जाने पर साबरमती जेलसे १६-३-१९२२ को लिखा था। यह मानो एक दीक्षा पत्र ही था और ऐसा दीख पडता है कि उसी समयसे जमनालालजी आत्मशुद्धिके लिए गांधीजीसे मदद मांगने लगे। गांधीजीकी दृष्टिमे आत्मशुद्धि और स्वराज्य-प्राप्ति एक ही चीज है।

सत्यकी अनन्य निष्ठाके बिना किसीका आदर्श-सत्याग्रही बनना असंभव है।

इस पत्रमें गांधीजी बताते हैं कि सर्व श्रेष्ठ भावना सत्यकी ही हो सकती है। सत्यकी खोज करते-करते उन्हें उसमें जीवनके और सब सिद्धांत मिल गये। सत्यके द्वारा ही उन्हें अहिंसाका साक्षात्कार हुआ। पूर्ण सत्यके दर्शन तो भगवानकी कृपासे ही होंगे। लेकिन निर्मल अंतःकरणको जिस समय सत्यके जैसी जो भी चीज लगे उसीको पूरी निष्ठासे चलाते-चलाते शुद्ध सत्य मिल सकता है।

अहिंसाका ऐसा नहीं। सत्यके द्वारा अहिंसा प्राप्त होती है। केवल अहिंसासे सत्य मिलेगा ही, ऐसा विश्वास नहीं है। कई बार अहिंसा किसे कहे इसका निर्णय करते असमंजस पैदा होता है। जन्तुनाशक पानीका व्यवहार भी हिंसा ही है। सच तो यह है कि इस हिंसामय जगतमें अहिंसामय बनकर रहना यही बड़ी साधना है। सत्यकी दृढ़ निष्ठासे अहिंसा सिद्ध हो सकती है। सत्यसे ही प्रेम सिद्ध होता है, सत्य ही हमें मृदु बनाता है। जो सत्यवादी बनना चाहता है, सत्यका आग्रह रखना चाहता है, उसका नम्रताके बिना चलेगा नहीं। सत्यकी मात्रा जैसे-जैसे बढ़ती जाती है वैसे-वैसे वह नम्र होता ही जाता है।

गांधीजीने अपने अनुभवसे ही यह बात लिखी है। वे कहते हैं, सत्यको आज मैं जितना पहचान सकता हूं और उसका खयाल रख सकता हूं उतना एक वर्षके पहले नहीं था। आज अपनी अल्पताका भान जितना है उतना एक सालके पहले नहीं था। मुझे दिन पर दिन 'ब्रह्म सत्य जगन्मिथ्या' के महावाक्यका अद्भुत साक्षात्कार होता जाता है। इसलिए हमें धीरज बढ़ाना चाहिए। धीरज बढ़ते-बढ़ते कठोरता मनुष्यके हृदयसे कम होने लगती है, सहिष्णुता बढ़ती है। अपनी खामियां पहाड़के जैसी दीख पड़ती हैं और दुनियाकी खामियां रजके जैसी। सत्यके द्वारा ही आत्माके दर्शन होते हैं।

जबतक आत्माको न पहचानोगे तबतक उसकी जगह अहंकार लेता है। अहंकारके कारण हमारा शरीर टिक सकता है। अहंकारका पूर्ण नाश होते ही शरीरका भी आत्यंतिक नाश होगा और वही है मोक्ष। जिसके अहंकारका पूर्ण नाश हुआ है, वह तो सत्यकी प्रत्यक्ष मूर्ति रहेगा। उसे परब्रह्म कहनेमें भी कुछ संकोच नहीं। इसीलिए तो परमात्माका एक सुंदर नाम है दासानुदास। हमें भी दासानुदास होकर ही रहना है।

लेकिन सत्य-निष्ठा कोई आसान व्रत नहीं है। स्त्री, पुत्र, मित्र, परिग्रह, सब कुछ सत्यके अधीन रहना चाहिये। सत्यकी खोज करते-करते अगर इन सबोका त्याग करनेके लिए तत्पर रहे, तभी हम सत्याग्रही बन सकते हैं।

गाधीजी स्वराज्य और राष्ट्रोत्थानकी प्रवृत्तिमे पडे, उसका मुख्य कारण भी सत्य प्राप्तिकी इच्छा ही था। सत्यकी उपासना द्वारा सत्यरूप हो जाना यही परम धर्म है। इस धर्मका पालन करते हुए स्वराज्य साधना पैदा हुई। उसीकी सिद्धिमे जमनालालजी जैसे अपने साथियोको कुरबान करते उन्हे कभी सकोच नही रहा। बाह्य स्वराज्य तो एक प्रतीक मात्र है। सच्चा स्वराज्य तो व्यक्तिका आतरिक और हृदयका स्वराज्य है। गाधीजीका विश्वास है कि ऐसा एक भी सत्याग्रही सिद्ध हुआ तो स्वराज्य प्राप्ति होते एक क्षणकी भी देरी नही लगेगी। यह मार्ग कठिन है इसलिए उसे हम छोड न दे। मार्ग कठिन है इस वास्ते प्रयत्नकी पराकाष्ठा करनी चाहिये।

गाधीजीने जमनालालजीको अपना पाचवा पुत्र बनाया, तभीसे जमनालालजी तो सत्पुत्र होनेका प्रयत्न करते ही थे, लेकिन गाधीजी भी सत्पिता बननेकी अखड कोशिश करते रहे। और उनका प्रयत्न इतना उत्कट था कि हरेक आदर्श वे इसी जन्ममे सिद्ध करना चाहते थे। चकित दुनियाने देख लिया कि उत्कट प्रयत्नसे साधक कितनी ऊचाई तक पहुच सकता है।

जेलसे लिखे और एक पत्रमे ५-१०-२२ को गाधीजी जमनालालजीको उनकी धर्म-भावनाके बारेमे लिखते है मनमे अपवित्र विचार आ जाय उससे घबरा जानेका कोई कारण नही है। अपवित्र विचारोसे जो व्यक्ति पूर्ण मुक्त हुआ उसे मोक्ष ही मिला। अपवित्र विचारोका पूर्ण नाश दीर्घ तपश्चर्यासे ही होता है। उसका उपाय एक ही है। जब कभी मनमे अपवित्र विचार आ जाय तब तुरन्त उसके सामने उसका विरोधी पवित्र विचार खडा कर देना चाहिये। ईश्वरके अनुग्रहसे ही यह हो सकता है। इस अनुग्रहके लिए सर्वकाल ईश्वरका नाम लेना और वह अतर्यामी है इस बातको पहचान लेना जरूरी है। शुरू-शुरूमे रामनाम हृदयसे नही निकलेगा। जीभ रामनाम लेती जायगी और मनमे दूसरे विचार आते जायेगे, इसकी परवाह नही। आत्म-शुद्धिका खयाल रखकर हम रामनाम लेते जाये, तो अतमे जो नाम जीभ पर है वह हृदयमे भी प्रथम स्थान ले लेगा।

और एक बात है। मन तो चाहे दौडता रहे, हम अपनी इद्रियोको उसके अधीन न होने देंगे। जहा मन गया वहा अगर उसके पीछे हमारी इद्रिया भी गई, मनकी वासनाके वश होकर अगर हम वैसा आचरण करने लगे तो हमारा नाश हो जायगा। लेकिन जबतक मनुष्य, भले ही जबरदस्ती, अपनी इद्रियोको काबूमे रखता है, किसी-न-किसी दिन अपवित्र विचारोको भी काबूमे ले ही आवेगा। अपनी बात बताते हुए जमनालालजीको प्रोत्साहन देनेके लिए गाधीजी कहते है कि आज भी अगर मेरे विचारोके अनुसार मै अपने इद्रियोको कार्य करने दू तो आज ही मेरा नाश हो जायगा। मनमे अपवित्र विचार आते ही इससे हम मायूस क्यो हो, हमे तो अधिक उत्साही बनना चाहिये। प्रयत्नका सारा क्षेत्र हमारे वश है। परिणामका क्षेत्र भगवानने अपने वशमे रख लिया है, इस वास्ते परिणामकी चिता हम न करे। जब कभी मनमे अपवित्र विचार आ जाय तब ऐसा समझ लेना कि अपनी पत्नीके प्रति हम बेवफा बने है। साधु पति पत्नीके प्रति बेवफा हो ही कैसे सकता है? तुम साधु हो। मामूली इलाज तो तुम जानते ही हो। आहारकी मात्रा कम करके अल्पाहारी बनना चाहिये। दृष्टि अपने सामनेकी जमीन पर रखकर ही चलना चाहिये। आख अगर मलिन हो जाय तो उसपर ऐसा क्रोध करना मानो हम उसे फोडनेके लिए तैयार हुए है। पवित्र ग्रथोका सत्सग तो रखना ही चाहिये।

इस तरह गाधीजी जमनालालजीको आश्वासन देते गये।

दिन पर दिन जमनालालजीको मनमे शका उठने लगी कि इस तरह गाधीजीके ऊपर अपना बोझ डालना कहा तक मुनासिब है। तारीख २५-१०-२२ को जमनालालजीने लिखा मेरे बारेमे आपने जो रास्ते बतलाये उनका उपयोग मै अवश्य करूगा, इससे जरूर लाभ पहुचेगा। लेकिन ऐसा मनमे सवाल उठता है कि जब मनकी ऐसी हालत थी तब आपका पुत्र बननेका अधिकार ही मुझे क्या था। आप पर मैने जवाबदारी डाल दी। लेकिन उससे मै अपनी जवाबदारीसे मुक्त नही हो सकता। मन बाहर इधर-उधर जाता है, तो इज्जतके डरसे उसे रोक सकता हू, लेकिन मेरी इच्छा तो यही है कि गृहस्थाश्रममे रहते हुए भी कामवासनासे हमेशाके लिए मुक्त हो जाऊ। यही तो सबसे कठिन बात है, लेकिन मुझे विश्वास है कि आपके पवित्र आशीर्वादसे मुझे मुक्ति मिलेगी।

गांधीजीने जमनालालजीको अपना पुत्र बनाया सही। एक बार उन्होंने जमनालालजीको एक पत्रमे चिरंजीवकी जगह भाई जमनालालजी लिखा। जमनालालजीको इसका दुख हुआ और उन्होंने शिकायत की। जवाबमें गांधीजीने लिखा कि खुले खतमे चिरंजीव लिखना योग्य है या 'भाई' इसका निर्णय मैं उस समय नही कर सका, इस वास्ते मैंने 'भाई' शब्दका प्रयोग किया। अब जिस तरह तुम्हारे मनमें शका है कि चिरंजीव बननेकी योग्यता तुममें है या नही, इसी तरह मेरे मनमे भी शका है कि मैं पिताका स्थान लेनेके योग्य हू या नहीं। अगर तुम अपूर्ण हो तो मैं भी अपूर्ण हूं। मुझे भी अपनी योग्यताका विचार करना चाहिये। तुम्हारे प्रेमके कारण मैं 'पिता' बन गया, ईश्वर मुझे इस स्थानके योग्य बनाये। अगर तुममें खामी रही तो वह मेरे स्पर्शकी खामी होगी। मुझे विश्वास है कि हम दोनो प्रयत्न करते-करते सफल हो जायेंगे और अगर सफलता प्राप्त नही हुई तो भी क्या? भगवान् जो भावनाका ही भूखा है, हमारे अतरको समझ सकता है। जैसी हमारी योग्यता होगी वैसा हमारा निकाल करेगा। इसलिए जबतक मुझमें मलिनताको ज्ञानपूर्वक स्थान न दू तबतक तुमको चिरंजीव (पुत्र) ही मानता रहूगा।

इस पत्रमें गांधीजीने जमनालालजीके साथ अपनी इतनी एकता मानी है कि वे लिखते है कि तुम्हारे अन्दर अगर कुछ कमी रही तो वह मेरे स्पर्शकी कमी होगी।

इसमे तनिक भी आश्चर्य नही। जब गांधीजीने भारतकी सेवा शुरू की तब उन्होंने कहा था कि मैं सारे देशका प्रतिनिधि हू। सज्जन, दुर्जन, देशभक्त, देशद्रोही, सब भारतियोके कृत्योंका उत्तरदायित्व मेरे सिर पर है। इसीलिए तो उन्होंने चौरीचौराके अत्याचारोकी पूरी जिम्मेदारी अपने सिर पर ली और उसका प्रायश्चित्त किया। आश्रममें अगर किसीने कोई गलती की तो वह अपनी ही गलती है, ऐसा समझकर वे स्वयं प्रायश्चित्त करते थे। भारतीय वेदान्तमें विश्वात्मैक्यकी जो भावना बताई है, उसकी साधना गांधीजी केवल ध्यानके द्वारा नही किन्तु इस तरह समग्र जीवन द्वारा भी करते थे।

जब जमनालालजीको उनकी जातिने बहिष्कृत किया तब गांधीजीने उनको लिखा कि तुमने जो कुछ भी किया है उसमे कुछ भी ऐसा नही जिसके

लिए शरम या पछतावा हो सके। जातिको तो अधिकार है ही कि जिस किसी व्यक्तिने उसके नियमोका उल्लघन किया उसका वह बहिष्कार करे।

जब तुम्हारे नाम तोहमतनामा आयेगा, उसको तुम मेरे पास भेज देना। मैं उसका जवाब लिख दूगा। उसमे फिर जैसा चाहो वैसा फेरफार कर सकोगे। मैं इतना चाहता हू कि हमारे जवाबमे पूरी नम्रता और विनय होना चाहिये। इस बहिष्कारके कारण जातिमें तुम्हारा प्रभाव कम होगा और द्रव्य इकट्ठा करनेकी तुम्हारी शक्ति भी घटेगी, इसकी मुझे फिक्र नही है। धर्मकी रक्षा करते भीख मागनेका समय आ जाय तो भी क्या? आखिर जब तुम्हारी जाति तुम्हारी धर्म-निष्ठा और नम्रता पहचान सकेगी तब स्वय नम्र बनेगी। इसी तरहसे जातियोमे सुधार हो सकेगा।

तारीख २१-११-१९२६ के पत्रमे आशीर्वाद भेजते हुए गाधीजी लिखते है तुम दीर्घायु होवो और तुम्हारी पवित्रतामे वृद्धि होवे। इस जगतमे दूषणसे रहित कोई है ही नही। हम उस दूषणको दूर करनेकी कोशिश ही कर सकते है। ऐसा प्रयत्न तुम कर ही रहे हो। भगवानका वचन है कि प्रयत्नशीलके लिए दुर्गति है ही नही।

जमनालालजीने एक बार कपडेकी एक मिल खरीदनी चाही। उसमे एक उद्देश्य यह भी था कि मिल-मजूरोको गाधीजीके आदर्शके अनुसार रखनेकी कोशिश की जाय। जब जमनालालजीके घरके लोगोको इसका पता चला तो सबके सब अस्वस्थ हो उठे। खादी प्रचारक जमनालालजी कपडेकी मिलके मालिक बन जाय यह कैसा! ऐसे वायुमडलमे गाधीजीने जमनालालजीको एक खत लिखा जिस परसे सिद्ध होता है कि सारा बजाज परिवार गाधीजीके असरके नीचे आगया था।

तारीख २७-९-३४ के पत्रमे वर्धामे गाधीजी लिखते है खादी प्रचारमे इतनी गहराई तक उतरनेके बाद कपडेकी मिलका मालिक बनना अच्छा नही है। मुझे तो इस बातका आघात हुआ। लेकिन शायद मैं कुछ न लिखता परन्तु जानकीमैया कल आकर पूछने लगी कि यह बला किसके लिए खरीद रहे है? लडके भी इस चीजको पसद नही करते। नौकर जरूर कहेगे कि अच्छा हुआ, अब मालिक हमे खादी पहननेका उपदेश थोडे ही करेगे।

जो चीज किसीको पसद नही है उसे छोड ही देना चाहिए। अगर परोपकारके लिए धन कमानेके खयालसे ही इस प्रवृत्तिमे पडे हो तो इस परोपकारके बिना काम चला लेगे।

गाधीजीके इस खतके मिलनेके पहले ही जमनालालजीने मिल न लेनका निर्णय कर लिया था।

जब जमनालालजीने ४९ वर्ष पूरे किये और पचासवेमे प्रवेश किया तब उनकी मानसिक अस्वस्थता बहुत ही बढ गई थी। उन्होने पवनारसे ४-११-३८ को गाधीजीको एक ऐसा दर्द-भरा पत्र लिखा है जो पढते-पढते हरेकका हृदय अस्वस्थ हो जाता है। उनके मनमे आत्महत्याके विचार भी आने लगे थे। दुनिया-भरके पत्र-साहित्यमे यह पत्र एक अनोखा स्थान प्राप्त करेगा।

"आज मिती व तारीखके हिसाबसे मुझे ४९ वर्ष पूरे हुए है। पचासवा वर्ष चालू हुआ है। आपका आशीर्वाद तो सदैव ही रहता है, परन्तु मै जब विचार करता हू तो मुझे इन दो अढाई वर्षोमे ऐसा साफ दिखाई देता है कि मै आपके आशीर्वादका पात्र नही हू। मेरी कमजोरियोका जब मै विचार करता हू तब तो इन वर्षोमे खासकर छोटेलालजीकी घटनाके बाद मेरे मनमे आत्महत्याके भी विचार आये, जिसे मै कायरता व पाप समझता आ रहा था, बुद्धिसे तो अभी भी समझता हू। मुझे दु ख इस बातका विशेष रहता है कि मेरी उन्नतिके बदले अवनति विशेष होती दिखाई दे रही है।

"इसके कई कारण हो सकते है, परन्तु उन सबकी जिम्मेवारी तो मेरी ही है। देहलीके पहलेतक तो विचारोका जोर मेरे मनमे चलता रहा, एक तो मै सब सार्वजनिक कार्योसे, अगर सभव हो तो खानगी काममे भी, अलग हो जाऊ। अगर यह सभव न हो तो ज्यादा जिम्मेवारीका काम लेकर उसमे रात-दिन फसा रहू। परन्तु अब तो निकलनेमे ही अधिक समाधान मिलना सभव है।

"मेरी कमजोरी मुझे इस प्रकार दिखाई दे रही है। अहिंसा व सत्यका आचरण कम होता दिखाई दे रहा है। डर है कि कही इस परसे श्रद्धा भी कम न हो जावे। इसी कारण असहनशीलता भी बढ रही है। क्रोधकी मात्रा भी बढती जा रही है। कामवासना बढती हुई मालूम हो रही है। लोभकी मात्रा भी। इतने सब दुर्गुण या कमजोरी जो

मनुष्य अपनेमें बढती हुई देख रहा है फिर उसे जीनेका मोह कैसे रह सकता है? यानें मानसिक कमजोरीके विचार तककी बात होती तो भी फिर प्रयत्नके लिए उत्साह रहता, परन्तु जब शरीरकी इन्द्रियोंको भी मैं काबूमें न रख पाता हू यानी प्रत्यक्ष शरीरसे पाप होते दिखाई देता है तब लाचार बन जाता हू। ऊपरी हिम्मत तो बहुत ज्यादा रख रहा हू, रखनेका प्रयत्न भी करता रहूँगा, परन्तु मुझे आज यह अनुभव हो रहा है कि कही यही दशा रही तो या तो पागलकी स्थिति पर पहुच जाना सभव है या पतनके मार्ग पर जानेका भय है। इसलिए आज अगर स्वाभाविक मृत्युका निमत्रण आये तो मेरी आत्मा कहती है कि मुझे समाधान, शाति मिलेगी, क्योकि मेरा भविष्य अधेरेमे दिखाई दे रहा है। मुझे आज यह विश्वास हो जावे कि मेरा पतन कभी नही होवेगा, मै सत्यके मार्गसे नही हटूगा, तो मुझमें फिर नवजीवन, उत्साह आना सभव है। मुझे इन वर्षोमें बहुतसी मानसिक चोटें लगी है, कुटुम्बियो द्वारा, मित्रो द्वारा, जिसके लिए मेरी तैयारी न थी। अगर इसी प्रकार चोटें लगती ही रही तो पागल होनेके सिवा दूसरा क्या होवेगा? मृत्यु तो मेरे हाथकी बात नही है। आत्महत्यामें तो कायरता व पाप दिखाई देता है। क्या करू, कुछ समझमें नही आता। मेरे दिलका दर्द किसे कहू? कौन ऐसा है जो प्रेमसे मेरी मानसिक स्थितिको सुधार सकता है? मेरा भरोसा तो आप पर व विनोबा पर ही था। परन्तु आपसे तो अब आशा कम होती जा रही है। विनोबासे अभी आशा है। शायद कोई समाधान-कारक मार्ग निकल जाए।

"इन वर्षोंमे मै आपके पास कई बार हृदय खोलनेके लिए आया परन्तु आपकी मानसिक, शारीरिक व आसपासकी स्थितिके कारण पूरी तौरसे खोल नही सका। इसका मेरे मनमे दुःख रहा और ऐसा लगता रहा कि मै आपको व अन्य मित्रोको धोखा तो नही दे रहा हू। क्योकि मै धोखेसे बढकर पाप या नीच कृत्य नही मानता आया। इसलिए मैने मेरी स्थिति कई मित्रोको, घरवालोको कहनेका प्रयत्न किया, परन्तु उसमे पूर्ण सत्य न रहनेकी वजहसे या अन्य कई कारणोंसे उसका जो परिणाम आना चाहिये था, वह नही आया। अब आप कोई राजमार्ग बता सकते है। मुझे तो लगता है कि अभी तक मेरी बुद्धि काम दे रही है। मेरेमें जो-जो कमजोरिया है व वे जिन कारणोंसे घुसी है वह भी मालूम है, उनको निकालनेकी इच्छा

भी है। यह इच्छा तीव्र बनाई जा सकती है। परन्तु मेरे पास याने मेरे साथ कोई ऐसा व्यक्ति नही है जिसमें प्रेम, सेवा व उदारता भरी हुई हो, जिसके पवित्र चरित्र व प्रेममय वातावरण या सेवामें मेरे मनको शांति मिले। क्या इस प्रकारकी बहिन या भाई आपकी निगाहमें है ? अगर निगाहमे है तो क्या उसका मेरे साथ रह कर मेरी सेवा करना सभव है ? सार्वजनिक कार्यकर्त्ताके पाससे काम छुडा कर उससे अपनी सेवा लेनेकी हिम्मत नही होती। मैंने जिन कमजोरियोका वर्णन किया है उसका यह अर्थ नही है कि मेरेमें पहले कमजोरिया नही थी, इन वर्षोमे ही आई है। वे पहलेसे ही थी, परन्तु मुझे लगता था कि वे जोरसे निकल रही है। परन्तु आज ऐसा नही मालूम हो रहा है, यही खास बात है।

"आप कोई ऐसा मार्ग निकाल सके तो निकाले जिससे मेरी मामूली मनुष्योमे गिनती हो। लोग अधिक पवित्र व उच्च न माने तो शायद इससे भी मेरा कल्याण हो। आप मेरी इस अवस्थामे दु खी तो होगे ही परन्तु मै क्या करू ? समझमे नही आता। मुझे तो आपको प्रणाम करनेमें भी सकोच होता है।

"मेरे मनमे जिस प्रकार विचार आये आज जन्मदिनके निमित्त लिख दिये है। आप जब यहा आवेगे तब समय निकालकर जो कहना हो सो कहे, वहा तक मैं विनोबासे मदद लेनेका प्रयत्न करूगा।"

यह पत्र गाधीजीको कुछ देरीसे मिला। इस बीच वे गाधीजीसे मिले और उन्होने अपना सारा हृदय-मथन गाधीजीके सामने प्रकट किया। मौनवार होनके कारण गाधीजीने सब बाते सुन ली और एक कागज पर लिखा एक-दो दिनके लिए रह सको तो रह जाओ। कल कुछ समय निकालकर हम बाते करेगे। तुम्हारे दर्दकी दवा मै तो आसान मानता हू। डर जानेका कोई कारण नही है और तुम्हारा विनाश तो है ही नही। फिर भी तुम्हारे दोषोको मै तो स्वीकार कर ही लेता हू, क्योकि मुझे ऐसे सब अनुभव हो चुके है। ये सब गुत्थिया यहा हल करके ही जाओ, इतना ही आज कहता हू। लेकिन जमनालालजी रुक नही सके, इसलिए उसी रातको गाधीजीने अपने विचार स्पष्ट करते हुए उन्हे एक पत्र लिखा। गाधीजी लिखते है कि, मनुष्यको चाहिये कि वह अपने दोषोका चिन्तन न करे, गुणोका ही करे, क्योकि मनुष्य जैसा चिन्तन करता है, वैसा बनता है। उसके यह मानी नही कि दोष

कभी नही देखना चाहिये। दोष देखे विना चलेगा नही, लेकिन उन्हीका विचार करते-करते पागल न वनना चाहिये। आत्म-विश्वास रखकर निश्चय करो कि तुम्हारे हाथोसे कल्याण ही होगा।

इसके वाद, कौनसी प्रवृत्ति कम करनी चाहिये, कौनसी प्रवृत्ति छोडनी चाहिये, क्या-क्या करना चाहिये, यह सब वतानेके वाद गाधीजी लिखते है कि दूसरा सवाल विकारका है। यह जरा मुश्किल काम है। अगर मै तुम्हारी वात वरावर समझा हू तो कहूगा कि तुम्हे स्त्री-परिचर्या छोडनी चाहिये। सव कोई उसे हजम नही कर सकते। अपनी प्रवृत्तियोमे स्त्रियोकी सेवा लेनेवाला ज्यादातर मै ही हू। मेरी सफलता-निष्फलताका निर्णय मेरी मृत्युके वाद ही हो सकेगा। मै केवल प्रयोग कर रहा हू। मेरी कामना है कि मै शुकदेवजी जैसा निर्विकारी वन जाऊ। उस स्थिति तक मै नही पहुचा हू। स्त्री-जातिकी सेवा छोड देनेकी वात इसमे नही है। जो कुछ मैने वताया है वह अगर हृदयसे जच जाय तभी उसका पालन करना। निराशाके लिए कही भी स्थान नही है। तुम पतित नही हो, सत्यनिष्ठ हो। सत्यनिष्ठका पतन कभी नही हो सकता।

जमनालालजीके जीवनमे यह सक्रान्तिका समय था। यहासे वे अधिकाधिक अन्तर्मुख होने लगे। जयपुर जेलसे १५-४-३९ को वे गाधीजीको लिखते है

"मेरा मन तो यहा लग गया है। शान्ति भी ठीक मिल रही है। विचार भी प्राय ठीक चलते है। कई वार कमजोरियोके खयालसे उदासीनता व रोना आ जाया करता है। वादमे विचार करनेसे, पढनेसे उत्साह व भविष्य ठीक दिखाई देने लगता है। भक्तिकी ओर झुकाव वढ रहा है—वढा रहा हूँ। परमात्माकी दया रही और आपका तथा विनोवाका आशीर्वाद रहा तो जीवनमे उत्साह ठीक आ जावेगा। पत्र सुवह प्रार्थनाके वाद लिखा है जैसे विचार आये वैसे ही।"

अपनी जीवन-साधनाके सिलसिलेमे जमनालालजीको पिता तो गाधीजी मिल चुके थे, किन्तु वे एक आध्यात्मिक माताकी खोजमे भी थे। गाधीजीने सिफारिश की कि श्रीमती कमला नेहरूकी जिनपर श्रद्धा थी, ऐसी एक साध्वी

माता आनन्दमयी देहरादूनके पास रहती है, उनसे मिल लेना। जमनालालजी अगस्त १९४१ मे उनसे मिले। बडे ही प्रभावित हुए। आनन्दमयी विवाहिता होते हुए भी बाल ब्रह्मचारिणी थी। उन्होने अपने पतिको भी सन्यास लेनेका उपदेश दिया था।

एक समय जमनालालजीको जन्म-दिवसपर आशीर्वाद भेजते हुए यरवडा जेलसे गाधीजीने लिखा था –

जन्म और मृत्यु दोनोकी बात सोचते हुए मुझे लगता है कि जन्मकी अपेक्षा मृत्यु कुछ अच्छी चीज है। जन्ममे दुख भरा हुआ है, पराधीनता भी होती है। मृत्युके सामने हम पराधीनतासे छूट जाते है। चद लोगोने ब्राह्मी स्थितिका अनुभव भी किया है। अगर ठीक देखा जाय तो जन्मके मानी है दुखमें प्रवेश, पर मृत्यु तमाम दुखोसे पूर्ण मुक्ति बन सकती है। इस तरह हम मृत्युके सौन्दर्यके बारेमे और उसके लाभके बारेमे बहुत कुछ सोच सकते है। मै तो आशीर्वाद देता हू कि इसी प्रकारकी मृत्यु तुमको मिले। इस आशीर्वादमें, इस इच्छामे सब इष्ट बाते आ जाती है।

अध्यात्म शास्त्रका कौल है कि श्रेयार्थी और पुरुषार्थी साधकका अतिम गुरु यमराज ही है। न सोचनेवाले लोग मृत्युसे नाहक डरते है। डरके मारे वे ऐसे अधे होते है कि मृत्युका स्वरूप तो क्या मृत्युकी मुखमुद्रा तक देखते नही। सचमुच आत्मार्थी और ऋतार्थी साधकके लिए मृत्यु परम मित्र है, जिसने आज तक किसी भी साधकको निराश नही किया। दोष जलानेकी जो शक्ति तेजाबमे है वही शक्ति साधकोके लिए सर्वातक यमराजके पास होती है। सब तरहकी प्रतिकूल परिस्थितिका छेद करके साधक-आत्माको अपने हाथमे लेनेकी और एक क्षणमे उसके सब पाश तोडनेकी शक्ति उस परम गुरुमे ही है। जिसने पूर्ण हृदयसे चाहा कि अपना हृदय शुद्ध हो और सत्यनारायणका दर्शन हो, उसके लिए कृतान्त हमेशा रास्ता साफ और खुला रख छोडता है। जो लोग वासना-जालमे फसे है उनके भाग्यमे चौरासी लाख योनिका फेरा बदा हुआ है। लेकिन जो सत्यधर्मी है, कृतात्मा है, श्रेयार्थी यानी मोक्षार्थी है, उनके लिए परमात्मा स्वय परम-मित्र मृत्युका रूप धारण करके आता है और

उसकी सब ग्रथिया तोड देता है। सब सशयोकी निवृत्ति कर देता है और सब जटिलता दूर करके उसे अपने हृदयमे स्थान दे ही देता है।

येथे झाली नाही, कोणाची निरास,
आल्या याचकास कृपेविशी ॥

बम्बई,
८ सितम्बर १९५३

काका कालेलकर

ता. क.

यह किताब करीब करीब तैयार हो जानेके वक्त परिशिष्ट २ का तैयार मसाला पढनेको मिला। इसमे अधिकाश तो जमनालालजीके जानकीदेवीके नाम लिखे हुए पत्र तथा डायरी मे गाधीजीके बारेमें जो जिक्र पाये जाते है, उनका सग्रह है। इतना सारा पूरा मसाला हाथमे आते कौनसा सपादक हृदय-हर्षित न होगा ? सन् १९१७ के प्रारभसे लेकर श्री जमनालालजीका विकास कैसा होता गया, कौटुबिक जीवनको सामाजिक एव राजकीय जीवनके साथ एकरूप बनानेका उनका सतत प्रयत्न कैसा था, यह सब इस मसालेमे इतना स्पष्टरूपसे प्रकट हुआ है कि मानो हम उनकी आत्मकथा ही पढ रहे है।

राष्ट्रभक्ति और सेवा का उच्च आदर्श और जीवनशुद्धिका उत्कटसे उत्कट जागरूक प्रयत्न एक साथ, एक धारामे चलते देख कर बापूजीके इस उत्तम शिष्य-पुत्रकी जीवनसाधना पूरी-पूरी ध्यानमे आती है। अखड कर्मयोग और उसके साथ अतर्मुख आत्मपरीक्षण और गुरुभक्तिके वातावरणका ध्यानयोग, यह सब आत्मोन्नति साधनाके नये नमूने दुनियाके सामने पेश हुए है। यह सब पढनेके बाद निश्चय होता है कि जमनालालजी सचमुच गाधी-युगके दैवी सपतके सर्वोत्तम नमूने थे। गाधीजीने जमनालालजीको उनके आखरी दिनोमे जो आश्वासन दिया था वह पढते अर्जुनको दिया हुआ श्रीकृष्णका आश्वासन याद आता है —

मा शुच सपद दैवी
अभिजातोसि भारत।

का. का.

मार्गदर्शक की खोज

जीवन सेवामय, उन्नत, प्रगतिशील, उपयोगी और सादगी-युक्त हो, यह भावना, जबसे मैंने होश सभाला तबसे, अस्पष्ट रूपसे मेरे सामने थी। इसीकी पूर्तिके हेतु, सामाजिक, व्यापारिक, सरकारी और राजकीय क्षेत्रोमे कुछ हस्तक्षेप करना मैंने प्रारम्भ किया। सफलता मेरे साथ थी। पर मुझे सदा यह विचार भी बना रहता था कि जीवनको सपूर्ण सफलताके लिए किसी योग्य मार्गदर्शकका होना जरूरी है। मैंने अपने विविध कार्योमे लगे रहने पर भी इस खोजको चालू रखा। इसी मार्गदर्शककी खोजमे मुझे गाधीजी मिले। और सदैवके लिए मिल गये।

*   *   *   *

मार्गदर्शककी खोजमे मैंने भारतके अनेक व्यक्तियोसे सपर्क स्थापित किया। महामना मालवीयजी, कविवर रवीद्रनाथ ठाकुर, सर जे सी बोस, लोकमान्य तिलक, आदि अनेक नेताओ तथा व्यक्तियो से मैंने कम-अधिक परिचय प्राप्त किया। उनके सपर्कमें रहा। उनके जीवनका निरीक्षण किया। मेरी इस खोजमे एक बातने मेरे दिल पर सबसे बडा असर कर रखा था। वह थी समर्थ रामदासजीकी उक्ति "बोले तैसा चाले, त्याची वदावी पाउले।" अनेक नेताओसे मेरा परिचय होने पर मुझे उनके जीवनमे मेरे इस सिद्धातकी प्राप्ति जिस परिमाणमे होनी चाहिए, नही हुई। भिन्न-भिन्न व्यक्तियोके भिन्न-भिन्न गुणोंका मुझ पर असर पडा। सबके प्रति मेरी श्रद्धा और आदर भी बना रहा। पर अपने जीवनके मार्गदर्शकके स्थान पर किसीको आसीन नही कर सका।

*   *   *   *

जब मैं मार्गदर्शककी खोजमें था तब गाधीजी दक्षिण आफ्रिकामे सेवाकार्य कर रहे थे। उनके विषयमे समाचार पत्रोमे जो आता उसे मैं

गौरसे पढता था, और यह स्वाभाविक इच्छा होती थी कि यदि यह व्यक्ति भारतमे आवे तो उससे सपर्क पैदा करनेका अवश्य प्रयत्न किया जाय। सन् १९०७ से १९१५ तक इस खोजमे मै रहा। और जब गाधीजीने हिन्दुस्तानमे आकर अहमदाबादके कोचरब मोहल्लेमे किरायेका बगला लेकर अपना छोटासा आश्रम आरभ किया, तब उनसे परिचय प्राप्त करनेके हेतु मै तीन बार वहा गया। उनके जीवनको मै बारीकीसे देखता। उस समय वे अगरखा, काठियावाडी पगडी और धोती पहिनते थे। नगे पैर रहते थे। स्वय पीसनेका काम करते थे। स्वयपाक-गृहमें भी समय देते थे। स्वय परोसते थे। उनका उस समयका आहार केला, मूगफली, जैतूनका तेल और नीबू था। उनकी शारीरिक अवस्थाको देखते हुए उनके आहारकी मात्रा मुझे अधिक मालूम होती थी। आश्रममें प्रात साय प्रार्थना होती थी। सायकालकी प्रार्थनामे मै सम्मिलित होता था। गाधीजी स्वय प्रार्थनाके समय रामायण, गीता आदिका प्रवचन करते थे। मैंने उनकी अतिथि-सेवा और बीमारोकी शुश्रूषाको भी देखा और यह भी देखा कि आश्रमकी और साथियोकी छोटीसे छोटी बात पर उनका कितना ध्यान रहता है। आश्रमके सेवा-कार्यमे रत और निमग्न बा को भी मैंने देखा। गाधीजीने भी मेरे बारेमे पूछताछ करना आरभ किया। धीरे-धीरे सपर्क तथा आकर्षण बढता गया। ज्यो-ज्यो मै उनके जीवनको समालोचक की एक सूक्ष्म दृष्टिसे देखने लगा त्यो-त्यो मुझे अनुभव होने लगा कि उनकी उक्तियो और कृतियो मे समानता है और मेरे "बोले तैसा चाले" इस आदर्शका वहा अस्तित्व है। इस प्रकार सबध तथा आकर्षण बढता गया।

*   *   *   *

महात्माजीके कार्यमे मै अपने आपको विलीन हुआ पाने लगा। वे मेरे जीवनके मार्गदर्शक ही नही, पिता-तुल्य हो गये। मै उनका पाचवा पुत्र बन गया।

*   *   *   *

आज २४ वर्षसे अधिक समय व्यतीत हो गया, जबसे मै महात्माजीके सपर्कमे हू। इन वर्षोमे मैंने उनके जीवनके समस्त क्षेत्रोका अवलोकन किया। मै उनके सहवासमें घूमा, उनके आश्रम-जीवनमें भी

रहा, उनके उपवासोमे उनके निकट रहा, वीमारियोके समय उनकी शुश्रूषामे भाग लेता रहा। उनकी अनेक गहन मत्रणाओका मै साक्षी हू, और उनके सार्वजनिक कार्योका भार मैने शक्ति भर उठाया। सारी अवस्थाओमे उनके अनेक गुणोका मुझपर असर होता ही गया। मेरी श्रद्धा वढती गई। मै अपने आपको उनमे अधिकाधिक विलीन करता ही गया। और आज तो वे मेरे आदर्श है और उनकी आज्ञा मेरा जीवनादर्श है। उनका प्रेम मेरा जीवन है।

महात्माजीमे अनेक अलौकिक गुण है। इस प्रकारके शब्दोसे मै अपने हृदयके सच्चे भाव प्रकट कर रहा हू। पर विरोधकी आशका न करते हुए इतना तो अवश्य कह सकता हू कि उनमे मनुष्योचित गुणोका वहुत वडा समुच्चय है। मानवी गुणोके तो वे हिमालय है। उनकी नियमितता, सार्वजनिक हिसाव रखनेकी सूक्ष्मता, वीमारोकी शुश्रूषा, अतिथियोका सत्कार, विरोधियोंके साथ सद्व्यवहार, विनोद-प्रियता, आकर्षण, स्वच्छता, वारीक निगाह और दृढ निश्चय आदि गुण मुझे उत्तरोत्तर प्रकट होते हुए दिखाई दिये है। महात्माजीमे मैने विरोधी गुण भी देखे है। उनकी अविचल दृढ़ता, कठोरता, अगाध प्रेम और मृदुता की वुनियाद पर खडी है। उनकी पाई-पाईकी कजूसी महान् उदारताके जलसे सिचित है और उनकी सादगी सौदर्यसे पोपित है।

* * * *

महात्माजीके प्रति अगर मेरा खाली आदर भाव ही रहता तो उनके विषयमे मै कुछ विशेप लिख सकता। पर महात्माजीने मुझे इस तरहसे अपनाया है कि उनके प्रति मेरे मनमे पिता और गुरुके समान ही भाव पैदा होता है।

वचपनसे ही सार्वजनिक जीवनका प्रेम होनेके कारण वहुतसे सरकारी प्रतिष्ठित कर्मचारी तथा देशके प्रख्यात नेतागणसे मेरा परिचय हुआ। पूज्य लोकमान्य तिलक महाराज और भारतभूपण मालवीयजी जैसे महान् पुरुषोका परिचय मेरे लिए लाभदायक हुआ। लेकिन महात्माजीने तो मेरी मनोभूमिका ही वदल दी। मेरे मनमे कई वार त्यागके विचार पैदा हुआ करते थे। उन्हे कार्यरूपमे लानेका रास्ता वता दिया। उनका निर्मल चारित्र्य, शीतल तेजस्विता, गरीवोकी कलक, मनुष्य-मात्रसे सत्य-व्यवहार, अनुपम प्रेम और धर्म-श्रद्धा देखकर ही मेरा मन उनकी ओर खिचता गया। मेरे जीवनकी

त्रुटिया मुझे दिखाई देने लगी एव यह महत्त्वाकाक्षा बढने लगी कि इस जीवनमे किस तरह महात्माजीके सहवासके योग्य बन सकू।

* * * *

मेरी रायमे आज भारतमे गरीबोके साथ यदि कोई एक-जीव हुआ है तो वह महात्माजी है। महात्माजी मानो कारुण्यकी मूर्ति है। गरीबोके कष्ट दूर करनेमे अमीरोके साथ भी अन्याय न होने पावे, और भिन्न-भिन्न वर्गोके बीच द्वेषभाव तनिक भी पैदा न हो, इसकी वे हमेशा चिन्ता रखते है। इसी-लिए भारतवर्षके सब धर्म, पन्थ और वर्ग के लोग उनको आत्मीयताकी दृष्टिसे देखते है। चातुर्वर्ण्यका तो मानो उनमे सम्मेलन ही हुआ है। भारतवर्ष पर उनका जो असीम प्रेम है उसके लायक यदि हम भारतवासी बने तो भारतका उद्धार अवश्य हो जाय।

मेरी समझमे तो महात्माजीका सहवास जिसने किया हो, या उनके तत्त्वोको समझनेकी कोशिश की हो, वह कभी निरुत्साही नही हो सकता। वह हमेशा उत्साह-पूर्वक अपना कर्त्तव्यपालन करता रहेगा। क्योकि देशकी स्थितिके सुधरनेमे—स्वराज्य मिलनेमें—भले ही थोडा विलम्ब हो, परन्तु जो व्यक्ति महात्माजीके बताये मार्गसे कार्य करता रहेगा, मुझे विश्वास है कि वह अपनी निजी उन्नति तो जरूर कर लेगा, अर्थात् अपने लिए तो स्वराज्य वह अवश्य पा सकता है।

* * * *

मुझे अपनी कमजोरियोका थोडा ज्ञान रहनेके कारण मैंने बापूको 'गुरु' नही बनाया, न माना, 'बाप' अवश्य माना है। वह भी इसलिए कि शायद उन्हे बाप माननेसे मेरी कमजोरिया हट जावे।

* * * *

मुझे दुनियामे बापू पिता व विनोबा गुरुका प्रेम दे सकते है, अगर मै अपनेको योग्य बना सकू तो।

* * * *

महात्माजीकी अनुपम दयासे आज मै कमसे कम अपनी कमजोरियोको थोडा-बहुत तो पहचानने लग गया हू।

* * * *

जिस दिन मै महात्माजीके पुत्र-वात्सल्यके योग्य हो सकूगा वही समय मेरे जीवनके लिए धन्य होगा।

जमनालाल बजाज

पांचवें पुत्र को

जमनालालजी मेरे पांचवे पुत्र बने। इस स्वेच्छासे गोद आये पुत्रने कितना कुछ किया इसका पता बहुत कम लोगोंको होगा। मैं कह सकता हूं कि इससे पहले किसी मनुष्यको ऐसा पुत्र नसीब नहीं हुआ होगा।

* * * *

जमनालालजीने बिना किसी संकोचके अपने आपको और अपने सर्वस्वको मुझे समर्पित कर दिया था। मेरा शायद ही कोई ऐसा काम होगा, जिसमें मुझे उनका हार्दिक सहयोग न मिला हो, और जो अत्यंत कीमती साबित न हुआ हो।

* * * *

उन्होंने मेरे कामोंको पूरी तरह अपना लिया था। यहांतक कि मुझे कुछ करना ही नहीं पड़ता था। ज्यों ही मैं किसी नये कामको शुरू करता वे उसका बोझा खुद उठा लेते थे। इस तरह मुझे निश्चिंत कर देना मानो उनका जीवन-कार्य ही बन गया था।

* * * *

मेरी इच्छाओंकी पूर्तिके लिए मैं आसानीसे उनपर भरोसा कर सकता था, कारण कि जितना उन्होंने मेरे कामको अपना लिया था, उतना शायद ही और कोई अपना पाया होगा।

* * * *

उनकी बुद्धि कुशाग्र थी। वह सेठ थे। उन्होंने अपनी पर्याप्त संपत्ति मेरे हवाले कर दी थी। वह मेरे समय और मेरे स्वास्थ्यके संरक्षक बन गये। और यह सब उन्होंने सार्वजनिक हितकी खातिर किया।

* * * *

वे बुद्धिशाली भी थे और व्यवहार कुशल भी। वे अपनी जगह पर अद्वितीय थे।

* * * *

वे जिस कामको हाथमे लेते थे उसमे जी-जानसे जुट जाते थे।

*   *   *   *

खादीके काममे उनकी दिलचस्पी मुझमे कम न थी। खादीके लिए जितना समय मैंने दिया उतना ही उन्होने भी दिया। इस कामके पीछे उन्होने मुझसे कम बुद्धि खर्च नही की थी। थोडेमें यह कह लीजिए कि अगर मैंने खादीका मत्र दिया तो जमनालालजीने उसको मूर्तिरूप दिया।

*   *   *   *

जमनालालजीमें छुआछूतको हटाने, साप्रदायिकतासे दूर रहने और सब धर्मोके प्रति समान आदरभाव रखने की जो उत्कृष्ट वृत्ति है वह उन्हे मुझसे नही मिली ह। कोई भी व्यक्ति अपने विश्वास दूसरोको नही सौंप सकता। हा, यह हो सकता है कि जो विश्वास दूसरोंमे पहलेसे मौजूद हो उन्हे प्रकट करनेमें कोई सहायक हो सके। किन्तु जमनालालजीके उदाहरणमे तो मै यह श्रेय भी नही ले सकता कि मैंने उन्हे इन विश्वासोको प्राप्त करने या उन्हे प्रदर्शित करने मे सहायता पहुचाई है। मेरे सपर्कमें आनेसे बहुत पहले ही उनके ये विश्वास बन चुके थे। और उन्होने उनका अनुकरण करना शुरू कर दिया था। उनके इन आतरिक विश्वासोकी बदौलत ही हम एक दूसरेके सपर्कमे आये और हमारे लिए इतने सालोतक घनिष्ठ सहयोगके साथ काम करना सभव हुआ।

*   *   *   *

जिसको राजकाज कहते है वह न मेरा शौक था न उनका। वे उसमे पडे क्योकि मै उसमे था। लेकिन मेरा सच्चा राजकाज तो था रचनात्मक कार्य, और उनका भी राजकाज यही था।

*   *   *   *

वे एक ऐसी साधनामे लगे हुए थे जो कामकाजी आदमीके लिए विरल है। विचार-सयम उनकी एक बडी साधना थी। वे सदा ही अपनेको तस्कर विचारोंसे बचानेकी कोशिशमे रहते थे।

*   *   *   *

जब कभी मैंने यह लिखा है कि धनवानोको सार्वजनिक हितके लिए अपनी सपत्तिका ट्रस्टी या सरक्षक बन जाना चाहिये, तो मेरे दिमागमें सेठ जमनालालजीका उदाहरण मुख्य रूपसे रहा है।

अगर उनका ट्रस्टीपन आदर्श तक नही पहुच पाया तो इसमे कसूर उनका नही था। मैंने जानबूझकर उन्हे रोका। मै यह नही चाहता था कि वह अपने उत्साह या आवेश मे कोई ऐसा कदम उठाये, जिसके लिए ठडे दिमागसे सोचने पर उन्हे अफसोस करना पडे। उनकी सादगी खुद उनकी ही विशेषता थी।

* * * *

जहा तक मुझे मालूम है मै दावेसे कह सकता हू कि उन्होने अनीतिसे एक पाई भी नही कमाई, और जो कुछ कमाया उसे उन्होने जनता-जनार्दनके हितमें ही खर्च किया।

* * * *

जबसे वे पुत्र बने तबसे वे अपनी समस्त प्रवृत्तियोकी चर्चा मुझसे करने लगे थे। अतमे जब उन्होने गो-सेवाके लिए फकीर बननेका निश्चय किया तो वह भी मेरे साथ पूरी तरह सलाह-मशविरा करके ही किया।

* * * *

त्यागकी दृष्टिसे उनका अतिम कार्य सर्वश्रेष्ठ रहा। देशके पशुधनकी रक्षाका कार्य उन्होंने अपने लिए चुना था, और गायको उसका प्रतीक माना था। इस काममे वे इतनी एकाग्रता और लगन के साथ जुट गये थे कि जिसकी कोई मिसाल नही।

* * * *

होना यह चाहिये था कि मै उनके लिए अपनी विरासत छोडकर जाता, पर उसके बदलेमे वे अपनी विरासत मेरे लिए छोड गये।

* * * *

यह मै कैसे कहू कि उनके जानेसे मुझे दु ख नही हुआ। दु ख होना तो स्वाभाविक था। क्योकि मेरे लिए तो वही मेरी कामधेनु थे। लेकिन जब उनके कामोको याद करता हू और हमारे लिए जो सदेश छोड गये है उसका विचार करता हू तो अपना दु ख भूल जाता हू।

बापूके आशीर्वाद

परिचय

बा	कस्तूरबा गांधी
महादेव देसाई ...	गांधीजीके निजी मंत्री
किशोरलाल मशरूवाला	गांधीजीके निकटके साथी जो कभी कभी उनके मंत्रित्वका काम भी करते थे
वालजी गोविंदजी देसाई	गांधीजीके साथी, आश्रमवासी
नारणदास गांधी ..	गांधीजीके भतीजे
प्यारेलाल ..	गांधीजीके निजी मंत्री
मीराबहन (मिस् स्लेड)	गांधीजीकी एक अंग्रेज भक्त व शिष्या
अमृत कौर ..	गांधीजीकी निजी मंत्री
चंद्रशंकर शुक्ल .	कुछ समयके लिए गांधीजीके निजी मंत्री
देवदास गांधी ...	गांधीजीके चौथे पुत्र
सुशीला नय्यर (डॉ)	गांधीजीकी स्वास्थ्य-मंत्री, प्यारेलालजीकी बहन
कृष्णदास गांधी ..	गांधीजीके भतीजे छगनलाल गांधीके दूसरे पुत्र
कनु गांधी	नारणदास गांधीके दूसरे पुत्र
जानकीदेवी बजाज ...	जमनालालजीकी पत्नी
केशवदेव नेवटिया ..	जमनालालजीके समधी
लक्ष्मणप्रसाद पोद्दार	जमनालालजीके समधी
राधाकृष्ण बजाज ...	जमनालालजीके भतीजे
गोदावरी (अनसूया) बजाज	श्रीकृष्णदास जाजूकी पुत्री, राधाकृष्णजीकी पत्नी
रामेश्वरप्रसाद नेवटिया	जमनालालजीके दामाद
कमला नेवटिया ...	जमनालालजीकी बड़ी पुत्री, रामेश्वरप्रसादजीकी [पत्नी
कमलनयन बजाज ...	जमनालालजीके बड़े पुत्र
सावित्री बजाज ..	लक्ष्मणप्रसादजीकी पुत्री, कमलनयनजीकी पत्नी
श्रीमन्नारायण अग्रवाल	जमनालालजीके दामाद
मदालसा अग्रवाल ...	जमनालालजीकी दूसरी पुत्री, श्रीमन्नारायणजीकी [पत्नी
ओम् (उमादेवी) अग्रवाल	जमनालालजीकी तीसरी पुत्री
जगदीश पोद्दार ..	लक्ष्मणप्रसादजीके दूसरे पुत्र
रामकृष्ण बजाज .	जमनालालजीके दूसरे पुत्र
दामोदरदास मूंदड़ा ..	जमनालालजीके निजी मंत्री

विषय-सूची

भाग १

महात्मा गाँधी और जमनालालजी
तथा जानकीदेवी बजाज
का पत्र-व्यवहार

नोट – फाइलोंमें प्राप्त जमनालालजीको लिखा गांधीजीका यह पहला पत्र है। इस पत्रकी प्रतिलिपि सामनेके पृष्ठ पर देखें।

१

मोतीहारी,
श्रावण शुक्ल
(जुलाई १९१७)

सुज्ञ भाई श्री जमनालालजी,

आपका खत और हुडी रुपैया १५००) की मीली है। मै ऋणी हुआ हु। आपका दान हिंदी शिक्षा प्रचारमे ही रखा जायगा। यदि दूसरे कोई इसी हि काम के लीये सिर्फ भेज देंगे और कुछ धन बचेगा तो आपका दान दूसरे कार्योंमे भी खर्चा जायगा। मेरा फीर, वर्धा आनेका होगा तो खबर दे दुगा।

आपका
मोहनदास गाधी

२

अमदावाद,
भाद्रपद शुक्ल
(अगस्त १९१७)

भाई श्री जमनालालजी,

आपका पत्र मीला है। में थोडे दीनोके लीये यहा आया हु। आपको चम्पारन आनेका प्रयोजन नहि है। कमीटी[1] का कार्य वहोतकर अभी समाप्त हो गया है।

आपका

१ चपारन जाच कमिटी।

३

रांची,
भाद्रपद शुक्ल ९
(२५-९-१९१७)

सुज्ञ भाई श्री,

आपका पत्र एक मुंबईमे मैं रेलपर जाता रहा उस वखत मीला था। उस वारेमें मैंने आपके पास मेरा भतीजाको जानेका कह दीया था। अब रामनारायणजीका पत्र आ गया है। ये रखने लायक देख पडते है। थोडी और हकिकत उनके पास मगवाया हु। दो शिक्षक मनेर से मीले है। एक को रख लीया हु। दूसरे की वात कर रहा हु। दो मास के वाद ये आ सकेगे। रामनारायणजी तीसरे होगे। इतने से गुजारा हो जायगा।

आपका

४

सावरमती,
महाकृष्ण १३
(१०-३-१९१८)

भाई जमनालालजी,

आपका खत का उत्तर देने मे देरी हुई है। मै यहा दो वडे कार्य में गीरफतार हो गया हु। मुझे क्षमा कीजीयेगा। पुस्तकालयके लीये मेरा नाम रखना उचित हो तो वैसा कीजीये।

५

सावरमती,
माघ कृष्ण
(मार्च १९१८)

सुज्ञ भाई श्री,

आपका पत्र मीला है। मेरा नागपुर आनेका मोकुफ रहा है। इस वखत तो यहा का कार्य मेरी सब क्षण ले लेता है। मजदुरोकी हडताल[1] चल रही है और खेडामे[2] कीसानो पर सरकार का जुल्म चल रहा है। दोनो कार्य भारी है।

आपका

[1] देखिये 'एक धर्म युद्ध'। [2] देखिये 'खेडानी लडत'।

: ६ :
अ

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

सावरमती,
जेठ सुद १०
(१९-६-१९१८)

भाई श्री ५ जमनालालजी,

टीकटना पैसा तमारा माणमने में आग्रहपूर्वक चूकव्या। जो एम न करू तो वगर सकोचे हु वीजा कामो सोंपी न शकु।

अहि आवी वाघकामनो हिसाव तपास्यो। मारी पासे रु २८,०००)

आव्या छे। खर्च रु ४०,००० थई गयु छे। वीजु खर्च आश्रमनी वीजी प्रवृत्तिना नाणा छे तेमाथी थयु छे। मने अत्यारे खरी जरुर वाधकामने सारु पैसानी छे। खर्च एक लाखनु छे। आमा तमारे कई आपवानी इच्छा होय तो मोकलशोजी।

मोहनदासना वंदेमातरम्

मारी मुसाफरीनु खर्च उपाडो तेना करता आ विशेष जरूरनु छे।

मोहनदास

१७

नडीयाद,
ज्येष्ट कृ ६
(३०-६-१९१८)

भाई श्री जमनालालजी,

आपका पत्र मीला है। यदि रेलवे खर्च के लीये जो रकम जमा कीई हैं वही रकम वाधकामके खर्चमे दे सकते हो तो मेरी तकलीफ दूर होती है। दूसरे मित्रोको भी मैंने लीखा है। भाई शकरलाल वकरने रु ४००० भेज दीया है। भाई अवालालजी रु ५००० भेज रहे है। इससे जो खर्च हो गया है उसमे मदद मीलती है। दूसरे दो मित्रसे भी आशा रखता हु। यदि आप इस २५००० रु वाधकाममे दे दे तो मैं वहोतकर निश्चित हो सकता हु। रेल खर्चकी आवश्यकता नहि है। यह खर्च साधारण आमदनी मे से चलता है।

मेरे लीखने से देना ही चाहिये ऐसा नहि समजना। यदि आप वेसकोच वाधकाममें दे सकते हो तभीज देना।

१८

नडीयाद,
अपाड शुक्ल १०
(१८-७-१९१८)

सुज्ञ भाई श्री जमनालालजी,

मैं मुवईसे कल रातको आया। भ्रमणमे रहनेसे पत्र आज तक नहि लीख सका। आपका पत्र आनेसे मैं निश्चित हो गया हु। भाई अवालालजीने रु. ५००० भेज दीये है और भाई शकरलाल वेकरने रु ४००० दीये है।

जिन भाई मेरी भिक्षाका अनादर नहि करते हैं उनको मेरी जरुरीयत सुनाने में मुझको सकोच लगता है, न सुनाना अशक्य होता है। इस लीये मेरी तिव्र इच्छा है की जब मेरी भिक्षा स्वीकारने में हरज हो उस वखत अस्वीकार करनेसे मेरी पर अनुग्रह होगा।

आपका दर्द तो अब तद्दन नष्ट हुआ होगा।

आपका

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

नडीयाद,
अषाड कृ ४
(२७–७–१९१८)

भाई श्री जमनालालजी,

आपके प्रेमभावसे मैं लज्जित होता हु । मैं इतना प्रेमके लीये लायक बनु एसा चाहता हु–प्रभूजीसे मागता हु । आपकी भक्ति आपको हमेशा नीतिमार्गमें ,आगे ले जायगी ऐसी मै आशा रखता हु ।

मारवाडमे विद्याप्रचारका कार्यकी सफलताके लिये अच्छा व्यवस्थापककी आवश्यकता है ।

भरतीका कार्य[१] बहुत धीमा चलता है। करीब १५० तक हुए होंगे। कोईको अब तक भेजे गये नहि है। गुजरातीओ की एक बेटेलीयन बनानेकी तजवीज कर रहा हु।

आपका
मोहनदास गांधी

१०.

अहमदाबाद,
श्रावण कृष्ण ७
(२८–८–१९१८)

भाई जमनालालजी,

आपका पत्र और ५००० रुपयेकी हुंडी मिले है । देरी होने से कुछ हानि नहि हुइ, मेरी तबीअत के लिये निश्चिंत रहेना। दिन प्रतिदिन अच्छी होती जाती है । और थोडा रोज तक बिछाने में रहना पडेगा । अशक्ति बहुत आगइ है।

आपका
मोहनदास गांधी

१ पहले विश्वयुद्धके समय गांधीजी खेडा जिलेमें रंगरूटोंकी भरतीका काम कर रहे थे।

• ११

नोट – फाइलोंमें प्राप्त जमनालालजीको लिखा महादेव भाईका यह पहला पत्र है।

पाचवें पुत्रको-

१२

नोट'- फाइलोंमें प्राप्त गांधीजीको लिखा जमनालालजीका यह पहला पत्र है।

(उपरोक्त दोनों पत्रोंकी प्रतिलिपि)

: ११ :

शातिनिकेतन,

बोलपुर, ता १५

प्रिय भाइसाहेब जमनालालजी, (१५-९-१९२०)

आपका तार मिला। बापूजीका स्वास्थ्य अबतक अच्छा नही है। खासी पीछा नही छोडती है। आजकल यहासे आश्रमको चले जायगे, ऐसा विचार किया है, और यहासे फौरन जायगे तो वर्धासे नही जाना होगा, वर्द्धासे जबलपुर लाइनपरसे जाना होगा।

पडित विशनदत्त शुक्लजीका मन कुछ दुविधामे पडा है, ऐसा मालूम होता है। उन्होने एक पत्र लिखके बापूजीको निवेदन किया है कि यदि उनका अन्तःकरण असहकारकी कुछ बाते न ग्रहण करे तो क्षमा कीजिएगा। उनका पत्र तो उनकी अनुमति के बिना नही प्रसिद्ध होगा ऐसी उन्हे खात्री दी गई है।

आपका सेवक
महादेव देशाई

: १२ :

श्रीहरि

वर्धा,

मि भा शु १२, स १९७७

ता २८-९-२०

पूज्य श्री बापूजी,

सविनय प्रणाम। आपका स्वास्थ्य अब ठीक होवेगा। आप बम्बई कब तक जावेगे व आगे क्या प्रोग्राम (कार्यक्रम) है? आजरोज डॉ मुजे नागपुर के कहनेसे तार आपको दिया है। यह पान्डीचेरी श्री अरविन्द घोषको नागपुर कॉंग्रेसके सभापतिके लिये आग्रह करने गये है। अगर आप मुनासिब समझे तो श्री अरविन्द घोषको यह पद स्वीकार करनेके लिये तार देनेके लिये लिखा है। सभव है आपने तार दिया होगा? कृपया लिखियेगा। आपकी रायसे नागपुर कॉंग्रेसके सभापति किन सज्जनको होना चाहिये?

२ डाक्टर मुजे आज मुझसे कहते थे कि कई मित्रोकी राय है कि मै स्वागतकारिणी सभाका सभापति बनाया जाऊ। इसपर वह मेरी राय पूछते थे। मैने उन्हे कहा है कि मै इस पदके लिये मुझको योग्य

नही समझता हु। कारण एक तो मेरा विद्याध्ययन वहुत कम है, दूसरे मे अवस्था व अनुभव भी कम है। इसपर उनका कहना पडा कि हिन्दीमे तुम अपना भाषण पढ सकते हो। स्वामी श्रद्धानदजीने भी हिन्दीमे भाषण दिया था। हिन्दीमे भाषण ठीक होवेगा। व दूसरा कारण उन्होने यह कहा कि इस प्रातका व्यापारीवर्ग वहुत डरता है–खासकर मारवाडी समाज। वह पैसे देनेको तयार है, परतु आगे आना नही चाहते। अगर तुम हो जावोगे तो व्यापारी समाजपर भी असर होवेगा व वह भी आगे आने लग जावेंगे--इस तरह इनका व और मित्रोका कहना है। मै जहा तक सोचता हू वहा तक मेरा मन मुझे इस पदके योग्य नही वताता। मैने इस पदके लिये श्री शुक्लाजीके लिये सोच रखा है। परतु वह कौसिल के लिए खडा रहना चाहते है। उन्हे असहयोगमें हाल तक श्रद्धा नही है। इसलिये आप सव वातोका विचार कर जो उचित समझे वह लिख भेजें। आपका पत्र आनेपर मै पूर्ण तौरसे आपकी आज्ञापर विचार करूगा। पत्र ता २९ तक पहुचना चाहिये। अगर पत्र नही पहुच सकता हो तो आप उचित समझें तो तार द्वारा अपनी राय लिख भेजियेगा।

आपका
जमनालाल बजाज

१३

AHMEDABAD,
25-9-20

JAMNALAL,
BACHHRAJ, WARDHAGANJ

Have wired Aravinda Ghosh. Health very much better.

—*Gandhi*

१४

आश्रम,
ता २५-९-२०

कृपावत भाइसाहेव जमनालालजी,

आज पडित विशनदत्त शुक्लजीका पत्र आया है, वह आपको भेजता हू। उनको आज एक तार भेज दिया गया है कि "जमनालालजीने अपना पत्र प्रसिद्ध करनेकी इजाजत दे दी है और उसके मुताविक मैं उनका पत्र ३० मितवरको प्रसिद्ध कर दूगा। यदि आप चाहे कि वह भी प्रसिद्ध न हो तो जमनालालजीसे वात करके उनको हमको तार भेज देनेको कहिएगा।" आपकी क्या राय है?

आज आपका तार आया। उसका उत्तर भी भेज दिया है। पू. अरविंद घोषको एक तार दिया गया है।

बापूजीका स्वास्थ्य आजकल खूब सुधर गया है। खासी थोडीसी है। यहा खूब आराम करते है, और चार-पाच रोज और ठहरेगे इतने समयमें स्वास्थ्य बिलकुल ठीक हो जायगा।

दो और तीन अक्टूबरको बापूजी मुबईमें होगे। पीछे यु पी और बिहारका दौरा है।

आपका

: १५ :

AHMEDABAD,
27-9-20

JAMNALAL,
BACHHRAJ, WARDHAGANJ

If Shuklaji does not accept you may accept.

—*Gandhi*

१६

आश्रम,
२७ सितबर (१९२०)

प्रिय भाइसाहेब,

आपका पत्र मुझे और महात्माजीको मिला। तार आपको भेजा गया है। आपको अध्यक्षपद लेनेकी समति दी गई है, उसका मुख्य कारण यह है कि कोइ अयोग्य मनुष्य आ जाय वह इच्छनीय नही है। आप जो वय और अज्ञान (कम विद्याभ्यास) की दलील करते है वे उनको स्वीकार्य नही है। सिर्फ एक दलील थी–वह यह है कि वहाका वातावरण शायद आपके लिये सपूर्ण निर्मल न हो। लेकिन आजकी स्थिति मे वह भी बरदास्त कर लेना होगा। बापूजी समझते है आप जरूर हिंदीमें व्याख्यान तैयार कर सकते है और उसका अच्छा इग्रेजी अनुवाद करवाके भेंट पर बाट सकते है।

प्रणाम सह–

आपका

पांचवें पुत्रको—

नोट—१ गांधीजीने यह पत्र अंडर ट्रायल कैदीकी हालतमें लिखा था और इसे जेल-सुपरिन्टेन्डेन्टने १७–३–२२ को सही करके भिजवाया था।

२ यह पूरा पत्र पेन्सिलसे लिखा होनेकी वजहसे इसका ब्लॉक ठीक नहीं बन सकता था। मूल पत्रकी नकल करके उसपरसे यह ब्लॉक बनाया गया है।

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

(साबरमती जेल)
गुरुवारनी रात
(१६-३-१९२२)

चि जमनालाल,

जेम हु सत्यनी शोध करतो जाउ छु तेम तेम मने भासे छे के तेमा बधु आवी जाय छे। अहिंसामा ते नथी पण तेमा अहिसा छे एम घणी वेळा भासे छे। निर्मळ अत करणने जे समे जे लागे ते सत्य। तेने वळगता शुद्ध सत्य मळी आवेछे। तेमा क्याए धर्म सकट पण नथी जोतो। पण अहिंसा कोने कहेवी तेनो निर्णय करता घणी वेळा मुर्शकेल आवे छे। जतुनाशक पाणीनो उपयोग ए पण हिंसा छे। हिसामय जगत्मा अहिंसामय थईने रहेवानु रह्यु। ते तो सत्यने वळगवाथीज थाय। तेथी हु तो सत्यमाथी अहिंसा घटावी शकु छु। सत्यमाथी प्रेम मळे छे। सत्यमाथी मृदुता मळे छे। सत्यवादी, सत्याग्रही तद्दन नम्र होवो जोईए। तेनु सत्य जेम वधे तेम ते नमतो जाय। आ हु क्षणे क्षणे अनुभवी रह्यो छु। मने अत्यारे सत्यनो जेटलो ख्याल छे तेटलो वर्ष पहेला न हतो अने अत्यारे मारी अल्पता मने लागे छे तेटली एक वर्ष पहेला नहोती लागती।

ब्रह्म सत्य, जगन्मिथ्या ए वाक्यनो चमत्कार मने दीवसे-दीवसे वधनो जतो लागे छे।

तेथी आपणे हमेशा धीरज राखवी। धीरज राखता आपणामायी कठोरता चाली जशे। ते जता आपणामा सहिष्णुता वधशे। आपणी भूलो आपणने पहाड जेवडी लागशे ने जगत्नी राई जेवडी लागशे। शरीरनी स्थिति अहकारने लईने सभवे छे। शरीरनो आत्यतिक नाश ए मोक्ष। अहकारनो आत्यतिक नाश जेनामा थयो छे एतो सत्यनी मूर्ति थई रहे छे। एने ब्रह्म कहेवामा ए बाध न होय। तेथीज ईश्वरनु रुड नाम तो दासानुदास छे।

स्त्री पुत्र मित्र परिग्रह बधु ए सत्यने आधीन रहेवु जोइए। सत्यने शोधता ते बधानो सर्वथा त्याग करवा तत्पर रहीये तोज सत्याग्रही थवाय।

आ धर्मनु पालन प्रमाणमा सहज थई जाय एवा हेतुथी हु आ प्रवृत्तिमा पड्यो छु ने तमारा जेवाने होमता अचकातो नथी। तेनु बाह्य स्वरूप हिंद स्वराज छे। तेनु खरु स्वरूप ते ते व्यक्तिनु स्वराज छे। हजु

एक पण एवो शुद्ध सत्याग्रही नथी पाक्यो तेथी ढील थाय छे। पण तेथी गभरावानु जराए कारण नथी। ते तो वधारे प्रयत्ननु कारण छे।

तमे पाचमा पुत्र तो थयाज छो। पण हु लायक वनवा प्रयत्न करी रह्यो छु। दत्तक लेनारनी उपर जवाबदारी कई जेवी तेवी नथी। ईश्वर मने सहाय थाओ ने हु तेवो लायक आ जन्मे ज वनु।

वापुना आशीर्वाद

१८

सावरमती जेल,
१८-३-२२

भाइ जमनालाल,

केवल आर्थिक दृष्टि से में कह सकता हु की यदि विदेसी सुत और कपडो का व्यापार करने वाले अपना व्यापार को नहि छोडेंगे और जनता विदेसी कपडा का मोह को नहि छोडेंगे तो मुलक की महाविमारी भूख हरगीज हट नहि सकती है। मेरी उमेद है सव वेपारी खद्दर और चरखा प्रचारमे पूरा हिस्सा देगे।

आपका

१९

ता ४-१०-२२,
आ शु १३

पूज्य वापूसे यरवडा (पूना) जेलमे मुलाकातके नोट—

२-३५ के करीव वापूको ऑफिसमें वडे दरवाजेके पास लाये। हम पाच जन याने पूज्य वा, रामदास, किशोरलालभाई, पुजाभाई और मैं, इतने तो कायदेके अनुसार मिलने वाले थे ही। इसके सिवाय मणिलाल कोठारी, इमाम साहव, दास्ताने (भुसावल), रामनिवासकी माता सुवटावाई, किशनलाल गोयनका भी आये थे, दूरसे दर्शन होनेकी उम्मीदसे। लेकिन जेलरकी कृपासे इनको वापूके दर्शन तथा पैर छूने और थोडी वात करनेका मौका मिल गया।

वापू और हमलोग २-४० को ऊपर ऑफिसमे आये। सव जने कुर्सियोपर वैठे। रामदासको वापूने अपनी कुर्सीपर (गोदमें) वैठाया। उस समय वहा कुर्सिया कम थी। वापू पहले तो सवके साथ जनरल

(सर्वसाधारण) वार्ता करने लगे। बादमे मैने प्रत्येकसे निवेदन किया कि आप एक एक सज्जन बात कर ले, जिससे आपकी बाते भी पूरी हो जाय और बापू . . से भी कर सके।

पहिले पुजाभाईने शुरू किया। बादमें किशोरलाल भाईने। उन्होने समय अधिक लिया। आश्रम, काका, मगनभाई, सुरेन्द्र आदिके सदेश कहे।

स्वामी आनद, काका कालेलकर, नवजीवन प्रेस का ट्रस्ट करने तथा शकरलालका सम्बन्ध नही रखने एव २५ हजार विद्यापीठको देनेके बारेमे सूचना दी।

भनसाली बीमार है, यरवडा बदल दिये गये, यह कहा। पूज्य बाने बात शुरू की। हरीलालका पत्र बतलाया। रामदासकी सगाई वहलकी चर्चा की। रामदासको आगे क्या कार्य करना चाहिये—उस बारेमे चर्चा की। रामदासने खुलासा किया कि उसका विवाहके बारेमे क्या विचार है। मणिलालका विचार पहले . ठीक है।

रामदासने कहा—मुझे आश्रममे रहना निर्जीव सरीखा मालूम होता है। मन नही लगता। बापूने और बाने कहा, मेरे (जमनालालजीके) पास रहने के लिये। रामदासने कहा—मेरा राजगोपालाचार्यपर पूज्यभाव होता है। उन्हे देखकर श्रद्धा पैदा होती है। उनके पास रहनेका विचार है। बाकी इच्छा इतनी दूर रखनेकी नही मालूम हुई। बापूने यह प्रस्ताव भी पसन्द किया। सीखनेके लिये वहा रह सकता है। व्यवहारमे पडना चाहो तो मेरे (जमनालालजी के) पास। इस तरह अपनी राय दी।

इसके बाद मुझसे बाते शुरू हुई।

१ सबसे पहले मैने गुरुका बाग, अकाली सिक्खोका हाल बताया। उन्हे सुनकर सतोष हुआ। मार पीट, वर्किग कमेटी . ... मालवीयजी आदिके कार्यकी सब स्थिति थोडेमे कही।

२ टर्कीके बारेमें थोडा कहा तो उन्होने कहा—मुझे मालूम है। मॅजिस्ट्रेट आये थे, उन्होने सब बताया है।

३ नवजीवन प्रेसके ट्रस्टके बारेमें उन्होने कहा—मेरी रायसे इसमे शकरलाल की सलाह भी लेनी चाहिये। किशोरलालभाईने कहा—काका और स्वामी, उनका सबध रहा तो अपना सबध रखना नही चाहते। बापूने कहा—जब स्वामी आनद तो वैसा करनेको कहा।

विद्यापीठका स्वामी आनन्दकी सलाहसे तुम्हारे लोगोंके .. सो दे देना, बाकी देना ठीक रहेगा, ऐसा कहा।

४ यंग इंडिया, नवजीवन और हिन्दी नवजीवनका थोड़ेमे हाल कहा। उन्हे राजगोपालाचार्य और काकाकी ओरसे सतोष हुआ।

५ रामदासका नवजीवन प्रेसके मुद्रक और नवजीवन पत्रके सम्पादकमे नाम है। रामदास निकलना चाहता है, उसका कारण कहा। बापूने कहा—मुझे रामदासके नामसे सतोष है। उसका नाम जरूर रहना चाहिये। मेरा धोरण सभालना चाहिये। रामदासने कहा—मेरी समझ थी कि आपको मेरा नाम पसन्द नही आया। उन्होंने कहा—यह गलत है। मुझे बहुत सन्तोष हुआ कि तुम्हे भी जेल जानेका वारसा मिला। मेरा कहना इतना ही था कि * * की बहुत इच्छा थी, इसलिये उनसे पूछ लेना ठीक था। अब मेरी रायमे नाम बदलना जरूरी नही। उसने कहा—मेरी परिस्थिति बदलने वाली है। तब उन्होने कहा—उस समय अगर तुम लोगोको बदलनेकी जरूरत मालूम दे, तो बदल सकते हो। परतु अभी बदलनेकी जरूरत नही।

६ कौंसिलके बारेमे उनसे कहा कि नागपुर प्रान्त अब हमारे तात्रेमे आ गया है (हसे)। उन्होने पूछा—दासका क्या मत है? मैंने कहा—अभी उन्होने डिक्लेयर तो नही किया है, परन्तु वह जाना पसन्द करते है। उन्होने पूछा—पडितजी (मोतीलालजी) का क्या मत है? मैंने कहा—वह जाना पसद नही करते। आपका क्या मत है? तब उन्होने कहा—मेरा मत पहलेसे भी अब अधिक दृढ होता जाता है। अगर मुझे कुछ भी फेर-बदल करना आवश्यक मालूम होगा तो मै यह खबर तुम लोगोंके पास सुपरिन्टेन्डेन्टकी परवानगीसे भिजवा दूगा। परतु तुम लोग अब परिस्थिति देखकर अपना विचार करो। मेरे इस विचारका प्रचार मत करो। दाससे मिलो तो उन्हे कहना, मेरा तो वही निश्चय है, जो मेरी उनसे खानगी बात हुई थी, तब था।

मैंने कहा—श्री दासको काश्मीर जानेके लिये लिखित अन्डरटेकिंग (करारनामा) सही करनेके बारेमे कहा गया। उन्होने सही नही की, तथा स्वास्थ्य खराब होते हुए भी वापस लौट आये। इससे बापूको सतोष हुआ। परतु उनके स्वास्थ्यकी ओरसे चिन्तित थे।

७ गुजरात विद्यापीठके चन्देका हाल मालूम हुआ। संतोष हुआ। पुंजाभाईके पूछनेपर उन्होने कहा—इसे खूब अच्छे ढगसे करना होगा। इमारत बांधनी होगी, और जमीन लेनी होगी आदि।

८ खादी डिपार्टमेंटके कार्यका थोडेमें हाल कहा। मथुरादास (कालीकटवाले) की प्रशंसा की, तब उन्होने कहा—गुरुसे चेला बढ गया। सदानन्दके बारेमें कहा—लडका अच्छा है, परंतु आलसी है। उन्होने कहा—बाहर आनेपर तुम्हारी झडती ली जावेगी।

९ रामदासके विवाहके बारेमें पूछा तो उन्होने कहा—मोढ जातिमे अच्छी योग्य कन्या नही मिले तो दूसरी जातिमे करनेमे कोई हर्ज नही। जैन जातिमे करना तो मैं पसन्द करता हू। इसके लिये बाके तथा रामदास के विचारको विशेष महत्व देना चाहिये।

१० मैंने कहा—वर्धा आश्रमका कार्य संतोषजनक होता है। विनोबाका स्वास्थ्य ठीक है। दूध, फल लेते हैं। बापूने कहा—विनोबा को कहना, मुझे दूध, फल लेनेमे भी सन्तोष है। अगर तबीयत बिगाड ली तो योग भ्रष्ट हो जायेंगे। शरीरको सभालना।

११ परशरामका सग्रह करनेके बारेमे कहा—उसमें त्रुटियां हैं परंतु सग्रह करना चाहिये। किशोरी साथ रहे तो अच्छा है। वह जिद्दी है। नही बनेगी तो पीहर (मायके) चली जायगी।

१२ प्यारेलालको कहना, माताजीको अहमदाबाद बुला लेवे। रहनेकी व्यवस्था कर देना।

१३ राजेन्द्रबाबूको लिखना, बापूका हुकम है कि शरीर स्वास्थ्य की पूर्ण रक्षा करें। आराम लेवे।

१४ बापूने कहा—बीचमे मैंने १५ दिन मौन लिया था। सात रोजमे एक बार बोलता था। मुझे आराम मालूम होता था।

१५ दीया रातको नही देते। मेरी इच्छा है, दीया मिलना चाहिये। सुबह मगन आदिको तकलीफ होती है। तुम्हे छपानेका अधिकार है, परंतु अभी मत छपाना। मैं फिर कोशिश कर देखूगा।

१६ अखबार मुझे नही मिलते पर मैं चाहता हू। सिर्फ एक मासिक पत्रिका 'सरस्वती' मिली थी। मासिक भिजवाना।

१७ सूत अब बाहर नही जाने देंगे। कारण सुपरिन्टेन्डेन्टने कहा कि सूतकी जाहिरात करके रुपये किये (बनाये) गये। मैंने कहा—यह बात

बिलकुल झूठ है। हमने एक तार भी नही बेचा या दिया। उन्होंने कहा–मैं सुपरिन्टेन्डेन्टसे बात करुगा। परन्तु अब सूत जेलमे ही रख लेवेगे।

१८ बापूने कहा–मैं अब ज्यादा पीजता हू, कातता कम हू। कारण, शकरलालको तो २ घटा कातनेका व्रत है, मुझे तो व्रत नही है। इसलिये मैं ज्यादा पीजता हू, २ घटे। १ घटा कातता हू।

१९ जोसेफकी स्त्रीको २०० रु महावार भेजा जाता है।

२० महादेव वगैरह लखनऊ चले गये। दुर्गा पीहरमें है। उसका भाई मर गया–आदि।

२१ बापूने कहा–यह करना या यह न करना, इसबारेमें मन शकित हो तो 'ढक नाखवो'– पैसा चितपट डालना या किसी छोटे बालकके हाथसे ईश्वरको याद कर चिट्ठी निकालना। श्रद्धा रखकर इस मुताबिक काम करना। मैंने (जमनालालजीने) कई बार ऐसा किया है–छुटपनमे।[1]

२०

ब आसो सुद १४, गुरुवार
(५–१०–१९२२)

(सुपरिन्टेडन्टनी रजा मेळवी आ कागळ मोकलु छु।)

चि. जमनालाल,

मोहने वश थईने रामदास बाबत मैं उतावळे गई काले मारा विचारो दर्शाव्या। आपणे छूटा पड्या पछी हु पस्तायो ने जोयु के पोताने खबरदार गणतो माणस पण केम मुग्ध थई शके छे ने केम वगर विचार्यु बोली शके छे। पिता तरीकेनो मारो धर्म मे गई काले न बजाव्यो–मने लागे छे के ज्यासुधी चि रामदासे पोतानी जिंदगीनो आदर्श नथी घडी काढ्यो ने पोतानी इच्छा प्रमाणे ठेकाणे नथी पड्यो त्यासुधी ते परणे तो पाप करे। ते मारी आबरूथी नही पण पोताना गुणे करीने परणे एम ते इच्छे छे, ने आपणे बधा इच्छीये। तेथी रामदासे घणो पसद करी लेवो जोईए। ते उपरथी दीकरी आपनार माबाप विचारे ने कन्या पोते पण जाणे के तेने क्या जवु छे। तेथी आपणु बधानु ने हवे तो तमे जे बहार छो तेनु प्रथम कार्य रामदासने ठेकाणे पाडवामा मदद करवानु छे। रामदासने भणतरनो लोभ होय

१ ये नोट जमनालालजीने स्वय लिखे थे और उनके हस्ताक्षरोंमें ही प्राप्य है। जहा मूल नोटमें पढा नही जा सका वहा . छिए गए है।

तो मुखेथी भणे। जो तेनो वुढो वाप आज वाळकनी पेठे अभ्यास करी रह्यो छे तो रामदासनी जुवानी तो हजु शरू थाय छे। जो तेने वेपारमा रोकाई जवु होय तो रोकाई जाय अने आश्रममा के राष्ट्रीय शाळामा तेनो जीव खुचे तो तेम करे। हरिलाल साथे रहेवु होय तो तेम करे। मारी खास सलाह छे के कोई पण कार्यमा रामदास रोकाई एक वर्षनो अनुभव लीधा पछीज सगाईनो विचार करे।

धनिक मावापनी दीकरी चारित्रवान होय तोपण ज्यासुधी ते पोते गरीबाई पसद न करे त्यामुधी रामदासे एवा लग्नमा पडवु ए पोते दुखी थवा जेवु छे। अने कन्याने तथा कन्याना मावापने दुखी करवा जेवु छे। सहिसलामत रस्तो तो मने एज लागे छे के गरीबमा गरीब कुटुबमाथी गुणवती कन्या शोधी काढवी ने ते शोधता वखत जाय तेनी परवा न राखवी।

वानी प्रत्ये पण हु खोटा मोहमा पड्यो। तेना प्रत्ये मारे कसाइपणुज वापरवामा धर्म छे एम मानु छु। मावापे पोताना स्वार्थ ने सारु प्रजानी गति के इच्छाने न रोकवी जोईए। वाने में उलटी घडी भर काले उत्तेजन आप्यु। वाए कडवो घुटडो पीने रामदासनो वियोग पण सतोष राखी सहन करवो ए मारी सलाह छे। रामदास राजगोपालाचारी जेवा चारित्रवान पासे जई सुखी थाय तेमा वाए तेने आशीर्वाद आपवो एवी मारी सलाह छे। तेमा वानु परम श्रेय छे। तेने सद्गुणी छोकरो छे एमाज सतोष माने। तेमनो सग मळवो एज वने तेवु छे।

तमे इच्छाए वीजा देवदास थवानु मागी लीधु छे। हवे जुओ के ए केवु भारे थई पडे छे। वधा छोकराओनी गरज तमारे सारवानी रही छे। तमने ईश्वर सहाय करो। हु तमारा प्रेमने लायक थवा प्रयत्न कर्याज करु छु।

तमारी धार्मिक भावना विषे —

अपवित्र विचारमाथी जे मुक्त थाय तेणे मोक्ष मेळव्यो समजो। अपवित्र विचारोनो सर्वथा नाश घणी तपश्चर्याथी थाय। तेनो उपाय एकज छे। ज्यारे अपवित्र विचार आवे त्यारे तेनी सामे तुरत पवित्र विचार खडो करवो। ए ईश्वर प्रसादी होय तोज वने। ते प्रसादी चोवीसे कलाक ईश्वरनु नाम लेवाथी ने ते अन्तर्यामी छे एम जाणी लेवाथीज मळे। भले रामनाम जीभेज आवीने मनमा वीजा विचार आवे, जीभे रामनाम लेवु

ए एटला प्रयत्नपूर्वक के छेवटे जे जीभे छे ते हृदयमा पण प्रथम स्थान ले। वळी मन गमे तेटला फाफा मारे छता एक पण इन्द्रिय मोपवीज नहीं। मन लई जाय त्या जे माणम इन्द्रियोने जवा दे तेनो नाशज सभवे, पण ज्यानुधी माणम इन्द्रियोने बलात्कारे पण कबजामा राखे छे ते कोई दिवस पण अपवित्र विचारोने तावे करशे। हु तो जाणु छु के आज पण जो हु मारा विचारो प्रमाणे इन्द्रियोने मोकळी मूकु तो मारो आजेज नाश थाय। अपवित्र विचारो आवे तेथी बळवु नहीं पण वधारे उत्साही थवु। प्रयत्ननु क्षेत्र आपणी पासे छे। परिणामनु क्षेत्र ईश्वरे पोताने हस्तक राख्यु छे, एटले तेनी चिन्ता न करशो। ज्यारे अपवित्र विचार आवे त्यारे एम पण समजो, के तमे जानकीबाई प्रत्ये बेवफा थाओ छो। अने साधु पति पोतानी पत्नी प्रत्ये बेवफा नज थाय। तमे साधु छो। प्राकृत उपायो जाणोज छो। अल्पाहारज करवो। दृष्टि केवल पोतानी सामेनी जमीन उपर राखीनेज चालवु। आख मलीन थवा जाय तो तेने फोडी नाखवा जेटलो तेनी उपर क्रोध करवो। निरन्तर पवित्र पुस्तकोनोज सग राखवो। ईश्वर तमारु सर्व प्रकारे रक्षण करो।[1]

शुभेच्छक

बापुना आशीर्वाद

२१

श्रीहरि

वर्धा,

का शु ५, बुधवार,

(१९७९)

ता २५–१०–२२

पूज्य श्री बापूजी,

सविनय प्रणाम। आपका पत्र मुझे यथा समय मिल गया था (जो कि पता बराबर नहीं था)। भाई रामदास व पूज्य बाको आपकी लिखी हुई सूचना पसद आई, उसके मुताबिक ही वे प्रयत्न करेंगे। मैं आश्रम दो रोज के लिये गया था। सब बातें खुलासेवार की थीं। भाई रामदासका पत्र इस पत्रके साथ है। उससे आपको खुलासा हाल मालूम हो

[1] जमनालालजीने अपनी रोजमराकी प्रार्थना पुस्तकमें उपरोक्त पत्रकी नकल कर रखी थी।

जायगा। पू मगनलालभाईकी व मेरी इच्छा है कि रामदास अभी आश्रममें रहकर कातना, पीजना, बुनना पहले सीख ले। उसके बाद जहा उसकी मर्जी हो वहा रहे। आशा है इसमें सफलता मिलेगी।

मेरे बारेमे आपने जो रास्ते बतलाये उनका मैं उपयोग करूगा और अवश्य उस मार्गसे लाभ पहुचेगा। परतु अभी तो यही लज्जा आती है कि मनकी ऐसी हालतमे मुझे आपका पुत्र बननेका क्या अधिकार था ? मैंने आपपर तो जवाबदारी डाल ही दी, परतु वास्तविक जवाबदारी मुझपर है। आपके आशीर्वादसे ईश्वर जब यह ताकत दे देगा, उस रोज शान्ति मिलेगी। बाहर मन भटके तो बलात्कारसे, इज्जतके डरसे ही रोकना भाग पड़ता है, परतु मेरी इच्छा तो यह है कि घरमें रहकर भी मै इससे (काम-वासनासे) हमेशाके लिये मुक्त हो जाऊ। पर अभी तो सबसे कठिन यही बात मालूम होती है। परतु परमात्मापर श्रद्धा बढनेसे अवश्य कोई दिन इसका निटकारा आवेगा ही, आप चिंता न करे। आपके पवित्र आशीर्वादसे कठिनसे कठिन कार्यमे भी अवश्य सफलता मिलेगी।

पूज्य मगनभाई, विनोबा आदिका प्रणाम स्वीकार करें। विनोबाको आपका सदेशा कह दिया है। उस माफक वह प्रयत्न रखेंगे। औरोको भी सदेशा—स्वास्थ्य आदिके विषयमे कहे मुताबिक दे दिया है। कमलाकी माता और बच्चोका प्रणाम स्वीकारे। शकरलालभाईको प्रणाम कहे। इनसे मुझे खूब ईर्ष्या होती है। बाहर आनेपर इनसे लडाई करूगा। दोनो आश्रमोका कार्य सतोषकारक चल रहा है।

आपका

[signature]

: २२ :

अ

शनीवार

(जवाब दिया ६-८-१९२४)

चि जमनालाल,

तमे कानपुर जवानो इरादो छोडी दीधो ए ठीक कर्यु छे। हजु कमजोरी शिवाय कई छे के ?

चिचवडनी सस्था तमे जाणो छो। तेओनो विरोध ठीक थाय छे। पैसानी भीड रह्याज करे छे। मने लागे छे के तेओने मदद देवानी

जरूर छे । कई रीते देवाय ते विचार कर्या करु छु । तेओनी बधी मशीन हाजर रु १५००० छे । एटली मदद मळे तो पछी बीलकुल नहिं जोईए ने न मागवी एवु ए लोको व्रत लेवा तैयार छे । जो तमारो अनुभव मारा जेवो होय के तेओ लायक छे तो ने तमारी पासे सगवड होय तो एटली मदद तेओने आपो एम इच्छु छु ।

राजगोपालाचारीने दम पाछो शरु थयो छे । मने लागे छे के तेने नासिकनी हवा माफक आवे । जो तमारी पासे सगवड होय तो तेने सेक्रम कागळ लखजो के तमारी पासे थोडो वखत रहे । दवा पण पुनाना वैद्यनीज करे छे । ते वैद्य तेनी तपास पण करी शके । में तेने लख्यु तो छे के तमे त्या हो तेवामा ते नासिक रहेवा जाय तो सारु ।

तमे जाण्यु हशे के पुनाना वैद्यनी दवा वल्लभभाईनी मणीबहेन, मगनलालनी राधा ने प्रो निपलानीनी कीकी बहेनने सारु शरु करी छे । तेम कराववानी प्रेरणा करनार देवदास छे । ते वैद्यनो तमारो शो अनुभव छे ते जणावजो ।

मालवीजी काले काशीजी गया । हिंदु मुसलमान विषे थोडी वातो थई । हकीमजी आवी गया तेमणे पण एज विषे वातो करी । मोती-लालजी छे ते तो रहेशे । ते काउन्सीलनी वातो करी रह्या छे । बधु विचार्या करु छु ।

: २३ :

अंधेरी, शुक्रवार
(जवाबदिया ३-५-२४)

भाई जमनालालजी,

महात्मा भगवानदिनजी अने पंडित सुंदरलालजी अहिं आव्या छे । आरोग्य आश्रम नरचे ने बीजी बाबतोनी वात करवा मागे छे । पण में कह्यु के तमने मळ्या विना मारायी कई न थई शके । मे तेमने तमारी पासे आवावानी सलाह आपी छे तेथी त्या आवे छे । तेमनु सांभळी मने कई कहेवु के पूछवु पडे तो लखजो ।

: २४ :
अ

रवीवार,
पामवन, जुहु,
(पोष्ट)–अंधेरी
(मई–जून, १९२४)

चि जमनालाल,

तमने दु ख थयु छे तेथी मने थयु छे। मे ए कागळमा चि नो उपयोग तज्यो केमके ते कागळ मे उघाडो मोकल्यो हतो। तेमा चि विशेषण वधा वाचे ए योग्य के अयोग्य एनो निर्णय ए वेळा न करी शक्यो। तेथी मे भाई शब्दनो प्रयोग कर्यो। तमे चि थवा लायक छो के नहिं के हु वापनु स्थान लेवा लायक छु के नहिं एनो निर्णय केम थाय ? जेम तमने तमारे विषे शका छे तेमज मने मारे विषे छे। जो तमे अपूर्ण छो तो हु पण छु। वाप थता पहेला मारे मारो विचार वधारे करवो रह्यो। तमारा प्रेमने वश थईने हु वाप वन्यो छु। ईश्वर मने ए स्थानने सारु लायक वनावो। तमारामा उणप रहेशे तो मारा स्पर्शनी ए खामी हशे। आपणे वन्ने प्रयत्न करता सफळज थईशु एम मने विश्वास छे। तेम छता निष्फळता थई तो ए भगवान् जे भावनानो भूख्यो छे ने आपणा अतरने जोई शके छे ते आपणी योग्यता प्रमाणे आपणो नीकाल करशे। तेथी मारामा ज्ञानपूर्वक मलीनताने हु स्थान नहिं आपु त्यासुधी तमने 'चि' ज गणवानो।

आजे एक वागता लगी मौन छे। प सुदरलालने छ वागे आववा कह्यु छे। तेने मळया पछी तमने वोलाववानी जरूर हशे तो तार दईश।

त्यानी हवा अनुकुल हशे। मणीवेन हजीरा गई छे। रावाने वहु ठीक छे एम कहेवाय। कीकीवहेन पण ठीक छे।

बापुना आशीर्वाद

: २५ :

श्रावण सु १०
(१०–८–१९२४)

चि जमनालाल,

मोतीलालजी उपर मे पत्र[1] लख्यो छे ते तमे जोजो। तेनी नकल मोकलवा कृष्णदासने कह्यु छे। गोविंदवावु ओरीसामा काम करे छे ए तपासजो न

१ यह पत्र खण्ड ३ में देखिये

तमने पसद पडे तो तेने मदद सेवा सघमाथी आपजो। तेने आवडत ओछी छे। तेनी मागणी मोटी छे। दर मासे रु २०० नी। एटलु तो आपवानु नथीज। तमारी परीक्षामा पास थाय तो रु ५० सुधी आपजो। तपास झीणवटथी करजो।

: २६ :

आ व ९
(२३-८-१९२४)

चि जमनालाल,

हु हमणा ट्रेनमा छु। दिल्लीथी पाछो आश्रम जाउ छु। दिल्हीमाँ समाधानीनी वातो चाल्या करे छे। मोतीलालजीनो कागळ आव्यो नथी। तमारा प्रातमा शुद्ध रीते जे थाय ते थवा देवु। आपणे तटस्थ रही आपणु कार्य कर्या करीए एटलुज जरूरनु छे।

घनश्यामदास दिल्लीमा न हता। तेना तरफथी पैसा मळी गया हता। ते तमने कई रीते वगर खर्चे मोकलवा ए पूछवा लखवानु छगनलालने कह्यु हतु। साथे महादेव, देवदास ने प्यारेलाल छे।

: २७ :

AHMEDABAD,
8-9-24

JAMNALAL BAJAJ,
WARDHA

Congratulate Ghatwai[1] Send further news Nagpur.

—*Gandhi*

१ आपणोंके कारण मध्यप्रदेशकी सरकार द्वारा की गई गिरफ्तारी पर।

: २८ :
अ

(सितंबर, १९२४)

चि जमनालाल,

तमारो तार मळ्यो ने कागळ पण। मुंबई पुनाने सुरतनी मुसाफरीमा एक क्षणनो पण वखत लखवानो तो हतोज नहि। आजे सवारे आश्रम पहोच्यो।

तमने इजा[1] थई तेथी मने मुद्दल दुःख न थयु। हु तो मानु छु के आपणा जेवा घणाये कदाच भोग आपवो पडे। झेर एटलु बधु व्यापी गयु छे ने अप्रमाणिकता एटली बधी प्रसरी गई छे के केटलाक शुद्ध माणसोना बलिदान अपाया विना आ आपत्तिमाथी आपणे बचवाना नथी। झगडानी जड मळे तो शोधजो। कोई डाह्या मुसलमान के डाह्या हिंदु नथी के जे समजे ने झगडाना कारणो दूर करे?

मारा निश्चयो तो समज्या हशो। बेलगाममा बोटथी कई पण मुद्दानी वातोनो फेसलो न करवो एवो मे निश्चय कर्यो छे। वेर एटलॉ बधी गया छे के अत्यारे आपणे सत्याग्रहनु प्रचंड स्वरूप बध राखवुज जोईए। तेम न करीए तो आपणोज नाश थाय एम मने लागे छे। एक पण वस्तु सरखी नथी समजाती। बधानो अनर्थ, चोमेर अविश्वास, आ समये आपणे पोते कायम रही बीजाओ जे करता होय तेना साक्षी रहीये। यग इडीयामा तो मे घणु समजाव्यु छे। तेना केटलानो तरजुमो नवजीवनमा आव्यो हशे ओ खबर नथी।

तमारो हाथ हवे तद्दन सारो थई गयो हशे।

मो महमदअलीनो कागळ के तार न आवे त्या लगी तो हु अहिज छु।

बापुना आशीर्वाद

१. जिस चोटका ऊपरके पत्रमे उल्लेख है वह जमनालालजीको नागपुरमे हिन्दू-मुस्लिम दगेके समय लगी थी। वह तॉगेमे बैठकर जा रहे थे। रास्तेमें झगडा होते देखकर उसे शात करने उतर पडे। उसमे किसीके फेंके गये एक पत्थरकी चोट उनके बायें हाथपर लगी और उनको अस्पताल ले जाना पड़ा था।

: २९ :
अ

भा मु १२
(१०-९-१९२४)

चि जमनालाल,

तमारो हाथ हवे तो तद्दन दुरस्त थई गयो हशे। मारो आगलो कागळ मळ्यो हशे।

मारा चित्तमा अनेक फेरफारो थया करे छे तेनु पूरु दर्शन आ वखतना य इ मा आवशे। आपणाथी वोटो लईने मेजोरीटी नज लई शकाय एवु अत्यारे तो मने भासे छे। बेलगाममा आपणने जो एमने एम काग्रेसमा काम करवानो सजोग न मळे तो आपणे अळगा थई बनी शके तेटलु काम करवु जोईए। ते विना अत्यारे व्यापी रहेलु झेर नाबूद नहि थाय एम हु जोउ छु। तेने कोई पण प्रकारे पहोची वळशु एम तो मानु छु। दिल्ली जवाना तारनी राह जोई रह्यो छु। त्या जवु पडशे तो हिंदु मुसलमान बाबत कईक फडचो नीकलवानो सभव छे। त्या हुल्लड केम थयु ते खबर हजु नथी पडी।

घटवाईना भापणो हमणा जोया जो एज मुजब बोलेल होय तो मारो धन्यवाद तो नकामो थई पड्यो। ए बोलवामा अहिंसा नथी।

बालकृष्ण आवी गयो ते ठीक थयु। तेनी इच्छा प्रमाणे भले त्या रहे। साथे कागळ छे ते आपजो। अक्टोबरमा तमे पण आववाना के ?

बापुना आशीर्वाद

: ३० :

SABARMATI,
Dated, 14th November 1924

DEAR FRIEND,[1]

Will you please supply me, as early as possible, with the figures on the following when Non-Co-operation was at its height and now ?

(a) The number of titles given up
(b) The number of boys and girls leaving Government Schools and Colleges
(c) The number of suspensions of practice
(d) The number of spinning wheels at work

१ जमनालालजी द्वारा प्राप्त एक परिपत्र (सरक्यूलर पत्र)।

(*e*) The quantity of hand-spun Khaddar produced

(*f*) The number of hand-looms

(*g*) The number of National Schools and Colleges with attendance of boys and girls

(*h*) The nature and volume of work done among Untouchables

(*i*) The nature of quantity of temperance (liquor and opium) work done

(*j*) The number of Congress members

Yours sincerely,
M K Gandhi

: ३१ :
ब

दिल्ली,
२८–१–२५

पू भाईश्री,

अहींनु कामकाज धीमे धीमे चाले छे। कमिटीए सब-कमिटी करी। सब-कमिटीमा एक दिवस मारी पेठे गळा खोलवामा आव्या। एटले सबकमिटी-माथी हवे एक खानगी सब-सब-कमिटी थई छे। ते हकीम साहेबने त्या मळे छे। बापु, पंडितजी, मौलानाओ (बधाए झफरअली सुद्धा) अने हकीमजी एटला दररोज भेगा थाय छे, अने माजमुखी वातो चाले छे। बापु काईक रस्तो काढवानु करी रह्या छे। थाय ते खरु।

गोरक्षा समितिनु काम सरस थयु। बापुए पोताना गोरक्षाना भाषण अनुसार एक योजना घडी काढी, ते योजना सौने पसंद आवी छे, एटले हवे ए कार्यने स्थायी स्वरूप मळवानु। बापुने आ कार्यने माटे सरस मंत्री जोईए छे। जुवान, उत्साही, हिंदी, अंग्रेजी वगेरे भाषा जाणवावाळो, अने सौथी उपरात, चारित्र्यवान—बनी शके तो ब्रह्मचारी—गोसेवक जोईए। तमने कोई सूझे छे?

अहीं ३१ मी सुधी तो रहेवानु थशेज।

लि सेवक

: ३२ :

शांतिनिकेतन,
जे सु ७
(२९–५–१९२५)

चि जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो छे। तमे कमीटीने सारु आवशो एम धार्यु हतु अने त्यारे बधी वातो करी लइशु एम मानीने कागळ लखवानु मुलत्वी राखेलु। न आव्या तेनी चिंता तो नथीज। गीरधारीना कागळ उपरथी धारी लीवु हतुके तमे आवशोज।

कॉलेजने[1] सारु जेनी तेनी उपर नजर नाख्या करु छु, पण कोई नजरे चढतो नथी। जुगलकिशोर आवे तो एक रीते निकाल आवे एवु छे। ते चरित्रवान तो छेज। तेना गिडवानी उपर ना कागळ थी मने पूरो सतोष नथी थयो। जो गिडवानी पोते आववा धारे ने आवी शके तो ठीकज छे। अत्यारे बीजो कोई नजर आगळ नथी। दक्षिणमाथी कोई मळी आवे तो सारु एम रह्याज करे छे।

कॉलेज खोलवानी क्रिया जुन मासमाज करवी जोईए के ? जुननो छेल्लो भाग तो मारो आसाममा जवानो। पछी तुरत बिहारमा जवु जोईए। पण जो वर्धा तुरत जवुज जोईए तो त्या आवीने बिहार जईश। बिहार मा एक मास चाल्यो जशे। मारु वर्धा आववानु लोकोए साभळ्यु छे त्यारथी मने बीजी जग्याओमा जवानु कह्या करे छे। नागपुरथी, अमरावतीथी, अकोलाथी कागळ छे। मने भासे छे के ज्याथी मागणी आवे त्या जई आववु इष्ट छे। आ वर्षने सारु भ्रमण करी लेवु एवो मारो धर्म समजु छु। जो एम करु तो सी पी नी मुसाफरीनो क्रम तमेज गोठवो ने बने तो साथे फरो ए पण कदाच योग्य होय।

(१) मारे वर्धा क्यारे आववु ?

(२) सी पी नी मुसाफरी करवी के नहि ?

(३) करवी तो क्रम तमे गोठवशो के केम ? तमे साथे फरशो के केम ?
आनो जवाब लखजो।

हाल तुरतमा हु आश्रममा आवी शकु एवु तो जोतो नथी। बगाल पछी

[1] गुजरात विद्यापीठ।

तुरत विहार, सी पी वि (विगेरह)मा जवान् छे। ते थई रह्या पछीज अवाय। एटले कदाच सप्टेम्बर मास थाय।

वरकिंग कमीटी तो बेठीज नहिं केमके त्रणज सभ्यो हता। जवाहरलाल, दा नाइडु ने हु। अणे आववाना हता पण न आव्या। एटले अजमेरनो कई विचार न थई शक्यो। छता ए बाबत मने मळी जवु घटे तो मळी जजो। ए विषे आपणे गभरावानु नथी। हु पोते अरजुनलालजीने लखवानो छु के तेने जे कहेवु होय ते मने कहे।

त्या तमे बधा ठीक तबीयत राखता हशो। मने सारु रहे छे। आजे शनीवारे बोलपुर छु। सोमवार सुधी रहीश। मगळवारे कलकत्ते जई त्याथी त्रण दीवसने सारु दारजीलीग जईश। पछीनो कार्यक्रम आजे के काले नक्की थशे एटले मोकलीश।

: ३३ :

ग्वालगज जता,
जे व ५
(१८–६–१९२५)

चि जमनालाल,

चि मनहर पासे कागळ लखाव्यो ने ते तमारी पासे छे ए जाणी हु बहु राजी थयो। वर्किंग कमिटीमा तमारी इच्छाये आवो ए बरोबरज छे। मने खास जरूर हशे त्यारे हु तेडावीश। आचार्यनी शोधमा तो छुज। सी. पी ने १६ मी जुलाई पछी एक मास आपीश। मारी उपर कागळो नगर कमीटीना, अमरावतीना अने अकोलाना छे। तेना नामनो तो ख्याल नथी। ज्या जवानी जरूर जणाय त्या जवानु राखवु। प्रथम तो वर्धामा एक अठवाडियु शाति थी गाळवानी होश छे। एतो दारजीलीगना करता पण वधारे शातिनो समय गणी लेवो। पछी मुसाफरी शरू करवी। अहि जुलाईनी १६ मी सुधी तो छेज। १८ मीए कलकत्तेथी आसाम जईश। त्याथी २ जी जुलाईये कलकत्ते पाछो जईश। तमे तो सूतर खूब कात्यु।

: ३४.

सोमवार

(पोस्टकी मुहर कालीघाट, कलकत्ता,

३०-६-१९२५)

चि जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो। अलवार विषे जुदीज रीते आ वेळा कईक लख्यु तो छे। मारु त्यां आववान् नक्की करता कईक समय जशे एवी धास्ति छे। आगस्टनी शरुवातमाज थशे एम भासे छे। जुलाईनु छेलु अठवाडीयु त्यां आश्रममा ने पछी मुसाफरी एम विचार छे। तमे १६ मीए तो आवशोज। मे त्यां नें साबरमती तार कर्या ते मळ्या हशे।

: ३५ :
अ

आश्रम, साबरमती,

ता २४ मी

(२४-११-१९२५)

मुरब्बी जमनालालजी,

आप जाणीने दिलगीर थशो के बापुए शाळाना बाळकोनी मलीनताने अगे आजथी सात दिवसना उपवास आरभ्या छे। बाळकोमा ए पाप दाखल थयेलु छे एम तो अगाउ जणायलु हतु, पण आटला मोटा प्रमाणमा दाखल थयेलु छे, एटले के वे त्रण बाळको सिवाय बधाज ए पापमा सपडायला छे-एम बापुने हमणाज खबर पडी। मीए कबूल कर्यु।

ए उपवासना रहस्यनी चर्चा आपनी साथे न करु। एनी योग्यायोग्यता विषे पण नही। मात्र तमे एनु साभळीने दोडी न आवो एवो बापुनो आग्रह छे। एटलुज तेमणे मने लखवानु कह्यु अने ते मुजब आ लखु छु।

आ साथे लक्ष्मीदासभाईनो कागळ बीडयो छे। एमानी सूचना विचारी जोजो।

लि सेवक,

महादेव देसाई

: ३६ :

आश्रम (साबरमती),
ता २९ मी
(२९–११–१९२५)

म भाईश्री,

तमारो कागळ मळ्यो। विनोबाने तो शी रीते बोलावाय ? अने ते पहोचे ते पहेला तो उपवास बध थया होय। हमणा तो बाळकोबा तेमनी गरज सारे छे। गईकाले बापुनी एकवीस दिवसना उपवास करता पण नवळाई वधारे हती, पण तेनु कारण एक-बे दिवसनो श्रम हतो। बे दिवसथी अखड आराम बोलवा चालवानो अने बधा प्रकारनो आपवामा आवे छे–कोईने पण तेमनी पासे कशी वात लईने जवानी परवानगी नथी। आजे बापुना अवाजमा वधारे ताकात छे, अने काल एथीए सारु हशे,एम आशा राखीए। अने परमदहाडे तो पारणा छे। नारायण करे तो सौ सारा वाना थशे। चिंता नज करजो।

लि स्नेहाधीन,

: ३७ :

आश्रम (साबरमती),
ता ३० मी
(३०–११–१९२५)

मुरब्बी जमनालालजी,

आजे सातमो दिवस छे। तबीअत सारी कहेवाय। आजे तो मौन छे एटले शातिज होय, तेमा नवाई शी ? रेटीओ कातवानु तो चालुज रह्यु। बीजो कोई जातनो श्रम लेता न हता। आजे सवारे आखी गीताजीनु पारायण तेमनी समक्ष थयु हतु। काले सवारे सात वागे प्रार्थना पछी पारणा थशे। पारणानो विधि गये वर्षे जेवो दिल्लीमा थयो हतो तेवोज। मात्र आ वेळा पू विनोबा नही होय एटली उणप। वर्धा आववानु तो नक्कीज रहे छे।

लि सेवक,

आजे हाथमा एटली ताकात छे के उपवासने विषे एक लाबो लेख पोताने हाथे लख्यो। मौन एटले बीजाने तो लखावी शकाय नही।

: ३८ :

SABARMATI,
30-11-25

JAMNALAL BAJAJ,
WARDHA

Bapu will see Vinoba there 10th Condition good

—*Devadasgandhi*

: ३९ :

SABARMATI
1-12-25

JAMNALAL BAJAJ,
WARDHA

Fast broken Condition excellent No cause slightest anxiety

—*Bapu*

४० :

MAHATMA GANDHI,
SABARMATI

Thank God your fast ended successfully Wish you take complete physical and mental rest at Dumas to recoup lost weight and vitality and avoid Wardha journey Should choose to come Wardha for rest and no other consideration

—*Jamnalal*

(नकल परसे लिया गया)

: ४१ :
अ

आश्रम,
ता १ ली
(१-१२-१९२५)

मुरब्बी जमनालालजी,

बापुए आज सवारे पारणु कर्यु तेना समाचार आपने तारथी आप्या छे। बापुनी तबीयत सारी छे । नबळाई छे। उपवास पुरा थती वखतनी विधि आ मुजब हती।

सवारे ७–३० वाग्ये उपवास छोड्या। प्रथम प्रार्थना थई तेमा इमाम साहेबे कुरानमाथी फकरा वाची तेनो अर्थ समजाव्यो ते पछी मीस स्लेईडे– तेनु नाम मीराबहेन पाड्यु छे, ए आपने खबर पड्या हशे–लीड काइन्डली लाईट गायु अने छेल्ले बाळकोबाए उपनीषद् अने गीतामाथी श्लोको बोली ते उपर विवेचन कर्यु। आ श्लोकोनो विषय विषयात्मा अने मानसात्मा, महात्मा अने शातात्मानो भेद ए हतो। ते पछी बापुए धीमे अवाजे दर्द अने प्रेमथी भरेला थोडा उद्गार काढ्या। तेमाना मुख्य वाक्यो आ हता

'खूब चितन अने आत्ममथन पछी मानु छु के मारी भूल नथी थयेली। सभव छे के मारी भूल मने न देखाती होय, पण शा सारु न देखाय ? मारामा ममता छे, दुराग्रह छे, मलिनता छे ? मे शु सत्य कोईवार नथी जोयु ? ममता होय तो मात्र एक छे–ने एटली के कुदको मारीने ईश्वरने पहोची शकातु होय तो पहोचवु, अने तेमा विलीन थई जवु। ईश्वर एटले सत्य। मलिनताने तो मे खखेरी काढी छे, त्यारे शा सारु मने मारी भूल न समजाय ?

आश्रमनी मे मोटी आशाओ राखेली छे। आखु जगत ज्यारे उघतु हशे त्यारे आश्रम जवाब देशे एवी मारी अभिलाषा छे। जेम फिनीक्स द आफ्रिकामा बन्यु हतु।

पण ए आशा केम पुरी पडे ? चारित्र्यनो पायो मजबुत होय अने सपूर्ण शुद्धि होय तो–तेने माटे सात दिवसना उपवास तो कईज नहि, एवा उपवास– एथी कठण उपवास भविष्यमा पण करवा पडे। अनशन पण लेवु पडे। न तो त्यारेज करवा पडे के ज्यारे हु जगलमा भागी जाउ। पण जगलमा शेनो भागु ! हु तो वैश्य जन्मेलो छना कर्मे शूद्र, क्षत्रिय अने ब्राह्मण रह्यो। मारे तो शात आत्मा थवु छे।' इ इ

आ पछी सहु विखराया। पछी ६–३० वाग्ये बाळकोनी प्रार्थना थई। बाळकोने जे कहेवामा आव्यु ते तो नज सभळायु। कारण बापुनो अवाज छेक बेसी गयो हतो पण बाळकोबा अने सुरेन्द्रने आदर्श राखीने विचरो। २८ कलाक काम थतु होय तो २४ कलाक काम करो ए ध्वनि हतो।

पछीनी घडीनो तो शु ख्याल आपु। २१ दिवसनो उपवास खुल्यो त्यारनी घडी करताए वधारे पावक हती, वधारे गभीर अने वधारे द्रावक हती। बापुनो कठ रुधायो हतो। सात वाग्या पण उपवास केमे तोडवानु मन नहोतु थतु। केमे खावानु नहोतु रुचतु। स्वस्थ पडी रह्या। कोण जाणे शा विचारमा लीन, केटली तीव्र वेदनाथी रीबाता। देवदासने बोलाव्या।

स्थितप्रज्ञ वोलवानु कह्यु। ए थई रह्यु। वळी पाछा शात पडी गया। आखरे ७-४० कईक स्तव्ध थई पारणाने माटे द्राक्ष, अने नारगीनो रस मगाव्यो अने अमारो सहुनो जीव हेठो वेठो।

आजे तवीयत सारी देखाय छे। घणु काम कर्यु छता थाक वहु नथी देखातो। वोलवानु काम ओछामा ओछु करे छे। काले वेक दिवसनी शाति माटे वापु अवालाल शेठना वगलामा-शाही वाग- रहेवा जशे।

लि सेवक,

(नकल परसे लिया गया) महादेव हरिभाई देसाई

: ४२ :

AHMEDABAD,
4-12-25

JAMNALAL BAJAJ,
WARDHA

Perfect rest possible only at Wardha

—*Bapu*

: ४३ :
अ

आश्रम, सावरमती
ता ४ थी
(४-१२-१९२५)

मुरब्बी भाईश्री,

तमारो तार वापुने वताव्यो हतो। डुमसनी सूचना शकरलालनी होवी जोईए एम तेमणे कह्यु। मने तो खवरज न्होती। शकरलाले डुमसनो आग्रह कर्यो। पण मारो पक्षपात वर्धा माटे-तमारा माटे अने पू विनोवाना सहवास माटे-नो मे जणाव्यो, अने वापुए पण कह्यु, "मने जमनालालजी अने विनोवा जेटली शाति आपशे तेटली वीजु कोई न आपे।" एटले आजे जे तार कर्यो छे तेवो करवानु वापुए कह्यु। वापु तो कहे छे के मुवईमा एक दिवस रोकाया विना ९ मीएज वर्धा पहोची शकाय तो पहोंचवु।

बापुने क्या राखवा—क्या वधारेमा वधारे आराम अने शाति अने विनोबाजीनो सहवास मळे ते तमेज जाणो अने नक्की करो। त्या आववाना ए नक्की छे।

तमे सुखरूप हशो। बापु आजकाल अबालालभाईने त्या छे। काले पाछा आश्रममा आववाना। तबीयत ठीक सुधरती जाय छे।

लि स्नेहाधीन,

महादेवना प्रणाम

: ४४ :
न

सोमवार
(४-१२-१९२५)

चि जमनालाल,

विनोबा मने कहेता हता के अहिंना अपवासोथी हु चितामा पडीश एम तमे मानेलु। हु चितामा मुद्दल न पड्यो एटलुज नहिं पण तेथी मने आनद थयो। भाई भणमालीना अपवास केवळ तेना पोताना शोखथी हता। ते हाल भारे तपश्चर्या करी रह्या छे। भाई किशोरलालना केवळ अगत अने पोताना विकार दूर करवा सारु हता। मगनलालना प्रायश्चित रूपे हता। अने ते बराबर हता। × × × तेने छेतरेल। आनो उपाय तेनी पासे पोते दु ख खमवा उपरात बीजो नज हतो। एनी असर ए कुटुब उपर सारी थई छे। त्रणेनी तबीयत किशोरलाल, भणसाली, ने मगनलालनी सारी छे। हवे आमा मने चितानु कशु कारण न होय।

मारी तबीयत सारी रहे छे। हु हवे चार शेर दूध पीउ छु ने आठ बिस्किट जमनाबहेने बनावी मोकली छे ते खाउ छु। नियमसर हरु फरु छु। एटले मारे विषे मुद्दल चिता न करवी।

आ साथे चि मणीनो कागळ तमने वाचवा सारु मोकल्यो छे। मने फरी मोकलवानी जरूर नथी।

कमळाना विवाह विषे हजु कई खबर नथी?

बापुना आशीर्वाद

: ४५ :

गुरुवार
(साबरमती पोस्ट की मुहर,
२१-१-१९२६)

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ में मंगळवारे वांच्यो एटले चि. रामेश्वरप्रसादने बोलावी न शक्यो। पण काले ते अने केशवदासजी आव्या हता। मारे फरवा नहि गयेलो। रामेश्वरप्रसादने विद्यार्थीनी प्रार्थनामां आववा नोतर्या ने आजथी शरू पण कर्युं छे। ते समये हुं भक्तराजनी यात्रा[1] समजावुं छुं।

: ४६ :

मंगळवार
(साबरमती पोस्टनी मुहर,
२-२-१९२६)

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो। मणीबहेन विषे तमे अहिं आवशो त्यारे नक्की करशुं।

मारुं वजन पण थोडुं तो वध्युं छे। आ अठवाडीये वधारे वधवानी आशा छे। चिंता करवानुं कशुं कारण नथी।

तमारी तरफथी मत्रा मळ्या करे छे।

बापुना आशीर्वाद

[1] *Pilgrim's Progress* का भाषांतर।

: ४७ :

आश्रम, साबरमती,
रविवार
(मार्च १९२६)

चि जमनालाल

तमारो कागळ मळ्यो। २२ मी तारीखे हु अहीयी नीकळी शकीश एवो तार मे तमने मोकली दीधो। तेना पहेला नीकळवु ए सगवड भरेलु नथी। अने हाल तो अही गरमीने बदले ठंडक रहे छे एम कही शकाय। आ वखते पण मारु वजन ०॥ रतल वध्यु। एटले हवे १०४ पर गयु छे। आराम तो पुष्कळ लई रह्यो छु। हकीम साहेब परना तमारा कागळनो मुसद्दो हु वाची गयो छु। ए बराबर छे। आ साथे पाछो मोकलु छु। मारी साथे घणेभागे प्यारेलाल, महादेव, सुब्बैया, प्यारअली, नूरबानुबहेन अने तेमनो नोकर हशे। प्यारअलीनो इरादा तो भाडु आपीने नोखा रहेवानो ने पोतानी रसोई करावी लेवानो छे। जो तमारे मुबईमा हाल रहेवानी आवश्यकता न होय तो तमे मारी साथे मसुरीमा हो ए मने अवश्य गमे। केटलुक काम तो तमे हो तो जरुर करीए। पण जो कामने प्रसगे मुबई के कलकत्ता जवुज जोईए तो हु खास रोकवा नहि इच्छु। एटले छेवटनो निर्णय तो तमारी सगवड विचारीने तमारेज करवो रह्यो।

गुरुकुळमा तमे ठीक फाव्या लागो छो। राजगोपालाचारीने पोताना आश्रमनी व्याधि पुष्कळ छे। एटले तेने तुरत जवु पडशे। अब्बास तैयबजी फरवाने सारु तैयार थई शके एम छे। मणिलाल रगुनथी आवी गया छे। पण ते तुरतमा फरवा नीकळी शके एम नथी जणातु। तेने हवे थोडो समय रेलवेना नोकरोने सारु पण आपवो पडे एम छे। एटले हाल तुरतमा ए फरी नहि शके। अहीयी मगळवारे नीकळशे।

· ४८
―
अ

(आश्रम, साबरमती)
सोमवार
(दिल्लीमे उत्तर दिया,
१९-३-१९२६)

चि जमनालाल,

मसुरी विषे आजे मने बहु उद्वेग थया कर्यो छे। त्या के क्याए जवानु मनज नथी थतु। मारी तबीयत हवाफेर नथी मागती । मने आराम जोईए ते तो बरोबर मळे छे ने थोडु अहिनु काम जोई शकु छु ए मारे सारु दवानी गरज मारे छे। आश्रम न छोडवाना घणा कारण छे। आश्रम छोडता आघात पहोंचे तेम छे। एटले जो मने समजपूर्वक बधनमुक्त करो तो हु छुटी जवा मागु छु। जो मसुरी जवुज जोईए एम धारो तो जईशज। पण आजे जे मानसिक उद्वेग पाम्यो ते तमने लखवु योग्य गणी लख्यु छे। शकरलाल साथे पण वात चर्चीश।

सतीशबाबु काले आव्या छे। दा सुरेश शनिवारे आवशे।

मणीबहेन तमारी साथे रहेवा नथी मागती । तेने गुजराती सारु करी लेवु छे। आम छता मदालसा जानकीबहेननी पासेज रहेवी जोईए। घणो काळ आश्रममा हशे तो घणु एमने एम शीखी लेशे ।

कन्या गुरुकुळ बाबतनी तपासी मने लखजो । तेमा केटली कन्या छे ते पण जणावजो।

: ४९

आश्रम, साबरमती,
बुधवार
(२४-३-१९२६)

चि जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो। हकीम साहेबनो पण मळ्यो छे। हकीम साहेबने आजे नीचे प्रमाणे तार मोकल्यो छे

"Thanks letter Any arrangement you friends may make will suit "

हवे तमे जे नक्की करो ते खरु। मसुरी जता पहेला मने बीजे कोई ठेकाणे राखवा धारो तो तेम करजो। बाकी हु तो सीधो मसुरी जवाने पण तैयार छु। त्या ठडी वधारे हशे एनु कई नहि। एटली तो सही लेवाशे।

बापुना आशीर्वाद

: ५० :

AHMEDABAD,
26-3-26

SETH JAMNALAL BAJAJ,
KANKHAL

If I am to fix date I should say some time after middle April Weather here unusually cool just now

—*Bapu*

: ५१ :

आश्रम,
२५-४-१९२६

चि जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो। गवर्नरनो जवाब आव्यो छे के हमणा मारे त्या जवानी जरूर नथी। ए ज्यारे जून मासमा नीचे उतरे त्यारे जाउ तो बस थशे। एटले महाबलेश्वरनी जजाळमाथी छूटचा।

लालाजीनी साथे मे तेमनी फरियाद बाबत थोडीक वाततो करीज हती, पण मारी पासे तो तेमणे इनकारज कर्यो। ए आवशे त्यारे रोग जाणी लीधो छे एटले दवा तो करीज लईशु।

मोतीलालजीनी साथे प्रसग आव्ये वात करी लईश। हु मानु छु के ए बाबत कशी अडचण नहिज आवे। देवदासने हमणा अहीथी काढवानी इच्छा नथी थती। तेनु शरीर पाछु सारी पेठे वळे त्यारेज अहियी नीकळे तो ठीक।

वळी जो यूरोप जवानु थायतो शु करवु अने कोने लई जवा ए विचार तो रह्योज। अत्यारे तो वृत्ति एवी छे के महादेव अने देवदास साथे आवे। ए दृष्टिए पण देवदास हाल अही होय ए ठीक। जवानु थशेज तो जुलाई मासनी शरुआतमा नीकळवानु हशे। मने हजु कशो जवाब मळ्यो नथी।

: ५२ :

अ

नवजीवन,
सारंगपुर, अमदावाद,
३०–४–१९२६

प्रिय जमनालालजी,

आपनो पत्र मळ्यो।

१ ओ इ॰ को कमिटीमा[1] आववा विषे बापु कहे छे

' इच्छा न थाय तो न आवो। रत्नागिरी जरूर जई आवो। जो इच्छा थायज तो आवजो।"

२ बेलगामवाळानी बाबत तेमनी सलाह तेमनाज शब्दोमा जणावु छु

"मने ए वस्तु पसद नथीज। पण बेलगामवाळाने तमे मदद करी चूक्या छो, एणे ठीक भोग आप्यो छे। एटले जो तमने आमा पडवानी इच्छा थायज अने मशीनरी खरेखर एटली किमतनी होय अने मोरगेज चोख्खु मळी शके अने तमे पैसा धीरो तो हु नाराज न थाउ, अथवा तमने ठपको तो नज दउ।

पण एनी भलामण करवा हु तैयार नथी। एटले बधा सजोगो जोईने तमे जे निर्णय करो तेमा हु सहमत थईश।"

होर्निमेनना माणसने तो जे कह्यु ते बरोबर कर्यु छे ।

मगनलालभाईने आश्रमनी चीजो विषे सदेशो आपी दीधो छे।

साहेबजादा घेर गया छे। छोटुभाईनी साथे शु थयु ते काई जणाव्यु नही।

बापुनु फिनलेन्ड जवु अनिश्चित छे। बापुए हा तो लखी छे, पण केटलीक शरतो करी छे। पेला स्वीकारशे तो जवानु थाय। शरतो ए के, पोषाक पोतानीज

१ ऑल इंडिया कॉंग्रेस कमिटी।

शैलीनो राखशे, मात्र हवाने अंगे कांई फेरफार करवो घटे तो करे, खोराक बकरीनु दूध अने फळाहार, भाषण न आपे पण विद्यार्थीओ साथे वातचीतो करे, पासपोर्टनी व्यवस्था बधी ए लोकोएज करवी रही, अने तेमा कशी शरतो न होवी जोईए। आ बधु पेला स्वीकारे तो बापु जशे। तेमनो जवाब आव्यो नथी। साथे जनारा तो बे छे–हाल तो देवदास अने मारु नाम बोलाय छे, आखरे जे जाय ते खरा। अने जता पहेला वल्लभभाई जेवा कांई चमत्कार करे ते पण ध्यानमा लेवानु।

लि स्नेहाधीन सेवक,

: ५३ :

आश्रम, साबरमती,
शनिवार
(८–५–१९२६)

चि जमनालाल,

आखरे महाबळेश्वर तो जवुज पडशे। आजे सर चुनीलाल महेतानो कागळ छे। ए गवर्नरेज लखावेलो छे, अने तेमा जो बनी शके तो गवर्नरने महाबळेश्वरमाज मळवानु तेणे सूचव्यु छे। अने तेनी सायेज रहेवानु पण आमंत्रण मोकली आप्यु छे, तथा आग्रह कर्यो छे। एटले अहीयाथी गुरुवारने दिवसे रवाना थवानो इरादो राखु छु। देवदासने एटलामा ऑपरेशन तो थईज गयु हशे। आजे तारनी राह जोई रह्यो छु। महाबळेश्वर जवामा बगलानी तजवीज करवी नहि रहे। मोटरनु शु करवु घटे ए अने तमारे साथे आववु के नहि ए विचारी लेजो।

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

आश्रम, साबरमती,
रविवार
(मई १९२६)

चि जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो छे। आजे सांजेकचोरो तमारो तार आववानी आशा राखीश। मने कशीये चिंता छे नहि। बाने कहेजो के रामीनी दीकरीने तद्दन आराम छे। बानो संदेशो मने मळ्यो हतो। मणिबहेन अने नाना काशी रसोई करे छे। आजे रामीनी मासी कुमीबहेन आवेली छे। तेने स्टेशन लेवा कांति अने मनु गया हता। आ तरफनी चिंता बा न करे।

रामेश्वरप्रसाद, तेना मातुश्री वगेरे गईकाले अही आव्या। आजे ते तरफ रवाना थाय छे। महाबळेश्वर जवा बाबतनो मारो कागळ तमने मळी गयो हशे। महादेव तो त्याज रोकाई जशे, एम मानी लउ छु। महादेवने कई पण सामान त्या लाववानो होय तो मने जणावे। कईक ओढवानु विशेष लेवु जोईशे एम धारु छु। त्या त्रण दिवस रोकावानु थशे एवु भासे छे। शनि, रवि, अने सोम। मगळवारे त्याथी नीकळी सिंहगढमा काकाने मळवु एम पण मनमा छे। अने बनी शके तो देवलाली पण जई आववु। आम करता कदाच बे दिवस खोटा थाय। मगळवारे सवारे नीकळी सिंहगढ १०।११ वागे पहोचाय, अने सिंहगढ थी तेज दिवसे सांजे उतरी देवलाली जवाय तो जवु, एम मनमा थाय छे। पण जो देवलाली जवानी आवश्यकता नथी एम महादेव माने तो देवलाली जवानु माडी वाळवानु पण मनमा रहे छे खरु। केमके जो देवलालीमा एक बे दिवस रहेवानु न थाय तो त्या जवामा कईज नथी, एवु पण मनमा रह्या करे छे। हाल तुरत मथुरादासने आ बाबत कईज नथी लखतो। महादेवनी सलाह उपर आधार राखवानो विचार कर्यो छे। पूनाथी मोटरनो बंदोबस्त तमेज करी लेशो के? सवारना १०॥ वागे पूना ट्रेन जाय छे। जो एम होय तो देवदासने[1] जोई १०॥ नी ट्रेनमा बेसी जवु ने तेज रात्रे महाबळेश्वर पहोचवु ए ठीक छे। पूनाथी बे मोटरनी सगवड होय तो सारु, एम लागे छे।

ऑपरेशननो टेलिफोन हमणा वल्लभभाई तरफथी मळ्यो। ईश्वर कृपा।

बापुना आशीर्वाद

१. श्री देवदास गांधीका अपेंडिसाइटिसका ऑपरेशन हुआ था।

: ५५ :

सोमवार,
१७-५-१९२६

चि जमनालाल,

तमारो अने महादेवनो कागळ मळचा। हु तो निश्चितज हतो ने छु। क्लोरोफॉर्ममा कईक जोखम तो होयज। ए तो गमे ते ओपरेशनने अगे उभुज छे। देवदासने कहेजो के हजु दुख थाय तो गभराय नहिं। केटलाक दरदीने दुख रहे छे। पण ते बे दीवसनु होय। आ मळशे त्यारे तो दुख मुद्दल न होवु जोईए।

महादेवे मोकलेल तरजुमो मळी गयो छे। ए सुधा ने वालजीना तरजुमा सुधा अत्यारे (२।। वागे) सत्तर कॉलम जेटलु तैयार थई गयु छे। एटले हवे कागळ लखवा बेठो छु।

तमारे इदोरनी मुलाकात मुलत्वी राखवानी हु जरूर नथी जोतो। महाबळेश्वरमा कईज थवानु नथी। इदोरमा तो काम छे। अहिंथी हु कोने लावीश ए नक्की नथी कर्यु। एक जण हशे। घणे भागे तो सुवैयोज हशे।

हु पहेली ट्रेनथी आवीश। मने रेवाशकरभाईने त्या लई जजो। देवदासनी तबीयत सारी हशे तो नहाई खाईने तेने जोवा जईश। मोळी हशे तो परबारो स्टेशनथी। पुना तो तेज दीवसे जवु जोईए। तेमा मने कशी तकलीफ नहिं लागे। तेज राते एटले शुक्रवारे ९ वागे महाबळेश्वर पहोची जवु एवो इरादो छे। रेवाशकरभाईने खबर देशो।

तमने ओळखाण छे छता महेताने मोटर बाबत न लखायु हत तो सारु। ते सरकार तरफथी बदोबस्त करे तो ठीक नहिं लागे। पण हवे कशो फेरफार न करशो।

तमे जोशो के शुक्रवारेज महाबळेश्वर पहोचवाथी गवरनरने मळवाना बेज दीवस रहेशे। मगळवारे सवारे त्याथी नीकळी जवु जोईए।

बापुना आशीर्वाद

: ५६ :

आश्रम, साबरमती,
रविवार
(२३–५–१९२६)

चि जमनालाल,

मसुरी जाओ त्यारे अब्बास तैयबजीना मकाननु न भूलो ए याद आपवानु मने ते लखे छे। तमे त्या हजु हो तो एमने खरखरो करी आववा मळी आवजो। एमनु शरनामु नीचे प्रमाणे छे

C/o Mr M B Tyabji,
French Road, Chowpatty

ए तो ज्ञानी पुरुष छे। मारा तारना जवाबमा लखे छे के तेने कईज मोतनो धक्को लाग्यो नथी।

भाईलालजीनु ऑपरेशन झपाटाबंध थई गयु अने सुदर थयु जणाय छे। देशबधु फाळानो आकडो तैयार करावजो।

: ५७ :

आश्रम, साबरमती,
गुरुवार
(१०–६–१९२६)

चि जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो। तमे पण त्या लावा वखत सुधी रही शको एम हु इच्छु छु, अने हरी फरीने शरीरने वधारे कसायेलु बनावजो। चक्कर वि आवे छे ए तद्दन नीकळी जवा जोईए। तेने सारु मुख्यत्वे खुल्ली हवा अने कसरतज खरी वस्तु छे। तमारे सारु ओछामा ओछी दस माईलनी कसरत हमेशा होवीज जोईए। ए जराये वधारे पडतु छे एम हु न मानु। चरखा सघनी समितिनी सभा २६ मीए छे। एटले त्या सुधी तो तमारे अही आववापणु नथी रहेतु। दिल्ली अने रामपुरा आश्रममा हमणा रोकावानो लोभ न करो ए ठीक छे। मसुरीमा जेटलो वखत काढी शकाय तेटलो गाळी काढो एम इच्छु छु। लक्ष्मीदासने कहेजो के मने वखतो वखत कागळ लखे। तबीयतने खूब सुधारे। मणिने लईने वेलाबेन आजे साजे आवशे।

: ५८ :

आश्रम, साबरमती,
मगळवार
(१५-६-१९२६)

चि जमनालाल,

आजे तमारा कोई तरफथी कागळ नथी। देवदासनी तो जरूर आशा राखी हती। २६ मीए तमे नज आवी शको तो कईज हरकत जेवु नथी। पण ते तबियत नी दृष्टिए। भाई अमृतलाल शेठे आजे यादीनो कागळ मोकल्यो छे। तमे ज्यारे अही आवशो त्यारे चार पाच दिवस काठियावाडमा जवाना छे एतो धारीज लेजो।

: ५९ :

आश्रम, साबरमती,
आषाड सुद ६, शुक्र
(१६-७-१९२६)

चि जमनालाल,

जोषी गिरजाशकरवाळी जमीन जे आपणे लेवा धारता हता ते आजे लेवाई गई हशे। जमीन बधी मळीने १९ वीघा छे। तेमाथी छेडेनु एक वीघु ते राखे छे। १८ वीघा अने मकान २१ हजारमा लेवाशे। पोते अथवा तो तेनु भाडुत रहे ते आपणा कुवामाथी पाणीनो उपयोग करी शके। ए वीघु वेचे तो पाणीनो उपयोग बध थाय। वेचता पहेला पचकयास करे तेटली किंमते ए जमीन आपणने लेवानी छूट रहे। वहाना तरीके ५ हजार रूपिया आपवाना छे, अने बाकीना १६ हजार एक मासनी अदर। कोने नामे जमीन लेवी ए खाली राख्यु छे। त्रण स्थिति मने सुझे छे (१) आश्रमने नामे, (२) गोरक्षा खाते, (३) तमारे नामे। तमे लेवा धारो तो ए भले तमे लो। मारी वृत्ति एवी छे के ते आश्रमने नामे लेवी, अने डेरीने सारु अथवा चमार-खानाने सारु वापरवी पडे तो वापरवी। अथवा आश्रमनी कोई बीजी जमी-नमा डेरी चमारखाना वि करवा अने आ जमीननो उपयोग रहेवा तथा खेतीना कामने सारु करवो। अत्यारे तो मकाननी ताण बहुज मोटी छे। जे रीते लेवी होय ते रीते, पण पैसानो बदोबस्त तो तमारेज त्या करवानो रह्यो।

जुगलकिशोरजी ने घनश्यामदासजीने आ बाबत मळवु घटे तो मळजो। चोमासु उतर्ये थोडाक बीजा मकानो बाधवा तो पडशेज, एम लागे छे। पैसानु शु करवु अने कया नामथी दस्तावेज करावबा ए विषे तार करजो। अही वरसाद बहु सरस पड्यो छे। पूर लगभग रोज आवे छे।

हिंदु मुसलमान विषे त्या झगडो वधतोज जाय छे, अेनो भेद शोधी शकाय तो शोधजो। मने सविस्तर हकीकत लखजो।

: ६० :

सोमवार

(जुलाई, १९२६)

चि जमनालाल,

तमारो तार मळयो छे। तेथी आ कागळ काशीथी लखु छु। गये अठ-वाडिये एक कागळ कलकत्ते तो लख्यो। गीरजाशकर जोषीवाळी जमीन २१००० मा लीधी छे। परचुरण सामानना १००० थी अदर बीजा थशे। जमीन १९ वीघा छे तेमाथी एक वीघु तेने मारु राखवानु छे। रू ५००० बहाना ना आपी दीधा छे। एक मासनी अदर रू १६००० आपवा जोईए। हवे प्रश्न ए छे जमीन कोना नामे नोधाववी ? तमारा, आश्रमना के गोरक्षाना ? मने लागे छे के आश्रमने नामे लेवी। पछी जे कार्यने सारु वापरवी होय ते कार्यने सारु वापरीये। पण आमा तमारी इच्छाने अनुकुल थवा इच्छु छु। गमे ते नामे लेवाय पण पैसानो बदोवस्त तमारे करवो रह्यो छे। विरलाभाईओनी साथे वात करवानी होय तो करजो। शु करवु तेनो तार करजो। पैसा जेम वहेला देवाय तेम देवानु मे कह्यु छे। तेथी तेनो पण बदोवस्त तुरत थाय तेम करजो।

कलकत्ताना झगडानु साभळी जानकीबहेन कईक गभराय छे। मे शात कर्या छे।

: ६१ :

सावरमती आश्रम,
अषाड वदी २।८२
(२७-७-१९२६)

चि जमनालाल,

गीरजाशंकर जोशीने जमीनना पैसा चुकववानी छेल्ली तारीख १५ मी छे ए याद राखशो। पदरमीना पहेला मारी पासे अवेज होवो जोईए।

गईकाले हिसारना लाला श्यामलाल पोताना पत्नीनी साथे आव्या। आश्रममा अत्यारे दपतीओने राखवा जेवी जग्या छेज नही तेथी तेमना पत्नीने जानकीबेननी साथे राखेल छे। लाला श्यामलाल तमने मारी पेठे ओळखता होय एम लागे छे। ओम मादी पडी गयेली तेथी अही आवेली छे। हवे मजामा छे।

: ६२ :
अ

अ व ६

चि जमनालाल,

तमारो देवदास उपरनो कागळ वाच्यो। जे वादळ आव्यु छे तेनी हु आशा नहोतो राखतो। पण भले आव्यु। तेमाज धर्मनी परीक्षा छे। तमारी उपर तहोमत नामु आवे त्यारे ते मोकलजो। तेनो जवाव हु घडी दईश। तेमा फेरफार करवा होय ते करजो। मतलब तो एटलीज के आपणे पूरो विनय वापरवो छे। नातने अधिकार छे के जे व्यक्ति तेना नियमनु उल्लघन करे तेनो वहिष्कार करे। तमे जे जे कर्यु छे तेमा नथी शरम जेवु के नथी पस्तावा जेवु। ज्ञातिमा तमारी असर ओछी थशेज, द्रव्य मेळववानी तमारी शक्ति ओछी थशेज तेनी हु कशी फिकर मानतो नथी। तमारे भीख मागवानो समय आवे तोए भले। धर्म रहे ने भिक्षुक थवु पडे तो ते वधावी लईये। छेवटे ज्यारे नात तमारो धर्म ने तमारो विनय ओळखशे त्यारे पोते नम्र बनशे। ज्ञातिओमा सुधारा तो थवाज जोईशे। ते सहेजे थई शकशे।

अन्नाने प्रेम लेवा सारु वीजा ८००० हाल मोकलवानी जरूर छे। ते अहिं आवी गया। तेने प्रेम लेवानी सगवड करी आपवी जोईए। जो घनश्यामदासे पाछा रू. ५००० न मोकल्या होय तो तेमने याद देजो। ए आवे तो एज मोकली देजो। ने वीजा ३००० उमेरजो ने वीजा मासमाथी कापजो।

: ६३ :

आश्रम, साबरमती,
श्रावण सुद २, मगल
(१०–८–१९२६)

चि जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो। घनश्यामदासनो पण मळ्यो। तमारो तार पण मळ्यो हतो। सीकर गया ते ठीक थयु। हवे त्याथी अही आववानो विचार कर्यो छे ए कायमज राखजो। तमारी तबियत पण सारी नथी एम घनश्यामदास लखे छे। ए वाची हु भडक्यो छु।

बीजु मळवाथी।

: ६४ :

SABARMATI,
20–9–26

JAMNALALJI BAJAJ,
SHREE, BOMBAY

Thank God Anxiously awaiting particulars

—*Bapu*

: ६५ :

SABARMATI,
16–10–26

SHREE,
BOMBAY

Kamala has no typhoid simple malaria Getting better No anxiety

—*Bapu*

: ६६ :

आ सु ११।८२
(१७–१०–१९२६)

चि जमनालाल,

गिरधारी कहे छे के हजु तमारी तबीयत सारी नथी थई। आ ठीक नथी। तमारे क्याक पण जईने सारा थवुज जोईए। तमारे एकातमा जवु जोईए। सारी हवा जोईए ने साथे योग्य साथी होवो जोईए। ज्याथी शारीरिक

तेमज मानसिक् छे। कामनो बोजो बहु न उचकवो जोईए।

कमळानी कशी चिंता करवानु कारण नथी। एने बीजाओने छे एवो ताव छे। ते तो वर्धा मुबई बधे जवा तैयारज छे। पण ज्या लगी तेनी तबीयत सारी नथी थई त्यासुधी मोकलवानी इच्छा नथी ने जरूर पण नथी। हु तेने मळतो रहु छु। चिंता तो कमळानी सासुने विषे रहे छे। केमके ते बहु गभराय छे पण ते सारा तो थईज जशे।

फरवानु बरोबर राख्यु छे के? सवार ने साज बन्ने वखते नीकळवुज जोईए।

: ६७ :

(साबरमती)
आ सु १२।८२
(१८–१०–१९२६)

चि जमनालाल,

मारो कालनो कागळ मळ्यो हशे। जो तमने वखत मळे तो प्रताप पडितनी टेनरी जोई लेजो, ने तेने पूछजो के ते पोतानो माणस क्यारे मोकलशे?

कमळाने दा० रजबअलीये खूब तपासी छे। कई चिंतानु कारण नथी। तेनीज दवा आपवानु राख्यु छे।

: ६८ :

गुरुवार
(साबरमती पोस्ट की मुहर,
४–११–१९२६)

चि जमनालाल,

पत्र मीला है। वैजनाथजीकी हुडी भी मीली है। उनको उत्तर भेज दीया है। सोनीरामजी यहा है। उनकी तबीयत अच्छी नहि है। कमलाने अपना निश्चय आखरमें बदल दीया और मेरे साथ ही वर्धा आनेका निश्चय कीया। मै तो राजी हुआ। तबीयत तो अब अच्छी है। मै एक दिनके लीये मुबई गया था। सर गगाराम, कामठ, गगुली, सर चुनीलाल के साथ बाते हुइ। परिणाम जो हो सो।

: ६९ :

का सु ३।८३
(८–११–१९२६)

चि जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो छे। इलेक्शन बाबत हु तो भूलीज गएलो। तमने जेम ठीक लागे तेम करवामा कई अडचण नथी। माराथी तो एमा कशो भाग नज लेवाय तेथी मे वधाने ना'ज लखी छे। तमारे घणे ठेकाणे फरवा जवु पडे ए तो हु पसद न करु। तेमा तमारी तबीयतने धक्को पहोचे।

बानी तबीयत तो तद्दन सारी थई गई छे। एटले चितानु कारण नथी। मारा आववाने वखते शु थाय छे ते जोउ छु। उमेदवार तो घणा हशे।• लक्ष्मीदासने खास हवाफेर अर्थे साथे लाववा इच्छु छु।

: ७० :

सोमवार
(१५–११–१९२६)

चि जमनालाल,

तमारा कागळ मळ्या करे छे।

कमलानी तबीयत अने स्थिति बन्ने हाल तो ठीक छे।

चर्खा सघनी सभाने सारु खास आववानी कशी जरूर नथी।

पण त्या आराम मळे तो सारु। न मळे तो कोई बीजी जग्याये भागवु जोईए।

तारो वाची गयो। जे जवाबो आप्या ते बधा मने तो बरोबर लाग्या।

भणसाळीना ४० अपवास आजे पूरा थशे। काले सवारे अपवास खोलशे। शक्ति घणीज सरस रही छे। कोईनी पासेथी सेवा जेवु लीधु नथी।

बीजी डीसेबरे अहिथी नीकळीश एवी उमेद छे। कोण कोण साथे हशे ए हजु निश्चय नथी थयो।

देवदास मथुरादासने सारु पचगनी गयो छे। प्यारेलालने तेनी बहेनने सारु पजाब जवु पड्यु।

सोनीरामजीने ओपरेशननी जरूर हती अने रगुन शिवाय बीजे ओपरेशन कराववा तेना माताजी वि तैयार न हता।

चपाबहेन अहिज छे। हजु कई जवाबदारी सोपी नथी।

: ७१ :

ॐ

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

(साबरमती)
फा व १
(२१-११-१९२६)

चि जमनालाल,

तमारो पत्र मळ्यो। तमे दीर्घायु थाओ अने तमारी पवित्रतामा वृद्धि थाओ। आ जगत्‌मा दूषण विना तो कोईज नथी। आपणे तो तेने दूर करवानेज मथी शकीये। ते प्रयत्न तमे करी रह्या छो। प्रयत्नशीलने दुर्गति नथी एवो भगवानना कोल छे।

हवे तो ४ थीए मळशु। टाप्टीवेलीमा थईने आववानो विचार करी रह्यो छु। शास्त्रीयार काले आवेछे।

बापुना आशीर्वाद

: ७२ :

मौनवार,
पो सु १४
(१६–१–१९२७)

चि जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो छे। गोंदीया अने अमरावतीना भंडार बाबत तमने तार आप्यो छे। मारे गोंदीया आववानु होय तो त्यां आवी शकीश। ता २१ मीनी राते पटना छोडवानु छे। पहेलीये मुंबई मेल मुगलसराईमा मळे छे। तेज दहाडे जबलपुर पहोंचवानु थाय छे। एटले बीजीये गोंदीया पहोंचानु हशे। बीजीये सवारे भुसावळ तो मळेज छे।

हवे मणीलालनु। में ए बाबत किशोरलालने कागळ लख्यो छे ते तमने वचाववानु लख्यु छे। मारी तात्कालिक सूचना ए छे के सुशीलाने नाम आप्या वगर गोमती अथवा विजयालक्ष्मी पूछे के तेनो परणवानो विचार छे के नहि। किशोरलालना कागळ उपरथी जोउ छु के कोई बहेन हजु परणवा तैयार होय एमज लागतु नथी। जो एमज होय तो आपणे तेने केम ललचावीये? जो कोई तैयार होय तो कदाच सुशीला होय एम किशोरलाल माने छे। तेथीज विवाह विषेनी तेनी इच्छा जाणी लीधा पछी आगळ वधाय एम लागे छे। दरम्यान हु ते तरफ तो आवीशज। त्यारे वळी वधारे सूज पडशे।

अहिं तीव्र वेगे मुसाफरी चाली रही छे। . ठीक थाय छे। वधारे प्रबंध .. . थाय। आजे राजेंद्रबाबुना गाममा छीये।

जो के जानकीबहेनने मसा पाछा हळवा थया छे तो पण तेने देखाडी दाक्तर कहे तेम करवु एज उचित लागे छे। दाक्तरने देखाडवामा विलंब न करो एम इच्छु छु।

विनोबानी तबीयत सारी हशे। शीवाजीनी तबीयतना खबर पण जाणवा इच्छु छु।

बापुना आशीर्वाद

: ७३ :

CALCUTTA,
1-2-27

JAMNALAL BAJAJ,
WARDHA

Only those necessary will remain Gondia others Wardha

— *Gandhi*

: ७४ :
अ

अवोली,
सावतवाडी पासे, कोकण,
सोमवार
(एप्रिल १९२७)

चि जानकीवहेन,

तमारी पासेथी देवदासने नीकळवु पडयु ए मने गम्यु नथी पण तेनाथी न रहेवाय ए हु समजी शक्यो। हवे कदाच थोडा दीवसमा त्या आवशे।

तमारी तवीयत केवी रहे छे? त्या कई शक्ति आवे छे? कई तकलीफ पडे छे?

चि कमळानो अभ्यास कई चाले छे? तमे न लखता मने लावो कागळ कमळा पासे लखावजो।

मारी तवीयतनी चिंता होय नहि। मने हमणा तो ठीक रहे छे। पण घरडा तो मरण किनारेज वेठा होय ना? एटले कई ने कई वहाने तेणे पुराणा मदीर तो छोडवाज जोईए ने मरजी होय तो नवा मदीरमा वसे ने वदीखानु छोडवुज होय तो स्वतत्र रहीने वायुमाज वास करे। पण घणा काळ सुधी केदमा रहेलाने जेम केदखानु गमे छे ते आपणु पण छे। देहाध्यासने लीधे देह छोडवो नथी गमतो। मने गमे छे के नहि ए तो हु नथी जाणतो। मारी वुद्धिने तो एमा कशु गमवा जेवुज जोवामा नथी आवतु। पण आवरण आगळ वुद्धि विचारी राकडी थई जाय छे। एटले खरी खवर तो प्रयाण-काळे पडशे।

तमारी पासे हाल कोण छे?

: ७५ :

सोमवार

चि जमनालाल,

आ साथे राजेन्द्रवावुनो कागळ छे। मे तो तेने लख्यु छे के पेलो केस लेवो होय तो भले लेय। पण वैजनाथजीने एकवार हा लख्या पछी हवे ते खेचायज नहि। मने आ कागळथी दुख थयु छे।

: ७६ :

(१९२७) ?

चि जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो छे। भाई घनश्यामदासना वन्ने कागळ पाछा मोकलु छु। तेना वचन उपर मने विश्वास छे एटले ते पुनर्लग्न करे एवो भय नथी।

तमे बेलगाम २५–२६ हाजरी भरो ने तेज रीते आश्रममा ११ मीये हाजरी भरो ए इच्छु छु। बन्ने ठेकाणे घणा कामो छे। आश्रममा ९ थी १३ सुधी रही शकाय तो रहेवा जेवु छे। पछी घनश्यामदास गुरुकुल वेळा रहेवा मागे छे ते वखते पण रहेवु होय तो रहो। वधारे तमारा बीजा कामोनी सगवड उपर आधार राखे छे।

कमळा शु करे छे? तेने विषे मने चिंता थाय छे। आनो अर्थ ए नथी के तमे चिंता करता थई जाओ। पण तेना भणवानो कईक प्रबंध थाय तो कदाच ते ठेकाणे पडे। भले इंग्रेजी पेटभरीने शीखे।

: ७७ :

गुरुवार

(१०–२–१९२७)

चि जमनालाल,

तुलसी महेरजी कहे छे के तेना रूने मारु मागे अभिप्राय हु तमने लखु ते प्रमाणे तमे करवा धारो छो। हु स्टेशने जाउ छु एटले आटलुज लखु छु।

मारो अभिप्राय एवो छे के घाटाना जे पैसा आवे ते चर्खा संघमाथी दईये अथवा तो आश्रममाथी। जो तमने योग्य लागे के चर्खा संघमाथी दई काउन्सीलनी सम्मति पाछळथी लेवी तो तेम करव। नहि तो आश्रमने खाते माडी रु अपावी देजो।

तेनी पासे ३०० रूपीया छे। ते एक रेलनो डब्बो भराय एटलु रु बोरामा पेक करेलु मागे छे। तेटलु जो तेमा ८०० रूपीया करता वधारे खर्च न थाय तो अपावी देशो। रु ३०० जुदा गणवा।

जो ओछु रु मोकलवाथी रेल किरायामा बचे तो ओछु मोकलवु दुरस्त समजु छु। तुलसी महेरजी ५० बगाली मण मागे छे केम ते माने छे के ५० मणनु के २५ मणनु रकमोल सुधीनु भाडु एकज पडशे। जो एमज होय तो ५० मण देव्, ुज योग्य लागे छे। आमा हवे कई लखवानु रही जतु होय तो जेम ठीक लागे तेम करजो। तमे धारो ते मारो अभिप्राय समजी लेजो।

मुबई जाओ त्यारे मारो जे सामान पुस्तको कपडा वि छे ते लेता जजो। जईने दाक्तरनी सलाह पडे तो ओपरेशन तुरत करावी नाखजो।

: ७८ :

बुधवार
(फरवरी १९२७)

चि जमनालाल,

तमारु पत्तु मळ्यु छे। हु मुबई ४ थीये कोई वखते अथवा ५ मीये सवारे पहोचीश। दास्ताने ४ थी पुनाने सारु मागे छे। जयसुखलाल महेताये थोडा कलाक साताक्रुझने सारु माग्या छे। जो ते ५ मीनी सवारथी सतोप माने तो पुनाने ४ थीनी साज दई तेज राते नीकळी ५ मीये मुबई आवी त्याथी अकोला जवा नीकळीश।

चि गोमती त्या आवी गयल छे एटले हवे तेने अने किशोरलालने पाछु अकोला आववापणु नथी रहेतु। नाथ त्या होय तो जाणी लेजो के ते विवाह विधि[1] न करे ? तेने हाथेथी विधि थाय ने तेने तेमा कई अडचण न होय तो मने ते गमशे।

जानकीबहेनने शस्त्रक्रिया थई होय अथवा बीजा कारणथी पण तमे न आवी शको तो कशी हरकत नथी एम हु मानु छु।

अहिथी आजे रातेज सगमनेर जवानु छे।

१. श्री मणिलाल गाधी व श्री. सुशीला मश्रुवालाका विवाह १९२७ में हुआ था। इसमें उसीका उल्लेख है।

: ७९ :

शनीवार
(फरवरी १९२७)

चि जानकीबहेन,

तमे शस्त्रक्रिया[१] घणीज हिम्मतथी करावी एथी मने आश्चर्य नथी थयु। जो तमे हारी जात तो आश्चर्य थात। तमारामा में हमेशा हिम्मतज भाळी छे। ते सदाय टको। जलदी साजा थई जजो ने पछी नियमो नु खूब पालन करी मादा पडताज नहि। मारे घणी शरीरे ने मने मजबूत बहेनोनु काम छे।

: ८० :

शनीवार
(फरवरी १९२७)

चि जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो छे। लालाजीनी मागणीनो स्वीकार करवानी तमारी इच्छाने रोकवानु मारी पासे कशु कारण न हतु तेथी तार नथी कर्यो।

जानकीबहेनना खबर मने हमणा नित्य एक पत्राथी मळे एम इच्छु छु।

सतीशबाबुनो दीकरो अनील गुजरी गयो। ते गिरिडि छे। तेनु ठेकाणु Home Villa, Giridih छे। पण खादी प्रतिष्ठानमाज लखो ए वधारे सहीसलामत होय। बन्नेनी उपर आवाना सखत पहोच्यो छे एवो तार छे। में आश्वासननो लाबो तार मोकल्यो छे।

मुबई हु ५मी तारीखे पहोचीश एम हवे तो निश्चय थयु।

१. श्री जानकीदेवीका मस्सोंका ऑपरेशन ११-२-२७ को हुआ था।

: ८१ :

TRICHINOPOLY,
20-?-?

JAMNALAL SETH,
CARE RAMNARAYAN,
MANGALDAS RD , POONA

Tell Mıraben ıf stıll there not be hasty Am perfectly well Gods voıce often ındıstınguıshable from echoes of our fear In thıs rapıd marchıng ın heat her presence ın her delıcate health hındrance. If she wants come despıte my warnıng she ıs welcome

—*Bapu*

: ८२ :

NANDI, MSR,
5-5-27

SHREE,
BOMBAY

Jıvrambhaı here. He wıshes consult you

—*Mahadev*

: ८३ :

BERHAMPUR,
5-12-27

JAMNALALJI BAJAJ,
ASHRAM,
SABARMATI

Mohanlal dıd meet Sent hım home before wıres from you Jayadayalјı.

—*Bapu*

: ८४ :

SABARMATI,
3-3-28

JAMNALAL BAJAJ,
WARDHA

May go Delhı ıf necessary. Health excellent Began takıng mılk from yesterday for moral reasons

—*Bapu*

: ८५ :

BARDOLI,
6-8-28

JAMNALALJI,
CARE PRATAP,
CAWNPORE

Practically finished satisfactory Am staying here

—*Bapu*

: ८६ :

श्रीहरि वर्धा,
पौह वदी १३।८५,
ता ८-१-२९

पूज्य श्री बापूजी,

हम सब लोग कल शामको यहा पहुच गये। चि कमलको डा कर्नल चोपडाने जो रिपोर्ट दी है उसमें मलेरिया और Chronic dysentery बतलाई है। उनकी इच्छा इन्जेक्शन देकर इलाज करनेकी थी। आपने इन्जेक्शनके लिये मनाई की थी। अब एक इच्छा तो यह होती है कि उसका इलाज यहा करा लिया जावे, दूसरे आपके बताये मुताबिक उसे मद्रासकी ओर ले जाया जाय। खाली डर इस बातका है कि अगर वहा उसे ज्वर वगैरह हो गया तो थोडी चिंता रहेगी, दूसरोको कष्ट होगा।

कॉंग्रेसकी वर्किंग कमेटीने जो प्रस्ताव पास किए वे आपके पास आवेगे ही। दारू-निषेधकी कमेटी श्री राजगोपालाचारी व जैरामदासकी बनाई गई है।

अस्पृश्यता निवारणमे श्री राजगोपालाचारी, राजेन्द्रबाबू व मेरा नाम रक्खा है।

विदेशी कपडेके बहिष्कारका भार आपके ऊपर छोडा गया है।

कॉंग्रेस सगठनमे श्री पडितजी, जवाहरलाल व मेरा नाम रक्खा गया है।

स्वयसेवक दल — श्री जवाहरलाल।

राजपूताना कॉंग्रेस कमेटी रद्द (खारिज) कर दी गई है। फिरसे चुनाव— श्री मोतीलालजी जिसे मुकर्रर करे उसकी निगरानीमे—करनेका निश्चय किया है।

वर्किंग ट्रेजरर–वर्किंग कमेटीने कॉंग्रेसका वर्किंग ट्रेजरर मुझे बनाया है। किस परिस्थितिमे मुझे यह काम स्वीकार करना पडा उसका हाल उचित समझे तो रेवाशकरभाईको लिख देवे जिससे उनके मनमे कोई गैरसमझ न हो।

चर्खा सघकी यू. पी. की एजन्सीके बारेमे बात करनेके लिये भाई जवाहरलालसे कलकत्तेमे मैं मिला। अभी तो एजन्टकी जगह उनका नाम रहे और इस कामके लिये जहातक हो सकेगा, वे सहायता भी देते रहेगे। Organiser श्री कृपलानीजी रहे। इस आशयका एक तार भाई शकरलालजी को दे दिया था। आज खुलासेवार पत्र भी लिख दिया है। एजन्सी सबधी बातो के साथ Independence League के सबधकी भी बाते चल पडी। उनकी बातोसे मालूम पडता था कि अपनी पार्टीसे वे थोडे असन्तुष्ट है। उनके साथ किस-किस तरहके आदमी है और किन-किन कारणोसे वे साथ दे रहे है यह सब परिस्थिति थोडेमें मैंने उनको कही थी। इसपर उन्होने कहा कि वे इलाहाबाद जाकर इस बारेमे और अधिक विचार करेगे।

श्री घनश्यामदासजीसे भी मेरी बाते हुई थी। उन्होने एक लाख रुपये देनेका जो वादा किया था उसके सबधमें उनका कहना है कि यह रकम एक साथ देनेमे उन्हे सुभीता नही रहेगा। ३०,००० जनवरीमें, २०,००० फरवरीमे, २५,००० मार्चमें और २५,००० अप्रेलमे, इस तरहसे वे रकम भेजेगे। इनमेसे जनवरीके ३०,००० तो मै अपने साथ लेता आया हूँ। यह रकम गाधी सेवा सघके खातेमे जमा कर ली जायगी और जैसा कि निश्चय हो चुका है, इसमेसे १५,००० तो चर्खासघकी मारफत श्री गाधी आश्रम मेरठको दे दिये जावेगे और बाकी १५,००० राजपूतानेमे खादी कार्यके लिये earmark रहेगे। फरवरीके २०,००० भी गाधी सेवा सघके खातेमे जमा कर लिये जावेगे। बाकी ५०,००० की रकम या तो गाधी सेवा सघके खाते जमा करके आपकी इच्छानुसार काममे लाई जाय या सत्याग्रह आश्रमके खाते जमा की जाय। जैसा आप लिखेगे वैसी व्यवस्था कर दी जावेगी।

मुझे ता २० को मद्रास पहुचना है। बीचमे एक बार बबई भी जाना है। मेरा इरादा १५ या १६ के करीब यहासे निकलकर २–३ रोज बबई रहकर २० को मद्रास पहुच जानेका है।

जमनालाल बजाज

(नकल परसे लिया गया)

: ८७ :

आश्रम, साबरमती,
ता २-६-२९

चि जमनालाल,

रुखीने विषे में सतोकनी साथे वात करी लीधी छे। गुजराती गणत्री प्रमाणे वर्ष दीवालीए पूरु थाय एटले जो आ वर्षे विवाह करवाना होय तो अषाढ महिने करवा जोईए केमके पछीथी लग्न होयज नहि एम सतोक कहे छे। अषाढ महिनामा करवा एतो बहु वहेलु गणाय। वळी सतोकनो एटलो आग्रह छे के बनारसी विवाह पहेलाज गुजराती सीखीले। एटले ए कहे छे के जो आवते वर्षे विवाह होय तो आवता जेठ मासमा विवाह करवा। एटले ए एक वर्षनी वात थई। रुखी एटला दरमियानमा वधारे अभ्यास करीले ए पण सतोकनो लोभ तो खरोज। अने ए सारो लोभ छे। एटले मने लागे छे के हवे आ वातने आपणे वधारे न छेडीए। आवता वर्षे लग्न छे के नहि ए जाणी लेवानी हु तजवीज करु छु। आजे तपास करता मालम पडे छे के आवता वर्षे विवाह छे।

बापुना आशीर्वाद

नकल परसे लिया गया)

: ८८ :

MUSSOORIE,
21-10-29

JAMNALAL BAJAJ,
395, KALBADEVI ROAD,
BOMBAY

Doctor Rajabali's scheme approved Hope you well

—*Bapu*

: ८९ :

२-५-३०

चि जानकीवहेन,

मदालसानो कागळ आजे मळ्यो छे। तमारो कागळ मळ्यान् मने याद नथी। मने रोष शाने चढे? त्या तमे कामे वळगी गया लागो छो एटले त्या पेरीनबहेननी साथे काम करो ए मने गमे छे।

: ९० :
अ

य म[1]
२७-७-३०

चि जानकीवहेन,

तमारो कागळ मळ्यो। हवे उत्साह का न होय? हुं तो भाषणो करो छो, छापे चडया छो? छापामा वखतो वखत जानकीबाई बजाजनु नाम जोउ छु ते उपरथी एमज थाय ना के जमनालाल ने अमे वधा भले जेलमा गया ने रहीये? मने तो विश्वास हतोज के तमारा देखाता अविश्वासनी पाछळ पूरतो आत्मविश्वास हतो। ईश्वर तेमा वृद्धि करो। कमलनयने उतावळ नथी करवानी। खादी उत्पन्नमा हमणा भले रहे। टुकडी[2] बहार नीकळे एटले वालजीभाईने लखे।

: ९१
अ

२१-९-३०

चि जानकीवहेन,

तमे बहु लुच्चा लागो छो। जेम तेम करीने कागळ लखवामाथी छटकी जवु? ने वळी भाषण करता करता हाकेम 'डिक्टेटर' वनशो तो तो मारा जेवाना वारज वाग्या ना? जमनालाले पोतानो धधो नासिकमा ठीक जमाव्यो लागे छे। हु धारतोज हतो। एना पजामाथी कोई छटकीज नथी शकतु। मदू पहेला तो कागळ लखती हती हवे तमारा जेवीज आळसु थई गई छे। एमज आळसु रहेशे तो तमारी पासेथी खेची लेवानो हुकम काढवो पडशे। हवे शरीर केवु छे? ओम तोफान करे छे के?

बापुना आशीर्वाद

(नकल परसे लिया गया)

१ यरवडा मदिर याने यरवडा सेंट्रल जेल, पूना।
२ धारासना नमक डीपो पर धावा करने वालोंकी टुकडी।

: ९२ :

कलकत्ता,
२५-१२-३०

पूज्य श्री बापूजी,

बिहारमे काम अच्छा है। चपारणके कुछ भागोमे करबदीमे सहन कर रहे है। अब कलकत्ते रहके कुछ बगालमे जाते-आते रहना, मारवाडियोमे प्रवेश, खद्दर, पडदा बहिष्कार आदिका काम करना। कृष्णदासजी, आपके सेक्रेटरी, कहते थे दममे दम रहेगा काम करना है, कर सके तो। कहते थे बापूजीको लिखना ठीक है कि नही। मैने कहा—अपनी भाषामे लिखते है। यहाके व्यापारी अच्छी परीक्षा ले रहे है। नासिकमे तबीयत अच्छी है, मन लग रहा है। कमला, मद्द बिहारमे मेरे साथ थी—३० दिन ४० गाव। घनश्यामदासजी मुसाफरी छोड, नियमित कातते है। इधर आजावे तो बहुत हो सके। मेरी तबीयत सभालती हू।

: ९३ :

१८-१-३१

चि जानकीबहेन,

तमे घणे दहाडे कागळ लख्यो एटले कृपा करी एमज कहेवु जोईए ना ? कलकत्तानु काम मुश्केल छे पण तमारे माटे मुश्केल नथी। घनश्यामदासजी ठीक फाळो कामनो आपी रह्या छे।

बापुना आशीर्वाद

(नकल परसे लिया गया)

: ९४ :

बोरसद,
८-५-३१

चि जमनालाल,

कर्नाटकके भाई बहनोसे कहो कि उन्होने युद्धमे तो अच्छा हिस्सा लिया ही है, ऐसे ही अब रचनात्मक कार्यमे भी करे। खद्दरमे बहुत करनेका बाकी है, विदेशी वस्त्रका बहिष्कार खद्दर हीके लिये है। यदि बहिष्कारमे गरीबोकी सेवा हेतु नही है तो कमसे कम मै तो उसमे ऐसा तन्मय न बन सकता, जैसा आज हू।

कर्नाटक एक अलग सूबा बनना चाहिये, इस बारेमे कुछ कर्नाटकी भाई बहुत फिकर करते हैं। वे क्यों फिकर करते हैं? महासभाने तो कानडी भाषा बोलने वालोका एक सूबा बना ही रक्खा है और पूर्ण स्वराज्यमें ऐसा ही होगा।

लिंगायत इ सब इकट्ठे हुए है इसलिये धन्यवाद,और ऐसा ही होना चाहिये।

(नकल परसे लिया गया) मोहनदास

: ९५ :
अ

बोरसद,
१८–६–१९३१

चि जमनालाल,

शा मगलदास हरिलाल गाधी ठे फणसवाडी २ जी गली, दादीशेठ अगीयारी लेन, हरिलाल माणेकलाल गाधीनो माळो। आ भाई शा हरिलाल माणेकलाल गाधीना दीकरा। भाई हरिलालने सुरजवहेनना धर्मना बापने नामे ओळखाव्या। एमनी पासे सुरजवहेनना वधा नाणा छे। एमनी स्थिति हाल वहु सारी न गणाय। एक वेळा वहु सारी हती एम सुरजवहेन कहे छे। मे भाई हरिलालने लख्यु के विधवा बाईना पैसा कोई खानगी पेढीमा नज राखवा घटे। तेथी तेमणे इडिया वेंकमा भरी तेनी पहोच सुरज-वहेनना नामनी मोकली देवी। तेनो जवाब साथे छे। सभव छे के पैसा मुद्दल जोखममा न होय। पण हु चितामा पडयो छु। भाई मगळदासने तमारी पासे तेडावजो अथवा मळजो ने पूछजो। वधी हकीकत जाणी लेजो ने पैसा वैंकमा मुकावी शकाय तो मुकावी देजो। सुरजवहेनना नामे मुकाववाना छे। एमने त्या सुरजवहेनना दागीना वि पण छे तेनो कवजो पण लई लेजो। अथवा तेनी पहोचो सेइफ डेपोझिटनी छे ते लई लेजो। अव घडी तो तमने सुरजवहेनना कागळनी जरूर नहि पडे। पण जरूर जणाय तो मने तार करजो एटले मोकली दईश। पण भाई मगळदासने मळवानु तो तुरत करजो।

पेला इग्रेजी भाईओने मळवा त्या २४ मीए आववानु छे। वल्लभभाई साथे हशे।

: ९६ :
अ

वोरसद,
२०-६-३१

चि जमनालाल,

तमे भगतसीघ बावत मोकलेलो ठराव वाची गयो। देवे पण तमारा कहे-वाथी मोकल्यो हतो। मने ए ठराव मुद्दल पसद नथी पड्यो। 'आज' शब्दथी ए ठरावनी किम्मत बदलाई गई। 'आज' उमेरवाथी आज पण सभाने अहिंसामा विश्वास नथी एवो ध्वनि नीकळी शके। जे अहिंसाने शाश्वत धर्म न माने तेने पण 'आज' उमेरवानी आवश्यकता न होय।

त्या २४ मीए नहि पण २५ मीए गुरुवारे आववानु छे। हु तो गुजरात मेलथी आवीश। ते वखते आ बावत वधारे चर्चवी होय तो चर्चजो।

आ साथे चुडे महाराज विषे कागळ छे ते वाचजो ने कई तपास करवा जेवु होय तो करजो।

राजेन्द्रबाबुए हमणा बिहार जवानो विचार छोडी देवो जोईए। राधिका त्या आवी छे?

: ९७ :
अ

मुबई,
ता ९-८-१९३१

व्हाला बहेन जानकीबहेन,

मे साभळ्यु छे के हजु तमारी तबीयत सारी नथी। हजु तो तमारे घणु काम करवानु छे एटले हवे जल्दी सारा थई जाव। अने तबीयतने अगे फ्रुट विगेरे लेवु पडे ते पण लेवु जोईए। आ कई मोजशोखने खातर नथी खावानु। जो तमारी तबीयत नहि सुधारो तो मने दिलगीरी थशे। जोईता उपचारो करीने हवे जल्दी सारा थई जाव।

बेन कमळा परम दिवसे अहि आवी हती। मीटीगमा पण अमारी साथे आवी हती। एनी तबीयत सारी छे। अमारु अहिंथी नीकळवानु हजु कशुए नक्की नथी। वधा मझामा छे।

: ९८ :

ता १०–८–३१

पूज्य श्री बापूजी,

आपके पास जिन तीन वहनोकी दयाजनक हालतकी खबर आई है, यानी जो Absconder है, उनके बारेमे बातचीत हुई वह मै प्रश्नोत्तरीके रूपमे यहा लिखता हू। अगर यह बराबर न हो तो आप सुधार दे।

प्रश्न १ —क्या आप इन तीनो वहनोको या तीनोमेसे जो आना चाहे उसको आपके साबरमती आश्रममे रखनेको तयार है ?

उत्तर —हा, खुशीके साथ मै उन्हे आश्रममे रखनेको तयार हू। परतु आश्रममे आनेके पहिले उन वहनोको मेरा विचार बराबर समझ लेना चाहिए।

प्रश्न २ —आपका क्या विचार है ?

उत्तर — मेरा पहिला यह कर्तव्य होगा कि इन वहनोके आश्रममे आनेके साथ ही मै सरकारको इत्तला दू और उसमे जो वहने आवेगी उनका नाम, परिचय लिख भेजू।

प्रश्न ३ —अगर आप सरकारको इत्तला देगे तो वह उन्हे उसी वक्त गिरफ्तार कर उनपर मुकदमा चालू कर देगी।

उत्तर — हा, यह भी हो सकता है। वहनोको इस बातके लिए–जोखमके लिए तयार होकर ही आश्रममे आना चाहिए।

प्रश्न ४ —तब आश्रममे आनेसे उन वहनोको क्या लाभ हो सकता है ?

उत्तर —सभव है शायद सरकार मेरे लिखनेपर ये जहातक आश्रममे रहेगी और अपना भविष्यका व्यवहार आश्रम जीवनके साथ मिलाने की कोशिश रखेगी, तुरन्त उनपर कारवाई न भी करे।

प्रश्न ५ —क्या सरकार उनसे जो-जो मामले बने है उनकी बाते जाननेको मजबूर नही करेगी ?

उत्तर — सरकार जरूर जानना चाहेगी, परतु मै सरकारसे भी कहूँगा और वहनोसे भी कि वह दूसरे किसीका नाम न बताकर अपने हाथसे जो गुनाह या भूल हुई हो वही कबूल करे।

प्रश्न ६ —याने वहने सब प्रकारकी जोखम उठानेकी तयारी करके आवेगी तो ठीक रहेगा।

उत्तर – हा, अगर वहने सब प्रकारकी जोखम उठानेकी तयारी करके ही आवेगी तो ठीक-रहेगा।

यह ठीक है। (जमनालाल बजाज)

: ९९ :
अ

अमदावाद,
पो वो. २६,
२२-८-३१

चि जमनालाल,

तमने कागळ लखाववानो समय रहेतो नथी। हजी जमणा हाथने तकलीफ नथी आपतो एटले लखवानु थोडु थाय छे। डावे हाथे लखी शकाय एटलु लखु छु। गई काले कागळ मोकल्या छे ते मळ्या हशे।[1] अस्पृश्यता विषे कोंग्रेसे, काग्रेसवाळाओए, अने तेओनी मारफते अथवा प्रेरणाथी जेटला पैसा खर्चाया होय तेनो आकडो काढवानी वहु आवश्यकता छे। केटलुक तो मने मोढेज छे। तमने पण होवु जोईए। आ वोजो तमारी उपर नाखवो छे। ज्याथी मगाववा जोईए त्याथी मगावीने आकडा भेगा करजो। तेमा पछी कई रही गयु हशे तो हु याद करी लईश। मे वीस लाखनी गणत्री करी छे। ए मारी धारणा प्रमाणे तो ओछी छे, वधारे नथी। तिलक फडमा केटलाक तो आ वावत ईअरमार्क हता। ए तो तिलक फडनो आकडो तमारी पासे छे तेमाथीज मळी रहेशे।

आलमोडानी जमीन वावत कई थयु के? न थयु होय ने जल्दी थई शके एवु होय तो करी लेवानी आवश्यकता जोउ छु।

जानकीवहेन अने वालकृष्णने केम छे? छापाओमा घणी गेरसमजुती थई अने अनेक प्रकारनी वातो आववा लागी तेथी काले वाईसरॉय उपर तार कर्यो छे। एनो जवाव नथी फरी मळ्यो। ए तारनी नकल आ साथे मोकलु छु। पट्टणीजी काले आवे छे। कई हशे तो जणावीश।

: १०० :

अमदावाद,
२२-८-३१

चि जानकीवहेन,

मारी दया खाईनेज तमे कागळ नथी लख्यो ने मृदुने तथा ओमने लखवा नथी दीधो? मारे दया न जोईए, कागळ जोईए। हवे तवीयत सुधरी? खोराक शु चाले छे?

१ ता २१-८-१९३१ का गाधीजीका श्री सद्दरको लिखा हुआ पत्र खड ३ में देखिये।

: १०१ :
अ

KINGSLEY HALL,
BOW, E 3,
25th September, 1931

MY DEAR JAMNALALJI,

Things have not moved much since I wrote to you last, except for Bapu's second speech in the F S Committee which created a flutter both in the British circles and ours Sadanand wired the speech almost entire and you must have read it already If not, you will see it in "Young India" to which I am sending the full text He has had full talks with the Ruling Chiefs and has made no secret of what he wants them to do The speech had to be of a general nature and couched in the form of an appeal because it is Bapu's way But we had frantic telegrams from some Native States friends The other part containing a reference to the indirect form of election was not appreciated by our friends, but that there was nothing alarming or compromising in it may be seen from what Sastri said "So he wants your wonderful Congress Constitution to serve as a pattern for the Indian Constitution!"

Bapu has had a long talk with Irwin today, but I have not had a minute with him and am not likely to see him before I post this and leave for Manchester this evening What with the F S Committee, where sitting and listening to the speeches is a weariness of the flesh, and with numerous engagements, Bapu remains here busier than ever and it is sometimes impossible to have even a minute with him He is feeling very tired and would be thankful for a little bit of rest, but I do not know when it is coming That it is coming soon I am certain, for he is feeling quite isolated and does not have any hope of getting support from any of the parties For instance on the Rupee question and the statement of the Secretary of State in that behalf, he had to plough his solitary furrow. Sapru was there, Rangaswami

Iyengar was there, Jinnah was there, but everyone seemed to be convinced by the persuasive eloquence of Sir Samuel Hoare. What can one expect in these circumstances?

And then the Musalmans. He has had two most disappointing interviews with Shaukat Ali and the Aga Khan. The latter's insincerity was even patent to Shaukat Ali. Jinnah was better, but he thought Bapu would have no difficulty with his friends. He has no objection personally to Ansari, but how can we wait another fifteen days for his coming. And if you are going to concede all that the Musalmans want, why wait for Ansari? Let him come and ratify. As though Bapu did not want really to concede anything, but was making a scape-goat of Ansari! They do not really want Ansari, and Bapu is adamant that he will do nothing over the head of Ansari. He would try and persuade Dr. Ansari to accept the Muslim demands, but if they cannot have him here he will not accept the demands on his behalf. So there seems to be very little chance of success in this matter.

So far as the main question is concerned, they would try to break on the independence issue and make us look ashamed before the whole world, but Bapu is determined to have the safeguards discussed first and have independence discussed in terms of those safeguards.

He has had two meetings with the Labour M. P.'s and with the M. P.'s of the three parties, from the latter of which all the important Conservatives were absent. But there was a lively discussion at the end of the talk which created a good impression. Mr. Horrabin is arranging to take him to Scarborough for the Labour Party's Conference meeting there next week, and there is to be a reception at the National Labour Club. The Labour Members—many of whom have had interviews with Bapu—are most sympathetic; the common working man has genuine regard for him and is most friendly wherever he meets him, but the middle-class Britisher's mentality is still unaffected.

With love,

Yours,

Mahadev

: १०२ :
अ

88, KNIGHTSBRIDGE, S W 1,
13th November, 1931

MY DEAR JAMNALALJI,

Bapu has had his final talk with Sir Samuel Hoare who is now completely disillusioned about Bapu He agreed that the provincial autonomy that Bapu was contemplating was never in his own mind, it was something synonymous with complete independence and it was unthinkable "We must part as friends You will keep me informed and as I shall always have the official version I should also like to have your version of events But today we must agree to differ " It was after that that Bapu made that smashing speech in the Minorities Committee Even Ramsay Macdonald looked quite small under those hammer blows and for once pocketed his pride and forgot his inclination to bluff and insult It had such a thoroughly wholesome, and let us hope, a cleansing effect

But the result? Well the result is that the fellow cannot now lay the blame at our door Read the fine article in the *New Statesman* The editor had a talk with Bapu for an hour some days ago and he has evidently profited by the talk

General Smuts had an interview with Bapu He was uncommonly nice, said that Bapu had made out his case so well that it would be calamitous if he had to go away empty-handed That the Indians had proved their right to govern themselves and nothing can now be allowed to stand in the way He offered to help too He saw the Prime Minister twice after this, came with some communal solution which appealed to him as a good *via media* and after getting Bapu's approval to it took it to the Prime Minister There is nothing much in it and nothing is going to come out of it, but his gushing friendliness and offer to help came as an agreeable surprise

Several friends are trying desperately hard to bring about something—among them Wedgwood Benn Lothian, some Church dignitaries and others Bapu sent a telegram to Irwin today to say that as the Conference seemed to be ambling to pieces he had decided to go, unless Irwin would advise otherwise Within an hour came a reply to say that he was coming to see Bapu tomorrow.

(*One paragraph deleted*)

We hope to sail from Marseilles on the 27th or from Genoa on the 29th I do hope you are not worried by the nightmare of the provincial autonomy stunt raised by the papers here to discredit Bapu Bapu could never lend himself to anything of that kind and he has, to ease the nervousness of friends here, addressed a letter to the Prime Minister and given a long interview to the *News-Chronicle* [1]

Yours sincerely,
Mahadev

(नकल परसे लिया गया)

: १०३ :

अ

88, KNIGHTSBRIDGE, S W 1,
13–11–31

मुरब्बी जमनालालजी,

राउन्ड टेबलना गपाटा रोजना छापामा एटला वधा आवे छे अने राउन्ड टेबलनी वहारनी बापुजीनी प्रवृत्ति विषे हु य इ मा एटला विस्तारथी लखु छु के तमने जूदा कागळ नथी लख्या। केटलाक वल्लभभाईने अने जवाहरलालने लखेला कागळ तमने जोवाने मळ्या हशे एम मानी लीधु छे। आजनु बापुनु जबरदस्त भाषण तो त्याना छापामा आवी गयु हशे। य इ माटे आखु मोकलु छु। हवे तो राउन्ड टेबलनी उत्तरक्रिया करवानी बाकी रही छे एम कहु तो चाले।

बमनजी बापुने मळ्या हता। एनी पासे नीकळती रकम लगभग दोढेक लाख थवा जशे। ए हवे चरखा मघ अने देशसेविका सघने आपवाने कबूल थया छे। एने तमे जरूर मळजो अने बन्ने मस्यानी खूब वातो करजो अने

१ महादेवभाई द्वारा भेजा गया परिपत्र।

वाकेफ करजो। एने एनी कमिटीमा आववानो लोभ छे। बापुए कह्युं के कमिटीमा आववाने लायकात जोईए ते लावो। चर्खा संघने माटे तो लायकात मेळववी एने माटे अशक्य छे, पण देशसेविका संघनी प्रवृत्तिमा एने मालिक बनावी शकाय एम बापुने लागे छे। एमने मळीने बधी वातो करजो अने एनी रकमनु ठीक करी लेजो।

पूज्य बापुनी तबीअत, अहींना अतिशय कामनो बोजो जोता, असाधारण रीते सारी रही कहेवाय। ठंडी ठीक पडे छे पण सिमलाना करता जराय वधारे नहीं। बधा कहे छे के बापुने पगले आ वखते इंग्लंडमा हिंदुस्थाननी हवा आवी छे।

बापुनो यूरोपमा मुसाफरी करवानो[1]

: १०४ :

लंडन,
१४–११–३१

प्रिय जमनालालजी,

आ भाईने[2] पूज्य बापुजीए आश्रममा लेवानु ठराव्यु छे। एमने एक दिवस मुंबईमा रहेवु पडे तो घेर राखजो अने आश्रममा जवाने माटे जे सूचना आपवी घटे ते आपजो। एने मे पैसा तो आपेला छे।

:१०५:

य. म.,
२९–१–३२

चि. जानकीबहेन,

तमारो कागळ जोई शक्यो। एक शब्द पण बोलवानो समय न मळ्यो। [मेरा-हरे?] लखवानो वचन तो छे ज। हवे तमे पण छूटथी [illegible] लखजो। कमलनयन हाई जेलमा छे। तेना शा खबर छे? महात्मा, आम [illegible]। तमारी तबीअत केवी रहे छे?

सरदार मारी साथे छे ए तो जाणो छो। मजा करीये छीये।
[illegible]

[1] [illegible]
[2] [illegible]

: १०६ :

(१९३२) ?

चि जानकीबहेन,

तमारो कागळ पाछो नथी एम केम ? गोमतीने मारो कागळ मळ्यो के नहि। जमनालाल तथा किशोरलालने केम रहे छे ए लखजो।[1]

बापुना आशीर्वाद

: १०७ :

यरवडा मंदिर,
मौनवार
(जनवरी-फरवरी, १९३२)

चि जानकीबहेन,

केम ? हिम्मतमां छो के ? मदालसा केम छे ? कमलनयननी चिंता न करता। कशी चिंताज न करवी एटलु तो विनोबानी पासेथी गीता सांभळीने शीख्या छो ना ?

बापुना आशीर्वाद

(नकल परसे लिया गया)

: १०८ :

य म,
२६-३-३२

चि जमनालाल,

तमने अने बीजा साथी केदीओने लखवानी छुट आजे आवी छे। एटले मने उत्तर आपवानी छुट तमने मळवी जोईए।

तमारी तबीयत अने तमारा खोराकनी विगतवार खबर तुरत आपजो। अमे बधा कईक चिंता भोगवीये छीए। बीजा साथी कोण छे केम छे ? दा मुमत केम छे ? दीवान मास्तरने मारी जेम दांत नथी एम सरदार कहे छे। तेनुं केम चाले छे ? बीजा कोण छो ते तो खबर नथी। पन्नालाल छे तेना खबर गंगाबहेने आप्या।

बधा साथीओने अमारा वंदेमातरम। महादेव अहिं पहोंची गया छे ते तो तमे जाण्युज हशे।

बापुना आशीर्वाद

१ यह जेलसे लिखा हुआ पत्र है।

: १०९ :

धूलिया मंदिर,
ता ४-४-३२

पूज्य बापूजी,

आपका पत्र २६-३ का वीसापुरसे लौटकर मुझे यहा दो तारीख को मिला। मै वीसापुरसे २४ तारीखको ट्रान्सफर होकर यहा आ गया। मै तो वही रहना चाहता था, अधिकारियोंसे सबध ठीक बन रहा था।

मेरे कानका इलाज यहा ठीक चल रहा है। सुपरिन्टेंडेंट श्री कॉन्ट्रेक्टर खास ध्यान रखते है। अपने हाथसे दवा करते है। पहलेसे बहुत फायदा मालूम होता है। बबईमें डा मोदीको भी बताया था। उसने भी कहा था कि अदरकी सूजन पहलेसे बहुत कम है। यहा भी डा मोदीका ही इलाज जारी है। इस तरह नियमित इलाज तो शायद बाहर नही कर सकता। इसलिये इस बारेमे आप चिंता न करे।

भोजनमे प्रातःकाल काजी और दोपहर और शामको साधारण 'सी' वर्गका खुराक लेता हू। वह मुझे अनुकूल पडा है। जरूरत पडने-पर स्वास्थ्यके लिये खुराकमे मामूली सुविधा हो सकती है। परन्तु इसकी आवश्यकता नही पडेगी, ऐसा विश्वास है। 'सी' वर्गका अनुभव प्राप्त करनेकी बहुत दिनोकी मेरी इच्छा इस बार सरकारने अपने आप पूरी की। इससे मुझे ठीक मानसिक शाति है। मै ठीक उत्साहसे हू और आपके आशीर्वादसे इस कसौटीमें सफलतापूर्वक उत्तीर्ण होऊगा, ऐसी आशा है।

श्री जानकीदेवीका स्वास्थ्य बीचमे नागपुर जेलमे बिगड गया था। इससे कुछ चिंता रहती थी। परन्तु अब सुधरनेकी खबर मिली है। उनको 'ए' वर्ग दिया गया है। चि कमलनयन 'सी' वर्गमें हरदोई जेलमे है। वजन कम होनेकी खबर मिली है। झाडू इ० निकालनेका काम उसने लिया है। मेरी बहन केसरबाई, गुलाबचद और गुलाबचद की भोजाई तथा अन्य लोगोको भी जेलका अनुभव मिला है। मुझे बाहरकी कोई चिंता नही है। मै तो वीसापुर भी रहनेको तैयार था, और वहा रहना पसद भी करता। मैने यह बात वहाके अधिकारियोसे

भी की थी। परन्तु कानकी बीमारीको निमित्त बनाकर मुझे यहा भेज दिया गया है। मुझे वीसापुरकी जेलका दृश्य कॉंग्रेस केम्पकी याद दिलाता था—याने चारो ओर जेलकी दीवारोकी जगह पानी, पहाड इत्यादि दिखाई देते थे। खान-पानकी व्यवस्था वहा ठीक है। गरमी और धूपमे कामकी बडी तकलीफ थी। अधिकारियोमे इस बारेमें बातचीत हुई थी। इस बारेमें मेरी सूचना उन्होने स्वीकार की थी। वहा होता तो आशा थी कि तकलीफे दूर करनेमे सफलता मिलती। कमसे कम दोपहरको धूपके वक्त अदर चर्खा, तकली, पिंजण आदिका काम दिलानेकी आशा तो थी ही। अधिकारियोमे जो बातचीत इस बारेमे हुई थी, वह आते समय मित्रोको बता दी थी। सभव है कि कुछ फैसला हो गया हो।

वीसापुरमें मुझे आराम देनेके लिए और कानके इलाजका कारण बताकर बैरकमेंसे अस्पतालमे ले गए थे। परिणाममे सुधारका एक और क्षेत्र मुझे मिला। कई एक सुधार सुपरिन्टेंडेंटने मजूर किये थे। आशा है अब वे अमलमे लाए गए होगे। सुपरिन्टेडेट मि क्विनको तो आप जानते ही है। डिप्टी जेलर मि सेक्सटन पिछले साल नासिकमें थे। जेलर मि एलिस पिछले साल रत्नागिरिमे थे। वीसापुर रहता तो वातावरण सुगम बनानेमे उसका सहकार हासिल करके अपनी कसौटी करता। परन्तु वह बात तो अब होने से रही। डा सुमतके बारेमें आपने पूछा है। उनको पीछेमे 'बी' क्लास मिला था, इसलिये वह नासिक भेजे गए थे। मुझे मिले थे। दूध इ का खुराक उन्हे मिलता था। उनका स्वास्थ्य ठीक था। दीवान मास्तरसे मिलना जुलना होता था। गोकुलदास तलाटी, फूलचद शाह, मामा फडके भी वही थे। आश्रममेंसे गोडसे, पन्नालाल जवेरी, विट्ठल आदि थे। विद्यापीठसे त्रिकमलाल शाह और कई एक विद्यार्थी थे। वैसे ही दरबार साहबके दोनो पुत्र, ललितमोहन, रोहित, श्री सरलादेवीके भाई आदि भी वहा थे। बबईसे एस के पाटिल, ईश्वरभाई पटेल आदि थे। प्राय सब आराममें है।

यहापर विनोबा, प्यारेलाल, गोपालराव, और उनकी पत्नी शाताबहन, दास्ताने, मीर जफरुल्ला, द्वारिकानाथ हरकरे, गुलजारीलाल, खण्डुभाई, राजाराव, पुरुषोत्तमदास त्रिकमदास, ककलभाई, वर्धा आश्रमसे भाऊ, दत्तु और साबरमती आश्रमसे पाडुरग है। वैसे ही अहमदाबाद

और पूर्व खानदेशके भी कई एक कार्यकर्ता है। उनमे ठीक परिचय हो रहा है। यह परिचय तथा भाईखला और वीमापुरमे ववईके मित्रोमे हुआ परिचय जीवनमें ठीक उपयोगी होगा, ऐसी आशा है। ५० के करीव वहने यहा है। विनोवाके कारण नैतिक वातावरण सुदर वना है। अधिकारियोका व्यवहार ठीक है। विनोवा व मेरे साथ ठीक प्रेम और सहकारका व्यवहार है। हम सव ठीक तौरपर समयका उपयोग करते है। जेल नियमके मुताविक यथावश्यक सुधार सहकारसे धीमे-धीमे हो रहे है। विनोवाको 'वी' वर्ग दिया है। उनका घी दूध आदिके त्यागका प्रयोग जारी है। वजन कम होकर रत्तलसे ९० रत्तल हुआ था। वजन वढानेके लिये प्रयत्न कर रहे है। आजकल माधवजीकी खुराक एक रत्तल दूध, चार छोटे केले, और एक पपीता है। गुलजारीलालकी तवीयत सुधर रही है। आजकल उसे गेहूकी रोटी और एक पौण्ड दूध मिलता है। तकली और पीजणकी व्यवस्था है। व्यक्तिगत तौरपर दो-एक चर्खे भी चलते है। रिषभदास वीमापुर गया है।

आपकी खवर यहाके कमिश्नर मि क्लेटनसे शुक्रवारको मिली थी। उससे भी जेलके सवधमें एक आध सुधारकी वात हुई थी। मेरी ओरसे आप तथा सरदारजी चिंता न करे। हम सव लोगोका आप और आपके साथियोको प्रणाम।

(नक्ल परसे लिया गया) जमनालाल वजाजके प्रणाम

:११०:

अ

यरवडा मदिर,
९ मी एप्रिल, ३२

चि जमनालाल,

तमारा कागळनी अमे वधा राह जोई रह्या हता। कागळ सपूर्ण छे। त्यानो खोराक माफक आवी गयो छे ए वहु सतोषनी वात छे। जानकीवेन विषे अने कमलनयन विषे मने खवर मळी चूक्या हता।

विनोबा व्रत लईने न वेसी गया होय तो मने लागे छे के तेने दूध लेवानी जरूर छे। त्या पण तेनी प्रवृत्ति तो आकरी जणाय छे। ए प्रवृत्ति नभाववाने सारु दूधनी जरूर होय एम भासे छे। मारो दृढ विश्वास छेज के वनस्पतिओमा एवी वनस्पति छे के जे दूधनी गरज सारे छे अने दूधना दोषोथी मुक्त छे। पण ए वनस्पति शोधवानी जेनामा विद्वत्ता छे एवा वैद्योने तेनो ख्याल नथी। आपणा जेवाना गजा उपरात ए वात छे, अथवा ए एकज वस्तुनी पाछळ पडवु जोईए। एम न करी शकाय, एवो मारो दृढ अभिप्राय छे एटले जे धर्म सहज प्राप्त थयो छे ते धर्मनेज वळगी रहेवानु कर्तव्य छे। विनोबाए एटलु वधु ओछु वजन न थवा देवु जोईए एम लाग्याज करे छे।

त्या तमारी पासे सुदर समाज जाम्यो लागे छे। तमारा 'क' वर्गनो मने द्वेष थाय छे। ज्यारे तमने ए वर्ग मळेलो त्यारे हु तो वहुज राजी थयो हतो। तमारी तवीयतने तेथी काई नुकसान थशे एवी मने धास्ती लागीज न हती। तमारी पोतानी अने तमारा पाडोसीओनी तवीअतनु जतन करवानी तमारी शक्तिने विषे मने कदि शका आवीज नथी, अने जे अनुभवो तमने मळी रह्या छे ते वीजी रीते तमे पामीज न शकत।

प्यारेलालने कहेजो के कुसुमनी मारफते तेणे लखेला कागळनो पूरो जवाव हु आपी चूक्यो छु एटले अही काई नथी लखावतो। ए जवाव कदाच आना करता वहेलो तेने मळशे। न मळे तो मने खबर देजो। अमे त्रणे जणा मजामा छीए। हाल वे मास थया हु रोटी, वदाम, खजूर, एक शाक अने लीवु लउ छु। तेथी सारु रहे छे। रेच पिचकारीनी मुद्दल जरूर रहेती नथी। आश्रमनो इतिहास लखी रह्यो छु। घणो वखत कागळो लखवामा जाय छे। आ नानकडा मडळमा तमारे विषे तो दिवसना केटलीये वार वातो थती हशे। वधाने अमारा वधाना यथायोग्य कहेजो। ज्यारे ज्यारे लखी शकाय त्यारे त्यारे लख्या करजो।

वापुना आशीर्वाद

: १११ :

नोट—गांधीजीकी सहीके नीचे जेल अधिकारीने सही की है।

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

य म,
२४–४–३२

चि जानकीवहेन

मने कागळ लखजो। तमारी तबीयत केम खराब रहे छे? शु खाओ छो? फळ बराबर लेवा जोईए। तबीयत सुधारवी जोईए। जमनालालनी

के कमलनयननी के बीजा कोईनी फिकर करवानी होय नहि। कई वाचवानु छे के? साथ कोनो छे?

अमे त्रणेय मजामा छीये। तमने घणीवार सभारीये छीये।

बापुना आशीर्वाद

: ११२ :
अ

१५-८-३२

चि जानकीवहेन,

केटलु अभिमान? जेलमा जई आव्या एटले कागळज न लखवा? केम जाणे तमे एकज जई शकता होय नहि। तबीयत केम छे? कमलनयन क्या छे? तेने मे कागळ लख्यो छे ते पहोच्यो होय एम लागतु नथी।

बालकृष्ण क्या छे? तेनो कागळ हमणा मुद्दल नथी। मदालसा पण सुई गई लागे छे। शिवाजी राधाकृष्णनु लखजो। छोटेलालने कागळ लख्यो छे तेनो पण जवाब नथी। आ वधानी आशा तमारी पासेथी राखु छु।

अमे त्रणेय मजामा छीये।

: ११३ :
अ

य म,
२०-८-३२

चि जानकीमैया,

वाह! आखरे सीसापेननी वे लीटी लखवानी तस्दी लीधी खरी? जेलमा जईने पण आळस नज गयु केम? 'अ' वर्ग आपवामाज भूल करी। 'क' वर्ग आपी वरोवर काम करावबु जोइतु हतु। आळस तो आळस पण हवे शरीरने वरोवर ठेकाणे लावजो। विनोबाना साणसामा ठीक आव्या छो। कागळ वरोवर नहि आवे तो सजा थशे। तमे जीर्ण थई गएली धावळी, खादी उपर सीवीने फरी वनावी हती (ए) राजमहेलमा[1] जई आवी ए वात मे करी हती के? अहि तो छेज। हजु तो खूब चालवानी छे।

बापुना आशीर्वाद

१ बकिंघम पेलेस, लंडन।

: ११४ :

वर्धा
(अगस्त १९३२)

पूज्य बापूजी,

आपका कार्ड ता १५–८ का मिला था। उसमें आपने शिवाजी वगैरह की खबर मगवाई थी। उसका उत्तर पहुच गया होगा।

आपका पत्र ता २०-८-३२ का मिला। ओम कहती है कि बापूजीको विशेष काम नही होगा जिससे बडे बडे विशेषण लगाते हैं। मेरा 'ए' क्लास आपको खटकेगा यह मैं जानती ही थी। आप 'क' वर्गके लिये इच्छा रक्खे या उससे भी नीचेके वर्गके लिये। अगर आप मुझे रसोई सिखाना चाहते हो, तो यह तो हो सकता नही। और यहा वर्धा तहसीलकी १०० बहने होनेके कारण दूसरी मेहनत करना चाह तो भी आलस्यमे ही समा जाती हूँ। लेकिन मुझे तो एक ही भय था कि कही 'क' की खुराकसे मर जाती तो?

आप आलस्य आलस्य कहते है, पर २० पुस्तके जो जिंदगीमें नही पढी थी सो ५ मासमे पूरी की। यहा आते ही दूसरी जेलमे फस गई। ता ४-८-३२ को छूटी और ता ७-८ को हिंदी साहित्यकी प्रथमा परीक्षाका फार्म भर दिया। ओम, प्रल्हाद, उसका छोटाभाई श्रीराम परीक्षामें बैठनेवाले थे ही। कमलको भी फसा दिया। मुझे तो आप वहीसे आशीर्वाद दे जिससे मैं तो पास हो जाऊ।

आप दूसरोको कहते हैं कि दया करो और अपने बीमार हाथसे कितना काम लेते हैं। आपने विनोबाके झडसेमे आनेका लिखा सो तो ये आपहीके काटे बोये हुए है। लेकिन एक नई खबर सुनाती हू कि विनोबाजी भी अब मेरे सडसेमें आने लगे हैं। वे भी आज आपको पत्र देनेवाले हैं।

आपने जीर्ण कमलीकी याद कराई सो ऐसे काम तो विना आलस्यके ी होसकते हैं ना!

राधाकृष्ण, मदनमोहन ता १३ तक छूटने वाले हैं। आप मरने के सिवाय मुझे चाहे जो सजा करे।

मेरी तबीयत ठीक है। कमलका वजन विना कोशिशके ही सपाटेसे बढ रहा है। ४४ पौण्ड गया था, सो ३५ तो भर आया। अब न बढे तो अच्छा है।

(नक्ल परने लिया गया) जानकीका प्रणाम

पाचवें पुत्रको–

: ११५ :
अ

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

य म,
१९–९–३२

चि जानकीमैया,

'क' वर्गनो खोराक खाईने मरवानी धास्ति तमारा जेवीने लागे छे तेथीज वगर खावे जीववानो रस्तो मे पकड्यो छे। ए कालथी जोई लेजो। खाता खाता तो आखु जगत मरे छे। 'अ' वर्गनु खाईने केटलु जीवशो ए जोई लईशु। पण अनशन करता करता जीवी जवानी कळा केवी? एक शरत छे खरी। बधी मैयाओए जोगणी थईने बहार नीकळी पडवु पडशे ने अस्पृश्योने स्पृश्य बनावी पोते ईश्वरनी शक्ति होवानो दावो सिद्ध करवो पडशे। एटलु करजो ने पछी 'अ' वर्गनोज खोराक खाधा करजो। पण जो कोई 'अ' वर्गनो न आपे तो 'क' वर्गना खोराकथी सतोष मानजो।

पण धारोके जोगणीओनु ये कई न चाल्यु तो भले आ माटीनु पुतळु हमणाज पडी भागे। हु तो जीववानोज छु। ज्यासुधी एक पण मैया मारु काम करती हशे त्या लगी कोण कहेशे के हु मरी गयो? आपणे भले गीतानु तत्त्वज्ञान आत्मानी अमरता विषेनु छोडी दईए। मै बतावी ए अमरता तो आपणी चामडानी आखे पण जोई शकाय एवी छे। एटले खबरदार जराये गभराटमा आवी पड्या तो। शोभजो शोभावजो। तन मन धन ईश्वरने सोपी सुखी थजो ने सुखी रहेजो। नखराखोर ओमने ने ज्ञानी मदालसाने आज न लखी शकाय।

आ तमारे बधाने सारु छे एम समजी लेवु। अखड सौभाग्य भोगवजो।'

बापुना आशीर्वाद

: ११६ :
अ

(य म)
२७–९–३२

चि जमनालाल,

तमे काई मुझाता नहि हो। तमारे तो नाचवुज जोईए के तमे जेने बाप निरधार्यो ते तमारा प्रिय कामने सारु पूर्णाहुति आपे ए तमारे सारु तो उत्सवज होय।

१ हरिजनोंके लिये सरकारके खिलाफ किये गए उपवासका इस पत्रमें जिक्र है। उपवास २० की जगह २२ सितम्बर को शुरू हुआ था।

जानकीमैयानी साथे मारो विनोद चाली रह्यो छे। सरदार, महादेव तमने सभारे छे।

(नक्ल परसे लिया गया)   बापुना आशीर्वाद

: ११७ :

POONA,
2-11-32

JAMNALAL BAJAJ,
DISTRICT JAIL, DHULIA

Wire exact condition health especially ear.

—*Bapu*

: ११८ :
अ

यरवडा मदिर,
२-११-३२

चि जमनालाल,

तमारा कान विषे डरावनारी खबर मळवाथी आजे तार कर्यो छे ए मळयो हशे एवी उमेद राखु छु। जवाबनी अमे राह जोई रह्या छीए। तमारो विगतवार कागळ पण आववो जोईए। डा मोदी पासे खबर तो मगावी छे। तमारा खोराकमा थोडो फेरफार सूचवु। केळानी कशीए जरूर नथी। पपीतानी पण अत्यारे जरूर नथी जोतो। तमारा खोराकमाथी हाल दाळ काढी नाखवी जोईए अने लीली द्राक्ष अथवा मोमबी मतरा उमेरवा जोईए। दूध वधारे लई शकाय तो सारु खरु। हमणा घणा वखत थया तमारो कागळ नथी। तबीयतनी बधी वीगत आपजो।

मणीलाल केम छे? बीजा साथीयो विषे पण लखजो। अमारु गाडु चाली रह्यु छे। मणीलाल, सुशीला, तारी, सुरेन्द्र, सीता, काले आवी गया। सुशीला हवे ठीक थई छे। थोडो वखत डोसीवाईनी इस्पि-ताल्मा रहेवु पड्यु हतु ए तो खबर हशे।

:११९:

अ

य म,
८–११–३२

चि जमनालाल,

तमारो कागळ हमणाज मारा हाथमा आव्यो साभळचो अने जवाब लखावी रह्यो छु। तमे इच्छो छो ए बधा आशीर्वाद टोपलाओ भरीने तमने जन्मदिवसने दहाडे मळो। जे मृत्यु गमे त्यारे नाना मोटा, काळा धोळा, मनुष्य जीव के बीजा बधाने आववानुज छे एनो डर शो होय एनो शोक पण शो होय? मने तो घणीवार एम थाय छे के जन्मना करता मृत्यु वधारे सारी वस्तु होवी जोईए। जन्मना पहेलानी माना गर्भमा जे यातना भोगववी पडे एने तो जवा दउ छु, पण जन्म्या त्यार-थीज जे यातना शरु थाय छे एनो तो आपणने प्रत्यक्ष अनुभव छे। ए वखतनी पराधीनता केवी अने ए पराधीनता बधाने सारु एक सरखी। ज्यारे मृत्युमा जीवन स्वच्छ होय तो पराधीनता जेवु काई न मळे। बाळकने न होय ज्ञाननी इच्छा अने न ज्ञान कोई पण रीते सभवे। मृत्यु समये तो ब्राह्मी स्थितिनो सभव छे एटलुज नही पण एवी स्थितिमा घणाने मृत्यु थाय छे एम आपणे जाणीए छीए। जन्म ए दुखमा प्रवेश छेज ज्यारे मृत्यु ए सपूर्ण दुखमुक्ति होई शके एम मृत्युना सौदर्य विषे एना लाभने विषे आपणे घणुये विचारी शकीए छीए अने आपणा जीवनमा शक्य पण बनावी शकीए छीए। एवा प्रकारन् मृत्यु तमने थाओ एवा आशीर्वाद अने एवी इच्छामा जे काई पण इष्ट होय ए बधु आवी गयु। आ इच्छामा बने साथीओ छे एम समजो। तमारी तबीअत विषे बधु जाण्या पछी पण जे विचार में बताव्यो छे एने वळगी रहु छु। तमने घरखर्चथी खोराक मेळववानी रजा मळे तो ए मेळववामा हु कशोय दोष जोतो नथी। शरीरने अमानत तरीके समजीने यथासभव रक्षा करवानो रक्षकनो धर्म छे। भोग भोगववाने अर्गे गोळनी एक काकरी सरखीए न मागो न ल्यो पण औषधी तरीके मोघामा मोघी द्राक्ष पण लभ्य होय तो मेळवीने लेवामा कशो दोष जोतो नथी। एटले एवो खोराक लेता उद्वेग पाम-वानीये आवश्यकता नथी। एवीज स्थितिमा बीजाने पण एवो खोराक अपावी शकाय तो अपावीए। मारी दृष्टिए जेटला घउ मळे छे एटला

खावानी जरुर नथी। गोळने तद्दन रजा आपवी इष्ट मानु छु। तमारा शरीरने गोळनी कईज आवश्यकता नथी। एने बदले निर्दोष मध लेवु ए वधारे सारु छे, पण मीठा फळ मळी शके त्या लगी तेनी जरूर नथी। दूधमा कोई पण प्रकारनी मीठाश नाखवी ए दूधने पाचन थवामा हानिकर छे। दूधनी मात्रा वधारवी ए सारु छे, ओलिव ओइलने बदले माखण लो छो ए बरोबर छेज। अही मळनु ओलिव ओइल ए हमेशा शुद्ध होतु नथी, ताजु तो नज होय अने माखणमा जे 'वीटेमीन' छे ते ओलिव ओइलमा नथी। शाकमा लीलोतरीज होवी जोईए। पटेटा विगेरे लगभग रोटलीनु स्थान ले छे, एमा स्टार्च होय छे। तमने स्टार्चनी ओछामा ओछी आवश्यकता छे अने जेटली हशे ते बधी घउमाथी मळी रहेशे। दाळ तो नज लेवी। माखण पूरतु लेवाय तो बे रतल दूध बस छे। ए वधवा घटवानो आधार वजन उपर छे। वजन स्थिर थाय त्या लगी अने हजम थाय त्या लगी माखणनी मात्रा, अथवा दूधनी, अथवा बनेनी वधार्य जवी जोईए। लीलोतरीमा दूधी, कोळु, जूदाजूदा प्रकारनी भाजी, कोबी, कोलीफ्लावर, दाणा विनानी पापडी, वेगण, ए बधा सारी लीलोतरी गणाय। घउनो आटो थूलीनी साथे होवो जोईए। जो घउने तद्दन साफ करीने दळेला होय तो तेमानो काई पण भाग रद्द न थवो जोईए। फळमा अगुर लीला, मोसबी, सत्रा, दाडम, सफरजन अनेनास लेवा योग्य छे। हमणा जे प्रयोगो अमेरिकामा थई रह्या छे ते उपरथी जणाय छे के एकज वखते घणी वस्तु भेळववी न जोईए। फळ एकलुज खावाथी तेनो गुण वधारेमा वधारे मळे छे अने ए भूखे पेटे लेवु उत्तममा उत्तम छे। अग्रेजीमा कहेवत पण छे के सवारनु फळ ते सोनु छे, बपोरनु रुपु छे, एटले पहेलु खाणु एकला फळनु होवु जोईए। सवारना पहोरमा गरम पाणी पीधु होय एनी हरकत नथी। तमने चोवीसे कलाक खुल्ली हवामा रहेवानी रजा मळी शकती होय तो ए लेवा जेवी छे। धीमेथी रोज खुल्ली हवामा प्राणायाम करी शकाय तो सारु। रातना टाढथी मुद्दल डरवानी आवश्यकता नथी। गळा लगी बरोबर ओढेलु होय, माथा उपर कान बुदीने कपडु वीटाळयु होय तो काई हरकत न आवे। चोवीसे कलाक शुद्धमा शुद्ध हवा श्वास-वाटे फेफमामा जाय ए अति आवश्यक छे। सवारनो तडको सहन थाय एवी रीते उघाडा शरीरने जेटलो अपाय तेटलो आपवो जोईए। आ बधु डा कट्राक्टरनी साथे चर्चजो अने पछी जे योग्य लागे ते करजो।

माधवजीनु गाडु तो सरस चालतुज हशे। त्या जे साथीओ रहे अने होय तेने आशीर्वाद अने अमा त्रणेना यथायोग्य। अस्पृश्यता बाबत अही जे चाली रह्यु छे ते कदाच तमे जाणता हशो। तमने जे विचार सुझे ए मोकली शको छो। ए मोकलवानी तमने त्यांथी छूट मळी शकशे।

बापुना आशीर्वाद

: १२० :

POONA,
16-11-32

SETH JAMNALAL BAJAJ,
PRISONER, DISTRICT JAIL, DHULIA

Wire received Keep me informed if necessary daily by wire

—*Bapu*

१२१ :

यरवडा मंदिर,
२२-११-३२

चि जानकीबेन,

तमारा कागळना जवाबमा विनोद तो घणोय करवो हतो पण अत्यारे वखतज क्या छे। कमलनयननी वात कहेवी भूली गयो ए लखु छु। कमलनयनने अंग्रेजी भणवानी बहु होंश छे। एने शिक्षानु वातावरण जोईए छे। एथी मने लागे छे के एने कोलबो जवा देवो। त्या इंग्रेजी पेटभरीने शीखशे। पासेनो पासे अने दूरनो दूर। छोकराओने सघरवाथीज सारा रहे के थाय एम मुद्दल मानवु नही। आश्रमनो स्पर्श जेटलो लागवानो हतो तेटलो लाग्यो मानी लेवु जोईए। लकामा न्यूरेलीआमा रहे तो त्या तेना हवापाणी सुदर मळशे। अने हु मानु छु के भणवानी सगवड त्या सारी छे। तमारे चिंता जराय करवानु नही रहे। आ विषे मने लखवु होय तो लखजो।

जमनालालनी बाबत मुद्दल चिंता न करशो। खबर आवे ते मने आप्या करजो। मारो पत्रव्यवहार ए बाबतमा चाली रह्यो छे। मदनमोहनने नोखो कागळ नथी लखतो।

बापुना आशीर्वाद

: १२२ :

य म,
२६–११–३२

चि जमनालालजी,

तमारा अही पहोची जवानी वधामणी हमणाज आवी।[1] मुसाफरीनो लोताड नही लाग्यो होय। अही तो दाक्तरो जे फळफळादि खावा आपे ते खावा। खासी केम छे? मळवानी रजा मेळववानो प्रयत्न करी रह्यो छु। अमे वधा मजामा छीए।

: १२३ :
अ

यरवडा मदिर,
७–१२–३२

चि जमनालाल,

तमारी तबीयतना खवर आजेज आपजो। तमने मळवानी तजवीज करी रह्यो छु। अप्पानु प्रकरण हाल तो उकल्यु छे।[2] अर्ध उपवास अने पूर्ण उपवास मुलतवी रह्या छे। आखा प्रश्ननो निकाल थशे। मे वे रतल वजन पाछु मेळवी लीधु छे। "आश्रमवासी प्रत्ये" गोतीने मोकलीश। बीजा काई जोईए तो मगावजो। कमलनयनने सीलोन मोकलवानी पूरी आवश्यकता छे। कमलनयन लखे छे के जानकीदेवी पण हवे तो अनुकूळ छे। त्या हवापाणी तो तेने अनुकूळ रहेशेज, अग्रेजीनो शोख पूरो पडशे, हिंदुस्थाननु वायुमडळ अत्यारे तेने शात नही राखे, सीलोनमा शात रही शकशे। ए घरनु घर अने वहारनु वहार छे। इच्छामा आवे त्यारे पाछो आवी शके छे। अग्रेजी अभ्यास सुदर मळी शकशे। अनेक रीते मने तो आ प्रयोग वहु गमे छे। तमारो विचार जणावो त्यार बाद तेने मोकलवानी तजवीज करु। एक वे ठेकाणे लखवु पडशे।

घनश्यामदास काले गया। तमने मळाय एम तो हतुज नही। देवदास हजी अहीज छे। राजेन्द्रबाबुनी तबीयत सारी न कहेवाय।

१ जमनालालजीको भी यरवडा जेलमें ही तबादला करके लाया गया था। चूंकि उनको गाधीजीसे अलग रक्खा गया था, अत वहा भी उनका पत्रव्यवहार चलता रहा।

२ अप्पासाहेब पटवधनने जेलमें भगीका काम मागा था। उस समय कुछ समझौता होकर उनका उपवास स्थगित होगया था। पर वादमें अप्पासाहेबकी मागें पूरी न होने पर गाधीजीने भी उनके साथ २२ डिसवरको उपवास शुरू किया। वह दो दिन तक चला। वादमें माग पूरी होनेका आश्वासन मिलने पर पूर्ण हुआ।

: १२४ :
अ

यरवडा मंदिर
(मिला ११-१२-३२)

चि जमनालाल,

तमारा बने कागळो मळ्या। मारी भीडनो काई पार नथी, अने कमलनयननी बाबतमा मारा विचार जूदा होवाथी उतावळ न्होती एटले पहेली तके लखवानु धार्यु हतु। आजे लखवुज हतु तेवामा तमारो बीजो कागळ आव्यो। बीजा कागळ उपरथी एम लागे के कांईक तबीयत लथडी होय पण मने एवो भय नथी। रसी पाछी नीकळी ए तो सारुज थयु छे। कृत्रिम उपायोथी रसी बंध थाय एमा कांई लाभ नथी। पेटमा आव जेवु लागे छे एनु कारण तो कांई वस्तु विशेष खवायली होय एवु बने। हमणा एक बे दिवस रोटी बरोबर न्होती। तमे रोटी टोस्ट करेली खाओ तो कदाच वधारे मारु। दांत तो मजबूत छेज। रोटी खूब चाववी जोईए ए तो जाणताज हशो। अहींथी टोस्ट करीने मोकली शकाय, कारण के रोटी अमारा वाडामाथी त्यां आवे छे, अने रोटी पकाववामा यत्किंचित मारो हाथ छे, एटले टोस्ट करवामा कांई मुश्केली आवे एम नथी। त्रण वखत खाता होय तो ताजो टोस्ट करीने पण मोकली शकाय।

वेपारशाही मुलाकातोमा घणो वखत आपो छो ए पण अत्यारे न करवा जेवु छे। दाक्तर मोदीना कहेवा प्रमाणे पूर्ण आरामनी आवश्यकता छे। घणु बोलवु ए पण सारु नथी एटले अहीनी हवानो पूरो लाभ लेवाने सारु आराम लेवो, ओछु बोलवु, अत्यावश्यक छे।

तमारे विषे कर्नल डोईले ठीक वखत लगी वात करी छे—परम दिवसेज वात करी। यूरोप जवानीज तेनी सलाह हती। मने तो एवु कांई लागतुज नथी। आ देशमा मळती मददथी जे कांई थई शकतु होय तेटलु करीने शांत रहीए, पण तमारी इच्छा विलायत जवानी थती होय तो मने अवश्य जणावजो। तमने वारवार मळवानी मागणीनो जवाब पण आजकाल आवी जवो जोईए।

हवे कमलनयन विषे। कमलनयनने दक्षिण आफ्रिका मोकलवा खास रजा लेवी जोईए। त्यां तेने सारु अभ्यासन कांईज साधन नथी।

अंग्रेजी निशाळ के कोलेजोमा तेने स्थान न मळे। हिंदीओने सारु कोलेज करी छे। एमा आपणी दृष्टिए कालेज न होय। खानगी अभ्यासनी सगवड पण जोडामा ओछी। फीनिक्स तो जगल छे। त्या जाय तो एने छापखानामाज रोकाई जवु पडे, एटले कोई पण दृष्टिए द आ नो विचार करवा जेवु नथी। ज्यारे सीलोन एथी उलटु छे। त्यानी जेटली शाळाओ छे तेमानी गमे ते शाळामा कमलनयन जई शके। हवा न्युरालीआमा तो उत्तमोत्तम छे। सृष्टि सौदर्य एनाथी भाग्ये क्याय चढी शके। त्या ओळखीता पण सारी पेठे मळी शके। बर्नार्ड आलोविहारी तो घरनाज माणस छे अने ए बहु विद्वान छे, चारित्र्यवान छे। मारी साथेज विलायतथी आव्यो अने सीलोनना प्राचीन महा कुटुबोनो छे। त्या तेने ठीक न पडे तो तरत बोलावी पण शकाय छे। वखतोवखत पत्रव्यवहार थई शके छे। एटले मारी दृष्टिए कमलनयनने इग्रेजी अभ्यासनी धगश पूरी पाडवाने सारु आपणा सिद्धातोने अनुकूळ एवी जग्या सीलोनज छे। कमलनयनने पोताने ठीक लागे छे। पण जो ए तमने न गमे तो अत्यारे तो वर्धाज भले रहे। वर्धाथी तेने सतोष होय तो तो कहेवा जेवु छेज नही, नथी एम तेनी वात उपरथी जाण्यु, तेना कागळ उपरथी जाण्यु एटले आ प्रश्न उभो थयो।

मणीलालनु बुधवारे जवानु मुलतवी रह्यु छे। एटले हवे तो पाछो २९ मी तारीखे जई शके एम छे।

छगनलाल जोपी मने मदद करवाने माटे गई काले अही पहोची गया छे। आथी मारु काम हळवु नही थाय, पण हमेशा अधुरु रह्या करतु हतु एमा फेर पडशे।

१२५
अ

य म,
१५-१२-३२

चि जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो। कमलनयननु समज्यो। पूनामा एनी गोठवण नही थई शके। वकीलनी साथे एने विषे वात थईज हती। एवडा मोटा जुवानने त्या राखता नथी, सगवडज नथी। विशेष वात एने

विषे मळशु त्यारे। तमने फाउन्टन पेननी शाही जोइती हती ते अमारी पासे स्वदेशी शाही हती एनी भाई कटेलीने खबर हती एटले तेमाथी तमारे सारु एक खडीओ मोकल्यो छे। अमारी पासे भडार भर्यो छे।

अहीनी रोटीमा जे खाड आवे छे ए खाड स्वदेशी होवानो सभव छे, केम के पूनामा परदेशी खाड बहु ओछी आवे छे। पण विलायती होय तो पण हु एमा दोष न मानु, केम के ए खाड खमीर बनाववाने सारु नाखवामा आवे छे। एटले के खमीरनी साथे भळीने तेमाथी एक नवो पदार्थज पेदा थाय छे–जेम अमुक गॅस अमुक प्रमाणमा मळीने पाणी पेदा थाय छे, एटले रोटी खानार घउ अने खाड एम बे पदार्थ खाय छे एवु नही कही शकाय। खमीर बनाववाने सारु त्रण चीज वापरवामा आवे छे। महुडा, खाड अने मीठु। महुडा परदेशी होय छे। एटले मारी दृष्टिए परदेशी खाडनो त्याग करनारने सारु पण रोटी निर्दोष गणाय। एम छता आटलु जाण्या पछी छेवटनो निर्णय तो तमारेज करवो रह्यो। अही जे चपाटी बने छे ए तमने माफक आवती होय तो मारे रोटीनो आग्रह करवापणु न होय।

तमने मळवा बाबत हजी काई जवाब फरी वळ्यो नथी।

ओपरेशनने सारु हाल विलायत न जवा विषे समज्यो छु। मने पोताने तो एवी दहेशत लागती पण नथी। हजारो माणसना कान वहे छे अने तेओने कईज बीजो उपद्रव नथी थतो। ए बधा भाग मगजनी पासे रह्या एटले छेवटना परिणामो आवी शके। एना विचारथी दाक्तरो पोते भडके अने दरदीने भडकावे। एटले आ देशमा जे मदद मळी शकती होय तेटलाथी सतुष्ट रहेवामा मने सकोच न थाय। पण आ वात अत्यारे तो अप्रस्तुत छे। शाति थये मार्ग एनी मेळेज सूझी रहेशे।

मारी कोणी हती तेवीज छे। वजन १०३ छे। तबीयत एकदर सारी छे।

आ साथे जानकीबहेननो कागळ मोकलु छु। एमा कमलनयन विषे लख्यु छे ते जोशो। मे जवाबमा लख्यु छे के कमलनयननी साथे मास्तर अने रसोईओ जाय ए हु तो कबूल नज करु। एम करवाथी बहार जवानो फायदो ए गुमावी बेसे। साथे एम पण लख्यु छे के तमारी साथे ए बाबत वातचित चाली रही छे।

: १२६ :

यरवडा,
ता १-१-३३

चि जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो। स्टेटमेन्टनु छेल्लु पानु टाईप थयु तेवीज (प्रत) तमारी पासे मोकलवामा आवी हती। छापावाळाओने तो ते वखते अपाई रही हती। तमारा हाथमा ए परम दिवसे आवी। छापामा काले आवी। उपवास मुलतवी रह्यो एटलीज खबर स्टेटमेन्टने आगले दिवसे नीकळी। अने स्टेटमेन्ट तैयार थयु एवु मोकलायु। एटले ढील थई नहि गणाय। गुजराती थशे के तरतज मोकलीश।

कागळो तो बीजा थता जाय छे तेम मोकलाता जाय छे। स्टेटमेन्टनी नकल करवानी कईज जरूर न्होती। जेने नकल जोईए ते हु पूरी पाडी शकीश।

राजा अने बा तथा शंकरलाल आजे मुंबई जवा उपडी गया हशे। राजाजी आजनी रातनी ट्रेनथी मद्रास जशे।

मणिलाल अने सुशिलाए तमने मळवानो प्रयत्न तो कर्यो पण निष्फळ गयो। तेओ बुधवारे रवाना थया।

आवती काले १० वागे आपणे मळशु। मारु तो मौन हशे एटले तमारे कहेवानु होय ते कहेजो। कलाक सवा कलाक आपणे बेसी शकशु। जवाब आपवापणु हशे ते चीजो हु नोंधी लेतो जईश।

१२७

य म,
१५-२-३३

चि जानकीबहेन,

* * * *

जमनालालनो अभिप्राय एमज छे के ओमने नोशी पाडवीज जोईए। एमनी बीजी सूचना एवी छे के ओमने वारताई पासे मूकवी। वारताई

सारी संभाळ राखनार छे। पण जो एमां तमने बाध होय तो तमारी इच्छा प्रमाणे आश्रममां अथवा वाडीना मंदिरमां मूकवी। आम त्रणमांथी एक जग्या तुरत पसंद करी जे करवु होय ते करीने खबर आपजो। त्रणमां बालवाडीवाळु तमने वधारे गमशे एम जमनालाल माने छे ने तेने पोताने तो ए वधारे गमे छेज।

केसरबहेनने विषे तो नीवेडु करी देवानो प्रबंध जमनालाल नीकळीने तुरत करवा धारे छे।

आवी बाबतोमां कर्तव्य पालन विषे ढील न करशो।

१२८

शनीश्चर,
२५-२-३३

पूज्य बापूजी,

श्री पूनमचंद रांकाकी स्त्री श्री धनवन्तीदेवीका यह पत्र आप पढ लेवें।[1] आप एक तार सिवनी व एक तार नागपुर उचित समझें तो दे देवें। सिवनीमें मेरा नाम डालना सम्भव हो तो डाल देवें। सिवनीसे तार मंगा लेवें कि वह फास्ट नहीं करेंगे।

जम

२५-२-३३

पूज्य जमनालालजी,

आ बाबतमां करवु घटे छे ए बधु करी दीधु छे। आ बाबत विगतवार कागळ बापु उपर परम दिवसे आव्यो हतो। कदाच आजे वाईक जवाब सिवनीथी आवशे। राघवेन्द्ररावने पण तार कर्यो छे।

लि

1. श्री पूनमचंदजी रांका सिवनी जेलमें अनशन करने वाले थे, इस विषयमें श्रीमती धनवन्तीदेवीका पत्र आया था। जमनालालजीके पत्र पर ही श्री महादेवभाईने अपना जवाब लिख दिया था

१२९
―――
अ

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

२६-३-३३

चि जानकीमैया,

वाह! मारा कागळनो जवाव सरखो ये न देवो? एटलो वधो मारो टर छे के? हरिजनने देता अकळामण थतु होय तो तेम लखवु। मने सत्रा मोकलता कोथळी छुटे छे पण हरिजनने सारु बध रहे छे के?

बापुना आशीर्वाद

काले जमनालाल मुवई गया। त्या दा० मोदी तपासशे। शरीर सारुज छे। तमारा ने तेना पोताना सतोपने खातरज गएल छे।

: १३० :
अ

(य म)
८-४-३३

चि जमनालाल,

शेठ पुनमचद राकाने मळी शकाय तेटली झडपथी मळो ए इष्ट छे। तेमने कहेजो के तेमना अपवास सत्याग्रहनी नीतिथी विरुद्ध छे अने मने तो लागे छे के तेनो कोई पण रीते वचाव न थई शके। केदीओना वर्गीकरणथी विरुद्ध वधा माणसो नथी। जे केदीओने अ, व वर्ग मळे छे तेओ वधा क वर्गनीज स्थितिमा जता नथी। ऊचा वर्गमा जेने मूकवामा आवे ते कई ते वर्गनी सगवड भोगववा वधाएल नथी। जेओ ए मगवड भोगवे छे तेओ पोतानी इच्छाए भोगवे छे। तेने तेनो त्याग करवानी फरज शेठ पुनमचद कई रीते पाडी शके? तेने सारु अपवास केम करी शके? पोते गमे ते सगवडनो त्याग करे ए नोखी वात छे। वर्गो मने पोताने पसद नथी पण तेमा फेरफार कराववानो मार्ग अपवास नथीज। मारी आशा छे के शेठ पुनमचद पोतानी हठ छोडी देशे। तेमणे ए पण जाणवु जोईए के ज्या लगी तेओ पोताने सत्याग्रही माने छे त्या लगी तेओ तेनी मर्यादानु पालन करवा वधाएला छे। सत्याग्रहना प्रणेता तरीके तेनी मर्यादा आकवानो मने कईक अधिकार होवो जोईए। ए दृष्टिये पण तेमणे मारी सलाह मानवी घटे छे। ईश्वर तमने सफलता आपो।

: १३१ :

(य म)
१२-४-३३

चि जमनालाल,

कमलनयननो कागळ वाच्या पछी मने लाग्यु छे के वर्धामाथी मुक्त थई शकाय तो तमारे एकदम पहाड उपर जवु जोईए। मने तो वधारे मारु महावलेश्वर लागे छे। दोढ मास पाको मळी शके। पछी पचगनी उतराय अथवा बीजे जवु होय तो जवाय। वहेते काने नीचे नज रहेवाय।

: १३२ :

(य म)
१६–४–३३

चि जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो। होमीयोपेथी उपर मने बहु विश्वास नथी। पण तेने सारु पहाड जवानु मुलत्वी न रखाय। आल्मोडानो विचार मने पसद छे। आल्मोडामा पण होमीयोपाथीना दाक्तर रहे छे। पण आ दरदने सारु पहाडी हवा ने दूध माखण फळ आखा घउना आटानी रोटी शाक उपरात दवानी जरूर घणी ओछी रहेशे। आल्मोडा जईने घणा काममा न रोकाई जवु। छोटेलाल साथे आवी शके तो लई जजो। पेला हरिजनभाईनु करीश।

: १३३ :

POONA,
3-5-33

SETH JAMNALALJI,
SHAILA ASHRAM, ALMORA

You must not disturb programme rest for impending fast Hope progressing

—*Bapu*

: १३४ :
अ

(य म)
७–५–३३

चि जमनालाल,

तमारा बे कागळ साथे मळ्या। तार पण मळ्यो। तमे त्या रही गया छो ए मने बहु गम्यु छे। एमज निश्चितपणे रहेजो। हु मानु छु के अपवास निर्विघ्नपणे पार उतरी जशे।

तमारा दरदने सारु कोई वैद्य अथवा हकीमने पूछवु ए पण योग्य लागे छे। कानमाथी पीप घणाने नीकळीने बध पण थई जाय छे। एथी डरवानु कशु कारण नथी। खावापीवानी सभाळ राखशो तो बस छे। सामे गाय आवे ने आचळ साफ करीने साफ हाथे दोवाय तो ते दूध ताजुज पीवु। खावामा

सभाळ राखवी। काचर कुचर कई न खावु। दाळ नहि, मसाला नहि, कईक पण काची भाजी जोईए। टमाटा, सेलड सारी वस्तु छे। काची प्याज खावानो दाक्तर देशमुखनो वहु आग्रह छे।

जानकीवहेन वखत कई रीते गाळे छे? फरे हरे छे? ओम कई शीखे छे? प्रभुदास शु करे छे?

शांति रुईयाने खरखरानो कागळ लख्यो छे। राधाकृष्णे खवर आप्या हता।

तमने कागळ मोकलाया करशे।

: १३५ :

२६–६–३३

चि जमनालाल,

जो केश तमारा कवजामा आवे तो मारा आशीर्वाद तो छेज। मारी चिंता पण एक ओछी थाय। ते हाल अहि छे। राधा पण छे ए विषे मथुरादास लखशे। कमळाने खातर तमारे अहि आववानी जरूर न होवी जोईए। अपवासनी साकळनो[1] विचार तमारे करवापणु नथी।

१३६ :
अ

२–७–३३

चि जमनालाल,

ज्ञान विषे तार कर्यो ते मळ्यो हशे। छगनलालनो कागळ आ साथे छे। ए उपरथी मानु छु के ज्ञान त्या नथी आवी। ज्ञाने हा पाडी ए केवी रीते थय ए जो तमे जाणी शक्या हो तो जणावजो।

१ हरिजन सेवकोंकी नैतिक अशुद्धि दूर करनेके विचारसे गांधीजीने २१ दिन का उपवास शुरू किया था। इतनी तपस्यासे शायद समाजकी शुद्धि नहीं होगी, इस लिए एकका देहपात होने पर दूसरा उपवास करे, उसका देहपात होनेपर तीसरा करे, ऐसी उपवास श्रृंखला चलाकर हिंदू समाजका पूर्ण रूपमे हृदयपरिवर्तन करानेका गांधीजी सोच रहे थे।

१२ मीनी मीटीगने सारु तमारे तणाईने आववानी मुद्दल जरूर नथी जोतो। तमारो अभिप्राय मोकलवो होय तो मोकली देजो। जरूर जणाशे तो ते वाचीश। सारु ए के ते अणेजीने मोकलजो।

कमळाने सारु पण आववानी जरूर नथी। वनती तजवीज थयाज करशे। हु तपास कर्या करु छु। कमलनयन आवजा करे छे। जानकीदेवीने पण मळ्यो हतो। कमळा पण मळी गई। ते हजु वाळकज छे। पूरा लाडमा उछरी छे। एटले पोतानी जवाबदारीनु भान ओछु छे। तेमा एनो वाक नथी। जेवा आपणे तेवी आपणी प्रजा। आपणामा उत्तरोत्तर फेरफार थया करे तेने प्रजा न पहोची शके। हरीलालनो दाखलो सचोट छे। ए तो वधी हद ओळगी गयो। ए प्रत्यक्ष रीते ओळगी गयो। मे मनमा भोगो भोगव्या ने वाह्येंद्रियो उपर धीमे धीमे कावू मेळव्यो। जो मनने पण छेवटे वश न करी शक्यो हत तो मिथ्याचारीमा मारी गणतरी सहेजे थात। पण मारामा थएला फेरफारो हरीलालने क्रेम स्पर्शी शके? आ तो वच्चे व्याख्यान अपाई गयु।

तमे शरीरने सभाळीने वधु काम करजो। प्रभुदास त्या आव्यो होय तो तेनी शी स्थिति छे? हवे शु शोवशो?

विनोवा, वाळकृष्ण अने छोटेलालनी प्रकृति कैवी रहे छे?

राधिका आवी गई। हवे देवलाली छे। केशु हजु अहि छे शात छे। हजु निश्चय उपर नथी आवी शक्यो। आवशे। तेने सारी पेठे वखत आपु छु।

लक्ष्मीनिवासनी पत्नी सुशीलाए रु ५००० हरिजन सेवा अर्थे आप्या तेनो निवेडो तमे शो कर्यो?

देवदास लक्ष्मी रणछोडदासना वगलामा रहे छे। राजाजी घनश्यामदासनी साथे। मने सारु थतु आवे छे। रोज त्रण कटके ४५ मिनिट चालु छु। वजन ९७ रतल लगी पहोच्यु छे। हजु वधशे। मारी चिंता करवा जेवु हवे काई नथी रहेलु।

नारणदासनो परषोत्तम घणे भागे अहि आवशे ने दीनशाजीने त्या नैसर्गिक उपचारोनी तालीम लेशे।

त्यानु तमारु कार्य क्यारे पूरु थशे?

गिरधारी पाछो आजे पकडाशे। काले छूट्यो हतो। तेनी उपर हेदरावाद जवानो हुकम छे। तेनो तेणे अमल नथी कर्यो।

तमारो खोराक वि वरोवर चाली रह्या हशे। मने विगतवार लखजो।

वापुना आशीर्वाद

आजे १०—११-३० लगी हरिजन सेवको साथे वातो करी।

: १३७ :
अ

१७–७–३३

चि जमनालाल,

मने क्षणवार पण रहेती नथी। तेथी लखवानी इच्छा छता नथी लखी शकतो। आश्रम लखेल कागळनी नकल आ साथे छे। मारा विचारो एम उडया करे छे। छेवटे क्या जईने उभशे ए खबर नथी। मारु आजकालमा ठेकाणे पडशे तो आवा विचारनी आपले नहि करी शकाय। पण तमे तो विचारता थईज जशो। जे ठीक लागे ते सलाह नारणदासने आपजो। मारो कागळ विनोवा वाचशेज। तेने लखवानो समय मळचोज नथी। ने आज मळे तेम नथी।

कमळाना अपवास चाल्या करे छे। कदाच आजे छोडशे। महेता सभाळ राखे छे। मने रोज रिपोर्ट आपे छे। अपवास खूब हिम्मतथी लीधा छे।

तमारु शरीर ठीक रहेतु हशे।

तमारे झपलाववानु तो छेज। पण उतावळ न करशो। शरीरने वधारे ठेकाणे मूकीने आवजो।

: १३८ :

KIRKEE,
18–7–33

JAMNALAL BAJAJ,
WARDHA

Reaching ashram tomorrow Reva leaving tomorrow Gangadharrao will be Bombay two days

—*Bapu*

: १३९ :
अ

अमृत भवन,
एलिम-ब्रिज,
ता० २१–७–३३

चि जमनालालजी,

तमारी तरफथी हमणा कागळ नथी। आशा राखी हती। पूनाथी लखेलो मारो कागळ मळ्यो हशे। आश्रमनी आहुति आपवा विषे वातो

चलावी रह्यो छु।' लगभग नक्की थई गया जेवु छे। आजे निश्चय थशे। ए आहुति अपाय तेनी नकल करवापणु नथी। एने आदर्श गणीने जेने पोतानु वर्तन वाळवु होय ते जरूर वाळशे। वर्धाना आश्रम विषे पण हाल तुरतमा साबरमतीनु अनुकरण करवानी आवश्यकता नथी। वखत मळशे तो विशेष लखीश।

अब्दुल गफार खाननो दीकरो जे विलायत हतो विलायतथी अमेरिका गयो हतो, ए मने पूना मळी गयो। हाल मुबईमा छे। ए अमेरिकामा गाडना कारखानामा काम शीखी आव्यो छे। केटलु शीख्यो छे ए तो दैव जाणे। खुरशेदबेन वि नी सलाह एवी छे के ए कोई गाडना कारखानामा हाल तुरत काम करे तो सारु। तमारा कारखानामा तेने अजमावी जोशो। मारे उपर एणे होशियारीनी छाप नथी पाडी। भलमनसाईनी पाडी छे। 'तमे कहो तेम करीश' एम हाल तो कहे छे। अत्यारे तो तेने पगार आपवापणु नथी। एक महिनाना अनुभव पछी जो ते काममा कुशलता बतावे तो पगार ठरावाय। हालतो तेने रहेवा खावापीवानु आपवु पडे।

मारी तबियत ठीक छे। रणछोडभाईने त्या उतर्यो छु। आश्रम रोज जाउ छु। आजे मीराबेनने मळवानी आशा राखु छु। परवानगीनो तार कर्यो हतो ते मळी गई छे।

पू बा आशीर्वाद लखावे छे।

केशव

: १४० :
अ

२२-७-३३

चि जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो। प्रश्नो तो बधा बरोबर छे। बने तेटलो जवाब आपु छु। आश्रम सोपी देवामा मतलब ए छे के जे वस्तु छेवटे तेने लेवानीज छे ते सोपी देवामा वधारे सारु छे। दरेक वर्षे विधोटीने सारु माल उपाडी जाय तेना करता भले जमीन आखी लई लेय। वळी हजारो लोको वगर इच्छाए

१ सविनय अवज्ञा आन्दोलनके सिलसिलेमें साबरमती सत्याग्रह आश्रमका क्या किया जाय, इस बारेमें गाधीजी विचार कर रहे थे।

बरबाद थई गया तो सत्याग्रहने नामे ओळखातु आश्रम पोतानी मेळे बधो त्याग करे ए इष्ट छे–ए धर्म पण लागे छे। पण आनो अर्थ ए नथी के हमणाज त्याना आश्रमे पण एमज करवानु छे। एथी उल्टु मने लागे छे के त्यातो जे जे व्यक्तिओ नीकळी शके एथी सतोष मानवो। विनोबाथी तो हवे नज नीकळाय। तेणे हरिजन सेवाने माटे रहेवानु छे। महिला आश्रमनो उपयोग पूरो करवा थाकु छु। त्या बाळको पण आवे के ? केटलीक बहेनो तो त्या आवशेज। नीलानागिनी अने अमलाबहेननो प्रश्न छेज। तेने त्या मोकल्या शिवाय बीजो छुटको नथी जोतो। बन्नेनी पासेथी हरिजन सेवानु काम लेवानु छे। हाल तो बन्नेने तैयार थवानु छे। नागिनीदेवीने पुरुषोनो सबंध ओछो होवो जोईए। जगम मिलकत जो सरकार नहि लेय तो अहि क्याक उघाडी रिते राखशु। गायोनो प्रश्न मोटो छे। विचारी रह्यो छु।

तमारे हमणा झपलावबानी उतावळ नथी करवानी समय आव्ये झपलावजो। आटली विगत हमणा बस छे ना ? घणी भीडमा लखी रह्यो छु।

: १४१ :

MAHATMA GANDHI, ?-?-?
AHMEDABAD

Laxmibai reaching tomorrow morning Boys also welcome here Wire arrival number boys girls sisters

—*Jamnalal*

(नकल पत्रसे लिया गया)

: १४२ :

POONA,
24-8-33

JAMNALAL BAJAJ
WARDHA

Keeping very well No nursing assistance required

—*Bapu*

: १४३ :

पूना
(मिला २६–८–३३)

चि. जमनालाल,

तमारो तार मळ्यो । तमे मानता हशो के मारे बहु मावजतनी जरूर पडती हशे। वात एवी छे के खावानु आपवा सिवाय बहु मावजत करवापणु नथी रहेतु। आ वखते शक्ति खवाई नथी गई। आठ दिवसमा खवाय पण नहि। जेटली गई छे तेटली तुरत आवी जशे। एटले छोटालालने मोकलवानी कंई जरूर न्होती पण हवे आवे छे तो छोटालालने भारे सतोष थशे। एटली वातथी हु सतोष मेळवी लईश। वळी मीराबहेन मारी पासे छे ए तो जाणता हशो। व्रजकृष्ण तो ज्या होय त्याथी आवीने हाजर थईज जाय। एटले ए पण छे। बीजी मदद पण घणी। तमारी तबियत सारी हशे। नवाओ आव्या छे ए लोकोना तमने जे अनुभव मळ्या होय ते लखजो। तमारो केस पूरो थई गयो? रामदासनु केम चाले छे? केशुनु केम छे?

छोटालाल अवघडी आवी पहोच्या छे।

: १४४ :

२८–८–३३

चि. जमनालाल,

मने शक्ति ठीक आवती जाय छे। ज्ञानने मळवानी तीव्र इच्छा छे। ए मने मळी जाय तो सारु। तेनु ठेकाणु लखजो।

कमळाने तो सरस लाभ थयो लागे छे। मरकीनो डर न राखीने हमणा नहिज रहेवानु जानकीबहेनने सूचव्यु छे।

: १४५ :

POONA,
30-8-33

JAMNALAL BAJAJ,
WARDHAGANJ

Am anxious visit Wardha but not possible reach before last week September

—*Bapu*

: १४६ :

३०–८–३३

चि जमनालाल,

तमारा तारनो जवाब आव्यो छे। तुरत आववु तो वहु गमे पण तुरत नहिं अवाय। मुंबई थईने आववु ठीक लागे छे। त्यानु वातावरण जाणवु छे। त्यानु हरिजन काम पण जरा मंद जेवु छे तेमा तेजी लावी शकाय तो लाववी छे।

मारी तबीयत ठीक थती जाय छे। ठीक खोराक लेवाय छे। तमारी तबीयत साचवजो। नीला अने अमलाना कागळो साथे छे। नीला जरा अव्यवस्थित थई लागे छे।

: १४७ :
अ

(मिला ४–९–३३)

चि जमनालाल,

नीला पाछी पाटेथी उतरी छे। तेना कागळोमाथी तेनी अव्यवस्था तरी आवे छे। आटला दहाडा लगी हिंदु धर्मनी लत हती हवे खिस्ती धर्मनी लागी छे। तेमाय जो निश्चय होय तो तो मारुज छे। पण मने तेवु नथी लागतु। तेनी कल्पनाशक्ति तेने आमतेम अफाळ्या करे छे। मौन लेवाथी तेनु मन वधारे चगडोळे चढ्यु जणाय छे। साथेनो कागळ वाचजो ने तेने आपजो तथा फुरसद मेळवी शको तो वातो करजो। अथवा विनोवा करे। द्वारकानाथथी कई थई शके तो ए आश्वासन आपे।

मारो तार तमने मळ्यो हशे। तमारी साथे वातो करवानी छेज पण तमने अहिं धमडवा नथी मागतो। प्रथम तो एमज लागतु हतु के हु मुंबई थोडा दीवस रही आवीने वर्धा जाउ। बे त्रण दीवसथी जरा अनिश्चित थयो छु। कदाच त्या आवीने मुंबई जवु ठीक होय। पण जोउ छु। जवाहरलाल छुटेल छे तेथी तेने मळवानी पण जरूर छे। पण ते मेळाप तो वर्धामाये थाय। छेवटे तो जे थनारु हशे तेज थशे। एटले हु कई योजनाओ घडतो नथी।

मारु शरीर ठीक थतु आवे छे। बे रतल दूध, शाक ने फळ लेवाय छे।

बापुना आशीर्वाद

: १४८ :

POONA
6-9-33

JAMNALAL BAJAJ,
WARDHA

Going Lucknow Benares unnecessary Do take ten days hill stations at once Jawaharlal reaching here probably Saturday I go Bombay next week staying one week Reaching Wardha not earlier twentythird Am keeping quite well Distrust newspaper report

—*Bapu*

: १४९ :

१७-९-३३

चि जमनालाल,

छापाओमाथी वधु जोयु हशे। जाणी जोईने तमने विगतो नहोतो लख्या करतो। तमारी उपर कई पण बोजो मूकता हमणा सकोच थाय छे। चाखलदा[1] थी झट उतरवु पडचु ए पण सारु नथी लाग्यु। हवे तो मळशु त्यारे वातो करशु। मने पण आरामनी जरूर ठीक रहेवानी छे। गजाननने वहु गोपी घणे भागे मारी साथेज हशे अने किसन करीने एक बहु सरस बाई छे एने पण साथे आववा नोतरी छे। एनु शरीर सारु हतु पण हमणा जरा लथडचु छे। आ वधानो बोजो तमारा स्वभाव प्रमाणे तमे उचकशो ए जाणु छु पण बोजा रूप न थाय एम करवानी कोशीश करीश।

जवाहरलाल आजे राते लखनउ जाय छे कदाच पाछळथी वर्धा आवे। ज्ञान आवी गई हशे।

: १५० :

वर्धा,
ता १६-१०-३३

पूज्य बापूजी,

चित्तकी वडी दुविधामे यह खत आपको लिख रहा हू। कानूनके सविनय भगके ऊपर और कॉंग्रेसके कार्यक्रम पर पूरा विश्वास होते हुए भी मै अभी तक जेलमे पहुचा नही हू। इसका मुझे वहुत रज है। मै ता १९-४-३३ को जेलसे

१. चिखलदा, मध्य प्रदेशका एक "हिल स्टेशन।"

छूटा, तब मेरे कानकी व्याधि खतरनाक गिनी जाती थी। उसका यथासभव इलाज करके मैं शरीर स्वास्थ्य दृढता अलमोडा गया। इधर आपने २१ दिनके उपवास किये, जिसके साथ सत्याग्रहका आन्दोलन कुल तीन महीनेके लिये स्थगित रहा। उन्ही दिनो मुझे एक अत्यत जरूरी कौटुम्बिक प्रकरणमे बहुत दिनो तक गवाही देनी पडी। आपने भी मुझे आज्ञा दी थी कि अच्छा शरीर लेकर ही जेल जाना चाहिये। इन्ही दिनोमें पूनाकी खानगी कॉन्फरेन्स हुई और सामुदायिक सत्याग्रहका रूपान्तर व्यक्तिगत सत्याग्रहमें हुआ।

मैं जानता हू और मानता भी हू कि ऐसी हालतमे जिनका सविनय भग पर अटल विश्वास है, ऐसे लोगोको तो इस वक्त अन्य कामोका लोभ छोडकर खसूसन जेलमे ही जाकर बठना चाहिये। मैंने ऐसा निश्चय भी किया था। लेकिन शरीर और मानस स्वास्थ्य जितना चाहिये उतना नही सुधरनेके कारण दिलमे कुछ कमजोरीसी आ गयी और इसी कारण मैंने गुरुजन और मित्रगणोके कुछ दिन ज्यादा बाहर रहनेके आग्रहको कान दिया और १२ नवम्बर तक बाहर रहनेकी अवधि निश्चित की।

डॉ० मोदीने हालहीमें मेरा कान देखकर कहा कि हालाकि प्रगति अच्छी हुई है, तो भी रोग निर्मूल होनेके लिये और भी उसकी सभाल लेना अनिवार्य है, तब ही खतरा दूर होगा।

मेरा विश्वास मुझे कहता है कि व्यक्तिगत सत्याग्रहके आजके दिनोमे जिसका शरीर कुछ भी चलता है उसको तो जेलमें ही जाना चाहिये। लेकिन जेलमे कानका दर्द फिर बढनेका डर रहता है। जेल जाकर 'ए' या 'बी' क्लासमे रहना इस बातको मैं पसद नही करता। क्योकि वर्गोका भेद देशको नुकसान पहुचाता है। लेकिन मिला हुआ क्लास छोडकर फिर तबीयतके वजहसे फिर वही सुविधायें माग लेना, यह भी अच्छा नही लगता। इस कमजोरी की हालतमे मैं शरीर और मानसिक स्वास्थ्यकी ओर ध्यान देनेका विचार कर रहा हू।

मेरे जैसी हालतमें मुझे वर्किंग कमिटीसे त्यागपत्र कभीका देना चाहिये था। मैं मानता हू कि जिसका विश्वास सविनय भग पर और काग्रेसके प्रोग्राम पर नही, उसे कॉंग्रेसमें कोई जवाबदारीका स्थान नही लेना चाहिये। इसी तरहसे इन दोनोपर पूरा पूरा विश्वास होते हुए भी मेरे सरीखे जो लोग केवल तबीयत सुधारनेके कारण जेल जाना टालते है उनको भी जवाबदारीका स्थान छोडना चाहिये। मैं देखता हू कि तबीयत सुधारनेके वास्ते मुझे और भी कुछ समय देना चाहिये। ऐसी हालतमे वर्किंग कमिटीका मेम्बर और काग्रेसका

खजानची रहना सर्वथा अनुचित है। मुझे इस्तीफा देना ही योग्य था। इस लिये अभी मेरा यह इस्तीफा आपकी सेवामे भेज देता हू।[1] तुरन्त कोई दूसरा खजानची न मिले तो नया खजानची नियुक्त होने तक मै वह काम वर्किग कमिटीका सदस्य न रहते हुए करुगा।

इसका मायना यह नही कि काग्रेसके कार्यक्रमको यथाशक्ति पार पाडनेके मेरे कर्तव्यसे मै मुक्त हू।

मेरे इस्तीफेसे काग्रेसवालोमे कुछ गैरसमझ फैल जानेका सम्भव है, सो मै जानता हू। लेकिन देशके कामोमे स्वच्छता रखनेकी आवश्यकता अधिक है और अन्तमे उससे लाभ ही होगा।

जमनालाल वजाजका प्रणाम

(नकल परसे लिया गया)

: १५१ :

वर्धा,
२५–१०–३३

प्रिय भगिनि,[2]

आप वहनोमे परदा तुडवानेके लिए कलकत्ता जा रही है इसलिए धन्य-वाद। परदा वहम ही नही है उसमे मुझे पापकी बू आती है। परदा किससे रखे? क्या पुरुषमात्र विषयासक्त रहते है? क्या स्त्री अपनी पवित्रता बगैर परदा नही रख सकती है? पवित्रता मानसिक वात है, सभी पुरुषमे सहज होनी चाहिए। यदि इस बुद्धि प्रधान युगमे स्त्री धर्मकी रक्षा करना चाहती है तो उमे दरिद्रनारायणकी सेवा करनी होगी, शिक्षण लेना होगा। दरिद्रनारा-यणकी मेवा करनेका अर्थ खादी प्रचार, कातना इत्यादि, हरिजनसेवाका अर्थ अस्पृश्यतारूप कलक धोना ये दो वडे भगवानके कार्य (है)। ओर विद्या पानेका कार्य परदा रखनेके साथ कभी नही चल सकता है।

परदा रखकर सीता रामजीके साथ जगलोमे भटकी होगी? सीतासे वडी पवित्र स्त्री जगतमे कभी हुई है? वहनोसे कहो परदा तोडो, धर्म रखो।

आपका
मोहनदास गाधी

१ इस वारेमें गाधीजीने सरदार वल्लभभाई पटेलको ता २३–११–३३ को रायपुरसे लिखे पत्रमें निम्न उल्लेख किया था " जमनालालजीनु राजीनामु तेनी शातिने माटे पण अनिवार्य हतु। वीजाओने माटे पण योग्यज हतु। तेथी हवा वहु साफ थई छे। जमनालालजी उपरथी वोजो उतर्यो छे ने तेने नवु जोम मळ्यु छे। वधारे तो न लखु। पण ए पगलानी योग्यता विषे शका न लावशो। "

२ श्री जानकीदेवी अखिल भारतवर्षीय मारवाडी महिला सम्मेलनकी अध्यक्षा होकर कलकत्ते गई थीं, तव गाधीजीने उनके मार्फत उपरोक्त सदेश वहाकी वहनोंके लिए भेजा था। यह पत्र कलकत्ताके विश्वमित्रके ता. २९ अक्टूवर १९३३ के अकमे लिया गया है।

: १५२ :

१५-११-३३

चि जमनालाल,

श्री मालपेकरजीना स्मरण विषे भाई हरकरे मने मळ्या छे। सालपेकर स्मरण हरिजन सेवा निधि नामे फंड खोलाय अने तेमा द्रव्य एकठु करवामां आवे तो तेने विषे मारु नाम वपराय। पण तमारी आमा सम्मति अने मदद होय तोज आवी रीते करवु एम मे कह्यु छे। आमा ओछामा ओछा रु ५००० मळवा जोईए। आ पर्स रूपे मने चिंदवारामा अपाय। तेनी एक नानी कमिटी कराय ने ते पैसानो उपयोग हरिजन सेवा कार्यमा मने पूछीने करे। आ वरोवर लागे तो भाई हरकरेने दोरजो।

१५३

रायपुर,
२६-११-३३

चि जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो।

लक्ष्मीदास लखे छे ते आनदीना कहेवा उपरथी होय एम लागे छे। तमने याद छे ना के आनदीने नामनी पण खबर पडी गई हती। पण तेनी चिंता नथी। लक्ष्मीदास कशी वस्तुनो अनर्थ करे तेम नथी। हु तो जाणु छु के तमे नाम नथी काढ्यु।

मध विषे द्वारकानाथने लख्यु छे। सथवारा जोग ज्यानो सथवारो मळे त्या वाटली मोकले एम लख्यु छे।

जवलपुरमा ५ मी तारीखे वरकिंग कमिटीनु मळवानु थशे एम जवाहरलाल लखे छे। तमारी हाजरीनी ते आशा राखता जणाय छे। आववानु मन थाय छे? न ज थाय तो नभावी लईश। इच्छा थाय तो आववु। एनो ए अर्थ थाय छे के ७ मीने बदले त्रीजी के चोथीये त्याथी छुटवु रह्यु। एटला दीवस त्यांना खोवा ए मने गमतु नथी एम खरु।

मथुरादास काले अहि आवे छे। केम ते खबर नथी।

ओमनी बुद्धि बहु तीव्र जोउ छु। मादी तो छेज, शरीर सरस छे। तेने बधु गमतु लागे छे। थोडु थोडु लखवानु पण सोपु छु। सुने छे मारी पटखेज। उथवानी शक्ति सारी छे। बधाने प्रिय थई पडी छे।[1]

जानकीमैयाने कई शांति थई के? कमळानु बरोबर चाले छे? फरे छे? मदालसा वल्सला कई रीते काळ गाळे छे? आ साथे मणीलालनो अगत्यनो कागळ मोकलु छु। ते फाईल करजो। तेमा गोमिवा मघनु छे ने दागीनानी नोध छे।

१५४
अ

३१-१२-३३

चि जमनालाल,

कलकत्तेथी लखेलो तमारो कागळ मळ्यो छे। सतीशबाबूने मळ्या हता के नही ए कागळमाथी नथी समजी शायो। मळ्या तो हशो। तमारी तबियत केम रहे छे ए पण नथी लख्यु। हवे लखजो। शिवप्रसाद बची गया एज भारे वात गणाय। मुसाफरी सरस रीते चाली रही छे। मारु शरीर धार्या करता वधारे काम आपी रह्यु छे। एटले जराये चिंता करवानु कारण नथी। ओमनु गाडु ठीक चाली रह्यु छे। ए पोताने विषे कोईने चिंता करवा दे एवी छे नही। मन्त्रीपदने मारु धीमे धीमे तैयार थई रही छे। मने पूरो संतोष थाय एटली जागृति नथी आवी पण शरीरने जोखमे तेनी उपर चाप चढाववा नथी मागतो। ते सहेजे जेटलु काम करी शके छे एटलु लउ छु। किसन मारी साथे छे। ए तो तमे जाणताज हशो। बहु भली छोकरी छे। ओमनी साथे खुब भळी गई छे। एनु शरीर जेलमा घसाई गयु। नही तो ठीक मजबूत हती अने मन चचल हतु। मुसाफरीथी तेने फायदो थयो जणाय छे। आ वखते मारी साथे मलकानी छे एने विषे तो पूछवुज शु होय। महेनत कर्या रहेल छे। दामोदर बरोबर काम आपी रहेल छे। ए नीवडेल छे। अत्यज खातामाथी दिल्ली पैसा मोकलवाना हता ते मोकलाया? गोमीबहेनने दर मासे थोडु आपवानु रहेशे। ते पण कोई खातामाथी काढीने आपजो। मथुरादास कहे तेटला आपवाना छे। मुबईथी पूरी रकम तेने मळवी जोईती हती पण

१ गांधीजीका हरिजन दौरा ७-११-३३ को वर्धामे शुरू हुआ और २९-७-३४ को बनारसमें पूरा हुआ। जमनालालजी की तीसरी लड़की, ओम, इस दौरेमें उनके साथ थी।

ने ए लोकोए नथी आपी । हवे हु पत्रव्यवहार चलावु तेटलामा तेने तो मळवीज जोईए।

ता० क० बुधवार सवारना प्रार्थना पूर्व

जानकीबहेन तमारा जीव विषे लखे छे ए शु ? एमा तथ्य होय तो ए काढी नाखजो। ओमने पूछ्या ए पण कहे छे खरी के मदनमोहनने पण कोई वार रडावो छो।

तार तो सरस काम देनारी छेज। तेनु शरीर मारु रहेशे तो ते नीवडशेज। डा शर्मा (दिल्हीना) नो तार छे। तेणे पोतानी मिलकत १०,००० मा वेची छे ने कर्ज मुक्त थयेल छे। हवे ते आश्रममा आववा मागे छे। तेनी पत्नी सहित आवशे। तेने तमने लखवा सूचव्यु छे। तेने मधरवानी जरूर जोउ छु। नीवडे तो सारु। नहि नीवडे तो जशे।

तमार शरीर सभाळीने काम करता हशो। जानकीबाई गोमण त्या रहेवा मागे छे। तेने ज्या विद्या वि हता त्या जग्या अपाय के ?

१५५

२२-१-३४

चि जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो।

देवीप्रसादने तार कर्यो छे। कागळ पण लख्यो छे। लेस्टरने मळवा बोलावी छे।

सतीशबाबुने पुरी जवा विषे लखी नाख्यु छे। तमारु शरीर बरोबर थई जवु जोईए।

सिदनापुरमा चाली रह्यु छे ए मने व्याकुळ बनावे छे।

ओम किसन भारे जोडी बनी गएल छे। खुश रहे छे। गमगीन थवु शु हशे ए ओम जाणतीज नथी। बार कलाक सुई शके छे। एमा हु हरकत नथी जोतो। कोई जातना खास रोग नथी लागता। खावामा तो होय ते खरु। जोईए केवी थाय छे।

मारु तो चाली रह्यु छे।

जवाहरलालने रू ४००० साथीओना भरणपोषण मारु मोकल्या न होय तो मोकली देजो।

बापुना आशीर्वाद

: १५६ :

MADURA SOUTH,
27-1-34

JAMNALAL BAJAJ,
GONDIA

Telegram just received If Patna requires your presence interrupt programme not otherwise

—*Bapu*

: १५७ :

PODANUP,
29-1-34

SETH JAMNALALJI,
WARDHA

Sent reply Wardha Unnecessary interrupt work unless Rajendraprasad requires your presence Specially sending Patna released Sabarmati men Rajendraprasad wants them

—*Bapu*

: १५८ :
अ

३०-१-३४

चि जानकीवहेन,

जो मगजनी कमजोरीने लीधे जमनालालने गुस्सो आवतो होय तो एमा फरीयादनु शु कारण होय। दर्दीनी चीडनी उपर ध्यान देवाय के? दर्दीनी चीड हमेशा पीई जवानीज होय छे। के मने गम्मतने खातर कागळ लख्यो छे? मदालसाने कहेजो ते मने भूलीज गई जणाय छे। एम नहि चाले। ओम मजामा छे।

रामकृष्ण केम छे? तमने केम छे? वालीनी खबर राखजो।

बापुना आशीर्वाद

१ विहार भूकपके समय पीडितोंकी सेवाके लिए।

: १५९ :
अ

कूनूर,
३०-१-३४

चि जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो। मे गोंदीया तार कर्यो हतो ने वर्धा पण कर्यो छे। राजेन्द्रबाबु तमारी हाजरीनी खास मागणी न करे त्या लगी लीधेलु काम छोडवानुज नथी। राजेन्द्रबाबु वगर विचारे मागणी नहि करे। मे पण मारे विषे एवी वृत्ति राखी छे। तमे लीधेलु काम जट नज छुटे ए विषे मने शका नथी। ज्या तमारी हाजरी विना नज चाले एवु बने त्याज जवाय। एवु अत्यारे हु जोतो नथी। ग वा नी मागणीथी आश्रमना छूटेलाने मोकल्या छे। केटलाक गयानो तार आजे आवी गयो। तेमा पण सुरेन्द्रने नथी मोकलतो केम के तमारी पासे ते काम आपी रहेल छे। जो तेनी जरुर न होय तो तेने मोकली शको छो। जाय तो गरम कपडा साथे लई जाय। पण तेनो खप होय तो हमणा तेने जवानी जरुर नथी। स्वामीने जवानो तार आप्यो छे।

ओमनु चाली रह्यु छे।

बापुना आशीर्वाद

: १६० :

२-२-३४

चि जमनालाल,

कमलनयन विषे कागळ ने तेनु लखाण वाच्या। ते अहिंनो क्रम पूरो करवा मागे छे अने हिंदीनी मध्यमा पूरी करवा मागे छे। हु आटलो सुधारो इच्छु छु। हिंदीनो वधो क्रम पूरो करे ने आखरनी परीक्षा आपे। इग्रेजी वधारे पाकु करे सस्कृत शीखी लेय ने पछी इग्लाड नहि पण अमेरीका जाय। त्या शीखवानी सगवड तो सरस करीज अपाय। अमेरीकामा थोडो समय गाळी वधेय मुसाफरी करी लेय। आम मेळवेलो अनुभव तेने खूब उपयोगी थशे। तेनी बुद्धि वधारे परिपक्व थता ते वधारे शीखशे। परीक्षानो एने मोह नथी ए सारु छे। मतलवमा पश्चिम जोवानी एनी इच्छाने रोकवा हु नथी इच्छतो। अहिंथी वधारे भातु लईने जाय ए आवश्यक मानु छु।

सुरेन्द्रने शा काममा रोकेल छे?

अमलाबहेनने साबरमती मोकलवानो निश्चय करी लीधो छे। त्या नहि फावे तो जोई लईशु।

: १६१ :

MADRAS,
19-2-34

JAMNALALJI,
WARDHA

Hope you quite well Date my reaching Bihar uncertain but not likely before fourteenth March

—*Bapu*

: १६२ :
अ

२१-५-३४

चि जमनालाल,

एलविननो कागळ वाची गयो। ते नोखो पाछो मोकलु छु। टीकट खर्च बचाववा सारु। एनी संस्था जोया पछी एने मदद आपवी जोईशे एम जणाय छे। जे पैसा आवे छे ए क्याथी आवे छे। ए गावानु शीखवे छे ए कई रीते। तेनी साथे शामराव उपरात कोण छे?

तेणे मासाहार कर्येज छुटको लागे छे। एनी श्रद्धा एवी नथी के ए दूध फळ उपर नभी शके। पण ए गमे ते खाय तेथी तेने मदद बध करवानु कशु कारण नथी। पण कातवानु बध अथवा मोळु थाय ए सहन करवा जेवु नथी लागतु। कातवामा श्रद्धा न होय तो ए छोडवु जोईए। ए काते तोज मदद मळे एम नथी कहेतो। पण सत्य जाळवे एम कहेवानो आशय छे। काम बधु चोख्खु होय एटलुज जोवानु छे। एलविन भोळा होई पोताने छेतरी शके छे। एटले मित्रोए चोकी राखवानी आवश्यकता छे।

दा अनसारीनी पारटीनु[1] नक्की थई गयु हशे। एनु माफ थाय तेटले लगी तो तेमा रस लेजोज। राजा पण तेमा रस लेय। मालवीजीने अदर लाव्या पछी मदद पण देवी रही अने ते नुकसान न करे ए पण जोवु रह्यु। विलब करीने के उतावळ करीने नुकसान करी शके।

जुलाई लगीनो कार्यक्रम जोयो ना? ए प्रमाणे करता घणे ठेकाणे मळनारा मळी शकशे।

बापुना आशीर्वाद

[1] डॉ अन्सारीकी अध्यक्षतामें काग्रेसने कौंसिल प्रवेशके लिए पार्लमेंट्री बोर्ड बनाया था।

: १६३ :

२७-५-३४

चि. जमनालाल,

दा. सुरेश बेनरजीनु तमे सभाळी लेशो एम मे मानी लीधु छे।

तमारा कागळनो ने तारनो जवाब आपी चुक्यो छु। तमारी पासे मुसाफरीनो क्रम तो छेज। वर्धा जवान् तो बहुए मन थाय पण न जवाय एवु छे। मुसाफरीनो क्रम गोठवाई गयो छे ने ए प्रमाणे करी लेवु बरोबर लागे छे।

तमारी तबीयत सुधराई रहेती हशे। एजिन विषेनो मारो कागळ मळ्यो हशे।

मालवीयजी पूनामा वर्किंग कमिटी भरवानु कहे छे। मारी तारीखो दरम्यान थाय तो मने तो बधे सरखा छे। मुंबईमा स्ट्राइक चालती हशे तो मने मुद्दल त्या रहेवुज गमवानु नथी। पण ए तो अप्रस्तुत वात लखी नाखी। मुंबई १४-१८ सुधी रहेवानु तो छेज।

ओमनु गाडु चाले छे। ते अनुभव ज्ञान तो पुष्कळ लेय छे। पण भणवानु आळस ठीक ठीक छे।

: १६४ :

२१-५-३४

चि. जमनालाल,

द्वारकानाथ उपर बोजो वध्यो छे। तेनी पासेथी वधु समजी हळवो करजो। मनोहर अने केशु विषे ते कहे ते सांभळी ऊंडी तपास करवु घटे ते करजो। मनोहर एकाएक बगीचामा केम रहेवा गया? शर्मा बहु बोजो माथे लेता होय तो ते पण तपासजो। मुंबईमा आ विषे वात करवानो वखत काढये छुटको छे।

: १६५ :

१७-७-३४

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो। तमारी उपरनी जवाबदारी एक तरफ ने एक तरफ काननो व्याधि। आ बेथी हु गभराई जाउ छु। हवे वल्लभभाई छुटया

छे एटले महिना मासमा भार कांईक हळवो थशे। थाय तेटलु करीने निश्चित रही शको तो वस छे। बिहारनु जे थाय ते करवु। केटलुक तो एमज चालवानु। हु मळीश त्यारे वधारे चोखवट करशु। महेन्द्रबाबुना वहीवटमा तो तमेज जे करी शकशो ते खरु। तेमा मारी चाच नहि डुबे। बिहारना हिसाबमा खबर पडशे।

आश्रमनी निदानो लेख मोकल्यो ते वाची गयो। तेनो जवाब होय नहि। आश्रमने सुरक्षित राखीशु तो बधु कुशळज छे। एनो निकाल करशु। गगावहेन तथा प्रेमाने भले लखो। भाग्येज ते आवे। एने हवे नवा रस पेदा थया छे। बहु ताण करीने खेचवामा माल न होय।

व्युटोना कागळ आव्या करे छे। ते तमने मळवा मथी रह्यो छे।

मने ठीक छे। मारा अपवासनो भय पामवानु नथी। ए विना चाले नहि ए तो स्पष्ट छे।

१६६

जानकीवहेनने कहे एवी खोटी हठ न करे। घणे भागे तो हु ओपरेशन वखते त्या पहोची जईश। वे चार दहाडामा शक्ति आवी जशे। मारु नज जवानु थाय तो कई नहि पण लवाववा जोखम नज खेडाय। मारे तो आजेज तार करवो छे। ईश्वर कृपा हशे तो आपणे बन्ने त्या हाजर हशु। पण एने खातर ओपरेशन नज रोकवु।[1]

: १६७ :

WARDHAGANJ,
13-8-34

JAMNALALJI,
POLYCLINIC, QUEENS ROAD,
BOMBAY, 8

Am quite fit Listened letter reported Am definitely opinion operation should be performed on date fixed by doctors irrespective other conditions Wire fixed date

—*Bapu*

१ जमनालालजीके कानके ऑपरेशनका तय करनेके बारेमें मौनवार ता. १३-८-३४ को गाधीजीने उपरोक्त सूचना लिखकर दी थी।

: १६८ :

WARDHAGANJ,
14-8-31

JAMNALALJI,
POLYCLINIC, QUEENS ROAD,
BOMBAY, 8

Midst prayerful rejoicings of all Bapu broke fast[1] with hot water honey at hand of Tulsiben after prayers led by Vinoba singing Tukarams hymns celebrating fulfilment of all his spiritual aspirations followed by Shivaji with mother hymn and Balkoba singing Harmomang Then followed doctor Datta with verses from Corinthians on matchless power of love Amtulsalam recited suras from Koran Aney with verses of his composition Your telegram was then handed to Bapu After Ramdhun fast was broken Bapu was too much moved to speak anything He had very uncomfortable night accompanied by nausea Blood pressure now highest recorded during fast 190 and 100 pulse 72 temperature 98 weight 94

—*Mahadev*

: १६९ :

WARDHA,
15-8-31

JAMNALALJI BAJAJ,
POLYCLINIC, QUEENS RD.,
BOMBAY, 8

Bapu heard your letters Uma accompanying

—*Mahadev*

१ अजमेरमें अस्पृश्यता निवारणके लिये हुई सभामें एक सनातनी स्वामी लालनाथ पर किये गये हमलेके कारण दुखी होकर गांधीजीने यह उपवास किया था। इस सभामें गांधीजी उपस्थित थे। यह उपवास वर्धामें ७ से १४ अगस्त तक हुआ था।

: १७० :

अ

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

१५-८-३४

चि जमनालाल,

उपवास पछी आ पहेलो कागळ लखु छु। मजामा छु। आजे दूध लीधु छे। ब्लड प्रेशर सुदर छे। एटले मारी चिता न करशो। जानकीबहेनने रहेवु होय त्या लगी रहेवा देजो। ओमने लाबी मुदत त्या राखवानी कदाच जरूर न होय। महादेव अने मदनमोहन भले आवे छे। तेओनु जवु मने आवश्यक लाग्यु छे। छो कालेज अवातु होय तो पाछा आवे। अहि मुझवण नहि आवे। एटले हृदयमा रामने अकित करीने क्लोरोफोर्म लेजो। सहु कुशल छे। ईश्वरने तमारी पासेथी हजु घणी सेवा लेवी छे। घणु अर्पण करावबु छे।

बापुना आशीर्वाद

: १७१ :

WARDHA,
16-8-34

JAMNALALJI,
SHREE, BOMBAY

Thank God. Hope restful. Love from all.

—*Bapu*

१७२

१६–८–३४

चि जमनालाल,

हमणाज ओपरेशननो तार मळ्यो। जानकीमैयानी उपरथी चिंतानो पहाड उतर्यो। मारी फिकर न करशो। मने आराम छे। खवाय छे। हु त्या उतावळे दोडी आवु तेम नथी। बीजे क्याय पण पूरी शक्ति आव्या विना नहिं जाउ। एटले निश्चित रही साजा थजो।

: १७३ :

WARDHA,
18-8-34

JAMNALALJI,
SHREE, BOMBAY

Mahadev gave good news about you No talking allowed Parliamentary Board meeting postponed Am gaining strength

—*Bapu*

१७४

१९–८–३४

चि जमनालाल,

तमारु गाडु ठीक चालतु जणाय छे। रुझ आववानी उतावळ न करशो। एने समये ए आवी रहेशे। काम करवानी चिंतामा नज पडशो। वातचित नज कराय। कई खास कहेवु होय तो लखीने कहेवाय। आ नियम जाळववाथी खूब फायदो थवानो संभव छे।

अहिंनी चिंता तो मुद्दल न कराय। मने कोई तकलीफ नथी आपतु। वहु काम नथी करतो। वजन ९६ लगी गयु छे। आश्रमनी चिंता करवानु तमारे नज होय। मदनमोहन त्या रहे।

बापुना आशीर्वाद

आ तो सवारे ४ वाग्या पहेला लखायु हतु। त्यार बाद कमलनयन आव्यो। जे पडखे जखम छे ते पडखे न सुवाय तो सारु एम दाक्तरो कहे तो सुखे दुखे एकज पडखे पडी रहेवु अथवा चता सूई रहेवु सारु छे।

: १७५ :
अ

२०–८–३४

चि जमनालाल,

काले विनोबा रवाना थया पछी दा जीवराजनो सुदर तार मळ्यो। तेथी जाण्यु के पाछो लोहीनो उपद्रव न हतो ने दु ख पण ओछु थयु हतु। तोय विनोबा भले त्या डुबकी मारी जवा गया। तेना आववामा कारण कमलनयन छे ए तो जाण्यु हशे। कमलनयन पोते तमारु शनीवारनु दु ख जोई गभराएलो एटले अहिं पहोंचताज महादेवनी मारफत मने कहेवराव्यु। मे सूचना वधावी विनोबाने खबर मोकली ने विनोबा तुरत तैयार थया। मदालसाए इच्छा करी। पण ए तो भक्त रही एटले विनोबानी इच्छा जाणी रही गई। एनो सयम एने फळशे। भले रही। हवे जो दु ख शम्यु होय ने चित्त शात होय तो विनोबाने वहेला मुक्त करी मूकजो। पण जरूर होय त्या लगी तो छो रोकाय। अहिंनु तत्र गोठवाई रह्यु छे। रात दिन तेमाज विनोबा गुथाएला रहे छे।

विद्याभ्यासने विषेनी तमारी प्रतिज्ञानु पालन थशेज। आटलु तमारा आश्वासन सारु लखी नाख्यु छे। एनी चर्चा विनोबानी साथे करवामा न पडशो। तमारी अत्यारनी साधना शरीर झट सारु करी मूकवानी छे। अहिंनी के बीजी एक पण चिंता व्होरवानी नथी। मारी तो नहिज केम के मारु गाडु बरोबर चाली रह्यु छे। राधाकिसन अने शीवाजी चोकी सरस रीते करी रह्या छे। तमे बहु नहि बोलता हो। डाक्तरो छुट आपे तेनो उपयोग कजुसाईथी करवामा हित छे। डाक्तरो इच्छे ते धर्म विरुद्ध न होय तो करीए आपणी इच्छाने वश थई कई छुट आपे ते नोखी वात छे।

जाजूजी मळी गया। खबर आपी गया। मदनमोहनने मोकलवानी जराय उतावळ न करशो। अहिं कोईने कशी तकलीफ नथी। ए खचीत मानजो।

: १७६ :

२१–८–३४

चि जमनालाल,

तमारे विषे काले तो सुदर खबरज मळता रह्या। साजना दा जीवराज अने रजबलीनो सयुक्त तार मळ्यो। हवे जो एम प्रगति चाल्या करे तो

झपाटा वध सारु थवु जोईए। पण उतावळ नथी करवी। जेम चालतु होय तेम भले चाले। कामोमा खूचवानी उतावळ न करशो। ओमने कहेजो आजे विलकुल त्याथी टपाल नथी। कदाच आजे तार आवशे।

दा रजवअलीने मारा वदेमातरम् वि कहेजो। तेनी चीवटने मारु हु श कहु ? दा जीवराजने सारु एक कापली साथे छे।

: १७७ :

अ

२३-८-३४

चि जमनालाल,

तमारो कागळ, ओमनो ने जानकीमैयानो तथा मदनमोहननो मळ्या। विनोवा पासेथी खवर साभळ्या ने हमणा दा शाहनो तार मळ्यो। एटले हवे तो एमज धारीये के थोडा दीवसमाज वधु रुझाई जशे। पण हवाई किल्ला न वाधशो। धीरजथी त्यानु पूरु करजो। कोई जातनी उतावळ नथी। फिकर नथी। अहितो राधाकिसन वधी वस्तुने पहोची वळे छे। ने मारी रखेवाली तो ते अने वीजा घणा करी रह्या छे।

जे वाक्यनी पाछळ 'विनोद' लखवु पडे ए विनोद कहेवाय के? वाकी जानकी-मैया वराडा पाडे ए सारु के तमे मनमा वधु दवावीने स्वप्ना सेवो ए सारु। जानकीमैया वराडा पाडे एटले तो समजीये के दुख भोगवे छे। तमे मनमा समजी लो एटले छेतराई जईए। कहो हवे कोण चडे ?

: १७८ :

२५-८-३४

चि जमनालाल,

तमारु काम ठीक घोडा वेगे चाली रह्यु जोउ छु। मादा वधा वादशाही भोगवेज ना ? एटलो मादगीनो स्वाद छे। पण विचारा दरिद्रनारायणने भागे ज्यारे मादगी आवे त्यारे तेने भागे तेनो स्वाद नथी आवतो।

आ साथे दा शाहनो कागळ छे। ओमनो तो छेज।

अहि वधु वरोवर चाली रह्यु जणाय छे।

बापुना आशीर्वाद

: १७९ :

वर्धा,
२६–८–३४

पूज्य जानकीबेन,

तमारा कागळो बे अही आवीने पडेला, पण हु तो अल्लाहाबाद गयो हतो त्याथी काले आव्यो एटले त्यारेज बधा कागळो जोवाने मळ्या। भाई मदनमोहनना कागळनु पण एमज थयु। शेठजीनी तबीअत धोडा वेगे सारी थती जाय छे ए जाणीने अपार आनद थाय छे। तमारा जेवा ज्या सेवामा होय त्या बीजु शु परिणाम आवे? वेपार अने शादीमा हाल लक्ष न आपे तो सारु। सपूर्ण आराम थई गया पछी वेपार अने शादी तो पड्या छेज, भागी जवाना नथी। विनोबाजीने एम लागतु लागे छे के एमनो फेरो नकामो हतो। मने तो लागे छे के ए त्या आवी गया ए सारु थयु। एमने मोकलवानी इच्छा कमलनी हती पण कमलनी इच्छा उपरथी आग्रह बापुने मे करेलो। मारा अनेक प्रणाम शेठजीने कहेशो अने मारा तरफथी आग्रह करजो के चारथी पाच विझिटरने मळवानो जे समय राख्यो छे तेमा पण केवळ तबीअत सिवाय बीजी वातो न करे, अने मात्र छापा वाचे पण छापानी वातोनी चर्चा न करे।

तमारे पोते पण बरोबर जेलर बनवु जोईए अने शादी अने वेपारवाळा "वेपारी" ओने ताकीद करवी जोईए के एवी वातोनी चर्चा करशो तो रजा आपवामा आवशे। एटलु करवानो तो तमने 'नर्स' तरीके पण अधिकार छे।

जवाहरलालने हु टाकणेज मळी आव्यो। एक दिवस मोडो गयो होत तो न मळी शकत। कमळा नेहरुनी तबीअत तो हती तेवीने तेवी छे। ए काई बहु दहाडा काढे एम लागतु नथी। जवाहरलालनी हिंमतनो तो पार नथी। एमनी साथे मारे खूब वातो थई, पण ए विषे शेठजीने हमणा कशु नही कहु। सारा थाय त्यारे।

मदनमोहनने अने ओमने जुदो कागळ लखवानो समय नथी।

लि

महादेवना प्रणाम

तमे बे ओरडा राख्या छे ए जाण्यु। पण तेथी त्या नाहकनो गडगच्चो न करशो, अने हाट न भरशो। घणा सेवक सेविकाओ थई जाय तो तेथी पण दरदीने त्रास थाय ए तमने कहेवानी जरुर न होवी जोईए।

: १८० :
अ

वर्धा,
८–९–३४

चि जमनालाल,

तमारा कागळ आव्या करे छे ने खबर तो मळयाज करे छे। ईश्वरनो पूरो अनुग्रह लागे छे के दाक्तरोनी धारणा करता पण जलदीथी रुझ आवी रही छे। मुद्दल उतावळ करवी नथी। साव रुझ आवी जाय त्यारेज खसवानु छे। सिंहगढनो विचार मने गमे छे। महेतानी मदद पण मळया करशे। सिंहगढनी हवा तो उत्तम छेज। पाणी खूब हळवु छे। एटले पूरो लाभ मळशे। दूर पण न कहेवाय।

वातो बहु न करशो। करवी पडे ते पण पूरो अवाज काढीने नहि पण खूब धीमे सादे। अवाज करवानी असर कान उपर थया विना रहेतीज नथी।

दाळ अने भात छोडवा एथी घणो लाभ थशेज। दूध उपर आधार वधारे राखजो। दहि खाटु मुद्दल न होवु जोईए। रजा मळती जाय तेम कसरत खूब वधारजो। चिंता तो मुद्दल न वेठवी। आम करवाथी कानना फायदानी साथे मगज पण ताजु थई जशे।

मालवीजी आजे आव्या। राधाकांत पण छे। असफअली ने खलीक आव्या। वीजाओ काले आवशे।

खानभाई खुश रहे छे। रोज सवारे फरती वखते ने साजे वेसीने ४–५ नो वखत आपु छु। धीमे धीमे वातो थाय छे।

मारे विपेनी पगलीनी वात तो साभळी हशे। ते विषे तमने उतारवा नथी मागतो पाछळथी साव सारा थाओ त्यारे टीका करवी होय ते करजो। मने तो लागे छे के तमने वधु गमशे।

ओम मारी पासेज रहे छे। जोईती मदद करे छे। चार खरु जोता पाच छोकरीओ वच्चे एक छोकरी के बेनु काम वेचाई गयु छे एटले सहुने भागे थोडु थोडु आवे छे। प्रभावती थोडुज बीजीओने घणु करवा देय एम छे वळी मदालसा तो भाग लेवा आवेज छे।

राधाकिसन तमारी भलामणोने लीधे एवो चिंतित रहे छे के मारी उपर चोकी बरोबर राखतो छतो गभराया करे छे। हु वहेलो तो उठु छु। वधारे सुवानी जरूर नथी रहेती ने मारु काम उकले छे तो हळवो रहु छु। वजन हवे धीमेज वधशे। खोराकमा वधारो करवानी स्थिति नथी। छे तेथी धीमु वधशे। तेज सारु छे। शक्ति वध्या करे छे। दीवसना उघी लउ छु। राते ८-४५ सोडामा सोडो ९ वागे खाटलामा होउज। एटले मने मारी तबीयत बाबत कई कहेवापणु नथी रह्यु। तमे आवशो त्या लगी ने त्यार पछी पण अहि पडचोज छु। विना कारणे अहिंथी चसवानु नथी।

एडरूझ पाछा रविवारे आवे छे।

कुमारप्पा २० दीवसनी रजा लईने आव्या छे। पाछा तुरत एने मोकली दईश। अहि मगळवारे आवशे।

कन्याओनु ठीक चाली रह्यु जणाय छे। विनोबाज बधु जोया करे छे। एटले मारे कशामा हाथ नाखवापण छेज नहि।

आसाम बाबत रही गयु। काग्रेसना माणसोने जाणता हो तो तेने आसामना पैसा मोकली देजो। जो तेने न जाणता हो तो ज्वालाप्रसादने मोकलो। मारवाडी रिलीफ त्या काम करे छे। तेमा आ रकम भळे। तमने जेम ठीक लागे तेम करजो।

: १८१ :

२१-९-३४

चि जमनालाल,

सुसिलानी आखने विषे (अहिना) दाक्तरे हाथ धोया ने मुबई तुरत मोकलवानी भलामण करी तेथी सवितावहेन साथे तेने मोकली दीधी छे। मणिभुवनमा उतरवानु कह्यु छे। दाक्तरनी शोधनो बोजो सरदार उपर नाख्यो छे। तमारे चितानु कारण नहि रहे। पण तमने तेओ मळी जशे।

तमारु आववानु लबाय छे तेनी फिकर नथी। दाक्तर साव निर्भय करे त्यारेज आवजो। त्या लगी अहिनो बोजो कईज न वेठशो।

मदनमोहन घणे भागे तो आजेज नीकळशे। खानभाईओनु वरोवर चाले छे। नानाभाई रेटीयो शीखी रह्या छे। मोटाभाई जोन्स अने काकानी खवर राखे छे। कशी चिंता तेने विषे करवापणु नथी। राधाकिसन काम करवामा वहु जवरो छे।

खावामा सूचवेलो नियम जाळवता हशो। वजन केटलु रहे छे? घनश्यामदासनु ओपरेशन वध रह्यु शु?

: १८२ :

(सितवर, १९३४)

चि जमनालाल,

माधवदास वाना भाईने रू ५०० (आप्या) हता ए तमने याद हशे। तेने तो ए मळी गया। तेमाथी ३२५ ठ वा पासेथी ए वखते अपाव्या हता। वाकीना दुकानेथी उपडचा जणाय छे। हवे आ रू ३२५ ठ वा ने पहोचाडवा जोईए। आ हुडी तेने मोकलावजो। विगत 'गाधीने ३२५ मुवईमा आपेला ते चुकते हिसावे'।

हवे मदनमोहन विषे। मारा मनमा हतु ए आजेज तमारी तरफ आवशे। हवे एम नहि वनी शके। विनोदमा तो खरु पण खानभाईओए मदनमोहननी हाजरीनी जरूरत मानी जणाय छे। तेनी पासे कई लखाववानु करावे। अने ज्या जवु पडे त्या जाणीतु कोई होय तो तेने गमे। जो त्या मदनमोहननी जरुर खास न होय तो हमणा ते भले अहिंज होय अथवा तमने कोई वीजु ध्यानमा आवे तो जणावजो। नहि जणावी शको तोय अने मदनमोहननी त्या जरूरज होय तो मोकली दउ। काले तेओनी साथे वात तो करीशज। मनहरसिंह विषे तमने राधाकिसने लख्यु हशे।

राजेन्द्रवावु सोमवारे अथवा मगळवारे आवे छे। एडरूझ पण त्यारेज।

: १८३ :
अ

वर्धा,
२७-९-३४

चि. जमनालाल,

वल्लभभाई खबर आपे छे के तमे मा कापडनी मिलनो सोदो करवा इच्छो छो।' तमे एटले पेढी। मने तेनो आघात तो पहोच्योज। जे आटले उडे खादीमा उतर्या छे ते मिलना मालेक थाय ए अणघटतु लाग्यु। छता कई लखवु एम निश्चय न करी शक्यो। तेटलामा काले जानकीमैया आव्या। मध्यमानी परीक्षा आपी छुटचा छे एटले मन मोकळु थयु छे। तेणे साभळचु छे त्यारथी तेने चेन नथी पडचु। 'आ वला कोने सारु हशे?' एम पूछे छे। छोकराओ पण पसद नथी करता। नोकरो कहे छे 'चालो हवे तो घरनी मिल थशे एटले हवे शेठ थोडाज खादी पहेरवानु कहेशे?' आ पगलु कोईने गम्यु नथी एटले मिल माडी वाळजो। लेवाई होय तो भागवलाथी करजो। भागीदारोने लेवी होय तो सुखेथी लेय। तमारे घघोज जोईए तो घणाय बीजा पडचा छे। अने परोपकारने अर्थे वधारे कमाणी जोईए तो ए परोपकार विना चलावशु। ओम कहे छे, 'तमारे कागरेस सारु पैसा जोईए छे एटले काकाजीने मिल लेवा प्रेरो छो का?' आ वधाने जवाब शो दउ? तारथी देवाय तो माडी वाळयाना खुश खबर तारथी देजो।

१ जमनालालजी कई कारणोंसे (जिनमें एक मुख्य कारण यह भी था कि मजदूरोंकी स्थिति गाधीजीके आदर्शके अनुसार रखकर मिल्का सचालन क्यों न किया जाय) अपनी कपनीकी तरफसे एक कपडेकी मिल्का सौदा करनेको किसी प्रकार राजी हो गये थे। पर उनके मनमें दुविधा बनी रही। जमनालालजीकी डायरीसे पता चलता है कि मिल न लेनेका अतिम निर्णय इस पत्रके पहुचनेसे पहले ही वे कर चुके थे।

: १८४ :
अ

(उपरोक्त पत्रनी प्रतिलिपि)

वर्धा,
५–१०–३४

चि जमनालाल,

तमारा कागळो मळ्या छे। मिलनी उपाधीमाथी ठीक बच्या। ए वाचनी शान्तिथी जानकीमैयाना अने छोकराओना मानननो सदर अनुभव मळ्यो। बधा व्याकुळ थई गया ए मने अत्यत सुदर लाग्यु। ए वृत्ति कायम रहे ए आपणे सदाय मागीये।

त्याथी डाक्टर माव मुक्त न करे त्या लगी चसवानुज नथी।

बने एटली वातो अहि करशु। बाकी कांग्रेसमा ने त्यार बाद। कांग्रेस बाद तुरतमा तो वर्धाज पाछा आववानु थशे। कांग्रेस पछी तुरत कई नवु करवानु विचारी मूक्युज नथी। एनो विचार तो अहिज थशे।

अहिनु चालो न्ह्यु छे।

कमलाने कागळ लख्या करता हशो। हमणा तो त्या खुर्शेदबहेन छे तेने लखो तोय चाले।

बापुना आशीर्वाद

: १८५ :

७–११–३४

चि जमनालाल,

तमारी चिट्ठिओ आव्या करे छे। कानपुनु काम पती गयु न गणाय। मने वधारे विगत मोकलजो। सारुज थयु के तमे त्या वेळासर पहोच्या छो।

मगज उपर कामनो बोजो पडवा न देशो। कामनी दृष्टिए तमारु मुबईमा रहेवु मने गमतु नथी। सेंकडो माणसो त्या आवजा करता हशे। चिंता तो काशी नज वेठशो।

महिलाश्रमनो विचार न करशो। ए बाबत हु विचारी रह्यो छु। राधाकिसन तो तेमा परोवाई रहेल छेज। भागीरथीनी साथे वातो करी छे। फरी करीश। तेने (सस्थाने) पडवापणु नथी।

ओमने विषे हु थोडी चिंता वेठी रह्यो छु। जे करो ते तेने पूछीने करजो। आ साथे तेनो कागळ छे।

सतावीससीए गाधी सेवा सघनी सभा हजु कायमज छे के? तेमा फेरफार करवो होय तो करजो। जो त्या वधारे रोकाण थाय ने दाक्तर एक अठवाडीयानी रजा आपे तो अही आवी ते मीटीग करी लेजो।

फरवा जवानु राखो छो के? खावामा सावधानी छे? काचर कुचर खाता हो तो ते छोडजो। ए हजम करता मगजनी शक्तिनो सारी पेठे क्षय थाय छे। खुल्ली हवा ने कसरतनी बहु आवश्यकता मानजो। निद्रा तो बरोबर लेवानी हशे।

खानसाहेबना दीकरा गनीने शुगर फेक्टरीमा काम करवानी इच्छा थई छे। हमणा पगारनी वात नथी। तेने घडवानीज वात छे। कोई ठेकाणे तेने अनुभव आपी शकाय तो आपवानी जरूर छे। विचारीने लखजो।

: १८६ :

वर्धा,
११-११-३४

चि जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो छे। कान रहेल छे। हवे कई बाकी न रहेवु जोईए।

त्या मळवा आवनारने वध करवाज जोईए। मगजने खाली नज करवु घटे। तेने अगे मौन लेवु घटे तो मौन लेवु। वात करवी ते मात्र दाक्तरने अगे। सेवकोने पोतानी हाजत पूरतु। आवु कईक कर्या विना मुबईमा तमारे शाति जाळववी मुश्केल छे। अने उपचार तो त्याज थई शके। आ वात न भूलाय तो सारु। * * * * *

मदालसा ठीक छे।

गनीने बरोबर वात करीनेज मोकलीश। खानसाहेबने तमारो कागळ वचाव्यो हतो। ए तमारा मतने मळे छे। एटले गनी निष्फळ जशे तो तमारो वाक नहीं काढे। गनी साथे वात करीने . ... लीधी छे। ए सम . ... . . हमणा पगार आपवानी नथी।

मीराबहेन त्या २१ मीए ईटालीयन बोटमा पहोचे छे। २२ मीए अहि आवशे। खानसाहेबनी दीकरी एनी साथे आवे छे। रामदास ने बा जाजुजीवाळा मकानमा छे। आशा तो छे के ठीक थई जशे। आजथी तेने ईंडा देवानु शरु कर्युं छे। दुबळो तो सारी पेठे थई गयो छे।

कुमारप्पा ने शीवराव आव्या छे। आजे वातो शरु करी छे। हमणा तो मेरीने नथी बोलावतो। तमारी एने विशे शी कल्पना छे?

: १८७ :

१२-११-३४

चि जमनालाल,

तमारु काननु लवायु ए गमतु नथी। में डाक्तरोने कागळ लखाव्या छे। जयप्रकाश मादो लागे छे। ते प्रभावतीने अहमदनगर लई जवा इच्छे छे। जो ते जाय तो हमणाज जाय ए आश्रमनी दृष्टिए वधारे ठीक छे। एटले जो जयप्रकाश इच्छे ने तमे रजा आपो तो विनोबानी रजा लईने तेने त्या मोकली दउ। आजे पण ते पूरी काममा रोकाई गई छे। .. ...

: १८८ :

वर्धा,
१२-११-३४

मान्यवर जमनालालजी,

आज बापूजीने प्रभावतीके बारेमे आपको एक पत्र लिखा है। उसमे वह लिखना यह चाहते थे कि अगर जयप्रकाश प्रभावतीको मुबई बुलाना चाहे और आपकी सहमति हो तो आपसे खबर पाने पर प्रभावती विनोबाजीकी इजाजत लेकर बबई रवाना हो सकेगी। परन्तु यह बात अहमदनगर जानेको लागू नही पडती थी। अगर उनके पत्रमेंसे कुछ दूसरा मतलब निकलता

हो तो उसमें सुधारकी आवश्यकता है। उनका ठीक हेतु वह है जो मैंने आपको लिखा है।

भवदीय

: १८९ :

वर्धा,
१८–११–३४

चि जमनालाल,

तमारा काननी चिंता फीकर तेने विषे विचार करवो पडे छे एटलुज। ए शु थयु छे ए समजातु नथी। दुख नथी फिकर नथी। अधारु लागे छे। ते वीतराग एटले संतोष। बाकी तो जे थवानु होय ते थाओ। बन्ने दाक्तरोने कागळ लखाव्या एना उत्तर सरखाय नथी ए केम?

हवे वात उद्योग संघ । मारु स्मरण एवु छे के मगनलाल स्मारक सारु तमे जे (नीमीत्ते) मकान निरधार्यो हता ए विषे हाल तमे शु इच्छो छो–ते हु जाणतो नथी। ए स्मारक आ कल्पना माथे योग्य... एम जोउ छु। दरेक गामडे . .केम के वर्धामा घणे ... . प्रदेशमा गामडाज, वहुज .. .. .. हवा सारी छे। हिंदुस्ताननु मध्य भूगोलनी दृष्टिए छे। रेलनी सगवड छे। आ दृष्टिए वर्धा गमे छे। तमे अही छो। ए लालच पण खरी। तमने बचमा नथी राखवा। छता तमे वधा तो छोज। एम गणी वरती रह्यो छु। आ दृष्टिए विचारी जे धारो ते लखजो।

गनी बाबत रामेश्वरनो तार छे। .

मारा कागळ ... .

: १९० :

१९–११–३४

चि जमनालाल,

तमारी जन्मगाठनो कागळ मळ्यो। तमारु कुशळज छे। तमारे घणु जीववु छे ने घणी सेवा करवीज छे। वर्धाना बगीचाने[1] बदले राधाकिसन पासेथी सस्ती जग्यानी खबर मेळवी छे। ते चाले एवी छे।

बापुना आशीर्वाद

१. मगनवाडी।

: १९१ :
अ

वर्धा,
२२-१२-३४

चि जमनालाल,

तमारा कानने विषे हजु केम खबर नथी ? किशोरलाल ने गोमती खाटले पड्या छे। गोमती ठीक छे। किशोरलालने हजु ताव छे। छता उतार उपर छे। उद्योग सघने वगीचे लई जवानी तैयारीओ थई रही छे। मकान उपर बे कोटडीओ बाधवानी योजना छे। एक बाधवानी वात राधाकिसन लाव्यो हतो। हवे बेनी चाले छे। लगभग रु २००० खर्चवानो सवाल छे। ए करवुज जोईए एवु कई छे नही। एनो खरो उपयोग चोमासामा होय। दी-वनना तो हु नीचे पडचो रही शकु। राते अवश्य उपर सुवा जाउ। उपरनी कोटडीओ भविष्यनी दृष्टिएज बधाय। वात नीकळी एटले हु हा पाडवाने ललचायो। तमे ना पाडी देशो तो काम पती जशे ने रु २००० बची जशे। हवे क्या तमारा रह्या छे ? आ लखताज विचार आवी जाय छे के मारेज दृढतापूर्वक उपर बाधवानी हाल तो मनाईज करवी जोईए। एमज थशे। एटले आ लखेलु रद समजजो।

सरूपराणीनी वती कृष्णा पाछी प्रभानी धीमी मागणी करे छे। मे तो लख्यु छे के प्रभा एवी रीते गोठवाई गई छे के एने एम मुक्त न करी शकाय। पण त्याथी बीजी कोई सारी बाईने मोकली शकाय। एने साथी जोईए एवी कोईक मळी रहे एम मानु छु। तमारी हिम्मत चाले तो तमे सरूपराणीने सतोषजो। नही तो मारी पासेज वात रहेवा देजो।

: १९२ :

वर्धा,
२४-१२-३४

चि जमनालाल,

गगाधरराव बाबत तमारो कागळ मळ्यो छे। ए प्रश्न मुश्केल छे। एम पैसा न अपाय एम मने लागे छे। पण गगाधरराव साथे वात कर्या विना निर्णय न आपी शकु। एमने हु लखु छु। आवी मतलबनोज कागळ जशे।

गगाधररावनो कागळ आ साथे पाछो मोकलु छु।

कान साव दुरस्त करावी लेजो।

कमलनयनने कोलवो जवा देवानी वातथी तो वाकेफगार हशोज।

अवदुल गनी विषे खानसाहेव साथे वात करी छे। तेओ गनीने लखशे। खर्च जे थशे ते पोते आपवानु कहे छे। गनीने तेना काकडा सारु दिल्ली वोलाव्यो छे। खानसाहेव त्या जई शकशे के नही ए नक्की नथी। पजावमा पण न जवाय एवो हुकम छे। दिल्ली जता कई पजावना स्टेशनो वच्चे आवे छे एमा थईने जवाय के नही ए सवाल छे। पजाव सरकारने तार कर्यो छे।

मदनमोहन होय तो कहेजो के सरहदना तेना अनुभव लखी मोकले। मारी साथे वातज न थई शकी।

ए हुकम रद थई गयो एवो तार आजे आवी गयो।

: १९३ :
अ

२६–१२–३४

चि जमनालाल,

तमे हमणा वे कोटडी चणवानो आग्रह न राखो। मे समजपूर्वकज ना पाडी छे। वधु ट्रस्टज छे ना? कोडी कोडी करीने वचावीये त्यारेज वरकत रहे। भले खानगी पेढी हो के दरिद्रनारायणनी। द ना नी पेढीमा तो वळी वधारे सावधानी जोईए। मगनलाल स्मारकने विषे नथी घडी शक्यो। वनता लगी तो घडीश।

अभ्यकर वची जाय तो वहु सारु थई जाय। तेने मळो त्यारे कहेजो तेने खूव याद करु छु।

खानसाहेव मारी साथे दिल्ली आवे छे। महेर तो हशेज। महेरनु पण ठीक चाले छे। हमणा अहि आनदना वाप अने वैकुठ महेता छे। आनदना वाप दुनियानी मुसाफरी करी आव्या छे। उद्योग सघमा खूव रस लेशे।

ओमनो कान वह्या करे छे। मे गये अठवाडीये मुवई जई वतावववानो तार कर्यो हतो। ए हजु त्या आवी नथी लागती। एने तेडावीने देखाडो तो सारु।

लालीनु तो चाल्यु।

महेरलु कठिन छे। आवी ते दीवसथी दा अनसारीने त्या छे। एक दिवस मोढु देखाडी गई हती। आश्रम प्रति घृणा पेदा थई छे। अहीज राखी जवी पडशे। ठीक छे के दा खानसाहेवनी धर्मपत्नी आवे छे। तेनी साथे कदाच रहेशे। मारी इच्छा तो २२ मीए वर्धा पहोचवानी छे। २९ मीए तो जरूर। आज शकरलाल अने गुलझारीलाल आव्या छे।

पोताना कागळीआ वि तपासवा लाववा रामदासनो विचार वारडोली लखतर जई आववानो छे। भाडा वि ना पैसा आपजो।

बापु

देवशर्मा मळी गया छे। ते कहे छे के जे खर्च आजे शैल आश्रममा थाय छे तेटलु तेने मळे तो ते कवजो लेवा तैयार छे। आ वावत लखजो।

: १९६ :

DELHI,
12-1-35

JAMNALAL,
BIRLA HOUSE,
MOUNT PLEASANT ROAD,
BOMBAY

Just learnt Swarupranı unconscıous Send full detaıls

—*Gandhı*

: १९७ :
अ

दिल्ली,
१४-१-३५

चि जमनालाल,

तमे नही आवी शको ए समज्यो। दाक्तर न रजा आपे त्या लगी त्याज रहेवु सारु छे। वहु उपाधि नही व्होरता।

रामदासने मणी भुवनमा राखवानी मणीलालनी इच्छा मोळी छे, एम रामदासने लाग्यु छे। एटले त्याथी ते नीकळे ए बरोबरज छे। हवे ए नोखी कोटडी लई रहेवा इच्छे छे। तेनु भाडु रू. २५ लगी वेसे ते मागे छे। मने लागे छे के ए तेने लेवा देवु। वधु अयोग्य तो गणाय। पण रामदासनो रोगज एवो छे के तेना केममा अयोग्य योग्य जणाय छे। आमा बापनो मोह क्या लगी मने आडे दोरतो हशे ए कहेवाय नही। रामदासनी आ मागणीमा तमने दोप लागे तो ते प्रमाणे तेने कहेवानो तमे अधिकार वर्षो पहेला मेळवी चुक्या छो। जेम ठीक जणाय तेम करजो।

स्वरूपराणीनु[1] समज्यो। स्वरूप[2] तार मोकल्या करे छे।

मारे अही २५ मी लगी तो रहेवुज पडशे। २८ मी तो अहीथी रवाना थवानी छेल्ली तारीख छेज।

राजाजी काले लक्ष्मीने लईने आवे छे।

जयप्रकाशने मळो छो के?

बापुना आशीर्वाद

: १९८ :

२६–१–३५

चि जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो। खानसाहेब आज अही छे तमारो तार वचाव्यो। ए उपरथी आशीर्वादनो लाबो तार मोकल्यो ते मळी गयो हशे। तमे विवाह योजवानी विशेषता ठीक केळवी रह्या जणाओ छो। आ विवाह तो इतिहासमा रही जशे। विचारी सुफीआए कदी नही धार्यु होय के ते पठाणने परणशे। नही धार्यु होय सादुल्लाए के ते खोजीने परणशे। तमारी पसदगी मने तो बहु गमी छे। बन्ने सुखी थशे ने सुफीआ धारे तेटली सेवा करी शकशे। अमे बधा मगळवारे वर्धा पहोचशु। साथे कोई नवा तो नही होय। चद्रत्यागीना बळवीरनी साथे सगाई थएली। एक भली छोकरी छे। बन्ने मेरी तो बेतुल उतरी जशे।

सरदार, राजाजी, राजेनबाबुने आठ फेबरवारी लगी रोकावु पडशे एम जणाय छे। एटला लगीमा बिल उपरनी चर्चा थई जशे।

कमलनयन मीलोन जवा अधीरो थयो छे पण जरा थोभवानी जरूर छे।

बापुना आशीर्वाद

१ श्री स्वरूपरानी, श्री मोतीलाल नेहरूकी पत्नि।

२ श्री, विजयालक्ष्मी पडित।

: १९९ :

दिल्ली,
२६–१–३५

मु. जमनालालजी,

साथेनो कागळ लखाया बाद बापुए केटलुक लखवानु कह्यु ए लखु छु। आजे बनारसथी मुमगल प्रकाश आव्या हता, एणे बापुजीने खबर आपी के ×× ए हवे परणवानो विचार कर्यो छे। एना बापनी पण एवी इच्छा छे के एणे वैश्य नातिमा विवाह करवो, अने ×× ए एम जणाव्यु छे के बापुना आशीर्वाद मळे तो ×× नी साथेज ए विवाहमा जोडाय। बापु तो अगाउ आ संबधनी विरुद्ध हता ते एटलाज कारणे विरुद्ध हता के ×× मोटा आदर्शो सेववावाळी हती, पण हवे ज्यारे ए पोतेज कबूल थई छे त्यारे एमा बापुने कशो वाधो होयज नही। अही वल्लभभाई हता तेओ पण इच्छे छे के आ संबध तुरत जोडी देवामा आवे।

हवे बापु तमारो अभिप्राय मागे छे। मने, देवदासने पण लागे छे के आ जोडी देवाय तो सारु। तमारो कागळ आव्ये बापु ×× ने लखशे। अमे २९ मी साजे ग्राड ट्रक एक्सप्रेसमा वर्धा पहोचशु।

लि. सेवक

: २०० :

२७–१–३५

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो छे। कानमा केम आम थया करे छे? दाक्तर शु कारण बतावे छे? सुकी हवामा जवानी जरुर छे? खावापीवामा ने कसरत आराममा नियम जाळवो छो के? मने वर्धा विगतवार लखजो। हमणा वर्धा न अवाय तो कई हरकत नही। कागळथी काम चलावशु।

वल्लभभाई, राजा वि. ए हमणा अही रहेवु पडशे एटले तमारी बे सभाओ मुल्तवी रहेशे। चर्खा सघने सारु शकरलालने बोलावी जरूरनु काम उकेलजो।

बापुना आशीर्वाद

: २०१ :

३०–१–३५

चि जमनालाल,

तमारा कागळो अही पहोचता मळ्या छे। तमारो कान तो बहु कनडगत करी रह्यो छे। अही सहु चिंतित छे। घनश्यामदास पण चिंता वेठे छे। एने एना कलकत्ताना यहुदी दाक्तर उपर भारे विश्वास छे। एनु ऑपरेशन नीवडयु जणाय छे। तेथी पण ते आग्रह करी रह्या छे के जो कान झट सारो नज थई शके तो तेना दाक्तरनी सलाह लेवी। में तो दा जीवराजने खुलासा-वार पुछयु छे। तमे पण विचारी लेजो। मुदतो पड्या करे छे ए गमतु नथी। तमे पोते इच्छो छो के जानकीदेवी त्या आवी जाय? तेनी इच्छा काले राते थोडी घणी जणाई। तेने एम पण लाग्यु के कदाच तमे तेनी हाजरी इच्छता हो। एम होय तो ते आववा इच्छेज। में तमारा आ कागळना जवाबनी वाट जोवानु सूचव्यु छे। आना जवाबमा तार करवो होय तो करजो। दरदनी वची विगत जणावजो।

हमणा तो हु अहीज छु। तमे हमणा अही आववानो विचार माडी वाळजो। ज्यारे दाक्तर निश्चित पणे रजा आपे त्यारे आवो।

खावानी बाबतमा मारु मानो तो सारु छे। दूध, फळ, थुलावाळा आटानी रोटली, भातनो, पटेटा वि नो त्याग, भाजीओनु सेवन। गमे त्यारे काचर कुचर न खावु। नीमेला वखत वहार खावानो आग्रहपूर्वक त्याग। एकी वखते होजरी उपर जेम ओछो वोजो पडे तेम सारु। खावानी बाबतमा दाक्तरोनो अभिप्राय बहु मानवापणु नथी। तेओनो अनुभव पण आ बाबतमा घणोज ओछो होय छे।

दुर्गाप्रसादना पैसा तो हमणा हुज मोकलु छु। मे तो मोकली देवानु कहीज दीधु हतु। मने मुद्दल खबर न हती के तेने मुबई जवाना पैसाना सासा हता।

बापुना आशीर्वाद

मेहरताज नज आवी। लाली कदाच देहरादून जशे।

: २०२ :

३०–१–३५

चि जमनालाल,

मवारना पहोरमा लख्यो ते पछी जानकीदेवीने मळ्यो। तेनो जीव त्या

आववा उचकतो ययोज छे। एटले काले तार करजोज। हा अथवा ना नो।

(यहा एक पेरेग्राफ छोड दिया गया है)

दा खानसाहेवनो जेलमाथी कागळ छे। तेना तरजुमानी नकल तो आ साथे जशेज।

खानसाहेवना कागळनो तरजुमो आ साथे जाय।[१]

: २०३ :

वर्धा,
३०–१–३५

मु प्रिय जमनालालजी,

आपनी तवीअतनी सौने खूब चिंता थाय छे। मने लागे छे के पू जानकी-वेनने त्या आववा दो। नाहकना ए जीव वाळशे अने अही पोतानी तवीअत खराव करशे। त्या हशे तो ए निश्चित रहेशे। अने तमारी सेवा पण करशे।

पेला दुर्गाप्रसादने तो वापुएज मोकलेलो एटला हेतुथी के तमारे एने कशु पूछवु होय तो पूछी शको अने एनेज होम मेम्वर पासे चिठ्ठी लईने मोकलवा धारो तो मोकली शको। हवे एना भाडाना पैसा तो अहीथी मोकलाशे।

आजे सोफीआनो कागळ वापु उपर आव्यो छे। ए तो वहु खुश लागे छे अने वापुनी पासे आशीर्वाद माग्या छे। तमारु रजीस्टर हवे वहु मोटु थतु जाय छे। हवे तो मात्र अंग्रेजोना अथवा "गैर हिंदी"ओना विवाह कराववा तमारे वाकी रह्या!

लि स्ने

: २०४ :

२–२–३५

चि जमनालाल,

तमारो कागळ अने तार मळ्या छे। जानकीदेवी आजे नीकळे छे तेनी साथे आ कागळ जशे।

खावानी वावत एमने पण समजाव्यु छे। एनी मदद तो मळशेज ए विषे मने शकाज नथी।

१. यह सूचना पत्र-प्रेषकके लिये लिखी है।

ओमनी चिता राखवापणु नथी। मारी पासे राखीश।

जानकीदेवीनु हृदय नवळु छे। तेनी तपास करावी लेजो। दवा तो ए नही लेय पण शु छे ए जाणीये। ट्रीटमेट शी आपवा इच्छे ए पण खबर पडे।

रणछोडभाईवाळा पैसानी रिसीट उद्योगमदिरवती नारायणदासना नामनी अथवा जे ट्रस्टी होय तेना नामनी कढावजो। ट्रस्टीना नाम हु भूली गयो छु।

मारु तो हमणा अहीज रहेवानु छे। मच्छरनी मने कशी कनडगत नथी। अगाशी उपर तो कईज नथी। काले राते वरसाद होवाथी नीचे सुतो हतो। त्या पण हरकत नथी आवी।

जानकीदेवीनी साथे मोकळवो।[1]

:२०५:
अ

वर्धा,
६-२-३५

चि जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो छे। दा जीवराजना कागळथी मने सतोप छे। खोराकनो फेरफार ए सूचवे छे। माखणनु प्रमाण वधारवानु कहे छे। तेनी साथे वात करीने वधारवु घटे तो वधारजो। मने बीक छे के तमे वातो बहु करता लागो छो ने कसरत ओछी। एम होय तो तमारे वन्नेमा सुधारो करवानी जरूर छे। मने विस्तारथी लखजो।

कमलनयन साथे वातो करी छे। मारो दृढ अभिप्राय छे के जो ते राजी थाय तो तेणे विवाह करीनेज विलायत जवु घटे छे। पण तेनी वहुने ते नज लई जाय। वहुने लई जाय ने अभ्यास करे ए लगभग असभवित छे। विलायतमा घर ससार माडवो ए पण अनुचित छे। बन्ने मात्र सहेल करवा जाय तो ए जुदी वात होय। पण अही सहेलनो प्रश्न तो छेज नही। मारो अभिप्राय आ छे। हमणा सगाई करे। मलेरीया शात थये कोलवो जाय। एक परीक्षा तो पास करेज। पछी विलायत जाय। जता पहेला लग्न करे। थोडो समय ससार भोगववो होय तो भोगवे। पण विलायत तो एकलोज जाय। विलायतथी आवजा करवी होय तो करे। कमलनयनने कोलवोनो अनुभव ठीक काम आवशे। तेनु जीवन हजु अभ्यासी नथी थयु। ए थई जाय तो कशी मुसीबत नथी रहेवानी।

१ यह सूचना पत्र-प्रेषकके लिये लिखी है।

उद्योग सघमा कायमी छ ट्रस्टी नीम्या छे। तेमा तमारु नाम नाख्यु छे। ए आवश्यक हतु। तेथी तमने ऑरडिनरी सभ्य नीमवानी जरूर छे। एनु फोर्म आ माथे छे। ते भरीने वळती टपाले मोकलजो। एमा सकोचनु कशु कारण नथी।

कृष्णदासनी सगाईनो समय आव्यो छे। तमे कोई बाळा ध्यानमा राखी छे ? होय तो लखजो।

सभ्यनु फोर्म आ साथे छे।

: २०६ :

WARDHA,
7-2-35

JAMNALALJI,
SHREE, BOMBAY

If you have confidence may accept Bank offer.

—*Bapu*

: २०७ :
अ

वर्धा,
९-२-३५

मुरब्बी भाई,

आपनो बीजो पत्र काल साजे पू बापुने मळ्यो। बापुए लखाव्यु छे के चालता चक्कर आववानी धास्ती होय तो मोटरमा फरवा जवानु राखवु। खुल्ली हवामा मोटरमा बेसीने फरवा जवु ए चक्कर माटे पण सारु' छे।

ग्रा उ स [1] 'ना सभ्य थवानी प्रतिज्ञा विषे पू बापुए लखाव्यु छे के मे तमारे विषे पूरेपूरो विचार करीनेज तमने एना पर सही करवा सलाह आपी छे। म बधाने कह्यु पण छे के हु तमारी सही मेळवी शकीश। हवे न करो तो तेनी असर खराब थशे। तमारे सही करवामा जराये धर्मभिरु थवानु कारण छे एम एमने नथी लागतु। तमे मानसिक त्याग पूरेपूरो करेलोज छे। तमारी mentality गामडानीज छे। एटलुज आजे एमने माटे बस छे। माटे एमणे आग्रहपूर्वक लखाव्यु छे के हाल तो तमे एना पर सही करीने मोकली देशो।

१ ग्रास उद्योग सघ, वर्धा।

अहीं आव्या बाद तमे ए विषे मारी जोडे पेट भरीने चर्चा करजो अने तमे जो मने समजावी शको अथवा तमने हु न समजावी शकु तो मेंबरशिपनु राजीनामु आपवामा हु वांधो नहि उठावु। मेंबरशिपनु राजीनामु आपवानी गमे त्यारे पण आमा छूट छे। तमारा विना आनु ट्रस्टी मडळ बनाववु एमने बराबर लागतु नथी।

चि कृष्णदासने सदेशो कहीश।

बाकी बावतो कालना कागळमा छे। एज लि

: २०८ :

१४–२–३५

चि जमनालाल,

राजाजी आवी गया। तमने मे केशु विषे लखेलु तेनो जवाब तमे भूली गया जणाओ छो। मारो पत्रव्यवहार तो चालीज रह्यो छे।

कृष्णदास विषे निश्चित छु।

रमीबाईनो कागळ आ साथे छे। ठीक लागे तो तेने आपजो।

२०मीनी आसपास तमे आवी जशो तो मने गमशे। पण दाक्तरनी रजा मळे तोज आवजो।

कान साव सारो थई जवोज जोईए।

बापुना आशीर्वाद

गनीना खर्च विषे लखवानु हु भूली गयो छु। तेणे ६० रु नु कहेलु। खानसाहेबे ३० थी चलावे एम इच्छयु हतु। रामेश्वरनो तेने विषे शो अभिप्राय छे? ते कई काम आपे छे के? तेनी साथे भळे छे?

: २०९ :

वर्धा,

२३–३–३५

चि जमनालाल,

आ साथे बधा कागळीया पाछा मोकलु छु। पाटिलनी उपर कागळ पण साथे छे। तमने ते न गमे तो न मोकलशो।

सुचेता भले आवी। मरजीमा आवे त्यारे लई आवजो। आजे प्रार्थना सारु क आ¹ जवानु छे।

: २१० :

वर्धा,
२४–३–३५

चि. जमनालाल,

मदालसा तमारी साथे काठगोदाम जोडाई जाय ए ठीक लागे छे। एटलामा एना गुमडानी खबर पण पडी जशे।

राजेन्द्रबाबु विषे व्यवहारिक चीजज करजो। गिरो अथवा वेचाण खत करजो। व्याज राखजो। ओछामा ओछु राखजो।

भवालीमा तबीयत सारी न रहे तो तुरत छोडजो। कमलाने शाकनी पारसल – मोकळता हता। कमला लखे छे ते सारु न होवाथी बंध कर्यु छे। शाक फळनु तपासजो।

तमारा जवानी खबर सत्वरे आपजो।

मारी बाबत जे कहेवु घटे ते कहेजो।

मदालसानो खोराक ते पोते गोठवी लेशे।

बापुना आशीर्वाद

: २११ :

कँप लखनऊ,
१–४–३५

चि जमनालाल,

हिन्दी साहित्य सम्मेलनके इंदौर अधिवेशनके 'थैली'मेसे जो धन संग्रह हुआ हो उसमेंसे रु १५००० (पंद्रह हजार) मात्र श्री मंत्री दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा मद्रासको भिजवा देवे।

बापु

१ कन्या आश्रम।

: २१२ :

वर्धा,
३–८–३५

चि जमनालाल,

कमलनयन अने पेन्सी कुमारी बन्ने पूर्ण रीते राजी होय, मादडीमा रहेवा तैयार होय तोज नक्की करजो। उतावळ करवानी कशी जरूर नथी। विवाह कर्या विना कमलनयन पश्चिममा नही जाय ए आश्वासन आपणे सार बस गणाय छे। कमलनयनने घडावापणु पुष्कळ छे। एने के बाळाने पाछळथी जरा पण दुःख न थाय ए जोवानु आपणु काम छे।

जो भवालीमा कमला तमारी हाजरी खास न मागे तो सिंहगढ जाओ ए कदाच वधारे ठीक होय। छता जोजो। तमारा शरीरनो प्रथम विचार करवानो छे। रस्तामा ... रह्यो हशे।

कमलनयन इंदोर तो आववानो ज त्यारे वर्धा खबर पडी रहेशे। जो सिंहगढ जवानु नक्की थाय ने ते पण सम्मेलननी तारीखनी आसपास होय तो इंदोर थईने जाओ ए मने गमशे।

मदालसानु ठीक चाली रह्यु छे। गंगा शांत छे।

बापुना आशीर्वाद

: २१३ :

वर्धा,
१०–४–३५

चि जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो। वधु बरोबरज थयु लागे छे। अवश्य ते प्रदेशमा रही जाओ। सगाई बाबत हु जानकीदेवीने वात करी लईश।

* * ना पिता लखशे त्यारे योग्य करीश। तमारो कान तकलीफ नथी देतो ना?

हमणा वधारे नही।

कमलाने आशीर्वाद।

: २१४ :
अ

वर्धा,
१८-४-३५

चि जमनालाल,

तमारा बेउ कागळ मळ्या। कुमारप्पाने पूछ्यु। ज्यारे आ फॉर्म छपाव्या त्यारे कोई प्रमुख नहोता निमाया एजानची तो हताज नेनु नाम आपवु जरूरनु लाग्यु एटले छपाव्यु। मने तो कई खबर न हती। कागळ पण तमारो कागळ आव्या पछी मगावीने मे जोयो। हवे जे फॉर्म छपावे तेमा फेरफार करवानु सुचव्यु छे। आमा कई वधारे नथी।

कमलनयन ठीक छे के सरहद्दमा पहोच्यो। तेने वागी गयानु छापामा छे। पण तेमा कई लागलु नथी।

कमलानु समज्यो। कमलानी इच्छा छे के ते जाय त्यारे मारे तेने मुबईमा मळी आववु। हवे तमे त्या छो एटले मने दोरशो।

कान केम रहे छे ए प्रश्ननो जवाब नथी। आजे ठ बापा आव्या छे।

: २१५ :

२३-४-३५

चि जमनालाल,

कमलनयननी साथे में ठीक ठीक वातो करी लीधी छे। सबध बाधता पहेला जो • - वर्धा आवी जाय तो हु पण एने थोडी तपासी लउ एम लागे छे। कमलनयनने पण आ वात गमी छे। एटले * * उपर मे ए प्रकारनो कागळ लखी आप्यो छे।

तमारो तार मळ्या पहेलाज राधाकिसनने सीकर मोकली चुक्यो हतो एटले तार नथी कर्यो।

काननु केम?

मदालसाने केम छे?

बापुना आशीर्वाद

: २१६ :

वर्धा,
२७-४-३५

चि जमनालाल,

कमलनयन अहिंथी अल्लाहबाद तरफ रवाना थयो छुं। मे * * ने लख्यु छे के ते जो अही आवी जाय तो सारु। मबध जोडाय ते पहेला हु तेने मळी लउ। रामकृष्ण मारी साथे इदोर आव्यो हतो। तेने त्याज बे त्रण दीवसने सा र गुलावे रोक्यो छे। उज्जेन वि आसपासनो भाग जोई लेगे। आजे ए वन्ने आववा जोईए।

प्रभावतीनी उपर व्रजकिशोरबावुनो कागळ छे। तेणे लख्यु छे के ते कहे त्यारे तेणे बिहार जवु। एटले रजाना दीवसनी बहार पण जवानु थाय। प्रभावतीए लखी नाख्यु छे के ते बोलावे त्यारे जवा तैयार रहेगे।

चोधुरी अही आव्या छे .. तमारी वच्चे शी वात थई मने खबर नथी। तेना अने वालुजकरना कहेवाथी ममज्यो छु के तेनी वहुने मेटरनिटी होमनु काम करवा सारु तेने सो रूपैया आपवा तमे तैयार छो। आ विषे तमारी साथे मने वात थयानु याद नथी। चोधुरीए मने कहेलु याद छे। ते वातने आधारे तेनी वहुए पुना सेवा सदनमाथी राजीनामु आप्यु छे। चोधुरी अही आवी गया छे। हवे तेनी वहु आववानी अणी उपर छे। तमारा वाळुजकरना पत्ता उपरथी एम जणाय छे के तमे कशो निश्चय नथी कर्यो। ए बाईने तमे तो ओळखता पण नथी। हवे आ बाबत तमे शु इच्छो छो ए लखजो। एनी वहुने हाल तुरत तो वगीचामा राखी शकाय। .. सारु समास कदाच न थाय। मेटरनिटी होम तो बाधवु पडे। अने ते वगीचामा बाधवानी योग्यता विषे कदाच आपणे विचारवु पडे। जो ए बाईने राखवीज होय तो हमणा तो सुवावड सारु कातो जुना वगलानो कोई उपरनो भाग काढी आपवो जोईए। अथवा नवा वगलानो ज्या तमे रहो छो त्या। ए करता पहेला ए सामान्य केसो लोकोने घरे तपासे ने बहेनोनी दवा करे, गामडानी बहेनोने मळे वि। होम शरु करवा सारु तो खाटला वि नु खर्च पण करवु जोईए। आ वधु तो तमे आवीने विचारी जुओ त्यारेज थाय। मूळ वात तो ए बाईने राखवी छे के नही ए छे। चोधुरीने सो रूपैया उ सघमाथी न अपाय। सघ तेने वधारेमा वधारे दर मासे रू २५ आपी शके। केम के तेनी किम्मत कागळोना प्रयोगोज करवा पुरती होय।

कमलाने मळवा मुबई डोकीयु करी आवीश। रस्तामा मळवा जवु मुश्केल जोउ छु।

मदालसा त्या पहोची हशे। मोटर रेलनो थोडो समय त्याग करो ए तो मने गमे।

: २१७ :

अ

वर्धा,
२८-४-३५

चि जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो।

मदालसा भले उकाळेलु दूध पीए अने रोटली पचे तो खाय। एनु शरीर साचवीने मरजीमा आवे ते खाय। चार करता वधारे वार नही। वचमा पण कई नही। त्या कसरत करशे तेना प्रमाणमा खावानु वधे ए समजी शकाय।

चोधुरी बावत काले लखी चुक्यो छु। एने घर क्या आपवु। कातो जुना बगलामाथी बे कोटडी अथवा नवामाथी। बगीचामा बन्ने रही शके एवु जोतो नथी। चोधुरीनी छाप मारी उपर सारी पडी रही छे। ए काम कर्या करे छे। तेनी हाजत बन्ने वच्चे १००नी छेज। तेनी बहुना ७५ बीजेथी ने तेना २५ अहीथी एम करीने १०० अपाय। मकान विषे लखजो।

काननी रसी वध थई? राजेन्द्रबावु ने राजा आवी गया। राजाने भारे थाक लाग्यो छे तेथी हमणा नीकळशे।

प्रोफेसर पण आवी गया।

बापुना आशीर्वाद

प्यारेलाल बावत तारादेवीने लखी चुक्यो छु।

: २१८ :

WARDHAGANJ,
29-4-35

SETH JAMNALALJI,
BHOWALI

Madalsa should have boiled milk and cream whole meal bread or chapati if digestible

—Bapu

: २११ :

वर्धा,
३-५-३५

प्रिय जमनालालजी,

आपनो कागळ बापुजीने मळ्यो। ~ ~नी हकीकत जाणी। हु पोते तो बहु राजी थयो, कारण मारो ए छोकरीने माटे पक्षपात छे। अक्षयतृतीयाये सबंध थवानु नक्कीज समजवु ना हवे तो ? कमलनयनना सीलोनना प्रोग्रामनु शु थयु ? डा जवाहरलालनी मादगीना खबर साभळीने बहु दिलगीर थयो।

प्रभावती विषे तमे लख्यो छो ए ठीक छे, पण ब्रजकिशोरबाबु पोते लखे छे के ए ज्यारे बोलावे त्यारे जवानु छे। घणु खरु तो रजा पूरी थया पछीज एमनो कागळ आवशे त्यारे प्रभावती जशे।

पेला चौधुरीने विषे बापु आपने लखी चूक्या छे। एनी स्त्री तो सेवा सदननी पोतानी नोकरी छोडी चूकी अने थोडा दिवसमा अही आवशे पण। ए बनेने बापु तपासशे तो खराज पण दरम्यान एमने रहेवानी व्यवस्था तो थवी जोईए ना ? तमे जे मकान विषे रजा आपशो ते मकानमा एमनी गोठवण करशु। माणस तो मने बहु सारो लागे छे।

अमारु काले अहीथी बोरसद जवा नीकळवानु थाय एम लागे छे। ६ठीथी १५मी सुधी त्या रहीने पाछा १८मीए अही आववानु। १८मीए अही साहित्य समेलननी स्थायी समितिनी सभा छे। ए पछी कमला नेहरुने जोवाने माटे मुबई जवानु थशे। कमलाजीनो प्रोग्राम हजी चोक्कस जाण्यो नथी। एओ कई तारीखे त्याथी नीकळी केटला दिवस मुबई रहेशे ते जणावशो। एमनी उपडवानी तारीख तो छापामा २३ मी मे लखेली छे, पण एमना तरफथी कशा खबर नथी।

रामदासनु हवे कोई परमार साथे गोठवाय एवु किशोरलालभाई लखता हता। एमने त्या एक महिनो उमेदवार तरीके रहेशे अने पछी पेलाने अनुकूळ पडे तो भागीदारीमा लेशे।

रामकृष्ण मजा करे छे। अभ्यास पण करे तो छे, अने एने परीक्षा आपवानी लगनी लागी होय एम पण लागे छे, एटले हमणा तो अहीज रहेशे। फुटबोल मेच जोवा जाय त्यारे रात्रे मोडो मोडो आवे छे, सवारे हवे अमारी साथे सफाईमा नथी आवतो। पण प्रफुल्लित रहे छे। चिंता न करशो।

पू जानकीबहेनने प्रणाम। लि से.

: २२० :

वर्धा,
१३–५–३५

चि जमनालाल,

तमारो राधाकृष्ण उपरनो कागळ मळ्यो छे। मारी खात्री छे के तमारे आ जातना काममा पडवानी कशी जरूर नथी। ए काम लगभग हवे पती गयु जणाय छे। तमारु कर्तव्य त्या रही शरीर साव सुधारी लेवानु छे। जुननी आखर लगी नीचे उतरायज नहीं। जे थयु छे ए विपरीत तो थयुज छे पण तेमा एवी आटीघुटीओ छे के वच्चे पडवाथी बहु सार काढवानो नथी। थई रह्यु छे ए थवा देवामाज ठीक छे। दूर बेठा जे सलाह आपी शकाय ते आपीए।

इदोरथी कई नथी मळ्यु ए लखी चुक्यो। हवे तमारे जेने लखवु होय तेने लखजो।

* * नु समज्यो। मारो कागळ तेनी उपरनो मळी गयो हशे।

हिंदी साहित्य सम्मेलननी स्थायी समिति अहि १८ मीये मळशे। सभ्योने बगले उतारवानु राधाकिसनने कह्यु छे।

एडरूझ अहि छे। मगनवाडीमा उतार्या छे। मलकानी पण छे। तेने साप डख्यो हतो। पण ठीक छे। इलाज तुरत लेवाई शकायो।

मदालसाना नियमित कागळ जोईए।

: २२१ :

(भवालीमे मिला,
१४–५–३५)

चि जमनालाल,

तमारा कागळो मळ्या छे। महादेव वल्लभभाईना बोलाववाथी बोरसद गएल छे। बे चार दीवसमा पाछा आवशे। मेरीबहेन सारी पेठे बीमार पडी गई हती। इटारसीनी इस्पीतालमा हती। तेनु रु ८७ नु बिल चुकव्यु छे। कदाच क्षय लागु पडे। इटारसीनी दाक्टरनी कहे छे तेने मीरज मोकलवी जोईए। हाल ते बेतुल छे।

मारे कदाच २४ मीए बोरसद जवु पडशे। कमलाने मळवा मुबई तो जवु पडशेज। एटले २१ मीए अहीथी नीकळीश।

किशोरलाल– गोमती काले आव्या। गोमतीने थोडो ताव आवी गयो तेथी नवळी पडी गई छे।

हिंदी साहित्य सम्मेलननी स्थायी समितिनी बेठक १८ मीए अही राखी छे।

रामकृष्णनु चाली रह्यु छे।

ओम तेना कामभा स्त्री जणाय छे।

सम्मेलनमा एक लाख मळवा नथी ए तो जाणो छो ना? लखवु घटे तेने लखजो।

: २२२ :

वर्धा,
१४–५–३५

चि जमनालाल,

तमने इदोर बाबत त्या वेठा पजवणी करवी पडे छे। त्याथी कई आवे एम लागतु नथी। साथेनो कागळ वाचजो।[1] मारा जवाबनी नकल मोकलु छु। हु तो कोईने ओळखतो नथी। तमारी उपर टोळयु छे। तेमा पण कई न थई शके तो उकल्यु गणशु। तमारे ए बाबत उचाटमा नथी पडवानु। त्या वेठा कई थई शके कोईने लखी शकातु होय तो लखीने काम करजो। अत्यारे एवु न सभवे तो भूली जजो।

: २२३ :

वर्धा,
१६–५–३५

प्रिय भ्रु जमनालालजी,

आपनो पत्र–बापुजी उपरनो–हमणाज मळयो। हु वल्लभभाईए बोरसद बोलाव्यो हतो त्याथी काल्जे आव्यो।

मेरीबेन विषे बधी व्यवस्था तमारी इच्छा मुजब थई गई छे। एमने मुबई जईने पछी मीरज जवानी सलाह बापुए आपी छे।

१ गाधीजीका अ भा हिन्दी साहित्य सम्मेलनके प्रधान मत्रीको लिखा हुआ ता १८–५–३५ का पत्र खड ३ में देखिये।

कमलनयन हवे जल्दी कोलंबो जाय छे जाणीने आनद थाय छे। हु त्याना मित्रोने हवे लखी दउ छु के कमल आवे छे।

समेलन विषे तो बापु तमने लखी चूक्या छे। लाख तो न मळ्या पण हजारो पण न मळ्या। हजी तो कशुज नथी मळ्यु एम कहेवाय।

बापु २१ मी तारीखे नीकळीने २२ मीए मुबई पहोचशे। वल्लभभाई पण बोरसदथी कमलाने मळवा आववाना छे।

सीकरने विषे तमे जे कहो छो ते बरोबर छे। एज विचार उपर मक्कम रहेशो। एमा पडवाथी कशो लाभ नथी।

स्थायी समितिनी पूरी व्यवस्था राधाकृष्ण करी लेशे। काले घनश्यामदासजी पण आवे छे। तेमने पण बगलेज उतारवानी गोठवण छे। एडरूझ पण शातिनी खातर त्या जाय छे, रात्रे अही आवे छे।

गगाब्हेन धुळीआवाळा काले इस्पितालमा गया, बपोरे बाळकी अवतरी, आजे बिचारी बाळकी ईश्वरना धाममा पहोची पण गई!!! एवी परमात्मानी लीला छे।

गिरजाबाई चोधरी विषे लखी चूक्या छीए। राधाकृष्ण एने कया बगलामा रहेवु ए बतावशे। एकाद अठवाडीआमा ए आवी जशे।

नवीन गाधीने विषे आप बापुनो अभिप्राय पूछो छो ते शी बाबतमा? ए तो आजकाल जीवणलालभाईनी नोकरीमा छे।

लि. स्ने.

: २२४ :

बोरसद,
२४-५-३५

चि जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो छे। इदोरनी बातने बीजा रूप न थवा देशो। नीचे उतरो त्यारे जरूर त्या जई आवजो।

गगादेवीना खबर मळ्या करता हशे। बोरसदमा बधु ठीक छे।

[signature]

: २२५ :

(भवालीमे मिला,
९–६–३५)

चि. जमनालाल,

तमे नैनीताल वधाने ठीक मळी आव्या। तमे जून आखो पहाडमा रहो एम इच्छु छु। जे प्रोग्राम १५ मी पछीनो घड्यो छे ते ३० जुन पछीथी करो। कान हजु साव साफ नथी थयो ए ठीक नथी लागतु। मुबई खबर दीधा करो छो ? न दीधा होय तो हवे पूरु वर्णन मोकलो। ते शु कहे छे ते जाणवु जोईए। हाथ धोवा होय तो भले हाथ धुए। कानमाथी नीकळतु वध थवु जोईए।

ओगिलवीने कागळ लखवामा कदाच उतावळ थई होय। ते शरीर दृष्टिए। तेनी हा आवे तो मने मळीने तेने मळवा जशो एम मानु छु।

पेला डेनमार्कना मित्रनी उपरनो पत्र आ साथे छे। एणे तो पोतानु ठेकाणु मुबईनु आप्यु छे।

मेरीवहेन काले आवे छे। मदालसानी प्रगति विषे तमे चुप छो।

कमलनयन गयो। उत्साह तो ठीक हतो। गगादेवी वगीचे आवी गई छे। खानसाहेबने खूब मळ्या। तेमनी तबीयत नरम तो खूब छे। पण मजामा हता। तेने मळ्या ए बहु गम्यु। वधाने खूब सभाळता हता। तेने नासिक अथवा यरवडा फेरववानु लख्यु छे। हवे थाय ते खरु। अवदुल गनी विषे कईक चिंता हती खरी।

उद्योग सघनु धीमे पण नियमित चाले छे। घडातु जाय छे। बाकी बधु ठीक छे।

एडरूझ सीमलामा छे। पोतानु पुस्तक लखी रहेल छे। अमलदारोने आ वखते मळवानु बध राख्यु छे।

बापुना आशीर्वाद

: २२६ :

वर्धा,
९–६–३५

चि जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो। दासनी उपर पहोच साथे छे।

वाइसरॉयनी उपर बे कागळ लख्या तेनी नकल साथे छे। 'ना' नो

जवाब आवी गयो छे। अने हवे ज्यारे बधाने क्वेटाथी नीचे मोकली दीधा छे त्यारे उतरेलानी सभाळ राखवा उपरात कई करवापणु रहेतु नथी।

तमे नीचे उतरवानी उतावळ न करशो। आ महीनाना अत लगी तो त्या रहेजोज। हजु अही तो भठ्ठी सळगे छे।

: २२७ :

WARDHA,
13-6-35

SETH JAMNALALJI,
BHOWALI

Remain there till end month if possible

—*Bapu*

: २२८ :

वर्धा,
२०-६-३५

मु प्रिय जमनालालजी,

तमारा कागळमा तमे वे लीटी लखो छो ते पण वाचवी कोकवार कठण पडे छे।

बापु लखावे छे के हवे भले तमारो प्रोग्राम कायम राखो। घोडे बेसीने आल्मोरा न जाओ ए सारु। ए माटे तार पण कर्यो छे। आ तार तमारा कागळनी एक लीटी बरोबर न वचाई एटले तमारे खाते उधारवो जोईए।

वल्लभभाई ठीक बीमारी भोगवी रह्या छे। हवे काईक ठीक छे।

सुशीला २७ मीए आवशे ए जाण्यु।

कमल पहोची गयो। सोमसुन्दरम् अने आलुविहारी बनेना मारी उपर कागळ आव्या छे। तेओ एने विषे बधुज करशे। जराय चिंता न करशो। कमलनो पण कागळ आव्यो छे।

लि से.

[signature]

: २२९ :

वर्धा,
२१-७-३५

चि जानकीबहेन,

तमारो कागळ मरम छे। तमे जे इच्छो छो ते मदालसा पासे धीरजथी करावजो। खीजाईने कई कराववानो समय गयो समजो। हमणा तो बन्ने त्याज रहेजो। वचाय तेटलु वाचजो, लखाय तेटलु लखजो।

रणजीत अने सरूपने पोताना छोकरा जाणी रहेजो। बाकी तमारी स्वतत्रता उपर कोई तडाप मारी शके एम नथीज।

अही बधु ठीकज छे। ओम पोतानामा पडी छे ने रामकृष्ण टीकटो एकठी करे छे ने मजा करे छे। हवे तो मारी पडखे सुतो नथी। ए बरोबरज छे।

बापुना आशीर्वाद

: २३० :

वर्धा,
३-८-३५

चि जमनालाल,

तुम थैलीके लिए द्रव्य एकत्र करने इदौर जा रहे हो। इस सिलसिलेमें तुमने मुझसे तीन बातें जानना चाही है (१) यह रुपया किस प्रकार खर्च किया जायगा? (२) कोई अकित दान इसमें लिया जाय या नही? और (३) इसके खर्चके लिए कोई ट्रस्ट या कमिटी आप बनाना चाहते है या क्या व्यवस्था सोची है?

इनके सबधमें मेरा खुलासा यह है कि मेरी माग मुख्यत दक्षिण भारतमे हिन्दी प्रचारके लिए है, किन्तु आवश्यकता देखकर दूसरे प्रातोमें भी जैसे बगाल, आसाम, सिन्ध, गुजरात, पजाब, आदि जहा हिन्दी भाषाका प्रचार या प्रवेश नही है मै इस रकमको लगाना चाहता हूँ। इनमेंसे किसी प्रान्तके कार्यके लिए अथवा इस कार्यके लिए आवश्यक प्रचारक तैयार करनेके लिए कोई दाता अकित रकम देंगे तो थैलीके लिए उसे स्वीकारनेमें कोई आपत्ति न होनी चाहिए।

अब रही बात ट्रस्ट या कमिटीकी। सो सब रुपया मिलजाने पर ट्रस्ट या कमिटी बनाकर अथवा किसी रजिस्टर्ड सस्थाके द्वारा मेरी देखरेखमें रुपया खर्च करनेका मेरा इरादा है।

बापूके आशीर्वाद

: २३१ :

वर्धा,
३-९-३५

प्रिय म जमनालालजी,

आ तार हमणाज आव्यो। वापुए एने आ प्रमाणे तार कर्यो छे।

"Please wire Shethji yourself. Have written him"

वापु कहे छे के आने मदद करवा जेवु लागे छे एटले काई थई शके तो करजो। टपाल जाय छे एटले बीजु कशु नथी लखतो।

लि सेवक

: २३२ :

वर्धा,
८-९-३५

प्रिय मु जमनालालजी,

हु तमारे माटे रोकायो पण तमारो तो पछीथी टेलीफोन आव्यो के तमे नही आवो। एटले तमारी पासेथी जवाहरलालनी सायेनी वातो साभळवानी मळत ते पण न मळी अने जवाहरलालने मळायु पण नही। २० रूपीया भाडु मफतनु गयु ते जूदु।

तमारा वधा कागळो मळी गया। तमे आल्मोडा सुखे जजो अने त्याथी उतावळे आववानो ख्याल सरखो न करशो। बापुजी तो कहे छे के अक्टोबरनी आखर सुधी रहो अने वधारे रहो पण तबीअत सारी करीनेज नीकळो, अक्टोबरमा थनारी मीटिंगोमा न आवी शको तो कशी अडचण नथी। चर्खा संघने विषे तमारे जे विचारो बताववाना होय ते लखीने मोकलशो।

पेली छोकरीने विषेना कागळनी बाबतमा बापु तपास करे छे।

लि सेवक

: २३३ :

वर्धा,
१९–९–३५

प्रिय मुरब्बी जमनालालजी,

सफीआव्हेननो कागळ मळ्यो। बापु कहे छे के खानसाहेबने पाछा मळो त्यारे तेमने आटली खबर आपजो। गनीनी साथे बापुनो पत्रव्यवहार चाली रह्यो छे। एनु काम कठण छे, पण पहोंची वळाशे। हाल एनी तबीअत सारी नथी। कलकत्तामा सारवार थाय छे अने तेना दाक्तरी बिलना पैसा अही-थीज मोकल्या छे। श्री निर्मलकुमार बोझना तरफथी एना नियमित रिपोर्ट आवे छे। ए सारा थाय के तुरतज अही एने बोलाववामा आवशे। अही खोरशेदव्हेन पण छे। एनी साथे एने गमी जशे। एम आशा राखीए। गमे तेम हो खानसाहेब ज्या सुधी जेलमा छे त्या सुधी एमणे गनीनी चिंता छोडवी जोईए। वळी आप अही आवशो त्यारे आपनी साथे मसलत कर्या पछी एने विषे शु करवु एनी वधारे खबर पडशे।

आप सौ मजामा हशो। बिरलाजी अने सरदार अही छे। बिरलाजी थोडा दिवस रहेशे। सरदार आजे जाय छे। मीराव्हेननो ताव हवे उतरी गयो छे।

कमलनयनना आजकाल कागळ नथी। त्या नियमित आवता हशे।

लि म्हे

[signature]

: २३४ :
अ

मगनवाडी, वर्धा,
ता २०–९–३५

चि जमनालाल,

साभळु छु के तमारी आववानी तारीख लबाय छे। आलमोरामा रहेवानी खातर लबाया करे ए मने गमे तेम छे। तमारे आराम लेवानी जरूर छेज। त्या बेठा बेठा पण तमे पूरो आराम तो लई शको एम तो नथीज। कागळो तो लखवा पडेज। माणसो पण त्या मळवा आवेज, अने त्यानु काम नो होयज। एम छता जे हाडमारी अहीया भोगववी पडे ए तो त्या नथीज, एटले तमे शियाळो बेसता लगी त्या रहो तोय मने गमे। वळी त्यानो शियाळो वखणाय छे, एथी

य वधारे शियाळो सीमलानो गणाय छे, अने शियाळामा सीमलानी रहेणी वर्धाथी पण सस्ती होय छे। बगलाओ मफतनी जेम भाडे मळे छे, भाजी पालो, फळो विगेरे ढगलाबध अने सस्ता मळे छे, अने दृष्य उत्तममा उत्तम होय छे। थडी लोकोनी कल्पनामाज होय छे। लाहोरमा शियाळानी थडी लागे एना करता त्या ओछी लागे, एटले हु तो तमने शियाळाने सारु पण छुट्टी आपु। ज्या बेठा हशो त्याथी काम तो आपशोज। एक वर्ष पूरु शातियी पहाडमा गाळी नाखो तो हु मानु छु के तमारा काननु दर्द शात थई जाय। मदालसानु शरीर बिलकुल तैयार थई जाय, अने जानकीमैया पण हाडका न भागे तो सरस घोडेस्वार थई जाय। चर्खा सघनी सभामा तमारी हाजरी हु इच्छु खरो पण जो तमने सतोष रहे तो हु तमारी हाजरी विना चलावी शकु। नवी नीतिनी बाबत चर्चा तो खूब करी लीधी छे। तमारे जे कहेवु होय ते तमे त्याथी लखी मोकली शको छो। खादी प्रतिष्ठान मीरत ने काश्मीरना भडार विषे विचारवानु रहे तो मारा विचार आने विषे पण घडाई गया छे। ए बाबतमा पण तमारो अभिप्राय तमे मोकली शको छो, अने पछी जे थाय ते सहन करो।

पछी रही कॉंग्रेस कमिटीनी मीटीग। एमा पण न जाओ तो चाले। आ वधी मुक्ति एज शरतेज आपु छु के तमारे कोई पण पहाडमा ए बधो वखत गाळवो। उतरो तो तो बन्ने मीटीगमा हाजर रहेवानो तमारो धर्म थई पडे। तमे जलधर जवाना हता ते शु नहि गएला ? राधाकृष्ण अने सरदार एम माने छे। सरदारने त्या जवु पडशे। अहि बधु ठीक चाली रह्यु छे। बाळकोबा गौरीशकरनी देखरेख नीचे केवळ दूधनो प्रयोग करे छे। हवे सारु छे। आ साथे भगवानजीनो कागळ छे। तमे लख्यु छे ए माणसने मळवानु कही दीधु छे।

: २३५ :

वर्धा,
१७-१०-३५

पूज्य जानकीमैया,

तमने तो कोई वार कागळ लखवानो प्रसग आवतो नथी। काम विना तमारा जेवाने तस्दी केम आपी शकाय ? आ साथेनो कागळ वाचजो अथवा मदालसानी पासे वचावजो। ए भगवानजी साबरमती आश्रमना एक जूना सभ्य छे। एने थोडो समय आराम लेवो छे अने आलमोडा आववु छे।

तमारे त्या मकानमा आटला एक माणसनी सगवड थाय के ? ए जो रहे तो तमारु थोडु घणु कामकाज पण करशे। वहु भलो, नम्र, अने परगजु माणस छे। ए पोताने माटे तो फळ दूधज लेशे अने ते पोताने खर्चे मेळवी लेशे। एने माटे रहेवानीज सगवड जोईए छे। उत्तर लखशो अथवा लखावशो।

चि मदालसानु वजन तो एटलु वधतु हशे के अही आवशे त्यारे ओळखी पण नही शकीए। रामकृष्णने आशीर्वाद। बावलाने एना विना सूनु सूनु लागे छे।

लि से

: २३६ :

वर्धा,
१०-११-३५

चि जमनालाल,

कागळो वाची गयो। कमलनयने दा जवाहरलालने कागळ लखवानी जरूर नथी जोतो। तमेज तेने लखी नाखो ए बस छे।

: २३७ :

(?-?-३५)

प्रिय जमनालालजी,

आ साथे पेला पॉलनो[1] कागळ आव्यो छे ते मोकलु छु। ए लोको तो आववानाज। पण हु एने लखु छु के महात्माजी हाजरी नहीज आपे एवी गणत्री राखीने आवजो। पण ख्रिस्तीओ आ बाबतमा मुसलमानो जेवा छे – हीराभाईनु नाडु पकडायु के पकडायु, छूटेज नही अने आवशे एटले बापुने तकलीफ आप्या विना पण नहीज रहे।

जीवराजनो तार आव्यो छे के तेओ काले नही पहोची शके। एने बापुनी तबीअतना खबर आपु छु अने नही आववानु लखु छु। डाक्टर शहानीने पण लखी दउ छु।

लि स्ने

१ इटरनेशनल फेलोशिप सस्थाके मत्री। इस सस्थाकी मीटिंग वर्धामे २७ से ३१-१२-३५ तक हुई थी।

: २३८ :

KHERVADI, G I P,
17-1-36

SETH JAMNALALJI,
WARDHA

Excellent journey made more so by Sardars jokes and doctors care

—*Mahadev*

: २३९ :
अ

नाशिक पहोचता,
१७-१-३६

प्रिय मुरब्बी जमनालालजी,

आ कागळ तो नाशिक पहोचता लखु छु। बापुनी तबीयत सरस छे। वातचीत करता तो मादा होय एम लागतुज नथी। सरदारनी मश्करी ट्रेन चाली त्यारथी शरु थई। दाक्तरने कहे, "ल्यो गाडी चाली, हवे बत्तीनी स्विच बध करो।" एटले दाक्तर स्विच शोधवा गया, अने सौ खडखडाट हस्या। एटले कहे, "थर्ड क्लासमा स्विच न होय, दाक्तर।" सवारे बापु पोणाचारे उठ्या, पोतेज प्रार्थना एकले एकले करी अने सूई गया। हु अने मणीबेन चार वागे उठ्या अने एम मानीने के बापु उघे छे, बने प्रार्थना करी सूई गया। सवारे खबर पडी के बापु अमारा पहेला प्रार्थना करी चूक्या हता। प्रार्थना करीने तुरत सूतेला ते ५॥ वागे उठ्या। पाछा सूता। सरदार ६॥ वागे बापुने कहे, "मादा तमे के अमे? तमे तो पाटीआ उपर पण उघी शको छो, तमने मादा कोण कहे? अमे पाटीआ उपर न सूई शकीए एटले अमेज मादा ना?" आम गम्मत चाली रही छे। डबो तो रिझर्व जेवोज छे, कारण नाशिक सुधी कोई आव्युज नथी। पण हवे तो नाशिक आव्यु अने आ कागळ तमने काले पहोचे एवी रीते नाख तो नाशिकमाज नाखवो जोईए।

लि स्ने

: २४० :

देहली,
१९-१-३६

प्रिय जमनालालजी,

दुर्गाप्रसादजी जो चिठ्ठी लेकर आये हैं इसके साथ भेजता हूं। बापूजी कहते हैं कि तात्कालिक उपाय जो लेने योग्य हो लेना। मसलन Home Member को लिखना इत्यादि। अखबारोमें लिखनेकी कोई जरूरत नही है।

आपका

आज आपकी चिठ्ठी मिल गई है। बापूजी पीछे लिखेंगे।

: २४१ :

गुजरात विद्यापीठ,
अमदावाद,
२४-१-३६

प्रिय मुरब्बी जमनालालजी,

तमारो कृपा पत्र मळ्यो। तमने कागळ तो रोज लखत पण तमारी हील-चालनु ठेकाणु न्होतु, एटले महोदय ने किशोरलालभाईने तेमने लखेला कागळो तमे त्या हो तो वचावी जवानु कह्यु हतु।

बापुनी तबीयतमा सरस सुधारो चाली रह्यो छे। ब्लड प्रेसर अही आव्या त्यारे काईक वधेलु हतु, पण ते मुसाफरीना श्रमने अगेज। कारण शक्ति खूब आवती जाय छे, विद्यापीठनी विशाळ अगाशीमा लगभग अगाउनी गतिथी ४० थी ४५ मिनिट वे कटके फरे छे। खोराक वधु ले छे। अने आवती काले अबालालने घेर हायना दळेला लोटनी बनेली ब्राउन ब्रेड लेशे एवी वक्की छे। तमे चिंता जराय न करशो। आराम तमे जेटलो वर्धामा आपता हता एटलोज अपाय छे, मात्र कोकवार जे अपवाद तमे कदि न करो एवा अपवाद सरदार करी नाखे छे खरा। लखवा लखाववानु तो हजी बधज छे, पण मने काले नोटीस आपी दीधी के, "वर्धा अने मुबईना दाक्तरोनी सलाहनो अक्षरश में अमल कर्यो, अने मारा मनने साव खाली राख्यु। हवे हु एम करी शकु एम नथी, मन काम करतु थई गयु छे अने वखतो वखत मारे सूचना आपवानु मन थाय तो आपता जवु पडशे।" हजी लखवानु साधन तो नथी माग्यु एटलो प्रभुनो पाड।

पडितजीनी साथे थोडी वातो थई। ए तो पोतेज कहेवा लाग्या, "मे तमारा कागळनो जवाब नथी आप्यो ते एटलाज कारणे के जमनालालजी कदाच आ तरफ आवशे। मने योगाने जमनालालजी पासे लई जवामा कशीज अडचण नथी। २८ मीए मने बोलाव्यो छे, पण जवा आववामा चार दिवस बगडे एटले हिंमत थती नथी। अही एमनु आववानु थाय त्यारे योगा साथे वात करे तो केवु? छता हु एमने कागळ लखीने पूछावीश।" बीजी घणी वातो थई, पण ते विषे आ कागळमा नथी लखतो।

लि स्ने

: २४२ :

अमदावाद,
२८–१–३६

प्रिय मुरब्बी जमनालालजी,

बापुनी तबीयत घणी सरस चाले छे। ब्लड प्रेसर तो लीधु नथी कदाच काले लेवाशे। पण एमनी चालवानी गति पण वधी रही छे, रोज ३० मिनिट सवारे अने ३० मिनिट साजे चाले छे, खोराकमा दूध, घी, डबल रोटी (चार औस जेटली), शाकभाजी अने लसण ले छे। शक्ति पण सारी रीते आवती जाय छे। शकरलालनो कागळ हतो के ८ मीए वर्धा मीटिंग राखी छे। सरदार इच्छे छे के मीटिंग अही राखो के जेथी तमे बापुने मळी पण शको अने एमनो प्रोग्राम नक्की करी शको। उर्मिलादेवीना दीकराना लग्नमा मारे कलकत्ता जवु पडशे। ७ मी तारीखे सवारे हु वर्धाथी पसार थईश। राधाकृष्ण अनसूयाना लग्ननी काई प्रसादी कोई स्टेशने पहोचाडशे तो राजी थईश।

लि स्ने

: २४३ :

अमदावाद,
१–२–३६

प्रिय मुरब्बी जमनालालजी,

काले तमने कागळ लख्यो हतो। आजे ब्लड प्रेसर लीधु। ए १४५/१५० अने ९०/९५ थयु। छापामा तो आ पहेलाज तमे मारो तार जोशो। अगाउ जे वध्यु हतु तेनु पण कारण तो हतुज, ओछु थयु तेनु य कारण छे। पण ए गूढमा तो मळशु त्यारे। तमे आवशो त्यारे हु नही होउ ए दुःख छे, अने कदाच हु वर्धाथी पसार थाउ त्यारे पण तमे नही हशो, पण राधाकृष्ण अने अनसूया तो मळशे एवी आशा राखु छु। जो के एटला

वधा माणसो आवशे अने रेलवेने घणी कमाणी थाय ए पण असह्य छे। हु ७ मी तारीखे वर्धाथी पसार थईश। कलकत्ता मारे ८ मीए पहोचवानु छे।

लि सेवक

: २४४ .

अमदावाद,
४-२-३६

प्रिय मुरब्बी जमनालालजी,

मीराबेनने तमे न समजावी शक्या के ए समजवाने तैयारज न्होता? बापुए प्रेसर उतर्यानो तार कर्यो त्यार पछी ए नीकळवानु मांडी वाळशे एवी आशा बापु सेवता हता, आजे पण तमारो तार आव्या पछी पाछो एनो न नीकळवानो तार आवशे एवी आशा राखी हती। पण ए तो नीकळयाज। बापु कहे छे के "ए सेगाव छोडशे तो मारे सेगाव जवु पडशे।" तमारी युक्ति तो बापुने जोवा आववा माटेनी होय पण सेगाव छोडी देवानी तो होयज नही। कदाच आवती कालेज बापु एने पाछी विदाय करे तो आश्चर्य नही।

तमारा भत्रीजानी[1] तो भारे थई। ए शिकारे नीकळचा होय एम तो मनातु नथीज। बहार फरवा नीकळचा होय अने वाघे अणधार्यो हुमलो कर्यो होय एम लागे छे। विवाहित न्होता के? गंगाविसनजीने जूदो कागळ लखु छु ते एमने पहोचाडशो जी।

बापुनी तबीअतमा तो आश्चर्यकारक सुधारो छे। दाक्तरोज मानता न्होता के आटलु ओछु प्रेसर शी रीते थाय? पण त्रण यत्रो वडे तपास्यु अने एनु एज नीकळयु। आना कारणो घणा छे पण ते तो मळशु त्यारे। तमे आवशो त्यारे हु अही नही होउ ए मने गमतु नथी। पंडितजीनी साथे तो वात करी लईशज, अने तमे थोगानी साथे बरोबर वात करशो—तमने वात करवानी पूरी तक आपशे एम एओ मने कही चूक्या छे। एटले जरूर वात करी लेजो। हु बहु वातो नथी करी शक्यो, पण तमे वातो करी लो पछी कदाच वधारे मार्ग खुल्लो थाय।

लि. स्ने

[1] नागरमल बजाज। यह जमनालालजीका चचेरा भाई था और बडा दिलेर युवक था। गावमें शेर आजानेसे उत्सुकतावश उसे देखने चला गया। शेरने उसपर हमला किया, तब बहादुरीसे बिना हथियारसे उसका मुकाबला किया और उसे भगा दिया। इस लडाईमें वह घायल हुआ और अस्पतालमें उसकी मृत्यु होगयी।

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

दिल्ली,
१९–३–३६

ग्राम निवास विषे मारी कल्पना

सेगाममा बा इच्छे तो तेने लईने अथवा न इच्छे तो मारे एकलाए एक झुपडी बनावी रहेवु।

मीराबहेनवाळु कुडाच मने पूरु न थाय।

झुपडामा खर्च ओछामा ओछु करवु। रू १००थी उपर नज जवु जोईए।

मने मदद जोईए ते सेगाममाथी मेळवी लेवी।

जरूर जणाय तेम मारे मगनवाडी जता रहेवु। तेम करवा सारु जे वाहन मळे तेनो उपयोग करवो।

...नीज पासे मीरा .. .. . रहे। मारी सेवामा वखत न आपे पण गामना काममा मदद करी शके।

जरूर जणाय तो महादेव कांती वि ते गाममा रहे। तेओने सारु सादी झुपडी बनाववी।

आम करता वहारनी जे प्रवृत्तिमा हु भाग लेतो होउ ते तो चलाव्याज करु।

खास जरूर विना सेगाममा मने मळवा वहारना माणसो न आवे। मगनवाडीमा जवाना दीवस नीम्या होय तेज दीवसे त्या मळे।

वहार भ्रमण करवानी जरूर सिद्ध थये ...

मारो पूर्ण वि ... करवाथी खास . ... .

लाभ थवानो छे अने ग्राम उद्योगनु काम वधारे वेगे चालशे, लोकोनु ध्यान ग्राम उद्योग तरफ वधारे वळशे।

आम करवाथी मीराबहेननी भारे शक्तिनो पूरो उपयोग मळशे। अने महादेव काती वि ने पण नवोज अने सारो अनुभव मळशे।

मारा ग्राममा वसवाथी मारी कल्पनामा दोषो हशे ते तरी आवशे। बीजाओने प्रोत्साहन तो मळशेज।

सेगाममाज वसवानो ... ... नथी पण ए प्रवाह पतित जणाय छे। पण बीजु गामडु वधारे उचित जणाय तो ते विचारवा हु तैयार छु।[1]

बापु

: २४६ :

३-५-३६

चि जमनालाल,

श्रीमन्नारायण साथे वातो करी। मने ए गमेल छे। तेनी काव्यशक्ति सारी छे। हजु वधवानी होश छे। कुटुंब सारु लागे छे।

पेली समाध जोई। हवे तेमा शु काम थई रह्यु छे ए समज्यो नथी। जाणवा इच्छु खरो।

समाधवाळा वगीचानी सभाळ धर्माधिकारी राखशे। एने अही गमी गयु जणाय छे। बीजाने सतोष आपे छे। काममा रोकाई रहे छे।

बापुना आशीर्वाद

१. सेवाग्राममे रहनेके लिए जानेसे पहले गाधीजीने उपरोक्त सूचना जमनालालजीको विचारार्थ लिख भेजी थी।

: २४७ :

सेगाव,
५-५(?)-३६

चि जमनालाल,

आ साथे अकर्तेनो कागळ छे। शु साचु छे ए समजवु मुश्केल छे। बुवाने जाहेर खबर आपता सकोचावानी जरूर जोउ छु। तेनी ओळखाण करवी ठीक छे। वधारे अनुभव विना तेनो जाहेर उपयोग अनुचित जोउ छु। वखत मळशे हु एमा ऊडो उतरीश।

: २४८ :
अ

नदी हिल,
बेंगलोर थईने,
१३-५-३६

प्रिय मु. जमनालालजी,

पू बापु अने सरदार बने मजामा छे। आजे कुमारप्पा पहोची गया। बापु आखी टेकरी, दिवान अने दाक्तरनी मनाई छता, खुरशी न वापरता पगेज चढ्या। पाच माईलनु चढाण २। थी २॥ कलाकमा करी शक्या, पण थाक जराय लाग्यो नही। अहीनी शाति तो अपार छे, अने अहीनी स्वच्छता अने निर्जनता आकर्षक छे। बापुने बहु शाति अने आराम मळशे एमा शका नथी। राज्ये बधो प्रबध पण आपणने रुचे एवी रीतनो करेलो छे।

पेला चीतलीआ केटलाक फरफरीआ मोकलेला तेमानु एक आपने माटे हतु ते आ साथे मोकलु छु। हजी भगिनी सेवा मदिरनो कबजो तो छोड्यो नथी, अने तेने अगे आ आखी योजनानी इमारत चणी रह्यो छे। बापुए एने लखाव्यु छे के सेवा मदिरनो कबजो छोड्या पछी योजनानो विचार थई शके, अने ते पण ट्रस्टना हेतुओने अने बापुनी विचार श्रेणीने अनुरूप छे के नही ते विचारवा जेवु छे।

दा अनसारीना मृत्युथी बापुने सख्त आघात पहोच्यो छे। अनेक कागळोमा एमणे लख्यु छे के मरणो मने हलावी नथी शकता, पण

आ मरणथी मने बहु आघात पहोच्यो अने एकलो बनी गयो होय एम लागु छु, एनी सायेनी मैत्री ते एक राजकीय मैत्री न्होती पण गाढ अगत मैत्री हती। "हरिजन"मा पण बापुए पोतानु वधु दु ख ठालव्यु छे।

पेली जे व्हेन विषे डा झाकीर हुसेन साहेबनो कागळ तमने लखनौमा आवेलो अने जेनो जवाव आपना तरफथी मे तेमने आपेलो ते व्हेननो आवेलो कागळ आ साथे मोकलु छु। ए व्हेनने हवे हु लखी दउ छु के तमारी साथे पोताना आववा विषेनो पत्रव्यवहार सीधो करे।

तमे कुशल हशो। सौने यथायोग्य। किशोरलालभाईने प्रणाम। जानकीव्हेन, गोमतीव्हेन वि ने पण।

लि सेवक

: २४९ :

NANDI,
15-5-36

JAMNALAL BAJAJ,
WARDHA

Wire particulars Tarabens'[1] death.

—*Bapu*

: २५० :

नंदी दुर्ग,
२१-५-३६

चि. जमनालाल,

खरेज ताराबहेन असाधारण बाई हती। तेनी एकनिष्ठा, दृढता, पवित्रता, उदारता, हिंदुस्ताननो प्रेम अवर्णनीय हता। महादेवीए पण बहु सरस सेवा करी अने हिम्मत पण बतावी।

मीरावहेननो कागळ तेनी मादगीनो छे। ए बाईना दोष नजीवा छे। तेना गुण अनुकरण करवा योग्य छे। ईश्वर तेने बचावे।

१. एक युरोपियन बहिन जो महिलाश्रम, वर्धाकी छात्राओंके साथ हिमालय यात्राके लिए गई थीं। लेकिन रास्तेमें हैजेसे उनकी मृत्यु हो गई थी।

मदालसा ओम मजामा . . वन्ने कागळो पाछा मोकलु छु।

तमारा शरीरनी संभाळ राखता हशो। खोराकनु मे लख्यु छे ते प्रमाणे चाले छे? आराम पुरतो लेवाय छे? नित्य फरवानु थाय छे? पेडुने सारु पट्टो लेवानी जानकीबहेननी सूचना नाखी देवानी नथी।

अही बधु कुशळ छे।

: २५१ :

नंदी दुर्ग,
२५–५–३६

चि जमनालाल,

आ साथे गोपालनो कागळ तमने वाचवा मोकलु छु। ताराबहेन जता ए खूब गभराएलो लागे छे। एनामा दोष छे तेम गुण पण छे। एने दोरवानु हवे मारे माथे आवे छे। एमा मुश्केली नथी जोतो। छेटे बेठा बताव्या करवानु छे। हमणा तो बीमाना कामने वळगी रहेवा अने ग्राम सेवा सारु तैयार थवानु सूचव्यु छे।

'सुमित्रा अने सुभद्रानु अटपटु छे। एने ताराबहेन हरिद्वार लई गई हती एम ख्याल छे। हु तपास करु छु। तेनो विचार पण जाणवानो प्रयत्न करु छु। जो गोपाल कहे छे तेम सुमित्रा सुभद्रानो कबजो सोंपी देय तो तेने महिलाश्रममा राखवी एम मने लागे छे। सुमित्राने तो खेडामा मेरीबहेन पासे रहेवानु सूचव्यु छे। तेने खर्च जोगु कदाच आपवू पडे। तमारो अभिप्राय जणावजो। तमे आराम लेजोज।

३० मे लगी नंदी। ३१ में–१५ जुन लगी बेंगलुर सिटी।

: २५२ :

BANGALORE CITY,
२–६–३६

चि जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो।

जुहुमा बरोबर आराम मळतो होय कसरत करता हो अने खोराकना नियम पाळता हो तो मने संतोष छे। पेडुने सारु पट्टानी जरूर छेज। छता दाक्तरनी सलाह लेवी होय तो लेजो।

अमे वर्धा १५ मी तारीखे पहोचशु। मदालसाए वे लीटी लखीने ठीक वेठ उतारी छे। त्या आवीने वजन वधार्यु होय ने मानसिक व्यथा दरीयामा नाखी दीधी होय तो भले ते कागळ न लखे।

ओम क्या छे। श्रीमननु हिंदी तो मारी पासे छेज। हु थोडु लखी मोकलीश। हरीलालनु जोयु हशे।

:२५३:

वर्धा,
२५-६-३६

पू वापूजी,

आपके जानकारीके लिये सायका (श्री वी कुर्मय्याका) पत्र भेजा है।

आप यहा कव आनेवाले है ? श्री शकरलालभाई, तुकडोजी वुवा, शकरराव टीकेकर आदिने कहा है कि वापूजीने वुलाया है। मैने आपकी शर्त इन सवोको साफ कह दी थी तो भी व्यवस्था करना भाग पडा।[1]

[illegible]

:२५४:

(जवाव दिया १५-७-३६)

प्रिय मुरव्वी जमनालालजी,

(१) आ साथे व्हेन महादेवीनो कागळ जोवाने मोकलु छु।

(२) पेली पुरुलीआवाळी व्हेनने परवानगी आपी ?

(३) आजे वापुए गाधी सेवा सघनु समेलन हुदलीमा राखवानी परवानगी गगाधररावने मोकली छे, अने वापुए त्या जवानु कवूल कर्यु छे। किशोरलालभाईने खवर आपवा कृपा करशो ?

१. गाधीजीको लिखे उपरोक्त पत्रका श्री महादेवभाईने निम्न उत्तर उसी पत्र पर लिख भेजा —

इसको (श्री कुर्मय्याको) क्या जवाव दिया यह तो लिखा नहीं। वापुजीने इसके वारेमें कुछ भी सिफारिश नहीं की थी। जव उन्होंने कहा "जमनालालजीको लिखना चाहता हू," तव शायद वापुने कहा होगा "लिखना हो तो लिखो," इतना ही।

(४) श्रीमन्नारायणना शा खबर छे ? अहीं छे खरा के बीजे क्याय गया छे। में परम दिवसे एमने काम सोपेलु तेनो कशो जवाब आव्यो नथी।

(५) पू. जानकीबेन पासे गायनु घी काई स्टॉकमा छे के ? अमे पजाबथी मगावीए छीए ते आव्यु नथी अने हाल घी विनाज चलावीए छीए। थोडु घणु मळे खरु ?

लि. सेवक

: २५५ :

मगनवाडी, वर्धा,
२९–७–३६

प्रिय मु जमनालालजी,

हु सवारे तमारी साथे वात करवाना इरादाथी आव्यो, पण तमे तो नागपुर गयेला। बापुजीनी पासे पेली बाबतमा परवानगी लई आव्यो छु। एने विषे केटलीक सूचना बापुए करी छे ते तमने मळीश त्यारे करीश। दरम्यान खबर ए आपवानी के तमारा महेमान राजकुमारी काले सवारे ७ वागे ग्राड ट्रकमा आवे छे। आपणे काले स्टेशन उपर मळशु। माराथी सवारना पहोरमा सेगाम तो नज जवाय। राजकुमारी ज्यारे जशे त्यारे जईश। स्टेशनथी सीधो हु तमारे त्या आवीश एटले ते वेळा बधी वातो करीश।

लि सेवक

: २५६ :

सेगाव,
३१–८–३६

चि जमनालाल,

तमारी साथे त्रण वात करवानु भुलाई गयु।

बाबाराव हरकरेनु शु थयु ? मने लागे छे के तेने दर मासे रू २५ मोकलवा सारु छे।

तेना भाईनी लायकात वधारेनी होय तो तेने वधारे आपवु घटे।

शकरराव टीकेकरनी स्थिति दयामणी लागे छे। तेनी उपर १५००नो समन्स छे ने ते बेकार छे। तेने सारु कई करवानु विचार्यु छे।

आ बधी बाबतमा तमे वधारे विचारी शको।

: २५७ :

(मिला १७-२-३७)

प्रिय मु जमनालालजी,

मने माफ करजो। आ बाईने बेकमा जवु हतु एटले बेंकमा लाव्यो अने पछी एटलु बधु मोडु थयु के माराथी त्या न आवी शकायु। नागपुर जवानु एटले मारे मारी बधी टपाल पूरी करवी। त्या आववा जवामा घणो वखत जाय।

पेली बाईने बापु जोवा इच्छे छे। एने विषे करेली सूचना हु आपने मळीश त्यारे कहीश।

हु तमने बे वागे मळीश ते वेळा तैयार थई रहेजो। मोटर मोडी आवशे एम हु धारतो हतो पण ए तो अत्यारनी आवी गई छे। एटले आपणे बे वागे सेगाव जशु, अने पाछा फरता नालवाडी सुधी तमे आवजो। बापु नालवाडी जवाना छे।

लि सेवक

: २५८ :

(मिला १९-२-३७)

मुरब्बी जमनालालजी,

हमणा आपने मळवु अशक्य थई पड्यु छे। ए स्वाभाविकज छे। ए तो इलेक्शन पूरा थाय त्यारेज मळाय ना? मिसिस नाइडुने मे कह्यु हतु के तमे छूटा होत तो अवश्य मळत, पण बनी शके एम न हतु। एणे सदेशो आपेलो के डा महोदयने २५० रूपीआ मदद मळे तो एने जीतवामा अडचण न आवे। आपने आवीने आ वात कहेवी हती पण ज्यारे तमारा घर आगळथी जवानु थाय त्यारे आप न हो।

श्रीमती मुथुलक्ष्मी रेड्डी बापुने मळवा आववानी छे। एनी तारीख नक्की नथी। पण बापुए कह्यु छे के एने तमारे त्याज उतारवानी छे। तमारी गेरहाजरीमा उतारु ना ?

१६ मी तारीखे साझे मिसिस फ्युलोप मीलर करीने एक बाई आवे छे। एना पतिए बापुने विषे ओस्ट्रीअन भाषामा सरस पुस्तक लख्यु छे, अने तेनु भाषान्तर अंग्रेजीमा 'गाधी एन्ड लेनीन' नामना पुस्तकमा थयु छे। ए बापुने मळवा आववानी छे। एने पण तमारे त्या उतारवानी छे। त्यारे तमे हशो के ?

लि सेवक

: २५९ :

ALLAHABAD,
30-4-37

SETH JAMNALALJI,
WARDHA

Regret inability personally bless bride bridegroom. Please apologise Rameshwardas[1] Reaching Saturday noon. Inform Maganwadi Shegaon

—*Bapu*

: २६० :

तीथल,
वलसाड थईने,
१५-५-३७

प्रिय मुरब्बी जमनालालजी,

अही पू बापुने खूब शाति अने आराम मळे छे। आखो दिवस सुदर हवा वाया करे छे।

१. धूलियाके रामेश्वरदास पोद्दारके लड़के श्रीराम व जानकीदेवी बजाजके भाई पुरुषोत्तमदास जाजोदियाकी लड़की लक्ष्मीके विवाह पर।

आ साथे पेला मूळचद पारेखना पुत्रनी श्री दालमीआने करेली अरजी मोकलु छु। ए तमारी मारफतेज मोकलवा मागे छे। एने विषे घटतु लखशोजी। ए वहु लायक युवक छे। ए विषे शका नथी। सारी first class career छे।

लि सेवक

केसनु[1] शु थयु? पूरो थयो के नही? तमारी तवीअत मजामा हशे।

: २६१ :

तीथल,
वलसाड थईने,
२८-५-३७

प्रिय जमनालालजी,

एडरूझनो कमलनयन विषे आवेलो कागळ आ साथे मोकलु छु। तमे शु धारो छो?

वर्धामा प्रेस करवानो विचार हतो तेनु शु थयु? वापु पूछे छे के ए सवधी तमे तपास करवाना हता ते करेली खरी के? आजकाल कागळो मोघा थया छे एटले हरिजन सेवक अने हरिजन वनेनी छपाई मोघी थई छे। हवे ए जो आपणे वर्धा लावीए तो काई सस्तु पडे के केम ते पण जोवानु छे।

हवे तो अमे १० मी तारीख सुधी अही रहेवाना एटले तमे अही एक दिवस आवी जाओ तो सारु एम वापुजी लखावे छे। काले साजे राजा अही आवे छे। त्रण चार दिवस तो रहेशे एम मानीए। ए पछी खेर आवशे। तमे सौ मजामा हशो। तमारे पण १४ मीए तो केसने माटे वर्धा पहोचवानु रहेशेज। अमे १० मीए नीकळी १२ मीए वर्धा पहोचशु। जो तमने मुवई वे त्रण दिवस काम न होय तो ७ मी ८ मीना अरसामा आवो अने आपणे सौ साथे वर्धा जईए। उत्तर लखशो।

लि सेवक

१. 'चित्रा' और 'सावधान' दो मराठी पत्रोंपर जमनालालजीने मानहानीका मुकदमा चलाया था। उस समय वे काग्रेसके खजाची थे और ये पत्र उन पर ऐसे झूठे और निराधार आरोप लगाते थे कि जिससे उनकी साखको आच आती थी। मुकदमेमें वकील, मुनीम आदि कोई भी असत्यतासे काम न ले इसकी वे पूरी सावधानी रखते थे। अतमें मुकदमेमे उनकी जीत हुई और मुलाजिमोको ६-६ माहकी सजा हुई।

: २६२ :

तीथल,
६–६–३७

चि जमनालाल,

* * बाबत मारी मति मुझाएली छे। एनी साथे पत्रव्यवहार चाली रह्यो छे । पण अवघडी तो आम लखवानु मन थई जाय छे। जेम घणा भिक्षुक तमारी पासे आवे छे तेने आपता न आपता मारा अभिप्रायनी जरूर नथी रहेती तेम आमाय गणो ने तमने ठीक लागे तेम करो। मारो अभिप्राय जोईएज तो तमारे राह जोवी जोशे।

तमे आराम लई शकता हशो। खूब फरता हशो। खावामा परेजी पाळता हशो।

१० मी सवारे के ९ मी साजे अहींथी रवाना थवानु छे। आ रस्तेथी जाओ तो साथे जईए, पण जेम सवड पडे तेम करजो।

: २६३ :

(?–६–३७)

चि जमनालाल,

* * ने खर्च आपवानु कह्यु होय तो १००० तारथी मोकलो। सघ तरफथी जवाब नीचे प्रमाणे।

Wiring thousand cover travelling. Regret inability advance loan

तमे उछीना देवानु आश्वासन नथी आप्यु, एम हु समज्यो छु। एटले उछीना आपवानी जरूर हु तो नथी जोतो।

शकरनो तमारी उपरनो कागळ पाछो मोकलु छु। एने चोपडीओ मोकलवी सारुज छे।

बापुना आशीर्वाद

हरजीवननो पण पाछो मोकलु छु।

: २६४ :

(सेगाव)
१५-६-३७

चि जमनालाल,

यदि खानसाहेब राजी है तो जायँ। बियानीको तार देना कि खान-साहेबसे व्याख्यान न करावे। खानसाहेब जायँगे तो महर और लालीका क्या? कल यहा आनेवाले थे।

कमल पहोच गया सो अच्छा हूआ।

: २६५ :

(सेगाव)
१९-६-३७
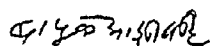
चि जमनालाल,

यह तार भेज दो।[1]

Khansaheb has no independent zest If need his presence urgent come and discuss with him

—Gandhi

यदि यह उत्तर उचित माना जाय तो भेजो। मै हुकम निकालकर भेजना नही चाहता हू।

बापुके आशीर्वाद

: २६६ :
अ

सेगाव, वर्धा,
१७-९-३७

चि जमनालाल,

उद्योग सघना एटला बधा सभ्यो अहिं आव्या एथी हु काले शरमायो अने दुखी पण थयो। आवा कामने सारु मारे त्या आववु जोईए। एथीज खर्च विगेरे बधु बचे छे। मारा शरीरने तो एटली

१ यह तार विदर्भ काग्रेस कमिटीके अध्यक्ष श्री ब्रिजलाल बियाणीके लिए था।

हरफर करवाथी कशु नुकसान थाय एम नथी, पण त्या न आववाथी अने सौने अहि घसडवाथी मने तो वहु धक्को पहोचे । एटले मने मोटर अथवा रेगी जे कई होय ते वखतसर पहोचाडजो जेथी हु त्या मोडामा मोडो १।। वागे पहोची शकु । वधाने वगलेज वोलावजो । ने जो वगलामा न थई शके तो सुखेथी मगनवाडीमा लई जजो । चर्खा सघनु जे सीधु काम होय अथवा अटपटु होय ते बनी शके तेटलु तमेज आटोपी लेजो । जेथी आपणे अत्यत अगत्यनीज वातो करी शकीए ।

: २६७ :

(सेगाव,
१७–९–१९३७)

प्रिय जमनालालजी,

वापुको तो आना ही पडेगा क्योकि दोनो सघके सदस्योको Ministers से लेनेके कामके वारेमें उन्हे कुछ कहना है । इस कामके लिये तो वापुको आना ही चाहिये।

ग्रा उ सघके सब सदस्य वहा पहुच जायगे । आप पू वापुको १।। वजे कार भेजे।

आपका

: २६८ :

मगनवाडी, वर्धा,
११–१०–३७

प्रिय मु जमनालालजी,

एटला कामोमा गुचायो छु के कागळ नथी लखी शक्यो। पण तमारा तरफथी करवानु वधु करु छु । श्रीमनने रोज वे वार जोउ छु । केटलीक भूलो थती अटकाववानो प्रयत्न करु छु, काले वापुने एने जोवाने माटे अने खास करीने जानकीव्हेनने दृढता राखवाने माटे अने अधीरा न थवाने समजाववाने माटे लाववानो छु । महेमानोनु पण जोई रह्यो छु । वहादुरजीनु वरोवर जोई लईश । निश्चित रहेशो।

कोन्फरन्स' बंध करावबानो मारो अनेक कारणे विचार हतो। एक तो श्रीमननी मांदगी अने तमारी चिंता। बीजु बापुने कलकत्ता पहेला थोडो आराम मळे, कारण आ परिषदमा ठीक वखत अने श्रमनो खर्च थशे। पण आर्यनायकमे न मान्यु अने कह्यु "जवाबदारी बधी मारी।" पण हजी एने समजावी रह्यो छु। काले जे थाय ते खरु। तमे श्रीमननी के महेमानोनी कशीज चिंता न करशो। श्रीमननी पासे घणो समय आपवानो प्रयत्न करीश। कशुज complication नथी अने चितानु कारण नथी।

आ कागळ उतावळमा स्टेशन उपर लखी रह्यो छु। आवनारा जनारा माणसोज एटलो बधो वखत लई रहे छे के जराय नवराश रहेती नथी।

लि स्ने

: २६९ :
अ

सेगाव, वर्धा,
१२–१०–३७

चि जमनालालजी,

तमारो कागळ मळ्यो।

बहादूरजी भले आवे।

श्रीमनना तावने विषे में जाण्यु छे। एनो ताव खराब छे। हठीलो लागे छे। आजे तेने जोई आववानी आशा सेवी रह्यो छु। आ तो सवारनी प्रार्थना पछी लखावी रह्यो छु। श्रीमननी मांदगीने लीधे केळवणी परिषद' मुल्तवी राखवानी सूचना मारी पासे महादेवे अने किशोरलाले मूकी। मने ते गळे न उतरी। सो माणसोनो समावेश करवानी जवाबदारी तमारी उपर नज होवी जोईए। पैसा तमारा हशे ए मानी लउ छु। एनी मने चिंता नथी, पण कारभारना बोजा तमारी मदद विना बीजा माणसो न उचकी शके तो आवा काम नज करवा जोईए एम हु मानु छु। अने एटली शक्ति बीजाओमा आवी होय तोज कामो दीपे। तेथी में

१ शिक्षा परिषद, जिसमेंसे 'बुनियादी तालीम' का जन्म हुआ।

आर्यनायकमने कहेवडाव्यु छे के एनी पोतानी श्रद्धा अने आवडत होय तोज परिषद थवा दे। नहि तो ए भले मुल्तवी रहे। आ विचारज श्रीमननो हतो, मे आधार श्रीमननी उपरज राख्यो हतो। अने ए तदुरस्त हतो त्या लगी हु निश्चित हतो। एने विषे मे मानेलु के ए तो मादो पडेज नहि। एटले ज्यारे एनी मादगीनु साभळ्यु त्यारे हु व्याकुळ बन्यो। श्रीमननी तमारी शोध अत्यत अजायवी भरेली मे मानी छे। एनामा विद्वत्ता, पीढता ने नम्रतानु असाधारण मिश्रण छे। एनी हाजरी विनानी परिषद मने अळखामणी लागशे, पण आदरेला काम अधूरा न मूकाय ए न्याये नायकमनी श्रद्धा न खूटे त्या लगी ने तमारो विरोध न होय तो परिषद भरवानो मे आग्रह राख्यो छे। तमे विरोध करो ते स्थाने होय एम हु समजु। केम के तमारी व्यवहारबुद्धिने विषे मने श्रद्धा छे। तमारा विना, तमारा वगलाना उपयोग विना परिषदनु काम सागोपाग उकेली शकाय के नहि एनु विशेष ज्ञान तमनेज होय। एथीज जो तमे इच्छो के परिषद मुल्तवी राखवी जोईए तो मने तुरत तारथी खबर देजो। अने परिषद मुल्तवी राखीश।

तमारी तबियत तो सारी हशे। सावित्रीनु चाली रह्यु हशे।

: २७० :

वर्धा,
१२–१०–३७

प्रिय मु जमनालालजी,

बापु श्रीमन्ने जोई गया। वहु खुश छे, अने तावनु जोर पण ओछु छे। चिता करवा जेवु कशुज नथी। तमे शुक्रवारे तो आववाना छोज। आर्यनायकमनी साथे वातो करी तेने तो बापुए कह्यु के "जमनालालजी उपर जरा पण बोजो नाख्या विना वधा महेमानोनो भार उठाववाने तैयार हो तो राखो।" एणे कह्यु के "हु भार उठावीश।" छता बापुए तमने लखवु तो योग्यज धार्यु। एटले आ कागळ जाय छे।

वहादुरजीनु हु जोई लईश।

लि सेवक

: २७१ :

सेगाव,
१३–१०–३७

चि जानकीवहेन,

आचार्य रामदेवनो मारी उपर कागळ छे के तमारे देहरादून जवानो स्वीकार करीज लेवो। तारीख मारी पासे नथी। श्रीमन तो सारो थईज जशे। जो न जई शको तो तेने तार करजो। जई शको तो सारु छेज। पतिदेवने पूछवानी जरूर खरी के ?

: २७२ :

CALCUTTA,
2-11-37

JAMNALAL BAJAJ,
WARDHA

Temporary setback Bapus health necessitates stay here week atleast Frontier visit indefinitely postponed No anxiety. Inform Segaon

—*Mahadev*

: २७३ :

मगनवाडी, वर्धा,
६–१२–३७

प्रिय मु जमनालालजी,

आ माणस वनारसथी चाल्यो आवे छे। वगाळनी वीरामपुर जेलमा interned हतो। तेने एक मास उपर छोडीने extern कर्यो। त्या एनी पासे कशु खावापीवानु पण साधन (न) मळे। Home Minister ने अनेक अर्जी करी छे पण एने कोईए दाद नथी दीधी एटले मोहनलाल सक्सेनाए एने अही धकेल्यो छे। हवे मारे वगाळना Home Minister साथे पत्रव्यवहार करवो रह्यो। अने एने बगाळमा रहेवानी परवानगी मेळवी देवी रही। त्या सुधी एने पडी रहेवा दो, एने कईक काम सोपशो। माणस तो ठीक लागे छे। एने विषे लखवाने माटे मारे बापुनी जरा सूचना लेवी रही। मोटर मळी शके के ? जो मोटर न मळे तो साथेनी चिठ्ठी बापुने कोई साईकलवाळा साथे मोकली आपशो ?

बीजी कई सूचना होय तो आपशो ? बापुनु मुंबई जवानु जराय मन नथी लागतु। हरि इच्छा। एमनी मरजी विरुद्ध काई करवामा सार हशे ? पण जे थयु ते थयु।

लि सेवक

२७४:

जूहु,
२३-१२-३७

प्रिय मुरब्बी जमनालालजी,

काले रात्रे दाक्तरो आव्या हता। एमणे हृदयना धबकाराना फोटोग्राफ लीधा। ब्लड प्रेसर जे फरवा जता पहेला १६० हतु ते १९० थयेलु हतु। आजे सवारे १८८/१०८ हतु। आनो अर्थ ए थयो के सर्पगधानी असर पण तात्कालिक छे, कायमनी नथी। दाक्तरो पण मुझाया तो छेज, पण बे त्रण दिवस जोया पछी सर्पगधानो डोझ वधारवो के नहि तेनो ए लोको विचार करशे।

बाकी सपूर्ण शाति छे। कोई आव्या गया नथी। पट्टणी साहेबनो कागळ हतो के "रजा विना मळवा नहि आवु।" हु एने ताज महाल होटेलमा मळी आवीश एटले सतोष थशे। माणसोने आववा देवामा हु तमारा जेटलीज कडकाई राखु छु।

प्यारेलाल तो शात लागे छे। मने लागे छे के काळे करीने घा रुझाई जशे, अने आ तावणीमाथी नीकळीने ए वधारे शात अने वधारे दृढ मनना थशे।

आवती काले साजे पागनीस भजन सभळाववा आवे छे। तमे आवशो त्यारे पाछा एक वार बोलावशु।

लि स्ने

: २७५ :

मगनवाडी,
वर्धा,
२७–१२–३७

प्रिय मुरब्बी जमनालालजी,

तमारो कागळ मळेलो। हु मानतो हतो के तमने सुशीला तो नियमित लखती हशेज। एटले मे न लखेलु।

बापुनी तबीयत तो तमे गया त्यारे हती तेवीज छे। १४० सुधी उतरे पण २०० सुधी चढे। काले डाक्तर गिल्डर भरूचा डाक्तरने लाव्या हता। डा पुरुषोत्तम पटेल पण हता। ए लोकोए बापुने दवा आपवानो निश्चय कर्यो। बापुए 'हा' तो पाडी, पण पछी आजे सवारे पाछी ना पाडी। अने सर्पगधा शरु करी। हवे ए चालु राखशे।

प्यारेलालनु तो सारु चाले छे। साव शात छे। भाई व्हेन वातो खूब करे छे खरा पण तेनी मने शी रीते खबर पडे? पण हाल तो बधु कुशळ लागे छे, अने कशोज डर नथी। एटले तमे चिंता मुक्त रहेशो।

लि स्ने

: २७६ :

७–३–३८

पूज्य बापूजी,

सुभाषबाबू कल फिर आपसे मिलने आना चाहते है। आप अपना समय लिख भेजे। मै भी परसो उनके साथ टाटानगर तक जाऊगा। वहासे राची चला जाऊगा।

सुभाषबावू कल एक वजे या तत्पश्चात जब चाहे आवे। साथका तार भेज दिजीये। पैसे महादेवसे लिजीये।

बापु

Gladys Owen,
Vinona Bungalow,
Sholapur

Come anyday before twelfth Love. —Bapu

: २७७ :

वर्धा,
१०–३–३८

प्रिय मुरब्बी जमनालालजी,

बाळकोबायी हवे एमनी कोटडीमा रही शकाय एम नथी एम बापुने लागे छे । कारण गरमी असह्य छे । अने एने जूहु जवु नथी एटले तमारी रजा होय तो तें हमणा तमारा बाळा घरमा सेगावमा आवी जाय । जेवी रीते प्रथम तेओ रहेता हता । आमा तमने बाधो तो न होवो जोईए । पण तमने पूछावी लेवु सारु एटले पूछाव्यु छे । जो आ बाबत तार करवो घटे तो तार करशो । एटले बाळकोबाने तमारा घरमा लई जवामा आवशे ।

लि सेवक

: २७८ :

सेगाव,
२३–४–३८

चि जमनालाल,

लीलावती मुनशीने ना लखी छे । २८ मीए सवारे मारी राह जो जो । खानसाहेबने तार कर्यो ते जोयो हशे । आ साथे वल्लभभाईनो कागळ छे । ते वाचजो ने तेने देजो । त्या न होय तो ज्या होय त्या पोस्ट करजो । स्वस्थ थई जजो । तमने मोकलेला भापणमा[1] जे फेरफार करवा होय ते करजो ।

: २७९ :

PESHAWAR,
3–5–38

SETH JAMNALAL BAJAJ,
JAIPUR

Forgot tell you Vallabhbhai cannot go Jaipur. He has to go Mysore Health well climate excellent but tour programme cancelled as too heavy.

—*Bapu*

१. जयपुर राज्य प्रजा मडलका अध्यक्षीय भाषण जिसका मसविदा जमनालालजीके लिए गाधीजीने खुद बनाया था ।

: २८० :

BOMBAY,
12-5-38

JAMNALAL BAJAJ,
SIKAR

Hope your appeal to Sikar people will be listened. You should stay there till required.

—*Bapu*

: २८१ :

(सेगाव, सोमवार,
२३–५–३८, ११॥ वजे)

कुछ कहनेका नही है। जाजूजीको भेजना अनावश्यक है। वहां जाकर वैठना है। जव कुछ करनेका मौका मिले तव हिस्सा लेना। अन्यथा मौन धारण करना। वहा जानेका धर्म है इसमे मुझे सदेह नही है, अगर गदकी दूर नहि हो सकती है तो प्रातिक समितिको छोडना होगा।[1]

: २८२ :

२३–५–३८

चि जमनालाल,

गोसीवहेननो तार छे। तेनी मा मरी गया। में तार दीधो छे। तमे तार के कागळ मोकलजो। राजेंद्रवावु मजामा हशे। टेम्परेचर कोई आवतु होय तो मोकलजो।

: २८३ :
अ

सेगाव, वर्धा,
११–६–३८

चि जमनालाल,

महादेव उपरनो तमारो कागळ जोयो। तमारी व्यथा समजी शकु छु। मारु पगलु ए व्यथा दूर करवामा थोडे घणे अशे पण मददगार

१. मौनवार होनेसे गाधीजीने जमनालालजीके प्रश्नोंका जवाव लिखकर दिया था।

थाओ। मे छापाने सारु एक अंग्रेजी लेख घडी तो काढ्यो छे हजी छपाव्यो नथी। तमारी सूचना विचारवा लायक छेज। मारा स्वभावने अनुकूळ बीजी वस्तु छे। एवी वस्तु हु ज्यारे जाहेर करु छु त्यारे मने वधारे शांति मळे छे। तमारा कागळमा रहेलो भय व्यावहारिक वस्तु छे। विचारपूर्वक अने धर्म समजीने एक पगलु हु भरु तो तेने वळगी रहेवानी शक्ति हु खोई बेठो छु एम नथी लागतु। छता उतावळे नही छापु। ए मुलतवी रहेशे तोये जेओ गुजराती नथी समजता तेमने सारु तो गुजरातीना जेवु निवेदन अंग्रेजीमा होवुज जोईए।

सावित्रीने पुत्र जन्मवाना खबर काले गोर्धनदास तरफथी मळी गया। लक्ष्मणप्रसादने एक पत्तु लखी मोकलु छु।

: २८४ :
अ

मगनवाडी (वर्धा),
१२-६-३८

प्रिय जमनालालजी,

तमारो कागळ बापुजीने वचाव्यो हतो। तेमनो जवाब आ साथे छे। हवे तमने अहींनी परिस्थितिथी वाकेफ करु। बापुना आ ठरावनो¹

१. "जब पू. बापूजी शामको घूमनेके लिए जाया करते थे तब अनेक लोग उनके साथ जाते थे। उनमेंसे किसी न किसीके कंधे पर हाथ रखकर बापूजी चलते थे। इसमें लडकियोंकी होड चलती थी कि 'आज मैं बापूजीकी लकडी बनूंगी' 'आज मैं बनूंगी'। वर्धाके लोगोंमें एक बार इसकी चर्चा होने लगी और एक दो मित्रोंने यह भी कहा कि बापूजीको देखकर और लोग भी इसका अनुकरण करनेकी संभावना है। इस लिए बापूजीने अपना यह रिवाज छोड देनेका ठराव किया और इस बारेमें अपने साप्ताहिकके लिए लेख भी लिखा।

हममेंसे चंद लोगोंने बापूजीके इस ठरावका विरोध किया। हमारी दलील यह थी कि बापूजीके लिए जो चीज बिलकुल स्वाभाविक थी उसे छोडनेसे ही सारा वायुमंडल कृत्रिम हो जायेगा। बापूजीका असाधारण अधिकार सब जानते हैं। उनका अनुकरण करनेकी कोई हिम्मत नहीं करेगा। और जैसा कि महादेवभाईने लिखा है, हम ऐसे उदाहरण जानते थे कि बापूजीके पवित्र व वात्सल्यपूर्ण स्पर्शसे कई बहनोंको आश्वासन व शान्ति मिलती थी। बापूजीके ठरावका विरोध हुआ यह ठीक ही हुआ, किन्तु उनको इस विषय पर अपने विचार विस्तारसे लिखनेका मौका नहीं दिया गया यह अच्छा नहीं हुआ।"

—काका कालेलकर

मीराबेन सिवाय बधा बैराओए सखत विरोध कर्यो छे। राजकुमारीनो विरोध बधारेमा बधारे सखत छे। पुरुषोमा मुरेंद्रजी, बलवतसिहजी जेवाए एनो सत्कार कर्यो छे। विरोधीओमा मारा जेवा छे। मे तो अनेक कारणे विरोध करीने नीचे प्रमाणे मूचना करी हती।

१ जो बीजा जे छट न भोगवे ते पोते पण न भोगवी शके ए बापुनो सिद्धात तत्वत स्वीकारीए तो बापुए पोताने माटे तेमज पोताना तमाम साथीओ माटे बहेनोना तमाम खानगी अथवा एकातना स्पर्शो निषिद्ध गणवा।

२ जाहेरमा पण दरेक अनावश्यक स्पर्श निषिद्ध गणवो।

आनी सामे बापुनु कहेवु एवु छे के नैष्ठिक ब्रह्मचारी सिवायना बधा माटे आ बे नियमो पर्याप्त छे पण जेने नैष्ठिक ब्रह्मचर्य पाळवु होय तेने माटे स्पर्श मात्र वर्ज्य होवो जोईए। हु आ वस्तु स्वीकारतो नथी। पण ए क्षेत्र मारा जेवाना अधिकारथी बहार छे। हु तो एटलु समजु छु खरो के, अनेक बहेनो बापुना स्पर्शथी पवित्र थई छे। अने पोताना अनेक आधि व्याधिमा आश्वासन मेळवी शकी छे। ए सेवाथी बापुए बहेनोने वचित नही राखवी जोईए।

गये अठवाडिये आ ठरावने समजावनारो लाबो लेख हरिजनने माटे लखाव्यो हतो, ते में सबळ कारणो बतावी रोक्यो। आ आठवाडिये पण रोकवानी पूरी उम्मेद छे। पछी तो जे थाय ते खरु।

तमारा कागळथी हु जरा गभरायो। बापु अमुक करे तो आपणो मार्ग सरळ थाय ए कहेवु मने जरा बसमु लाग्यु। जेनो जेटलो अधिकार तेवो तेनो मार्ग। मने लागे छे के में जे उपर मर्यादाओ वर्णवी एटली आपणे सहु साथीओ स्वीकारीने बापुने निश्चित करीए तो बापुने कोई नवो ठराव करवापणु रहेज नही। आ वस्तुनी जाहेर चर्चामा तो हमणा हु लाभ करता हानि बधारे जोउ छु। बधू शु लखु ? प्यारेलाल, सुशीला बे दिवस थया आव्या छे। सुशीलानी सेवा तो निषिद्ध नथी गणी। पण ए बीजी बहेनोने खटके छे। अमे शु एना करता ओछी पवित्र छीए एम ए लोको पूछे छे। ब्लड प्रेसर आवा ठडकना दिवसोमा पण १८०-१०८ जेटलु रहे छे। ए चिंताकारक तो कहेवायज। पण आवा विषयोनी चर्चामा ज्या २४ कलाक जता होय त्या ब्लड प्रेसर ओछु केम होई शके?

आपका

आ अक्षर कोना छे,[1] कहेशो ? केटलाक दिवस थया ओम (उमा) मारी सेक्रेटरी बनी छे। मारी पासे कागळोनो ढगलो एटलो बधो थयो के में एनी पासे मागणी करी। ए आववा लागी अने एने अने मने बन्नेने लाभ छे। ए गुजराती, मराठी, हिंदी, त्रणे भाषामा तो घणु लखी शके छे, एटले ए त्रण भाषाना कागळो एने लखावु छु। अंग्रेजी बहु काचु छे, ते ए बाबलानी सायेज बेसीने भणे छे। रोज सवार साज बे कलाक आवे छे। तमारी रजा विना एनी सेवा लेवा माडी, ए माफ करशो ना ?

: २८५ :

४(?)–७–३८

चि जमनालाल,

आज बालकृष्णने इस्पीताल लई जवा मारु मोटर ९ वागे आववानी हती। न नीकळी होय ने मोटर मोकली शकाय तो मोकलजो। इस्पीताल पण चिठ्ठी जाय छे। जो एओने हजु वखत हशे तोज मोटर जोईए।

: २८६ :

३०–७–३८

चि जमनालाल,

तमारी अही रहेवा आववानी इच्छा छे एम तमे अही कोईने कही गया छो। आवो तो बधु तैयारज छे। पण जो न आववाना हो तो मारो विचार किशोरलालने थोडो समय अही राखवानो छे। पण तेनो अर्थ मुद्दल ए नथी के तमारे आवता रोकाई जवु। तमे नज आवी शको तोज किशोरलाल आवे। महर्षि रमणनी पासे जेम बने तेम वहेला जई आवो एम मारी इच्छा छे।

बापुना आशीर्वाद

१ यह पत्र उमासे लिखवाया था। बादमें नोंध महादेवभाईने खुद लिखी है।

: २८७ :

श्रीहरि

बजाजवाडी,
वर्धा,
ता. १८–१०–३८

पू बापूजी,

श्री द्विवेदीका आपके नामका पत्र देखा। मेरे पास भी उनका पत्र आया है। ग्वालियर राजमे इन्होने कुछ अर्मेसे ग्राम सेवाका कार्य प्रारभ किया है। बीच बीचमे मुझे इनके कामकी रिपोर्ट मिली है। श्री हरिभाऊजी इनके कामके बारेमे प्रत्यक्ष रूपसे अधिक जानते है। आप इन्हे सदेश या आशीर्वाद भेजना चाहे तो कोई खास आपत्ति नही है।

आप आपका प्रोग्राम लिख भिजावे। यहा किस तारीखको पहुचेंगे? श्री भणसालीजीकी व्यवस्था ठीक है। आप चिन्ता न रखें। डॉ नर्वदाप्रसाद पूरा ख्याल रखते है।

जमनालाल बजाज

(नकल परसे लिया गया)

: २८८ :

मनोरविला,
सिमला वेस्ट,
२२–१०–३८

प्रिय मुरव्वी जमनालालजी,

मै तो यहा आ पडा हू। स्वास्थ्य आस्ते आस्ते सुधर रहा है। पूर्वकी शक्ति आनेमे काफी देर लगेगी, परतु अधीर होनेसे थोडा लाभ है? राजकुमारीजीके प्रेम और सेवाकी तो मै क्या बात करु? ऐसे प्रेम और सेवाके अधिकारी होनेके लिए दूसरा जन्म लेना पडेगा।

आपका स्वास्थ्य भी अच्छा नही है ऐसा मीराबहनसे सुना है। आपको भी आरामकी बहुत आवश्यकता है। पर आप ऐसे बडे आदमीको कौन कहे? आप कही चले जाय तो अच्छा होगा। यहा आवेगे? यहा ठडी तो काफी है, परतु मै बरदास्त कर सकता हू। आप नासिक

या और कोई स्थान जाय तो शायद हम भी शामिल हो जाय। क्योंकि मुझे अधिक आराम लेना पडेगा और यहा तो ९ नवेबरके बाद नहीं रहना है। बापुका दौरा ९ को पूरा होता है। परन्तु बापु फ्रंटीअर कब छोडेंगे नही जानता हू। उनका फ्रंटीअर छोडनेका इरादा बहुत कम है।

नये सालके मेरे, दुर्गाके और बाबलाके आपको प्रणाम और सबको प्यार।

आपका

: २८९ :

22-10-38

MAHATMA GANDHI,
KOHAT

Mahodaya met Dr David Accordingly gold treatment continues Bhansali satisfactory Balkoba slowly progressing

—*Jamnalal*

(नकल परसे लिया गया)

: २९० :

(अक्टूबर ३८)

प्रिय श्री महादेवभाई,

आपका ता २२–१०–३८ का पत्र मिला। आपके स्वास्थ्यकी खबर मैं इधर उधरसे निकाल लिया करता हू। बहन राजकुमारी-जीकी सेवाके बारेमे जो आपने लिखा है वह पढकर सुख मिला। उनकी सेवा, त्यागवृत्ति तथा पू बापूजीके प्रति भक्ति देखकर मेरे जैसे शुष्क आदमीके मनमें भी उनके प्रति पूज्य भाव व आदर रहता है। मेरी इच्छा उनके साथमें रहनेकी हुआ करती है, परन्तु अभीतक मौका नही मिला।

मेरे स्वास्थ्यके बारेमे आपने पूछा, तो मुझे तो शारीरिक आरा-मसे भी मानसिक आरामकी ज्यादा जरूरत है। इस लिए मैं अपनी जवाबदारी कम करनेकी कोशीश कर रहा हू। पू बापूजी तो मुझे मदद कर रहे है।

आगेका प्रोग्राम आपके तथा पू बापूजीके यहा आनेपर ही बना-नेकी ोशिश करेंगे।

आपके स्वास्थ्यके समाचार तथा प्रोग्राम चि बाबलाके जरिए लिखवाना।

श्री राजकुमारीबेन तथा दुर्गाबेनको प्रणाम कहना। आपके साथ कही रहनेको मिलेगा तो खुशी होगी।

जमनालाल बजाज

(नकल परसे लिया गया)

: २९१ :

श्रीहरि

पौनार, वर्धा,
का शुक्ला १२-९५,
४-११-३८

पूज्य बापूजी,

आज मिति व तारीखके हिसाबसे मुझे ४९ वर्ष पूरे हुए है। पचासवा वर्ष चालू हुआ है। आपका आशीर्वाद तो सदैव ही रहता है, परतु मै जब विचार करता हू तो मुझे इन दो अढाई वर्षोमे ऐसा साफ दिखाई देता है कि मै आपके आशीर्वादका पात्र नही हू। मेरी कमजो-रियोका जब मै विचार करता हू तब तो इन वर्षोमें खासकर छोटे-लालजीकी घटनाके बाद मेरे मनमे आत्महत्याके भी विचार आये, जिसे मै कायरता व पाप समझता आ रहा था, बुद्धिसे तो अभी भी समझता हू। मुझे दुख इस बातका विशेष रहता है कि मेरी उन्नतिके बदले अवनति विशेष होती दिखाई दे रही है।

इसके कई कारण हो सकते है, परतु उन सबकी जिम्मेवारी तो मेरी ही है। देहलीके पहले तक तो विचारोका जोर मेरे मनमे चलता रहा। एक तो मै सब सार्वजनिक कामोसे, अगर सभव हो तो खानगी

कामसे भी, अलग हो जाऊ। अगर यह संभव न हो तो ज्यादह जिम्मे-वारीका काम लेकर उसमे रात दिन फसा रहू। परतु अव तो निकलनेमें ही अधिक समाधान मिलना सभव है। मेरी कमजोरी मुझे इस प्रकार दिखाई दे रही है।

अहिंसा व सत्यका आचरण कम होता दिखाई दे रहा है। डर है कि कही इस परसे श्रद्धा भी कम न हो जावे। इसी कारण असहन-शीलता भी वढ रही है। क्रोधकी मात्रा भी वढती जा रही है। काम-वासना वढती हुई मालूम हो रही है। लोभकी मात्रा भी। इतने सव दुर्गुण या कमजोरी जो मनुष्य अपनेमे वढती हुई देख रहा है फिर उसे जीनेका मोह कैसे रह सकता है? याने मानसिक कमजोरीके विचार तक ही वात होती तो भी फिर प्रयत्नके लिये उत्साह रहता, परतु जव शरीरकी इन्द्रियोको भी मै कावूमे न रख पाता हूँ याने प्रत्यक्ष शरीर-से पाप होते दिखाई देता है तव लाचार वन जाता हूँ। ऊपरी हिम्मत तो वहुत ज्यादह रख रहा हू, रखनेका प्रयत्न भी करता रहूँगा। परंतु मुझे आज यह अनुभव हो रहा है कि कही यही दशा रही तो या तो पागलकी स्थिति पर पहुच जाना सभव है या पतनके मार्ग पर जानेका भय है। इस लिये आज अगर स्वाभाविक मृत्युका निमत्रण आए तो मेरी आत्मा कहती है कि मुझे समाधान, शाति मिलेगी, क्योकि मेरा भविष्य अधेरेमे दिखाई दे रहा है। मुझे आज यह विश्वास हो जावे कि मरा पतन कभी नही होवेगा, मै सत्यके मार्गमे नही हटूगा तो मुझमे फिर नवजीवन उत्साह आना सभव है। मुझे इन वर्षोमे वहुतसी मानसिक चोटें लगी है। कुटुम्बियो द्वारा, मित्रो द्वारा, जिसके लिये मेरी तैयारी न थी। अगर इसी प्रकार चोटे लगती ही रही तो पागल होनेके सिवाय दूसरा क्या होवेगा? मृत्यु तो मेरे हाथकी वात नही है। आत्महत्यामें तो कायरता व पाप दिखाई देता है। क्या करू कुछ समझमें नही आता। मेरे दिलका दर्द किसे कहू? कौन ऐसा है जो प्रेमसे मेरी मानसिक स्थितिको सुधार सकता है? मेरा भरोसा तो आप पर व विनोवा पर ही था। परतु आपसे तो अव आशा कम होती जा रही है। विनोवासे अभी आशा है। शायद कोई समाधानकारक मार्ग निकल जाए।

इन वर्षोमे मै आपके पास कई वार हृदय खोलनेके लिये आया, परतु आपकी मानसिक, शारीरिक व आसपासकी स्थितिके कारण पूरी तौरसे

खोल नही सका। इसका मेरे मनमे दुःख रहा और ऐसा लगता रहा कि मै आपको व अन्य मित्रोको धोखा तो नही दे रहा हू। क्योकि मै धोखेसे बढकर पाप या नीच कृत्य नही मानता आया। इस लिये मैने मेरी स्थिति कई मित्रोको, घरवालोको कहनेका प्रयत्न किया, परन्तु उसमें पूर्ण सत्य न रहनेके वजहसे या अन्य कई कारणोसे उसका जो परिणाम आना चाहिये था वह नही आया। अब आप कोई राजमार्ग बता सकते है। मुझे तो लगता है कि अभी तक मेरी बुद्धि काम दे रही है। मेरेमे जो जो कमजोरिया है व वे जिन कारणोसे घुसी है वह भी मालूम है, उनको निकालनेकी इच्छा भी है। यह इच्छा तीव्र बनाई जा सकती है। परन्तु मेरे पास याने मेरे साथ कोई ऐसा व्यक्ति नही है जिसमें प्रेम, सेवा व उदारता भरी हुई हो, जिसके पवित्र चरित्र व प्रेममय वातावरण या सेवासे मेरे मनको शाति मिले। क्या इस प्रकारकी बहिन या भाई आपकी निगाहमे है ? अगर निगाहमें है तो क्या उसका मेरे साथ रहकर मेरी सेवा करना सभव है ? सार्वजनिक कार्यकर्ताके पाससे काम छुडाकर उससे अपनी सेवा लेनेकी हिम्मत नही होती। मैने जिन कमजोरियोका वर्णन किया है, उसका यह अर्थ नही है कि मेरेमें पहले कमजोरिया नही थी, इन वर्षोमे ही आई है। वे पहलेसे ही थी, परन्तु मुझे लगता था कि वे जोरसे निकल रही है। परन्तु आज ऐसा नही मालूम हो रहा है, यही खास बात है।

आप कोई ऐसा मार्ग निकाल सके तो निकाले जिससे मेरी मामूली मनुष्योमे गिनती हो। लोग अधिक पवित्र व उच्च न माने तो शायद इससे भी मेरा कल्याण हो। आप मेरी इस अवस्थासे दुःखी तो होगे ही परन्तु मै क्या करू ? समझमे नही आता। मुझे तो आपको प्रणाम करनेमे भी सकोच होता है।

मेरे मनमे जिस प्रकार विचार आये आज जन्मदिनके निमित्त लिख दिये है। आप जब यहा आवेगे तब समय निकालकर जो कहना हो सो कहे, वहा तक मै विनोबासे मदद लेनेका प्रयत्न करूगा।

जमनालाल बजाज

(नकल परसे लिया गया)

मैंने यह पत्र पू विनोबा, चि राधाकृष्णको तो दिखा दिया है। जानकीदेवी व कमल आदिको फिर बता दूगा। नकल रख ली है।[1]

: २९२ :

सेगाव, वर्धा,
२१-१२-३८

चि जमनालाल,

तमारा बन्ने कागळ मळ्या हता। पेलानो अमल कर्यो हतो। बीजाने सारु आग्रह शा सारु ? जलीयावाला बाग मीटीगमा तमारी हाजरी नही होय तो चालशे। भले केशवदेवजी हाजरी आपे। वोटनी तो जरूर नही रहे। तमे तवीयत खराब छे एवो निश्चय न करी वेसता। तवीयतनें आरामज जोईए छे। ए मळे तो ठीक थई रहेशे। तमे हिंदुस्तानमा अथवा सीलोनमा थोडी मुसाफरी करो तो वस थई रहे। काम मात्रनी चिंता छोडो।

रजबअलीनो वहीवट ठीक छे के ? जानकीवहन केम छे ?

१ यह पत्र लिखनेके बाद २७-११-३८ को जमनालालजीका गाधीजीसे मिलना हुआ। तब पता चला कि उपरोक्त पत्र गाधीजीको नहीं मिला है। जमनालालजीने तब अपना हृदय मथन गाधीजीको बताया। कोई १। घटे बातें हुई। उसके बाद गाधीजी और जमनालालजीको और कामोंमें लग जानेसे बात करनेका समय नहीं मिला। २६-१२-३८ को जमनालालजी फिर गाधीजीसे मिले और अपने ४-११-३८ के पत्रकी नकल गाधीजीको दिखाई। उस दिन मौन होनेके कारण गाधीजीने अपने निम्न विचार लिख दिये :—

"काले थोडो समय आपणे वात करीये अथवा एक बे दिवस रही शकाय तो रही जाओ। तमारा दरदनु औषध मने सहेलु लागे छे। गभरावानु कई कारण नथी। तमारो विनाश तो छेज नहीं। पण तमारा दोषोनो स्वीकार हु तो करु छु। केम के मने तो एवा बधा अनुभवो थई चुक्या छे। अहीं गूच उकेलीने नवु एटलुज अत्यारे तो कहु।"

गाधीजीने चाहा कि जमनालालजी एक दो दिन ठहर जाय, पर जयपुर सरकारने जमनालालजी पर जयपुरमें प्रवेश करने पर जो पाबदी लगाई थी उसके विरोधमें वे जयपुर जाना आवश्यक समझते थे। इस कारण वे रुक न सके। अत उसी दिन (२६-१२-३८ को) गाधीजीने अपने विचार पत्र द्वारा भी विस्तारसे लिख भेजे। यह पत्र आगे दिया है।

: २९३ :
अ

सेगाव,
२६-१२-३८

चि जमनालाल,

हमणाज इग्रेजीमा शुभाषित आव्यु हतु । तेनो अर्थ आ छे । मनुष्ये पोताना दोषोनु चिंत्वन न करवु, गुणोनु करवु । केम के मनुष्य जेवु चिंत्वन करे छे एवो थाय छे । एनो अर्थ ए नथी के दोष न जोवा । जोवा तो खराज । पण तेनो विचार कर्या करी गाडा न बनवु । आवुज आपणा शास्त्रोमा मळी रहे छे। एटले तमारे आत्मविश्वास राखी निश्चय करवो के तमारे हाथे कल्याणज थवानु छे। थयु तो छेज।

तमारे अति लोभ छोडवो घटे छे । परोपकारार्थे पण खानगी व्यापार काढी नाखवो जोईए । नज नीकळे तो सखत मर्यादा बाधवी। राजद्वारी क्षेत्रमाथी नीकळी जवानो प्रयत्न करवो । जो तेमा रहेवुज घटे तो तमारी शरते रही शकाय तो केवळ सी पी ने घडवानु कार्य करवु। पण तमारु क्षेत्र पारमार्थिक व्यापार छे। तेथी तमे फरी चर्खा सघमा सर्व-शक्तिनो उपयोग करो । ए प्रवृत्ति तमारी वृद्धि, तमारी नीति, तमारी व्यापार शक्तिनो पूरो उपयोग लई शके छे। राज्यप्रकरणमा पुष्कळ गदकी आव्या करे छे। तेमा तमने सतोष मळवानो थोडोज सभव छे । चर्खा सघनी पूर्ण सफलता थाय तो सहेजे पूर्ण स्वराज मळे एम छे। आमा तमे झपलावो तो ग्राम उद्योग, अस्पृश्यता निवारण वि मा तमे थोडु घणु माथु मारी शको छो। पण ए तमारी इच्छा प्रमाणे। आ तो अतिलोभने रोकवा ने तमने पेट पूरती, मनगमती प्रवृत्ति सूचववा।

बीजी वस्तु विकार छे। ए जरा मुश्केल छे। हु जो तमने बरोबर समजी शक्यो होउ तो मने लागे छे के तमारे स्त्री परिचर्या रोकवी घटे छे। बचाय तेने जीरवी नथी शकता। आपणा मडळमा स्त्री परिचर्या करनारो घणे अशे हु एकलो छु एम कही शकाय। मारी सफलता निष्फल-तानो आक मारा मृत्यु पछी नीकळी शकशे। मारे सारु ए हजु प्रयोग रूपे छे। हु पोते सफळज थयो छु एवु छाती ठोकीने नज कही शकु। मारी झखना शुकदेवजीनी स्थितिए पहोचवानी छे। ते स्थितिथी हु घणा योजन दूर छु। जो तमने आत्मविश्वास होय तो मारे कईज कहेवानु नथी। पण जो ते न होय ने मारी समज बरोबर होय तो तमारे उडे उतरीने घटतो फेर-फार करी नाखवो घटे छे। स्त्री सेवा छोडवानी अही वात नथी।

सामायी एकेय वस्तुनो पडघो तमारा हृदय उपर न पडे तो नथी करवानु। विचारनी आप ले करजो। निराशाने क्याय स्थान नथी। तमे पतित नथी, तमे सत्यनिष्ठ छो। सत्यनिष्ठनु पतन सभवतु नथी।

फरी नथी वाच्यु।

: २९४ :

बिडला हाउस,
न्यू दिल्ली,
३०-१२-३८

पूज्य श्री बापूजी,

मै कल फण्टियर मेलसे सवाई माघोपुर पहुचा। उतरते ही जयपुर राज्यकी लाइनके स्टेशन पर जयपुर राज्यके नीचे लिखे अधिकारी उपस्थित मिले।

(१) रा व लाला दीवानचन्द, डिप्टी इन्स्पेक्टर जनरल पुलिस
(२) श्री डी एन चक्रवर्ती, सुपरिन्टेंडेंट पुलिस
(३) हुसनअली, सब-इन्स्पेक्टर पुलिस
(४) श्री लक्ष्मीनारायण, तहसीलदार, सवाई माघोपुर

दस मिनिट बाद मि यग, इन्स्पेक्टर जनरल पुलिस भी आगये थे। सबकी मौजूदगीमें मुझपर जो नोटिस तामिल किया गया उसकी नकल इसके साथ है।[1]

[1]. जमनालालजी पर निम्न नोटिस तामिल किया गया था —

To
SETH JAMNALAL BAJAJ
of WARDHA (C P)

Whereas it has been made to appear to the Jaipur Government that your presence and activities within the Jaipur State are likely to lead to a breach of the peace, it is considered necessary in the public interest and for the maintenance of public tranquillity to prohibit your entry within the Jaipur State

You are, therefore, required not to enter Jaipur territory until further orders

By order of the Council of State
M Altaf A Kherie
Secretary, Council of State, Jaipur

मि यग मुझसे कोई १॥ घण्टे तक बातचीत करते रहे। वैसे तो मैंने ऐसी किसी रुकावटको न माननेकी ही तैयारी कर ली थी, परन्तु उस दिन आपने जो अपना दृष्टिबिन्दु मुझे बताया वह मुझे जँच गया था और इसलिए मैं इस मनाहीको मानकर दिल्ली चला आया। जयपुर प्रजा मडलके मित्रोसे मिलकर उनकी स्थिति जान लेना जरूरी थी।

प्रजा मडलके मित्रोका मत था कि मुझे तुरत ही इस आज्ञाको भग कर देना चाहिए था, परन्तु यहा श्री हीरालालजीको जब मैंने आपके विचार बताये तो उन्हे वे पसद आये। मेरी इस रोकके सबधमें आज एक वक्तव्य मैंने अखबारोमे दिया है उसकी भी एक प्रति इसके साथ भेज रहा हू।

कलसे ज प्र मडलकी कार्यकारिणीकी मीटिंग जयपुरमें होगी। उसमे मुझपर लगाई गई रोकसे उत्पन्न परिस्थिति पर विचार तथा प्रजा मडलकी राजनैतिक मागका कच्चा ढाँचा तैयार किया जायगा। उसे लेकर मैं तथा श्री हीरालालजी ३/४ दिनमे बारडोली आजायेंगे और आपकी राय तथा सूचना जानकर उसे पक्का बना लेनेका विचार है।

मुझपर यदि रुकावट लगाई जाय तो उसके बारेमें आपने एक चिठ्ठी लिखनेका कहा था। वह यदि मेरी तरफसे भेजनी हो तो उसका मसविदा बनाकर श्री सागरमलके हाथ भेज दीजिए। यदि आप खुद इस विषयमें किसीको पत्रादि लिखना मुनासिब समझे तो उसकी भी सूचना मुझे इनके साथ भिजवा दीजिएगा।[1]

[handwritten signature]

१ इस पत्रके मिलतेही गाधीजीने श्री राधाकृष्ण बजाजको लिखा —
"यह तार भेजो। खत भी साथमें है।
Wire No worry about order If possible come Bardoli.
—Bapu."

लेकिन उपरोक्त तार भेजनेसे पहले ही जमनालालजीका नई दिल्लीसे भेजा हुआ ता ३१-१२-३८ का निम्न तार मिला :—

"Sagarmal not coming Wire Bapus approval meeting Bardoli fourth with Jaipur friends"

इस तारकी पीठ पर गाधीजीने श्री प्यारेलालके द्वारा श्री. राधाकृष्णके लिए लिखवाया कि पहले भेजे गये तारकी जगह नीचे लिखा तार भेजो :—

"Your wire. Will gladly meet you Jaipur friends Bardoli fourth —Bapu."

: २९५ :

(९-१-३९)

चि जमनालाल,

घ. नो तार आवी गयो छे। रजा आपी छे।[1] रजिस्टर गय।

: २९६ :

जानकी कुटिर,
जुहू, बम्बई,
१६-१-३९

पूज्य श्री बापूजी,

इस पत्रके साथ मि यगकी ओरसे श्री देशपाण्डेजी (गोविन्दगढ) को भेजे हुए पत्रकी[2] नकल भेज रहा हू। श्री देशपाण्डेजीने श्री शकर-लालभाईको भी उसकी नकल भेजी है। उन्होंने आपको लिखा ही होगा। इसका जो जवाब आप उन्हे भेजेगे वह कृपया मुझे भी सूचित कर दे। वैसे तो अन्डरटेकिंग देनेमे हर्ज नही था, परन्तु वर्तमान स्थितिमे प्रश्न विचारणीय हो जाता है। मेरे कार्यक्रमकी नकल भी आपको भेज रहा हू।

जमनालाल बजाज

: २९७ :

जानकी कुटिर,
जुहू, बम्बई,
१७-१-३९

प्रिय बहन राजकुमारीजी,[3]

कल पू. बापूजीका तार मिलने पर यहासे मैंने जयपुर दरबारकी स्टेट कौन्सिलको जो पत्र लिखा था उसकी नकल व वहाके नोटिफिकेशनकी नकल

१ गाधीजीने श्री घनश्यामदास बिरलाको ७-१-३९ को पिलानी निम्न तार दिया था, जिसके जवाबका उल्लेख यहा किया गया है —

"In Jamnalalji's letter Jaipur State there is reference to your telegram dated October twelfth advising that remaining Sikar prisoners will be released thirteenth Your name not mentioned but may have to be if challenged Have you any objection Wire Bardoli"

२. इस पत्रमें राजस्थान चरखा सघके सदस्योंसे राजनीतिमे भाग न लेनेकी अन्डरटेकिंग मागी गई थी।

३ राजकुमारी अमृत कौर। वे उस समय गाधीजीके सेक्रेटरीका काम करती थी।

उन्हे भेज दी है। इस पत्रके साथ Extract from the Jaipur Gazette No 4518 की नकल भेज रहा हू। शायद बापूजीको इसकी जरूरत पडे।

कल जो कागजात बापूजीने मगवाये है, उस परसे मालूम होता है कि इन हरिजनमे वे इस विषय पर कुछ लिखेंगे। यदि बापूजीके उस लेखकी एक नकल आप मुझे वर्धाके पते पर भिजवा देंगी तो जयपुर राज्यमे प्रचार करनेके लिए मैं उसका उपयोग करना चाहता हू। जिस समय हरिजन प्रकाशित होगा उसी समय उसे पत्रिका रूपमे छपानेका विचार है। इस लिए यदि उसकी नकल पहिले ही मिल जायगी तो इस काममे सुविधा होगी। मैं कल यहासे वर्धा जानेवाला हू।

[illegible]

Replied No copy available Sent copy of letter to Sir Beauchamp[1]

18-1-39 A K

: २९८ :

BARDOLI,
23-1-39

JAMNALAL BAJAJ,
CARE KANORIA,
CALCUTTA

Time reserved

—*Bapu*

: २९९ :

BARDOLI,
28-1-39

JANKIDEVI BAJAJ,
WARDHA

Dont go Jaipur now till certified by doctors and me as perfectly fit and cheerful

—*Bapu*

१. यह नोंध राजकुमारी अमृत कौरने जमनालालजीके पत्र पर लिखी है।

: ३०० :

AGRA,
3-2-39

MAHATMA GANDHI
WARDHA

Hope you saw my statement after release Planning enter Jaipur earliest on foot Ghanshyamdasji pressing delay re-entry[1] Myself disagree unless Govt communicate in writing Think Beauchamps correspondence[2] should now be published Anxious Wire health programme care Lakinsure My phone sixtysix.

—*Jamnalal*

: ३०१ :

NEW DELHI,
4-2-39

MAHATMA GANDHI,
CARE JAMNALAL BAJAJ,
WARDHA

Inasmuch as police officer in charge Jamnalalji verbally requested him give authorities time reconsider may I ask Jamnalalji address letter to authorities mentioning police

१ श्री. घनश्यामदास बिरलाने गाधीजीको इस सबधमें नई देहलीसे ता ३-२-३९ को निम्न तार भेजा था –

"Jaipur affairs likely take satisfactory turn Am suggesting Jamnalalji to give further one fortnight before returning Jaipur Meanwhile working hard for lifting ban Please advise Jamnalalji accordingly Also feel a good statement from you about Jaipur this stage would help"

इस तारकी पीठ पर गाधीजीका निम्न मजमून मिलता है, पर कहा नहीं जा सकता कि यह तार बिरलाजीको भेजा गया या नहीं –

"Jamnalal must not wait but request for Have made statement about Jaipur"

इस बारेमें जमनालालजीकी डायरीमें ता ३-२-३९ को लिखी निम्न नोंध मिलती है —"बापूका तार आगया, मुझे जाना चाहिए, उससे सतोष हुआ। बापूको लगा होवेगा मैंने देर क्यों की, परन्तु सारा हाल उन्हे मालूम होनेसे सतोष मिलेगा।"

२ देखिये खड ३ ।

officer's request absurdity of communique and giving them time until eighth Am sending him draft suitable letter If you agree advise him send letter

—*Mahadev*

: ३०२ :

(WARDHA)

MAHADEV DESAI,
BIRLA HOUSE,
NEW DELHI

Though do not like your suggestion not knowing fully am advising Jamnalal follow your instruction. Health good

—*Bapu*[1]

: ३०३ :

JAIPUR,
6-2-39

MAHATMA GANDHI,
WARDHA

Accompanied Jamnalalji till arrest yesterday afternoon. Sethji brought in special train containing military armed police to Jaipur West with us whence taken in cars unknown destination with son secretary servant Despite promise Inspector General Police while arresting to inform whereabout within two hours no information given inspite repeated requests Authorities now definitely refusing information All extremely anxious Wire instructions care Rajasthan Stores

—*Chandrabhal Johri*

[1] गांधीजीके नाम ता. ४-२-३९ को दिये गये महादेवभाईके तारके पीछे गांधीजीके हाथका लिखा तारका यह मजमून है।

जमनालालजीकी डायरीमें इस बारेमें ता ४-२-३९ को लिखी निम्न नोंध मिलती है —" वर्धा दो बार फोन। आखिर बापूकी इजाजत मेरा मन हो उस मुताबिक करनेकी आगई। सुख मिला। लड़ाईके प्रोग्रामकी योजना, चर्चा। जाट नेताओंसे, विद्यार्थियोंसे, कार्यकर्ताओंसे बातें। "

: ३०४ :

Jamnalalji is safe wherever he is Trying issue statement Keep me informed [1]

: ३०५ :

७–२–३९

चि. जानकीबहन,

तमारे चिंता नथी करवानी। चिंता करे ए लडवैया न कहेवाय। जयपुर जवामा तो कई माल नथी। एटले अही बेठा धर्म पालन करवानो छे। ईश्वरने करवु हशे ते थशे।

टेलिफोनथी आवेलु मारी पासे राखु छु कईक स्टेटमेंट करवानी इच्छा छे। मोटर नथी रोकतो।

तमारी आजनी हालतमा अही शा मारु आववु छे?

: ३०६ :

AGRA,
9–2–39

MAHATMA GANDHI,
WARDHA

Saw statement Much version regarding Young incorrect owing confusion telephonic message Correct version appears Hindustan Times eighth ninth dak edition Hope do needful Entering again Sunday [2]

—*Jamnalal*

१ श्री चद्रभाल जौहरीके ६–२–३९ के तारके उत्तरमे गांधीजीने उपरोक्त तार श्री जौहरीजीको भिजवानेको लिखाया था। यह मजमून उस तारकी पीठ पर लिखा हुआ है।

२ जमनालालजीको जयपुर पुलिसने ५ फरवरीको गिरफ्तार किया था और ७ फरवरीको जयपुरकी हद्के बाहर, भरतपुर राज्यकी हद्में ले जाकर छोड दिया था। इसके बाद जमनालालजीने तीसरी बार १२–२–३९ को जयपुर हद्में प्रवेश किया। तब विराटनगरमें उनको गिरफ्तार करके मोरासागर डाक बगलेमें कद रखा था।

: ३०७ :

JAMNALALJI,
SAINIK, AGRA

Your telegram Send definite corrections my version Will then publish revision Quite clear you should cross border if possible on foot with small party without giving notice Jankidevi must not leave Wardha She is unfit physically and Kamalas approaching delivery makes it dangerous for her leave Wardha If she went she must throw herself into struggle and can never come back before struggle over Am convinced time has not arrived for her to do so Even if she was well and otherwise free to leave Wardha I should discountenance her leaving but would reserve her future when struggle in full swing[1]

: ३०८ :

RAJKOT,
26-2-39

RADHAKRISHNA BAJAJ,
JAIPRAJA, AGRA

No hartal Jaipur City

—*Bapu*

(नकल परसे लिया गया)

: ३०९ :

AGRA,
27-2-39

MAHATMA GANDHI,
FIVE DOWN, STATION VANKANER, K

Received Jaipur hartal spontaneous and continues in connection Viceroy visit We favour hartal Wire if you disapprove

—*Radhakrishna*

१. जमनालालजीके गांधीजीको ९-२-३९ को दिये गये तारके पीछे यह तारका मजमून लिखा हुआ है।

: ३१० :

Hartal should be abandoned when Viceroy enters But you must be final judges

—*Bapu*[1]

: ३११ :

(फरवरी १९३९)?

(श्री. जानकीदेवीको लिखे गये निम्न पत्रका पहला पृष्ठ नहीं मिल पाया है)

मोजो हजु उतर्यो नथी । तेमा वळी मी केलनबेक मादा पडी गया। विजयालक्ष्मी आव्या छे ते तमारे त्या उतर्या छे के?

वल्लभभाई काले आवी गया हशे। आजे तो जवाहरलाल पण आवशे। हवे तो वर्किंग कमिटी बेसवानी। तमारे त्या वर्किंग कमिटी बेसवानी ने?

वच्चे तो सुवाश पण बापुजीने मळवा आवी गया।

राधाकृष्ण क्या छे। एनु कंई हमणा सभळातु नथी। अनुसूया सारी हशे।

जमनालालजीनी तबियत सारी हशे। ए पण मारी पेठे भोळाज छे। दुख पडे तो पण विमारे वात पडी जाय।

कमलनयन तमारी पास छे के मुबई? चि. रामकृष्ण बारडोली आव्यो हतो जमनालालजी साथे त्यारे जोयो हतो। एनी तबियत सारी हशे।

लि जानकी [illegible] आशीर्वाद

१ यह तथा पिछले दो तार जयपुर सत्याग्रहके समयके है। यह तारका मजमून राधाकृष्ण बजाज, जो कि जमनालालजीकी गिरफ्तारीके बाद जयपुर सत्याग्रहका कामकाज देखते थे, के ता २७-२-३९ के तारके पीछे गाधीजीके हस्ताक्षरमें लिखा हुआ है।

जमनालालजीके मनमें इस बारेमें जो विचार उठे वे उनकी ता २५-२-३९ की डायरीमें निम्न रूपमें लिखे हैं—"कई दिनोंसे विचार हो रहा था कि वाइसरायके जयपुर आनेके बारेमें कौंसिल ऑफ स्टेटको पत्र लिखू, कि उनका आना इस समय प्रजा व राज्यके हकमें ठीक नहीं रहेगा। जयपुर राज्यमें भयकर अकाल पड रहा है। दूसरी तरफ वाइसरायके स्वागतमें लाखों रुपयोंका नाश होगा—रोशनी आदिम। मैंने तो यह भी सोचा कि वाइसराय जब तक जयपुरमें रहें मैं विद्रोहम उपवास रखू। परन्तु बादम कई कारणोंसे पत्र नहीं भेजा।"

: ३१२ :

दिल्ली,
१६-३-३९

चि जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो। जाणी जोईने वधारे नथी लखवा मागतो। मारो दृढ अभिप्राय छे के आपणे मागणीमा वधारो न करवो। प्रजा मडळने विना शर्त स्वीकारे अने सिविल लिबरटी आपे एटले सविनय भग खेची लईए। केदी तो छोडेज।[1]

तमारी तबीयत सारी रहेती हशे। मानसिक स्थिति पण उत्तम हशे। कई वाचन राख्यु छे? कातो छो? वजन केटलु छे? फल वि खावाज जोईए। एमा हठ करवी मोह छे। स्वाद न करवा पण शरीर मागे ते औषध रूपे देवु।

बापुना आशीर्वाद

३१३.

मोरा-सागर (जयपुर),
१५-४-३९

पूज्य बापूजी,

पू बाके बीमारीके समाचार पढकर चिन्ता हो रही थी। बादमे ठीक होनेके समाचार पढे है, आशा है बा अब बिलकुल ठीक होगी।

राजकोटके मामलेकी रिपोर्ट सतोषजनक नही आ रही है। ईश्वर ठाकुर साहेब व उनके सलाहगारोको सद्बुद्धि प्रदान करे। आपको तो शायद अभी राजकोट ठहरना पडेगा।

रामदुर्ग स्टेट (कर्नाटक) मे जो घटना हुई उसे पढकर दु ख पहुचना स्वाभाविक था।[2] इस घटनासे तो आपने स्टेटोमे सत्याग्रह स्थगित कर दिया यह बहुत ठीक किया, ऐसा विश्वास हो गया। परमात्मा जो कुछ करता है व कराता है वह ठीक ही कराता है।

१ इसके बाद ही गाधीजीके हुकुमसे जयपुर प्रजा मडलकी सत्याग्रह कौंसिलने २२-३-१९३९ को सत्याग्रह स्थगित कर दिया था।

२ रामदुर्ग प्रजा मडलके अध्यक्ष और कुछ कार्यकर्ताओंको रियासती सरकारने गिरफ्तार कर लिया था। अपने नेताओंको छुडानेके लिए और शायद बदला लेनेके हेतुसे भी, करीब २००० नगरवासियोंने वहा इकट्ठे होकर सरकारी कर्मचारियों पर हमला किया। इस हमलेको दबानेके लिए सरकारने गोली चलाई। इस आंदोलनके परिणाम स्वरूप रियासतमें ब्राह्मण-ब्राह्मणेतरोंमें आपसी झगड़ा भी छिड़ गया था।

मेरा स्वास्थ्य तो बहुत ठीक है। खाँसी बिलकुल चली गई। पावमें दर्द भी नही रहा। वजन ता ११-४ को लिया था। १९६ करीब है। याने ११, १२ रतल कम हुआ है। मुझे वजन कम होनेकी चिन्ता नही है। मैं करीब पच्चीस रोजसे एक ही बार भोजन करता हू। शामको दूध लेता हू। यहाका पानी भारी होनेके कारण गरम कर कर पीता हू। इससे ठीक लाभ पहुचता है।

मेरा मन तो यहा लग गया है। शान्ति भी टीक मिल रही है। विचार भी प्राय ठीक चलते है। कई बार कमजोरियोंके खयालमे उदासीनता व रोना आ जाया करता है। बादमे विचार करनेसे, पढनेसे उत्साह व भविष्य ठीक दिखाई देने लगता है। भक्तिकी ओर झुकाव बढ रहा है। डटा रहा हू। परमात्माकी दया रही और आपका तथा विनोबाका आशीर्वाद रहा तो जीवनमे उत्साह ठीक आजावेगा। पत्र सुबह प्रार्थनाके बाद लिखा है, जैसे विचार आये वैसे ही। पू ´बाको प्रणाम। सरदार वहा हो तो प्रणाम, नारायणदासभाईकी तो कई बार याद आती रहती है।

: ३१४ :

(एप्रिल १९३९) ?

चि जानकीबहन,

कल तो नानाभाई और मनुभाई आते है। उनको सेगाव आने देना अच्छा होगा। आजकल यहा भीड नही है। और उनको लेनेके लिये मुन्नालाल जाते है तो खाली क्यो तुमको तकलीफ दू ? मगलवारको शायद पाच आदमी आवेगें। उनको भी सेगाव लाना तो चाहता हूं। कुछ परिवर्तन करना होगा तो देख लूगा। जमनालाल पकडे गये सो अच्छा ही हुआ है।

बापूके आशीर्वाद

विवाह विधि[1] नानाभाई करेगे। व्यास भी भले आवे।

[1] मनुभाई पचोली और विजयाबेन पटेलके विवाहके सबधमें।

: ३१५ :

राजकोट,
१३–५–३०

चि जमनालाल,

तमने जयपुर लाव्यानु जाण्यु। तबीयत बरोबर सुधारी लेजो। वजन वधारे न घटवु जोईए। फळ बरोबर खावाज जोईए। काचर कुचर न खाता। वैद्यनी कई दवा रुची होय तो खाजो। मने राजकोट लखजो। हमणा तो अहीज रहेवानु थशे। अहींनी चिंता करवापणु नथी। महादेव साथे छे। एने ठीक रहे छे।

बापुना आशीर्वाद

: ३१६ :

सेगाव,
३–८–३९

प्रिय मुरब्बी जमनालालजी,

हरिजन आश्रमना ट्रस्ट विषेनो ठराव आ साथे मोकलु छु। तेनी उपर बापुनी अने मारी सही थई गई छे। आपनी सही करीने आप नरहरिभाईने मोकली आपशो।

आपनी तबीयत विषे चिंताजनक खबर सांभळ्या हता। दिल्लीथी आपने मळवा आववानो विचार कर्यो, पण कलकत्ता केदीओने जोवा जवानु वधारे अगत्यनु समजी बापुए मने त्या मोकल्यो, अने कह्यु के कलकत्ताथी पाछा आव्या पछी जरूर हशे तो जई आवजो। शंकरलाले पण मळवानो तार कर्यो हतो। आप जो इच्छता हो तो तुरत आवी जाउ। वाइसरोये ५ मी तारीखे बापुने मळवा बोलाव्या हता, पण कागळमा लख्यु हतु के काई खास काम नथी पण घणो समय थया नथी मळ्या माटे मळीए तो सारु, एटले बापुए लख्यु के हमणाज दिल्लीथी आव्यो अने थाक्यो छु, कामो पण घणा पड्या छे एटले हमणा तो माफ करो, २० मी पछी कोई तारीख आपशो तो मळीश। स्टेट्स सबंधमा ए लोकोनी नीति जराय समाधानी करवा तरफ होय एम लागतु नथी। २० मी पछी जो वाइसरोयने मळवानु थाय तो त्या शु थाय छे ते तमने जणाववानो प्रयत्न करीश।

तमे त्या खूब कामकाजमा दिवस गाळो छो एम श्रीमन् पासे खबर मळ्या हता। एटले तमने काममा एकलापणु तो नही लागतु होय। तबीयत सरखी नथी रहेती ए दुखनी वात छे खरी। मुंबईथी कोई दाक्तरने जोवा त्या न बोलावी शकाय के ?[१]

पू बापुनी तबीयत बहु सारी रहे छे। मीराबेन बीहारमा मादा पडीने पाछा आवी गया छे। सुशीला दाक्तर दिल्ली हस्पीतालमा एक मास वधु अनुभव माटे गया छे। जानकीबेनने मळो त्यारे प्रणाम कहेशो।

लि स्ने

: ३१७ :

जयपुर स्टेट कैदी,
७-८-३९

प्रिय श्री महादेवभाई,

आपका खत मिला। आपकी कलकत्तेकी खबर अखबारमे देखी।

वाइसरायके इन दिनोके व्यवहारको देखते हुए मेरी ऐसी इच्छा होती है कि जब तक वह स्पष्ट तौरसे मिलनेका कारण न लिखे तब तक बापूजी उसे मिलने न जावे। बापूजी इस समय नही गए यह बहुत अच्छा किया। इससे मुझे खुशी हुई। बापूजीसे कहे कि जयपुरके मामलेमे वे विशेष चिन्ता न करे। मै यहाकी असलियतसे वाकिफ होता जा रहा हू। भीतर बहुत ही गन्दगी भरी हुई है। प्रजाके लिए तो कोई अपनेको जवाबदार समझता ही नही है।

कल हीरालालजी आदि सब मित्र छूट गए है। समय तो लगेगा लेकिन परमात्माकी कृपासे और बापूजीके आशीर्वादसे गन्दगी जरूर दूर होगी। वर्तमान स्थितिको देखते हुए तो मुझे काफी समय यही देना होगा। श्री महाराजा साहब आ गए है।

१ जयपुर जेलमे जमनालालजीके घुटनेमें पुराना दर्द शुरू हुआ था। उसके लिए इलाज करते समय सरकारी डाक्तरोंकी असावधानीसे उनकी टाग करीब दो इच जल गयी थी।

मुझे उनसे कुछ आशा तो थी परन्तु वे कुछ कर सकते है या नही मालूम नही। मैने उन्हे एक खत तो लिखा है। उनसे मिलना तो वर्तमान हालतमे सभव नही दिखाई देता है। यहा, अग्रेजोमे जो अच्छाई होती है वह भी कम दिखाई देती है। पर उनमे जो बुराइया है उनका पद पद पर अनुभव होता है।

मेरे स्वास्थ्य आदिके विषयमे तो कमलनयनने आपसे बात की ही होगी। शकरलालभाईका स्वभाव तो घबरानेका अधिक है, इससे आशा है कि बापूजी उनकी बातो पर अधिक ख्याल न करेगे। मेरे स्वास्थ्यके कारण तो आपके आनेकी जरूरत नही है पर यदि किसी मौके पर आप २/४ दिनके लिए आ सके व यहाकी हालतसे वाकिफ हो सके तो अच्छा होगा, खासकर शिकारखाना व जगलातके अमानुषिक कानूनोसे।

नागपुर टाइम्समे (ता ३–८ का) राधाकृष्णका आर्टिकल आपने देखा होगा। न देखा हो तो जरूर पढे। उससे आपको कुछ कल्पना हो सकेगी। बापूजीका स्वास्थ्य ठीक है यह पढकर समाधान हुआ।

बम्बईसे डॉक्टरको बुलानेकी तो आवश्यकता बिलकुल मालूम नही होती।[१] यदि सुशीलाका दिल्लीसे वर्धा वापस जाते वक्त मुझे देखकर जाना सभव हो सके तो ठीक है। वह सारी स्थितिसे आप लोगोको भी वाकिफ कर सकेगी। अधिकारियोका व्यवहार ठीक नही मालूम होनेसे मेरे जले हुए घावका इलाज कलसे यहाके एक नेचरोपैथकी मददसे शुरू किया है।

हरिजन आश्रमके ट्रस्टके ठराव पर सही करके भेज रहा हू।

जमनालाल बजाजके वन्देमातरम्

(नक़ल परसे लिया गया। इसमें मूलसे कुछ फरक हो सकता है।)

: ३१८ :

जयपुर,
२–९–३९,
रातको दो बजे

पू. बापूजी,

कल पत्र लिखा वह मिल गया होगा। श्री जयपुर महाराजासे कल बाते हुई। उस परसे यह मालूम हुआ कि वे किसी ऊचे दर्जेके

१ यह पत्र लिखनेके बाद जमनालालजीको ९–८–३९ को गाधीजीका तार मिला कि वे महादेवभाइके साथ बम्बइसे डा भरूचाको भिजवा रहे है। इसके जवाबमें भी जमनालालजीने तार भेजा कि फिलहाल बम्बईसे डाक्टरको भेजनेकी कोई जरूरत नहीं है।

हिन्दुस्तानीको दीवान बनानेकी इच्छा रखते है। उन्होने अपनी इच्छा वाइसरायसे कह भी दी है। क्या आप भी वाइसरायको सूचित करना ठीक समझते है? नही तो मेरी इच्छा तो होती है कि मै एक बार वाइसरायसे मिलकर जयपुरकी आजकी स्थितिमे योग्य हिन्दुस्तानी दीवान ही सफल हो सकेगा, यह कहू। अगर यह ठीक नही समझा जाय या सम्भव न हो तो पत्र लिखना चाहता हू। क्योकि अभी तक दीवानकी नियुक्तिका फैसला नही हुआ है। एक बार हो जाने पर कठिनाई हो जायगी। आप अपनी राय लिख भेजे। मै भी सोचूगा।

हिन्दुस्तानी दीवानोमे आप कोई खास नाम बता सकते है जिस पर वाइसराय भी आपत्ति न कर स्वीकार कर लेवे? मैने कल महाराजाको कुछ नाम नोट करवाए है जिसमे विशेष रूपसे तो कुअर सर महाराजसिहजीका है। आप श्री राजकुमारीबहिनसे पूछकर लिखें कि वह कब तक भारत आनेवाले है? उन्हे यह जगह ऑफर की जाय तो वह स्वीकार कर लेवेगे ना? सर शादीलालका नाम भी मैने कहा है। आज शायद फिर महाराजा साहबसे मिलना पडे।

जमनालाल बजाजका प्रणाम

(नक़ल परसे लिया गया)

: ३१९ :

जयपुर,

(खानगी) ५-९-३९

पूज्य बापूजी,

मैने आज शिमला फोन करनेकी कोशिश की परतु राजकुमारी बहिनके बगलेके फोन नबर नही मिले। दूसरे, सात आठ घटे तक लाइन मिलना सभव नही था। इस लिए एक्सप्रेस तार भेजा—

Mahatma Gandhi,
Manor Villa, Simla

Arrange Mahadevbhai or Rajkumari phone tonight Jaipur 67 personal Urge Viceroy if possible for Indian Prime Minister for Jaipur Inform programme phone number —Jamnalal

आपका शिमलासे दिया हुआ यह तार रातको ८॥। बजे मिला।

If easily possible you should attend meeting Wardha eighth —Bapu

इस समय वकिंग कमिटीके समय उपस्थित होनेकी इच्छा तो होती है परन्तु यहाका काम छोडकर आनेका उत्साह नहीं हो रहा है।

श्री महाराजा साहबसे दो बार तो मिल चुका। कल फिर १२॥ बजे मिलने वाला हू। उम्मीद तो है कि प्रजा मण्डलके बैनका प्रश्न कल जरूर तय हो जायेगा। अखबारोका बैन, सीकर किसान कैदियोंको छोडनेका प्रश्न भी शायद तय हो जायेगा। तब तो मै आनेकी कोशिश करूगा। अन्यथा इस समय श्री महाराजासे मिलकर जो परस्परमे विश्वास, प्रेम सम्पादन हो रहा है उस बल पर ऊपरके तथा अन्य कई प्रश्न हल होनेकी आशा दिखाई देती है। मेरी गैरहाजरीसे सम्भव है बीचके लोग गडबडी डाल देवे। इस लिए रह जाना भाग पडेगा। जयपुरके लिए तो मै आपसे यही मदद इस समय चाहता हू कि कोई योग्य भारतवासी दीवान आ जाये तो फिर बहुतसे प्रश्न मिल जुलकर तय हो सकेगे। आप उचित समझे तो वाइसरायको लिखे। अन्यथा यहा तो मै पूरी कोशिश कर रहा हू।

मुझे एक बात और लिख देनी है। कलकत्तेमे सुभाषबाबू व मौलानाके वहा न होनेके कारण उनसे तो मै नही मिल सका। परन्तु श्री शरदबाबूसे मिलकर मैने खूब साफ तौरसे बाते की। मेरी समझ है, उसका उनके मनपर ठीक परिणाम हुआ था। उन्होंने कहा कि सुभाषबाबूको वह समझायेगे व आपके पास लेकर आयेंगे या उन्हे भेज देंगे। म भी उस समय हाजिर रह सकू तो ठीक रहेगा। उनकी बातें सुननेके बाद आप जो मार्ग (formula) निकालेगे वह सुभाषबाबू स्वीकार कर लेवे। अब तो सरदारजीने उनको बुलवा ही लिया है। मुझे तो पूरी आशा है कि आप चाहेगे तो उस तरह बहुत करके वह तैयार हो जायेंगे। लडाईके बारेमे ब्रिटिश सरकारसे झमेलेमे जाना होगा क्या? मैं तो समझता हू, शायद आप लोग एक आवाजसे इस समय जो वाजिब शर्त रखेगे वह शायद स्वीकार हो जाय। रखना चाहिये या नही यह आपके विचारनेकी बात है। मेरी समझसे तो रखी जा सकती है।

चि राधाकृष्णको भेजा है। आप जो उचित समझें इसके हाथ जवाब भिजवा देवे।

मैंने वह स्थान छोड दिया है। न्यु होटलमे रहने आया हू।

'जमनालाल बजाजका प्रणाम

(नक़ल परसे लिया गया)

: ३२० :

दिल्ली,
६–९–३९

चि जमनालाल,

दिवानके बारेमे कठिन बात है। सीमलामे ऐसी कुछ बात हुई ही नही थी। अगर तुमारी दृष्टिसे तुमारा वही रहना अधिक लाभदायी है तो वही किया जाय। आरामसे आ सकते है तो आ जाना।

: ३२१ :

श्रीहरि

जयपुर,
१०–९–३९

पूज्य बापूजी,

यहाके कार्यमे मेहनत तो खूब करनी पड रही है। परन्तु परिणाम सतोषकारक आ रहा है। मेरी समझसे प्राय अपनी मागे तो पूरी हो ही जायेगी, जल्दी ही। साथमे और भी रचनात्मक कार्यमें स्टेटकी ओरसे ठीक सहयोग मिलना सम्भव है। श्री महाराजा साहबके बारेमे मेरा ख्याल, ज्यो ज्यो परिचय बढता जा रहा है, ठीक हो रहा है। उनके पास योग्य सलाहकारकी कमी है। आजके मेरे स्टेटमेन्टसे आपको आज तकके कार्यकी स्थितिका पता चल जायेगा। कल जन्मगाठ है उस समय भी कुछ बाते साफ हो जायेगी। अगर आप मेरे स्टेटमेन्टका हवाला देते हुए जयपुरमे ब्रिटिश प्राइम मिनिस्टर न भेजकर ऊँचे दर्जेका हिन्दुस्तानी भेजनेके लिये हरिजनमें लिख सकें तो उसका शायद पोलिटिकल डिपार्टमेन्ट पर ठीक असर पडेगा। मै तो कोशिश कर ही रहा हू। मै अभी तक तो दूध फल पर ही हू। ता १५ तक यहा रहूगा। बादमे सीकरकी ओर जानेवाला हू।

जमनालालका प्रणाम

(नक़ल परसे लिया गया)

: ३२२ :

श्रीहरि ८ मगलदास रोड,
पूना,
२४-१०-३९

परम पूज्य बापूजी,

२१-१०-३९ का पत्र बबई होकर आज सवेरे यहा मिला। मै तो ता २०-१०-३९ को ही यहा पहुच गया था और मेरा ख्याल था चि कमलने भी आपसे कह दिया होगा। परन्तु वर्किंग कमिटीके कामकी भीडमें शायद नही कह सका होगा, इसी लिए आपको चिन्ता हुई। मेरा तार भी आपने देखा होगा। मै तो बबईसे और भी जल्दी आता, परन्तु सभी मित्रोंने एक न एक डॉक्टरको दिखानेका आग्रह रखा, और कुछ कपनीका भी काम रुका हुआ था। यहा आने पर ब्लड प्रेशर तो कम हो ही गया। परसो दिनशाने देखा था तब १४० और ९५ था। यहा थोडी शाति व आराम भी मिलनेकी उम्मीद है। आपसे बात हो ही गई थी उसके अनुसार मै वर्किंग कमिटीकी सभाके लिए नही आया और न गा से स [1] के लिए आ रहा हू। नेचर क्युअर क्लिनिकके सामने ही एक मकान किराये पर लेनेका विचार है। आज चार दात भी दिनशाके कहनेसे निकलवाए है। एक दात निकालते समय तो कुछ तकलीफ भी हुई। खानेपीनेका तो दिनशा जैसा कहता है वैसा ही चलेगा। एक तरहसे उसकी ट्रीटमेन्ट शुरू हो गई ऐसा ही मानना चाहिये। इसके लिए अब मुझे कुछ समय यही रहना पडेगा। दिनशाके पास दो चार रोजमें रहनेको चले जाने पर पूरी ट्रीटमेंट शुरू हो सकेगी।

परसो श्री महादेवभाईके नाम पत्र भेजा था वह देखा होगा।
आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

Jhamnalal Bajaj

: ३२३ :

सेगाव-वर्धा,
१५-११-३९

चि. जानकीबहेन,

दात पडाववानु जो दीनशा कहे तो पडाववामा भय न मानवो। पीप नीकळता दातने काढवामाज लाभ छे। बहु जड घालेला दात

१ गाधी सेवा सघ।

होय नो कई विचारवा जेवु भले होय । दीनगा जे कहे तेम थवा देजो। मने विगतवार खबर आपजो । मदालसा केम छे। ओमनो कागळ मळयो छे। महेरवानी ।

: ३२४ :

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

सेगाव, वर्धा,
३-१२-३९

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळयो हतो। तमे बीजा ५० वर्ष पूरा करजो ने तमारी शुभेच्छाओ परिपूर्ण करजो। निराश नज थता। शांतिथी त्या तबीयत सुधारजो। अहि ठीक चाली रह्यु छे। कमलनयन लांबी वात करी गयो हतो। रामकृष्णनु मन अभ्यासमा चोटयु जणाय छे। ओम् मजा करे छे। श्रीमननु तो पूछवुज शु। पोताना कर्तव्यमा परायण रहे छे। राजाजी आज आव्या। एंडरुझ अही छे। आजे डा० झाकिर हुसेन आवे छे।

बापुना आशीर्वाद

: ३२५ :

२९-१२-३९

चि जमनालाल,

शास्त्रीजी साथे वातो करी छे। थोडो सुधारो कर्यो छे।
मदालसा बाबत टेलीफोन कर्यो छे।[1] ईश्वर करे ते खरु।

: ३२६ :

९-१-४०

चि जमनालाल,

हमणा इलाज छोडीने जयपुर न जवाय। महाराजाने कागळ लखजो।

: ३२७ :

वर्धा,
२६-१-४०

जयपुर विषे हु हमणा लखवा नथी मागतो। आ वखतनु मारु दिल्ली जवु मारी दृष्टिये बहु महत्वनु छे। एटले हमणा मारे कशु न

[1] मदालसाके पहले प्रसवका समय नजदीक था और वह बीमार थी।

बोलवु एज योग्य छे। त्या तो वात करीशज। आपणने कशी उतावळ नथी। तमारा उपचार पूरा करीनेज जवानो विचार करवानो छे।[1]

: ३२८ :

श्रीहरि ६, ताडीवाला रोड,
पूना,
२९-१-४०

पू बापूजी,

मैं परसों यहा आ पहुचा। इलाज पूर्ववत् उसी रोजसे शुरू हो गया है। दामोदरको भी कल डाक्टरने जाचा। खून पेशाब आदि देखकर पूरी रिपोर्ट एक हफ्तेमें देनेको कहा है। चि मदालसाको आराम है। अब उसे चलने फिरनेकी पूरी इजाजत मिल गई है।

जयपुरसे होम मिनिस्टरका जो पत्र आया था, वह मैंने आपको दिखाया था ही। उस पत्रका जो जवाब मैं देना चाहता हू उसका ड्राफ्ट आपके पास इस पत्रके साथ भेज रहा हू। आप उसे देखें व जो सुधार करना ठीक समझें करे। मैंने आज सुबह श्री हीरालालजी शास्त्रीको कलकत्ता तार दिया है कि वे पूना आते समय रास्तेमें वर्धा उतर जाए व आपसे मिलले। अभीके कार्यक्रमके अनुसार वे बुधवार शामको मेलसे वर्धा उतरेंगे। जयपुरकी वर्तमान परिस्थितिको देखते हुए मेरा विचार हो रहा है कि आपके वाइसरायसे मिलनेके बाद एक दफा मैं उनसे मिलू। अगर आप ठीक समझें तो अपनी मुलाकातमें उनसे जिक्र करिये कि जयपुरके मामलेमे पूरी परिस्थिति वे समझना चाहते हो तो मैं उनसे मिलकर समझा दू। यदि उन्होंने मुझे पोलिटिकल डिपार्टमेंटसे मिलनेका करा दिया तो मैं उन लोगोको भी साफ तरहसे समझा सकूगा। इससे बाहरसे जो खराबी व गलतफहमी होती है, उसे मिटानेमे बहुत सुभीता होगा। यदि आप उसे ठीक समझते हो तो इसका जिक्र वाइसरायसे करे। यदि आप यह ठीक समझते हो कि मैं उन्हे अलग पत्र लिखू, तो आप मुझे उसका ड्राफ्ट बनाकर भेजे, ताकि मैं उन्हे अलग लिख सकू।

कल शामको जयपुरसे फोन आया था, जिससे मालूम हुआ कि पुलिसने खादी भडार, खादी आश्रम, प्रजा मडल दफ्तर, श्री पाटनीजी व

१ जयपुरके प्रश्न पर, गाधीजीने मौन होनेकी वजहसे जमनालालजीको यह जवाब लिखकर दिया था।

मिश्राजीके मकान पर छापा मारा। वहा उन्हे कोई खास चीज मिली नही। सिर्फ 'जयपुर रहस्य' नामकी एक किताब जप्त कर ली गई। शहरमे इससे सनसनी फैली हुई है। इस तरह पुलिसको अपना आतक जमानेका मौका मिल रहा है, जिसका मुमकिन है लोगोपर बुरा परिणाम हो। ऐसी परिस्थितिको देखते हुए मेरा मन यहा नही लगता। मेरी बहुत इच्छा होती है कि वहा जाकर रहू व मामला सुलझानेकी चेष्टा करू।

आज तक हुई घटनाओपर प्रकाश डालता हुआ एक छोटासा वक्तव्य प्रेसमें देनेकी इच्छा है। यदि आप इसे समयानुकूल समझते है तो जिस आशयका वक्तव्य प्रकाशित करना ठीक हो वह श्री शास्त्रीजीके साथ भेजें।

. ३२९ .

POONA,
31-1-40

MAHATMA GANDHI,
WARDHA

Fresh Jaipur news discouraging State tactics terrorising and unjust Feel called upon to go Jaipur without delay Wire permission Shall take proper care of treatment

—*Jamnalal*

: ३३० :

WARDHA,
1-2-40

JAMNALAL BAJAJ,
NATURECURE CLINIC, POONA

Disinclined let you go Await developments Take treatment without anxiety Writing

—*Bapu*

: ३३१ :
अ

सेगाव, वर्धा,
१–२–४०

चि जमनालाल,

तमारो कागळ, तमारो तार मळया। शास्त्रीजी साथे वातो करी।

तमारे त्यानी मुद्दत पूरी थता सुधी जयपुर जवानी मुद्दल जरूर नथी। वळी मारु दिल्लीनु पत्यु नथी त्या लगी जवापणु छेज नही। एटले सहजे १५ मी लगी पहोची जईए छीए। पछी तो केटला दीवस वाकी रहे छे ? तबीयतने सारी करवानो पण धर्म समजवो घटे छे। तमारो मुमद्दो वरोवर न कहेवाय। तमारे फरीयाद करवानी छे ते महाराजा सामे। एने वच्चे लाववामा सार नथी जोतो। तमे फरता हरता थशो त्यारे तेने जाते मळी शकशो। पछी जे थवानु होय ते थाओ।

वाइसरॉयनी साथे तमे इच्छो छो एटला उडाणमा हु नही जई शकु। असल वातनी साथे जेटलो मेळ खाय एटलेज लगी हु जई शकीश। तमारा मळवानी वात मारा दिल्लीथी फर्या पछी विचारशु।

मने लागे छे आमा वधा जवाव आवी जाय छे। वाकी शास्त्रीजी कहेशे। जानकीदेवी ने मदालसा मजा करता हशे।

: ३३२ :

श्रीहरि

पूना,
३–२–४०

पू वापूजी,

श्री हीरालालजीसे जयपुरके वारेमे वातचीत हुई ह। मेरा मन तो जयपुर जाकर बैठनेका हो गया था। अव आपकी आज्ञाके अनुसार फरवरी आखिर तक यही रहकर इलाज कराता रहूगा।

होम मिनिस्टरके पत्रका जवाव देना मुझे ठीक मालूम देता है। वहाकी परिस्थितिका व भविष्यका विचार करते हुए जो पत्र तैयार किया गया है वह हीरालालजी आपको दिखावेगे। आप पसन्द करलेवेगे तो वह पत्र चला जावेगा, नही तो आप जैसा लिखावेगे वैसा भेज दिया जावेगा।

जयपुरके मित्रलोग भी चाहते थे कि मेरी ओरसे कोई सार्वजनिक तौरसे बयान निकले तो ठीक रहेगा। पर आपने मुझे यह राय दी कि इस समय मुझे कोई बयान नही देना चाहिये, इस लिए मैंने अपने नामसे कोई बयान नही दिया है। श्री हीरालालजीने मेरी सलाहसे एक छोटासा बयान दिया है वह आपको दिखावेंगे ही।

वाइसरायके साथ जयपुरके सम्बन्धमे कोई आशाजनक या अन्य प्रकारसे बात हुई हो तो आप श्री हीरालालजीसे कह देवेंगे तो वह मुझे सूचना भेज देवेंगे। मेरा, मदालसा, जानकीदेवीका ठीक चल रहा है। दामोदरका एक्सरे लिया था। कोई खास शिकायत नही मालूम देती है।

जमनालाल बजाजका प्रणाम

(नकल परसे लिया गया)

: ३३३ :

POONA,
23-2-40

MAHATMA GANDHI,
MALIKANDA, BENGAL

Jaipur Government started adopting repressive measures Intend reaching Jaipur after meeting you Patna[1]

—*Jamnalal*

(नकल परसे लिया गया)

: ३३४ :

जयपुर,
४-४-४०

पू बापूजी,

मेरी तथा श्री शास्त्रीजी और पाटनीजीकी प्राइम मिनिस्टरसे[2] कई मुलाकाते हो चकी है। प्राइम मिनिस्टरकी मनोवृत्ति बहुत सकुचित है। और हमारे ख्यालसे वे बडे प्रतिगामी विचारोके आदमी है। इस लिये मुलाकातोके दौरानमे चोट पहुचाने वाली बाते भी आई। और

१ जमनालालजीकी डायरीमे मालूम होता है कि २९ फरवरीको वे गाधीजीसे पटनामें मिले। गाधीजीने भी उनको शीघ्र ही जयपुर जानेकी सलाह दी और कहा कि अपन होकर तो लडाई शुरू नहीं करना है, परन्तु स्टेटवाले लडना ही चाहें तो उपाय नही।

२. राजा ज्ञाननाथ जो सर बीचमके बाद जयपुरके प्रधान मन्त्री बनाए गये थे।

ऐसे मौके भी आये जब बातचीत खतम होती हुई मालूम पड़ने लगी। वैसे प्राइम मिनिस्टर परिश्रमी और लगन वाले आदमी तो मालम होते हैं। इनकी मनोवृत्ति कुछ ठीक रहे तो सभव है ठीक ठीक काम चल जावे।

९ मार्च ३९ के नोटिफिकेशनको वापस लेनेके लिये लिखे मेरे पत्रके उत्तरमे कौसिलने यह जानना चाहा कि नोटिफिकेशनमें आपत्ति-जनक बात कौनसी है ? ऐसी हालतमे नोटिफिकेशनके डिटेलके बारेमे बातचीत करनी पडी। प्राइम मिनिस्टरने यह तो शुरूमे ही जाहिर कर दिया कि प्रजा मण्डलके नामके बारेमे वे कोई आपत्ति नहीं उठायेंगे और यहाका पदाधिकारी बाहरकी किसी सस्थाका पदाधिकारी न रह सके इस बात पर भी आग्रह नही करेगे। बाकी चार बाते रही। उनमेंसे प्रजा मण्डलका मेम्बर बननेका हकदार कौन है, यह सवाल विशेष कठिनाईके बिना ही साफ हो गया। दूसरा महाराजके प्रति भक्तिका सवाल भी हल हो गया क्योकि महाराजकी छत्रछायामे उत्तरदायी शासन चाहनेका अर्थ महाराजके प्रति भक्ति शामिल समझ ली गई। तीसरे प्रजा की शिकायतोको मिटानेके लिये कानूनी उपाय काममे लेनेकी शर्तके बारेमें भी काफी झझट होनेके बाद समझौता हो जानेकी सूरत हो रही है। इस मामलेमें प्राइम मिनिस्टरका जोर इसी बात पर रहा कि हम लोग जनताके पास न पहुचे और सरकारने कहकर ही शिकायतोको मिटवानेकी कोशिश करे। जनताके पास पहुचनेमे किसी प्रकारकी रुकावट स्वीकार करनेसे हम लोग साफ इन्कार हो गये। तब यह सवाल प्राय ठीक होनेकी दशामें आ गया। चौथा सवाल बाहरकी सस्थाओंसे सम्बन्ध (affiliation) न रखनेका है। इस बारेमे प्राइम मिनिस्टरका आग्रह है कि यह बात विधानमें साफ होनी चाहिये। इन चार बातोंके अलावा उत्तरदायी शासन प्राप्त करनेके उद्देश्यके बारेमे बडी आपत्ति प्रकट की गई। परन्तु इसमे अपनी ओरसे कुछ भी परिवर्तन न करनेका निश्चय प्रकट करनेके बाद प्राइम मिनिस्टरका यह आग्रह रहा है कि object शब्दके पहले ultimate शब्द और जोड दिया जाय। एक आपत्ति जयपुर राज्यके बाहर रहने वाले जयपुर निवासियोकी प्रवासी कमेटियाँ बनानेके बारेमे उठाई गई है। अब असलमें खास मत भेद तीन सवालोंके बारेमे है। अपनी ओरसे रजिस्ट्रेशनके आवेदन पत्रमें इन तीनों बातोको साफ कर देनेकी तय्यारी है। परन्तु object के पहले ultimate

जोडनेकी तय्यारी नही है। और प्रवासी कमेटियोके वारेमें भी अडे रहनेका विचार है। वाहरकी सस्थाओंसे सम्बन्ध न रखनेकी बात सिद्वान्तमें ठीक नही मालूम होती, हालाकि व्यवहारमे विशेष हानि नही दिखाई देती है।

प्राइम मिनिस्टर आज वाहर गये है। ७-४ को वापस आयेंगे तब फिर मिलना होगा। इस समय तो यही आशा है कि मत भेदके सवाल ठीक हो जायेंगे। और अगर हो गये तो प्राइम मिनिस्टरका कहना है कि ये कौसिलकी १०-४ की बैठकमें इन सवालका अन्तिम फैसला करवा देंगे। महाराजसे मिलना नही हो सका। समझौता हो जानेके वाद मिलना सभव हो सकता है। महाराजने अपनी तरफसे कुछ जोर तो लगाया मालूम होता है। कमसे कम इतना स्पष्ट है कि ये लोग लड पडने पर तुले हुए नही दीखते।

समझौता हो गया तब तो सभव है मै वर्किंग कमेटीकी बैठकके लिये चला आऊ। समझौता न हुआ तब तो आनेका सवाल है ही नही। समझौता हो जानेकी सूरतमे भी शायद मैं १५-२० दिन इधर ही ठहरनेका विचार कर लू।

रजिस्ट्रेशनके लिये जो आवेदन पत्र देनेका विचार है उसकी तथा विधान की नकल आपके पास भेजी है। इस सबधमें आपको कुछ सूचना करनी हो तो मझमे ७-४ को न ६७ पर जयपुर परसनल फोन करवा दे-खासकर विधानमे object के पहले ultimate जोडने न जोडनेके वारेमे और वाहरके affiliation के वारेमें।

जमनालाल बजाजका प्रणाम

(नकल परसे लिया गया)

: ३३५ :

सेवाग्राम, वर्धा,
७-४-४०

भाई जमनालालजी,

आपका खत पहुचा आजकी डाकम और मैंने तुरत ही पू बापूजीको दे दिया। उन्होंने पढके कहा है कि कोई सूचनाकी जरूरत नही है। इस लिये मैं फोन नही कर रही हू। पू बापूजी अच्छे है, काममे

मगन है। कहते हैं जब आप आयेंगे तब बातचीत हो जायेगी ।

आशा है आप स्वस्थ है और आपके काममें सफलता मिलेगी।

आपकी बहिन

अमृत कुंवर

: ३३६ :

WARDHA,
12-4-40

JAMNALAL BAJAJ,
JAIPUR

Congratulations![1] Stay as long as necessary

—*Bapu*

: ३३७ :

सेगाव,
१५-५-४०

पू काकाजी,

पू बापूजी लिखवाते है कि रामेश्वरी नेहरूका आज तार आया था कि बहुत ही आवश्यकता हो तो वह आ सकती है, नही तो उनका आनेका इरादा नही होता। बापूजीने उनको तार कर दीया है कि ऐसी आवश्यकता नही है।[2]

श्री जानकी काकीको प्रणाम। सावित्री इत्यादिको नमस्ते।

सुशीला नय्यर

पुनश्च – बापू कहते है कि हरिजनमें तो किसीके मरनेकी आमतौर पर नोंध ली ही नहीं जाती। किसी खास मौके पर ली जाती है, उसका खास कारण रहता है।

१ जयपुर सरकार और जयपुर राज्य प्रजा मंडलमें समझौता हो जाने पर।

२ जयपुरमें १८-५-४० को होनेवाले जयपुर राज्य प्रजा मंडलके अधिवेशनके उपलक्षमें श्री रामेश्वरी नेहरूको आनेके लिए बुलाया गया था।

: ३३८ :

WARDHAGANJ,
18-5-40

JAMNALALJI,

SHREE, BOMBAY

Have not courage ask Sarojinidevi this time. She is ill [1]

— *Bapu*

: ३३९ :

सेवाग्राम,
२०–५–४०

चि जमनालाल,

सरोजीनीदेवीने लखवानी मारी हिम्मत न हती। श्री काटजु अजाण्या न गणाय। प्रसिद्ध वकील छे ने कांग्रेसमा प्रधान हता। मोटो होद्दो हतो। लोकोए आवा मोहो पण छोडवा जोईए।

ओम नापास थई लागे छे। एम होय तो निराश न थाय। फरी महेनत करीने पास थायज। एक प्रसिद्ध माणस २१ वार नापास थयो पण छेवटे खतथी पास थयो।

बापुना आशीर्वाद

: ३४० :

सेवाग्राम,
१–६–४०

चि जमनालाल,

तुमारा खत मिला। काटजुजीने मुझे लिखा था। जयपुरका तो अच्छा हो गया माना जाय। हमारे कोई कार्यकर्ता जलदबाजी न करे। भाषण देना ही पड़े तो खादी इ पर दे। आर्थिक व सामाजिक सुधारके लिये काफी अवकाश है।

तुमारी तबीयत बिलकुल अच्छी मानी जाय? जानकीदेवी कैसे हैं?

१ ऊपरका पत्र (नं ३३७) मिलनेके बाद जमनालालजीने १७-५-४० को बम्बईसे गांधीजीको तार दिया था कि वे श्री सरोजिनी नायडूको जयपुर भिजवानेका प्रयत्न करें। यह तार उसका जवाब है।

क्या दा पुरुषोत्तम पटेलका देहात हुआ? उनकी पत्नीका नाम क्या है। . सुना हूआ है।

दा पटलना पत्नीनो कागळ साथे छे।

: ३४१ :

श्री वर्धा,
१९–८–४०

पूज्य बापूजी,

वाइसरायके नाम जो पत्र भेजा जा रहा है उसकी नकल आपके पास भेज रहा हू। आपको इसमे कोई खास सूचना करना आवश्यक मालूम देवे तो पत्र लानेवालेके साथ लिखकर भिजा देवे ।

: ३४२ :

(सेवाग्राम)
१९–८–४०

चि जमनालाल,

आ साथे कागळ सुधारीने पाछो मोकलु छु ।

बापुना आशीर्वाद

: ३४३ :

सेवाग्राम,
वर्धा, सी पी
७–९–४०

चि जमनालाल

साथका खत क्या हे? जो उचित समजा जाय किया जाय

राजेंद्रबाबू अच्छे होंगे। तुमारी तबीयत कैसे रहती है। हरिभाउने लिखा है। उस बारेमें मैं ह से [1] मे लिखुगा।

: ३४४ :
अ

ट्रेनमा,
२५-९-४०

चि जमनालाल,

तमारं जेपुरवाळु आजेज वाच्यु। हरिजन सारु लखवा वेठो पण विचार्युं के हमणा न लखवु। लखवाथी तमे वधारे आखे चडशो एम धारी माटी वाळयु। पण जो तमे धारो के मारा लखवाथी फायदोज थाय तो हु लखवा तैयार छु। तमारी ने राजेन्द्रबाबुनी तबीयत केम छे? हु शीमला जाउ छु। सेवाग्राम रविवारे के सोमवारे पाछो वळीश।

त्यानु काम तमने सतोष थाय तेम चालतु हशे।

: ३४५ :

WARDHA,
5-7-41

SETH JAMNALALJI,
BIRLA AROGYA MANDIR,
NASIK ROAD

Simla wire received welcoming you Come [2]

—*Bapu*

१ "हरिजन सेवक" साप्ताहिक।

२ शिमलासे राजकुमारी अमृत कौरने गांधीजीको तार भेजा था कि वे जमनालालजीको स्वास्थ्य सुधारके लिए शिमलामें उनके साथ रहनेके लिए भेज देवें। यह खबर गांधीजीने इस तारसे जमनालालजीको भेजी है, और उनको शिमला जानेसे पहले वर्धा आनेके लिए लिखा है।

: ३४६ :
अ

सेवाग्राम,
१६-८-४१

चि. जमनालाल,

तारो जीव समागममां रहेवा करशे। त्यानो धार्यो लाभ मळे तो मने भारे शांति मळवानी छे। तथा आधार तो राजकुमारीना निर्मळ प्रेम उपर रहेवानो छे। पण तमारी मानसिक दशानो पण भाग लेवो हशे। खावामां के रहेवामां फेरफार करवो होय तो मने लखवानी पण [illegible] करवो।

मदालसा आजे मीराबहेन साथे गई छे। एनी भावनाओ तो बहु ऊंची छे। एनुं शरीर सारुं थई जाय ने निर्विघ्ने सुवावड थई जाय तो ए नीवडशे एम मानुं छुं। विनोबानुं शिक्षण करवुं जोईए।

बापुना आशीर्वाद

[illegible] बधा हाल पाडी नाख्या छे।

: ३४७ :

मनोर विला,
शिमला,
१७-७-४१

पू. बापू,

मैं यहां सकुशल पहुंच गया। ट्रेन कालका दो घंटे लेट पहुंची, तो भी मैं बहनके पास ११ बजेके पहले पहुंच गया। स्नान, भोजन, हो गया। आपका पत्र बहन व डाक्टर साहबने[1] विचारपूर्वक पढ़ा — मेरे खानपानके बारेमें। यहां तो रजवाड़ेसे भी ज्यादा बादशाही आराम मिल रहा है। मैं कोशिश तो यह करूंगा कि बहनको कम तकलीफ देकर मैं ज्यादा आराम ले सकूं। देवदासभाई, ठक्कर बापा देहलीमें मिले थे। राजी हैं।

१ ले. क. कुंवर डा. शमशेरसिंग, राजकुमारी अमृत कौरके बड़े भाई।

: ३४८ :

शिमला वेस्ट,
१८-७-४१

पूज्य बापूजी,

कल भेजा हुआ तार व पत्र तो मिल गया होगा। आपका पत्र बहनके पत्रमे मिला। मेरा ठीक जम रहा है। मैं इस बातका पूरा ख्याल रखता हू कि यहा बोझरूप न होने पाऊ। घरके सब ठीक प्रेम करते है। कल शामको राजकुमारीबहनके साथ घूमने गया था। आज सुबह मुन्शीजी व तोफाबाई (उनका कुत्ता) व उसके दो अर्दलीके साथ घूम आया। मै तो ज्यादा घूमना चाहता था परन्तु तोफाके कारण २॥। माईल अन्दाज घूमना हुआ। शामको इतना और हो जायगा। घूमना तो मै बढा लूगा। आज तीन दिन बाद पहिले कसरत बादमें मालिश हुई। मेरा खानेका चार दफा रखना पडेगा ऐसा मालूम देता है। सुबह घूमकर आने पर दूध, थोडे फल, आम या दूसरे, सेव, आड़, वगेरह, ११। बजे साग, फल, दही (अन्न नही), ४ बजे चायके समय पाच तोले अन्दाजके टोस्ट, साग (सेलेड डाले हुए) व टमाटरका रस, फल। शामको साढे सात बजे घूमकर आनेके बाद सागका रस, साग, दूध, फल। इस तरह अभी चलाकर देखना है। अगर भविष्यमे तीन बारमे व्यवस्था ठीक बैठ जायगी तो वैसा कर लूगा। साग बहुत ही अच्छी तरहसे स्टीम किये हुए- सिजाये हुए मिलते है। फल भी आडू (पीच), नासपाती, सेव, आम मिल जाते है। दूध घरकी गायोका उत्तम मिलता है। दाल, चावल, मिठाई, केले वगेरहका सम्बन्ध तो नही आया है। आलूके कल थोडेसे टुकडे ले लिये थे। आजसे बन्द कर दिये है। मटर भी बन्द कर दी है। यहा ,सलगम आदिके साग भी बनाते है। जमीकन्द तो मुझे पसन्द नही है। इस बारेमे सूचना करना हो तो कर दीजिएगा। हाँ, आज छोटी छोटी सूखी भिंडी बहुत थोडे घीमे भुजी हुई (तली हुई) दी थी। स्वाद तो लगती है। इस बारेमे, आप ज्यादा घीमे तली हुई तो पसन्द नही करते है, यह मैने कह दिया है। खान-पानका मै व बहन मिलकर सुन्दर तरहसे जमा लेगे। मानसिक दृढताके बारेमें तो कुछ समय बाद ही मालूम हो सकेगा। आपका आशीर्वाद तो है ही। बहनका प्रेम भी दीख रहा है। मुझे पूरा विश्वास होने पर ही लिख सकूगा। आप विशेष चिता न कर रोज आशीर्वाद प्रदान

मिलनेका मोह छोड दिया है। मेरी इच्छा यहा ता १०-१२ अगस्त तक रहनेकी है। वादमे दो चार रोज हरिद्वार, गुरुकुलमे (अभयजीके पास) रहनेकी है। हरिद्वार गये भी मुझे वहुत वर्ष हो गये। वहा मुझे गगाके कारण अच्छा मालूम देता है। वहासे, अगर मभव हुआ तो, देहरादूनमे जवाहरलालजीसे मिल आऊगा। वादमे चि ओम, राजनारायणके पास नैनीताल एक सप्ताह रहनेका इरादा है। ओम वरावर लिखती रहती है। वादमे अगर आपकी इजाजत मिल जाएगी तो एक महीना सीकर रह आऊँगा। अगस्तमे वहा मौसम ठीक हो जाता है। ज्यादा समय यहा रहनेसे जो लाभ व प्रेम मुझे मिला है, उसमें कम होनेका मुझे डर बना रहेगा। मैंने मेरा यह प्रोग्राम वहनको वता दिया है। आप इजाजत देंगे तो निश्चय कर लूगा। दूसरी वार फिर कभी आना हुआ तो ज्यादा समय तक भी रह सकूगा। क्योकि फिर तो मै इस कुटुम्वका ही व्यक्ति वनकर आऊँगा। वैसी हालतमें मुझे भी सकोच नही रहेगा और कुटुम्वकी भी थोडी वहुत सेवा कर सकूगा। मेरा तो अव यह मानना होता जा रहा है कि इस आदर्श कुटुम्वका परिचय आपकी अपेक्षा मेरा ज्यादा हो जाना सम्भव है। आशा है आपको ईर्ष्या तो नही होगी। रायजादा हसराजजी अभी मिलने आये है। आपको प्रणाम लिखाते है। स्वास्थ्य इनका ठीक है।

: ३५१ :

सेवाग्राम,
२७-७-४१

चि जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो। मारी प्रार्थना तो चालेज छे। अने तमारा प्रयत्न उपर मारी श्रद्धा छे। राजकुमारीनो सत्सग छे ने वीजी रिते पण त्यानु वातावरण साफ छे एटले मे तो त्याना रहेठाणनी मोटी आशा वाधी छे। मदालसा खूब खुश छे। ए सारी रीते खाय छे। कुवारनो पाक तेने भावे छे। ए खावानी छुट आपी छे। जे खाय छे ते वरोवर स्वादथी। जानकीदेवी पण ठीक आनदमा रहे छे एटले आ तरफ तो वधु कुशळ छे।

घनश्यामदास परम दीवस गया।

: ३५२ :

सेवाग्राम,
३०-७-४१

चि. जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो। तमने गमे त्या लगीज त्या रहेवानु छे जो मारा करता वधारे सारो नवध ए कुटुब साथे वाधो तो मने गमे ईर्ष्या नहि आवे। पण आजथी त्या रहेताज डरो छो ए क्यायी मारा जेवा सबध बाधवाना? ज्या लगी रा कु त्या रहे त्या लगी रहेवामा हरकत न होय। पण जेम तमने ठीक लागे तेम करजो। जवाहरलालने मळो ए तो सारुज छे। मळवानी वात छापामा न आववा देशो। देहरादून पासे आनदमयी देवी रहे छे। ते कमलानी गुरु हती। सारी बाई कहेवाय छे। मळी शकाय तो मळजो। बहु दोडधाम न करता।

: ३५३ :

सेवाग्राम,
१४-८-४१

चि जमनालाल,

तमारी तबीयत त्या सारी थती जती जणाय छे। दा मेकलना कहेवा परथी जणाय छे के गोठणनी अडचण तो रही जशे। जो त्याज अटके तो कई हरकत हु नथी जोतो। त्या मानसिक शाति मळे त्या लगी न खसशो।

बाईलीने मळवानो आग्रह न राखवो। सहजे मळातु होय तो हरकत नथी पण प्रयत्नथी मळाय तो सारु नहि।

रामकृष्णने मळीने बहु सतोष थयो। ए जेलनो पूर्ण लाभ उठावी रह्यो छे।

बापुना आशीर्वाद

: ३५४ :

सेवाग्राम,
१७-८-४१

चि जमनालाल,

तमारो कागळ मळ्यो। अही आवी जजो। पछी मीकर वि नु विचारशु। आज श्राद्धमा[1] पड्यो छु। मृदु आवी छे। एटले वधारे नहि। ओम अने तेना पतिदेवने आशीर्वाद।

: ३५५ :

(मिला २१-८-४१)

JAMNALALJI,
SIVALAYA,
DEHRADUN

Glad Stay at will

—*Bapu*

(जमनालालजीकी डायरी परसे लिया गया)

: ३५६ :

WARDHAGANJ,
22-8-41

JAMNALALJI,
SIVALAYA,
RAIPUR, DEHRADUN

Mahesh well but requires observation Gives Madalsa good company Allow stay unless you need badly

—*Bapu*

: ३५७ :

सेवाग्राम,
२४-८-४१

चि जमनालाल,

तमारा तारनो जवाब आप्यो छे तेनो जवाब पण फरी वळ्यो। महेशने विषे निश्चितता नथी। घणा वर्षनु दर्द शात छे पण जडमूळथी

१. गुरुदेव रवींद्रनाथ टागोरका निधन ७-८-४१ को हुआ था। यहा उनके श्राद्धका उल्लेख है।

गयु न मनाय। खास खोराक वि पर छे। थाक पण चढे। आ स्थितिमा खास काम विना न काढवो जोईए। तमने कई मददनी जरूर छे के ? छे तो शी ?

शाताने त्या बोलाववामा मने कई अर्थ नथी लागतो। जो तेना हितार्थे होय तो तमे त्या पूरो अनुभव लो पछी तेने स्वतंत्र मोकलाय। जो तेनी सेवानी जरूर होय तो मने लागे छे के ते विषे सयम राखवार्थीज त्यानो पूरो लाभ मळे। आ मारो अभिप्राय छे। एम छता तमे इच्छशो ते हु करीश। शाताने पूछवानु तो बाकी छे।

वल्लभभाई छुटचा छे। तमने पोलीपस नथी एटले घणो डर हतो एनो शात थयो।

बापुना आशीर्वाद

: ३५८ :

WARDHA,
25-8-41

SETH JAMNALALJI,
SIVALAYA,
RAIPUR, DEHRADUN

Shanta has no desire Willing do as you desire My opinion she had better be sent there later Do you need any (?) service Wrote fully yesterday

—*Bapu*

: ३५९ :
अ

सेवाग्राम,
२५-८-४१

चि. जमनालाल,

आ साथे शातानी चिठ्ठी छे। अक्षर त्या पहोचता झाखा पडी जशे न उकले तो वाचवानी तकलीफ न भोगवता। एनो सार में आजना तारमा आप्यो छे। शाताने इच्छाए नथी अनिच्छाए नथी। ए तो तमारामा समाई गई छे। एटले तमारी इच्छा ए एनी इच्छा। ए छे पण बरोबर। तेथी सवाल केवळ तेना हितनो रह्यो। तमे त्या बहु लावो

वखत रहेता हो तो शाता त्या आवी कदाच कईक मेळवे। मारी दृष्टिए तेणे त्या तमारी गेरहाजरीमा रहेवु जोईए। कदाच तेने त्या रहेवानी जरूर पण न होय। भक्ति तो तेनामा छे। त्यानु वातावरण तेने काम करती करे के नहि ए विचारवानु रह्यु। ते आ भवे बीजाने गुरु नहि करे। तेना गुरु तमे छो एटले तमारे तो तेने आज्ञाज करवी रही। आ कागळ वहेवारमाज तमारो त्या रहेवानो काळ पूरो थशे। जो तमने त्या पूर्ण शाति मळती होय ने जे मागो छो ते मळी रहेलु होय तो त्याथी न खसता। जो त्या रहेवानो निश्चय करो अथवा गमे ते करो, पण शातानी हाजरी इच्छो तो तार करजो एटले एने रवाना करीश। तमारा तारमा विचारने अवकाश हतो एटलेज तारनी आप ले करी छे। महेश अने शाता बन्ने बाबत विचारवा जेवी तो हतीज। मे अर्थ एवो कर्यो छे के बन्नेने तेमने खातर बोलाव्या छे तमारी सेवा खातर नहि। जो सेवाज हेतु होय तो नोखो विचार करवो घटे।

सरदारना आजे विशेष खबर नथी। कालनो कागळ मळ्यो हशे। मदालसा मजामा छे।

:३६०:

श्री

रायपुर-ग्रान्ट,
देहरादून,
२६-८-४१

पू. बापूजी,

मेरा स्वास्थ्य और मन बहुत ठीक है। यहा स्वाभाविक जीवन बितानेको मिल रहा है। मा[1] का प्रेम भी मुझे चाहिए जैसा मिल रहा है। मा अहिंसा व प्रेमकी मूर्ति मालूम होती है। वातावरण भी हरिस्मरण, कीर्तन व मौनका रहता है। मा पढी लिखी न होते हुए भी जटिल प्रश्नोको भी बहुत सुन्दर तौरसे समझाती है। सदा आनन्दमें रहती है। इनके बारेमें बगलाम काफी लिखा गया है। अग्रेजी, हिन्दीमें लिखा हुआ तो है परन्तु अभी छपा नही है। माके एक भक्त ज्योतिशचन्द्र राय, जिन्हे यहा भाई कहा जाता था, उन्होने आपसे

१. माता आनदमयी।

पत्रव्यवहार भी किया था। उनका स्वर्गवास हो गया है। माके पति भोलानाथजी, जिन्होने माके उपदेशसे सन्यास ले लिया था, कहते है पहले वहुत क्रोधी थे। वादमे धीरे-धीरे क्रोध कम हो गया वतलाते है। उनकी सेवा भी माने खूब की थी। उनका स्वर्गवास भी यही किशन-पुर आश्रममे हो गया। मा गृहस्थी होते हुए भी बाल ब्रह्मचारिणी बताते है। सत्यका ठीक आग्रह रखती है। यहाका जीवन भी सीधा सादा है। कई विद्वान व सज्जन पुरुष माके भक्त है। मा तो अपना सम्प्रदाय या गुरुकुल फैलाना नही चाहती परन्तु भक्त व पुजारी लोग जैसा दस्तूर है आडम्वर थोडा वहुत रचते ही रहते है। यहाका सृष्टि सौदर्य भी अच्छा है, झरनेका पानी भी स्वास्थ्यके लिये लाभकारक है। इन सव वातोका विचार कर करीव एक एकड जमीन माके हालके स्थानके पास ही लेनेकी वात की है। उस पर दो तीन हजार रुपये लगाकर छोटासा मकान वनानेका विचार किया है। जव कभी मन उठ गया या आरामकी जरूरत हुई, छुट्टी मिली तो, यहा कुछ रोज आकर रह जानेसे शरीर व मनकी थकावट कम होना सम्भव है।

मेरा विचार ता २ या ३-९ को यहासे दो रोजके लिये हरिद्वार जानेका हो रहा है। वहासे नैनीताल। शायद भाई जवाहरलालसे दुवारा दो चार रोजमे मिलना हो जायेगा। वर्धा ता २१ सप्टेम्वर तक तो पहुचना है ही। क्योकि मै जेलमे रहता तो इस तारीखको छूटता, सादी सजाके कारण।[१] इस लिये इस तारीखको आपकी सेवामे हाजर हो जाऊगा। वादमे आप मेरी शारीरिक मानसिक स्थिति समझकर जेल जानेकी आज्ञा देगे तो वहा चला ही जाऊगा, अन्यथा आपकी सलाहसे कार्यक्रम वनाऊगा। मुझे शिमला-देहरादूनकी मुसाफरीसे ठीक अनुभव व शाति लाभ हो रहा है। मुझे अव यह तो विश्वास होता जा रहा है कि मेरे घुटनेका दर्द जडसे तो जैसा डॉ दास कहते थे, वैसे जानेका नही है। टट्टी वैठनेमे तो जो तकलीफ पहले होती थी प्राय अभी भी होती है। यहा तो मै दोनो समय मैदानमे जाता हू, खुरपी व फावडी लेकर। कई वार दो पत्थर रखकर कमोडके माफिक वैठनेका कर लिया करता हू। अन्यथा जमीन पर हाथ टेककर उठना पडता है। स्नान भी झरने पर ठडे पानीसे करता हू। सुख मिलता है। सोना भी जमीन

१ जमनालालजी नागपुर जेलसे वीमारीके कारण २०-६-४१ को रिहा हुए थे उन्हें व्यक्तिगत सत्याग्रहमें ता २१-१२-४० को ९ मासकी सजा

पर ही करता हू। तेल-मालिश वगैरेको छुट्टी दे रखी है। यहा व्यवस्था होनेमे भी कठिनाई है। वातावरणमें भी इतना समय निकाला नही जाता। भोजनका जरूर ख्याल रखता हू। वजन बढनेका तो ज्यादा डर नही मालूम देता, क्योंकि भूख प्राय बनी ही रहती है। ताकत कुछ तो बढी मालूम देती है। परन्तु जेलमें ट्रीटमेंट शुरु करनेके पहले जितनी मालूम देती थी उतनी नही है। घूमना, फिरना दोनो समय करता तो हू, परन्तु घूमनेका शिमलामे जितना उत्साह था उतना यहा पर नही है, शायद यहा गर्मी पडती है—शिमलामे ठड ज्यादा रहती थी इससे। मेरी इच्छा तो हो रही है कि श्री आनन्दमयी माकी आपसे भेट हो। आपकी भी इच्छा होगी तो फिर प्रयत्न करके इन्हे वर्धा लानेकी व्यवस्था करूगा। मुझे 'सेठजी' कहा जाना अच्छा नही लगता था इस लिये 'भैया' या 'भैयाजी' कहना शुरु हो गया है। माको भी यह पसन्द आया है।

आपसे वहा आने पर इतने विपयो पर मुझे बातें करनी है—मा आनन्दमयीजी, सुभाप बोस, इन्दू जवाहरलाल, सर फ्रान्सिस, व मेरा भावी प्रोग्राम। यह आपको पहलेसे सूचना दे रखता हू कि जिसमे आप मेरे लिये ठीक तौरमे समय रख सकें। कुछ वाते बिलकुल खानगीमें ही करनी होगी। जवाहरलाल व इन्दूसे भी ठीक बातें हुई है, घरबारकी। आपको बहुतसी बाते तो शायद मेरे पहुचनेके पहले ही मालूम हो जाना सम्भव है। पू राजकुमारीबहनके पत्र आते रहते है। इनका स्वास्थ्य ठीक नही रहता है। आप उन्हे सेवाग्राम बुला रहे है, परन्तु मेरी समझ है कि इन्हे सेवाग्राम स्वास्थ्य बिलकुल ठीक हो जाने पर ही बुलाया जाना चाहिये। इनकी व इनके भाई, भाभी सबोंकी यही इच्छा मुझे मालूम हुई थी। इस लिये आपको सूचना रूपसे लिख देता हू। बाकी आप उचित समझे वैसा करे।

यह पत्र चि मदु आपको सुना देगी व वह अपने पास आपकी इजाजत होगी तो रख लेगी।

तार आपका अभी मिला। चि शान्ताको अभी भेजनेकी जरूरत नही। पीछेसे वह तथा जानकीदेवी आना चाहेगी तो आ जावेगी। मैंने तार इसी प्रकारका आज भेजा है। जा. ब.

: ३६१ :

WARDHAGANJ,
30-8-41

SETH JAMNALALJI,
CARE HARNANDRAY SURAJMAL,
KANKHAL

All well Come Mataji

—*Bapu*

: ३६२ :

२१-९-४१

बापूजी,

मेरा कार्यक्रम

१. स्वास्थ्य

शारीरिक—वजन १५५ अन्दाज, व्हायटेलिटी कम हो गई, नागपुरमे ज्वर आनेके बाद शिमला व काठगोदाममे भी ज्वर आया, निकल तो जल्दी गया। घुटनेमें दर्द है ही, नैनीतालमे ज्यादा मालूम दिया। थकावट जल्दी मालूम होती है।

मानसिक—पहिलेसे अच्छी स्थिति होनी चाहिये। भक्तिकी ओर मनको ज्यादा लगाना चाहता हूँ, उससे सन्तोष मिलता है। रायपुर प्रान्टमे ठीक शान्ति मिली, वातावरण भी ठीक लगा। पू आनन्दमयीजीके प्रेम व शान्त स्वभावसे भी लाभ मिला।[1]

[1] देहरादूनसे लौटनेके बाद गांधीजीको दिखानेके लिए जमनालालजीने ऊपरकी रिपोर्ट बनाना शुरू किया था। लेकिन जमनालालजीकी डायरीसे मालूम होता है कि यह रिपोर्ट पूरी हो जानेके पहले ही उसी दिन वे गांधीजीसे सेवाग्राममें मिले और उस समय उन्होंने अपने भावी कार्यक्रमके बारेमें उनसे बातचीत की। इस विषयमें जमनालालजीकी डायरीमें निम्न नोंध है:—

"बापूसे प्रणाम—बातचीत। मेरे प्रोग्रामके बारेमें मैंने ४ प्रस्ताव रखे।

१. सत्याग्रह करके जेल जाना — बिलकुल नहीं।

२ जयपुरका कार्य करना — नहीं।

३ पौनार या अन्य स्थानमें चर्खा व भजन, वाचनमें समय बिताना — यह भी ठीक नहीं।

[अगले पृष्ठ पर चालू]

: ३६३ :

वर्धा,
२-१०-४१

पू बापूजी,

चि इन्दूका पत्र व फिरोजका पत्र व तार आया हुआ भेज रहा हू। मैंने फिरोजको तार तो भेज दिया था कि ता १२ के बाद आए क्योंकि मैं बम्बई, पचगनी जा रहा हू। वह तो कल आ ही जाता दिखता है। उसे बम्बई तक साथ ले जाऊ या यहा आपसे मिलने छोड दू ?

मैंने आपका तार तो श्री मथुरादासभाईको भेज दिया है।[1] उसमें इतना बढा दिया है कि इतवार को पहुचूगा। डा जीवराजको भी लिख रहा हू कि मैं सीधा जाऊँ या बम्बई होते हुए। कल तार मिल जाएगा। मथुरादासका तार आवे तो सूचित करें।

: ३६४ :

(सेवाग्राम)
२-१०-४१

चि जमनालाल,

खत मिला। मुझे लगता है कि फिरोझको तुम्हारे साथ हि जाना

[पिछले पृष्ठसे चालू]

४ गो सेवाका कार्य, यदि आप उपयुक्त व जरूरी इस समय समझते हों तो करना — यह कार्य मुझे पसन्द है, अवश्य किया जावे।"

इसके बाद तुरन्त ही जमनालालजी गो सेवाके काममें जुट पड़े। ९ दिन बाद ही उन्होंने वर्धामें अखिल भारत गो सेवा सघकी सभा बुलाई जिसका उद्-घाटन गाधीजीने किया और जमनालालजीकी नई जिम्मेदारीकी सफलताके लिए आशीर्वाद दिया। नालवाडीके पास ही, जहा श्री विनोबाजीकी देखरेखमें एक गोशाला भी चलती थी, जमनालालजीके रहनेके लिए एक कच्ची कुटिया बनाई गई, जिसका नाम गोपुरी रखा गया, और वे वहीं रहने लगे।

१ गाधीजीने निम्न तार भिजवानेके लिए जमनालालजीको दिया था —

"Mathuradas Trikamji,
Homi Villa, Panchgani

Jamnalalji leaving tomorrow see you Sunday God's will our law Wire condition —Bapu"

अच्छा होगा। वह खुद रहना चाहे तो मुझे कुछ हरज नहि है। कल आओगे तो अधिक बात कर सकेंगे।

मदालसा ठीक होगी।

: ३६५ :

४-११-४१

चि जमनालाल,

आ बाबतमा तो तमेज दोरी शको।[1] जे लखवु होय ते लखजो। मे तार कर्यो छे के जमनालालजीने पूछाव्यु छे।

: ३६६ :

सेवाग्राम,
६-११-४१

चि जमनालाल,

खु बहनसे[2] बात करुंगा। कोटीजी पर पत्र इसके साथ है। मौनसे तो फायदा होना हि है। वजन लेते हो ?

बापूके आशीर्वाद

: ३६७ :

स्वराज्य आश्रम,
बारडोली,
२१-१२-४१

प्रिय जमनालालभाई,

कल मौलाना सा और जवाहरलाल यहा पहुच गये। ए आइ सी सी के बारेमें चर्चा हुई। यह तय पाया गया है —अभी तक— कि यह मीटिंग वर्धामें हो। पू बापूके बनारस जानेके पहले—याने जनवरी १२ से १९ के बीचमें। वर्किंग कमिटी अकसर पहले और ए आइ सी सी के बादमे भी बैठती है। सो ए आइ सी सी यदि १५ को हो तो बापू १९ या २० को बनारसके लिये रवाना हो सकेंगे।

१ रिषभदास राकाने अपने भावी कार्यक्रमके बारेमे गाधीजीसे पूछा था।
२ खुरशिदबहन नवरोजी।

बापू कहते है कि आपके लिये उचित होगा यदि आप तुरन्त तारके द्वारा एक निमन्त्रण यहा पर मौलाना सा को भेजे कि ए आइ सी सी वर्धामे हो।

बापूका स्वास्थ्य ठीक है। पू बा भी आज अच्छी है, लेकिन कमजोरी तो है ही। मुझे कुछ सर्दी हो गई है। बाकी सब अच्छा चलता है। दुर्गाबहिन उनाई पहुचते बीमार हो गई। इस लिये महादेवभाई वहासे अभीतक वापिस नही आ सके। शायद आज आ जाए। सरदारकी तबीयत धीरे धीरे सुधर रही है।

आज और लिखनेका समय नही। आप अच्छे होगे। प्यार ।

आपकी बहिन,

: ३६८ :
अ

स्वराज्य आश्रम,
बारडोली,
२१-१२-४१

चि जमनालाल,

भाई जुगलकिशोरना कागळ प्रमाणे चर्खा सघ मार्फत काम लेवु । कागडामे बन सके इतना पैसा तो अवश्य खरचीशु तेमज पिलानी विषे।

मारा विचार प्रमाणे ए आइ सी सी नी सभा वर्धामा थाय एज सारु कहेवाय। तमने पण ए बरोबर लागे तो तारथी निमत्रण मोकलजो। सभा मारा आव्या पछीनी तारीखे ने १९ मी तारीख पहेला पूरी थवी जोईशे।

इदु अहि आवी छे।

मदालसा सारी हशे। बाळकनी वृद्धि चालती हशे।

तमारी गेरहाजरी मने पोताने तो चर्खा सघमा बहु जणाई ने हवे व क[1] मा जणाशे। पण तमने आग्रह न करवामाज मे श्रेय जोयु छे।

मारी तबीयत सारी रहे छे। तमारी ठीक हशे।

१. कांग्रेस वर्किंग कमिटी।

२७ मी जानेवारी पछी गो सेवा सघनी सभा राखी शको छो।

बापुना आशीर्वाद

जानकीमैया आवी गई ? तबीयत बगाडी नथी ना ?

: ३६९ :

गोपुरी, वर्धा,
२४-१२-४१

पूज्य बापूजी,

आपका ता २१-१२ का पत्र अभी मिला। पू राजकुमारीवहनका पत्र यहा कल आ गया था, परतु मै पू विनोबाके साथ भानखेड गया था। आज सुबह १० बजे वापस आते ही उन्हे तार कर दिया था कि वह समय वर्धाके लिये अनुकूल नही रहेगा, क्योकि उस समय इमारते वगेरह खाली नही रहेगी। तीन सौ आदमियोके लिये कैम्प वगेरहकी व्यवस्था करनेमे समयकी कमी भी है, तथा खर्चा भी बहुत ज्यादा आयेगा। अगर नागपुर, अकोला, करनेका विचार हो तो पूनमचन्द, ब्रिजलालजीसे[१] पूछवाकर निमन्त्रण भिजवाया जा सकता है।

श्री जुगलकिशोरजीको पत्र आपने या पू जाजूजीने वहासे भिजवा दिया होगा ?

चि मदु व वेवी खुश है, श्री जानकीदेवी व पू मा अभी सीकरसे नही आये है।

क्या चि इन्दू आपके साथ यहा आनेवाली है ?

गो सेवा सघकी कॉन्फरेस ता १,२,३,४ फरवरीको रक्खी गई है। सर दातार सिंह भी उस समय आवेंगे ही। और भी कुछ व्यक्तियोको बुलवा रहा हू।

मुझे अपने काममे, गो सेवा सघमे व पू विनोबाके साथ या अकेले ही देहातोमे घूमनेमे ठीक शाति व उत्साह मिलता जा रहा है। मेरा गाडा ठीक चल रहा है। मेरा पत्र तो श्री मौलाना सा को समयपर मिल ही गया होगा।

जमनालाल बजाजका प्रणाम

(नकल परसे लिया गया)

१ श्री पूनमचद राका और श्री ब्रिजलाल बियाणी उस समय क्रमश नागपुर और विदर्भ काग्रेस कमिटीके अध्यक्ष थे।

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

स्वराज्य आश्रम,
वारडोली,
२४–१२–४१

चि जमनालाल,

मै कैसा वेवकुफ और स्वार्थी भी हू ? तुमारी तवीयतका कुछ ख्याल नहि किया। सिर्फ मेरा हि किया। तुमारी इजाजत मागी और मैंने राह भी न देखी। और कमिटीसे आग्रह किया कि मिटीग वर्धामें रखी जाय। उसमे मैंने हिंसा की और वह भी मामुली नहि। मित्रताका, तुमारी उदारताका दुरुपयोग किया। तुमारे पास माफी मागनेसे प्रायश्चित्त नहि होता है। सच्चा प्रायश्चित्त तो वही होगा जिसे मैंने तुमारे प्रति जो निर्दयता वताई है ऐसी कभी न दुवारा तुम्हारे प्रति या अन्य कोईके प्रति वताउ।

तुमारे प्रति तो धन्यवाद हि है। तुम्हारे दिलकी वात कहनेकी तुमने हिम्मत वताई और अपनी मर्यादाका स्वीकार किया यह छोटी वात नहि है। जरासी भी चिंता न की जाय। तुम्हारे इनकारसे मेरा आदर और प्रेम वडा है – अगर वृद्धिकी गुजायश थी तो।[1]

वापुके आशीर्वाद

: ३७१ :

स्वराज्य आश्रम,
वारडोली,
२७–१२–४१

चि जमनालाल,

तुम्हारा खत मिला। मैंने पुनमचदजीका कहना इस भरोसे पर कवूल किया है कि तुमको वह कुछ भी तकलीफ नही देगे और उनमे

१ यह पत्र जमनालालजीको २७–१२–४१ को वर्धामें मिला और उसे पढकर उन्हें वडी मानसिक वेदना हुई। इस सवधम निम्न नोंध उनकी डायरीमें मिलती है —

"२७-१२-४१—पू वापूजीका २४ का लिखा हुआ पत्र मिला। उससे मुझे दुख ही पहुचा। मैंने इसका जवाव तो लिखा परन्तु सतोष नही हुआ। इस लिए भेजा नहीं। किशोरलालभाईसे सेवाग्राममें मिलकर भेजना निश्चय किया।"

"२८-१२-४१—किशोरलालभाईको वापूका पत्र दिखाया। उनको महादेवभाईने टेलीफोनसे वापूके दुखके समाचार कहे थे। उन्होंने वापूको पत्र लिखा उसीमें मैंने थोडासा लिख दिया। मैंने जो दो पत्र लिखकर रखे थे वे फाड डाले।"

इस कामको अंजाम देनेकी शक्ति है।[1] तुम्हारे इस बारेमें कुछ भी तकलीफ उठाना मेरे ख्यालके बहार है।

इंदु ए आइ सी सी के मौके पर आयगी तो सही। यहां खुश रहती है।

स्टेटस पीपल्स कानफरन्सके बारेमें जैसे हमारी बात हुइ थी मैंने तो अभिप्राय दिया है कि आफिस वर्धा आनी चाहिये।[2]

इसे बापू खतम नहीं कर सके हैं तो भी जितना लिखा है उतना भेज देनेको कहते हैं।

जल्दीमें,

: ३७२ :

स्वराज्य आश्रम,
बारडोली,
२८-१२-४१

पूज्य जमनालालजीनी पवित्र सेवामां,

प. पू. बापुजीनी आज्ञाथी आ साथे एक कापली मोकलुं छुं। प. पू. बापुजीए तो आ वांच्युं नहोतुं। गई काले सांजे फरता फरता श्री प्रताप शेठे आ कापली वांचीने गभराता गभराता आपनी तबियत विषे खबर पूछी। बापुजी तो कंई जाणताज न हता। प्रताप शेठे कह्युं के ए खबर 'जन्मभूमि' मां नीकळी छे।[3] तेथी बापुए ए छापुं मंगाव्युं ने खबर वांची। बापुजीए तो आवा हेडिंगथी (मथळाथी) एम छापवानो शुं हेतु छे ते कल्पीज लीधेल छे, पण आप पण आ हेडिंग वांचीने शुं कल्पी शको छो ते जाणवा मागे छे। जो कंई कल्पी शको तो बापु-जीने लखशो अने जो कंई न कल्पी शको तो बापु त्यां आवे त्यारे एओने याद करावशो जेथी आपने कहेशे।

१ अन्तमें ए आइ सी सी की सभा वर्धामें ही १५ जनवरीको रखी गई। पर उसकी पूरी जिम्मेदारी नागपुर कांग्रेसके अध्यक्ष श्री पूनमचन्द रांकाने अपने ऊपर लेली थी।

२ यहां तक गांधीजीने खुदने लिखा है। किसी कारणसे वे इस पत्रको पूरा नहीं कर सके।

३ जन्मभूमिके २७-१२-४१ के अंकमें श्री. जमनालालजीका फोटो 'श्री जमना-लाल बजाजनी गंभीर बीमारी' हेडिंग देकर छापा गया था।

प पू वापुजीने काम तो वहुज रहे छे। तवियत सारी गणाय।
आपनी तवियत सारी हशे।

लि सेवक,

: ३७३ :

गोपुरी, वर्धा,
३०-१२-४१

पू वापूजी,

आपका ता २७-१२ का पत्र व आज कनुभाईका पत्र मिला।

श्री पूनमचद राका ठीक कोशिश कर रहे है। मुझसे तो मामूली सलाह मसलत ले लिया करते है। मेरे मन पर मैंने कोई वोझ नही रक्खा है। आपके आशीर्वादसे सव काम ठीक हो जायगा।

स्टेटस पीपल्सके वारेमे श्री हरिभाऊजीने मुझे थोडा कहा है। अगर जवावदार, पूरा समय देकर काम करनेवाला मत्री मिलना सम्भव हो तो ही ऑफिस सेवाग्राममें या वर्धामे रक्खी जावे, अन्यथा नही। श्री हरिभाऊजीने तो चर्खा सघके विद्यालयका काम करनेका निश्चय कर लिया है। पू जाजूजी, देशपाडे, राधाकृष्णकी सलाहसे मैंने भी मेरी स्वीकृति दे दी है। मेरी तो साफ राय है कि क्या तो आपको व सरदारजीको पूरी तौरसे जच जावे तो श्री वलवन्तरायको यहा आपके पास रखकर उनसे काम ले। . . . मेरी खुदकी राय तो अव यह होती है कि श्री वहन राजकुमारीजीको जनरल सेक्रेटरी वनाया जावे। सहायक वलवन्तराय या और कोई प्यारेलाल सरीखेको वनाया जाय तो शायद काम ठीक तौरसे याने आपके सतोपकारक तौरसे चलना सम्भव है। मै तो कोई पद लेना नही चाहता। हा, वर्धा या सेवाग्रामभे कार्यालय रहनेका निश्चय हो जाएगा तो मै सलाह मसलतमे व थोडी आर्थिक व्यवस्थामे भाग ले सकूगा। अन्यथा वह भी लेनेका उत्साह वर्तमान स्थितिमे तो विलकुल है ही नही।

जन्मभूमिवालेने क्यों इस प्रकार मेरे बारेमे छापा इस बारेमें भली प्रकारसे तो समझ नही सका। पहले तो मेरी समझ हो गई थी कि मामूली सुनी सुनाई बात पर व मेरा वर्किंग कमेटीकी मीटिंगमे आना नही बना वगैरेके कारण मन गढ़त कल्पनासे ऐसा किया हो। परतु मैने श्री केशवदेवजीको बम्बई लिखा है कि वह इसका पता लगा कर मुझे लिखे। मेरा ख्याल तो उन्हे नोटिस देनेका भी हो रहा था। कई जगहोसे फोन आदि आये। बिना कारण मित्र परिवारमें चिन्ता पैदा की गई। मैने सुना है उन्होने कलके पत्रमे क्षमा या खेद प्रगट किया है। मैने अभी नही देखा। मेरा मन स्वास्थ्य और काम ठीक चल रहा है।

जमनालाल बजाजके प्रणाम

(नकल परसे लिया गया)

: ३७४ :

बारडोली,
२-१-४२

चि जमनालाल,

तुम्हारा खत मिला। भाई हरिभाउसे कहो उनका निश्चय मुझे पसद है। अब खादी विद्यालयसे न हटे।

देशी संस्थानोंके बारेमें मेरे आने पर बाते करेंगे।

पुनमचदजीको बहुत खर्च करनेसे रोके जाय।

खानेमे ठीक खबरदार रहते होगे।

जवाहरलाल एक दिन पहले पहोचेगे।

: ३७५ :

२५-१-४२

चि जमनालाल,

मै सब पढ गया। ओफिस यहा आनेके पहले ऐसी कोई रकम नहि दीखती जो आज हि देनी हि चाहिये। मेननका दरमाया हर हालतमे देना चाहिये। ऐसे हि वजेका और आर्यभूषणका बिल। वझेका तो बध होगा न? मेरी राय है कि मेननको लिख दिया जाय कि सामान भेज देवे। वर्धा हि भेजेगा। वहासे तो गड्डेमें यहा आवेगा।

वार्षिक बजेटके बारेमें विचार करनेकी बात है और रु १५०० के बारेमें भी। ये तो बादमे करेंगे।

बापुके आशीर्वाद

बलवतरायको लिखुगा।

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

दुबारा नहि पढा ।　　　　　　　　　　　　　　　　　　(सेवाग्राम)
मौनवार,
२-२-४२

चि　जमनालाल,

तुमारा प्रश्न विचारणीय है । गो से सघ[१] हिंदू धर्मकी सस्था है कि सार्वजनिक ? सार्वजनिक है तो गो सेवाको सब धर्मी कबूल करते है, करेगे ? अगर धर्म सस्था नहि है तो सब धर्मीको खीचनेका प्रयत्न करे ।

तुमारी नामावलीमे अन्य प्रातके कोई देखे नहि जाते दक्षिणमें गो सेवाका नाम नहि, नहि बगालमे या पजाबमें । वहासे किसीको नहि लेना है ?

। महाराजके सबधमे आजकल नहि आया हू । लेकिन मेरा अनुभव कुछ अच्छा नहि है । उनके साथ एक दो आदमी है वे अच्छे है । मेरी वृत्ति तो यह है कि वे जितनी सहाय दे सकें हम ले । उनके पास अपनी सस्था है । इसमे हस्तक्षेप नहि होना चाहिये । एक दूसरोसे हम सीखे-भ्रातृभाव रखे ।

हा कोई भी औरत तो होनी चाहिये । मणीबहनको अवश्य लो । राजकुमारीके लिये बडी मुश्केली है । अपने घरमे वह गाय बारेमे नियम पालन नहि कर सकेगी । सहायक या मित्र वर्ग निकाले उसमे रा कु जैसे आ सकेंगे । पुराने सघके पैसेके बारेमे देख लूगा ।[२]

बापुके आशीर्वाद

१ गो सेवा सघ ।

२ इस पत्रके बारेमें जमनालालजीकी डायरीमें निम्न नोंध है —

"२ फरवरी '४२,-गोपुरी, वर्धा—सुबह पू बापूको गो सेवा सघके बारेमें पत्र लिख कर सेवाग्राम भेजा । जवाब मिला । समझमें नहीं आया ।"

गाधीजी द्वारा जमनालालजीको लिखा गया यह अन्तिम पत्र है । ११-२-४२ को जमनालालजीका देहान्त हुआ ।

: ३७७ :

निमंत्रण[1]

सेवाग्राम,
१४-२-४२

प्रिय भाई/बहन,

आप जानते हैं कि जमनालाल और मेरे बीचमें कितना घनिष्ठ संबंध था। कोई काम मैंने नहीं किया जिसमें उनका पूरा सहयोग तन मन और धनसे न रहा हो। जिसको राजकाज कहते हैं वह न मेरा शौक था न उनका। वे उसमें पड़े क्योंकि मैं उसमें था। लेकिन मेरा सच्चा राजकाज तो था रचनात्मक कार्य। और उनका भी राजकाज यही था। मेरी आशा थी कि मेरे बाद जो मेरे खास काम माने जाय उन्हें वे संपूर्णतया चलावेंगे। उन्होंने मुझे ऐसा आश्वासन भी दे रखा था। लेकिन मनुष्यकी इच्छाकी पूर्ति तो ईश्वर ही करता है। हमारी इच्छा सफल न हुई। मेरी श्रद्धा मुझे सिखाती है कि इस निष्फलतामें ही सफलता मिलेगी। जो भी हो अब मुझे सोचना है कि जमनालालजीके बदलेमें उनके कार्य कौन करेंगे, और कैसे? इस प्रश्नकी चर्चा, और हो सके तो उसे हल करनेके लिये आपको कष्ट दिया जाता है। किसीको आनेका आग्रह तो इसमें हो नहीं सकता है। जिन कामोंमें जमनालालजीने खास दिलचस्पी ली है उसकी फेहरिस्त वक्तके क्रमसे इसके साथ है। इन कामोंमें आप हिस्सा लेना चाहते हैं और आप आ सकते हैं तो अवश्य आइये। नहीं आ सकते हैं तो भी विवेकके खातिर आना चाहिये ऐसी कोई बात नहीं है।

आपको दिलचस्पी होते हुए भी आप किसी कारणवश नहीं आ सकते हैं तो आप लिखें कि किस काममें किस तरह आप सक्रिय हिस्सा लेंगे। चर्चा और मंत्रणा ता २०-२-४२ शुक्रवारको दिनके २ बजे होगी। यदि आ सकें तो कृपया तारसे खबर देंगे तो सुविधा होगी। जिनको निमंत्रण भेजा है उनकी फेहरिस्त भी इसके साथ है। जिनके नामका स्मरण हम लोगोंको आया उनके नाम दिये हैं। कोई

१ जमनालालजीके देहान्तके बाद चौथे दिन ही उनके सारे मित्रोंको गांधीजीने यह निमंत्रण भिजवाया था। यह नागरी और उर्दू दोनों लिपिमें लिखा गया था।

रह गये हो तो भूलसे ही रहे हैं ऐसा समझकर वे निमत्रण मगवा सकते है।

आपका,

जमनालालजीके कार्य—वक्तके क्रमसे

१ गो सेवा	७ खादी
२ नई तालीम	८. देशी राज्य
३ ग्रामोद्योग	९ राष्ट्रभाषा (हिन्दी और उर्दूका सयुक्त प्रचार)
४ महिला सेवा	१० सत्याग्रह आश्रम तथा ग्राम सेवा
५. हरिजन सेवा	११ मारवाडी शिक्षा मडल, सन १९१०—
६. गाधी सेवा	नव भारत विद्यालय तथा कालेज

: ३७८ :

सेवाग्राम,
वर्धा, सी पी,
७–३–४२

ज्यो ज्यो मै विचार करता हू तो मै देखता हू कि देशहितकी कोई प्रवृत्ति नही थी जिसमे जमनालालजीका हाथ नही था तो सस्ता साहित्य मण्डलमे तो होना ही था। वे जिंदा साहित्य थे।[1]

: ३७९ :
अ

पचगनी,
३१–७–४४

चि जानकीबेन,

तमारी हाजरी लेवा ईश्वरनी कृपा हशे तो मीजीए पहोचु छु।

१ यह पत्र गाधीजीने जमनालालजीकी मृत्युके बाद जीवन-साहित्यके 'जमनालाल स्मृति अक' के लिए सदेश रूपमें भेजा था।

'कृपा' तो भूलथी लखायु। ईश्वरनी तो हमेशा कृपाज होय। आपणे ने कृपाने न ओळखीये ए आपणी मूर्खाई पण एनी इच्छाने तो आपणे इच्छाए के अनिच्छाए आधीन छीये। एटले एनी इच्छा हशे तो बीजीए मळशुं। मदालसा ने ओम त्यां हशे एटले ठीक छे। सावित्रीनी गेर हाजरी कठशे। कमळानु कहेवु शुं? ए तो बहु जजाळी। हवे बीजा नामो भरवा बेसुं तो बीजी कटकी लेवी जोईए ने वखत?

: ३८० :

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

सीमला,
१०-७-४५

चि. जानकीमैया,

हवे तो रामकृष्ण छुटयो ने राधाकिसन पण। तमने ने दादीने शांति वळी ना? जोउं छुं हवे गो सेवा केवी करो छो?

बापुना आशीर्वाद

: ३८१ :

POONA,
4-11-45

JANKIDEVI BAJAJ,
BAJAJWADI, WARDHA

Your two wires announcing birth of son to Madalsa. Hope mother baby progressing well

—*Bapu*

भाग २

महात्मा गाँधी व श्री. महादेव देसाई के पत्र—बजाज परिवार के अन्य लोगों के नाम

: १ :

वर्धा,
पो शु ३
(१८-१२-२६)

भाई केशवदेवजी,

चि कमला और चि रामेश्वरकी शादी साबरमतीमे करना मुझको ज्यादह अच्छा प्रतीत होता है। दूसरोके पर असर डालनेके प्रलोभनसे मैंने बम्बईमे शादी करनेमें ममति चार मास पूर्व दी थी। परतु विचारनेके बाद मुझे ऐसा लगता है कि हमारे केवल वरकन्याके भलेकी दृष्टिमे ही ऐसी बातोका निणय करना चाहिये। विवाह धार्मिक विधि है। वर-कन्याके लिये एक नया जन्म है। उसको जितनी शातिमे और जितने धार्मिक वायुमें किया जाय इतना उनके लिये बेहतर है। ऐसा वायु तो जब हम आडबरको छोडे और शातिमय रहे तब ही पैदा हो सकता है। सभव है कि स्त्री वर्गको कुछ क्लेश होगा। इस क्लेशको क्षणिक समझ कर जो उचित है उसीको करना हमारा कर्तव्य है ऐसी मेरी मति है। इसलिये मैं चाहता हू कि आप भी साबरमतीमे विवाह करनेमें सम्मति दें। मुझको वहा विवाह होनेमे न कोई उपाधि है न कष्ट है।

आपका,
मोहनदास गाधी

(नक़ल परसे लिया गया)

: २ :

23-7-36

SETH LAXMANPRASADJI PODDAR,
2 HASTINGS PARK ROAD,
ALIPORE, CALCUTTA

Both Kamalnayan and Savitri have my blessings May this connection be fruitful of good for them and for country

—*Gandhi*

: ३ :

य म,
४-१-३१

चि राधाकृष्ण,

तुमारे खत लिखते रहना। उसमे जो खबरे मैं चाहता हु मिल जाती है। जानकीबहन आजानेसे लिखनेका कहो।

विनोबाको पकडना चाहे तो भले पकडे। छोटेलालके कुछ खबर है? उसकी तबीयत कैसे है?

: ४ :

य. म,
२५-१-३१

चि राधाकृष्ण,

छोटेलालजीको कागज लिखनेकी इजाजत मिले तो लिखनेका कहो। शायद १६० मे वह भी छुट गये? आवश्यक रेशमका अर्थ खद्दर मे किनार इ मे चाहीये वह या ऐसा कोई हिस्सा जिसके सिवाय खद्दर भी न बिकी जाय। सिद्धातका प्रश्न हल होनेसे बाकीके बारेमे संजोगके अनुकुल किया जा सकता है।

बापुके आशीर्वाद

: ५ :

यरवडा,
२४-१-३३

चि राधाकृष्ण,

जमनालालजी उपरनो कागळ हु वाची गयो छु। महिलाश्रम के महिला विद्यालय अथवा वनिता विश्राम के वनिता विद्यालय एने आश्रमना आश्रय तळे न राखी शकाय केम के ए अत्यारे हरिजन बाळाओने लेवाने तैयार न रहे। तनी उपर ए बोजो न लादी शकाय। वहारथी हरिजन बाळा आवे तेने भणावे एटलु हाल तुरतज सारु क्रम गणवु जोईए पण एवी संस्थाने आश्रमनो आश्रय पण न मळी शके। विनोबानो अभिप्राय मने बरोबर लागे छे अने महिला विद्यालयने सारु पण मर्यादा अनिवार्य लागे छे।

जानकीबहेनने कहेवु के जमनालालजीने डा मोदीनी पासे तपासावानी हाल काई आवश्यकता हु जोतो नथी। शरीर सारु छे, कान सारो छे, खोराक ठीक छे हजम थाय छे, वजन वध्यु छ, कोई पण प्रकारनी चितानु कारण नथी। मोदी अत्यारे काई पण नवु कही शके के करी शके एवु पण लागतु नथी। जरा पण आवश्यकता जणाशे अथवा जमनालालजी पोते इच्छशे त्यारे बदोबस्त करवामा अडचण न आवे ढील पण न थाय। अत्यारे तेमने मुबई लई जवा ए पण मने सारु नथी लागतु। अहीनी हवा अनुकूळ आवेली छे तेमा वळी थोडा दिवसने माटे बदली शी करवी?

मने माताजीए[1] कानेला सुतरना बे थान मळ्या छे। एमना तरफनी प्रसादी गणीने उपयोग करीश।

कमलनयन आव्यो छता मने मळी नही गयो। मळी जवु जोईतु हतु, मने मळी शकत। हवे ज्यारे आवे त्यारे मळे। तेना अभ्यासनु शु थयु? ते पाछो केम लखतो नथी?

: ६ :
अ

य म,
२८–१–३३

चि राधाकिसन,

एक कागळ महिलाश्रम विषे लख्यो छे ए मळ्यो हशे। जमनालालने मळ्या करु छु। एमनी तबीयत सारी रहे छे। लक्ष्मीनारायण मदिरमा[2] दर्शन करनारनी सख्या घटी गई छे एवु काले साभळ्यु। आ वात बरोबर छे? हाजरीनी कई नोध लेवामा आवी छे? बीजा मदिर जे हरिजनोने सारु खुल्या छे तेने विषे पण जाणी लेजो।

१. जमनालालजीकी माताजी।

२ वर्धाका लक्ष्मीनारायण मदिर जिसे जमनालालजीके दादाजीने बनवाया था। १९–७–२८ को आचार्य विनोबाजीके हाथों यह हरिजनोके लिए खोला गया था। देशमें हरिजनोंके लिए खोले गये मदिरोंमें यह पहला था।

: ७ :

२२-१०-३६

चि राधाकिसन

विनयना खबर साभळ्या।[1] कमळाने मळवानु मने बहु मन छे। ते अही आवे तो माह। काले हु तो अही छेक पाच वागा लगी काममा रहीश एटले त्या आवु तोय बे चार मिनिटमा भागी जवु पडे। कमळाये त्या गोधाई रहेवा पणु नथी। आ कागळ तमने बरोबर लागे तो कमळाने बचावजो ने मोकलजो अथवा लावजो ।

: ८ :

सेगाव,
७-१२-३६

चि राधाकिसन,

यह ज्वर मुझे बिलकुल अच्छा नही लगता। न तुमारे बीमार होना चाहीये न अनसूयाको। बुखार होते हुए भी बाथ ले सकते है। पाणी गरम नही ठंडा ही होना चाहीये। मैं मिट्टीकी पट्टी लगानेका भी कहा है। यदि कल बुखार न आवे तो मेरे पास आकर समझ जाओ।

बापुके आशीर्वाद

: ९ :

७-८-३८

चि राधाकृष्ण,

कल सोमवारको १२ बजे मुझे मोटर चाहीये, अगर बारिस न हो तो। बालकृष्णको नागपुर भेजना है।

कल मोटर सारा दिन रही उसमे अपराध मेरा ही है। कल किशोरलाल न आये उसका विशाद हूआ। हृदय रोया और मुझे स्मृतिभ्रंश हूआ। क्या करुं?

बापुके आशीर्वाद

१ श्री कमला नेवटियाके लड़के विनयके गुजर जाने पर।

: १० :

(३१-१२-१९३८)

चि राधाकृष्ण,

यह तार[1] कल भेजो। खत भी साथमें है।

Jamnalalji
(ठेकाणु भरवु)
Delhi

Wire No worry about order If possible come Bardoli —Bapu

म्युरिअल लेस्टरके बारेमें प्रबधका सदेशा मिला होगा। उनको ३ बजे कल यहा भेजो।

: ११ :

अबोटाबाद,
१२-७-३९

चि राधाकृष्ण,

तुमारा खत मिला है। जमनालालजीको जेल अनुकुल तो नही है लेकिन जो हो सो। वही दुरस्त होना है। अपने आप छोड देवे तो ठीक ही है। मेरा लेख देखोगे। खाने पीनेमें कुछ कहेना नही है। हजम हो सके इतना दूध फल लेवे। स्टार्च कम। सोडा जिस चीजमें जितना ले सके अच्छा ही है। ६० ग्रेन तक जा सकते है।

मुसलमानोका समजा।

: १२ :

सेगाव-वर्धा,
८-८-३९

चि राधाकिसन,

तुमारा खत मिला है। मेरा लेख तो देखो।[2] कमलनयनने मुझको थोडे

१ इस सबधम पृष्ठ २०८ पर दी गई नोंध देखिये।

२ गाधीजीने जयपुर व जमनालालजीके बारेमे ता १७-७-३९ को हरिजनमें लेख लिखा था। सभवत यहा उसीका उल्लेख है। यह लेख खड २ में देखिये।

कागज दिये है उसमें हिंस्र जानवरोका आधा वर्णन है आधा बाकी है। मुझे पूरा चाहीये।

अब जमनालालकी तबीयत कैसी है?

कमलनयन सावित्रीकी प्रसूती नजदीक होनेके कारण कलकत्ता गया है।

: १३ :

२९-३-३६

चि गोदावरी,

तुमारा खत मिला। तुम कब उठती है यह नहि बताया। साकर अनावश्यक वस्तु है और ज्यादा खानेसे हानिकर है। साकरके बदलेमें मोसममे गंडेरी खाना अच्छा है। साकरमे गुड अच्छा।

: १४ :

वर्धा,
११-११-३४

भाईश्री रामेश्वरदासजी,

वि पू बापुजीए नीचे मुजब लखाव्यु छे।

अब्दुल गफारखान साहेबना भाई डा खानना पुत्र गनी अमेरिकाथी साकरनु काम शीखीने आव्या छे। एमने हवे हिंदुस्तानमा थोडु शीखीने अनुभव लेवो छे। एमने तमारे त्या मोकलवा विचार कर्यो छे। एमने हाल कशु आपवानु नथी। एमनो खर्च पणए पोतेज करशे। मात्र तमारा एक्सपर्ट एमने बधी वातमा वाकेफगार करवा अने बधु मन दई शीखववु, अने जे काम ते आपी शके ते एनी पासेथी लेवु एवी अपेक्षा छे। तमारे एने भाई जेवा समजी एनामा रस लेवो, ए प्रसगोपात्त भले तमारी साथे जमे, पण सामान्यरीते एने कोई मुसलमान कुटुब के रसोइया के सारी होटल होय तो तेमा जमवानी व्यवस्था करी आपवी। एणे निरामिष भोजननो शातिनिकेतनमा प्रयत्न कर्यो हतो, पण एथी एनी तबियत जळवाई नथी, एटले एने मुसलमानी मासाहार मळे ए व्यवस्था आवश्यक छे।

जो आ रीते एने लेवामा तमने कोई जातनी मुश्केली आवे एम न होय, अने तमारी तैयारी होय तो बापुजीने तारथी खबर आपजो, एटले तेओ एमने

मोकली देशे। ए भाई हाल अहीज छे। श्री जमनालालजीए तमने परभारा लखवानु जणाववाथी तमनेज लख्यु छे।

भाई रसिक आवी गया ? ए गरमाळ छे अने तबियत नाजुक छे पण मिलनसार छे एटले तमने फावशे एम आशा छे।

शेठजीने मुंबईमा वधारे दिवस रोकावु पडशे एम जणाय छे। कानने पाछो जरा जरा रोज कोरवो पडे छे अने परु नीकळना भागोने सुधारवा पडे छे। तमे कुशळ हशो। अही सौ कुशळ छे।

एज लि

: १५ :

अ वर्धा,
६–१२–३४

प्रिय रामेश्वरदासजी,

वि आ साथे एक भाईए गोळना पृथक्करणनी विगतो आपी छे ते मोकली छे। पू बापुजीए कहेवडाव्यु छे के तमारा एक्सपर्टने पूछी जोशो के ए बराबर छे के केम ? एनु quantitative पृथक्करण थयेलु छे, अथवा थई शके एम छे ? जुदी जुदी जातना नमुना मेळवी एनु quantitative पृथक्करण थई शके तो कटावी तेनो रिपोर्ट मोकली शको तो सारु।

आ पैकी गामठी अने मिलनी सौथी शुद्ध साकरमा, तेमज शुद्ध अने अशुद्ध साकरोमा शु फरक पडे छे ते पण जाणवानी इच्छा छे।

साकर बनाव्या पछी जे molasses (एने माटे देशी शब्द शु छे ?) रहे छे, तेमा कया पदार्थो रहे छे।

Glucose अने fructose बनाववानी कोई घरगतु रीत अथवा कामचलाउ रीत छे ? एमा शु क्रिया करवी पडे छे ?

जो आ वधी बावतो कोई पुस्तकमाथी मळी शके एम होय तो ते पुस्तकोना नाम पण मोकलवा। कुशल हशो। अही सौ कुशल छे।

एज लि

* किशोरलाल (मशरूवाला) ना वदे मातरम्।

: १६ :

वर्धा,
१०-१२-३४

चि. रामेश्वर,

मुझे गनीके बारेमे सब खबर दे दो। उसको रु ३० तो देही देना। कल ज्यादा लिखा जायगा। गनीके खानेका क्या प्रबध है ? कोई स्वच्छ मुसलमान नही मिल सकता है ? ख्रीस्ती पकानेवाला मिले तो भी चलेगा। यदि कोई बडा रेल्वे स्टेशन नजदीकमे है तो वहा जाकर एक वखतका खाना खा सकता है। वहाकी आबोहवा कैसी है ? आबादी कितनी है ?

: १७ :

बिरला मिल्स,
दिल्ली,
३१-१२-३४

चि रामेश्वर,

तुमारा खत मिला था। विस्तारपूर्वक लिखा सो अच्छा किया। ऐसे ही मुझे लिखा करो। यथा सभव सादगीका पाठ भाई गनीको दिया करो। अगर वह यहा आना चाहता है तो आने दो। उसके टानसिल दा अनसारीको बता देगे। स्वामीके मार्फत मैने एक खत शक्करकी मिलके मजदूरोके बारेमे भेजा है उसका उत्तर भेज दो । तारीख २० तक मै दिल्लीमें हूगा। बिरला मिल्स ठिकाना करो। मै तो नयी जमीन हरिजनोके लिये ली गई है उस पर रहता हू।

बापुके आशीर्वाद

: १८ :

य म,
१८-९-३०

चि कमळा (रामेश्वरदास),

तारो कागळ छेवटे मळ्यो। मारा कागळनी उघराणी तु ठीक समजी गई। हवे आळस न करती। तारु शरीर केम रहे छे ? मने लख्या करजे। मने

लखवाने निमित्ते पण तु आळसने काढी शकशे। कराचीमा कीकीवहेन, गगावहेन वि ने मळी हती के ?

: १९ :

य म,
२-८-३०

चि कमलनयन,

तारो कागळ मळ्यो। मारा गूजराती अक्षर वाची शके छे के ? न वाची शके तो हिंदीमा लखीश। जेम आ वखते पत्र लख्यो छे तेम लख्या करजे। पिताजीने मळवा जाय ने कहे के वजन वधारीने वहार नीकळे।

तारे अक्षर सारा ने स्पष्ट लखवा जोईए। तारु शरीर खूव सुधारजे।

काकासाहेवना आशीर्वाद।

ओम क्या छे ? मदालसाने कहेजे लखे। कमळाने अने रामेश्वरने कागळ लखवानु लखजे।

राधाकिसन क्या छे ? केम छे ?

: २० :
अ

चि कमलनयन,

तारा अक्षर रुपाळा लागे छे खरा पण स्पष्ट नथी। द अने ह एक सरखा होय छे। 'अच्छा' मा 'अ' अधुरो छे 'च्छा' मा च अलग पड्यो छे ने ट जेवो वचाय छे। 'छा' 'ध्य' जेवो वचाय छे। अक्षर लखनारना [1]

: २१ :

य म,
१२-८-३०

चि कमलनयन,

तारो कागळ मळ्यो छे। हमणा तारो धर्म शरीर बाधवानो छे। खोराक ठीक छे। कसरत वरोवर करजे। थाय एटलु खादी कार्य करजे। मने कागल लख्या करजे। कमळा केम छे ? मदालसा शु करे छे ? जानकी

१. यह नकल परसे लिया गया है। नकल अधूरी ही मिली है और इस पत्रकी [illegible]

वहेनने कहेजे कागळ लखे। पिताजीनो खोराक शु छे? तु रोज केटलु काते छे? कइ वाचवानो समय मळे छे?

काकासाहेब आशीर्वाद भेजते है।

: २२ :

य म,
मौनवार

चि कमलनयन,

तु पोते कागळ लखजे। दूध न गमे तो दहि लेवु फळोनो फेरफार करवो। मन मारशे तो गमी जशे। छता बीजु जोईएज तो आश्रमनी रोटी लेजे। शु करे छे? वजन केटलु छे?

: २३ :

यरोडा महेल,
मौनवार

चि कमलनयन,

तारी तवीयत हवे तो सरस रहेती हशे। तु मने कागळ लखजे। शु करे छे? दीवस आखानो कार्यक्रम आपजे।

: २४ :

य मं,
६–९–३०

चि कमलनयन,

तेरा खत मिला। अच्छा लिखा गया है। यदि वही काफी काम है तो अजमेर जानेकी आवश्यकता मुझे प्रतीन नही होती है। अजमेरमे ज्यादा जरूरत किसीकी है तो जाना चाहिये सही। यहासे निश्चयपूर्वक अभिप्राय देना मुश्केल है। माताजी क्या कहती है? धार्मिक निर्णय तो टुकडीका सरदार हि दे सकता है। आजकल सुरेन्द्रजी है उनसे पूछना।

मराठीमें खत लिखना मेरे लिये प्राय अब तक तो असंभवित है। पढ़नेका मुझको समय भी कम मिलता है। जानकीबहनको कहो मुझे लिखे।

का ना के आ[1]

बापुके आशीर्वाद

(नक़ल परसे लिया गया)

: २५ :

य म,
२२-९-३०

चि कमलनयन,

तारो कागळ मळ्यो। तारे अक्षर साफ लखवा जोईए। घडाएला छे पण स्पष्ट नथी। आजथी नहि सुधारे तो पछी सुधरवाना नथी। तु अजमेर सुखेथी जजे। त्यांथी पण कागळ लखतो रहेजे। शरीरने बगडवा न देजे।

बापुना आशीर्वाद

(नकल परसे लिया गया)

: २६ :

सीमला,
१९-७-३१

चि कमलनयन,

तारे विषे काकासाहेब साथे वातो करी हती। तु ठीक अव्यवस्थित थयो छे। खानगी शिक्षक राखवानी वात तो अमने कोईने गळे नथी उतरती। जो विद्यापीठमा शिक्षणनु वातावरण न लागे तो पुनामा एक निशाळ छे ज्या तने मोकली शकाय। तु विचार करे तो तजवीज करु। काकासाहेब साथे चर्चा करजे। मारो पोतानो अनुभव एवो छे के जेने खरेखर भणवानो शोख थाय छे ते गमे त्या पोतानी इच्छा पूरी पाडी शके छे। एम छता तने रोकवानो विचार मुद्दल नथी, बने तेटले लगी तने अनुकुळ थवु छे।

१. काकासाहेबके आशीर्वाद।

· २७ ·

२१-८-३२

चि कमलनयन,

तुमारा धर्म मुझको जेलसे निकलते हि लिखनेका था। मैंने खत लिखा था वह मिला था ? तुमने तो खूब अनुभव लिये। विलायत जानेके पहेले तुमारा पत्र था ऐसा कुछ स्मरण आता है। मैंने प्रश्नका उत्तर दिया था ऐसा भी कुछ ख्याल रह गया है। अब तो प्रश्न भूल गया हु। मुझे दोबारा लिखो।

नर्मदा बेडोल चित्र देकर ठीक निकल गई। यह आलस्यकी निशानी है।

. २८
अ

(फरवरी १९३४)

चि कमलनयन,

पिताजीए मोकलेलो इग्रेजी कागळ काले मळ्यो ने तेनो जवाब पण मोकली दीधो। तारो कागळ आजे मळ्यो।

मे एवी सलाह आपी छे के तारे हिंदीनी उत्तमा परीक्षा आपवी जोईए ने इग्रेजी उपर सरस काबु मेळववो जोईए। आम तु परिपक्व थाय ने अभ्यासी तरीके घडाई जाय पछी पश्चिम तरफ जाय तो पूर्ण लाभ उठावे। ज्यारे जवानो समय आवे त्यारे प्रथम अमेरिका जवानी मारी भलामण छे। त्यारबाद इग्लड अने पछी युरोपना बीजा प्रातो। छेवटे जापान अने चीन।

परीक्षानो तने लोभ नथी ए मने गमे छे। अमेरिकामा तारे एक वर्ष रही सूक्ष्म अनुभव लेवो, इग्रेजी अभ्यास वधारवो ने पछी बीजी जग्याओमा इच्छा प्रमाणे रहेवु। बहार बधा मळी बे वर्ष गाळवा। आमा तने खूब अनुभव मळी रहे ने तारु भविष्य तु घडी शके। आ मान्यतामा अनुभवे जे फेरफार करवा पडे ते करी शकाय। मुख्य वात ए छे के हाल तुरत पश्चिममा जवानो विचार छोडवो घटे छे। हिंदी पूर्ण करवा सारु ने इग्रेजी पाकु करवा सारु हु चार वर्षनी जरूर गणु छु। हिंदीने खातरज सस्कृत अभ्यासनी जरूर जोउ छु। चार वर्षनी राह जोवी हु वधारे पडतु नथी मानतो। रामकृष्णने आशीर्वाद। तेने सभाळतो हशे।

बापुना आशीर्वाद

(नकल परसे लिया गया)

: २९ :

अ

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

वर्धा,
३–६–३५

चि. कमल,

१ थोडु बोलजे
२ बधानु सांभळजे पण शुद्ध होय तेज करजे।
३ दरेक मिनिटनो हिसाब राखजे ने ते ते क्षणनु ते ते क्षणे करजे।
४ गरीबनी जेम रहेजे। धननु अभिमान कदी न करजे।
५ पैये पैनो हिसाब राखजे।
६ अभ्यास ध्यानपूर्वक करजे।
७ तेमज कसरत करजे।
८ मिताहारी रहेजे।
९ रोजनिशि लखजे।

१० बुद्धिनी तीव्रता करता हृदयनु बळ करोडो गणु वधारे किम्मती छे एटले ते केळवजे। ते केळववा माटे गीतानु तुलसीदासनु मनन आवश्यक छे। भजनावली रोज वाचजे। प्रार्थना रोज बेयवार करजे।

११ हवे नगाई करी छे एटले तु खीले बधायो। मनने बीजी स्त्री प्रत्ये कदी न जवा देतो।

१२ मने दरेक अठवाडीये एक कागळ तारा कार्यना हिसाबनो दीधा करशे तो तारु कल्याण छे।[1]

बापुना आशीर्वाद

१ अध्ययनके लिये सीलोन जानेके पहले श्री कमलनयन गांधीजीके पास उनके आशीर्वाद लेने गये थे। उस दिन गांधीजीका मौन था। इसलिये आशीर्वाद मांगने पर गांधीजीने उनको उपरोक्त पत्रके रूपमें अपने आशीर्वाद लिख दिये। इस सिल-सिलेमें एक मजेदार प्रसंग उल्लेखनीय है —

जब गांधीजीने यह पत्र लिखा तब श्री महादेव देसाई भी वहां उपस्थित थे। गांधीजीके आशीर्वाद लेकर कमलनयन महादेवभाईके आशीर्वाद लेनेको उनकी तरफ फिरे। उन्होंने उपरोक्त पत्र कमलनयनसे लेकर पढ़ा और कहने लगे "सचमुच ही तुम अपने साथ एक बड़ा खजाना ले जा रहे हो। बापूने संक्षेपमें सभी कुछ कह दिया है। तुम बेशक इस पर गंभीरतासे विचार करोगे ही। यदि तुम तुम्हारे भविष्य जीवनके मार्गदर्शनके लिये सिर्फ इसे याद रखोगे तो फिर तुमको और किसी बातकी चिंता करनेकी जरूरत नहीं रहेगी।" [अगले पृष्ठ पर चालू]

: ३० :

WARDHA,
6-6-35

MY DEAR KAMAL,[1]

Your letter and your telegram You should get vaccinated if Dr J's argument appeals to you, but if your instinct is against it and your reason also revolts against it then you will prefer 'the Rail Route'

I enclose a note for Seth Shantikumar Narottam Morarji His address is Scindia Steam Navigation Co, Sudama House, Wittet Road, Ballard Estate Do see him and tell me what happens

I am writing to Somasundaram and Bernard Bernard's address was not quite clear You ought to have sent a copy in your letter

Yours affly

Remember me to Dr Jawaharlal You perhaps do not know that I was with him in jail in 1921 and have known him since then

३१

वर्धा,
१२-६-३५

प्रिय कमल,

तारो कागळ मळ्यो। ते भले सोमसुंदरमने अने बर्नाडने तार

[पिछले पृष्ठसे चालू]

इसके बाद हमी हसीमें महादेवभाईने कुछ और भी हिदायतें दी "तुम और तो सब कुछ समझते हो पर तुम्हे अंग्रेजी नहीं आती। अंग्रेजी रीतिरिवाजसे भी तुम अनभिज्ञ हो। लेकिन अंग्रेजी भाषाके दो शब्द हमेशा याद रखना—'थैंक्स' और 'सॉरी'। दोनों शब्द हमेशा तुम्हारी जबान पर रहने चाहिए। इनमेंसे किसी भी शब्दके उपयोगका मौका आने पर उसके उपयोग करनेमें मत चूकना। यदि तुम इस सलाहको मानोगे तो तुम्हें अंग्रेजी रीतिरिवाजके बारेमें कोई फिक्र करनेकी जरूरत नहीं होगी। उन्हे तुम धीरे धीरे स्वय ही सीख लोगे।"

१ श्री कमलनयनको अंग्रेजी सिखानेके लिए श्री महादेवभाई कभी कभी उन्हें अंग्रेजीमें पत्र लिखा करते थे।

मोकल्या। तारमा kindly के please न मळे ए तारु मारवाडीपणु के अज्ञान? तारे रीतभात बरोबर शीखवी जोईशे। Thanks नो उपयोग करे छे तेना करता वधारे करवो जोईए अने if you please नो पण। एटलु नोंधी राख।

मारा उपर सोमसुदरम अने बर्नार्डना कागळो आव्या छे ते तने जोवाने मोकलु छु। बर्नार्डे जे चोपडीना भाषान्तरनी वात करी छे ते मारी बापुना जीवन चरित्रनी सक्षिप्त आवृत्ति जे मे तने पूनामा आपी हती तेनो उल्लेख छे। ए चोंपडीनो तु त्याना विद्यार्थीओमा प्रचार करजे। Gandhism नो प्रचार करजे अने बापुनो अने जमनालालजीनो योग्य प्रतिनिधि थईने फरजे ए मारा तने आशीर्वाद छे।

लि

बर्नार्डनी पत्नी बिमार छे। कदाच ए पोताना पिताने जोवाने विलायत पण जवानी हशे। बर्नार्डनी स्थिति केवी छे ए पण तने एना कागळमाथी जोवानु मळशे एटले बधु समजीने तु वर्तजे।

: ३२ :

WARDHA,
30-6-35

MY DEAR KAMAL,

I had your letter written on arrival in Colombo and also one a couple of days ago I am glad you are writing regularly I share your letters with Bapu who wants me to tell you that you ought to improve your hand-writing It is bad And if you don't mind I shall try to teach you a little English through correspondence, and that by rewriting your letters to me, whenever I have time I enclose herewith your first letter rewritten and I want you to study every correction I have made I should love to do so with regard to every letter coming from you, but you know my hands are full

I shall write to Bernard as soon as possible

Yours affectionately,

: ३३ :
अ

वर्धा,
१६-७-३५

चि कमलनयन,

पिताजीनी पासेथी साभळ्यु के ' ॰ हवे तने परणवा मागती नथी। तेथी गईकालेज तेने मुक्ति आपी दीधी छे। आपणने एज शोभे। तु स्वस्थ हशे। तारा नशीब साराज छे। एटले तने योग्य स्त्रीज मळशे। अत्यारे तो तु तारा अभ्यास पाछळ अने तारा चारित्र्यना घडतर पाछळ भेख लेजे। मने कागळ लखवानु बाकी तो छेज। तारु इग्रेजी सुधारजे। रसपूर्वक अभ्यास करजे, शरीर कसजे। मजुरी करता कटाळतो नही, शरम तो होयज केम ?

: ३४ :

WARDHA,
16-7-35

MY DEAR KAMAL,

I have your dear letter As soon as I find time I shall make corrections in the letter itself and send it on to you But in order that I may be able to do it effectively, you should leave more space between the lines

Kakaji has just now told me that your betrothal has been shortlived * * *
Whilst you have my sympathy * * *
* * * *
Let me have a line from you to assure me that * * * * you have taken it in a sportsmanlike spirit

Yours ,

P S

Here is a letter for Bernard, also one for the other friend—Robin Rutnam Kakaji's letter to Bernard is also enclosed herewith Also Bapu's for you

: ३५ :

वर्धा,
२०–७–३५

चि कमलनयन,

आ कागळ भूलथी गुजरातीमा शरु कर्यो एटले भले गुजरातीमाज जाय। मारी तो सलाह एवी छे के तु बर्नार्डनी साथेज रहे। ए कहे छे के ५० रुपीआ मासिक तारे एने आपवा। काकाजी कहे छे के ५० ने बदले ६०-७० पण आपी शकाय। एने भलेने आपणाथी थोडी मदद थाय। ए नानकडु घर लेवानो होय तो तेमा भाडु बधु तु भर, एटले खुशीथी साथे रहेवाय। सिवाय के ते बीजे व्यवस्था करवा धारी छे त्या तारी अभ्यासनी सगवड बरोबर जळवानी होय। तो तने जेम गमे तेम करजे।

* * हाथमाथी गई तो काई शोक न करतो। बीजी कोई * * मळी रहशे।

लि

: ३६ :

WARDHA
25-7-35

MY DEAR KAMAL,

I have your letter I have already anticipated you, as you will see from my letter which you must have had by now There is nothing particular to write this week I enclose Bapu's letter which I hope you will treasure and try to carry out in practice I hope you are keeping well

My love to Bernard

Yours,

: ३७ :

वर्धा,
२५–७–३५

चि कमलनयन,

तुमारा स्वच्छ खत मुझे मिला है। अपने दोषोंका स्वीकार कर लेता है सो तो बहुत अच्छा है। अब कदम आगे जाओ। दोषोंको दूर

करनेका बडा प्रयत्न करो। रोजनिशिमे नित्य कर्म दे सकता है। प्रार्थना दो बार तो कर ही सकता है। रामधुन तो है ही। आलस्य छोडनेके लिये सबसे अच्छी बात यह है कि नित्यके नियम बना लेना और उसपर कायम रहना। भले कम काम हो। व्यायामको नित्यकर्मका अनिवार्य हिस्सा माना जाय।

: ३८ :

(अगस्त १९३५)

MY DEAR KAMAL,

Just a brief note today I am glad that your English shows some improvement as the few corrections I have had to make will show and I am almost sure that you are growing physically and intellectually every day I want you one day to give me pen pictures of life in Colombo Does Bernard read much? Is he a lover of books? I sometimes feel like asking you to send me books, if there are good bookshops—books, I mean, which you too may read and pass on to me For the rest, everything is going on well. Give my love to Bernard.

Yours,

: ३९ :
अ

वर्धा,
४-९-३५

चि कमलनयन,

तारो कागळ मोडो पण मळ्यो एटले सारु थयु।

अरे रामजपन पण अचूक करशे तो तारु भलु थशे।

तु त्या[1] गामठी कागळ नथी वापरतो तेनी 'चिंता नथी। एम करवा मारु ताराभा उत्साह अने गरीबोनी अत्यंत दाझ होवा जोईए। ए तारा

१. इग्लैंडमें।

स्वभावमा पेदा थाय त्यारे तु तारी मेळे आवी वस्तुओ करीश। जे तु तारा मनना उत्साहथी करशे तेज साचु, तेज तने फळशे।

त्या बेठो तु ब्रिटिश अने बीजा परदेशीना भेदमा न उतरतो।

कपडानी बाबतमा एक वात कही दउ। त्या तु खादीनो आग्रह स्वेच्छाये न राखी शके तो ते छोडजे। तने जेमा सगवड लागे ते पोषाक पहेरजे ने सगवड लागे ते कपडानो पोषाक करजे। आटलामा तारा बधा प्रश्नोनो जवाब आवी जाय छे। एम मानु छु।

एटले विदेशी के मीलना कपडानो ओवरकोट पहेराय, मोजा पहेराय। कसरतनु बनियान पहेराय। आमानी बधी चीज हाथनीज मेळववानो प्रयत्न करे तो खोटो नही गणाय। ते नही करे तो कई पाप नहि गणाय।

त्या तारु मुख्य काम तारो अभ्यास पाको करवानु छे। निर्भयता, वीरता, दृढता, उद्यम, उदारता, दया, प्रेम केळववाना छे। सादाई अने नम्रता वधारवाना छे। त्याना जीवननु निरीक्षण करजे। क्षणेक्षणनो सदुपयोग करजे। रोजनिशि राखजे।

तारो कागळ पाछो मोकलु छु।

कई रही जतु होय तो पूछजे।

बापुना आशीर्वाद

(नकल परसे लिया गया)

: ४० :
अ

सेगाव,
६–७–३६

चि कमलनयन,

आ साथे त्रण कागळ[१] मोकलु छु। ए त्रीसनु काम करशे। वुडब्रूक बरमिंगहाममा छे। ए सस्था सुदर छे। एओना प्रसगमा वहेलोज

१ गाधीजीने कमलनयनके लिए चार परिचय पत्र भेजे थे। उनमेंसे एक श्री हेनरी पोलकके नामका मिला है, वह नीचे दिया जाता है —

Segaon, Wardha,
6 7-36

DEAR HENRY,

This will be presented to you by Kamalnayan Bajaj the eldest son of Jamnalalji However much we may fight Great Britain

[अगले पृष्ठ पर चालू]

आवजे। आ लखता लागे छे के प्रो होरेस एलेकझाडरने पण पत्र मोकलु एटले चार थया। एओ वुडब्रूकना छे। मने नियमसर लखजे। साभळजे वधानु करजे तारु धार्यु ने जे आशाओ बधावी जाय छे तेने अनुसरतु। त्याना प्रलोभनो पार नथी। तारु नाम शोभावजे ने तेना गुण सभारी कमळनी जेम कीचडमा तेने जोता छता अलिप्त रहेजे। एटले वधु कुशळज थशे। तारी शक्ति प्रमाणेज डुबकीओ मारजे। कोईनी हरिफाईमा न उतरजे प्रत्येक क्षणनो सदुपयोग करशे तो तारी शक्तिओ खीली शकती हशे एटली खीलशे। रामायण अने गीतानो उडो अभ्यास करजे। रोज भणजे। मूळ गीता तो वाचशेज पण Edwin Arnold नु Song Celestial पासे राखजे।

: ४१ :

वर्धा,
७–७–३६

प्रिय कमलनयन,

आ साथे पू बापुए लखेलो कागळ अने तेनी साथेना बीजा कागळो मोकलु छु। म्युरिअल उपरना अने बीजा कागळो मे घेर मोकल्या हता ते तने बीजी टपालमा मळशे।

आखरे तु चाल्यो। एक दिवस तो ते मारी साथे लावी वातो करी, पण पछी तो तें मारी साथे वातो करीज नही। पछी तो तु तारी

[पिछले पृष्ठसे चालू]

London is increasingly becoming our Mecca or Kashi Kamalnayan is no exception I have advised him to take up a course in the London School of Economics Perhaps you will put him in touch with Prof Laski who may not mind guiding young Bajaj Muriel has undertaken to mother him

Please treat this also as acknowledgment of your letter received some time ago I am trying to become a villager The place where I am writing this has a population of about 600—no roads, no post office, no shop

Love to you all,

भाई *

* हेनरी पोलक दक्षिण आफ्रिकामे गाधीजीके साथ काम करते थे। वहां गाधीजीको सब लोग 'भाई' कहा करते थे।

मेळे कलकत्ता गयो, त्या वहुनी पसदगी करी आव्यो, अने बधु नक्की थयु त्या सुधी ते तो मने कशा खबर नज आप्या । भले । मारे पराणे तारा मुरब्बी नथी बनवु । मने जे खबर आपवा घटे तेटलाज आपजे । तारामा interest लेतो हु बध नथी थवानो । त्या पण तारी प्रगतिनी शुभेच्छा राखीश, अने तु तारी बधी मनोवाछना पूरी करी आवे एम जोवाने इच्छीश ।

सीलोनमा हतो त्यारे तो तारा अग्रेजी कागळो कोकवार सुधारीने मोकळतो । हवे तो कदाच तु मारा कागळो विलायतथी सुधारीने मोकले । तो पण मने तारी इर्ष्या न थाय । एटले सुधी प्रगति करी आवे एम हु इच्छु । पण अग्रेजी तो ठीक, अग्रेजीना करता बीजु घणुय वधारे विलायतथी शीखवानु छे, अने पण जळ कमळवत, अथवा बापुए कह्यु छे तेम कीचड कमळवत रहीने शीखवानु छे ते शीखीने तु आव अने "बापथी सवायु" कमा अने कीर्ति मेळव ।

हवे business । बापुनी साथे जे letters of introduction छे तेमा प्रथम एगेथानो छे । एनु शिरनामु Agatha Harrison, 2 Cranbourne Court, Albert Bridge Road, London S W 11 । बीजो कागळ Henry नो छे । एनु शिरनामु Henry S L Polak Danes Inn House, 265, Strand London, W C 2 । त्रीजो कागळ Horace नो छे । एनु शिरनामु Prof Horace Alexander, Woodbrooke, Selby Oak Birmingham । चोथो म्युरिअलनो छे । एनु शिरनामु तो तु जाणे छे, छता अहीं आपु छु Muriel Lester, Kingsly Hall Powis Road Bow, London East ।

आमा पोलाक लडनमा छे । ए माणस बहु व्यवहार कुशळ छे, Indian Politics मा Liberal जेवो छे, पण बापुनो भक्त छे । एनी पत्नी सरस बाई छे । अभ्यासना सबधमा एजो Prof. Laski नी ओळखाण करावे तो एनी सलाह तु अक्षरे अक्षर मानी शके छे । Horace Alexander बहु भलो माणस छे, तुर्त मित्र थई जाय एवो छे, एने वर्नार्ड सारी पेठे जाणे छे । एनी पासे तो दरेक detail मा सलाह मेळवी शकाय कया नाटको जोवा, कया सीनेमामा जवु, कई सस्थाओ जोवी, शु शु वाचवु, कया छापा साप्ताहिको वाचवा, केवा माणसोथी सावचेत रहेवु वि वि । एने पण तु वनती तके मळी लेजे ।

हवे मारो कागळ पूरो करु। तने तो उपडवा पहेला घणा कागळो आवशे अने घणा लखवाना हशे एटले आने पण केम लाबो करु?

मने कोई वार हु मगावु ते चोपडी मोकलीश के?

बीजु काई नही तो आ कागळनी पहोच तो लखजेज।

लि शुभेच्छक

: ४२ :

२३-७-३६

KAMALNAYAN BAJAJ,
INDIAN CONTINGENT,
OLYMPIC VILLAGE, BERLIN

Engagement made announced God be with you Love.

—*Bapu*

(नकल परसे लिया गया)

: ४३ :
अ

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

(१९३६)

१ ४ वर्ष अथवा कमलनयननो अभ्यास पूरो थाय त्या लगी विवाह न करवो ।

२ सावित्रीये हवे पछी जे केळवणी लेवी होय ते हिंदुस्तानमाज लेवी। विवाह थया पछी बन्ने प्रवासे के बीजा कारणसर गमे त्या जाय ।

३ क' सा [1] वच्चे पत्रव्यवहारनी पूरी छुट होवीज जोईये। पत्रो छुपा होवानी आवश्यकता हु नथी मानतो।

४ सावित्रीये विवाह पहेला पण वखतो वखत वर्धा अथवा ज्या जानकीबहेन वि होय त्या आव जा करवी जोईये।[2]

१ कमलनयन-सावित्री ।

२ कमलनयनकी सगाईके बाद उनके विवाहके सबधमे जमनालालजीको दी गई गांधीजीकी सूचनायें ।

: ४४ :
अ

मेगाव,
२६–२–३७

चि कमलनयन,

तारो कागळ मळ्यो। तु उडे उतरी रह्यो छे अने अहि आ बधा तने जल्दी पाछो बोलाववानी वात करी रह्या छे। तारा ससरा उतावळ करे छे। जानकीबेन पण एमज इच्छे छे। पिताजीनो पण लगभग एज अभिप्राय छे। हु पोते तटस्थ छु। जो के हु मानतो नथी के त्याथी तु बहु लाववानो छे। पण तने पोताने त्यानो मोह रहे त्या लगी तने अहि लाववानु मने बरोबर नहि लागे। जो तारे वेपारमा उतरवु होय तो डिग्रीनो मोह छोडवो घटे छे। बेरिस्टर थईने शु करशे ? ग्रेजुएट थईने शु करशे ? तने हु समजु छु ते प्रमाणे तो तारे कमावु छे, पिताना धन उपर रहेवु नथी। साधु पण नथी थवु। ए बरोबर होय तो तारो पुरुषार्थ वेपारमा रह्यो छे। आटलु कबूल करे तो तु बेरिष्टरनो अथवा डिग्रीनो लोभ छोड। तारु इग्रेजी हवे ठीक ठीक थयु होवु जोईए। पण जो तारे डिग्री लेवीज होय, केम्ब्रीज के ऑक्सफर्डमा रहेवु होय तो तु दीनबन्धु एड्रूजने मळजे। हु ऑक्सफर्ड अने केम्ब्रीजमा जेने जाणु छु एओने एड्रूजनी मारफते जाणु छु एटले तु एमने मळजे। ए तने जोईतो बन्दोबस्त करावी देशे। ए केम्ब्रीजमा रहे छे। एमने तो तु ओळखे छे। छता हु एमने लखु छु। एटले तु एने लखशे त्यारे एना स्मरणमा हशे। एनु ठेकाणु Pembroke College, Masters' Lodge, Cambridge छे। जे करे ते पूर्ण विचार करीने करजे। मने लख्या करजे। लखवामा तु काई आळस करतो लागे छे खरो।

बापुना आशीर्वाद

: ४५ :

२५–६–३७

चि कमलनयन,

मि केलनबेक मने पजवी रह्या छे के विवाह प्रसगे तने काईक भेंट मोकले। ते सोथी वधारे रूपैया खरचवा मागे छे। तेणे तो २५ पाउड कह्या। मे साफ ना पाडी। मने पूछ्यु शु आपवु ? मे कह्यु 'चोपडीओ'

एटले कहे 'कई चोपडीओ' हु निश्चय न करी शक्यो। तुज कहे तने कई चोपडीओ गमशे ?

वळता जवाब मोकळजे।

बापुना आशीर्वाद

: ४६ :

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

सेवाग्राम,
वर्धा, सी पी,
१५-९-४०

चि. कमलनयन,

फूल[1] गंगामें पधरा दिये अच्छा हुआ मानाजीका चित्त शांत हुआ। हरिद्वारमें दिल लगे तब तक रहे।

मदनको भेजनेमें कोई हर्ज नहीं है। आना चाहे तो आवे।

बापूके आशीर्वाद

: ४७ :

SIMLA,
10-7-45

KAMALNAYAN BAJAJ,
CARE SHREE, BOMBAY

Glad about Ramkrishna[2]

—Bapu

: ४८ :
अ

सेवाग्राम,
२२-११-४५

चि कमलनयन,

तु तो हु आज त्यारे अहि आव्योज नहि होय एटले आ कागळ लखी मोकलु छु। तारे जाणवु जोईए के नागपुर बेंक ए जमनालालनी छे, एणे परोपकारार्थे काढेली छे, गरीबोने मारु ए सेविग्स बेंक थई शके ए कल्पना हती अने आजे होवीज जोईए। एटले ए बेंक तुटवीज न जोईए, एटले ज्यारे बेंक ऑफ इंग्लंड, इम्पीरियल बेंक खूटे अने अहिया काईक उत्कापात थाय त्यारेज नागपुर बेंक खूटे। एटले ए छेल्ली खूटे पहेली नहि। एवी एनी शाख पडवी जोईए। तु जमनालालजीनो वारस छे एनो खरो अर्थ तो आज

१ जमनालालजीकी अस्थि।
२ रामकृष्णके जेलसे छूटने पर।

के तु ए शाखनो वारस छे अने एम समजीने में तो जलियानवाला ट्रस्टने सलाह आपी छे के त्याना पैसा त्याज राखे ने वधारे मोकलवानी चेष्टा करे। एज सलाह में कुमारप्पाने आपी छे। ग्रामोद्योगना पैसा त्याज मूके। ए विश्वास खोटो नहि ठरवो जोईए। छता काले आवता वेतज स्टेशन उपर मने भारतने उल्टी वात करी। एणे तो प्रेमपूर्वक वात करी अने हु एनो प्रमुख छु एटले मने प्रमुख तरीके पूछ्यु। कुमारप्पाए मने लखेलु के * * बेंकमा ग्रामोद्योगना पैसा मूकवा के नहि ? वैकुठभाईए ए सलाह आपेली एटले एणे मानी लीधेलु के हु हाज पाडीश। पण में तो शका उठावी, अने हा न पाडी। अने कुमारप्पाए बेंकमा पैसा तो मूकी चूकेला। हवे तो पाछा उठावीज लेवा जोईए। नो व्याज खोवु पडे—व्याज खोता पण उठावी न शकाय तो ? एटले भारतने मारी सलाह मागी। कुमारप्पा हाल अहि नथी। पण मे कह्यु जो ए लोको वाधो उठावे तो लडीने पण ए पाछा उठावीज लेवा जोईए, नहि तो ए पैसा जोखममा छे एम हु मानु। अने वाघरीने मारु भेम मार्या जेवु थाय। ** बेंक शु छे ते हु आजे पण बरोबर जाणतो नथी। आवो ख्याल छे खरो। पण नवी बेंकोनो मने अणगमो ने अविश्वास। एटले हु झट तेमा पैसा मूकवाने तयार थाउज नहि। पछी सवाल ए थयो के जो ** बेंकमा नहि तो नागपुर बेंकमा शा सारु ? ए पण प्रमाणमा नवीज कहेवाय ना ? ए पण प्रमाणमा साचु। अने भारतने उमेर्यु के नागपुर बेंक तो १-२ मासमाज बध थई जवानी वात समळाय छे कारण के एणे खोट खाधी छे ने लोकोना पैसा डूबवानी धास्ती छे एटले पहेलेथीज आटोपी लेवु। में ए वात मानी नहि अने मनमा मक्कम रह्यो, पण ए अफवानो पायो जाणवानी इच्छा थई। आ वखते राधाकृष्ण साथे हता। एने में पूछ्यु। मने समजाव्यु। मने धीरज आवी, अने में भारतनने कही दीधु के पैसा नागपुर बेंकमाज मूकवा छे। छता मने लाग्यु के मारे तने जणाववुज जोईए, एटले आ कागळ लख्यो छे। तु विचार करजे ने सावधान रहेजे। जमनालालना वारस थवु ए जेवी तेवी वात नथी। तु एना दीकरा तरीके वारस छे। हु एना दत्तक लीधेला एटले एणे मानी लीधेला बाप तरीके वारस छु। मारो स्वार्थ एनु नाम अखडित रहे। एणे उचकेला काम नभी रहे एटलुज नहि पण वधारे शोभी शके त्यारे तु अने हु खरा वारस गणाईए।

तु पैसा कमाशे, मोटो शेठ गणाशे ए तो बनवाजोग छे पण एना उत्तर जीवनना पारमार्थिक कामनु शु, उत्तर जीवनमा काढेली बेंकनु शु ? गरीब गायनु शु, खादीनु शु, ग्रामोद्योगनु शु ? एनी इच्छाथी हु वर्धामा वस्यो छु ना—

सरदारनो मीठो ठपको वहोरीने। ए मने दस वर्षोंना एकनी सामे वगर महेनते अपावी शकता हता पण ए जमनालाल नहोता अपावी शकता एटले मे दस वर्षोना जता कर्या, पण हवे हु जमनालालने खोई बेठो छवो हु, आभास सरखो पण मारा मनमा नथी थवा देवा इच्छतो। एनी कूची तो तारा हाथमा, राधाकृष्णना हाथमा ने जानकीदेवीना हाथमा छे। जानकीदेवी तो निरक्षर छे। अने जे विकासनी मे आशा राखी हती ते जमनालालजीना गया पछी सूकाईज गई छे। एटले बेंकनी बाबत हु एने समजावी पण न शकु। समजाववानी कोशीश सरखीये नथी करी। राधाकृष्ण बहु चतुर छे, भण्यो छे पण भण्यो तो नज कहेवाय ना? तु तो विलायत जई आव्यो छे। वळी वेपारी तरीके थोडी घणी नामना काढी छे। तने आत्मविश्वास तो जोईए तेना करता वधारे छे। गमे तेम होय, वारस तरीके तो, अने गादी नशीन तरीके तो मारे तारी मारफत जोवापणु रह्यु। एटले कहु छु के तु बापनु नाम परोपकार तरीके उज्वळ करवा पाछळ मंडी छूटजे। एम करवानी तारी शक्ति तु न भाळतो होय तो नम्रतापूर्वक मने चेतवी देजे। बधा दीकरा कंई पोताना परोपकारी बापनी पाछळ पाछळ जई शकता नथी अथवा जता नथी। एटले तु जो ए न करे तो कोई आगळी चीधी शके एम नथी। अने हु तो आगळी चीधवावाळो कोण? पण दादा तरीके तने सलाह तो आपुं, चेतवणी तो आपु। पछी तु जे करे तेनो मुगे मोटे स्वीकार करी लउ। आमा तो मे तने घणु लखी काढ्यु। एनो पुन्न विचार करजे ने नागपुर बेंकने विषे मे जे भारतनने सलाह आपी छे ए बराबर आपी छे के नहि एनो जवाब तो मने पहोचाडी देजे।

बापुना आशीर्वाद

: ४९ :

नई देहली,
२४–५–४६

भाई कमलनयनजी,

कल लाहोरसे लौटने पर बापूजीने आपका खत दिलवाया। क्या ऑप्रेशन हुआ वह सब उन्हे समझानेको कहा। माका ऑप्रेशन [1] अच्छी तरहसे हो गया इससे वे खुश हुए है, हम सबको खुशी हुई है। आपका तार भी मिल गया है। भाई प्यारेलालजीने आपको लिखा भी था। वह मिला होगा। आशा है पूज्य मा बिलकुल अच्छी हो जायेगी।

१ श्री जानकीदेवीके मस्सोंका ऑपरेशन हुआ था।

पूज्य बापूजीकी तबियत ठीक है। मगर अब थकान होने लगा है। पता नही कब तक यहा रुकना पडेगा।

पू माकी प्रगतिकी खबर देते रहे। उन्हे मेरा प्रणाम कहे।

आपकी बहिन

जानकीमाईनु मार थई गयु एनो यश तनेज घटे छे। हवे एटलु याद आपजे के जे ते खाईने फरी शरीर न बगाडे।

: ५० :

सेवाग्राम,
२६–५–४१

चि सावित्री,

तू प्रथम विभागमे आई है[1] इस लिये तुझे तो बहुत मुबारकबादीया मिली होगी। मेरे तरफसे चाहिये तो ले सकती है। तेरे प्रथम विभागमे आनेसे मुझे कोई आश्चर्य नहि है। क्योंकि जो विषय सीखनेके थे वे तेरी बुद्धिके लिये कठिन नहि थे। कठिन परीक्षा और हमारे मुलकके लिये कामकी तो चर्खा सघकी है। उसमे सर्वांगीणता चाहिये। और मै जिस परीक्षाका उल्लेख करता हू वह प्रथमा परीक्षा है। रसपूर्ण तो है हि। तू वचनका पालन करती होगी।[2]

यहा तो अगार झरता है।

: ५१ :

(मार्च-अप्रेल १९४२)

मुझे तो ऐसी दवा बच्चोको देना अच्छा नही लगता है। बच्चे यो ही अच्छे हो जाते है लेकिन मै दखल देना नही चाहता हू। खून आया उसका अर्थ

१ इंटरमीजिएटकी परीक्षामें।

२ खादी पहननेके बारेमें।

तो यह हुआ कि डिसेंटरी है। मैं तो थोडा एरंडीका तेल दूं। डाक्टरको बुलालो। मैं उनसे बात करूंगा। बादमें जो देना सो देंगे। गभराहटकी कोई जरूरत नहीं है। अच्छी हो जायगी।'

: ५२ :

३-१-४८

चि सावित्री,

तुझे बच्चा पेदा हुआ है सो तो मुझे चि कमलनयनने कहा था। बादमें तुझे थोडा बुखार हो गया था वह मिट गया होगा और तुम दोनो अच्छे होंगे।

: ५३ :

सेगांव,
१३-७-३६

भाई श्रीमन,

तुमारा खत ही आज अभी पढ सका। सब डाक आती है ऐसे नहीं पढ पाता।

'रोटी का राग'[२] भेजता हूं। अच्छा, काकासाहेबके लिखनेके बाद मुझे पुस्तिका वापिस करो। बात यह है मैं समजा था मैं तुमको मेरा अभिप्राय लिखुं तुमारे संतोषके कारण। पुस्तिकामें छापनेके हेतुसे क्या लिखुं वह सुझता ही नहीं। फिर भी देखो क्या संभव है। दिल चाहे तब आ जाओ। मेरा समय कहां लेना है? महादेव मांगे वह 'हरिजन' काम दो।

बापुके आशीर्वाद

१ श्री कमलनयनकी लडकी सुमनको पेचिश होने पर गांधीजीने मौनवार होनेसे सावित्रीदेवीको यह लिखकर दिया था।

२. श्री श्रीमन्नारायण अग्रवालकी कविताओंकी पुस्तक।

: ५४ :

सेगाव,
२५-९-३६

भाई श्रीमन,

'नये युगका राग'[1] मैं पढ गया हू। कविताए मुझको अच्छी लगी हैं। हेतु स्पष्ट और निर्मल है। काव्यकी दृष्टिसे मैं कुछ भी अभिप्राय देने योग्य अपनेको नही मानता हू। तुमारी कृतिको प्रगट करनेके वारेमें तो कवि लोग ही अभिप्राय दे सकते हैं।

इतना लिखनेमें मैंने कितना समय लिया? क्योंकि मैं जानता ही नही था क्या लिखु।

: ५५ :

सेगाव,
२०-१२-३६

चि श्रीमन्,

तुमारा लेख पढ गया हू। हरिजनमें नही छप सकता है। कही छपने लायक नही है। तुमारे पास जो योजना है उसे प्रकट करो। तुमारा प्रस्ताव तो सर्वमान्य है। लेकिन लिटरसीका अर्थ क्या किया जाय? यह प्रश्न वहुत विवादग्रस्त है।

वापूके आशीर्वाद

: ५६ :

सेगाव,
१०-१०-३७

चि श्रीमन,

कल ही सूना कि तुमको चार दिनसे अविछिन्न बुखार आ रहा है। यह सब कैसे? क्या शादी की इसलिये? मैंने ऐसे ही मान रक्खा था कि तुम्हे कभी बिमारी हो ही नही सकती। यह सब वात कहा गई? आशा करता हू कि आज ही अच्छी खबर मिलेगी। यह खत तो

१ श्रीमनजीकी कविताओंकी दूसरी पुस्तक।

प्रात कालकी प्रार्थनाके बाद पाच बजे लिखवा रहा हू। याद रखो कि तुम्हारी प्रेरणासे तुम्हारे पर विश्वास रखकर मैंने परिषद[1] भरने दी है और मैंने सभापतित्वका स्वीकार किया है।

इतना बडा बोझ उठानेकी मेरी बिलकुल शक्ति नही थी, लेकिन तुम्हारे उत्साहसे उत्साहित होकर मैंने स्वीकार किया। अब मुझको धोखा नही दोगे। निश्चित होकर जल्दी अच्छे हो जाओ। क्या परिषदके बोझने तो तुम्हे बिमार नही कर दिया है? यदि यही कारण है तो गीता माताका आश्रय लेकर अनासक्त और निश्चित बनो। अतमे जो कुछ होता है वह ईश्वरसे ही।

: ५७ :

सेवाग्राम,
२८-४-४१

भाई श्रीमन्,

तुमारी सूचना[2] अच्छी है। आज राजेंद्रबाबु आते है। देखुगा क्या शक्य है। जानते होंगे की मदालसा खूब आगे बढ रही है। काफी चलती है आशा तो है कि बिलकुल अच्छी हो जायगी।

५८ :

१५-१०-४१

चि श्रीमन्,

मैंने तुमारे निवेदनमे सुधारणा की है। यदि अच्छी लगे तो करो। नहि तो जैसे लिखा है ऐसे हि जाने दो।

५९ :

(सितबर १९४४)

मैं यह पत्र पढ गया हू। भदतजीका निवेदन सुना। तुम्हारा खत जल्दीमे लिखा गया लगता है। नाणावटीजीके उत्तरकी प्रतीक्षा करनी

१ अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा परिषद, जिसमें बुनियादी तालीमका जन्म हुआ।

२ पाकिस्तान सबधी समस्याके बारेमें काग्रेसकी भूमिका स्पष्ट करनेके लिए एक विस्तृत वक्तव्य तैयार करनेके बारेमें श्रीमनजीने गाधीजीको लिखा था।

चाहिये थी। कुछ स्मृति दोष या जल्दी हुई है तो सुधारणा करना धर्म हो जाता है। नाणावटी जो बनाते हैं उसमें तो कुछ दोष नहीं पाता हूं।

मैं वहां १ ली तारीखको पहुचनेकी आशा करता हूं।[1]

: ६० :

(सितंबर १९४८)

चि श्रीमन्,

तुमारी पोथी[2] मिलि है। पढनेकी कोशीश करुंगा।

हिंदी–उर्दुके बारेमें तुमने जो लिखा है उससे काफी अशांति फैल गई है ऐसा मगनभाई कहते हैं। मेरा खत मिला होगा मैं ३० तारीखको रवाना हुंगा। उससे पहले हो सकता है।

: ६१ :

मौनवार,
१३–१०–४८

चि श्रीमन,

यह मेरी प्रस्तावना[3] या जो कुछ माना जाय। अगर इसके अलावा कुछ चाहते हो तो कहीये। बहुत महेनत की लेकिन पूरी पुस्तिका नहीं पढ सका। कमसे कम चार घंटे चाहिये कहांसे निकालु ?

१ हिंदुस्तानी प्रचार सभाके मार्फत हिंदी और उर्दूकी परिक्षाओंके बारेमें श्रीमनजीने श्री भदन्त आनन्द कौशल्यायनको १०-९-४८ को लिखा था जिससे यह प्रगट होता था कि सभा सिर्फ उर्दूकी ही परिक्षा चलावेगी। इसके स्पष्टीकरणके लिए श्री मगनभाई देसाईने २२-९-४८ को श्रीमनजीको पत्र लिखा। उसे उन्होंने गांधीजीको बताकर भेजा तब गांधीजीने यह नोंध उसी पत्र पर लिख दी थी।

२ 'गांधियन प्लेन' की पांडु लिपि।

३ 'गांधियन प्लेन' की प्रस्तावना जो कि पुस्तिकामें छप चुकी है।

: ६२ :

सेवाग्राम,
३०-११-४४

चि श्रीमन्,

तुम्हारा खत मिला। टंडनजीको लिखनेकी कुछ आवश्यकता नहीं। मुझे प्रस्ताव मिल गया है।

केदारबाबूकी नोंध अच्छी है। इसके साथ एक नकल भेजता हू। मैं चाहता हू इस बारेमें मदालसाको दोरो। शांताबहनसे बात करना है तो करो। मुझको खत[1] अच्छा लगा है। कुछ न कुछ तो होना ही चाहीये। सब अध्यापकोंको मिलनेके लिये भी मैं तैयार हू। लेकिन यह बोज मुझपर नहीं होना चाहीये। थकानके कारण ३ तारीखसे ३१ तक काम छोडना चाहता हू।

: ६३ :

सेवाग्राम,
१-१२-४४

चि श्रीमन्,

तुमारा खत बहुत स्पष्ट और अच्छा है।[2] मेरा व्रत[3] खतम होनेपर हम सब चर्चा करेंगे। तुमारे कोलेज कार्यका महत्व मैं बराबर समझता हू। उसमें विद्यार्थी संगठन और महिला आश्रमका बोज तुमारा सब समय ले लेगा। इसलिये जहा तक हो सके हिंदुस्तानी प्रचार कार्यसे तुमको मुक्त करनेमें मदद दूगा। देखता हू क्या हो सकता है।

तुमारा स्वास्थ्य बिलकुल अच्छा होना चाहीये। सेवा कार्यके लिये शरीर रक्षाका धर्म नहीं भूलोगे।

१ वर्धाके महिलाश्रमके बारेमें गाधीजीको लिखा गया वहाके अध्यापकोंका पत्र।

२ इस पत्रमें श्रीमनजीने इच्छा प्रकट की थी कि उन्हे हिन्दुस्तानी प्रचार कार्यसे मुक्त कर दिया जाय।

३ थकावटके कारण कुछ दिन काम न करनेका व्रत गाधीजीने लिया था।

: ६४ :

३-१२-४४

चि श्रीमन्,

तुमारा खत अभी मिला।[1] उसमे तुम दोनोका प्रेम भरा है। लेकिन इसी समय स्थानातरकी आवश्यकता प्रतीत नही होती। देखता हू व्रत दरम्यान क्या होता है। तुमारे साथ थोडा समय भी रहना मुझे प्रिय लगेगा। तुम अच्छे होगे।

: ६५ :

से ग्रा,
२५-१-४५

चि श्रीमन्,

तुम दोनोका प्रेम अवर्णनीय है। प्रेमके खातर भी तुमारे यहा जानेका दिल होता है। शिविर चलता है तब तक तो यहासे छुट नही सकता। मौन तो रुचिकर है मै बच जाता हू। कामपर तो चढ गया हू ऐसा मानो। तो भी तुमारे यहा जानेका दिल रहेगा ही।

: ६६ :

मेरा आनेका समजमे आया न? जलदीमे जलदी २३ को आ सकता हू। २५ तो है ही। पीछे देखूगा कहा तक ठेर सकुगा। यहा काम काफी पडा है। तुमारे यहा आनेके खातिर ही आना है। मुझे यह बात प्रिय है।

सुदरलालजीसे सब बाते कर लो। कुछ नाम दा[2] के बताये। मैंने कहा श्रीमनको बताओ वे कहेगा वही मै मजुर करुगा। एक भाई या बहन कहते थे तुमारे पुस्तकने[3] उनको मदद दी।[4]

१. श्रीमनजी व मदालसाने गाधीजीको आरामके लिए वर्धामें अपने मकान जीवन कुटीर में कुछ दिन रहनेके लिए आमन्त्रित किया था।

२ दाखला तरीके यानी उदाहरणार्थ।

३ 'गाधियन प्लेन'।

४ यह श्रीमनजीको मौनके दिन लिखकर दिया था। इसके बाद गाधीजी कुछ दिन उनके घर रहे थे। इन्ही दिनों वर्धामें गाधीजीकी अध्यक्षतामें हिन्दुस्तानी प्रचार सम्मेलन हुआ था।

: ६७ :

से
७–२–४५

चि श्रीमन्,

महिला आश्रमके बारेमे जो तुमने लिखा है पढ गया। अच्छा है। उद्देश दो तीन लाइनमे लिख सकते हो, लिखो।

इसमे जमनालालजीने दिये हुए वचनका ख्याल करना। हो सके वहा तक हम उसका विचार व अमल करे।

: ६८ .

मुझको यह सब पसद है। महिलाश्रमके विभाग कर लेना अच्छा है। मै नही जानता कि सब विभागका एक कोई उपरी रहेगा या रहेगी या नही। अगर सब विभाग तुमारे मातहत रहे और शातावहिनको तुम जिम्मेदार रहो तो मेरा ख्याल है सब ठीक हो जायगी। तीनकी कमिटी भले रहे लेकिन शातावहिन तो तुमको ही पूछे और तुम ही सब जिम्मेदारी ले लो तो सब सरल हो जायगा।[1]

: ६९ :

सेवाग्राम,
६–३–४५

चि श्रीमन्नारायण,

मैंने कुछ सुधारणा की है।[2] उसे समजानेकी जरुरत नही है। ११ वी कलम निकाल दी है। उसे देना पडेगा तो अलग देगे। इतना याद रक्खो कि हमने तय कर लिया है हम एक कौम बननेकी कोशीश करेगे। लेकिन न बन सके वहा तक स्वराज आदोलन रुका नही रहेगा। भाषाके प्रश्नको उस क्षेत्रसे हटाना है। दोनो रुप मिल जानेसे ऐक्य बढेगा वह ठीक है।

१ महिलाश्रम सबधी श्रीमनजीकी योजनाके बारेमें मौनवारको लिखा गया गाधीजीका जवाब।

२. श्रीमनजीने गाधीजीको हिन्दुस्तानी प्रचार सबधी एक योजना बनाकर दी थी।

: ७० :

महावलेश्वर,
२३-४-४५

चि श्रीमन्नारायण,

साथमें दा ताराचदका ख़त है।[1] उसे पढो और अपना अभिप्राय भेजो।

मुझे लगता है कि ख़र्च पच्चीसी टकका बहुत है।

अगर वर्धामें करे तो हमारे पास सब सरजाम है।

छपाई तो नवजीवन प्रेस अपने ही आप कर सकता है।

मुझे स्वतत्र रूपसे तो कुछ करनेका अख़त्यार नहीं है? हमारे कार्यकारिणीके सामने रखना होगा ना?

: ७१ :

महावलेश्वर,
१-५-४५

चि. श्रीमन्नारायण,

हुमायु कबीरना 'इडिया'ना मार्चना अकमा सिकंदर चोधरीए करेली तमारी पुस्तिकानी[2] टीका छे ते जोई जजो।

मदालसा मजामा हशे।

आ गूजरातीमाज चाल्य एटले चालवा दीधु।

बापु[3]

: ७२ :

म'श्वर,
८-५-४५

चि श्रीमन्,

तुमारी सूचना सही है। हम कैसे निकले सोचनेकी बात है।[4] तुमको आवश्यकता होगी तो बुलाउगा।

१ हिन्दुस्तानी कोषकी योजना सबधी।

२. 'गाधियन प्लैन' की।

३. यह पत्र गुजरातीमें होते हुए भी सही हिन्दीमें ही की है।

४ श्रीमनजीने हिन्दी साहित्य सम्मेलनसे हटनेके बारेमें लिखा था।

मदालसाने कटी स्नान छोड़ा है सो अच्छा नहीं है। दरीयाका पानी 'टबमे' भरकर ले सकती है।

सबको आशीर्वाद। रसगुल्ला[1] को मीठी चुम्मी।

: ७३ :

PANCHGANI,
2nd June, 1945

Question[2]

To my mind one of the greatest problems confronting us at the present moment is that of combating the systematic plan of economic exploitation by flooding the Indian market with foreign consumers' goods This is bound to spell disaster to Indian industrialisation, whether small-scale or large-scale And the pity of it is that our own business men and industrialists seem to be vying with one another in becoming glorified agents of foreign manufacturers Don't you think, therefore, that an urgent need of the hour is the rousing of public conscience against the menace of foreign goods? I think the constructive workers should take up this programme immediately A countrywide propaganda for the use of village manufactured and Swadeshi goods can also prove to be a very effective "economic sanction" against foreign domination What is your opinion and advice?

Answer

The difficulty cannot be met by carrying on propaganda however wide and intensive The first thing is to demonstrate its economic fallacy Let us recognise that the industrialists are not conscious traitors. They honestly believe that their plan will bring prosperity to the masses They are wrong But how to show that they are

१. श्रीमनजीका बड़ा लड़का भरत।

२. श्रीमनजी द्वारा गाधीजीसे पूछा गया प्रश्न तथा उसका उत्तर।

: ७६ :

कलकत्ता जाते ट्रेनमें,
१-१२-४५

भाई श्रीमन,

आज तुमारी पुस्तिका[1] और मेरे दो शब्द भेजता हू।

मैं कल रातके ९-३० बजे सब खतम किया। बीचमें खानेकी और कातने की ही फुरसद ली। दो शब्दके बारेमें कुछ सुधारणाकी दरकार है तो कहो।

पुस्तिकामें मैंने जो दुरस्ती की है सो ठीक न लगे तो पूछो।

तुम देखोगे कि तालुका, जिल्ला वि पचायतोको मैंने अनिश्चित्त कर दी है। वे सलाहकार ही है। ऐसे मडलको कानूनी प्रबधमे स्थान क्यो दें? उसकी आवश्यकताके बारेमे शक है। जब ग्राम सचमुच जिन्दा हो जाते है तब सलाहकार मडलोकी आवश्यकता कम रहनी चाहिये। प्रान्तकी पचायत यह सब काम कर लेगी और जो तालुका व जिल्लाके मार्फत करवाना होगा, करवा लेगी। इसमें कुछ विचार दोष है तो मुझे बताओ। मैंने तो शीघ्रतासे पढ सकता था वैसे पढ लिया।

पाकीस्तान और राजाओके बारेमे मेरी कल्पनामे स्थान हो सकता है या नही विचार योग्य है। याद रखो कि गाधी योजना तब ही शक्य हो सकती है जब अहिंसाके मार्फत वहा तक पहूचे।

पुस्तिका व प्रस्तावना अलग बुकपोस्ट रजिस्टरसे भेजे है।

: ७७ :

सोदपुर
९-१२-४५

चि श्रीमन,

तुमारा खत आज मिला। मैंने थोडा ही फेरफार किया है। वापिस करता हू।

१. 'गाधियन कॉन्स्टिट्यूशन'

मदालसा अच्छी है सुनकर बहुत खुश हुआ। उसे कहो रोज उसका ख्याल करता हू।

मेरी शरदीकी बात निकम्मी समजो। थोडी थी लेकिन मैं 'महात्मा' हू न ?

: ७८ :

सोदपुर जाते जहाज परसे,
३–१–४६

चि श्रीमन्,

तुम्हारा खत मिला। मैंने तो जिस रोज तुम्हारा खत मिला उसी रोज सफाई करके भेज दिया था। आज ३०-१२-४५ के खतका जवाब दे रहा हू। जहाज पर हू। सोदपुर जा रहा हू।

मेरे आनेकी तारीख मुकर्रर करना दुश्वार है। पुना पहले जाऊ या वर्धा यह सवाल थोडा विचारणीय हो गया है। तब भी ८ फरवरीको मैं वर्धा पहुचनेकी भरसक कोशीश करुगा। १२ तारीखको अगर सोमवार नही है तो वह रखो, नही तो ११ तारीख २ बजे रखो।[1] स्थल सेवाग्राम ही रखा जाय।

प्रान्तिय एसेम्बलीके बारेमें मेरी उदासीनता समजो। लेकिन झुकाव उसी ओर है, योग्यता है और सब राजी है तो अवश्य जाओ।

: ७९ :

सीमला,
१४–५–४६

चि श्रीमन्,

तुम्हारा खत और अदबीबोर्ड[2] की किताबोका कुछ हिस्सा मिला। किताबोका हिस्सा पर नजर तो डाल गया हू। उसमे मैं कुछ नही कह सकुगा। उसकी नकले सबको तो नही भेजोगे ? जब सभा होगी तब पढेंगे ? अगर अगस्तमे बैठक बुलाई जाय तो मैं हाजिर हो सकुगा । पुनामें या उरलीमे तो नही बुलाओगे ?

१. हिन्दुस्तानी प्रचार सभाकी बैठक।
२ हिन्दुस्तानी प्रचार सभाकी 'साहित्य-समिति'।

: ८० :

मसुरी,
५-६-४६

चि श्रीमन्,

डॉ बृजमोहनका खत हिंदोस्तानीके बारेमे आया है वह इसके साथ भेज रहा हू। मैंने उत्तर ह सेवकमे दिया है उसे देखोगे। लेकिन अच्छा होगा कि तुम उनको लिखो क्योकि कितनी हकीकत मैं नही जानता हू वह तुम्हारे ख्यालमे होगी।

मेरे लेखकी नकल भी इसके साथ भेजता हू।

: ८१ :

SODEPUR ASHRAM
May 7th, 1947

Question 1 [१]

The British Cabinet Mission in their statement of May 16th had definitely rejected Pakistan They had done so after patiently hearing all that Janab Jinnah Saheb had to say in the matter The British Prime Minister, even in his latest pronouncements, has promised to stand by the statement of 16th May which rules out the division of India into two or more sovereign states But now the partition of the Punjab and Bengal is being demanded by the people because they seem to be cowed down by recent communal disturbances and regard Pakistan as inevitable Does this not betray a defeatist mentality ?

Answer 1

I have no manner of doubt that the demand for partition betrays frustration on the part of the Hindus If there were no cowardice there would be neither Pakistan nor partition, because, from my point of view, both are wrong

[१] श्रीमनजी द्वारा गाधीजीसे पूछे गये प्रश्न तथा उनके उत्तर।

Question 2

People admit that non-violence has succeeded wonderfully well against British rule in India But they seem to feel helpless against the menace of organised communal goondaism What concrete non-violent measures should be suggested for facing the menace ?

Answer 2

The same courses of action as were adopted against the British Government can be used today It is a matter for regret that even after thirty years' experience we have not been able to comprehend the sublime power of non-violence. *Ahimsa* is the only weapon that gives man the strength to face the opposition of the whole world I, therefore, fail to understand why the Hindus should be afraid of the Musalmans, whatever be their number, and *vice versa*

Question 3

What, in your opinion are the main reasons for the withdrawal of British rule from India ?

Answer 3

[One reason I know viz , our non-violent strength][1]

: ८२ :

सोदपुर,
१३-८-४८

चि. श्रीमन्,

तुम्हारा स्वच्छ खत मिला। मैंने काका सा और नाणावटीसे बातें की है। तुम्हारे लिखनेके मुताबिक तुम्हारे मंत्रीपद[2] छोड़ना ही अच्छा होगा। कार्यकारिणीमे तो रहना ही और जो कर सके किया करो।

मेरी दृष्टीमे हमारा काम किसीके विरोधमे नही है, पूर्तीमें है। हमे क्या कोई हमारा काम पसद करे या नही। अगर हमारी बात सही होगी तो वही चलेगी। उर्दू कभी राष्ट्रभाषा नही हो सकती न हिंदी। भले हिंदी पर युनियनकी म्होर भी लगे। राष्ट्रभाषा वही हो सकती है जो दोनों कोम लिख सके और बोल सके।

१ यह ब्रेकेटवाला अंश गांधीजीने अपने हाथमे लिखा है।

२ हिन्दुस्तानी प्रचार सभाका।

मदालसा अच्छी रहे और रसगुल्ला विलकुल अच्छा हो जाय।
सभा दिल्लीमे करो मेरा पहूचना मुश्कील है।

: ८३ :

(१९३०)

चि मदालसा,

ते तो मने कामसरज कागळ लख्यो । ए वरोवर नथी । मने त्याना वधा खवर लखजे ।

जानकीवहेनना कागळमा लखता भूली गयो के कमलनयनने वरोवर न रहेवाथी मे तेने विद्यापीठमा मोकल्यो छे।[1] त्या पण काम तो मोपाशेज।

आखो दहाडो तु शु करे छे?

तकली वनावे छे? काते छे?

बापुना आशीर्वाद

: ८४ :

य म,
२१-३-३२

चि मदालसा,

वत्सलाना कागळमा तने पण थोडा जवाव मळी रहे छे। दूध अहि मने मदतु नहोतु लागतु तेथी मे लख्यु। शात जीवनमा दूधनी आवश्यकता न होवानो सभव छे।

वधु अनाज काचु न खवाय। लीला पादडा गाजर वि काचा खवाय। ते राधवाथी तेमानु एक प्रकारनु सत्व हणाई जाय छे।

बापुना आशीर्वाद

१ कमलनयन दांडी यात्रामें गाधीजीकी टुकडीमें थे। वहा बीमार हो जानेसे उन्हें गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद भेज दिया था।

: ८५ :
अ

य म,
१७–७–३२

चि मदालसा,

अभिमान खराब अर्थमा वपराय छे। स्वाभिमान सारा अर्थमा। तु मोटा माणसनी दीकरी छे एम मानी फुलाय तो तु अभिमानी गणाय। पण तारु कोई अपमान करे ने तेना डरथी तु डरी न जाय तो ते स्वाभिमान अथवा स्वमान जाळव्यु कहेवाय। ओम केम कागळ न लखे ?

कमळा तो लखेज शानी ?

बावु[1] हवे तो बहु मोटो थई रह्यो हशे। हजु एने मीठाई बहु जोईए के ?

कागळ लखवानु आळस न करजे। बाळकृष्णने लखवानु कहेजे।

: ८६ :
अ

(यरवडा मंदिर)
२०–८–३२

चि मदालसा

तारो कागळ मळ्यो। तारामा ईर्षा, अभिमान वि. भर्या छे एम तु भले माने हु नथी मानतो। ए दोषो ते क्याथी लीधा होय ? जमनालालमा तो ए नथीज नथी जानकीवहेनमा। नथी तने कुसग थयो। नथी तने कोई प्रकारनी मणा। हा क्रोध छे ते तो हु पण जोतो हतो। ते जानकीवहेनमा ये छे। वळी तारु शरीर नवळु। पण तु डाही छो एटले विचार पूर्वक ए क्रोधने काढजे। जेवा आपणे एवा सहु छे। बधामा एकज जीव आत्मा रहेलो छे। तो कोईनी उपर क्रोध करवो ते आपणी उपर कर्या बरोबर छे। अने जेनामा जीवमात्रनी सेवावृत्तिनो धगश पेदा थाय छे तेनामा दोषो रहीज नथी शकता। तु तारी सेवावृत्ति वधारजे।

मने नियमसर लखे तो सारु।

१ मदालसाका छोटा भाई रामकृष्ण।

: ८७ :
अ

यरवडा मंदिर,
२२-११-३२

चि मदालसा,

तारा अक्षर तो बहु सुधरता जाय छे। तारो अभ्यास क्रम पण सरस छे। गजा उपरात महेनत न करजे। शरीर बगडवा दईने अभ्यास करवाथी बन्ने बगडवाना। क्रोध खराब छे एम तु जाणे छे एटले धीमे धीमे ते नीकळीज जशे। एज प्रमाणे अभिमाननु तु समजजे। हालता चालता रडवु आवी जाय छे ए नबळाईनी निशानी छे। तु जो रमत गमतमा पडे तो रडवानु बध थई जाय। जरा पण रडवानु थई आवे ते वखते उच्चे सूरे गीता-पाठ करवा मडी जाय तो रडवान सूझेज नही ए तपासी जोजे।

तु केम कहे छे के मंदिरमा[1] कोई रात दिवस न रहे? मंदिरना पूजारी तो रहेज छे।

: ८८ :
अ

य म,
११-१-३३

चि मदालसा,

तारु गाडु ठीक चालतु लागे छे। आमज चाल्या करशे तो थोडाज समयमा तारो क्रोध अने तारु रुदन शमी जशे। खोराक लेय छे ते पची जाय तो बस छे।

जे प्रश्नो तने उठे छे एवा बधा जिज्ञासुने उठे। वाचन ने विचारथी उकली जाय छे। जगत् आपणेज छीये। आपणे तेमा छीये ते आपणामा छे। ईश्वर पण आपणामा छे। आपणामा हवा भरी छे ते आखे तो नथी देखता पण जाणवानी इद्री आपणी पासे छे। ईश्वरने जाणवानी इद्री केळवी शकाय। ए केळवीये तो तेने पण ओळखीये। ए तने विनोबा आपी रह्या छे। धीरज राखजे।

जानकीमैयाने कहेजे के जमनालालने[2] वारवार मळु छु। तबीयत सारी छे।

बापु

१ जेलसे मतलब है।

२ जमनालालजी भी उस समय यरवडा जेलमे ही थे।

: ९२ :

१६-१-३५

चि. मदालसा,

तारो कागळ मळचो। वजन वधतु नथी ए आश्चर्य छे। पण हरकत नथी। बीजी रीते बरोबर छे एटले भले चाल्या करे। ते गाय दोवानु शरू कर्युं छे एतो वहु सरस काम छे। दोवायु तेवुज पीई जाय छे ना ?

वासण खूब साफ रहे छे ? आचळ लाल पाणीथी ने पछी साफ पाणीथी धुए छे के ? तारा हाथ तद्दन साफ राखे छे के ?

गायने साफ गुणपाटथी खरेरो करे छे ? तेने तारे हाथे खवरावे छे ? तारो आ आरभ वहु सुदर छे। मने फरी लखजे।

: ९३ :

वर्धा,
१४-२-३५

चि मदालसा,

तु ठीक कागळ लखी रही छो। त्या रही गई छो ए तो मने गमेज छे। मारे तो तारु शरीर सुवर्णमय जोवु छे। शरीर अने मननी वच्चे एवो निकट सबध छे के एकनी चोखाईनी साथे बीजानी घणे भागे जडाएली होय छे। इग्रेजीमा आना समर्थनमा एक कहेवत पण छे। उपनिषद्मा खोराकने लगती छे। जे खाय छे तेवो मनुष्य थाय छे। अन्नमाथी भूतो थाय छे। ए गीता वाक्य पण एज सूचवे छे ना ? एटले तु साव निरोगी थई जा, थई शके छे। आने पण तारा अभ्यासनो एक क्रम समज।

ओम सुवे छे मारे पासे ने दीवस कन्याश्रममा गाळे छे।

: ९४ :

वर्धा,
२८-४-३५

चि मदालसा,

तारा कागळ मळ्या छे। खावा बाबत तार काले करीश। तबीयत सरस करजे।

बापुना आशीर्वाद

: ९५ :

बोरसद,
२३-५-३५

चि. मदालसा,

तारो कागळ लांबो भले होय। मने बधी खबर पडवीज जोईए। जानकीबहेनने कहेजे ए घोडे न बेसे। ए पडी जाय तो साजा थता वार लागे। तारी एटली वाल्ती न रहे। अने घोडे चडे ते पडे एवो रीवाज तो छेज ना?

तारा गुमडानो उपाय शोध्येज छुटको छे। मीठु जरूर खाई जोजे जोके हुं नथी मानतो के तेनी साथे कई सबंध होय। तु लीमडानु सेवन करी जोजे। हुं तेना प्रयोग करी रह्यो छु। बे वार खावा पछी अरधो तोला पादडा चावी जोजे। तेथी भूख वधारे लागशे ने रक्त शुद्ध थशे। परीणाम जणावजे।

: ९६ :

वर्धा,
२१-७-३५

चि. मदालसा,

तारा कागळमा कशु अघटित नथी। तारो कार्यक्रम मने गमे छे। वाचवानु मूकी छोड्यु। तने जे गमे ते वगर संकोचे खावानो नियम बरोबर छे। तेमाथी तु योग्य खोराक शोधी लेजे।

जानकीबहेनना गुस्साथी न गभरावु। तेमा तथ्य होय ते तरफ ध्यान देवु।

शरीर गरम रहेवुज जोईए। प्रार्थना वखते अभ्यास वखते लखती वखते टटारज बेसवु। माथु झुकाववानो क्यारेय जरूर नथी। त्यां[1] जोईता कपडा पहेरवाज जोईए।

आ बधी वस्तु उपर ध्यान देजे। हवे तो न्याय मळ्यो ना?

रणजीत पासे शीखे छे ए सारु छे। गमे त्या लगी त्याज रहेजो।

१. विनसर, अल्मोडा।

: ९७ :

वर्धा,
२१–८–३५

चि मदालसा,

तारो कागळ घणे दहाडे मळ्यो। तु मादी न पडे ए शरते मरजी पडे ते खाजे। जे मयम पाळवाना होय ते स्वाभाविक पणे पळावा जोईए। कशी उतावळ नथी। क्रोध छोडवो, बाळक थईने रहेवु, आश्रम जीवन गाळता स्वतत्रता आवे उद्धताई, अविनय, मोटाई कदी नही।

९८

(अक्तूबर १९३६)?

चि मदालसा,

तु गभराती नही। जेनी तेनी दवा न कराय। दाक्तर कहे तेमज करवु।
खोराक नज अपाय। फळना रस, ग्लुकोझ, पीचकारी, माटीना पाटा, माव शाति ज्याटलुज थाय तो दरदी माजो थायज। काले आववानी आशा सेवु छु।

९९
अ

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि) मेगाव,
३–१२–३९

चि मदालसा,

ते टूको पण सरस कागळ लख्यो छे। जानकीबहनने भय छोडयो ए ठीक थयु छे। खुब आनदमा रहीने तारु शरीर सरस करजे। श्रीमन जेवा पतिने पामीने तारे तेने जने जमनालालने शोभाववा छे। घणा पुण्य कर्यायीज श्रीमन् जेवो पति मळे। ईश्वर तने जल्दी सारी करशे।[१]

बापुना आशीर्वाद

१००

२९–१२–३९

चि मदालसा,

शु पराक्रमो करी रही छे? जे थवान् होय ते थाओ। चिंता न करती। तु एटला अभगो शीखी छे ने विनोबानी पासेथी ज्ञान पान कर्यु छे तेनो बरोबर उपयोग करजे। डाक्तरो कहे तेम करजे।

१०१ मेगाव,
५–१–४०

चि मदालसा,

तु केवी गाडी छे? हवे श्रीमन आवे छे तो जल्दी सारी थई जजे। रामनाम हृदयमा राखजे। ए बधु ठीकज करशे। हिम्मत न हारती। तारे जवाव देवानो नथी। जवाब श्रीमन आपशे।

१ यह पत्र गुजराती भाषा किन्तु नागरी लिपिमें लिखा गया है।

: १०२ :

सेगाव,
१३-२-४०

चि मदालसा,

तु पाछी तावमा पटकाई छो के? हारती नही। जलदी साजी थई जजे। मादगीनो सारामा सारो उपयोग ए छे के भगवान उपरनी आस्था वधारवी ने स्वभावने काबूमा राखवो। आ रीते तुरत साजा पण थई जवाय छे।

: १०३

१३-११-४०

चि मदालसा,

तारो कागळ मने मळी गयो छे।
सरदारने जवाब आपीश।

: १०४ :

१४-८-४१

तमे बन्ने कवि। फेर आटलो खरो के पेलो कवि छता पृथ्वीने वळगी रह्यो छे एटले पोताना काममा मस्त रहे छे। तु गगनगामिनी एटले विचारोमा मस्त रहे छे। तेथी तारो असतोष नोकरो साथे रह्या करे छे। ए रहे त्या सुधी तु गृहिणी तरीके घरने केम दीपावी शकशे? ले आटलो लावो।[1]

बापुना आशीर्वाद

१ मदालसा इन दिनों गर्भवती थी और गाधीजीकी देखरेखमें सेवाग्राममें ही रहती थी। उसने कवितामें पत्र लिखकर गाधीजीसे आशीर्वाद मागा तब उन्होंने यह आशीर्वाद दिया। आगेके पत्रोंमें गांधीजी समय समय पर बच्चेकी माको किस प्रकार रहना व बरतना चाहिए यह बताते रहे।

: १०५ :

न्यु दिल्ली,
१७–८–४१

चि मदालसा,

तारो कागळ मळ्यो। पहेला पण तारो कागळ मळ्यो हतो। पण हु मादी हती एटले लखी शकी न हती।

तु भले मारा ओरडामा रहे। मारु घर छे ते तारुज छे ने? तारे मारी साथे रहेवु छे ते हवे हु त्रण चार दिवसमा नीकळवानो छु। मारी तबियत हवे सारी छे।

जमनालालजीनी मांदगीना खबर छापामा वाचीने चिंता थाय छे। भगवान एमने सारु करी दे एटले बस। तारी बाने मारा आशीर्वाद।

लि

: १०६ :

२–१०–४१

चि मदालसा,

तु मजामा हशे। मुझाती होय तो मने लखजे। दाक्तर दास त्या आवे ने काम देय ए न बनवा जेवु थई पड्यु छे। आशा तो छे के हवे बहु करवापणु नथी रहेतु। खावामा बरोबर सावचेती राखजे। दाळ, मसाला, घीमा राधल वस्तुओ न लेती। स्वाद पछी करजे। हमणा तो बाळकने खातर सयम पाळजेज।

: १०७ :

३–१०–४१

चि मदालसा,

में तने काले कागळ लख्यो ते पछी तारो कागळ मळ्यो। हवे तो तारा कागळनो जवाब नथी आपवानो रहेतो। ते सरस पराक्रम कर्यु।[1] दाक्तर तारी पासे आवे छे। मने तो माफ करशे ना? तारा आवीने दर्शन देवाना छे। खुश रहेजे। खावामा खूब ध्यान राखजे। दाक्तर आवे छे ए मने बधु कहेशे।

[1] मदालसाकी पहली प्रसूती अच्छी तरहसे हो जानेपर।

: १०८ :

अ

फरी नथी वाचतो

१५-१०-४१

चि मदालसा,

तारे विषे विचार रह्याज करे छे एटले मनें स्वप्ना भाग्येज आवे तेमा तारे विषे आव्यु। ते उपरथी लखवा प्रेरायो छु। स्वप्नु त्रण दीवस पहेला आव्यु। पण लखवानो वखत आजेज मळे छे।

बाळकने पेटमा राखता जेटली काळजी राखवी पडे छे तेटलीज उछेरता। तारा दूधनो गुण तारा खोराक ने तारी रहेणी उपर आधार राखे छे। जेम तारा खोराकनी असर तारा दूध उपर थाय तेमज तारा स्वभावनी अने विचारनी पण थाय। आ अनुभवनी वात लखु छु एटले मानजे। तेथी तु आग्रहपूर्वक खोराक मात्र औषध समजीने लेजे। स्वादने सारु नहि। औषधमाथी जे स्वाद नीकळे छे ते खरो स्वाद छे ने पोषक छे। औषधने रूढ अर्थमा लईने सुग न राखती। दूध औषध रूपे लेवाय ने स्वादने सारु पण। एकथी शरीर वधे बीजाथी घटे। बाळकने कसरत, हवा, मर्दन वि बरोबर मळवा जोईए। आ बाबतमा कोईनु न मानती। घणा लाड लडाववा तैयार थशे। ते गमे ते होय छता तु तारा मनने वळगी रहेजे।

मारा स्वप्नानी मतलब पूरी थई। तु मजामा हशे, बाळक वधतो हशे। मा दीकरी कजीया नहि करता होय। तु रडती नहि होय। तु पथारीयेथी उठे पछी थोडा महिना अहि रहे ए कदाच इष्ट होय।

: १०९ :

२५-१०-४१

चि. मदालसा,

राधाकृष्णने कह्या पछी आनी जरूर नथी। आ तो मात्र तने हसाववा खातरज। वधारे पापड मोकलु?

त रडे छे शाने? तारा रडवानी असर पण बाळक उपर थाय ए जाणे छे?

अहि क्यारे आवे छे?

बापुना आशीर्वाद

: ११० :

१२-११-४१

चि मदालसा,

आ तो तने रमाडवा। तारा खबर तो मळयाज करे छे। मारा सदेशा मळता हशे। हवे कई फरे छे के नहि? फरवा नीकळवु जोईए। पण दाक्तर कहे तो।

बमाणा जेटला ओछा लेवाय तेम सारु।

बाळक बध्या करे छे ना? दा दाम आजे आववाना हता।

: १११ :
अ

(सेवाग्राम)
२१-११-४१

चि मदु,

तु घेली छो ने घेलीज रहेवानी के? पहेली तके तु अहिं आवी जा। रहेवाने सारु नहि पण मळवाने तो खरु! ने पछी जेटलु तारा हृदयमा होय ते ठालवजे ने पेट भरीने रडी लेजे। अने रडवानी आवी सुदर तक आपु छु एटले त्या रडवानु बध राखजे। बाकी तो जे नियमो बताव्या छे ते पाळजे एटले सदाय सुखी रहेशे।

तमने बन्नेने

: ११२ :

(सेवाग्राम)
१-१२-४१

चि मदालसा,

हवे तो तु साव छुटी छो एम दाक्तर कहे छे। एटले ज्यारे इच्छे त्यारे आवी जजे। मारे ९ मीए बारडोली एक महिना सारु जवानु छे एटले ९ मी पहेला आवे एम इच्छु। तु मजा करती हशे। बचु[1] पण बरोबर गति करी रहेल छ एम दाक्तरे कह्यु।

साथेनी पहोच ओफिसमा दई देजे।

१. मदालसाका बडा लड़का, भरत।

बरोबर चावीने लई शके छे। दाळ छोडवी जोईए। जोर करवु पडे एवी कसरत न कराय। कटी स्नान बहु फायदो करे। घर्षण स्नान पण।

बच्चाने माटे कई दवा वापरावबी नहि। तेने भाजीनु पाणी, फळोनो रस दवा रूप थशे। कसरत तो करेज। बीजु अही आव्ये। श्रीमन अल्लाहबाद जाय ने वधु पतावी लावे।

: ११६ :

महाबलेश्वर,
२३-४-४५

चि मदालसा,

तार केम चाले छे? शरीर खूब साचवे छे के?

: ११७ :

सीमला W,
१०-७-४५

चि मदालसा,

तु केम छो? मने केम लखती नथी? हु गमे ते काममा होउ तो पण तारो कागळ तो वाचुज। अेम मसुरी गई के?

: ११८ :

सेवाग्राम,
२३-७-४५

चि मदालसा,

'जीवन कुटीर'[1] नाम तो सार्थक थशे जो बहारथी भरेली जेवी आवी त्या मीठु जीवन मेळवती रहेशे तो। तु मारी छो ए जाणी बहु राजी थयो छु। वळी हवे तो विनोबा छे ने राम[2] पछी शु जोईए? खबरदार हवे पाछी निराशा कूपमा पेठी तो।

१ मदालसाके घरका नाम।
२ मदालसाका छोटा भाई रामकृष्ण।

: ११९ :

पुना,
८-१०-४५

चि मदालसा,

तने लख्या विना केम चाले? निराशानी वातज मनमाथी काढी नाखवी। निराशा केवळ आपणी कल्पनामा वसे छे।

मने ताव वेज दीवस आवी गयो। हवे सारु छे। रसगुल्ला तो हु आवु त्यारेज चखाशे। हवे तो खूब मोटो लागतो हशे।

तमने बनेने
बापूना आशीर्वाद

आ महीनाना छेल्ला अठवाडियामा त्या आववानी आशा छ।

: १२० :

पुना,
४-११-४५

चि मदालसा,

हवे तो तु वे दीकरानी मा थई। जानकीवेनना हर्ष एवो घेलो के मने वे तार कर्या। एनो तार न हत तो खवर न पडत। मे जवावमा तार आप्यो छे ते तेमने मळी गयो हशे।

तारो कागळ मळयो वाचीने खुशी थयो। हु मुसाफरीमाथी पाछो आवु त्यारे मने तारे घेर लई जजे।

तारी सासुमा तारी पासे छे ए वहु सारी वात छे। तमे वन्ने खुश हशो।

तमने वधाने
बापूना आशीर्वाद

: १२१ :
अ

२३-११-४५

चि गाडी मदालसा,

तारो कागळ मळयो। हवे श्रीमनजी आव्या छे एटले ए कहे तेम करजे। तारा सलाहकार घणा छे। ए खराब छे। एटले एक जेनी उपर

नजर ठरे एनीज वात सामळवी ने ए प्रमाणे वर्तवु। बीजी वात सामळवीज नही। अने करवा आवे तो कान बंध करवा। तो तु झपाटाबंध सारी थई जईश। चितामा तो नज पडवु। बाळकने जन्म आप्यो छे तो हवे तारे तेने सरल रीते उछेरवोज छे। तेने खातर पण गाडी मटीने ज्ञानी न थाय तोय डाही था एटले बस छे।

: १२२ :

सोदपुर,
६-१२-४५

चि मदालसा,

तने तो जवाबनी जरूर नथी, पण मने छे। तने फरी पाछो ताव आवी गयो ए गमतु नथी। तडकामा सुवानी टेव पाडजे। भले धीरे धीरे वधारती जाय। पहेलेथीज तडकामा ओढीने सुवु अने जेम जेम तडको गरम लागतो जाय तेम तेम ओढेलु उतारता जवु। ए एटले सुधी के छेवटे नग्न सुई शकाय। एथी छातीए तो सारु थईज जशे, पण मारा अभिप्राय प्रमाणे शरीर पण रोगमुक्त थई जशे।

: १२३ :

सोदपुर,
१७-१२-४५

चि मदालसा,

तारु बीजु ओपरेशन थई गयु ए सारु थयु। तु मजामा हशे। ठीक पाठ शीखी रही छे। लखवा जेवी थाय त्यारे लखजे। रामकृष्ण मजा करे छे। सेवा करे छे। कमलनयन आजे आवी गयो। बाळक ठीक हशे। वधे छे ना?

: १२४ :
अ

फरी नथी वाचतो

सेवाग्राम,
२४-८-४६

चि मदु,

तारी उपर दया आवे छे। ने खीज पण। दया आववा जेवी ते वातो करी। खीज एटला मारु के आटला दहाडा ते सघरी।

आपणे बीजानो वाक न जोईए, पोतानोज जोईए एमाज जीवन सुखी थाय छे ने आपणे स्वच्छ रहीए छीए। तने कह्यु छे के तारे कोई पण प्रवृत्ति शोधवी के जे तने तारो विचारज न करवा देय। एवी प्रवृत्ति महिलाश्रम तो हतीज। ए न फाव्यु। तो तारे एकले के कोई खासनी साथे सेवा काम शोधी काढवु। कई न सुझे तो रेंटीयानी बधी क्रिया हाथ करवी। नैसर्गिक उपचारना पुस्तको वांचवा। गुजरातीमा छे। हिंदीमा पण छे।

मने दर मगळवारे लखजेज।[1] अने विगतवार लखजे। रोष तो कोईनी उपर न करवो, तारी पोतानी उपर पण नहीं। भजन उंचेथी गाता शीखी लेजे।

: १२५ :

भगी निवास,
नवी दिल्ली,
१–९–४६

चि मदु,

तारो कागळ मळचो। जेवो उत्साह ए कागळ बतावे छे ते हमेशा रहो। मगळवारे लखवानु नज चूकवु। मारो जवाब आव्यो के न आव्यो होय। उत्साह जळवावामा एकज वस्तुनु काम छे। ईश्वर उपर जीवतो विश्वास। श्रीमन् साथे छुटथी पण शात चित्ते ने विनयथी वातो करजे। तेमज मानी साथे। बधायनी साथे मन मोकळु राखवु ने कोईनु माठु न लगाडवु।

मारे अही १० मी तारीख लगी तो रहेवु पडशेज।

रसगुल्लाओने वुची।

तमने बन्नेने

१ मदालसाको इन दिनों काफी मानसिक अशाति रहती थी। २३-८-४६ को गाधीजीसे उसने खूब बातें की और अपने मनका भार हलका किया। इससे उसे बहुत शांति व समाधान मिला। उसी समय गाधीजीने मदालसाको कहा था कि वह उनको हर मगलवारको नियमित रूपसे पत्र लिखा करे।

: १२६ :
अ

न दि,
११-९-४६

चि मदु,

तारो कागळ मळ्यो।

तु तारा दोषोज जो ने बीजाना गुणोज जोशे तो तु झपाटाबंध आगळ वधशे, ने सुखनो अनुभव करशे, दु ख जेवु कईज नही लागे। आपणने कोईनी पासेथी कशी आशा राखवानो अधिकार नथी। आपणे देणदार छीए तेथी तो जन्म लईये छीये। लेणदार नथीज। आ तु गळेथी नीचे उतार एटले आखु जगत तने सरळ लागशे। आ ज्ञानवार्ता नथी पण जीवन प्रवाह सरळ वहेवाववानो धोरी मार्ग छे।

रमगुल्लाने घणी बुचीओ।

: १२७ :

न दि,
१६-९-४६

चि घेली मदु

तारो घेलो कागळ मळ्यो। छता मने मीठो लागे छे। तु घेली रही। तारो कारभार बधो श्रीमन् चलावे छे एटले तु डाही केम थाय? कमलनयन तो लाखोना वेपारमा पड्यो। बहेनो पोताना ससारमा। एटले ए पोतानामा पड्यो होय तेमा नवाई शाने? सावित्री भले गई। तु मजा करजे ने खुश रहेजे। बधु रामजीना खोळामा मूकी देजे। कमलनयनने पण। एने भगवान बचावशे त्या लगी तेने कई नथी थवानु। कशी चिंता न करती।

: १२८ :

न दि,
२२-९-४६

चि मदु,

तारो कागळ मळ्यो। आ वखतनो गमे छे। ते आटला वखत सुधी खरेखर लीवेज राख्यु होय तो तो तारे वमणु करज चूकववानु रह्यु एटले

तारे तो करज भरता जवु ने हरखाता जवु जोईए। हु वर्धा पहोंचु एटलामा तु आवशे के?

: १२९ :
अ

न दि,
ता १६-१०-४६

चि मदु,

तारी प्रतिज्ञा न तोड ए इच्छु।[1] काम होय तो पत्तुज लखवु।

रजत सारो थई गयो ए ईश्वरनो पाड।

पतिपत्नीमा जे प्रेम होय ते गाढ मित्रोना जेवो, ते सर्वथा निर्विकार होय। ते दुःख सुखना साथी होय। बन्नेमा एक बीजानु सहन करवानी शक्ति होवी जोईए। एक बीजा प्रत्ये उदारता होय, बे वच्चे सपूर्ण निखालसता होय। वहेम कदी नही, एक बीजाथी कई छानु नही।

मने लागे छे आटलु बस। दृष्टातो मळीये त्यारे पूछजें।

तमने बधाने

: १३० :

रेलमा,
२८-१०-४६

चि मदु,

मने तो ख्याल छे के में तारा लावा कागळनो जवाब तुरत आपेलो। पण टपालनी नोधमा तारु नाम नथी जडतु। हवे काल तारो बीजो कागळ नवा वर्षनो मळचो।

आपणु नवु वर्ष आवे त्यारे वात।

ते रामने विषे लख्यु छे[2] तेनी वात मे तो न करी पण जानकीबहेने पोतानो विचार बताव्यो मारा पूछवाथी। बधु रामनी उपर मूकवु जोईए। ए बाळक नथी। एने गमे तेज करवु जोईए।

१. मदालसाके एक मगलवारको पत्र न भेज सकने पर।

२. रामकृष्णके विवाहके बारेमे।

तु मजामा हशे। बगाळथी क्यारे पाछो आवीश ए नथी जाणतो। आजे आटलुज।

बापुना आशीर्वाद

: १३१ :
अ

हीरापुर,
२६-१-४७

चि मदु,

तारा कागळ अनियमित थया छे। ए तारा अनियमितपणानु प्रतीक तो नही होय ने? जे होय ते, तु कल्लोल कर अने शात चित्त था। तने ने रामने अही आववा देवा गमे तो खरु। पण ए खोटु प्रलोभन गणु छु। जे छापामा आवतु होय तेमाथी ओछामा ओछा ५० टका बाद करीने वाचशे तो कईक ताळो मळी रहेशे। डुगरा दूरथी रळियामणा लागे ए साभळ्यु छे ने? अने ज्या रोज गामडा बदलाता होय त्या तमाशगीर तरीके पण माणसो भारे पडे। घणायने ना पाडु छु। अने तमने बेने केम रजा आपु? हु जाणु छु के तमे कोई रीते भारे पडो तेम नथी। छता सयम जाळवजो। अने त्या वेठा जे सेवाकार्य करशो एटले अशे आ यज्ञमा भाग लीधो गणीश। छोकराओने साचवजे। तारु शरीर सारु राखजे। राम मजामा हशे। एणे पोताने विषे निश्चय कर्यो?

: १३२ :

३०-१-४७

चि मदालसा,

तारो कागळ मळ्यो। गुलबेन पासे जई आवे ए मने तो गमे छे। केम के गुलबेनना सग ए सत्सग छे। वळी पूनानी हवा पण तारे सारु ने बाळको सारु बहु सारी। तु पूना जाय तो उरुलीकाचन[१] पण जई आवजे। मारो आगलो कागळ मळ्यो हशे।

[१] पूनाके पास गाधीजी द्वारा खोला गया प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र।

: १३३ :
अ

रायपुर,
१५–२–४७

चि मदालसा

तारो कागळ मळ्यो। ते तो मारी पासेथी नथी माग्यो। पण हु तो लखु केम के तु हजु वहु प्रपचमा पडी छो। [illegible]। तारे श्रीमनमा समाई जवु जोईए। मे तो जोयु छे के श्रीमन तने पूजे छे। तु एने पूजे छे पण श्रीमनने जे ज्ञान छे ते तने नथी। वासतीने वधु कहे एमा हु कई दोष नथी जोतो। ए डाही छे, पण हु नथी मानतो के वासती तने दोरवा जेटली शक्ति राखे छे। तारु सुख श्रीमनमा समाई जवामाज छे। ए विषे मने शका नथी। जो तु ज्ञानी होत तो हु कही शकत के श्रीमन साथे लडजे। तु एवु ज्ञान तो धरावती नथी एम कबूल करे छे। जो तने आ वातनो घुटडो उतरी जतो होय तो हु कहु छु तेनो पूरो अनुभव करजे। जरा जेटली पण शका होय तो विनोवाजी पासे आ कागळ मूकजे। ए कहे तेम करजे। नहि तर पण विनोवा पासे तारे आ कागळ मूकवो तो खरो। वासतीने पण बतावजे। रामनी सगाईनु समज्यो। मे एमा माथु मार्यु नथी। वने सुखी थाओ अने शुद्ध सेवा करीने वने पिताजीना नामनी उज्वळतामा वधारो करता थाओ ए मारी अभिलाषा। आटलु रामने कहेजे।

तारो बीजो कागळ मळ्यो।

: १३४ :

पटना,
२१–४–४७

चि मदु,

तारो कागळ मळ्यो। राधाकिसन, जाजूजी अही छे। चर्खा सघनी सभा हती ना?

तारी अस्थिरता ने गाडपण छेक काढी नाखजे । श्रीमन्मा तु तने खोशे तो तु तने जोशे। ए शिवाय तारे सारु बीजो मार्ग नथीज। जेणे कोरे पाने तने सही करी आपी[1] तेने तु ओळखे छे ?

: १३५ :
अ

न दि,
९-६-४७

चि मदालसा,

तारो कागळ मळ्यो।

श्रीमन् १२ मी तारीखे अही आवे छे। हवे हु हरिजनमा लखतो थयो छु। एटले तारी गूचवणो ते वाटे दुरस्त करावजे। तारु कहेवु बरोबर समजी नथी शक्यो । मारा कोई लखाण के वर्तनमाथी छटकी जवानी बारी नज शोधती । ज्या मुश्केलीओ नडे ते दूर करवी घटे छे। मारा लखाणमा स्वच्छद होवोज न जोईए । मारु जीवन सयमने सारु वर्ते छे। एमा पार न उतरु ए बने। पण हु कदी स्वेच्छाचारने सारु दरवाजा नही शोधु एवो भरोसो छे ।

: १३६ :

न दि,
७-७-४७

चि मदु,

तारो कागळ मळ्यो। मारो तार तने मळ्यो हशे । हवे तो भरत घोडा जेवो थई गयो हशे। एने रखडवा न देती।

हु तो इच्छुज छु के तु महिलाश्रममा गुलतान थई जा। ए जमनालालना घणा कामोमा मोटु काम छे । तने तेनी पडखे राखी तेमा पण ए आशा के त

[1] एक प्रसग पर मदालसाने श्रीमनजीसे इनाम मागा। इसपर श्रीमनजीने कोरे कागजपर सही करके दे दिया और कहा कि जो चाहो, उसपर भर लो। बादमें मदालसाने रु १५०० तथा सहीवाला वह कागज गाधीजीको दे दिया। गाधीजीने रुपये तो हरिजन फडके लिए रख लिये और सहीवाला कागज वापस कर दिया।

तेमा मशगुल थई जशे। हवे तमे वेय जणा सयम राखी शको तो छोकरा उत्पन्न करवानु वध राखजो के जेथी तु वेनी उपर ध्यान आपी शके ने महिलाश्रमनु काम सभाळी शके। महिलाश्रमने तारा जेवी सेविकानी जरूर तो छेज। तु तेमा पडशे तो श्रीमन् नेमा वधारे रस लेशे।

सुशीला आजे वर्धाथी आवी।

: १३७ :

जगतपुर,
११–७–४७

चि मदु,

तारा वे कागळो मळ्या। सवारना ३ वाग्यानो उठ्यो छु एटले आ पत्र तो तने लखावी दउ। तु साव शात थई जा अने पोताना कामगा परोवाई जा। बीजानो विचार छोडीने पोतानोज करवो। अने पोतानो करता हवामा नही उडवु। पण झीणु मोटु जे कर्तव्य हाथ आव्यु होय तेनु पालन करी शात रहेवु।

: १३८ :

कलकत्ता,
१७–८–४७

चि मदालसा,

तारो कागळ मळ्यो।

भणसाळीभाईने लई गई ए ठीक कर्यु। भरते झडो वरोवर चडाव्यो हशे।[१] तु साव शात थई हशे।

बाकी मनु लखे ते।[२]

तमने वधाने

१ १५ अगस्त १९४७ को भरतके हाथों घरपर झडा फहराया गया था।

२ मदालसाको गाधीजीका लिखा यह अतिम पत्र है। क्योंकि इस पत्रके मिलनेके बाद मदालसाने उनको लिख दिया था कि उसको अब पूरा मानसिक सतोष मिल गया है। उसने उनका बोझ कम करनेके लिए आगेसे हर मगलवारको उनको पत्र न लिखनेकी भी इजाजत माग ली थी। इसके बाद मदालसा श्री मनुबेन गाधीसे पत्रव्यवहार करती रही। मनुबेन गाधीजीके साथ रहती थी और मदालसाके पत्र उनको बताकर उनकी सलाहसे जवाब दिया करती थी।

: १३९ :

३-२-३१

चि ओम,

इतना गूजराती जानती थी सब भूल गई क्या? तुमारे लिये तो हिंदी गूजराती मराठी मारवाडी सब एक सा होने चाहिये। अबकी बार गूजराती या मराठीमे लिखो और कहो कितनी कातती है कितना धुनती है तकली पर कितनी गति है। खानेका बहोत लेकर छोड देती हैं कि गरीबोंके जैसे जितना चाहिये इतना हि लेकर थाली साफ करती है। गीताजी पढती है?

: १४० :

य म,
२०-८-३२

चि ओम,

तारो कागळ मळ्यो। तारा अक्षर तो खूब सुधर्या। तारु वजन छे ए बधु सक्कर शरीरने लीधे होय तो तेने घटाडवानी शी जरूर छे? तु कदावर ने जोरावर थाय तो वधारे सेवा करवा लायक थशे जो साथे साथे मन पण जोरावर थशे तो। जो रोगने लीधे शरीर फुल्यु होय तो जरूर वजन ओछु करवानो प्रयत्न करवो जोईए। कई रोग छे? मने कागळ लख्या करजे।

: १४१ :

२७-११-३२

चि ओम,

तु भारे लुच्ची छोकरी लागे छे। झीणु कातवु नहि एटले जाडा सूतरने परोपकारमा गणावी देवु। आ बधु तने विनोबा शीखवे छे के जानकीमैया?

बापु

: १४२ :

१९-८-३४

चि ओम,

तारा कागळ मळ्या छे। तु आळस न करती। रोज अमुक कलाकज राखवो के ज्यारे कागळ लखवो। एटले ते कलाके बीजु काम थायज नहिं। धीरज राखीने सरस अक्षरे लखवु। शु खवाय छे, पीवाय छे, केटली उंघ आवे छे, दुःख केटलु थाय छे, रुझ केम आवे छे, कोण कोण मळवा आवे छे ए बधु विगतवार लखवु। वातो न करावबी बीजा करवा आवे तो न करवा देवी। आवा नियमो पाळवाथी रुझ वहेली आवशे।[1]

तारा वखतनो हिसाब आपजे। तमारु बधानु सुवानु क्या थाय छे? इस्पीतालनु वर्णन आपजे। बीजा कोण दरदी छे?

गोपी हजु अहिंज छे। मादली जेवी तो रहेज छे। एने कागळ लखजे। मदालसा रोज सेवाना कलाक भरे छे। तारा कागळ तेने आपु छु।

अत्यारे सवारना चारनो वखत हवे थवा आव्यो छे। दातण करीने आ लखवा बेठो।

जानकीमैयानो कागळ वाची राजी थयो। हवे तो खुश हशे।

: १४३ :
अ

२०-८-३४

चि ओम,

तु अक्षर गमे तेवा काढीने मात्र वचन पाळवा खातर वेठ उतारीने कागळ लखे तो मने तारा कागळ न जोईए। वचन पाळवु तो मन अने कर्मथी। मनमा पाळवानी चोरी होय ने कर्म पाळ्यानु पुण्य मेळववु ए न बने एवी वात छे। मने ए जराय न गमे। मे ए नथी शीखव्यु के जे करवु ते बरोबर अने सुघडताईथी करवु? नाना के मोटा कोई काममा वेठ न उतारवी।

एकेय पळ नकामी न जवा देती।

बापुना आशीर्वाद

१ जमनालालजीका कानका ऑपरेशन बम्बईमें हुआ था, उस बारेमें गांधीजीने पूछा है।

: १४४ :

२३-८-३४

चि ओम उर्फे सोनी सुदरी,[1]

ते ठीक कागळ मोकल्यो कहेवाय। अक्षर हजु वधारे सारा होवा जोईए। तु सुवामाथी सीववा तरफ जाय छे एटले विचारा दरजीओ हवे शु करशे? पण एओने भयन् कारण नहि रहे केम के थोडाज दीवसमा तु सचा उपरज सुनी जोवामा आवशे।

तारा कलाक मदालसा रोज हजु भर्या करे छे ने बीजो वधो तो हवे शो होय एटले माखीओ उडाडे छे।

कागळो बरोबर लख्या करजे। हजु वातो बहु करवा न देती। आवे एओने जानकीबहेन वातो करावे। एने वातो कर्या विना तो चाले एम छेज नहि। ने तेमातो तु महेजे मळी शके पछी काकाजीनी साथे वातो करवानु शु होय?

मारु वजन आजे राधाकिसने लीधु ९८ थयु एम वध्या करशे तो क्यां लगी जवाशे ए तो कोण जाणे?

तु रामायण बरोबर गाय छे के? सुमित्रा लक्ष्मणना सवाद खरेज हृदयद्रावक छे। पण एवा सवादो तो रामायणमा खूब भरेला छे।

तु केटले वागे उठे छे?

गोपी आजे वळेवने खातर जबलपुर गई। पाछी जलदी आववानु कह्यु तो छे। गजाननना कागळ पण आव्या करे छे।

: १४५ :

२५-८-३४

चि ओम,

तारा कागळ मळे छे। अक्षर मने जोईए एवा तो नहिज पण ठीक छे। किसन मळी जाय छे के?

[1] १९३३ में गाधीजीके हरिजन दौरेके समय ओम उनके साथ थी। उस समय उनकी उम्र १३ वर्षके लगभग थी। स्वभाव व शरीरमे मस्त होनेके कारण यात्रामें जब कभी समय मिल जाता वह झटसे सो जाती। इसीसे गाधीजीने उसका नाम 'सोती सुदरी' रख दिया था।

रोज लखवानु तो घणुए मळे। मे क्या नथी सूचव्यु ? कोण कोण आवे छे ? खावानु शु आपवामा आवे छे ? उव केटली लेवाय छे ? ओछी होय तो तारी शक्ति तु आपे छे के नहि एवु वघ् तो लखीज शके। रोज रामायण वाचती होय तो शु वाचे छे ए पण लखाय।

: १४६ :
अ

२९-८-३४

चि ओम,

तु जबरी छो। मारवाडी तो सरस लखनी जणाय छे। मारवाडीमा ने गूजरातीमा बहु फरक नथी। कोई तो कहे छे के गूजराती मारवाडीमाथी नीकळी छे ने हवे मारवाडीने आटी देय छे। तेथीज ते मने दत्तक बाप[1] बनाव्यो छे ना ? मदालसा उभी उभी तारी टीका करे छे के ते मारवाडी सरस नथी लख्यु। पण जेवो परीक्षक तेवीज परीक्षा होय ना। ने वळी मदालसी क्यानी मारवाडी शिक्षिका के परीक्षिका बनी छे ? एटले मारवाडीमा तु पास छो।

: १४७ :
अ

२-९-३४

चि. पडिता[2] ओम,

आ वखतना कागळमा तो ते सरस बोध आप्यो छे। पण तारा बोध प्रमाणे तु चाले छे खरी के ? जो हु आराम न लेतो होउ जतन न करतो होउ तो दर रोज अरधा रतलने हिसावे वधु के ? जे रीते काम

१ गाधीजी ओमसे खूब मजाक किया करते थे। ओम भी गाधीजीके साथ विना किसी झिझकके मजाक करती। ऐसे ही मजाकमें ओमने कहा था कि गुजराती मारवाडीमेंसे निकली है और इसलिए गाधीजीको अपना 'दत्तक बाप' भी बनाया था।

२ 'परोपदेशे पाण्डित्यम्' के अर्थमे गाधीजीने ओमको यह पदवी दी है। उसने गाधीजीको लिखा था कि उनको पूरा आराम लेना चाहिए, वजन बढाना चाहिए, आदि आदि। गाधीजी बच्चोंकी भी सलाह कई बातोंमें लिया करते थे और अपनी अक्लके मुताबिक सलाह देनेमें ओम कभी आगापीछा नहीं करती थी। इसलिए भी गाधीजी ओमको पडिता कहा करते थे।

करतो तें मने जोयो छे एनी साथे अत्यारनी तुलना करे तो तु मने आळसु ने उघणसी गणे। सारुज छे ना के तु त्या वेठी हेंगिंग गार्डनमा आटा मारे छे ने चापडा मारे छे। ने वदलामा थोडी काकाजीनी सेवा करे छे। हेंगिंग गारडननी कथा तु जाणे छे ? आपणा जेवा गरीवने *फरवानी ए जग्या नथी एवो मारो अभिप्राय छे। त्या तो फक्कड माणसो जाय* छे। हवे तु जाय त्यारे जोजे ने मने लखजे के त्या ते केटला गरीब माणसोने भाळ्या। हु तो त्या एक के वे वार जईने धराई गयो।

मारी पासे तो तें भने तारु ज्ञान ठलव्यु। दत्तक बापना तो एज हाल थाय। पण काकाजीने भडकाव्या नथी ना ?

तारा लखवामा भूल छे। काकाजीनु वजन तु १०४ वतावे छे। एने तो हु चार दीवसमा कदाच आटी दईश। तु २०४ तो नथी सूचवती ? रामायण तु वाचे छे ?

: १४८ :

हरिजन आश्रम,
सावरमती,
१४-९-३४

चि ओम,

तु बापुजी पासे आवी गई एम प्रभावती लखती हती अने तु वासीदु, पाणी अने बापुजीनो मावो करवानु एटला काम ते लीधा छे एम पण प्रभावती लखती हती। वसुमतीबेन शाक करे छे, ते पण जाण्यु। अम्तुलसलाम तो छेज अने हु जाणु छु के ते उपरनु वासीदु वाळे छे। अने निमु पासे पण जता हता।

तु निमु पासे वे वखत सतार वगाडवा जाय छे। पण निमु तो लखे छे के हु वे त्रण वखत बापुजी पासे जाउ छु पण तु एने शीखववा जती हशे।

मने तो अहिं श्री जमनालालजीनी कशी खबर नथी पडती। मने आशा छे के एमनी तबीयत सारी हशे। बापुजी लखता हता के ता २० मीए ते वर्धा पहोंचवाना छे तो तेमनी तबीयत केवी छे ते तु मने लखजे।

सौ जानकीबेन मजामा हशे। सौ गोमतीबेन तथा किशोरलालभाईनी तबीअत केवी रही ते लखजे। बन्नेने मारा आशीर्वाद। प्रभा लखे छे के गोमतीबेन बापुजी पासे आवे छे।

भाई रामदासने त्रण दिवसथी ताव नथी। आजे नवळाई पण स्हेज ओछी लागे छे। अँहि गरमी पडे छे। वर्धानी जेवी हवा अँहि नथी। साजे ठडक थाय छे।

लि

: १४९ :
अ

७-११-३४

चि. ओम,

तारा कागळनी आशा राखवी फोकट गणाय। में तने नथी लख्यो पण मारा स्मरणमा तु रहेलीज छो। आ वखते तारु आचरण मने मुद्दल नथी गम्यु। तारो कागळ पण नज गम्यो। तेमा खोटो बचाव हतो। मारी साथे आटला महीना फरीने ते शु मेळव्यु? एनो हिसाब करीश? मने लखीश? काग्रेसना समयमा एक छेडेथी बीजे छेडे जती तु मने जणाई। ते दीवसनो तारो वेश? मारा दु खनो ने मारा क्रोधनो पार न हतो। ते आपेलु वचन पाळजे। कृत्रीम कदी न थजे। जेवी हो तेवी देखाजे। तारी सगाईनी वात चाली रही छे। तेमा तु स्वतत्रपणे तारा विचार जणावजे। साची रहेजे, साचु विचारजे साचु बोलजे। आटलु तारा गजा उपरवट होय तो मारो त्याग करजे।

चोख्खे अक्षरे लखाएला तारा सविस्तर कागळनी राह जोईश।

: १५० :

११-१-३५

चि ओम,

तारु आळस क्यारे काढशे। तारा कागळमा मोतीना दाणा जेवा अक्षर नथी। लावा कागळमा खबर तो कईज नथी आपी। मने हजु लागे छे के कान मुबई जई एक वार देखाडी दीधो होय तो सारु। अही टाढ ठीक पडे छे। अमे तो वगडामा पडया जेवु लागे छे। सरस छे। लोकोने मळवानु बहु रहे छे तेथी कामने पहोचातु नथी।

मदालसाने कहेजे ए लखे। एनो खोराक शो चाले छे? वजन शु छे?

महेरताज तने मने बधाने भूली गई छे। दा अनमारीने त्यां मजा करे छे।

: १५१ :
अ

(तारीख ?)

चि. ओम,

आ डाबा हाथे लखु छु एटले पीसापेन थी।

हाथे लखवु कुटेव छे। पीसापेनथी लखवु पण कुटेव छे। एनी नकल न करती।

कान तने हजु पीडतो लागे छे। तारे मुबई जवु जोईए।

तार करवा धार छु। मदालसानु पण लखजे।

: १५२ :
अ

मगनवाडी, वर्धा,
८-११-३५

चि ओम,

तारो कागळ घणा दिवस राह जोवडाव्या बाद आव्यो खरो। तने ठपको थोडोज लखी शकाय एम छे? तु जेटलु आपे तेटलु स्वीकारी लउ छु। आनद मानवो रह्यो। तारे विषे अबुजम पण वारवार खबर आपे छे।[1] त्या तने सुदर अनुभव मळी रह्यो छे, तेनो पूरेपूरो लाभ लेजे। अग्रेजी तो उत्तम करशेज। त्यानु सगीत पण बहुज सरस गणाय छे। ए बरोबर शिखी लेजे। तामील तो शिखशेज एवी आशा राखु छु, अने त्या हिंदीनो प्रचार करशे एवी पण आशा राखु छु। चरखो पण ओछो करजे। टुकामा एटले दूर जईने बेठी छो तो मोटु पण एकाक्षरी नाम राखे छे तेने शोभावजे। जेना

१ ओम दक्षिण भारतमे मदनपल्लीमें विद्योदया स्कूलमें पढने गई थी। श्री अबुजम्मा वहाकी मुख्य अध्यापिका थीं।

नामथी कल्याण थाय छे एम शास्त्रो कहे छे, ए नाम राखीने तु बेठी छो तो एनो कई अर्थ हशे ना ? एटले ए अर्थ तु साचो पाड एम हु इच्छु छु। एने लगता केटलाक गुणो तो तारामा छेज। थोडा वधारे आवी जाय एटले जग जीत्या। तने एक बीजी खबर न होय तो आपु। जेम महाराष्ट्रमा तेम तामीलनाडमा सस्कृतना उच्चार घणा शुद्ध करवामा आवे छे। महाराष्ट्रमा उच्चार छे पण एटलु उत्तम सगीत नथी। तामीलनाडमा तो मत्रो विगेरे मधुर अवाजथी अने सूरमा गवाय छे। अबुजमनी मारफते ए तु मेळवी शकशे। आ वधु स्हेजे मळे एवु छे। एनी पाछळ घणो वखत आपवो पडे एवु कशु नथी। आ वर्ष तारे सारु मगळदायक निवडो। आरभ कर्यो छे एटले कागळ वखतो वखत लख्या करजे।

: १५३ :

वर्धा,
२७-११-३५

चि ओम,

तारो कागळ मळ्यो। शिक्षिकाओ छोकरी साथे अग्रेजी सिवाय बोलीज न शके ए मने तो असह्यज लागे छे। ए विषे तारे विनयपूर्वक सचालकोनी पासे थोडु निवेदन करवु जोईए। एम शा सारु ए लोको करे छे ? तारो कागळ ठीक छे। तने तो एवी वस्तुथी टेवाई जता वार नथी लागती। त्या जे कई सारु छे तेनो सग्रह करजे, त्याज्य छे एनो त्याग केळवजे।

: १५४/अ :

लखनऊ,
३०-३-३६

चि ओम,

हु जाणु छु के मारी मादगी तने नही लखवानु सरस बहानु मळ्यु छे। पण तु जाणे छे के तारा कागळ मने बोजारूप नज थाय। एम कागळो लखती थाय तो तु 'सुती सुदरी' मटी जाय ना ?

आ कागळ लखवानु कारण तो ए छे के त्या तु आनदमा नथी रहेती, घर सामरे छे ने कोईवार आसु पण ढाळे छे। एवी नाजुक क्यारथी थई ? आपणे तो ज्या रहीये त्या घरज छे। छेवटे तो आ जगतमा 'चदरोज' ना मुसाफरज छीये ना ? मे तो ए भाग नथी जोयो पण कहे छे के हवा सरस छे ने सुदर पण तेवोज छे। श्री उकानने मळी हशे। त्यानु वर्णन आपजे।

काकाजी, मदालसा वधा साथेज लखनऊमा छीए। त्रीजी तारीखे अल्लाहबाद जईशु ने पाछा आठमीए घणा भागे आवशु। १५ मीनी आसपास वर्धा पहोचवानी आशा छे।

मारी तबीयत हवे सारी गणाय। हरिजन सेवक मेळवे छे ? हवे तो इग्रेजी रग बरोबर समजती हशे।

: १५५ :
अ

सेगाव, वर्धा,
११-७-३६

चि ओम,

मारे अहिंया नानकडी पुस्तकशाळा काढवी छे तेमा मराठी पुस्तको जोईए। तारी पासे, मदालसा पासे के हरकोईनी पासे नाना मराठी पुस्तको जेनु त्या हाल काम न होय एवा होय ते मने मोकली देजे। शिखवाना अने वाचवाना। अहिंयानु काम चालशे नहिं तो ए पुस्तको जेना हशे तेने पाछा मळशे। अहिंयानु काम चालशे तो अमुक मुदत पछी ए पुस्तको पाछा मळशे। ओछामा ओछी मुदत ए छ महिना। अने जे पुस्तको आपी शकाय ए आपी देवाना छे। आपी देवाना होय एनी मने यादी मोकलवी। दस रुपीयाथी वधारेनी लायब्रेरी मारे नथी करवी। एटले तने ख्याल आवी जशे के मारे कई जातना पुस्तको जोईए। मराठी छापा कोईनी पासे रहेता होय तो ते पण त्या उपयोग थई गयो होय त्यार पछी जोईए। आमा मोटा दाननी वात नथी। मोटेराओने डोळवानी पण वात नथी। पण तारा जेवा थोडीक गामडिया प्रति दृष्टि राखे तो ते आवा आवा काम सहेजे करी शके। आटलु चीवट राखीने करजे। एमा रस न आवे तो बेधडक थईने ना लखी मोकलजे। एटले वळी बीजे ठेकाणे करवारीश।

: १५६ :

सेवाग्राम १- ११- ४०
वर्धा होकर (मध्यप्रांत)

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

सेवाग्राम,
१-११-४०

चि ओम उर्फ सोती सुदरी,

खत लिखकर वडी महेरवानी की? मेरे नामसे भी नन्दादेवी इ को प्रणाम करना। अव तो तू पहाडोमे रहनेवाली वनी![1] हम लोगोको याद करती है यह कुछ छोटी वात नही है; तुम सव खुश रहो।

वापूके आशीर्वाद

: १५७ :

सेवाग्राम,
२-९-४१

चि. ओम,

आखरमे खत लिखनेकी तकलीफ उठाई सही। अव तो काकाजी आहि जॉयगे। और कितना और कैसा नया अनुभव लेकर। तेरी जगह ऐसा वर्णन

१. ओम शादीके वाद इन दिनों नैनीतालमें रहने लगी थी।

देती है कि दिल चाहता है कि मेरे सब मरीजोको तेरे पास भेज दू। सिर्फ जानकीदेवी और मदालसा नहि? क्यो?

दोनोको

: १५८ :

पूना,
१२-१०-४५

चि ॐ,

तारो कागळ मळयो। अक्षर अस्वच्छ करीने माफी शाने मागवी? अक्षर खराब नज करवा।

बेबीनो मूक सदेशो मळयो। 'एमना' कोण? नाम लेवामा शरम राखे ए तो अबलापणनी नीमाज कहु ना? नामो तु मोकल तो कोई पसद करु।

सुशीलाबहेन आवी गई छे। एनु काम सरस थयु।

: १५९ :

सेवाग्राम,
८-७-४२

चि जगदीश और चि चन्द्रमुखी,

चि कमलनयनने जानकीबहन मार्फत तुम्हारे लिये आशीर्वाद मागे है। मै कैसे इन्कार करू? मै सुनता हू कि तुम्हारे विवाहमें अमर्यादित खर्च हुआ है। मुझे तो यह पसद नही है। बहुत जीओ, सुखी हो और साथ साथ हर कार्यमें गरीबोका ख्याल करो और उनकी सेवा करो।

बापुके आशीर्वाद

नक़ल परसे लिया गया)

: १६० :

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

सेगाव,
२२-९-३९

चि रामकृष्ण,

दीर्घायु होना और पिताजीका नाम रखना।[१]

बापुके आशीर्वाद

१. सोलहवें जन्म दिनपर आशीर्वाद।

: १६१ .

SEVAGRAM,
WARDHA (C P),
12-4-41

DEAR SIR,

Shri Ramkrishna Bajaj, ex-student, son of Seth Jamnalal Bajaj will offer C D[1] on Tuesday 15th instant at 8 a m from Gandhi Chowk, Wardha, by reciting the usual anti war slogans [2]

Yours sincerely,
M K Gandhi

DEPUTY COMMISSIONER,
WARDHA

(नकल परसे लिया गया)

१ Civil Disobedience

२ रामकृष्णने १९४१ में व्यक्तिगत सत्याग्रहमें भाग लेनेके लिये गांधीजीसे इजाजत मांगी थी। उसकी उम्र १८ वर्षसे कम होनेसे गांधीजीने तीन दिन तक उसकी पूरी परीक्षा लेनेके बाद उसको सत्याग्रह करनेके लिये विशेष अनुमति दी। इसीसे उसके बारेमें वे बराबर विशेष दिलचस्पी लेते रहे। यद्यपि [illegible] उपरोक्त पत्र उन्होंने खुद ही लिख भेजा। सत्याग्रह करनेके पहले दिन उन्होंने रामकृष्णको अपने पास सेवाग्राममें ही बुलाया। मौकेके पहले उन्होंने उसे बुलाया और उसके पकड़े जानेपर कोर्टमें देनेके लिये एक वक्तव्य जो उन्होंने खुद ही बनाया था उसे पढ़कर सुनाया और विस्तारसे समझाया। बादमें यह भी कहा कि यदि तुम इसमेंसे कोई बात नहीं समझे हो या किसी बातसे सहमत नहीं हो तो बताओ जिससे उसे बदल दूं। गांधीजीका बनाया हुआ यह वक्तव्य नीचे दिया जाता है —

Sir,

Mine is a case somewhat out of the ordinary I am an ex student It is necessary to mention this fact in these days of anarchy that prevails in the student world Though I am under eighteen I have known enough of the student world and the world outside to realise the necessity of discipline in everything In the step I have taken I have therefore obtained the blessings of my parents and other elders Under my parents I have had practical training in non-violence in

[अगले पृष्ठपर चालू]

: १६२ :

21-6-41

DEAR SIR,

With reference to your letter of 16th instant, I have to state that my sons are no longer members of a joint family Each has his own means But since there are funds with me belonging to my son Ramkrishna, I send you herewith notes for Rs 300 being the total fines inflicted on him [1]

१ यह पत्र वर्धाके डिस्टिक्ट मेजिस्टेटके जमनालालजीको लिखे १६-६-४१ के पत्रका उत्तर है। डिस्ट्रिक्ट मेजिस्टेटने लिखा था कि रामकृष्णको डिफेंस ओफ इंडिया एक्टके मातहत ३०० रुपया जुर्मानेकी सजा हुई है। इसकी वसुलीके लिए दुकान परसे कुछ सामान उठा लिया गया था। पर यह उज्र किये जाने पर कि वह सामान रामकृष्णका नहीं है सरकारने उसे लौटा दिया। अंतमें यह चाहा गया था कि जुर्मानेका रुपया अदा कर दिया जाय। उपरोक्त पत्रका मजमून जमनालालजीके लिए गांधीजीने स्वयं बनाया था। मजमून बनानेके बाद मार्जिनमें गांधीजीने यह शंका प्रकट की —

" आ पैसा मोकलवानु परिणाम ए तो नहिं थाय के रामकृष्ण छुटी जशे ? "

[पिछले पृष्ठसे चालू]

every detail of life I have just finished my matriculation examination I began school work rather late in life My parents had stopped our regular school work during the non co operation days of 1920 when I was not even born My parents have brought us all up in a free atmosphere And so when I was minded to go to school and go through the ordinary training, I was permitted to do so When however the present struggle was started, my mind began to waver and I felt that the practical experience I should gain in the pursuit of freedom would be of far greater value than the ordinary schooling which every schoolboy knows is conceived not so much in the interest of the masses as that of the rulers If in spite of that knowledge we go through that course it is because it is the only one that has been in vogue for so many years and which serves the purpose of providing a status in life Such is the fate to which we have been reduced through foreign domination I have been attracted to the present struggle more for its moral worth than the political I know that if India can present a completed example of non-violence India will have made a unique contribution to human progress It is a vision that holds my youthful mind and I would count no suffering too great to achieve an end so noble and glorious

(उपरोक्त पत्रकी प्रतिलिपि)

सेवाग्राम,

२३-३-४५

चि रामकृष्ण,

तुम्हारे माताजी पर खत आते है बाझदफा पड लेता हू। तुम्हारी प्रगतिके समाचार तो मिलते ही रहते है। मुझे आनद होता है। आज समजा कि मै भी तुमको लिख सकता हू। इसलिये लिख रहा हू। तुम्हारे खतमे मैने देखा तुमने अडरवेयर मगाया है। मेरी सलाह है उसे त्यागो। उसकी हमारी हवामे कोइ जरुरत नही है। लेकिन आदत हो गई है और छूट नही सकती है तो अवश्य रखो।[1] हमारा धर्म तो है ना कि हम इच्छा पूर्वक कमसे कम खर्च करे और जीवन उच्चतम रखे। तुम्हारा सर्व प्रकारसे विकास किया करो।

बापुके आशीर्वाद

(मो क गाधी)[2]

[फुटनोट अगले पृष्ठपर देखिये]

: १६४ : सीमला,
१०–७–४५

चि रामकृष्ण,

कोईना छुटवाथी मने अतरमा हर्ष नथी थतो। तारा छुटवाथी थयो छे। तने तो लाभज थयो छे। सहुथी वधारे जेल तनेज सदी छे। जे अभ्यास तुं जेलमा करी शक्यो छे ए भाग्येज बहार करी शकत। मारो हर्ष तो जानकीबहनने खातर ने दादीने खातर। तेओ तारा विना ने राधाकिसन विना झूरता हता। मने बधी विगत साफ अक्षरे लखजे।

: १६५ : पूना,
२३–१०–४५

भाई रामकृष्ण,

तुम्हारा पोस्टकार्ड बापूजीको मिला है। तुमने अखबारोमे देखा होगा कि उनका बगाल जाना आगे पड गया है। शायद नवम्बरके अखिर तक जाना होगा। वह समय तुम्हे अनुकूल होगा या नही, इसका पता नही। तुम आना चाहो तो तुम्हे बापूजीकी तरफसे इजाजत है। माको मेरा प्रणाम कहना।

सुशीला का
वं. मा.

: १६६ : सेवाग्राम,
१६–५–४६

चि. रामकृष्ण,

तुम लोग पश्चिममे जा रहे हो।[३] उसका लाभ मुझे स्पष्ट नही है। लेकिन धोध चल रहा है उससे कौन बच सकता है? सोचो यहासे क्या ले जाओगे और वहासे क्या लाओगे। विद्यार्थी जीवनकाल विचार विकासका है।

बापूके आशीर्वाद

[फुटनोट १ और २ पिछले पृष्ठके हैं]

१ रामकृष्ण उस समय नागपुर जेलमें था। वहा वह सिर्फ अडरवेयर पहनता था।

२ गाधीजीने सहीके नीचे ब्रेकेटमे अपना पूरा नाम भी लिखा है क्योंकि वे चाहते थे कि जेल अधिकारी रामकृष्णको यह पत्र पूरी जानकारीके बाद ही देवें कि यह उनका लिखा हुआ है।

३ रामकृष्णके अखिल भारतीय वियार्थी काग्रेसकी तरफसे प्रतिनिधि होकर अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थी काग्रेसमें भाग लेनेके लिए प्राग, जेकोस्लोवेकिया, जाते समय।

: १६७ :

(नवाखाली यात्रामें)
१–१२–४६

चि. राम,

तू तो खूब अनुभव लेकर आया है।[१] अब उसका लाभ मुलकको दे और निजी कामको भी दे। मैं यहासे मुक्त हुआ तो मिलेगे। यहा आनेसे कुछ लाभ नही है। माताजीको भी मै नही बुलाना चाहता हू। मैं अधेरेमेंसे प्रकाशमे आ जाउगा तब माताजीको बुला सकता हू। वह बिलकुल अच्छी होगी और सावित्री।

: १६८ :

नई देहली,
२७–१२–४७

प्रिय भाई रामकृष्ण,

तुम्हारा पत्र बापू अभी सुबहकी प्रार्थनाके बाद पढ सके। पीछे मुझे जवाब लिखनेको कहा। वे कहते है अब पूछ पूछ कर कहा तक चलोगे। जिस समय जैसे हृदय कहे वही उस वक्तका धर्म है। विलायती कपडे उन्हे तो खटकेगे। जो खादीका अर्थ और महत्व समझते है वे तो न विलायती इस्तेमाल करेगे, न मिल या अप्रमाणित खादी। मगर हरेक व्यक्ति अपने लिये खुद सोचे। माता पिताका धर्म भी लडकोका धर्म होना आवश्यक नही।[२]

तुम और विमला कुशल होगे। बहुत शक्कर नही खाना।

दोनोको मेरा स्नेह स्मरण।

१ विलायतसे लौटने पर।

२ आजादीके बाद राष्ट्रीय सरकार खुद विलायती कपडा मगाती है ऐसी हालत में खादी, अप्रमाणित खादी, मिल व विलायती कपडोंमें क्या अतर है यह पूछने पर। गाधीजीने इस पत्रका जवाब ११-१-४८ के हरिजनमे भी दिया है।

भाग ३

महात्मा गांधी तथा जमनालालजी संबंधित अन्य पत्र-व्यवहार

: १ :

On way to Bhusaval,
May 20 (1921)

Dear Friend,

I had six interviews with H E the Viceroy[1] There was nothing new said by us I put before him the three questions, and suggested three Committees for finding a solution of the three questions He is not likely to adopt the suggestions just yet But I think we should assist him to understand the situation

I suggested to him that he should see other non-co-operation leaders as he had seen me He liked the idea and said that he would gladly give appointment to all who asked for it Lala Lajpat Rai has already waited upon H.E He gave him the reason for his having joined the movement and dealt chiefly with the Punjab question Will you apply for an interview and place before the Viceroy the reasons for your being a non-co-operator? If you propose to seek an appointment you may mention if you like that I had made the suggestion and told you that the Viceroy would be glad to see you if you would seek an interview

My suggestion does not necessarily mean that you should yourself go You may select anyone else you like or send in another name with yours Nor is this letter to be taken to mean that I want you necessarily to go You shall be the sole judge[2]

Yours sincerely,
M. K Gandhi

(नकल परसे लिया गया)

१ लाट रीडिंग।

२, गांधीजीने कुछ खास व्यक्तियोंको, जिन्होंने असहयोग आंदोलनमें भाग लिया था, यह गश्ती पत्र भेजा था। इसकी एक प्रति उन्होंने जमनालालजीको भी भेजी थी।

: २ :

SABARMATI,
August 9, 1924

DEAR MOTILALJI,

I promised to write to you an important letter, but I have not been able up to now I was ready four days ago when I received Mrs Naidu's letter informing me she was coming here I therefore stopped the letter pending her arrival I wanted to say that I was prepared to facilitate your securing the Congress machinery actually assisting you to do so In no case will I be party to vote-catching in the sense it is being understood at the present moment I would be prepared to work outside the Congress but not in opposition to it I have no interest in anything but promoting a peaceful atmosphere, Khaddar and Hindu-Moslem unity and removal of untouchability In all this I know I should get your assistance. I would naturally have an organisation for that work but not with any desire whatsoever to capture the Congress ultimately I would not like to waste the nation's time in wrangling over getting a majority in an atmosphere such as is prevalent today

If you are not prepared to take over the whole of the Congress machinery I am quite prepared to facilitate your taking over those provinces where you think you have no difficulty in running it

Sho . ing into your programme, I would like to place myself at

of the Congress President .
ing the of Vallabhbhai and Shankerlal app .
accepting Jamnalalji is neutral and so is pe
Mrs Naidu to say that Shaukat Ali too is insistent that I should accept the office The only condition that will make me reconsider my position would be your desire that I should accept Will you please consult Messrs Das, Kelkar and others and let me know what you

will advise me to do in both the matters referred to by me?

I have read this letter to Mrs Naidu

Yours sincerely,
M K Gandhi

(नक़ल परसे लिया गया)

: ३ :

WARDHA,
15th Dec, 1925

DEAR FRIEND,

I am glad to inform you that Mahatmaji has come here and is having complete rest as desired by you He proposes to stay here till the 21st inst and then to proceed to the Congress I hope he will profit by his stay here as perhaps he would not have done elsewhere

१ पंडित मोतीलाल नेहरूके नाम लिखे गये इस पत्रकी नकल गांधीजीने जमनालालजीको भी भिजवाई थी।

प मोतीलालजीका उत्तर मिलने पर गांधीजीने साबरमतीसे ता १०–८–१९२४ को फिर उन्हें लिखा —

"I thank you for your letter

I am sharing with you my whole soul

The more I think of it the more my soul rises against a battle for power at Belgaum But I do not want to be mixed up with the Councils programme This can only happen by Swarajists manning the Congress or their not acting upon the Congress I am quite willing to follow whichever course commends itself to you and our friends With me in the Congress, the Councils, etc, should remain out of it Then I can assist you Or, with them in the Congress, I must be practically out of it I would then gladly occupy the place I did from 1915 to 1918 My purpose is not to weaken the power of the Swarajists, certainly not to embarrass them Show me the way and I shall try my best to suit you If there is anything not quite clear in this, please ask

I am off to Delhi tomorrow in reply to Mahomed Ali's wire"

I have begun to feel that it is essential for Mahatmaji to stay in the Ashram at Sabarmati for about 6 months or even a year after the Congress for the following reasons -

1 He must repair his dilapidated constitution I am strongly of opinion that the country should take no work from him until he sits down for a while for some rest and completely recuperates himself I would personally insist on his prolonging his stay at Wardha for three months more and directing the work of the A I S A from here by correspondence and consultations If necessary thereafter he might go to Sabarmati

2 The stay at Sabarmati is essential for obvious reasons The A I S A is in its infant stage and I believe that the direct guidance of Mahatmaji is very necessary for the efficient organisation of the Association which can best be secured by Mahatmaji staying at the place of the Head Office

3 Tours in the different Provinces by Mahatmaji have, no doubt, their own value but we may no longer tap that source Otherwise we might exhaust it without doing much good to ourselves We must remember that the programme before us today is the production and sale of Khaddar on a large scale which is not possible without concentrated action. I think that *we workers* should take to this programme more seriously and should achieve some concrete results before asking Mahatmaji to tour in the Provinces He should be invited to inspect the results of our concentrated efforts and to give further guidance if necessary During the period of concentrated work, we can have his suggestions by communications with him at Sabarmati

4 There remains the important consideration of the Deshbandhu Memorial I dare say Mahatmaji's tour would get more funds for this Memorial than anything else But even in this matter I think we had better begin to learn to depend more on ourselves Mahatmaji of course is always worrying about the Memorial but we should be able to assure

him that we would leave no stone unturned to collect as much as we can The following persons including myself should begin that work in right earnest immediately after the Congress —

(1) Syt C Rajagopalachariar
(2) „ Vallabhbhai Patel
(3) „ M Kothari
(4) „ Gangadharrao Deshpande
(5) „ S Banker
(6) Babu Rajendra Prasad
(7) Pandit Jawaharlal Nehru

I have had a talk with Mahatmaji on these points and he is agreeable to staying at the Ashram if he gets the approval of the workers

You will kindly send an early reply to this here so that Mahatmaji may be able to decide his further programme and announce it after the Congress [1]

Yours sincerely,
Jamnalal Bajaj

(नकल परसे लिया गया)

४

SATYAGRAHASHRAM,
SABARMATI,
Jan 18th, 1926

MY DEAR BROTHER,

(As we have the same Father, you will allow me to call you brother?)

Many thanks for your post card I will gladly write to you once a fortnight and give you news of Bapu But

१ जमनालालजीने साथी कार्यकर्ताओंको कानपुर काग्रेस (१९२५) से पहले यह गश्ती पत्र भेजा था।

just at present don't ask me to write in Hindi ! I cannot write a letter in Hindi so quickly as in English and as I have very little spare time it is best that I should write in the quickest way possible

I am glad to say Bapu is now much better When we first returned here he had a bad cold, and during the first week he made very little progress in his health But this second week has been much better The first week he gained only 1/2 pound in weight but this week he has gained nearly 2 pounds

He is very strict with me, now that we are back here, and will not let me do anything for him personally except look after his spinning wheel ! He says I must get on as fast as I can with my own work, and I shall not be allowed to help him any more until I know Hindi, Spinning, Cooking, etc , thoroughly well So of course I am working as hard as I can ! I have now started doing all my own cooking, so you can imagine how busy I am

It is very nice having Vinoba here, and I am sure it is a help to Bapu Devadas and Krishnadas are both away, and it makes us very short-handed Vinoba is giving Bapu spinning lessons, and he has reached the record of 121 yards in half an hour I am also having lessons, and am improving in consequence

I hope you are keeping well, and I look forward to seeing you here before very long Please give my greetings to all the good friends in the Ashram, and my kindest regards to your wife

Always sincerely yours,

: ५ :

ALLAHABAD,
7-12-1926

JAMNALALJI BAJAJ,
WARDHA

Your telegram Please save Congress Persuade Mahatmaji yourself attend with Rajagopalachari and other friends by whatever route you choose

—*Motilal Nehru*

: ६ :

P. & O S N Co,
S S RANPURA
(1926-27)

MY DEAR MAHATMAJI,

I had a long talk with Seth Jamnalal I confess that I have at times felt grieved and have expressed my differences of opinion with you rather clumsily You know my faults very well and I also know them quite well All the same it is literally true that of all the public men in India I honour and love you the most I have full faith in your friendly love and trust you as I trust no one else In fact I shall consider it an honour if you will occasionally rebuke me for my mistakes and shortcomings I shall never take them in any but a friendly spirit The two days I had at Bombay I was miserable I still feel very much tired. It is awfully warm here on board the steamer I am doing no work and am taking life easy

With love,

Yours sincerely,

My address in London is
C/o H S L Polak, 265, Strand, W C 2

: ७ :

"KUMARA PARK",
BANGALORE,
August 9, 1927

DEAR FRIEND,

I have your letter I am sending it to Seth Jamnalalji and asking him to go into the matter carefully and do whatever he thinks just and possible Beyond that, I must not influence him [1]

Yours sincerely,
M K. Gandhi

Copy forwarded to Seth Jamnalalji together with the original letter for favour of disposal

A Subbiah

(नकल परसे लिया गया)

: ८ :

[गांधीजीसे मालवीयजीके बारेमें किसीने शिकायत की थी कि वे कांग्रेसके निर्णयके विरुद्ध कार्य कर रहे है। इस विषयमें स्वामी आनदको साबरमतीसे २५–१–३० को लिखे गये गाधीजीके पत्रका निम्न अश जमनालालजीके लिए था जो उनको स्वामी आनदने २९-१-३० को भेजा था।]

"तमारो कागळ मळ्यो छे। मालवीजी कया प्रकारनु आदोलन करी रह्या छे ए हु जाणतो नथी। पण जो ए काग्रेसनी विरुद्ध आदोलन करता

१ नागपुर तिलक विद्यालयको सहायता देनेके लिए उसके अध्यक्ष श्री ई. एम पटवर्धनने जमनालालजीको लिखा था। पर उनके पास सफलता न मिलने पर श्री पटवर्धनने गाधीजीको लिखा कि वे जमनालालजीको इस विषयमे कहें। उपरोक्त पत्र इसके उत्तरमे लिखा गया है।

होय तो अस्पृश्यता समितिमा ए कोई पण होद्दो न राखी शके ए विषे मने मुद्दल शका नथी। मालवीजीनु काग्रेस विरोधी भाषण शोधीने जमनालालजी तेमने मोकले अने पुत्र जेम पितानी पासे शकानु निवारण मागे तेम समितिमा तेमना रहेवा विषेनी योग्यतानी शकानु निवारण मागे। मालवीजीने आवा प्रश्नोथी दुख थतु नथी अने थतु होय तो तेने दबाववानी एमनामा भारे शक्ति छे। मारी समज एवी हती के तेओ काग्रेसनी विरुद्ध तो आदोलन नहिज करे। आ बाबतनो फडचो तुरत करी लेवानी आवश्यकता छे।"

: ९ :

[साबरमती आश्रममें गाधीजी बहनोंका वर्ग लेते थे। श्री जानकीदेवी भी उस वर्गमें जाती थीं। गाधीजी उनसे शुद्ध लेखन आदि लिखवाते थे और उसे खुद ही दुरुस्त करके रोज नबर भी दिया करते थे। इस प्रकार दुरुस्त की गई नोट-बुकोंमेंसे एक पृष्ठ यहा दिया जाता है।]

(१९३०) ?

: १० :

SATYAGRAHASHRAM,
SABARMATI,
March 9, 1930

DEAR RAJAJI,

Anna and Sjt Satyanarayana arrived here the day before yesterday to ask for a grant of Rs 15,000 from Bapuji for Hindi work Rs 6,000 for the press and Rs 9,000 for meeting other expenses for the current year They say that they have been sent here by you Both Jamnalalji and Bapu strongly feel that having once agreed not to depend for funds for carrying on their work on the North, Anna and Satyanarayana have now no right to ask for the grant But Bapu thinks that under the existing circumstances a grant of Rs 15,000 may be made, in case you consider it to be necessary, on the strict understanding that this is to be regarded as the very last grant of its kind Both Jamnalalji and Bapu are positive that Hindi propaganda work in the South must be placed on a self-supporting basis While laying out plans for future work, therefore, they would like the conditions accompanying the present grant to be constantly kept in mind and the programme to be so regulated that it should be capable of being managed without outside support[1]

Yours sincerely,
Pyarelal

P S The amount will be remitted to you by Jamnalalji on hearing from you

(नकल परसे लिया गया)

१ इस सबधमें पृष्ठ ९७ पत्र-सख्या ६२ भी देखिये।

: ११ :

BORSAD,
June 13, 1931

MY DEAR BHUPEN,

I have your letter. I am glad you have written to me so frankly and freely It is difficult for me to find the assistance that you need I thought you had attached yourself to the Abhoy Ashram. In any case I would advise you to see Jamnalalji when he comes there which he expects to do next month

You must make up the lost weight 30 lbs is a big drop

Yours sincerely,
M K Gandhi

SRI BHUPENDRA NARAYAN SEN,
BARADONGOLE, HOOGLY

(नक़ल परसे लिया गया)

: १२ :

AHMEDABAD,
August 21, 1931

DEAR FRIEND,

I have your letter for which I thank you

I did not say to Dr Ambedkar that Congress had spent 20 lacs of rupees on behalf of the depressed classes But I did say that about that sum was spent on behalf of the Congress or by Congressmen He challenged this statement and I then promised that I would have the figures collected and published, which I propose to do as soon as I have collected them As monies were distributed by different agencies it may take a little time The public will be astonished when they see the figures I was never in doubt as to the amount of work done through the Congress agencies in this matter and so I never troubled to collect statistics But Dr Ambedkar's disbelief naturally set me thinking

Your letter enforces the necessity of publishing them I enclose herewith a pamphlet issued by the Anti-Untouchability Committee of its activity [1]

Yours sincerely,
M K Gandhi

SYT L M SATOOR
99, MAIN STREET, CAMP POONA

Copy to Seth Jamnalal Bajaj

(नकल परसे लिया गया)

: १३ :

मार्सेल्स,
१०–९–३१

पू वल्लभभाई,

शौकत पोर्ट सेडथी भेगो थयो। एनी साथ वातो घणी थई, पण एनु परिणाम नहीं जेवु आव्यु छे। ए माणसे तो सरकारने पूरेपूरा हाथ कापी आप्या छे एवु स्पष्ट बापुने जणाई गयु छे। अमुक तो तमाराथी नज मागी शकाय, अमुक safeguards तो स्वीकारवाज जोईए, independence नी तो वात नज करवी जोईए, नहीं तो मुसलमानो तमारो साथ नही दे इ इ वातो बापुने सभळावी! वळी बापुने कहें तमे, मोतीलाले अने जवाहरलाले अमने गण्याज नथी, अमारा विना चलावी लेवाशे एमज वात करी छे अने एमे कह्यु छे के अली-भाई न आवे अने गमे ते बे मुसलमान मारी साथे हशे तो पण चालशे। एना वहेमो अने शकाओनो पार नथी। एटले सघ शी रीते गोदावरी जशे तेनी खबर पडती नथी।

१ उपरोक्त पत्रकी नकल जमनालालजीको भेजते हुए स्वामी आनदने, जो उस समय काग्रेसकी अस्पृश्यता-निवारण समितिके मत्री थे, लिखा था –

"अस्पृश्यता निवारणके कार्यके निमित्त अब तक काग्रेसकी ओरसे या काग्रेसवादियोंने जो २० लाखके लगभग रकम खर्च की है, उसके बारेमें पूज्य बापूजी एक स्पष्टीकरण प्रकाशित करना चाहते है। इस सबधी जानकारी हमें इकठ्ठी करनी चाहिए। हम कौन-कौनसी बातें इकठ्ठी करें इस बारेमें आपको कोई सूचना करनी हो तो कीजिएगा। आप भी जो कोई जानकारी इकठ्ठी कर सकें कीजिएगा। अन्य मित्रोंसे भी मैं कहूगा।"

इजीप्तवाळाओए बहु मान आप्यु। य इ[1] मा बधु जोशो। जाणी जोईने य इ मा मे लाबा कागळ लख्या छे। न जी[2] मा भाषान्तर ठीक थाय तो सारु। मने न जी माटे स्वतत्र लखवानो समय नथी रहेतो।

आवती काले मार्सेल्स। त्या कोई ब्रिटिश जनरल बापुने माटे आवकारनो खरीतो लईने आववानो छे एवु साभळ्यु छे।

लडनथी वधारे वीगतो सोमवारे मोकलीश। आ कागळ जमनालालजीने मोकलशो? जुदो नथी लखतो।

लि से

[signature]

: १४ :

88, KNIGHTS BRIDGE,
LONDON,
Dec 2, 1931

पूज्य जमनालालजी,

यहा पूर्णाहुति हो चुकी है। आज पार्लमेंटमे बहस होगी। कल बापूजी दुनियाको अपनी राय सुना देगे।

अब नया काम मुसलमानोको सतोष देनेका है। उनके यहाके कृत्य ऐसे है कि उसके लिए किसी दूसरे देशमें उनको सजा मिलती। लेकिन पूरी कौमकी कौमको सजा नही दी जाती। मैं तो समझता हू कि अब हिंदुओको – और बापूजीको खास – उनकी मागोको स्वीकार कर लेना चाहिए और इस प्रकार उनको पूरा सतोष दे देना चाहिए। इसका असर कभी बुरा न होगा। यहा मालवीजीने इस मामलेमें कमजोरी दिखलाई। बापूजी कहते थे कि अगर सिक्खोने और मालवीजी तथा डा मुजेने सब कुछ उनके हाथमें छोड दिया होता तो वे समझौता करा लेते। समझौतेका असर चमत्कारिक होता। लेकिन अब भी आप जैसे लोग मुसलमानोको सन्तोष दिलानेका वायुमण्डल पैदा कर सकते है। जुगलकिशोरजी बिरलाके कई तार बापूजीके पास आये कि आप जैसा चाहे समझौता मुसलमानोके साथ कर डालिए, हिंदू आपके साथ रहेगे। लेकिन नहीं हुआ।

१. यग इंडिया। २ नवजीवन।

अग्रेज तो जहा तक हो सकेगा अपनी हुकूमत जारी रक्खेगे। लेकिन आम अग्रेजो पर बापूजीका बडा प्रभाव पडा है। यहा भी प्रार्थनाके समय वैसी ही भीड रहती है जैसी देशमे। अग्रेज मर्द औरत बडी भावनासे आते है और प्रार्थनामें सम्मिलित होते है। इसका बडा अच्छा प्रभाव पडता है। बापूजीके साथ पुलिसवाले तो रहते ही है—सादे वेशमे। जेबमे पिस्तौल रखते है। एक पुलिसवाला बापूजीकी मोटरमे आगेकी तरफ बैठता है और दूसरे दो पुलिसवाले अलग मोटरमे रहते है। उनकी गाडी आगे-आगे रहती है। लन्दनमे सडको पर कभी-कभी बहुत देर तक गाडिया रुकी पडी रहती है। लेकिन पुलिसकी गाडियोमे एक खास घण्टी रहती है जिसको बजानेसे सडकका पुलिसवाला फौरन तमाम रास्ता खोल देता है। बापूजीके लिए इस घण्टीका काफी उपयोग किया जाता है। यह पुलिसवाले भी प्रार्थनामे शामिल होते है और कभी कभी अपने कुटुम्बके लोगोको भी ले आते है। उनको भी बापूजीके लिए बडी भक्ति है।

यहा आनेके पहले हफ्तेमे मीराबेन और बापूजीके नाम कई गुस्सेसे भरे खत आए थे – कुछ तो बहुत ही खराब थे। कुछ लोगोने गदी-गदी कई पुरानी पतलूने भेजी थी। लेकिन उसके बाद वायुमण्डल साफ हो गया और अब एक भी अपमानजनक पत्र नही आता।

लेकिन हम सुनते है कि देशमे हालत बिगड रही है। बापूजीको उसीकी ज्यादा चिन्ता है। अगर वहा हालत न सुधरी तो जाते ही सत्याग्रह शुरू कर देगे। बगालमें जो नया ordinance हुआ है उसके जवाबमे बापूजी बडा आन्दोलन उठाना चाहते है। यहीसे उसको रद्द करानेकी माग शुरू कर दी है। उसकी जडे अभीसे हिलने लग गई।

एक चित्र मेरा और प्यारेलालका भेजा है। दूसरा एक चित्र बापूजीका भी भेजा है। वह चित्र कई मित्रोको भेजा है। उसका दाम श्री घनश्यामदासजीने दिया है। आपने उन्हे चित्रोके लिए लिखा था। उन्होने मुझसे कहा है, मै और भी भेजनेका यत्न कर रहा हू। श्री जानकीबाईको प्रणाम। यह पत्र चि मदालसा इ को दिखा दीजिएगा। एकाध बात उनके मतलबकी भी है।

आपका

देवदास

: १५ :

य म,
५–३–३२

चि कृष्णदास,

तारो स्पष्ट कागळ मळ्यो। तारी पासे कई खास काम हाल न होय, बालकृष्ण के जे तत्री होय ते तने बचावी शके। तारी पण इच्छा होय ने जमनालालजीए विरुद्ध इच्छा न बतावी होय तो तु विजापूर जाय ए मारु होवानो संभव छे। बाकी तो मारी शिखामण जेलना आपा लगीज समजवी। बहारना काममा जीव घालवानो केदीनो धर्मज नथी।

मदालसा ओम केम छे?

: १६ :

यरवडा जेल, पूना,
२४–९–३२

पू. जानकीदेवी,

पूज्य बापूजीकी इजाजत मिल जानेसे मैं आज यहा आ गया। अभी उन्हीके पास बैठकर यह पत्र लिख रहा हू। वे कमजोर तो काफी मालूम देते है, लेकिन चेहरा तथा शरीर तेजमे चमकता है। चेहरेपर खूब तेज है। खूब हसते है। बातचीत भी करते है। श्री सरोजिनीदेवी कुछ न कुछ हसीकी बात करती ही रहती है। पू वल्लभभाई व महादेवभाई भी यही है। पू बा भी यही है। वे बहुत कमजोर हो गई है। पू बापूजीसे आपके बारेमें बात हुई। मुझसे उन्होने पूछा, "जानकीबहन नही आई?" मैंने उत्तर दिया, "नही।" वे बोले, "हा, वह कैसे आ सकती है?" मैंने कहा, "बुला लू क्या?" पूज्य बापू, 'क्या जरूरत है? हा, अगर उससे नही रहा जाय तो आ जावे।" इसके थोडी देर बाद ही पूज्य बाने पूज्य बापूजीसे आपका जिक्र किया। पूज्य बापूजीने उनसे भी कहा "वह आती कैसे, डरती है।" और पू बाने पूछा, "तुमको मालूम है कि वह हिंदीकी परीक्षा देने वाली है?" पूज्य बाने उत्तर दिया, "नही।" फिर मैंने उनसे पूछा कि अगर आप कहे तो बुला लू। इसपर पूज्य बापूने कहा, "अगर उससे न रहा जाय और तबीयत घबडावे तो

आ जाय, नही तो वही काम करे।" यह आपके सम्बन्धकी वाते हुई। अगर आपको आना हो तो Silko पर तार देकर मुझे खबर कर देना।

पू वापूजीने पू सेठजीको जब चाहे तब पत्र देनेकी इजाजत ले ली है।

समझोता आख मिचौलीका खेल नजर आता है। रातको पू वापूकी तबीयत थोड़ी ज्यादा व्याकुल थी।

आपका,
मदनमोहन चतुर्वेदी

समझौता हो गया है। आगा है पू वापू उसे मजूर कर लेगे। उपवास लडनमे मजूरी आनेपर छूटेगा।

(नकल परसे लिया गया)

: १७ :

यरवडा मदिर,
२–११–३२

भाई मदनमोहन,

नारणदास पर तुम्हारा खत था। मैंने वह पढ लिया है। डाक्टर मोदी क्या कहते है वह मुझको तारसे लिख भेजो और उन्हीको कहो मुझको पूरे हाल लिखे।[1] मुझको हाल लिखते रहो। सुना है कि वालकोवाकी तबीअत अच्छी नही हुई है। वोलते हुए भी परिश्रम लगता है। वालकोवासे कहो मुझे लिखे। जानकीवहनसे भी यही कहो। हम सब अच्छे है।

बापुके आशीर्वाद

: १८ :

POONA,
1-5-33

JAMNALALJI,
SHAILASHRAM, ALMORA

Bapu decided 21 days fast from 8th May Harijan cause My pleadings unavailing Rajaji coming Wednesday Situation desperate

—*Devadas*

१. उन दिनों जमनालालजीके कानका आपरेशन हुआ था और वे डॉ मोदीके इलाजमें थे।

: १९ :

POONA,
11-5-33

JAMNALALJI,
SHAILASHRAM, ALMORA

Night little restless insufficient urination but much better Cheerful today Ansari arriving tomorrow.

—Devadas

: २० :

POONA,
12-5-1933

JAMNALALJI,
SHAILASHRAM, ALMORA

All interviews darshan strictly prohibited, General condition excellent today. No jaundice

—Devadas

: २१ :

१७—७—३३

चि नारणदास,

वाईसरोयनो नन्नो आवी गयो छे। एटले मने बे घडीनो मेमान मानो। हु तैयारी करी रह्यो छु। आ छेल्ला बलिदानमा आखु आश्रम होमाई जाय एवी मारी तीव्र इच्छा खरी। आश्रमनी जगम मिल्कत जमनालालभाई अथवा एवा कोई मित्र जाहेर रीते माचवे ए इच्छु। स्थावर मिल्कत सरकारने सोपी देवानो मारो विचार थया करे छे। पछी जेओ जवाने इच्छे ते भले जाय। ने बाकी रहे ते इच्छा प्रमाणे समाई जाय। आ विचार तमने पसद न पडे तो मारे बलात्कार नथी करवो। आश्रमनी ने तेना उद्देशनी रक्षानी जवाबदारी पाछळ रहेनार उपर होय। तेओ पोतानी शक्ति प्रमाणे वर्ते। हु तो केवळ दोरीज शकु। एवु थाय तो तोल्या ने असगानु शु करवु ए विचारवानु रहे। कोई हरिजन सेवामा

१ इस सबधमें जमनालालजीकी डायरीमें १२—५—१९३३ को लिखी निम्न नोंध है—

"देवदासको तार भेजा—बापूने श्री रामस्वामीको पद्रा मिनिट क्यों बात करने दी? आगेसे ऐसी गलती न करनेकी गॅरटी मागी।"

अमला रोकावा तैयार थाय तो रोकाय। नीलानी जवाबदारी जमनालालजी ले तो ते वर्धा जाय। बीजी गुचो हशे ते अत्यारे मने एका एक नहि सूझे। डकननु नाम नथी लेतो केम के डकन तो पुरुष छे। अहिंना वसनार छे। हरिजन सेवामा रही जाय तो तेनो समास स्हेजे थाय। [१]

बापु

(नकल परसे लिया गया)

: २२ :

वर्धा,
३०-९-३३

आ पैसा हरिजन फडने सारु दिल्ली सर्वन्ट ओफ अनटचेबल्स सोसायटीने मोकली देवाना छे। [२]

: २३ :

SATYAGRAHA ASHRAM,
WARDHA,
16th October, 1933

MY DEAR JAWAHARLAL,

Herewith the resignation of Jamnalalji [३] If you think that it must not be sent and is likely to cause embarrassment, you need not take any action upon it You may then return

१ इस सबधमें पृष्ठ १११-११३, पत्र न १३७, १३९, १४० भी देखिये।

२ यह नोंध गाधीजीने जमनालालजीके सेक्रेटरीको भेजी थी। साथमें ३०० और २५ रुपयेके दो चेक थे।

३ जमनालालजीने १६ अक्तूबर १९३३ को काग्रेसके तत्कालीन प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरूके नाम, कार्यसमितिसे अपना नीचे लिखा त्यागपत्र गाधीजीके पास भेज दिया था। गाधीजीने यह त्यागपत्र उपरोक्त पत्रके साथ श्री जवाहरलालजीके पास भेजा।

"Of late, the fact that I am not still in gaol has very much oppressed me I believe that, except for utter incapacitation, a person, who like me, has full faith in civil resistance and the Congress programme, may not hold a responsible post if he avoids imprisonment, as I have done, for the purpose merely of improving his health I feel that I still

[अगले पृष्ठ पर चालू]

it with your reasons after you are free from the wedding arrangements If however you think that the resignation may be accepted you may publish it forthwith I know that the treasurer can only be appointed by the All-India Congress Committee Therefore, the treasurership may remain in Jamnalalji's hands for the time being The chief thing is that he ceases to be a member of the Working Committee I think that the step is a wise and necessary one Constituted as he is, it is risky for him to seek imprisonment just now, that is without taking the rest that the specialist considers necessary But, ordinarily, fighters can't consult their health to the extent that Jamnalalji's temperament demands and as he shares the same view of a civil resister's duty that I have, he is ill at ease, so long as he holds a responsible office in the Congress organisation

I have given you my reasoning which decided my acceptance of Jamnalalji's proposal to resign

M K Gandhi

(नक़ल परसे लिया गया)

: २४ :

कुंबकोणम्,
१५-२-३४

मु. श्री जमनालालजीनी सेवामां,

आ साथे बे कागळ छे¹ ते बापुनी आज्ञाथी मोकल्या छे। बापु लखावे छे के आपनी आगळ जे खाता होय एमांथी ठीक लागे तेमांथी १०० अंके एक

[पिछले पृष्ठसे चालू]

need some more time to recuperate myself, physically and mentally This does not become me as Treasurer and Member of the Working Committee I must, therefore, tender my resignation of both the offices, as I do hereby But, if it is not possible just now to appoint another Treasurer, I would retain that responsibility without being a member of the Working Committee Of course, I need hardly say that this resignation does not absolve me from the duty of carrying out the Congress programme to the best of my ability It, however, does remove an oppressive burden from my mind "

१. गांधीजीके नाम लिखे श्री वेस्टके पत्र। श्री वेस्ट गांधीजीके दक्षिण आफ्रिकाके पुराने साथी थे और इन दिनों द. आफ्रिकामें ही रहते थे। वे बडे अर्थ संकटमें होनेके कारण गांधीजीने उपरोक्त रकम भिजवाई थी।

सो पाउडनो ड्राफ्ट रजिस्टर करीने Albert H West, 204 West Street, Durban, Natal (South Africa) आ सरनामे मोकलजो। बापुनी तवियत सारी छे। परम दिवस तोल १०८ ने ब्लड प्रेशर १६०-११५ थयु हतु। आपनी तवियत मजामा हशे। हु थोडा दिवसथी अही आवेल छु।

एज लि से

: २५ :

भावनगर,
२-७-३४

पूज्यश्री जमनालालजी,

अमदावाद थी लखेलो मारो कागळ आपने मळ्यो हशे। देशी राज्योने विषे श्री केळकरे लखेला कागळनी ने बापुजीए आजे लखेला जवाबनी नकलो आ साथे मोकलु छु। ज्युबिली डे वि विषे आपनी मुलाकात छापामा आवेली ते बापुजीने वचावी छे।

लि सेवक

: २६ :

२०-१०-३४

बा,

तने मुबई नथी बोलावी ए ठीकज कर्यु मानजे। ज्या पेरिनबहेननु अपमान थयु छे त्या तारे जवापणु शु होय ? आ तो एक खास कारण छेज। रामदास त्या छे त्यालगी तु त्याज शोभे ए बीजु छे। मारु मन काग्रेसमाथी उठी गयु छे ए त्रीजु छे। जमनालालजीने पण रोकी लीधा छे। मारे नीकळी जवु छे ए चोक्कस जेवु मानजे। तेमा तने शु लाव ? नीमुनी तवीयत सरस रहे छे।

बापुना आशीर्वाद

: २७ :

[सन् १९३५ में इन्दौरमे होनेवाले अ भा हिन्दी साहित्य सम्मेलनका सभापतित्व गाधीजीने इस शर्त पर स्वीकार किया था कि इन्दौरवासी उनको हिन्दी प्रचारके लिए एक लाख रुपये देंगे। अधिवेशन हो जानेके बाद इस सबधमे कुछ गलतफहमी फैल जानेसे अपने विचार स्पष्ट करनेके लिए गाधीजीने सम्मेलनके मत्रीको निम्न पत्र लिखा था।]

वर्धा
१४-५-३५

प्रधान मत्रीजी,

आपका पत्र मिला है। मैंने स्वतत्रतया ऐसे तो नही कहा है कि समिति बधन मुक्त है। मैंने ऐसे कहा था कि यदि हरिभाऊ व कोतवालने आपको यह कहा कि आप इदौरके विश्वविद्यालयका धन भी एक लाखमे गिन सकते हैं तो आप बधन मुक्त हैं। लेकिन मैं इस बहसमे न पडना चाहता हू न आपको तकलीफ देना चाहता हू। आखरमे जिम्मेवारी तो शेठ जमनालालजीने ली है। वे चाहे सो करे। टडनजीने जो कहा और किया उसमे उनका दोष मने नही पाया। बाहिरके आदोलनको रोकनेकी मेरी न शक्ति थी, न इच्छा थी। अतमें जो मैंने किया उससे दूसरा करना मेरे लिये असभवित था।

आपका
मो क गाधी

(नकल परसे लिया गया)

: २८ :

(जुलाई १९३५)

पू वापूजी,

पू वा कहा करती थी मदूकी सिगडी 'कभी दूर नहीं होती है सो खुश खबर है कि इस मासमें पट्टा सिगडी पास नही आये है। पर इस घरके लोग कोई भी सीधे नही बैठ सकते है। आठ वखत नीची मुडी करके प्रार्थना करती है फिर सारे कार्यमे कमर व मुडी सीधी नही हो सकती। केमेरा लेवे तो मालूम होवे। उसकी आखे भी नीचे झुक गई है सो पेट और छाती सीधे कैसे रहेगें? एक लकडा कमरमे बाधकर सिर भी सीधा रखे तब इसके शरीरकी ८ वाक निकले। नाक रुका ही रहता है। बाकी सब ठीक है, माताजी (मदालसा) बीमार नही पडे वहा तक।

दो रुपयेके कोलसे जलाकर नाक-कान सेकेंगे पर एक रुपयेका कपडा पहनकर सुखी होना पाप, ऐसे ज्ञानियोको कौन समझावे ?

अष्टवक्राके ८ वाक—

१ डेढ पैर होनेसे सौचादिको जमके नही बैठ सकती।

२ कमरका आगे झुकाव।

३ गर्दनकी हड्डी वी ए के अभ्यासियोके माफक टेढी, छाती फेफडा वीचमे।

४ सीधे हवा कैसे लेनी ?

५ खाना खाकर भी पेट झुकाके बैठती है।

६. आख आपने ध्यानसे नही देखी।

७ दातोकी दशा सुधरती है, पर आगे झुके है।

८ हाथ छोटेपनमें उतरा था सो पूरा काम नही देता। सीधे हायको छोडकर सब सुधर सकता है। पर शरीरको आगेके बजाय पीछे झुकानेके तनावसे सीधा होगा।

आठ प्रार्थना—

१ बिस्तरमे, उठते ही २ शौचादिके बाद प्रात ३ नास्तेके समय ४ भोजनके समय ५ गतीके समय ६ शामके भोजनके समय ७ शामकी प्रार्थना ८ बिस्तरमे ध्यान।

आख मीचकर कुछ भी कहे, पर सिर झुकानेसे सारा शरीर झुक जाता है। सो कुछ रोज दीवालसे टिककर अभ्यास करे, सीधे होने तक। यह पत्र विनोबाजी देख ले कहा तक ठीक है ?[१]

जानकीका प्रणाम

(नकल परसे लिया गया)

: २९ :

WARDHA,
8th March 1936

MY DEAR MAHADEVBHAI,

I am in due receipt of the copy of Mr S D Khare's

१ इस बारेमे मदालसाके नाम गाधीजीका पत्र (न ९६) पृष्ठ ३१७ पर देखिये।

letter to Sjt Thakkar Bapa forwarded by you to me[1] I have been taking considerable interest in the case mentioned therein and know about it all that is necessary to know The facts stated by Mr Khare in his letter are substantially correct I have no manner of doubt that the poor girl has been the victim of a most brutal and inhuman crime I am herewith returning one of the two copies of Mr Khare's letter with Sjt Thakkar Bapa's letter to you

It is indeed a great pity that some interested persons, who call themselves Muslims, are trying to give the case a communal colour This betrays a diseased mentality and it is the duty of every citizen who believes in personal and social morality to combat it with all his might Any attempt on the part of either community to make this case a communal question is, in all conscience as mischievous as it is deplorable Those who seek to shield the alleged culprits are unworthy of the great faith founded by the Great Prophet An equally unfortunate feature of the situation is the extremely apathetic attitude of the Hindu community In my view this is a case in which good and honest citizens of both communities should join in condemning the deed and see that justice is done I understand that the local authorities are investigating and conducting the case with a view to secure justice But, I am told that some interested persons are trying to get the case transferred from this place This attitude again is most regrettable. If such an atrocious deed had been committed by a Hindu I would not have the least hesitation in calling upon all good Hindus and Musalmans to condemn it in unequivocal terms This is not a Hindu-Muslim question at all This is a question of our common humanity

१ एक चमारकी करीब तेरह सालकी लडकी पर दो मुसलमान अफसरोंने (एक सब-इंस्पेक्टर पुलिस और दूसरा इंस्पेक्टर ऑफ स्कूल्स) बलात्कार किया था और इस सिलसिलेमें उनपर मुकदमा चल रहा था। श्री ठक्कर बापा मंत्री, हरिजन सेवक संघ, ने इस बारेमें श्री खरे वकीलसे, जो वर्धाके हरिजन होस्टलकी देखरेख करते थे, पूछने पर उन्होंने पूरी रिपोर्ट भेजी थी। यह रिपोर्ट श्री ठक्कर बापाने जमनालालजीके पास उचित कार्यवाहीके लिये श्री महादेव देसाईके मार्फत भिजवाई थी।

Since the case is still subjudice I refrain from expressing any definite opinion But I think I ought to say that it is the duty of every citizen to see that justice is done in this case The father of the poor girl is finding it difficult to get legal aid gratis while the accused being men of money have engaged certain eminent lawyers of both communities The poor Chamar father has to depend upon such counsel as the Government may secure for this is now a Police case But the irony of it is that but few public-spirited lawyers should come forward to help him

The facts of the case speak for themselves and I think any further comment is needless

Jamnalal Bajaj

(नकल परसे लिया गया)

: ३० :

SEGAON,
23-3-1936

MY DEAR BROTHER, JAMNALALJI,

Please forgive English I have no Hindi Dictionary with me, and am therefore afraid of trying my hand at a Hindi letter !

I am so sorry you felt badly about my having written to Bapu about the farm well here [१] Of course I have every intention of consulting you about it I only mentioned it to Bapu as an illustration of our all-India difficulties I was sharing with Bapu my experiences, not asking him for advice on the subject For that I said in my letter to

१ इस सबधमें गांधीजीने ता २०-३-३६ को मीराबहनको निम्न पत्र लिखा था —
" Yours this time is a revealing letter What you say about the well on J 's farm is disturbing But it merely shows the tremendous difficulties we have in our way In the midst of all these you must keep well and calm, even as I am trying to do For you might imagine that it cannot all be plain sailing for me here I am having difficulty about the political part as also the village settlement part "

Bapu that I wanted to wait for your and his return. Some of the people concerned are men who have been in your service since 10 to 14 years, and I don't want to force the situation without you. Probably the men will come to it. The Gond has already said he would not mind. But the complications are many. Even if the higher castes agree to have the Harijans, then the Harijans amongst themselves will not agree. The Mahars, the Mungs and the Bhangis all refuse to take water from one another. Not only the Mahars from the Bhangis etc. but the Bhangis from the Mahars.

What I hope is that you will come here and talk to the people yourself about this question. In the mean time I will try to collect all the water — touchability and untouchability — rules of the village.

I had never realised up to now how complicated and strict the inter-Harijan rules were!

आपकी बहिन,

: ३१ :

(March-April 1936)[1]

Jamnalalji prepared act sole arbitrator. Has wired Narayanlal accordingly. You should nevertheless inquire whether Purshotamdas will accept nomination if required.

—*Bapu*

१. यह गांधीजीके हस्ताक्षरोंमें लिखा तारका मजमून है। लेकिन यह किसको भेजा गया था इसका पता नहीं लगता।

: ३२ :

१३–८–३६

पूज्य बापूजी,

यह पत्र[1] पढकर आप जैसा उचित समझे तार लिखकर इसके साथ भेज देवे। मैंने जो वहाकी स्थिति देखी समझी है उससे तो इन्हे परवानगी देनी ठीक मालूम देती है।

: ३३ :

[जमनालालजी १९३७ में मद्रासमें होनेवाले हिन्दी साहित्य सम्मेलनके अध्यक्ष चुने गये थे। उनके अध्यक्षीय भाषणके लिए गाधीजीने खुद निम्न नोट लिखकर दिए थे।]

(मार्च १९३७)

पीछले वर्षोका हिंदी प्रातोके बहारके आदोलनका इतिहास।

इस कार्यका ओरसे सम्मेलनमें महत्व।

दक्षिणमें प्रचार कार्यकी विशेषता और अन्य अहिंदी प्रातोसे भेद।

हिंदी और उर्दुका ऐक्य। दोनो पक्षके विद्वानोसे प्रार्थना की वे अतर न बढावें।

लिपि शास्त्रकी दृष्टिसे देवनागरी लिपिकी शास्त्रीयताका स्वीकार करते हुए हिंदू विद्वानोका उर्दु लिपि पढनेका धर्म और मुसलमान विद्वानोका देवनागरी सीखनेका धर्म।

वर्धामे चलता हूआ कार्य पर दृष्टिपात।

उक्त दृष्टिसे भविष्यकी एक वर्षके कार्यकी रूपरेखा उसका बजेट।

राजाजी इ की सूचनाका समावेश इस रूपरेखामे हो जाता है।

मैंने तो विषयोकी यादि ही दी है। इस पर विवेचन हो सकता है।

१ श्री प्रफुल्ल चद्र घोषका जमनालालजीको लिखा हुआ पत्र। उस समय बगालमें ग्रामोद्योग सघका कार्य श्री घोषके जिम्मे था और गाधीजीने उनको उसी काम पर विशेष ध्यान देनेकी सलाह दी थी। इस बीच जमनालालजी बगाल गये थे और वहाकी राजनैतिक स्थिति देखकर उन्होने श्री घोषको सलाह दी थी कि वहाकी खास परिस्थितिमें उन्हें बगाल प्रातीय काग्रेस कमिटीका अध्यक्षपद स्वीकार कर लेना चाहिये।

[अगले पृष्ठ पर चालू]

: ३४ :

नेगाव, वर्धा,
६-५-३७

चि दामोदर,

गगाविसनने एक हजार रुपया मोकल्या छे ए ठक्कर बापाने हरिजन निवास दिल्ली हरिजनने माटे मोकली देजो।

: ३५ :

वर्धा,
५-१२-३७

मु भाईश्री,

रस्तामा भाई महादेव पासेथी जाण्यु के तमारो विचार वर्धा स्टेशने पुल उपरथी चालीने गाडी पर जवानो छे। आ विशे में तमारी साथे वात नहोती करी कारण मे मानीज लीधेल के, गया वखतनी माफक्ज आ वखते पण तमोने स्टेशन पर लई जवानी व्यवस्था थशे। सपाटी पर चालवा करता उचे चढवु ते लगभग वीस गणो वधारे श्रम आपे छे, ए उपरात जेटली शक्ति होय ते मुसाफरी माटे जाळवी राखवी ए वधारे जरूरनु छे, तो मारी खास विनती तेमज भलामण छे के स्टेशन पर गया वखतनी माफक्ज व्यवस्था करावजो।

(यह पत्र डा जीवराज महेताने वर्धामे ही गाधीजीको लिखा था। गाधीजीने उसी पर निम्न सूचना लिख दी थी)

आ कागळ जमनालालजीने बताव। एजिन लाववानी जरूर नथी। जो पाटा परथी चालवानी रजा नही मळे तो हु खुरशी उपर जवा तैयार रहीश।

[पिछले पृष्ठसे चालू]

श्री घोषको उसमें खास दिलचस्पी नहीं थी। पर बादमें जब श्री. किरण शकर राय और डॉ विधान चद्र रायने भी उन्हें इस बारेमें आग्रह किया तब उन्होंने जमनालालजीको लिखा कि वे यह सारी परिस्थिति गाधीजीको बताकर उनकी राय लिखें।

इसके जवाबमें गाधीजीने श्री घोषको लिखवाया कि देश हितको दृष्टिमें रखकर जो भी वे उचित समझे वसा करें।

: ३६ :

[जयपुर प्रजा मडलके सबधमें बातचीत करनेके लिए श्री. घनश्यामदास बिरलाके प्रयत्नसे जयपुर राज्यके इन्स्पेक्टर जनरल पुलिस मि यग गाधीजीसे मिले थे। उस समय गांधीजीने अपने विचार लिखकर व्यक्त किये थे। गाधीजीने जो कुछ लिखा था उसे स्पष्ट करनेके लिए श्री घनश्यामदासजीने बादमें एक नोट बनाया था। गाधीजीके लिखे हुए हर एक पेरेग्राफके बारेमें श्री. घनश्यामदासजीकी सूचना पहले व गाधीजीका लिखा हुआ बादमें इटेलिक्समें नीचे दिया जाता है।]

24–9–1938

I first of all related the whole position to Gandhiji and then asked Young to say what he had to say He then at great length stated the whole position and asked Gandhiji's help The first two paragraphs are in reply to that

(1) *All I can say is that somehow or other the authorities should be made to see that in Seth Jamnalalji and Pandit Hiralal they have men who are true as steel and who believe in non-violence as their creed*

(2) *Surely it will be unwise to imprison them instead of holding them as willing hostages for peace To ban the Praja Mandal is to invite trouble where there is none today*

In reply to the first two paragraphs, Young said that there was no question of imprisoning any one That position had not yet arrived and he hoped that it would never arrive To this Gandhiji replied in the third paragraph

(3) *You will reach that stage in a moment, if you have an organisation which is working constitutionally and with which they are identified I do not think they can surrender the right to agitate for responsible government The authorities may or may not grant it But they should not ban an activity which is in its nature peacefu You may take all precautions to ensure peace*

In reply to this, Young pointed out the activities of the Mandal in enlisting Congress members He said the Council had a suspicion that the Praja Mandal was only another name for the Congress and after having seen the

disturbances in Travancore and Mysore they were rather afraid of Congress creating trouble in Jaipur Could not the Praja Mandal keep itself separate from the Congress? The fourth paragraph is in reply to that

(4) *You cant prevent natural affinities People are drawn towards the Congress You seek its assistance in order to promote peace as Sir Mirza did wisely and as Sir Akbar is already doing and Sir C P will do presently*

In reply to this, Young said "But what if they start trouble? If their constitution is something different, then there should be no difficulty in recognising it but with this constitution if they start trouble, peace might be disturbed The penultimate and the last paragraph are in reply to this

(5) *You can ask them to meet you a long way as to how they should shape their activity You stiffle opinion if you say they may not even ask for responsible government You should shed the fear of the Congress*

(6) *What I have suggested is this Dont interfere with their objective but regulate the speed with which they move You may, for instance, regulate the demonstrative part of their programme You will control their language But to ask them to change their objective is like asking a man to change his religion.*

In the end, Mr Young profusely thanked Gandhiji and made a request for taking the notes with him as a sort of souvenir to which Gandhiji agreed subject to his being provided with a copy of the same The last three lines are in reply to my question whether Sir Akbar had already written for help and whether C P also had applied for help

I would like you to give me a copy of the notes

I have Sir Akbar s letter asking for help

More than a hope He has wired to Pattabhi asking him to meet him (This is about C P)

[अगले पृष्ठ पर चालू]

(1) Harlal and other men to be released if they give satisfactory assurance to Mr Young that they would not preach "no rent" or "non-payment of cesses" in future

(2) Mr Young will do his best in respect of Laduram and he would tell me if he wants me to write to the Chief Justice

(3) Mr Young should secure full authority from His Highness and the Cabinet to talk on all the pending issues and come to an agreement, failing which he may try to get a conference of His Highness, Sir Beauchamp, any other Cabinet member whom he chooses to invite, and myself to talk over the matters

(4) If any agreement is reached between myself and Mr Young or between myself and the Cabinet, I would give my fullest support in execution of that decision

(5) The important issues just now are amnesty in Sikar, re-employment of dismissed men of Sikar and the constitution of the Praja Mandal

(6) As regards the constitution of the Praja Mandal, it has been clearly stated that there is no likelihood of its being changed But, at the same time, Gandhiji has suggested certain safeguards which are that the State could regulate the pace, the language and the demonstrative part of the Praja Mandal's activities, but should not stop them from preaching their objective

(7) It would be desirable to carry out famine work in cooperation with all progressive elements in the State and Mr Young would discuss the question with me at our next meeting

G D Birla

(नकल परसे लिया गया)

: ३७ :

२५-९-३८

जो प्रस्ताव मैंने राज्योंके बारेमें बनाया है महत्वका बन गया है। देखो पसद न आवे तो आगे मत जाने दो। उसमें कमिटी बनाई है। नाम अच्छे न लगे तो भी रोको। वल्लभभाईको बताना।[1]

: ३८ :

[गाधीजी द्वारा चलाये गये रचनात्मक कार्योंको आगे बढानेके लिए उनके जेलमें रहते हुए ही सन् १९२३ में जमनालालजीने गाधी सेवा सघकी स्थापना की थी। वह उसके सस्थापक सभापति हुए। बादमें कुछ बरसों बाद उनको लगा कि उनमें उसके अध्यक्ष रहनेकी नैतिक योग्यता नही है। अत गाधीजीको राजी करके सन् १९३४ में उन्होंने सघकी अध्यक्षतासे त्यागपत्र दे दिया। बादमें भी उनका अतर्मथन चलता रहा। और उनको लगने लगा कि सघके साधारण सदस्यका भी जो नैतिक जीवन होना चाहिये वैसा उनका नहीं है। अत उन्होंने सघकी साधारण सदस्यतासे भी त्यागपत्र दे दिया। इस सबधमें सघके तत्कालीन सभापति श्री किशोरलाल मशरूवालासे हुआ उनका पत्रव्यवहार नीचे दिया जाता है।]

गाधी सेवा सघ, वर्धा,
८-१०-३८

मुरब्बी भाई,

चेंबरलेनने तो कोशिश करके लडाई तूर्तके लिए भी रोक दी। और फ्रटियरके विषयमें एक बार जाहीर किया था कि बम फेंकनेके पहले लोगोंको पूर्व-सूचना दी जाती है। पर, आपने तो दूरसे ही एकदम बम फेंक दिया! और सीधा अध्यक्षके ऊपर ही! आश्चर्य है!

अब क्या इसलिए मैं तुरन्त कार्यवाहक समितिको बुलाऊ, ऐसा आप चाहते हैं? मामूली तौरसे नये सालके बजेटके लिए नवबरके अत या दिसबरमें बैठक होगी। तभी इसका भी विचार करेंगे तो क्या ठीक नही होगा? पू बापूजी भी तबतकमें लौटेंगे। बिना उनके, न आपका सात्वन करना आसान होगा, न दूसरोंको—अगर त्यागपत्र मजूर करना यही मार्ग खुला हो तो—समझाना आसान होगा।

आपके इस्तीफेका सघ पर क्या परिणाम आवेगा, इसका आपको विचार कर लेना चाहिए।

१ गाधीजीने मौन होनेसे जमनालालजीको यह नोंध लिखकर दी थी।

आपके और सरदारके बीचमे मतभेद बढता ही जा रहा है यह बडे दु खकी बात हो रही है। इसमे मै काग्रेस और सघ—यानी गाधी सिद्धात—दोनोका नुकसान देख रहा हू।

आपकी मन शाति अवश्य चाहता हू। लेकिन मुझे यह डर जरूर है कि आप सही मार्ग नही ले रहे है।[१]

शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा होगा। मेरा साधारण है।

आपका सप्रेम

जानकी कुटीर,
जुहू (बबई),
१०–१०–३८

प्रिय श्री किशोरलालभाई,

आपका ८–१०–३८ का प्रेम भरा पत्र ठीक समय पर मिला। आपके भावोको और आपके दर्दको मै पूरी तरह समझ सकता हू। आपने जो विचार पत्रमे लिखे है वह आपकी दृष्टिसे स्वाभाविक ही है। आप जब मेरी मन स्थितिको समझ लेगे तो मेरा ख्याल है मेरे विचारोंसे सहमत हो सकेगे। मै ट्रस्टी रहू या न रहू गाधी सेवा सघके प्रति मेरी श्रद्धा वैसी ही रहेगी और मुझसे जो बनेगा मै करता रहूगा यह दोहरानेकी तो मै आवश्यकता नही समझता। मै वर्धा आने पर आपसे अधिक बात करके आपका सतोष कर सकूगा ऐसी आशा है। मै कल यहासे रवाना

१ इस सबधमें जमनालालजीको श्री गजेन्द्रबाबूने जीरादेईसे ४-१०-३८ को निम्न प्रकार लिखा था –

"किशोरलालभाईके पत्रसे मालूम हुआ है कि आपने गाधी सेवा सघके ट्रस्टसे भी इस्तीफा दे दिया है। वर्किंग कमिटीका तो मै जानता था और कुछ कारण भी समझता था पर गाधी सेवा सघके ट्रस्टसे अलग होनेका कारण नहीं मालूम होता। भेंट होने पर सब बातें मालूम होती मगर वह तो इस समय नहीं हो सकता। इसलिए मैं केवल इतना ही लिखना चाहता हू कि आप ट्रस्टसे न हटें क्योंकि वह सारी सस्था आपकी ही कायम की हुई और चलाई हुई है और आपका न रहना ठीक नही होगा। आशा है आप इसपर विचार करेंगे। यों तो पू बापू वहा है ही और उनसे आपकी बात होगी पर मेरी तुच्छ सम्मति यही है।"

होनेका विचार कर रहा हू। अगर कल नही हो पाया तो दो रोज बाद तो आना ही है।

(नक़ल परसे लिया गया) जमनालाल बजाजका वंदेमातरम्

जयपुर स्टेट कैदी,
१५–६–३९

प्रिय श्री किशोरलालभाई,

आप यह तो भली प्रकारसे जानते ही है कि मेरी मानसिक स्थिति व कमजोरियोके कारण गाधी-सेवा-सघका ट्रस्टी व तीसरे दर्जेका सदस्य रहवे लायक मै अपनेको नही समझ रहा हू। मैने अपनी यह इच्छा कई बार प्रकट भी की थी। पूज्य बापूजीका इस समयका वृन्दावन-सम्मेलनमें दिया हुआ भाषण "सर्वोदय" मे पढा।[1] बापूजीने बहुत ही स्पष्ट तौरसे कह दिया है। और मेरी नम्रता व आग्रह-पूर्वक आपसे प्रार्थना है कि मुझे सघके ट्रस्टीपदसे व तीसरे दर्जेके सदस्यत्वसे जल्दसे-जल्द मुक्त कर बाधित करे। मेरा सघसे जो प्रेम है वह तो रहेगा ही। परन्तु मेरी मानसिक स्थिति और नैतिक कमजोरियोके कारण अब यह नैतिक भार मै बर्दाश्त नही कर सकता। आशा है, आप उदारतापूर्वक मुझे इस भारसे हलका कर देगे।

गाधी सेवा सघ, वर्धा,
२०–६–३९

मुरब्बी भाई,

आपका पत्र मिला। मिला, इसमे आनन्द हुआ, परन्तु उसमे लिखी बातोंसे आनन्द न हुआ। जयपुर दरबार आपको हैरान करे, जेलमें डाल रखे इसलिए हमसे रूठ जाना यह कहाका न्याय है? आपने कहा—मुझे एक सालका आराम चाहिये, हमने कहा—अच्छा मजूर। आपने कहा—मुझे हिमालयकी

१ इस भाषणमें गाधीजीने कहा था —

"सत्याग्रहीकी ईश्वरमें जीवित श्रद्धा होनी चाहिए। यह इसलिए कि ईश्वरमें अपनी अटल श्रद्धाके सिवा उसके पास कोई दूसरा बल नहीं होता। बगैर उस श्रद्धाके सत्याग्रहका अस्त्र वह किस प्रकार हाथमें ले सकता है? आप लोगोंमेंसे जो ईश्वरमें ऐसी जीवित श्रद्धा न रखते हों उनसे तो मै यही कहूगा कि गाधी-सेवा-सघ छोड दे और सत्याग्रहका नाम भूल जायें।"

किसी ठडी पहाडी पर जाना है। हमने कहा—मजूर। परन्तु आपने तो वहा जानेके बजाय जयपुर दरबारसे लडाई ठान ली। उन्होने आपको निकाल दिया, तो मजबूर होकर गये। अब वहासे सत्याग्रह करना हो तो जयपुर दरबारके गज़ट पढकर कीजिये। "सर्वोदय" पढकर गाधी-सेवा-सघको क्यो धमकी देते है ?

परन्तु आपकी यह आदत बहुत बचपनकी है। जो आपको अपनाते है उन्हीको आप हैरान करते है। बच्छराज सेठने आपको गोद लिया, आपने उन्हे दादा बनाया, फिर आपने उन्हे धमकी दी कि मै आपको छोडकर चला जाऊगा।

बापूने आपकी माग मजूर करके आपको कहा कि आप मेरे चार लडकोमे पाचवे हुए। अब आप कहते है कि मै आपका पुत्र बनकर रह नही सकता। परन्तु अब कैसे छूट सकते है ? कल आप जानकीबहनको भी छोडनेकी धमकी देगे! तो क्या ऐसा हो सकता है ? हिन्दू-धर्मके दत्तक और विवाह रद नही किये जा सकते, उसी तरह गुरु-शिष्य-भाव भी रद नही किया जा सकता।

एक गुरुका आसरा, एक गुरुसे आस ,
औरनसे उदास है, एक आस विश्वास।

गाधी-सेवा-सघसे मुक्त होना और बापूसे मुक्त होना—यह आपके लिए एक समान है। यह अब इस जन्ममे नही हो सकता, अर्थात् यह शोभा नही देगा। जो कदम उठाया उससे अब आगे कदम उठाना चाहिये , जो किया वह असत्य हो, अयोग्य व्यक्ति या कार्यके लिए जीवनको बर्बाद किया हो, ऐसा विश्वास हो जाय तो फिर कभी भी उसे छोड सकते है और छोडना चाहिये। परन्तु कमजोरीका नाम तो दिया ही नही जा सकता। हो हो कर आखिर बिगडेगा क्या ? पैसा टका, सुख, आराम सबसे ख्वार हो जाओगे , ५० या ५०० मनुष्योको निभानेवाले न रह सकोगे, बापू फकीर बनाकर छोडेगे, कदाचित् फासी पर भी चढा दे—तो भी क्या ? जो कुछ है वह लडकोको सौप दिया है। अब आप फकीर होकर सबकी चिना छोडकर गाधी-सेवा-सघका सेवक सदस्य बननेका निश्चय किया है, ऐसा बापूको बता दो, कमलनयनको बता दो, जानकीबहनको बता दो। देखिये, इस निश्चयके होते ही आपमे कितना जोश आ जायगा।

शूर, सती अरू गुरुमुखी ज्ञानी, पीछा चलत न कोई ,
जो पीछा पग धरत कुमति कर, जीवत जनम बिगोई।

आपके एकान्तवासके फलस्वरूप इस निश्चय पर आनेकी मै आपके पाससे आशा रखता हू। इस रीतमे सर्वोदयको फिरसे पढोगे तो बापूकी भाषामे दूसरा अर्थ देखोगे।

आप छूटकर यहा आवे, फिर आपको सहायक सदस्यसे सेवक सदस्य बनानेका प्रस्ताव रखेगे। इतनेमे मेरे भी पाच वर्ष पूरे हो जायेगे। इसलिए फिर गाधी-सेवा-सघको उसकी असल स्थितिमें ले आवेगे। तबतक आराम करिये। पढो भले ही परन्तु उसमेंसे ऊचा उठनेका अर्थ निकालिये, निराशाका नही।

हिन्दी गीतामथन सस्ता साहित्यवालोने न भेजा हो तो मगाकर पढियेगा।

आपको किसीका भी सहवास नही है यह मुझे अच्छा नही लगता है। पर क्या किया जाय?[1]

जयपुर स्टेट कैदी,
४-७-३९

प्रिय श्री किशोरलालभाई,

आखिर आपका ता २०-६ का प्रेमवश भेजा हुआ पत्र मिला। आपके सच्चे प्रेमके लिए तो जीवनभर कृतज्ञ रहूगा। आपके प्रति मेरे मनमे जो भाव है वह कागज पर नहीं लिख सकता। आपने इस पत्रमे बहुत ही ऊचे दर्जेके विनोदका उपदेश किया है, परन्तु मै क्या करू? मेरा मन गवाही नही देता—मन पर तावा नही रहा। अगर आप लोगोके सच्चे आशीर्वादसे मेरे मन पर मेरा काबू आ जावे व मुझे पूरा विश्वास हो जाय कि मेरी सद्बुद्धि स्थायी रहेगी तो शायद मुझमे आत्मविश्वास आवे। आज तो मै अपने परमे विश्वास खो बैठा हू। जैसे-जैसे मै अपनी कमजोरियोका निरीक्षण करता हू वैसे-वैसे ही मेरा मन साफ तौरसे मुझे कहता है (पहलेसे कहता आया भी है) कि मै गाधी सेवा सघ जैसी उच्च व पवित्र सस्थाके योग्य नही हू। ज्यादा नही लिख सकता। एक बार तो आप मुझे मुक्त कर ही डाले। पूज्य बापूजी मेरा समर्थन करेगे। वह मेरी स्थितिसे वाकिफ भी है।

१ यह पत्र मूल गुजरातीसे अनुवाद किया गया है।

मुझे अपनी कमजोरियोका थोडा ज्ञान रहनेके कारण मैंने बापूको "गुरू" नही बनाया, न माना, "बाप" अवश्य माना है। वह भी इसलिए कि शायद इन्हे बाप माननेसे मेरी कमजोरिया हट जाय। बीचमें ठीक समय तक हटती मालूम भी देती थी। परन्तु वास्तवमे हट नही रही थी। इन दिनो (याने इन दो वर्षोमें) तो मुझे काफी हैरान, बेचैन, निरुत्साही होना पडा। बापूके लडकोमें हरिलाल भी तो है। वह बिचारा प्रसिद्ध हो गया। मेरे सरीखे छिपे हुए रहे। आपने लिखा – गाधी-सेवा-सघको छोडना याने बापूको छोडना है। यह माननेको मेरा मन तैयार नही है। बापूके दूसरे चार लडके भी तो गाधी-सेवा-सघमे नही है। फिर मैंने ही क्या इतना पुण्य किया, जिससे रह सकू। उनकी गति सो मेरी गति। उनमें कई तो उच्च स्थितिमे है। पहले मैंने अहकारवश मान लिया था कि बापूको व उनके सिद्धातको मैं थोडा समझ सका हू। परन्तु ठीक विचार करनेसे यह साफ दिखाई दे रहा है कि न समझ पाया था, न समझनेकी ताकत है। मैंने सत्य-अहिंसाकी व्याख्या मेरे विचारके मुताबिक समझ ली थी। परन्तु वह मेरी गलती अब साफ दिखाई दे रही है। मेरी लिखनेकी तो और भी इच्छा होती है। परन्तु जेलके अन्दरसे ज्यादा क्या लिखू।

आप लोगोकी सगतसे इतना लाभ तो जरूर हुआ कि मरनेका डर प्राय विशेष नही मालूम देता है। कभी-कभी तो उसका स्वागत करनेका उत्साह भी मालूम होता है। वह ठीक भी है। अगर वर्तमान जीवनसे उच्च जीवन बनना सभव न हो तो स्वार्थकी दृष्टिसे भी मृत्यु स्वागत व श्रेयकारक ही है। यह तो मैंने वैसे ही इधरमें जो विचारधारा चलती रहती है उस परसे लिख डाला है। आप चिन्ता न करे। मुझे इस हालतमे ज्यादा शान्ति दूसरे किसी भी स्थान पर मिलनेवाली नही है। परमात्माकी यह बडी भारी दया ही है कि मुझे इस प्रकारका मौका मिला है। मै अपनेको ठीक देख रहा हू, समझ रहा हू।

मुझे थोडा डर हो गया है कि मेरी इस बिमारीको निमित्त करके कही मेरा बधन हटाकर इस शान्तिसे मुझे वचित न कर देवे। परतु मैं पूरा ख्याल रखूगा। जहा तक सभव होगा ऐसे न होने दूगा।

: ३९ :

38/2 ELGIN ROAD,
CALCUTTA,
21st October, 1938

I had long talks with Jamnalalji at Bombay and again at Wardha over his resignation I told him over and over again that I could not reconcile myself to his resignation for various reasons Moreover, the members of the Working Committee, as far as I could judge, were of the same view as myself My reasons were as follows —

(1) While I agreed that Jamnalalji should have complete rest for some time, it was not necessary for him to resign, in order to obtain that rest When members fell ill, they took the necessary rest, but they did not resign

(2) It would be extremely difficult to find a substitute for him

(3) Eight months had already elapsed and only four months remained Why then resign at this stage ?

(4) Resignation at this stage would give rise to all kinds of rumours and stories, some of which may be embarrassing to the Working Committee

At Wardha, Jamnalalji told me that a Nagpur journal had already written that he was going to resign from the Working Committee because the C P Ministry was not working satisfactorily and it was necessary to have Jamnalalji as Premier

This report only confirmed my previous apprehensions I also pointed out to Jamnalalji that in view of such rumours and gossip, the Working Committee would be forced to make a statement as to why he was resigning What would we say in the course of such a statement ? It would not be the whole truth to say that he was resigning because he was physically and mentally tired and needed prolonged rest The inquisitive public would say at once that Pandit Jawaharlal was away for 5 months but did not resign

At the end of our talk at Wardha, Jamnalalji came to appreciate the force of my arguments I told him that we would do our best to give him complete rest for as long a period as was necessary—but that he should not embarrass us by insisting on resigning He felt that before he could give me a final reply, he should have a talk with you Therefore, I told him that I would request him to continue in office till your return to Wardha

I shall be happy if you could suggest to him that in the circumstances, it is not necessary for him to insist on resignation

With *pranams*,[1]

Yours affly,

१ यह पत्र श्री सुभाषबाबूने गाधीजीको लिखा था।

इस सबधमें काग्रेसके तत्कालीन प्रधान मत्री आचार्य जे बी कृपलानीने १८-१०-३८ को जमनालालजीको निम्न पत्र लिखा था —

"आपका जुहुका पत्र आपके इस्तीफेके बारेमें मिला। मै जब वर्किंग कमेटीकी प्रोसीडिंग्स लिख रहा था तो सुभाषबाबूसे पूछा कि आपके त्यागपत्रके बारेमें क्या लिखा जाय, उन्होंने मुझे कहा यह लिखा जाय कि त्यागपत्रका विचार दूसरी मीटिंगमें किया जायगा। आपके जानेके बाद इस बारेमें पूज्य बापूसे बातचीत हुई। बापूजीका यह कहना था कि त्यागपत्र तो कबूल किया जाय और आपको कामसे तब रिहाई दी जाय जब खजाचीके पदका दूसरा कोई बन्दोबस्त हो जाय। प्रेसिडेंट बबईमे थे और अखबारोंमें है कि आपके साथ वर्धा जा रहे है। मुझे आशा है कि त्यागपत्रका कुछ न कुछ निर्णय आप लोगोंने किया होगा। जो कुछ फैसला किया हो मुझे लिखियेगा।"

इसके जवाबमें जमनालालजीने २२-१०-३८ को निम्नलिखित पत्र भेजा था —

"आपका मसूरीसे ता १८/१० का लिखा हुआ पत्र मेरे जुहुके पत्रके जवाबमे मिला। मैंने श्री सुभाषबाबूसे बबईमें व वर्धामे आग्रहपूर्वक प्रार्थना की थी कि मुझे मुक्त कर देवें। उन्होंने मेरे देहलीसे आनेके बाद वर्किंग कमेटीके मदस्योंसे व पू बापूजीसे जो बाते हुई थी वे बताई और उन्होंने अपनी ओरसे यह भी कहा कि मेरा त्यागपत्र स्वीकार करनेसे बहुत प्रकारकी गलतफहमिया काग्रेसके बारेमें फैलनेका डर है। इटरेस्टेड पार्टीज इस बारेमे कई प्रकारके स्पेकुलेशन करेगे। वे साथ ही यह भी कहते थे कि तुम्हें आराम व शान्ति तो जरूर मिलनी चाहिये। वे पू बापूजीको पत्र लिखकर उन्होंकी राय मगानेवाले थे। मैंने आज उन्हें भी लिखा है।"

: ४० :

[जमनालालजीकी ओरसे निकाले जानेवाले वक्तव्यका गाधीजी द्वारा बनाया हुआ मसविदा।]

I have seen many rumours regarding my resignation to the Working Committee It is perfectly true that I have sent in my resignation It has no connection whatever with any differences with the Working Committee My reason is purely personal Indeed I have sent in resignations from several positions of responsibility retaining only those which I dare not give up without injuring the institutions with which I am connected

: ४१ :

[जमनालालजीकी ओरसे लिखे गये पत्रका मसविदा जिसे गाधीजीने खुद लिखकर दो बार दुरुस्त किया था।]

CAMP BARDOLI,
7th January 1939

To
THE PRESIDENT,
COUNCIL OF STATE, JAIPUR

SIR,

The attached order[1] dated 16th December last was served on me on the 29th of the same month at Sawai Madhopur whilst I was on my way to Jaipur

The order came as a painful surprise to me At the station I had over an hour's chat with Mr F S Young, I G P, who was persuading me not to commit a breach of the order I did not need much persuasion as in a discussion with Gandhiji, of the possibility of such an order being served on me, he had advised me not to break the order immediately but to consider the whole situation in consultation with him before taking any final step

Accordingly I suspended my journey and proceeded to Delhi After having conferred with friends and fellow-workers and finally Gandhiji, I have come to the conclusion

१ देखिये पृष्ठ २०७, फुटनोट।

that on the 1st of February next I should commit a breach of the order unless, before then, it is unconditionally revoked

The authorities knew that a public appeal was issued by me on 1st November last on behalf of the Jaipur Rajya Praja Mandal, of which I am President, that as famine had overtaken Shekhawati and other areas, relief work was to be undertaken by the Mandal to the exclusion of all other activity. They were also aware that on a newspaper report having appeared to the effect that civil disobedience was to be started in Jaipur I had issued a flat contradiction

I do not know what had happened on or before the 16th December to warrant the passing of the order in anticipation of my seeking to enter Jaipur State I note that on the same date a notification was published in the State Gazette to the effect that " an emergency has arisen which makes it necessary to provide against instigation to illegal refusal to the payment of certain liabilities " Seeing that the order against my entry was passed the same day, it is reasonable to assume that in the opinion of the authorities I would be connected with the feared movement of illegal refusal of taxes Surely if the authorities had any fear of my leading such a movement, they might have at least ascertained from me as to the truth or otherwise of the information in their possession They knew me sufficiently to feel sure that I would not conceal the truth from them

Indeed the authorities know I rendered help to them also during the recent crisis in Sikar consistently with my obligations to the people They know that my offices were used entirely on behalf of peace

My surprise may therefore be better imagined than I can describe it when I learnt from the order that " your (my) presence and activities are likely to lead to a breach of the peace, " and that, therefore, " it is considered necessary in the public interest and for the maintenance of public tranquillity to prohibit your (my) entry within the Jaipur State " I have

no hesitation in saying that the notice belies the whole of my public career

I observe that I have been described as of Wardha I hope this is a slip For the Jaipur State, surely I am of Jaipur I do not cease to be of Jaipur because I have interests in Wardha and elsewhere

It has become a serious question for my co-workers and me to consider our position in the State

The Praja Mandal was started in July of 1931 and reorganised in November 1936 It has a constitution It has many distinguished men of Jaipur State as its members It has hitherto carried on its activities within the four corners of the Jaipur law and submitted even to irksome and illiberal restrictions regarding meetings and processions

But the order served on me has opened the eyes of the Mandal It has come to the conclusion that it must resort to civil disobedience if civil liberty is not guaranteed and meetings and processions and forming of associations are not allowed without let or hindrance so long as they observe strict non-violence

I should define the scope of our activity There is no mistake as to our goal We want responsible government under the aegis of the Maharaja We must therefore tell the people what it is and what they should do to deserve it But we do not propose to offer civil disobedience for it We must, however, seek the redress of the grievances of all classes of the people, we must carry on constructive and educative activities The Mandal has no desire whatsoever to preach non-payment of taxes at this stage If we secure the co-operation of the State in our essentially peaceful and life-building activities and in the redress of admitted grievances there never need be any resort to non-payment of taxes But should it unfortunately become a necessity, the Mandal will give the State authorities ample notice of its intention to do so For the Mandal stands for open, honourable and strictly non-violent methods Therefore, what I am pleading

for is full liberty to the Mandal to carry on its perfectly legitimate and non-violent activities without let or hindrance If, however, this reasonable request is not granted before the 31st day of this month, I shall reluctantly be compelled to attempt to enter the State in spite of the order, and the Mandal will hold itself free to take such steps as it may deem necessary for self-expression consistent with human dignity

I hold that to do less will be to commit civil suicide I trust that the Council of State will not put an unbearable strain upon my loyalty and that of the members of the Mandal

I have, etc ,
Jamnalal Bajaj

: ४२ :

[जमनालालजीकी ओरसे अखबारोंमें प्रकाशित करनेके लिए गांधीजी द्वारा बनाया हुआ वक्तव्यका मसविदा ।]

BARDOLI,
7-1-39

Rumours have been going the round as to what I am going to do about the ban on my entry into Jaipur State, my birth-place and ancestral home The ban is as much a surprise to me as to my friends My whole life has been passed in the interests of peace in all walks of life Whatever else non-violence may be with Congressmen, it is my creed and I try as much as it is in my power to live up to it I am no enemy of States I have always maintained a friendly attitude towards them I have always believed the States to be capable of responding to the new awakening that has taken place in India I am now carrying on correspondence with a view to find out the secret lying behind the ban The wording of the order in no sense applies to me I do not wish to act in haste I have no desire to embarrass the Jaipur State authorities But, if every honourable effort to have the ban removed fails, the public may depend upon my doing my duty.

My present and immediate object is to afford through the (Praja) Mandal relief to the famine stricken in Jaipur State. I hope that the ban will not be allowed to disturb the would be donors I am making arrangements for all eventualities Indeed my main reason for going to Jaipur was to devise measures for famine relief

My second immediate concern is to try to secure the release of the nine prisoners during the recent crisis in Sikar. One of them is convicted and eight are still awaiting trial. I had good grounds for hoping that they would come in for general amnesty I can only assure them that I shall leave no stone unturned to secure their release while I am still free

: ४३ :

BARDOLI,
18-1-39

DEAR FRIEND,

My first thought was to publish the accompanying letter[1] purporting to describe your attitude with regard to the ban on Seth Jamnalalji's entry into Jaipur State but on second thought I felt that my purpose would be better served by sending you a copy of Shri Chudgar's letter and inviting your opinion on it My purpose is to promote harmony between the Princes and the people and between English officials and the people who are obliged in one way

१ गाधीजीने यहा जिस पत्रका उल्लेख किया है वह राजकोटके वेरिस्टर श्री. पी एल चुटगरने, जो कि सीकर राव राजाके कानूनी सलाहकार भी थे, जमनालालजीको बम्बईसे १५-१-३९ को लिखा था। वह इस प्रकार है —

"I understand it my duty to inform you that during my interview with Sir Beauchamp St John, Prime Minister of Jaipur, in connection with Sikar affairs on the 9th instant at about 11 A M at his bungalow Natanika Bagh, I had some discussion with him regarding the Jaipur situation The following is the substance of the discussion

I told Sir Beauchamp that the ban against your entry into Jaipur State territories came as a painful surprise to millions of people all over

[अगले पृष्ठ पर चालू]

or the other to come in contact with them, to secure justice wherever possible by friendly negotiation. And now that I have felt the necessity of writing to you, whatever may be your opinion on Shri Chudgar's letter I would like to suggest to you that the bans upon Seth Jamnalalji and his organization might be removed without endangering the peace of Jaipur State Indeed, I feel that peace is certainly endangered by the bans

SIR W BEAUCHAMP ST JOHN,
DIWAN, JAIPUR STATE, JAIPUR

Yours sincerely,
M K Gandhi

(नकल परसे लिया गया)

[पिछले पृष्ठसे चालू]

India, particularly because you are well known to be a man of peace and your mission was to supervise and direct famine relief activities in the famine stricken parts of Jaipur State To this Sir Beauchamp replied that he agreed that you are a man of peace but you and your men's visit, he thought, would bring you and your men in contact with the masses in the famine stricken areas and this he did not like for obvious political reasons I told him that you cannot be expected to submit to the order for an indefinite period and that it would be better in the interests of the State and the people, in view of the statement you have published in the press after you had been served with the order, if the order were recalled so that unnecessary trouble may be avoided He was adamant and he said that he was prepared to meet any situation that might arise if you disobeyed the order He said that the Congressmen are out for a revolution by means of a non violent struggle But non violence, he said, was a force as powerful or perhaps more powerful than violence He further said Indians were playing upon the humane instincts in the English race, but if there was Japan or Herr Hitler instead of the English in India we could not have succeeded so well with our non violence

He then said that it was his considered opinion that non violence, however strict, must be met by violence, and his reply to the non violent movement in Jaipur would be the 'machine gun' I pointed out to him that all Englishmen were not of his way of thinking and even the English race as such would not agree with him He said 'That may or may not be so,' but personally he was of the opinion that there was no difference between non violence and violence and that there would be nothing wrong in using violence against non violence

If you or Mahatmaji desire to make use of this statement I have no objection "

JAIPUR,
RAJPUTANA,
D/20-1-39

DEAR MR GANDHI,

I write to acknowledge your kind letter of the 18th inst enclosing a copy of a letter from Mr Chudgar to Seth Jamnalal Bajaj Your hesitation in publishing it before you had ascertained the correctness of its contents was a wise step, which I personally much appreciate, as I am now able to inform you that its description of my views is completely erroneous I am unable to understand how Mr. Chudgar so misunderstood me and I may say that this incident confirms me in my hesitation to grant any such interviews in future

Now that you are aware of the facts, I am sure your reluctance to publish such a letter will be confirmed Should, however, you decide otherwise, I shall be glad if you can inform me as soon as practicable so that I can take suitable action

With renewed thanks for your consideration,

Yours sincerely,
W Beauchamp St John

(नकल परसे लिया गया)

BARDOLI,
22-1-39

DEAR FRIEND,

I thank you for your prompt reply to my letter of the 18th inst

I had expected your version of the interview, if you repudiated Shri Chudgar's version The matter is too important to be dropped by me I shall gladly publish your version together with Shri Chudgar's if you so wish

Yours sincerely,
M K Gandhi

SIR W BEAUCHAMP ST JOHN,
DIWAN, JAIPUR STATE, JAIPUR

(नकल परसे लिया गया)

JAIPUR,
RAJPUTANA,
25th January 1939

D O No 96/P M O

DEAR MR GANDHI,

Many thanks for your letter of the 22nd instant

I am sure you will sympathise with me in my natural hesitation to make a record of an interview which was understood to be private and personal when the other party to the interview has already threatened to publish an erroneous version Such a procedure can, as I am sure you will agree, only lead to acrimony, and so far as I can see serve no useful purpose

Should, however, Mr Chudgar see fit to publish his erroneous version, I am sure you will give me due warning so that, as I have already said, I may take suitable action.

Yours sincerely,
W Beauchamp St John

(नकल परसे लिया गया)

BARDOLI,
27-1-39

DEAR FRIEND,

I thank you for yours of the 25th inst

I am afraid I cannot sympathise with you in your hesitation The report Shri Chudgar has sent is too valuable not to be published My concern was to see that I did not give currency to a report whose accuracy could be successfully challenged

I am in correspondence with Shri Chudgar and if he adheres to the report he has given to Seth Jamnalalji,

I may feel compelled to publish it in the interest of the cause of the people of Jaipur [1]

I have not understood the meaning of "suitable action" to be taken by you in the event of publication of Shri Chudgar's version.

Yours sincerely,
M K Gandhi

SIR BEAUCHAMP ST JOHN,
JAIPUR

(नकल परसे लिया गया)

: ४४ :

(*Confidential*)

BARDOLI,
26-1-39

DEAR LORD LINLITHGOW,

Your clear reply of the 4th inst in reply to mine of the 23rd ultimo emboldens me to bring to your notice certain happenings as I see them.

In Orissa things seem to be worst Public opinion there is not so strong as elsewhere and the most unfortunate murder of Major Bazalgette in Ranpur has complicated the situation The Orissa Government, as has been officially admitted, has rendered every assistance it could have This unfortunate event apart, out of a total population of 75000 souls in Talcher, 26000 have been compelled by sufferings said to be indescribable to migrate to British Orissa

१ गांधीजी व सर बीचम सेंट जॉनके बीच हुए उपरोक्त पत्रव्यवहारकी नकलें श्री चुडगरको बताने पर उन्होंने जमनालालजीको २८-१-३९ को निम्न पत्र लिखा था –

"I have read the correspondence between Mahatmaji and Sir W Beauchamp St John ending with Mahatmaji's letter to him dated 27th inst I have carefully read my letter to you dated the 15th inst again, and I say that what I have stated in that letter is a substantially correct reproduction of the conversation between me and Sir Beauchamp "

श्री चुडगरका यह पत्र मिलने पर गांधीजीने यह सारा पत्रव्यवहार ११-२-३९ के हरिजनमें अपने संपादकीयके साथ प्रकट किया था।

I feel that it is the clear duty of the Resident to see that the cause of this migration is investigated and redress given to the people

The Resident in Kathiawad, as far as I can see has made the Thakore Saheb of Rajkot break his solemn pact with his people published in the form of an official Notification The struggle has, therefore, been resumed in Rajkot

The British Prime Minister of Jaipur is said to have vowed to crush Seth Jamnalalji, well-known banker philanthropist and social reformer, and a socio-political organisation of which he is the President Their crime consists in aiming at responsible government under the aegis of the Maharaja

I take it that the Central Government cannot escape responsibility, if the information given herein is trustworthy This means that the people of the States have to fight not only their rulers who by themselves cannot resist their people but they have also to combat the unseen and all too powerful hand of the Central authority

I venture to present this awful problem to you I call it awful because I do not know how far it will take both the Central authority and the Congress which has a moral duty by the people of the States I can understand the treaty obligations of the Paramount Power to protect States against danger from without and anarchy within Is not the corollary equally true, that if the States suppress their people, the latter have also to be protected by the Paramount Power? Can a State suppress free speech, meetings and the like, and expect the Paramount Power to help it in doing so, if the afflicted people carry on a non-violent agitation for the natural freedom to which every human being in decent society is entitled?

I do not expect any reply to my letter unless there is anything to tell me I know how every moment of your

time is occupied. It is enough for me to know, as I do know, that my letters receive your personal attention.

I remain,
Yours sincerely
M K Gandhi

(नकल परसे लिया गया)

: ४५ :

[जमनालालजीकी ओरसे उनकी गिरफ्तारीके समय दिये जानेवाले वक्तव्यका गांधीजी द्वारा बनाया हुआ मसविदा ।]

BARDOLI,
28-1-1939

The P M of J (Prime Minister of Jaipur) is reported to have vowed to crush the J (Jaipur) Rajya (Praja) Mandal and me In pursuance of that policy I have been put out of harm s way as they may think Presently the same fate will overtake the members of the M (Mandal) But if we are true to ourselves and our self-imposed trust, though our bodies may be imprisoned or otherwise injured our spirits shall be free

As I go into enforced silence let me reiterate what we are fighting for Our goal is responsible government under the Maharaja but our civil disobedience has not been taken up so as to influence the Durbar to grant us responsible government Civil disobedience is aimed at asserting the elementary right that belongs to all societies to speak and write freely, to assemble in meetings to take out processions, to form associations, etc , so long as these activities remain non-violent We have been forced to resort to civil disobedience because this elementary right has been denied to us The moment this right is restored civil disobedience should be withdrawn

Hence there is no question as yet of mass civil disobedience or a no-tax campaign

Seeing that the M (Mandal) has been virtually declared an illegal body, let us regard our existing register to be abrogated A new register should be opened if possible within the State and without if necessary Those only will become members who know that there is risk today even in becoming members of the M (Mandal) It is to be hoped, however, that there will be a large number of Jaipurians living within the State or without who will become members of the M (Mandal) and thus at least show their disapproval of the ban

The names, addresses and occupations of these members will be registered and published from time to time

The affairs of the M (Mandal) will in my absence be managed by ——— and they will exercise all the powers of the Mandal and the President as if the constitution was in operation This council of five will have the right to substitute others in their respective places In all matters of C D (Civil Disobedience) the council will whenever necessary seek and be guided by the advice of G. (Gandhiji)

: ४६ :

(4-2-39)

JAMNALAL,

CAMP LAKINSURT, AGRA

Your wire[1] Mahadev has wired you certain suggestions. Carry them out Health good Ba Maniben detained State guests

—*Bapu*

([illegible] लिखा गया)

१ देखिये पृष्ठ [illegible], पत्र संख्या [illegible]

: ४७ :

BENARES,
8-2-39

MAHATMA GANDHI,
WARDHA

Jamnalalji talked phone. Have advised him that now going again and compelling them to eject him through use of force will look childish and undignified. Mahadevbhai also talked on phone who independently agrees with me. I feel Jamnalalji should now again give Jaipur authorities ample time in writing giving them chance to retrace their step and warning to defy again if they dont lift ban but such letter in order to be helpful must be kept private. Taking wider view I feel at this stage improvement atmosphere from your side will go long way to help Rajkot and Jaipur. Please wire me also your opinion.

—*Ghanshyamdas care Lucky*

: ४८ :

[जब जमनालालजी जयपुर सत्याग्रहके सिलसिलेमें जयपुर जेलमें थे तब गांधीजीने निम्न संदेश भेजा था।]

ट्रेनमें,
१८-३-३९

जयपुर निवासियोंसे,

सुनता हूँ कि जयपुर निवासियोंने सत्याग्रहमें शान्तिका पालन किया है। सब याद रखें कि जो व्यक्ति या समुदाय अपने कार्यके लिए सत्य और अहिंसाका पूर्णरूप पालन करते हैं उनकी सदा विजय ही होती है।

मो० क० गांधी

(नकल परसे लिया गया)

: ४९ :

VICEREGAL LODGE,
SIMLA,
1st July 1939

DEAR MR GANDHI,

Thank you very much for your letter of 22nd June It raises one or two points on which I should like to touch in my reply

As regards Jaipur, the Durbar have, I am quite sure, no desire to detain Seth Jamnalal Bajaj any longer than is necessary. Indeed as you will remember, they were at considerable pains to avoid detaining him in the first instance. Seth Jamnalal has been made fully aware of the conditions on which the Durbar are ready to take the desired action now in regard to him and the other prisoners, and to the best of my knowledge, the position has not altered since the departure of H. H the Maharaja

I have read with close attention what you say in the last paragraph of your letter and I am very grateful to you for letting me know your views I think it is fair to say that the Political Department have given no more encouragement to "anti-congress personalities" to use, if I may, your own phrase, than to pro-congress personalities to establish contacts within rulers and their subjects.

I hope you keep well

Yours sincerely,
Linlithgow

(नक़ल परसे लिया गया)

: ५० :

जयपुर राज्य प्रजा मडल,
जयपुर,
३०–७–३९

पूज्य बापूजी,

पावके दर्द व जख्मके[1] बारेमें पूरी जानकारी इसके साथ है।

१ जयपुर जेलमें पैरका इलाज कराते समय जमनालालजीको जख्म हो गई थी। इस सबधमें पृष्ठ २१८–२२०, पत्र सख्या ३१६–३१७ भी देखिये।

ज्यादह आन्दोलन पहिले तो इसी लिए नही किया था कि उसी बिना पर छोड दें तो अच्छा नहीं होगा। अब आगेको आप जैसा ठीक समझे। भाई कमल तो आपको सब कहेगा ही।

शिकारखानेके मामलेके कुछ कागजात भेजे है। हरिजनमें कुछ आप लिखे ऐसी सेठजीकी इच्छा है। दो रोज बाद और भी मसाला भेजूगा।

हैद्राबादके सुधार बिलकुल निकम्मे है। सत्याग्रह करके इसके आगे काम बढानेके लिए सरकारके हृदयमें परिवर्तन करनेकी कोशिश करनी चाहिये।

सेवक

अभी फोनपर मालूम हुआ कि आपने यहाके प्राइम मिनिस्टरके नाम लिखा कमलका पत्र मगाया है। वह भी साथमे है।

: ५१ :

सेगाव, वर्धा,
२९-९-३९

पू जमनालालजीनी सेवामा,

पू बापुजीए अहीना खबर आपवा माटे आपने लखवानु कह्यु छे।

पू बापूजी सीमलाथी काले रात्रे अही आव्या। नीकळ्या त्यारथी ते अही पहोच्या ते दरम्याननी बधी रातो ट्रेनमाज गाळवी पडेली तेथी थाकेला हता पण प्रमाणमा तबियत एटला काममा अने मुसाफरीना श्रममा पण सारी रही लागे छे। फक्त सेगावने माटेज त्रण दिवस माटे आव्या छे। १ लीए फरी दिल्ली जवा नीकळशे अने छठ्ठी के सातमीए पाछा फरवानी आशा राखे छे। महादेवभाईने लखनौ मोकल्या छे ते खबर पडी हशे। आजे आवी जवा सभव छे। राजकुमारीबेन परम दिवस राजकोट जाय छे। १३ मीनी आसपास पाछा फरशे।

A I C C नी मीटींग १० मीए अही थशे। वर्किंग कमीटी पण अही थवा सभव छे।

वाइसरोय साथे थयेली वात विषे पू. वापुजी एटलु वोल्या के हु तो आशावादी छु तेथी निराशाना खास कारणो न जणाय त्या सुधी आशा न छोडु।

लि

: ५२ :

९-१०-४०

परम पूज्य वापूजी,

सीकरमें श्री जमनालालजीके यहा जो तलाशी हुई[1] उसकी विगतवार रिपोर्ट डाकसे मिली है। आपकी जानकारीके लिए भेजी है। आप उचित समझे तो हरिजनमे भी कुछ लिखिएगा।

वालक

: ५३ :

वर्धा,
१४-११-४०

प्रिय भाई,

कल पूज्य वापूजीने कुछ महत्वपूर्ण वाते सुनाई। वह आपको और आप जिन्हे योग्य समझे उन कार्यकर्ताओकी जानकारीके लिए लिखता हू। यह अखवार वगैरहमे प्रकट करनेके लिए नही है। इसमे भाषा वापूजीकी नही है। उनके कहनेका भावार्थ ही है।

"जैसा कि मै लिख चुका हू मेरे दिलमे यह वात उठ रही है कि मेरे नसीवमे एक वडा अनशन लिखा ही गया है। वर्तमान युद्ध, देशकी

[1] जमनालालजीने जयपुरके वारेमें अखवारोंमें एक वक्तव्य दिया था जो १-१०-४० के हिन्दुस्थान टाइम्समें छपा था। पुलिस उसकी मूल प्रतिके लिए तलाशी लेना चाहती थी। पुलिसके पूछने पर जमनालालजीने कहा भी कि छपी हुई प्रति तो है पर मूल प्रति नही है और स्वीकार भी किया कि यह वक्तव्य उन्हीका दिया हुआ है। फिर भी उन्होंने तलाशी लेनी चाही इसपर जमनालालजीने उनसे तलाशीका वारट मागा। पुलिसके पास वारट नहीं था फिर भी उन्होंने जवरदस्ती करीव साढे पाच घटे तक तलाशी ली। उनको कुछ मिला नहीं, पर वक्तव्यकी छपी हुई एक प्रति और जमनालालजीकी डायरी लेकर वे चले गये।

पराधीन स्थिति, और अहिंसा द्वारा हिन्दुस्तानकी आजादी हो जाय तो सारे जगतके लिए उसका महत्व, इत्यादि बाते मेरे बलिदानकी अनिवार्यता मेरे मनमे सिद्ध कर रही है। पर साथ ही मेरा जीव उसकी सभावनासे कुछ घबडा भी रहा है। मै चाहता हू वह टल सके। उसके प्रति बढनेकी मैं कोशिश नही कर रहा हू। लेकिन उसकी ओर मै खिंचा जा रहा हू।

"यह एक तरहसे ठीक ही है। क्योकि जो समय मेरे दिलकी तैयारी होनेमे जा रहा है वह समय जनता और तुम सबको अनशनकी परिस्थितिके लिए तैयार भी कर रहा है। न मालूम लोग कितने तैयार हो जाय कि मुझे पूछने लग जाय कि अभी अनशन क्यो शुरू नही करते?

"अनशन किस रूपमे आवेगा यह मै नही बता सकता। अगर वह मेरे बाहर रहते हुए हुआ तब तो उस वक्त तुम्हे क्या करना चाहिये वह मै बता सकूगा। जबतक मुझमे ताकत होगी तबतक मै सूचनाए देता रहूगा। सम्भवत अनशनके पहिले ही अपना निवेदन भी प्रकट करू। पर मुमकिन है कि सरकार मुझे गिरफ्तार कर ले और जेलसे अनशन करना पडे। तब न मै निवेदन निकाल सकूगा न सूचनाए दे सकूगा। और मै कह चुका हू कि मै अपने पीछे किसीको मेरा उत्तराधिकारी करनेवाला नही हू। तब तुम्हे अपनी-अपनी विवेक बुद्धिसे ही चलना होगा। उस अवस्थामे अगर कोई मार्गदर्शन हो गया तो वह अपने ही प्रभावसे होगा।

"'जेलसे अनशन करना पडे' इसका मतलब यह नही कि उस अवस्थामे मेरा अनशन करनेका निर्णय है ही। एक सभावना ही मान लीजिये। मुझे जेल मिले और बाहरकी स्थिति समाधान कारक हो तो मै जेल ही काटलू।

"जहा तक मै सोच सकता हू, यह अनशन शर्तिया ही हो सकता है। वह मुक्तिके लिए नही होगा। बाह्य सिद्धिके लिए होगा। आध्यात्मिक दृष्टिसे यह उत्तम पक्तिका नही माना जा सकता फिर भी वह सिद्धि इतनी शुद्ध तो है ही कि उस पर एक जन्म न्यौछावर किया जा सकता है। पर सिद्धि मिले तो अनशन छूट जा सकता है। यानी एक विशेष सिद्धिके लिए अनशनके रूपमे वह एक तपश्चर्या होगी।

"लेकिन शर्तिया अनशन होते हुए भी अंग्रेज सरकारकी जो आज परिस्थिति और विचारधारा है उसकी ओर देखते हुए यह सभव नही कि वह मेरी मृत्यु टालनेके लिए अपनी राजनीतिमे परिवर्तन करे

उसके लिए अपने ही जीवन-मरणका सवाल इतने महत्वका है कि पचास गाधीके प्राणोको कुर्बान करनेमे उसे हिचकिचाहट न होगी। और दूसरी नीति यानी अहिंसा और आत्मशुद्धिसे अपना सवाल हल करनेकी उसे बुद्धि उत्पन्न होना भी मुश्किल है। इसलिए वह मेरे प्रति क्रोधसे नही पर अपनी लाचारी समझ कर भी मुझे अपना वलिदान करने देगी। मै अनशन करू उसके पहिले या उसके साथ ही दूसरे साथीदारोको भी उस वलिदानमे हिस्सा लेने दिया जाय ऐसी भी सूचना मेरे पास आई है। अब जबतक मै जिन्दा हू तब-तक यह विवेकपूर्ण बात न होगी। इस अनशनका उद्देश्य एक स्थानिक समस्या नही है। अखिल भारतीयसे वढकर दुनिया भरकी है। उसमें छोटे पचास व्यक्तियोका वलिदान एक जगत प्रसिद्ध व्यक्तिके वलि-दानकी बराबरीका नही हो सकता। और अगर उससे समस्याको मिटना है तो मेरा ही वलिदान सपूर्ण हो सकता है। लेकिन मेरे अनशनके दरमियान मेरी मृत्यु हो तो उसके बाद तुम क्या कर सकते हो यह समझनेकी बात है।

"रचनात्मक कार्यक्रमकी वैसे तो तेरह बाते वताई गई है। उसमें और भी वढाई जा सकती है। लेकिन उसमें तीन महत्वकी है। हमारे जीवनकी वे क्राति करनेवाली है। खादी, अस्पृश्यता-निवारण, और हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य। हरिजन और मुसलमानका स्थान यत्किंचित भी हमसे अलग रखनेका मानसिक भाव ही मेकडोनाल्ड निर्णय और पाकिस्तान है। याद रखें कि भिन्नता उन्होने पहिले मागी नही है। हमने ही उन्हे दी है और मागनेको मजबूर किया है। तब सवर्ण-अवर्ण और हिन्दू-मुसलमान ऐक्य तथा खादी हमारे समग्र जीवनकी ही क्राति है। इन्हे सिद्ध करनेके लिए अपनी सब शक्ति और जब जरूरत हो जाय तब फूलसिह भक्त और अमतुलसलामकी तरह अपना प्राण खर्च करनेके लिए तुम तैयार रहो।

"इस वक्त जब कानूनभगका कार्यक्रम चल रहा है तब जिन्हे रचनात्मक कार्यक्रममें लगे रहनेके कारण जेल नही जाना है, वे अपने-अपने काम दिलचस्पीके साथ करते रहेगे ही। लेकिन जब दूसरे कार्यकर्ता जेल जानेके आदोलन पर जोर दे रहे है उसी समय तुम्हारा रचनात्मक कार्यक्रमके लिए जोशीला आदोलन मचाना ठीक न होगा। जनताकी मनोवृत्ति इस समय जेलकी ओर झुकी हुई है। इसलिए उसे वही एकाग्र होने दी जाय।

"पर जब ऐसी परिस्थिति पैदा हो जाय कि जितने लोगोको जेलमे जाना या भेजना है, अथवा मै अनशन कर रहा हू, अथवा कोई स्थानिक परिस्थिति, जैसी आज सिंधमे है, पैदा हुई, तो तब तुम्हे अपना कर्तव्य और ध्यान पूरी तरह सभालना होगा। उस वक्त जैसा तुम्हारा अत करण प्रेरणा करे उस तरह तुम आदोलन करो और अपने प्राण गवाओ। मेरे मरने पर वैसी ही तुम्हारे अत करणकी प्रेरणा हो तो अनशनकी परपरा चलावे। लेकिन मै यह नही कहता कि चलाना जरूरी होगा।

"एक दूसरी परिस्थितिमे भी तुम्हे अपने प्राणोका बलिदान देनेकी नौबत आ सकती है। यह सभव है कि जनताको मजबूर करनेके लिए अग्रेज सरकार अथवा यह हार जाय तो दूसरे विजेता हिन्दुस्तानमें भीषण दमन नीति चलावे। चन्द भागका निकन्दन भी किया जा सकता है। पर निकन्दनमे तो कुछ अशमें काम सरल हो जाता है। लेकिन बहुत जनताका निकन्दन नही किया जायगा। उदाहरणार्थ—जबतक लोग विजेताकी शर्ते मजूर न करले, कई देहातोको चारो ओरसे घेर लिया जायगा, कुओ पर पहरा बिठाया जायगा, उनके आसपासकी खेतीको विध्वस किया जायगा, इस तरह लोगोको भूख-प्याससे तग किया जायगा। उसके सामने जनताका झुक जाना मुमकिन है। उस वक्त तुम्हे झुक नही जाना है। लोगोको हिम्मत देना होगा। खुद भूखे-प्यासे मरकर लोगोको भूख-प्यास सहन करके मर जानेकी और विजेतासे असहयोग करनेकी सलाह देना होगा।

"यदि ऐसा कोई अवसर मिल जाय कि इस प्रकारके मिशनकी मनोवृत्ति रखनेवाले कार्यकर्ताओंके साथ बैठकर मै अपना दिल खोलकर मशविरा करू तो मुझे खुशी होगी। लेकिन आज मै उसकी योजना करना नही चाहता।"

यह पूज्य बापूजीकी बातोका साराश है। मै सोचता हू कि इस प्रकारकी मनोवृत्ति रखनेवाले व्यक्तियोकी नामावली किसी एक जगह सग्रह कर दी जाय तो अच्छा होगा। अपने-अपने प्रातके ऐसे कार्यकर्ताओकी सूची बनाकर अगर गाधी सेवा सघके दफ्तरमें भेज दें तो ?[१]

आपका,

(नकल परसे लिया गया) जमनालाल बजाज

१ पत्रका यह मसविदा जमनालालजीने कुछ मित्रोंको भेजनेके लिए बनाया था।

: ५४ :

[जमनालालजी व्यक्तिगत सत्याग्रहमें शामिल हो रहे थे। उस समय युद्धके विरुद्ध क्या कहकर कानून-भग किया जाय इसका मसविदा बनाकर गाधीजीको बताया गया। उसमें गाधीजीने अपने हाथसे जो सुधार किया उसके साथ इस मसविदेका ब्लाक नीचे दिया जाता है।]

(उपरोक्त मसविदेकी प्रतिलिपि)

(२०–१२–४०)

इस अग्रेजी लडाईमे आदमी या पैसेसे मदद देना हराम है। लडाईयोका सही विरोध अहिंसासे ही हो सकता है।

नोंध—तीसरे भागमें दिए गए निम्न नबरके पत्र भाग १ में देने रह गये थे, इसलिए इस विभागमे दिए गए है —८, १४, १८, १९, २०, २८, २९, ३२, ४६, ४७।

परिशिष्ट १

भाग १ तथा २ में आये पत्रोंमेंसे चुने हुए पत्रोंका हिंदी अनुवाद

१. भाग १ के पत्रोंका अनुवाद

: ६ :

भाई श्री ५ जमनालालजी,

आपके आदमीको टिकटके पैसे मैंने आग्रहपूर्वक चुकाये। अगर मैं ऐसा न करूं तो आपको बिना सकोचके दूसरे काम न सौंप सकूं।

यहां आकर इमारती कामका हिसाब जांचा। मेरे पास २८,००० रुपये आये है। ४०,००० रुपये खर्च हो गये। अतिरिक्त खर्च आश्रमके दूसरे कामोंके लिए जो रकम मिली उसमेंसे हुआ है। मेरी असली जरूरत अभी तो मकान आदि बनानेके लिए (रुपयोंकी) है। एक लाखका खर्च है। इसके लिए कुछ भेजनेकी आपकी इच्छा हो तो भेजियेगा।

मोहनदासका वदेमातरम्

मेरी यात्राका खर्चा उठाओ उसके बजाय खास जरूरी यह है।

१९-६-१९१८] मोहनदास

: १७ :

चि. जमनालाल,

जैसे-जैसे मैं सत्यकी शोध करता जाता हू, मुझे प्रतीत होता है कि उसमे सब कुछ आ जाता है। प्राय यह प्रतीत होता रहता है कि अहिंसामे वह नही है, परन्तु उसमें अहिंसा है। निर्मल अत करणको जिस समय जो प्रतीत हो वह सत्य है। उस पर दृढ रहनेसे शुद्ध सत्यकी प्राप्ति हो जाती है। इसमें मुझे कही धर्म-सकट भी मालूम नही होता। लेकिन अहिंसा किसे कहे इसका निर्णय करनेमे प्राय कठिनाईका अनुभव होता है। जन्तुनाशक पानीका उपयोग भी हिंसा है। हिंसामय जगत्मे अहिंसामय बनकर रहना है। वह तो सत्य पर दृढ रहनेसे ही हो सकता है। इसलिए मैं तो सत्यमेंसे

अहिंसाको फलित कर सकता हू। सत्यमेंसे प्रेमकी प्राप्ति होती है। सत्यमेंसे मृदुता मिलती है। सत्यवादी सत्याग्रहीको एकदम नम्र होना चाहिये। जैसे-जैसे उसका सत्य बढता है वैसे ही वह नम्र बनता जायगा। प्रतिक्षण में इसका अनुभव कर रहा हू। इस समय सत्यका मुझे जितना खयाल है, उतना एक वर्ष पहले न था, और इस समय मै अपनी अल्पताको जितना अनुभव कर रहा हू उतना एक साल पहले नही कर पाता था।

मेरी दृष्टिमे, 'ब्रह्म सत्य जगन्मिथ्या' इस कथनका चमत्कार दिनोदिन बढता जाता है। इसलिए हमें हमेशा धीरज रखनी चाहिये। धैर्य पालनसे हमारे अदरकी कठोरता चली जायगी। कठोरताके न रहने पर हममे सहिष्णुता बढेगी। अपने दोप हमें पहाड जितने बडे प्रतीत होंगे, और ससारके राईसे। शरीरकी स्थिति अहकारको लेकर है। शरीरका आत्यतिक नाश मोक्ष है। जिसके अहकारका सर्वथा नाश हुआ है वह मूर्तिमन्त सत्य बन जाता है। उसे ब्रह्म कहनेमे भी कोई बाधा नही हो सकती। इसीलिए परमेश्वरका प्यारा नाम तो दासानुदास है।

स्त्री, पुत्र, मित्र परिग्रह सब कुछ सत्यके अधीन रहना चाहिये। सत्यकी शोध करते हुए इन सबका त्याग करनेको तत्पर रहे तो ही सत्याग्रही हुआ जा सकता है।

इस धर्मका पालन अपेक्षाकृत सहज हो जाय इस हेतुसे मै इस प्रवृत्तिमे पडा हू, और तुम्हारे समान लोगोको होमनेमे भी नही झिझकता। इसका बाह्य स्वरूप हिंद स्वराज्य है। उसका सच्चा स्वरूप तो उस-उस व्यक्तिका स्वराज्य है। अभी एक भी ऐसा शुद्ध सत्याग्रही उत्पन्न नही हुआ है। इसी कारण यह देर हो रही है। किन्तु इसमे घबरानेकी तो कोई बात ही नही। इससे तो यही सिद्ध होता है कि हमे और भी अधिक प्रयत्न करना चाहिये।

तुम पाचवे पुत्र तो बने ही हो। किन्तु मै योग्य बननेका प्रयत्न कर रहा हू। दत्तक लेनेवालेका दायित्व कोई साधारण नही है। ईश्वर मेरी सहायता करे और मै इसी जन्ममे उसके योग्य बनू।

१६-३-१९२२] शुभेच्छुक बापूके आशीर्वाद

• २०

चि जमनालाल,

कल मैने मोहवश होकर रामदासके विषयमे जल्दीमे अपने विचार बताये। हम जुदा हुए उसके बाद मै पछताया और देखा कि अपनेको सावधान समझनेवाला मनुष्य भी किस प्रकार मुग्ध हो सकता है और कैसे बिना

विचारे बोल सकता हूं। कल मैंने पिताके रूपमें अपने धर्मका पालन नहीं किया। मैं समझता हूं कि जबतक चि. रामदास अपने जीवनका आदर्श निश्चित नहीं कर लेता और अपनी इच्छाके मुताबिक स्थिर नहीं हो जाता, तबतक वह शादी करेगा तो पाप करेगा। मेरी प्रतिष्ठाके आधार पर नहीं, बल्कि अपने गुणोंके आधार पर वह शादी करे ऐसी उसकी इच्छा है। हम सब भी यही चाहें। इस कारण रामदासको कोई भी व्यवसाय पसंद कर लेना चाहिये। उस परसे लड़की देनेवाले मातापिता विचार करेंगे और लड़की खुद भी समझेगी कि उसे कहां जाना है। इस कारण हम सबका, और अब तो आप जो बाहर हैं उनका, पहला काम रामदासको काममें लगानेमें मदद करना है। रामदासको पढ़नेका शौक हो तो भले पढ़े। अगर रामदासका बूढ़ा बाप आज बालकके समान अभ्यास कर रहा है, तो रामदासकी जवानी तो अभी शुरू हो रही है। अगर उसे व्यापारमें पड़ना हो तो पड़े और आश्रममें या राष्ट्रीय विद्यालयमें उसका मन लगे तो वैसा करे। हरीलालके साथ रहना हो तो उसके साथ रहे। मेरी खास तौरसे सलाह है कि किसी भी काममें एक साल रहकर अनुभव लेनेके बाद ही रामदास सगाईका विचार करे।

धनिक मातापिताकी लड़की चरित्रवान् हो तो भी जबतक वह खुद गरीबी पसंद न करे रामदासको ऐसे विवाह-बंधनमें बंधना अपनेको दुखी बनाना है और कन्या तथा उसके मातापिताको दुखी करना है। सही रास्ता तो मुझे यह प्रतीत होता है कि गरीबसे-गरीब परिवारमेंसे गुणवती कन्या खोज निकालनी चाहिये। ऐसी खोजमें समय लगे तो कोई हर्ज नहीं।

बाके प्रति भी मैं गलत मोहमें पड़ गया था। मैं मानता हूं कि उसके प्रति कसाईपन बरतनेमें ही मेरा धर्म है। मातापिताको अपने स्वार्थके लिए अपनी सतानकी गतिविधि या इच्छाको न रोकना चाहिये। इसके विपरीत कल मैंने बाको उल्टे उत्तेजन दिया पर मेरी सलाह है कि बाको तो कडुआ घूंट पीकर रामदासका वियोग भी संतोष पूर्वक सहन करना चाहिये। रामदास राजगोपालाचार्य जैसे चरित्रवान्के पास जाकर सुखी हो इसके लिए बाको उसे आशीर्वाद देना चाहिये। उसमें ही बाका परम श्रेय है। उसके सद्गुणी पुत्र हैं इसीसे वह संतोष माने। रामदासको उनका (राजाजीका) साथ मिले यही उचित है।

तुम अपनी इच्छासे दूसरे देवदास बने हो। अब देखो कि यह कितना कठिन हो पड़ता है। सब लड़कोंकी इच्छायें अब तुमको पूरी करनी हैं। ईश्वर तुम्हारी सहायता करे। मैं तुम्हारे प्रेमके लायक बननेका प्रयत्न करता ही रहता हूं।

अब तुम्हारी धार्मिक भावनाके बारेमे --

ऐसा समझो कि अपवित्र विचारसे जो मुक्त हो जाय उसने मोक्ष प्राप्त किया। अपवित्र विचारोका सर्वथा नाश बडी तपश्चर्यासे होता है। उसका एक ही उपाय है। अपवित्र विचारोके आते ही उनके विरुद्ध तुरत पवित्र विचार खडे कर दे। ईश्वर प्रसादीसे ही यह सभव है। वह प्रसादी चौबीसो घटे ईश्वरका नाम जपनेसे तथा वह ईश्वर अतर्यामी है यह जान लेनेसे ही मिलती है। भले रामनाम जीभ पर ही हो और मनमे दूसरे विचार आते रहे। जीभसे रामनाम इतना प्रयत्न पूर्वक ले कि अतमें जो जीभ पर हो वही हृदयमें भी प्रथम स्थान ले ले। फिर मन चाहे जितना मिथ्या प्रयत्न करे तो भी एक भी इद्रिय उसके वशमें नही होने देनी चाहिये। जो मनुष्य मन जिधर ले जाय उधर इद्रियोको भी जाने देता है उसका नाश ही होता है। परन्तु अपनी इद्रियोको जो मनुष्य बलात् भी अपने कब्जेमे रखता है तो यह आशा है कि वह किसी दिन अपवित्र विचारो पर भी अधिकार कर लेगा। मै जानता हू कि आज भी अगर मै अपने विचारोके अनुसार अपनी इद्रियोको खुली छोड दू तो आज ही मेरा नाश हो जाय। अपवित्र विचार आये तो उससे पीछे न हटे बल्कि अधिक उत्साहित हो। प्रयत्न करनेका सपूर्ण क्षेत्र हमारे पास है। परिणामका क्षेत्र ईश्वरने अपने हाथमें रखा है। इसलिए उसकी चिता मत करो। जब भी अपवित्र विचार आयें मनमे यह भी समझो कि तुम जानकीबाईके प्रति बेवफा होते हो। और साधु पति अपनी पत्नीके प्रति बेवफा होता ही नही। तुम साधु हो। प्राकृत उपाय जानते ही हो। अल्पाहार ही करे। सिर्फ अपने सामनेकी जमीन पर निगाह रखकर ही चले। आखे मलिन होनेकी सभावना हो कि उसे फोड डालने जितना क्रोध उनपर करना चाहिये। निरन्तर पवित्र पुस्तकोका ही सग रखे। ईश्वर तुम्हारा सब प्रकार रक्षण करे।

५-१०-१९२२] शुभेच्छुक बापूके आशीर्वाद

: २२ :

चि जमनालाल,

तुमने कानपुर जानेका इरादा छोड दिया, यह ठीक किया है। अभी कमजोरीके सिवाय और भी कुछ है क्या ?

चिचवडकी सस्थाको तुम जानते हो। उनका विरोध काफी हो रहा है। पैसेकी तगी बनी ही रहती है। मै समझता हू कि उन्हे मदद देनेकी जरूरत है। सोचता रहता हू कि किस तरह दी जाय। कुल मिलाकर उन्हे १५००० रू की जरूरत है। इतनी मदद मिल जाय तो फिर उन्हे बिलकुल जरूरत न होगी और फिर न मागे ऐसी प्रतिज्ञा करनेके लिए वे लोग तैयार

है। यदि तुम्हारा अनुभव मेरी तरह हो कि वे लोग इसके लायक है और तुम्हारे पास सुविधा हो तो मै चाहता हू कि उनकी इतनी मदद तुम करो।

राजगोपालाचार्यको फिरसे दमेका दौरा शुरू हुआ है। मै समझता हू कि उन्हे नासिककी हवा माफिक आवेगी। यदि तुम्हारे पास सुविधा हो तो उन्हे मेलम पत्र लिखो कि वे तुम्हारे पास आकर कुछ समय रहे। दवा भी वे पूनाके वैद्यकी ही लेते है। वे वैद्य उनकी जाच भी कर सकते है। मैने उन्हे लिखा तो है कि जबतक तुम वहा हो तबतक वे नासिक रहने चले जाय तो ठीक।

तुमको मालूम हुआ होगा कि पूनाके वैद्यकी दवा वल्लभभाईकी मणिबहन, मगनलालकी राधा और प्रो कृपलानीकी कीकीबहनके लिए शुरू की है। इसकी प्रेरणा करनेवाला देवदास है। इन वैद्यके सबधमे तुम्हारा अनुभव क्या है, सो लिखना। मालवीयजी कल काशी गये। हिन्दू–मुसलमानके सबधमे कुछ बाते हुई। हकीमजी आये थे। उन्होने भी इसी विषयमे बाते की। मोतीलालजी यही है, वे अभी रहेगे। वे कौसिलकी बाते कर रहे है। सब बातोका विचार करता रहता हू।

जवाब दिया, ६-४-१९२४] बापूके आशीर्वाद

: २४ :

चि जमनालाल,

तुमको दु ख हुआ उससे मुझे भी हुआ। मैने उस खतमे चिरजीव विशेषणका उपयोग नही किया क्योकि वह मैने खुला भेजा था। उसमें चि विशेषण सब लोग पढे यह उचित होगा या नही इसका निर्णय उस समय मै नही कर सका। इससे मैने भाई शब्दका प्रयोग किया। तुम चि होनेके योग्य हो या नही अथवा मै पिताका स्थान लेने लायक हू या नही, इसका निर्णय कैसे हो? तुम्हे जैसे अपने बारेमें शका है, वैसे ही मुझे अपने बारेमे है। यदि तुम अपूर्ण हो तो मै भी अपूर्ण हू। पिता बननेसे पहले मुझे अपने बारेमे ज्यादा विचार करना था। तुम्हारे प्रेमके वश होकर मै पिता बना हू। ईश्वर मुझे इसके योग्य बनावे। यदि तुममे कमी रहेगी तो मेरे स्पर्शकी वह कमी होगी। इसका मुझे विश्वास है कि हम दोनो प्रयत्न करते हुए अवश्य सफल होगे। इतने पर भी यदि निष्फलता हुई तो वह भगवान, जो कि भावनाका भूखा है, और हमारे अत करणको देख सकता है, हमारी योग्यताके अनुसार हमारा फैसला करेगा। इसलिए जबतक मै ज्ञानपूर्वक अपने अन्दर मलीनताको स्थान नही देता हू तबतक तुमको चिरजीव ही मानता रहूगा।

आज एक बजे तक मौन है। पडित सुन्दरलालको छ बजे आनेके लिए कहा है। उनसे मिलनेके बाद तुमको बुलानेकी जरूरत होगी तो तार दूगा।

वहाकी आवहवा माफिक आई होगी। मणिवहन हजीरा गई है। राधाकी तबीयत वहुत सुधरी है ऐसा कह सकते है। कीकीवहन भी अच्छी है।

मई-जून, १९२४] वापूके आशीर्वाद

• २८ •

चि जमनालाल,

तुम्हारा तार मिल गया और पत्र भी। ववई, पूना और सूरतकी यात्रामे लिखनेको एक क्षणका भी समय नही मिला। आज सुवह आश्रम पहुचा।

तुमको चोट लगी इससे मुझे विलकुल दु ख नही हुआ। मै तो मानता हू कि हम जैसे वहुतोको कदाचित् वलिदान होना पडे। जहर इतना ज्यादा व्याप्त हो गया है और अप्रमाणिकता इतनी ज्यादा फैल गई है कि कुछ शुद्ध व्यक्तियोको वलिदान हुए विना इस आपत्तिमे हमारा छुटकारा नही हो सकता। हो सके तो झगडेकी जडका पता लगाना। क्या कोई ऐसे समझदार हिन्दू या मुसलमान नही है जो समझे और झगडेके कारणोको दूर करे?

मेरे निश्चय तुमने समझ लिये होगे। वेलगाममे वोट (मतदान) से किसी भी महत्वपूर्ण वातका फैसला न करनेका मैने निश्चय किया है। झगडे इतने वढ गये है कि फिलहाल तो हमको सत्याग्रहका वृहत् स्वरूप वद ही रखना चाहिये। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि अगर हम ऐसा नही करेगे तो हमारा ही नाश हो जायगा। एक भी वात सही रूपमे नही समझी जाती। सवका अनर्थ, चारो ओर अविश्वास! इस समय तो हम खुद अपनी जगह कायम रहे और दूसरे जो कुछ करते है उसके साक्षी रहे। 'यग इडिया' के द्वारा तो मैने वहुत कुछ समझाया है। मुझे पता नही कि उसमेसे कितनेका अनुवाद 'नवजीवन' मे आया होगा।

तुम्हारा हाथ विलकुल अच्छा हो गया होगा।

मौ मुहम्मद अलीका पत्र या तार आने तक मै यही हू।

सितवर, १९२४] वापूके आशीर्वाद

: २९ .

चि. जमनालाल,

तुम्हारा हाथ अव विलकुल दुरुस्त हो गया होगा। मेरा पहला पत्र मिला होगा।

मेरे चित्तमे अनेक परिवर्तन होते रहते है। उसका पूरा दर्शन इस समयके 'यग इडिया' मे आवेगा। वोट लेकर हमे मेजारिटी (वहुमत) नही वनाना चाहिये, इतना मुझे अभी तो लगता है। वेलगावमें यदि हमको ज्योका-त्यो काम करनेका अवसर नही मिले तो हमें अलग होकर जितना वन सके उतना

काम करना चाहिये। मै यह देख रहा हू कि-जो जहर अभी फैल रहा है वह इसके बिना नष्ट नही होगा। इतना तो मानता हू कि कैसे भी हो हम उसका मुकाबला कर सकेगे। दिल्ली जानेके लिए तारकी राह देख रहा हू। वहा जाना पडा तो हिन्दू-मुसलमानके विषयमे कुछ रास्ता निकलनेकी सभावना है। अभी तक यह पता नही चला कि वहा दगा कैसे हुआ।

घटवाईके भाषण अभी देखे। यदि इसी तरह बोला हो तो मेरा धन्यवाद बेकार हो गया। इस भाषणमे अहिंसा नही है।

बालकृष्ण आगया यह ठीक हुआ। अपनी इच्छाके अनुसार भले वहा रहे। इसके साथ जो पत्र है वह उसे दे देना। अक्टूबरमे तुम भी आवोगे न ?

१०-९-१९२४] बापूके आशीर्वाद

: ३१ :

पू भाईश्री,

यहाका कामकाज धीमे-धीमे चल रहा है। कमेटीने सब-कमेटी बनाई। सब-कमेटीमे एक दिन लोग खूब दिल खोलकर बोले। इसलिए सब-कमेटीमेसे अब एक खानगी सब-सब-कमेटी बनी है। हकीमसाहबके यहा उसकी बैठके होती है। बापू, पडितजी, सभी मौलाना (जफरअली सहित) और हकीमसाहब, इतने लोग रोज इकट्ठे होते है और शाम तक बाते चलती रहती है। बापू कुछ रास्ता निकालनेका प्रयत्न कर रहे है। जो हो जाय सो सही।

गोरक्षा समितिका काम ठीक हो गया। बापूने अपने गोरक्षाके भाषणके अनुसार एक योजना बना ली है। वह सबको पसद आगई है। अत अब इस कामको स्थायीरूप मिल जायगा। बापूको इस कामके लिए एक अच्छा मत्री चाहिये। युवक, उत्साही, हिन्दी-अग्रेजी आदि भाषाओको जाननेवाला और सबसे बढकर चरित्रवान्—हो सके तो ब्रह्मचारी—गो-सेवक चाहिये। आपकी निगाहमे कोई है ?

यहा ३१ तक तो रहना होगा ही।

२८-१-१९२५] सेवक महादेवके प्रणाम

: ३५

मुरब्बी जमनालालजी,

आपको यह जानकर दुख होगा कि बापूने पाठशालाके बालकोकी मलीनताके लिए आजसे ७ दिनका उपवास शुरू किया है। बालकोमे यह पाप प्रवेश कर गया है, यह तो पहले मालूम हो गया था, परन्तु यह इतनी बडी मात्रामे फैल गया है, यानी २-३ बालकोको छोडकर सभी इस पापमे फस गये है, इसका पता बापूको अभी लगा। सबने अपना दोष कबूल किया।

इस उपवासके रहस्यकी चर्चा मै आपके साथ नही करूगा। इसकी योग्यता या अयोग्यताके विषयमे भी नही। अभी तो वापूका आग्रह है कि इस खबरको सुनकर आप दौडे न आवे। मुझे इतना ही लिखनेके लिए उन्होने कहा है और उसके अनुसार आपको लिख रहा हू।

इसके साथ लक्ष्मीदासभाईका पत्र भेज रहा हू। इसमे जो सूचनाएँ है उन पर विचार कर ले।

२४-११-१९२५] सेवक महादेवके प्रणाम

: ४१ :

मुरब्बी जमनालालजी,

वापूने आज सुवह पारणा किया। इसकी खवर आपको तारसे दे दी है। वापूकी तवीयत अच्छी है। कमजोरी है। उपवास पूरा होनेके समयकी विधि इस प्रकार थी –

सुवह ७-३० वजे उपवास छोडा। पहले प्रार्थना हुई। उसमे इमाम-साहवने कुरानकी आयते पढी और उनका अर्थ समझाया। उसके वाद मिस स्लेडने–जिसका नाम मीरावहन रखा गया है, यह आपको मालूम हुआ ही होगा– 'लीड काइन्डली लाइट' गाया, और अन्तमे वालकोवाने उपनिषद् और गीताके श्लोक कहे तथा उनका विवेचन किया। उन श्लोकोका विषय विषयात्मा और मानमात्मा, महात्मा और शान्तात्माका भेद था। इसके वाद वापूने धीमे स्वरमे दर्द और प्रेमसे भरे कुछ वचन कहे। उनमे मुख्य वाक्य इस प्रकार थे –

"वहुत चिन्तन और आत्ममथनके वाद मै मानता हू कि मैने भूल नही की। सभव है कि मेरी भूल मुझे न दिखाई देती हो, पर क्यो न दिखाई दे? मुझमे ममता है? दुराग्रह है? मलीनता है? क्या मैने सत्य किसी समय नही देखा? ममता है तो सिर्फ एक वातकी और वह यह कि छलाग मारकर यदि ईश्वर तक पहुचा जा सकता हो तो पहुचना और उसमे विलीन हो जाना। ईश्वरका मतलव है सत्य। मलीनताको तो मैने निकाल फेका है, फिर मेरी भूल मेरी समझमे क्यो न आवे?

"आश्रमसे मैने वडी आशाए रखी है। जव सारी दुनिया सोती होगी तव आश्रम जवाव देगा ऐसी मेरी अभिलाशा है जैसे फिनिक्स द आफ्रिकामे हुआ था।

"पर यह आशा कैसे पूरी हो? चारित्र्यका पाया मजवूत और शुद्धि सपूर्ण होने पर। उसके लिए सात दिनके उपवास तो कुछ भी नही है। ऐसे उपवास –उससे भी कठिन– भविष्यमे भी शायद करने पडे। अनशन भी करना पडे। इनसे तभी वच सकता हू जव मै जगलमे भाग जाऊ। पर जगलमे मै क्यो भाग जाऊ? मै जन्मसे तो वैश्य हू, फिर भी कर्मसे शूद्र, क्षत्रिय और व्राह्मण हुआ हू। मुझे तो शान्त आत्मा वनना है।" इत्यादि।

उसके बाद सब चले गये। फिर ६-३० बजे बालकोकी प्रार्थना हुई। बालकोसे जो कहा गया वह बिलकुल सुनाई नही दिया, क्योकि बापूकी आवाज बिलकुल बैठ गई थी। किन्तु, बालकोबा और सुरेन्द्रका आदर्श रखकर चलो, २४ घटे काम होता हो तो २४ घटे काम करो, यह ध्वनि थी।

उसके बादके समयका तो क्या वर्णन करू ! २१ दिनके उपवास छूटनेकी घडीसे भी वह अधिक पावन थी, अधिक गभीर और अधिक द्रावक थी। बापूका कठ रुघ गया था। ७ बज गये, लेकिन उपवास छोडनेका मन किसी तरह नही हो रहा था। खाना किसी भी तरह नही रुचता था। स्थिर पडे रहे। कौन जाने किस विचारमे लीन, कौन जाने कितनी तीव्र वेदनासे पीडित। देवदासको बुलाया। स्थितप्रज्ञके श्लोकोका पाठ करनेके लिए कहा। यह हो चुका। फिर शात होकर लेट रहे। अतमे ७-४० पर कुछ स्थिर होकर पारणाके लिए अगूर और सतरेका रस मगाया और हम सबकी जानमे जान आई।

आज तबीयत अच्छी मालूम होती है। खूब काम किया फिर भी बहुत थकान नही मालूम देती। बोलते बहुत कम है। कल, दो-एक दिन शातिसे बितानेके लिए, अम्बालाल सेठके बगले शाही बागमे रहने जायेगे।

१-१२-१९२५] सेवक महादेव हरिभाई देसाई

: ४३ :

मुरब्बी भाईश्री,

आपका तार बापूको दिखाया था। उन्होने कहा कि डूमस सबधी सुझाव शकरलालका होना चाहिये। मुझे तो पता ही नही था। शकरलालने डूमसके लिए जोर दिया। लेकिन अपना पक्षपात मैने वर्धाके लिए—आपके लिए और पूज्य विनोबाजीके सहवासके लिए—बताया और बापूने भी कहा कि "मुझे जमनालालजी और विनोबा जितनी शाति दिलायेगे उतनी दूसरा कोई नही दिला सकता।" इसलिए आज जो तार दिया है वह बापूके कहे अनुसार दिया है। बापू तो कहते है कि एक दिन बबई ठहरे बिना यदि नवी ता को ही वर्धा पहुच सके तो अच्छा।

बापूको कहा रखा जाय, कहा अधिकसे-अधिक आराम तथा शाति और विनोबाजीका सहवास मिलेगा, यह तो आप ही जाने और तय करे। वहा आयेगे यह निश्चित है।

आप आनन्दमे होगे। बापू आजकल अम्बालालभाईके यहा है। कल फिर आश्रममे आ जायेगे। तबीयत ठीक सुधरती जा रही है।

४-१२-१९२५] स्नेहाधीन महादेवके प्रणाम

: ४४ :

चि जमनालाल,

विनोबा मुझे कहते थे कि यहाके उपवासोसे मैं चिन्तामे पड जाऊगा ऐसा तुमने समझा था। लेकिन मुझे चिन्ता विलकुल नही हुई, यही नही, वल्कि उससे मुझे आनन्द हुआ। भाई भन्सालीके उपवास केवल उनके शौकके लिए थे। वे इन दिनो भारी तपश्चर्या कर रहे है। भाई किशोरलालने सिर्फ व्यक्तिगत, और अपने विकार दूर करनेके लिए किये थे। मगनलालके वतौर प्रायश्चित्तके थे और वे ठीक ही थे। ८५ ने उन्हे धोखा दिया। इसका उपाय उनके पास, सिवाय इसके कि वे कष्ट सहन करे, दूसरा नही था। इसका असर उस कुटुम्ब पर अच्छा हुआ है। किशोरलाल, भन्साली और मगनलाल तीनोकी तवीयत अच्छी है। अव इसमे मेरे लिए चिन्ताका कोई कारण नही ह।

मेरी तवीयत अच्छी रहती है। अव मै ४ सेर (१ सेर=४० तोला) दूध पीता हू और ८ बिसकिट खा लेता हू, जो जमनावहनने वनाकर भेजे है। नियमित रूपसे घूमता-फिरता हू। अत मेरे सवधमे विलकुल चिन्ता न करे।

इसके साथ चि मणिका पत्र तुम्हारे पढनेके लिए भेजता हू। उसे लौटानेकी जरूरत नही।

कमलाके विवाहके सवधमे कोई खबर अभी नही है क्या ?

४-१२-१९२५] वापूके आशीर्वाद

: ४८ :

चि जमनालाल,

मसूरीके विपयमे आज मुझको वडा उद्वेग होता रहा है। वहा या और कही जानेका मन ही नही होता। मेरी तवीयतके लिए हवाफेरकी जरूरत नही है। मुझे आरामकी जो जरूरत है, वह तो यहा ठीकसे मिल जाता है, और यहाका जो थोडा कामकाज देख सकता हू वह मेरे लिए दवाका काम दे देता है। आश्रम न छोडनेके वहुतसे कारण है। आश्रम छोडनेसे हानि हो सकती है। इसलिए यदि मुझे विचारपूर्वक वचनमुक्त कर दे तो मै छूट जाना चाहता हू। यदि तुम यह मानते हो कि मसूरी जाना ही चाहिये तो मै अवश्य जाऊगा। पर आज जो मानसिक उद्वेग हुआ है वह तुमको लिखना उचित समझकर लिखा है। शकरलालके साथ भी वातचीत करूगा।

सतीशवावू कल आये है। डा सुरेश शनिवारको आयेगे।

मणिवहन तुम्हारे साथ रहना नही चाहती। उसे अपनी गुजराती अच्छी कर लेनी है। फिर भी मदालसाको जानकीवहनके पास ही रहना चाहिये। काफी समय आश्रममे रहेगी तो यो ही वहुत कुछ सीख लेगी।

कन्या गुरुकुलको बारीकीसे जाचकर मुझे लिखना। यह भी लिखना कि उनमे कितनी कन्यायें है।

जवाब दिया १९-३-१९२६] बापूके आशीर्वाद

: ५२ :

प्रिय जमनालालजी,

आपका पत्र मिला।

१ ऑल इडिया काग्रेस कमेटीमे आनेके बारेमें बापू कहते है —

"इच्छा न होती हो तो न आवे। दलागिरी जरूर हो आवे। यदि इच्छा हो जाय तभी आवे।"

२ बेलगामवालोके बारेमे उनकी सलाह उन्हीके शब्दोमे लिखता हू —

"मुझे यह बात बिल्कुल पसद नही, परन्तु बेलगामवालोको तुम मदद कर चुके हो। उन्होने ठीक कुरबानी की है। इसलिए यदि तुमको इनमें हिस्सा लेनेकी इच्छा हो ही और मशीनरी सचमुच इतनी ही कीमतकी हो और मारगेज अच्छा मिल सके तथा तुम उधार रुपये लगा सको तो मै नाराज नही होऊगा। अथवा कमसे-कम तुम्हे उलाहना तो नही दूगा।

"परन्तु इसकी सिफारिश करनेके लिए मै तैयार नही हू। अत सब बातोका विचार करके तुम जो निर्णय करोगे उससे मै सहमत हो जाऊगा।"

हार्निमेनके आदमीको जो कहा सो ठीक है। मगनलालभाईको आश्रमकी चीजोके बारेमें सदेशा दे दिया है।

साहबजादा घर गये है। छोटुभाईके साथ क्या हुआ सो कुछ नही बताया।

बापूका फिनलैंड जाना अनिश्चित है। बापूने स्वीकृति तो लिख दी है, परन्तु कई शर्तें लगा दी है। वे लोग मजूर करेंगे तो जाना सभव हो सकता है। शर्तें ये है पोशाक अपने ढगकी ही रखेंगे, सिर्फ मौसमके लिए ही कुछ फेरफार करना जरूरी होगा तो करेंगे, भोजनमें बकरीका दूध और फलाहार, भाषण नही करेंगे, मगर विद्यार्थियोके साथ बातचीत करेंगे, पासपोर्टकी सारी व्यवस्था वही लोग करेंगे और उसमें किसी प्रकारकी शर्तें न होनी चाहिए। ये सब वे लोग मजूर करेंगे तो बापू जायेंगे। उनका जवाब नही आया है। साथ जानेवाले तो दो है —अभी तो देवदास और मेरे नामकी चर्चा है, आखिरमें जो चला जाय वह सही। और जानेसे पहले वल्लभभाई जैसे कुछ चमत्कार कर दे तो उनका भी खयाल करना पड़ेगा।

३०-४-१९२६] स्नेहाधीन सेवक महादेवके प्रणाम

: ६२ :

चि जमनालाल,

तुम्हारा देवदासके नामका पत्र पढा। जो तूफान आया है उसकी मुझे आशा नही थी। मगर आ जाने दो। उसीमे धर्मकी परीक्षा है। जब तुम्हारे पास तोहमतनामा (दोषपत्र) आ जाय तो मुझे भेज देना। मै उसका जवाब तैयार कर दूगा। उसमे जो परिवर्तन करना हो वह कर देना। मतलब यह कि हमे पूरे विनयका पालन करना है। जातिको अधिकार है कि जो व्यक्ति उसके नियमका उल्लघन करता है, उसका बहिष्कार करे। तुमने जो कुछ किया है उसमे न तो शरमानेकी, न पछताने जैसी कोई बात है। जातिमे तुम्हारा प्रभाव कम होगा, पैसा प्राप्त करनेकी तुम्हारी शक्ति अवश्य कम होगी। परन्तु उसकी मै कोई चिन्ता नही करता। तुम्हारे लिए भीख मागनेका समय आ जाय तो भी हर्ज नही। धर्म रहे और भिक्षुक होना पडे तो वह स्वागत-योग्य है। अतमे जब जाति तुम्हारे धर्म और विनयको पहचान लेगी तब स्वत नम्र बन जायगी। जातियोमे सुधार तो होने ही चाहिए। वे आसानीसे हो सकेगे।

अण्णाको प्रेस लेनेके लिए ८००० रुपये और अभी भेजनेकी जरूरत है। वे यहा आये थे। उन्हे प्रेस लेनेकी सुविधा कर देनी चाहिये। यदि घनश्यामदासने ५००० रु दुबारा न भेजे हो तो उन्हे याद दिला देना। वे आ जाय तो वही भेज देना और ३००० उसमे और जोडकर भेज देना। दूसरे महीनेमे यह काट लेना।

अ ब ६ (११-७-१९२५) ?]

बापूके आशीर्वाद

: ७१ :

चि जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम दीर्घायु होवो और तुम्हारी पवित्रतामे वृद्धि होवे। इस जगतमे बिना दूषणके तो कोई भी नही है। हम उसे दूर करनेका ही प्रयत्न कर सकते हैं। वह प्रयत्न तुम कर रहे हो। प्रयत्नशीलकी दुर्गति नही है ऐसा भगवानका आश्वासन है।

अब तो ४ ता को मिलेगे। ताप्ती व्हेली होकर आनेका विचार कर रहा हू। शास्त्रीयार कल आ रहे है।

२१-११-१९२६]

बापूके आशीर्वाद

: ७४ :

चि जानकीबहन,

तुम्हारे पाससे देवदासको आना पडा यह मुझे अच्छा नही लगा। परन्तु वह नही रह सकता था, यह मै समझ सकता हू। अब कदाचित् थोडे ही दिनोमे वह वहा आ जायगा।

तुम्हारी तबीयत कैसी रहती है ? वहा कुछ शक्ति बढ रही है ? कुछ तकलीफ होती है ?

चि कमलाकी पढाई कुछ चल रही है ? तुम खुद न लिखकर कमलासे एक लम्बा पत्र मुझे लिखवाओ। मेरी तबीयतकी चिन्ता नही होनी चाहिये। अभी तो ठीक रहती है। परन्तु बूढे तो मृत्युके किनारे ही बैठे होते है न ? अत किसी-न-किसी बहाने उन्हे पुराना मदिर छोडना ही चाहिये और इच्छा हो तो नये मदिरमें बसे और बदीवास छोडना ही हो तो स्वतत्र रहकर वायुमे ही वास करे। परन्तु बहुत काल तक जेलमे रहनेवालेको जैसे जेलखाना अच्छा लगने लगता है वैसा ही हाल हमारा भी है। देहाध्यासके कारण देह छोडना अच्छा नही लगता। मुझे अच्छा लगता है कि नही, यह तो मै नही जानता। मेरी बुद्धिको तो इसमे अच्छा लगने जैसा कुछ भी दिखाई नही देता। परन्तु आवरणके सामने बुद्धि बेचारी दीन हो जाती है। अत सच्ची बातका पता तो मरते समय लगेगा।

तुम्हारे पास अभी कौन है ?

अप्रैल, १९२७] बापूके आशीर्वाद

: ९० :

चि जानकीबहन,

तुम्हारा पत्र मिला। अब उत्साह क्यो न होगा ? अब तो भाषण करती हो, अखबारोमें भी नाम आता है ! समय-समय पर जब जानकीबाई बजाजका नाम अखबारोमे देखता हू तो उससे ऐसा ही लगना चाहिये न कि जमनालाल और हम सब भले ही जेल गये और वही रहे ! मुझे तो विश्वास था ही कि तुम्हारे दिखाई देने वाले अविश्वासके पीछे पूरा आत्मविश्वास था। ईश्वर उसमे वृद्धि करे। कमलनयनको जल्दी नही करनी है। खादी उत्पत्तिके काममें अभी भले लगा रहे। टुकडीके बाहर निकलने पर बालजीभाईको लिखे।

२७-७-१९३०] बापूके आशीर्वाद

: ९१ :

चि जानकीबहन,

तुम बहुत चट मालूम होती हो। ज्यो-त्यो करके पत्र लिखनेसे बच निकलना चाहती हो। और यदि भाषण करते-करते हाकिम 'डिक्टेटर' बन जाओगी तो फिर मुझ जैसेके तो बारह ही बज जायगे न ? मालूम होता है जमनालालने नासिकमे अपना धधा ठीक जमा लिया है। यह तो मै जानता ही था। उनके पजेसे कोई छूट ही नही सकता। मदू पहले तो पत्र लिखती थी, अब तुम्हारी तरह ही आलसी हो गई है। ऐसी ही आलसी बनी रही

तो तुम्हारे पाससे उसे हटा लेनेका हुक्म जारी करना पडेगा। अब शरीर कैसा है ? ओम उपद्रव करती है या नही ?

२१-९-१९३०] बापूके आशीर्वाद

: ९५ :

चि जमनालाल,

शा मगलदास हरिलाल गाधी, ठि फणसवाडी २ री गली, दादी-शेठ अगीयारी लेन, हरिलाल माणेकलाल गाधीका माला। यह भाई शा हरिलाल माणेकलाल गाधीके लडके है। भाई हरिलाल सूरजबहनके धर्म-पिताके नामसे प्रसिद्ध थे। इनके पास सूरजबहनकी सारी रकम है। इनकी स्थिति अभी बहुत अच्छी नही कही जा सकती। सूरजबहन कहती है कि एक समय हालत बहुत अच्छी थी। मैंने भाई हरिलालको लिखा है कि विधवा बाईके रुपये किसी खानगी पेढीमें नही रखने चाहिए। इसलिए उनको इडिया बैंकमे रखकर उसकी रसीद सूरजबहनके नाम भेज दे। इसका जवाब साथमे है। सभव है कि रुपये बिलकुल खतरेमें न हो। पर मैं चिन्तामें पड गया हू। तुम भाई मगलदासको अपने पास बुलवा लेना अथवा उनसे मिल लेना और पूछ लेना। सारे हाल जान लेना और रुपये बैंकमें रखे जा सके तो रखवा देना। सूरजबहनके नाममे रखवाने है। इनके यहा सूरजबहनके गहने वगैरा भी है। उन्हे भी अपने कब्जेमे ले लेना। अथवा उनकी जो सेफ डिपाजिटकी रसीदे है वे ले लेना। इस वक्त तो तुमको सूरज-बहनके पत्रकी जरूरत नही पडेगी। परन्तु जरूरत हो तो मुझे तार दो तो मै भेज दूगा। परन्तु भाई मगलदाससे तो तुरन्त मिल लेना।

उन अग्रेज भाइयोसे मिलनेके लिए २४ ता को वहा आना है। वल्लभ-भाई साथ होगे।

१८-६-१९३१] बापूके आशीर्वाद

: ९६ :

चि जमनालाल,

तुम्हारा भेजा भगतसिंह सबधी प्रस्ताव पढ लिया। देवने भी तुम्हारे कहनेसे भेजा था। मुझे यह प्रस्ताव बिलकुल पसद नही आया। 'आज' शब्दसे इस प्रस्तावका मूल्य बदल गया। 'आज' बढानेसे ऐसी ध्वनि निकल सकती है कि आज भी सभाको अहिंसा पर विश्वास नही है। जो अहिंसाको शाश्वत धर्म नही मानते है उन्हे भी 'आज' बढानेकी आवश्यकता नही है।

वहा २४ को नही, बल्कि २५ ता गुरुवारको, आना है। मै तो गुजरात मेलसे आऊगा। उस समय इस विषयमे अधिक चर्चा करनी हो तो कर लेना।

इसके साथ चुडे महाराजके सबधमे पत्र है, उसे पढ लेना और कुछ छानबीन करने जैसी हो तो करना।

राजेन्द्रबाबूको फिलहाल बिहार जानेका विचार छोड़ देना चाहिये। राधिका वहां आई है?

२०-६-१९३१] बापूके आशीर्वाद

: ९७ :

प्यारी बहन जानकीबहन,

मैंने सुना है कि तुम्हारी तबीयत अभी तक ठीक नहीं हुई। अभी तो तुमको बहुत काम करना है, इसलिए जल्दी अच्छी हो जाओ, और तबीयतके लिए फल वगैरा लेना पड़े तो लेना चाहिये। यह कुछ मौज शौकके लिए तो खाना नहीं है। अगर तुम अपनी तबीयत नहीं सुधारोगी तो मुझे दुःख होगा। जरूरी इलाज करके अब जल्दी अच्छी हो जाओ।

बहन कमला परसों यहां आई थी। मीटिंगमें भी हमारे साथ गई थी। उसकी तबीयत अच्छी है। यहांसे रवाना होनेका हमारा अभी कोई निश्चय नहीं है। सब मजेमें है।

९-८-१९३१] बापूके आशीर्वाद

: ९९ :

चि. जमनालाल,

तुम्हें पत्र लिखानेका समय ही नहीं मिलता। अभी दाहिने हाथको तकलीफ नहीं देता हूं, इस वजहसे लिखनेका काम कम होता है। बायें हाथसे जितना लिखा जाता है, लिखता हूं। कल पत्र भेजे थे सो मिले होंगे। अस्पृश्यताके लिए कांग्रेस, कांग्रेसवालों और उनके द्वारा अथवा प्रेरणासे जितने रुपये खर्च किये गये हो उनका हिसाब तैयार करनेकी बड़ी आवश्यकता है। कुछ तो मेरी जबान पर है। तुमको भी याद होना चाहिये। यह भार तुम पर डालता हूं। जहांसे मंगाना हो मंगाकर ये आंकड़े इकट्ठे कर लेना। उसमें फिर कुछ रह जायगा तो मैं याद कर लूंगा। मैंने बीस लाखका हिसाब लगाया है। मेरी समझसे यह कम ही है, अधिक नहीं। तिलक फंडमें कुछ रुपये तो इस कामके लिए 'ईयर मार्क' थे। तुम्हारे पास तिलक फंडका जो हिसाब है उसमेंसे यह मिल जायगा।

अलमोड़ाकी जमीनके सबधमें कुछ हुआ? कुछ न हुआ हो और जल्दी ही सकता हो तो उसे जल्दी कर लेना मैं जरूरी समझता हूं।

जानकीबहन और बालकृष्णके क्या हाल हैं? अखबारोंमें बड़ी गलतफहमी हुई और अनेक प्रकारकी बातें आने लगीं तो कल वाइसरायको तार दिया था। उसका उत्तर अभी नहीं आया। तारकी नकल इसके साथ भेजता हूं। पट्टणीजी कल आ रहे हैं। कुछ होगा तो सूचना दूंगा।

२२-८-१९३१] बापूके आशीर्वाद

: १०१ :

प्रिय जमनालालजी,

पिछली वार जव मैने आपको पत्र लिखा था उसके वाद फेडरल स्ट्रक्चर कमेटीमे वापूके उस दूसरे भापणके सिवा, जिसने कि हमारे व व्रिटिश हल्कोमे एक सनसनीसी फैला दी, और कोई विशेप घटना नही हुई है। सदानन्दने लगभग सम्पूर्ण भापण तारसे भेज दिया था, जिसे आपने पढ ही लिया होगा। यदि न पढा हो तो 'यग इडिया' मे देख ले, जिसके लिए मै भापणका पूरा विवरण भेज रहा हू। वापूने राजा-महाराजाओसे पूरी तौर पर वातचीत कर ली है और उन्हे साफ साफ वता दिया है कि वे उनसे क्या अपेक्षा रखते है। भापणका रूप सर्वसाधारण ही हो सकता था, और एक अपीलके रूपमे उसे पेश किया गया था, क्योकि यही वापूका तरीका है। पर हमे कुछ देशी-राज्य-मित्रोकी ओरसे घवराहटसे भरे तार आये है। भापणका वह हिस्सा, जिसमे परोक्ष चुनावोका जिक्र था, कई मित्रोको पसन्द नही आया। पर उसमे न तो कोई डरनेकी वात थी और न सिद्धातसे झुकनेकी, यह शास्त्रीयारके इस कथनसे जाहिर होता है "तो गान्धीजी चाहते है कि उनकी काग्रेसके अनोखे सविधानको भारतके विधानका आदर्श मान लिया जाय।"

वापूने अर्विनके साथ आज वहुत देर तक वातचीत की। मुझे तो वापूसे मिलनेका जरा भी मौका नही मिला और इस पत्रको डाकमे डालने और आज शामको मेन्चेस्टरके लिए रवाना होनेसे पहले उनसे मिलना सम्भव नही दीखता। इधर जो फेडरल स्ट्रक्चर कमेटीकी वैठके जारी है वहा वैठकर लम्बे लेक्चर सुनते-सुनते दिमाग थक जाता है। और वापूको वहुतसे लोगोसे मिलना भी पडता है। गरज यह कि वापू वडे ही व्यस्त रहते है और कई वार तो क्षणभरके लिए भी उनसे मिलना मुश्किल हो जाता है। वे वहुत थकावट महसूस करते है और चन्द दिनोके आरामकी उन्हे सख्त जरुरत है। आराम कव मिल सकेगा भगवान ही जाने। पर मुझे यकीन है, यह वक्त जल्दी ही आने वाला है, क्योकि वापू अपनेको विलकुल एकाकी महसूस कर रहे है और दूसरी पार्टियोसे मदद मिलनेकी उन्हे कोई उम्मीद नही रह गई है। मसलन्, रुपयेके प्रश्न पर और उसके सवधमे स्टेट-सेक्रेटरीके वक्तव्यके मामले पर किसीने उनका साथ नही दिया और उन्हे अपना हल अकेले ही जोतना पडा। सप्रू, रगस्वामी अयगार, मि जिन्ना सभी तो वहा मौजूद थे, पर सभी सर सैम्युअल होरके वाक्चातुर्यसे प्रभावित हुए मालूम देते थे। ऐसी हालतमे कोई क्या उम्मीद करे?

फिर मुसलमानोकी वात लीजिये। वापूकी शौकत अली और आगाखासे दो वडी निराशापूर्ण मुलाकाते हुई। आगाखाकी हार्दिकताका अभाव तो शौकत अलीके लिए भी स्पष्ट था। जिन्ना कही वेहतर थे, पर उनका खयाल था कि

बापूको उनके मित्रोंकी ओरसे कोई कठिनाई न होगी। निजी तौर पर जिन्नाको अन्सारीके लिए कोई उज्र नहीं है। पर उनके इन्तजारमें और पन्द्रह दिन हम यहां कैसे रुकें? और यदि हमें मुसलमानोंकी सारी मांगे मान ही लेनी हैं तो फिर अन्सारीके लिए क्यों रुका जाय? बादमें आकर वे उनकी पुष्टि कर दें। मानो बापूकी कुछ देने-दिलानेकी मन्शा नहीं थी और महज अन्सारीकी आड ले रहे थे। सच तो यह है कि वे लोग अन्सारीको नहीं चाहते, मगर बापू तो इस बात पर तुले हुए हैं कि वे अन्सारीके पीठ पीछे कुछ नहीं करेंगे। बापू प्रयत्न करेंगे कि अन्सारी मुसलमानोंकी मांगें मान लेवें। पर अगर ये लोग उनके लिए नहीं रुक सकते तो बापू भी वे मांगें अन्सारीकी ओरसे मंजूर नहीं करेंगे। अतएव इस सबबसे सफलताकी आशा बहुत कम दिखाई देती है।

जहां तक मुख्य प्रश्नका सवाल है, वे लोग स्वतंत्रताके प्रश्न पर इस बातचीतको तोड़कर सारी दुनियाके सामने हमें लज्जित करनेकी कोशिश करेंगे। पर बापू भी इस बात पर तुले हुए हैं कि संरक्षणों (सेफ गार्ड्स) की चर्चा पहले हो और उसीकी रोशनीमें आजादीकी बातचीत। मजदूर दलके पार्लमेन्टके सदस्योंसे बापू मिले। एक और मीटिंगमें तीनों दलोंके पार्लमेन्टके सदस्योंसे भी उनकी मुलाकात हुई। इस भेंटमें अनुदार दलके लगभग सभी प्रमुख सदस्य गैर-हाजिर थे। भाषणके अन्तमें बड़ी दिलचस्प चर्चा हुई जिसका बड़ा अच्छा असर पड़ा। मि. होरेबिन अगले हफ्ते स्कारबरोमें होनेवाली मजदूर दलकी बैठकमें बापूको ले जानेका इन्तजाम कर रहे हैं। नेशनल लेबर क्लबमें उनका सत्कार भी होगा। मजदूर दलके सदस्य, जिनमें बहुतसे बापूसे मिल चुके हैं, बड़ी सहानुभूति रखते हैं। आम मजदूरको तो बापूके प्रति सच्ची श्रद्धा है और वह उनसे जब भी मिलता है, अत्यन्त प्रेमपूर्वक मिलता है, परन्तु मध्यम वर्गके अंग्रेजोंकी मनोवृत्ति पर अभी तक कोई असर नहीं पड़ा है।

२५-९-१९३१] सप्रेम आपका महादेव

: १०२ :

प्रिय जमनालालजी,

बापूकी सर सैम्युअल होरसे आखिरी बातचीत हो गई। अब उन्हें बापूसे कोई उम्मीद नहीं रह गई है। उन्होंने यह मान लिया कि प्रान्तीय स्वशासनकी बात, जिसके बारेमें बापू सोच रहे थे उनके दिमागमें कभी नहीं थी। उनके हिसाबसे दरअसल उसमें और आजादीमें केवल नामका ही फर्क था। अतः उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। "अब हम मित्रोंकी तरह जुदा हों। आप मुझे समाचार देते रहिये। मुझे घटनाओंकी सरकारी तौर-पर तो जानकारी हमेशा मिलती रहेगी, पर मैं चाहता हूं कि इस बारेमें आपके

विचार भी मालूम होते रहे। पर आज तो यह मान ले कि हमारा मत नही मिल रहा हैं।" इसीके बाद ही बापूने अल्पसख्यक कमेटीमे अपना वह धडल्लेका भाषण दिया। उन प्रहारोके सामने रैम्जे मॅकडॉनाल्ड भी छोटा लगने लगा और एकबारगी उसे अपने अहकारको पी लेना और अपनी रोब गाठने एव अपमान करनेकी वृत्तिको भुला देना पडा। इसका प्रभाव बहुत ही अच्छा पडा और हम आशा करे कि वह दिलोकी सफाई करने वाला भी साबित होगा।

किन्तु परिणाम क्या? परिणाम तो यह कि वह महाशय अब हमारे मत्थे दोप न मढ सकेगे। 'न्यू स्टेट्समैन' के सुन्दर लेखको पढ लीजिये। उसके सपादकने कुछ दिन पहले एक घटेतक बापूसे बाते की थी और वह इस बातचीतसे स्पष्टत बहुत लाभान्वित हुआ दीखता है।

जनरल स्मट्स भी बापूसे मिले। उनका व्यवहार असाधारण रूपसे अच्छा था। उन्होने कहा कि बापूने अपने पक्षको इस कुशलतासे पुष्ट किया है कि यदि उन्हे खाली हाथ लौटना पडे तो वह एक भारी विपत्तिकी बात होगी। हिन्दुस्तानियोने स्वशासन करनेका अपना अधिकार सिद्ध कर दिया है, और अब उनके पथमे कोई बाधा नही रहने दी जा सकती। उन्होने इसमे अपनी सहायता देनेकी इच्छा भी प्रकट की। इसके बाद वे दो बार प्रधान मत्रीसे मिले भी और कुछ साम्प्रदायिक हल लेकर आये, जोकि उन्हे एक अच्छा मध्यम मार्ग जचा, और बापूकी सहमति प्राप्त कर उन्होने इसे फिर प्रधान मत्रीके सामने पेश किया। उसमे कोई सार नही है, और उसका कोई खास नतीजा भी निकलने वाला नहीं है। पर उनकी गाढ मित्रता और सहयोगकी भावनाओसे सभीको अचरज व आनन्द हुआ।

कुछ मित्र, जिनमे वेजवुड बेन, लोथियन, चर्चके कुछ उच्चपदस्थ व्यक्ति और दूसरे लोग भी है, कुछ-न-कुछ हल निकालनेका जीतोड प्रयत्न कर रहे हैं। बापूने आज अर्विनको एक तार भेजकर यह सूचना दी थी कि चूकि सम्मेलन अब टूटने ही वाला है, उन्होने वापस जानेका निश्चय कर लिया है, बशर्ते कि अर्विन कोई दूसरी सलाह दे। एक घटेके भीतर ही उनका जवाब आया कि वे बापूसे मिलने कल आ रहे है।

(यहा एक पेरेग्राफ छोड दिया गया है)

हम मार्सेल्ससे २७ को या जिनोवासे २९ को रवाना होनेकी आशा करते हैं। बापूको बदनाम करनेके लिए यहाके अखबारोने प्रान्तीय स्वशासनका जो भूत खडा किया है, आशा है आप उससे चिन्तित न होगे। बापू इस प्रकारकी किसी भी बातको कभी स्वीकार नही कर सकते थे। यहाके मित्रोकी घबराहटको कम करनेके लिए उन्होने प्रधान मत्रीको एक पत्र लिखा हैं और 'न्यूज क्रानिकल' को भी एक लम्बी मुलाकात दी है।

१३-११-१९३१]   आपका महादेव

: १०९ :

मुरब्बी जमनालालजी,

राऊंड टेबल सबंधी अटकले दैनिक अखबारोमें इतनी अधिक आती है और राऊंड टेबल कॉन्फरेन्सके बाहरकी बापूजीकी हलचलोंके सबधमे यग इडियामें मैं इतने विस्तारसे लिखता हू कि आपको अलग पत्र नही लिखे। वल्लभभाई और जवाहरलालको लिखे कुछ पत्र आपको देखनेको मिले होगे, ऐसा मैंने मान लिया है। आजका बापूका जबर्दस्त भाषण तो वहाके अखबारोमें आगया होगा। पूरा भाषण यग इडियाके लिए भेज रहा हू। अब तो राऊंड टेबलकी उत्तरक्रिया शेष रह गई है, यह कहू तो हर्ज नही।

बमनजी बापूसे मिले थे। उनके पास जो रकम लेनी बाकी है वह लगभग १॥ लाख हो जायगी। 'चर्खा सघ' और 'देश सेविका सघ' को देनेके लिए अब वह राजी होगये है। इनसे आप जरूर मिले और दोनो सस्थाओके बारेमें सारी बाते करे और उन्हे उनका परिचय दें। उनके मनमें इनकी कमेटियोमें आनेका लोभ है। बापूने कहा है कि कमेटीमें आनेके लिए जो पात्रता चाहिये उसे प्राप्त करे। चर्खा सघके लिए तो पात्रता प्राप्त करना इनके लिए अशक्य है, परतु बापूका खयाल है कि देश सेविका सघकी प्रवृत्तिमे इनको चालक बना सकते हैं। इनसे मिलकर सब बाते कर ले और उनकी रकमके विषयमें भी ठीक-ठाक कर ले।

पूज्य बापूकी तबीयत, यहाके अत्यत कामके बोझको देखते हुए, कह सकते है कि असाधारण रूपसे अच्छी रही है। सर्दी काफी पडती है परतु शिमलासे जरा भी अधिक नही। सब लोग कहते है कि इस समय इग्लेंडमें बापूके कदमोके साथ-साथ हिंदुस्तानकी हवा भी आई है।

१३-११-१९३१] (महादेव देसाई)

: ११० :

चि जमनालाल,

तुम्हारे पत्रकी हम सब राह देख रहे थे। पत्र सपूर्ण है। वहाका खानपान माफिक आगया है, यह बडे सतोषकी बात है। जानकीबहन और कमलनयनके सबधमे मुझे समाचार मिल चुके थे। विनोबा यदि व्रत लेकर न बैठ गये हो तो मैं समझता हू कि उन्हे दूध लेनेकी जरूरत है। वहा भी उनका काम तो सख्त मालूम होता है। उसको करते रहनेके लिए दूधकी जरूरत है ऐसा मेरा खयाल है। मेरा दृढ विश्वास है कि वनस्पतियोमें ऐसी वनस्पति जरूर है जो दूधकी आवश्यकताको पूरा करती है और दूधके दोषोसे मुक्त है, परतु ऐसी वनस्पतिको खोज करनेकी योग्यता जिन वैद्योमे है, उन्हे इसका

खयाल नही है। हम जैसोकी शक्तिके बाहरकी यह बात है, या फिर इस एक ही वस्तुके पीछे पड जाना चाहिये। परतु मेरी निश्चित राय है कि ऐसा नही हो सकता। अत जो धर्म सहजप्राप्त हो गया है उसीको पकड रखना हमारा कर्तव्य है। मुझे यह खयाल बना ही रहता है कि विनोबाको अपना वजन इतना ज्यादा कम न होने देना चाहिये।

वहा तुम्हारे पास बढिया समाज जम गया मालूम होता है। तुम्हारे 'क' वर्गकी मुझे ईर्ष्या होती है। जब तुमको यह वर्ग मिला तो मुझे बहुत खुशी हुई थी। तुम्हारा स्वास्थ्य उसमे कुछ खराब होगा ऐसी शका मुझे कभी नही हुई। खुद अपनी और अपने पडोसियोकी तबीयतका जतन करनेकी तुम्हारी क्षमताके विषयमे मेरे मनमे कभी शका आई ही नही , और जो अनुभव तुमको मिल रहे है, वे दूसरी तरह तुम कभी प्राप्त नही कर सकते थे।

प्यारेलालसे कहो कि कुसुमके द्वारा उनके लिखे पत्रका पूरा जवाब मै दे चुका हू। इसलिए यहा कुछ नही लिखता। वह जवाब कदाचित् इससे पहले उसे मिल जायगा। न मिले तो मुझे खबर कर देना। हम तीनो मजेमे है। अभी दो महीने हुए कि मै रोटी, बादाम, खजूर, एक साग और नीबू लेता हू। उससे अच्छा रहता है। रेच-पिचकारीकी बिलकुल जरूरत नही रहती। 'आश्रमका इतिहास' लिख रहा हू। बहुतसा समय पत्र लिखनेमे जाता है। इस छोटेसे मडलमे तुम्हारे सबधमे तो दिनमें कितनी ही बार बाते होती है। सबको हम सबके यथायोग्य कहना। जब-जब लिख सको तब-तब लिखते रहना।

९-४-१९३२] बापूके आशीर्वाद

: ११२ :

चि जानकीबहन,

कितना अभिमान ? जेलमे हो आई तो अब पत्र ही नही लिखोगी ? जैसे तुम्ही अकेली जा सकती थी न। तबीयत कैसी है ? कमलनयन कहा है ? उसको मैने खत लिखा है। ऐसा मालूम नही होता कि वह उसे मिला हो।

बालकृष्ण कहा है ? उसका इधर कोई खत ही नही। मदालसा भी मानो सो गई हो। शिवाजी तथा राधाकृष्णके बारेमे लिखना। छोटेलालको पत्र लिखा है उसका भी जवाब नही। इन सबकी आशा तुमसे रखता हू। हम तीनो मजेमे है।

१५-८-१९३२] बापूके आशीर्वाद

: ११३ :

चि जानकीमैया,

खूब ! आखिर पेसिलसे दो सतरे लिखनेकी तकलीफ की तो। जेल जाकर भी आखिर आलस्य नही गया न ? 'अ' वर्ग देनेमे ही भूल

हुई। 'क' वर्ग देकर खूब काम कराना चाहिये था। आलस्यका तो ठीक, परतु अब शरीरकी हालत ठीक कर लेना। विनोबाके शिकजेमे खूब फसी हो। पत्र बराबर नही आयेगे तो सजा मिलेगी। पुरानी कमली, जिसपर तुमने खादी सीकर फिरसे नई बनाई थी, वह राजमहलमे ही आई यह बात मै कह चुका हू न ? यहा तो वह है ही। अभी तो बहुत चलेगी।

२०-८-१९३२] बापूके आशीर्वाद

: ११५ :

चि जानकीमैया,

'क' वर्गका खाना खाकर मरनेका भय तुम जैसोको होता है, इसीसे बिना खाये जीनेका रास्ता मैने पकडा है। कलसे यह देख लेना। खा-खाकर तो सारा ससार मरता है। 'अ' वर्गका खाकर कितना जी लोगी यह देख लेगे। परतु अनशन करते-करते जीनेकी कला कैसी ? एक शर्त है जरूर। तमाम मैयाओको जोगन बनकर बाहर निकलना पडेगा और अस्पृश्योको स्पृश्य बनाकर खुद भी ईश्वरी शक्ति होनेका दावा साबित करना पडेगा। इतना करना और फिर 'अ' वर्गका ही खाना खाती रहना। परतु यदि कोई 'अ' वर्गका न दे तो 'क' वर्गके खानेसे भी सतोष मानना।

परतु मान लो कि जोगनोका भी कोई बस न चला तो भले ही यह मिट्टीका पुतला टूटकर अभी गिर जाय। मै तो जीनेवाला ही हू। जबतक एक भी मैया मेरा काम करती होगी तबतक कौन कहेगा कि मै मर गया ? भले ही आत्माकी अमरता सबधी गीताका तत्वज्ञान हम छोड दे। जो अमरता मैने बताई है वह तो हम चर्म-चक्षुओसे भी देख सकते है। इसलिए खबरदार जो जरा भी घबरा गई तो ! शोभित होना और शोभित करना। तन, मन, धन ईश्वरको सौपकर सुखी होना व रहना। नखरेबाज ओमको और ज्ञानी मदालसाको आज नही लिख सकूगा।

यह तुम सबके लिए है, ऐसा समझना। तुम्हारा सौभाग्य अखड रहे।

१९-९-१९३२] बापूके आशीर्वाद

११६ :

चि जमनालाल,

तुम परेशान बिलकुल न होना। तुमको तो नाच उठना चाहिए कि जिसको तुमने पिताका स्थान दिया वह तुम्हारे प्रिय कामके लिए पूर्णाहुति देता है। तुम्हारे लिए तो यह उत्सव ही होना चाहिए।

जानकीमैयाके साथ मेरा विनोद चल रहा है। सरदार, महादेव तुमको याद करते है।

२७-९-१९३२] बापूके आशीर्वाद

: ११९ :

चि जमनालाल,

तुम्हारा पत्र अभी मेरे हाथ लगा, सुना, और उसका जवाब लिखा रहा हू। तुम चाहते हो वे सब आशीर्वाद टोकरियो भर तुम्हारे जन्मदिवस पर तुम्हे मिले। जो मृत्यु चाहेजब छोटे-वडे, गोरे-काले, मनुष्य-पशु या दूसरे सबके लिए आने ही वाली है, फिर उसका डर क्या ? और उसका शोक भी क्या ? मुझे तो बहुत वार ऐसा लगता है कि जन्मकी अपेक्षा मृत्यु अधिक अच्छी चीज होनी चाहिये। जन्मसे पहले माताके गर्भमे जो यातना भोगनी पडती है उसे तो मै छोड देता हू। परतु जन्मते ही जो यातना शुरु होती है, उसका तो हमे प्रत्यक्ष अनुभव है। उस वक्तकी पराधीनता कैसी है ? और वह तो सबके लिए एकसी होती है। जब कि मृत्युमे, यदि जीवन स्वच्छ हो, तो पराधीनता जैसी कुछ नही रहती। बालकमे ज्ञानकी इच्छा नही होती और न उसमे किसी तरहज्ञानकी सभावना ही होती है। मृत्युके समय तो ब्राह्मी स्थितिकी सभावना है। इतना ही नही बल्कि हम जानते है कि बहुत लोगोकी मृत्यु ऐसी स्थितिमे होती है। जन्मके माने तो दु खमे प्रवेश है ही जब कि मृत्यु सपूर्ण दु ख-मुक्ति हो सकती है। इस प्रकार मृत्युके सौदर्यके विषयमे और उसके लाभके विषयमे हम बहुत कुछ विचार कर सकते है और इसे अपने जीवनमे सभवनीय बना सकते है। इस प्रकारकी मृत्यु तुमको प्राप्त हो, ऐसे आशीर्वाद और ऐसी कामनामे जो कुछ भी इष्ट हो वह सब आगया। इस इच्छामे हम दोनो साथी है, ऐसा समझो। तुम्हारे स्वास्थ्यके सबधमे सबकुछ जाननेके बाद भी जो विचार मैने बताये है, उनपर मै दृढ हू। तुमको अपने खर्चसे भोजन प्राप्त करनेकी छुट्टी मिल सके तो उसे प्राप्त करनेमे मै कोई दोष नही समझता। शरीरको एक अमानत समझकर यथासभव उसकी रक्षा करना रक्षकका धर्म है। मौज-मजेके लिए गुडकी एक डली भी न मागो, न लो, परतु औषधिके तौर पर महगसे महगे अगूर भी मिल सके तो प्राप्त करनेमे कोई बुराई नही दिखाई देती। इसलिए ऐसे भोजनपानको ग्रहण करनेमे उद्वेग पानेकी आवश्यकता नही। ऐसी ही स्थितिमे दूसरोको भी ऐसा खाना दिलाया जा सके तो दिलाना चाहिये। मेरी दृष्टिमे जितने गेहू मिलते है उतने खानेकी जरूरत नही। गुडको बिलकुल छोड देना उचित मानता हू। तुम्हारे शरीरको गुडकी जरा भी आवश्यकता नही। इसके बदले निर्दोष शहद लेना अधिक अच्छा है। परतु जबतक मीठे फल मिल सकते है, उसकी भी जरूरत नही। दूधमे किसी भी प्रकारका मीठा मिलाना दूधको पचानेमे हानिकारक है। दूधकी मात्रा बढाना अच्छा है। जैतूनके तेलकी जगह मक्खन लेते हो, यह ठीक ही है। यहा जो जैतूनका तेल मिलता है वह हमेशा शुद्ध नही होता, ताजा तो मिलता ही नही, और मक्खनमे जो विटेमिन होते है वे जैतूनके तेलमे

नही होते। सागमे हरी सब्जी होनी चाहिए। आलू वगैरा लगभग रोटीका स्थान लेते है। इनमे स्टार्च होता है। तुमको स्टार्चकी कमसे-कम जरूरत है। और जितनी होगी वह सब गेहूसे पूरी हो जायगी। दाल हर्गिज मत लो। मक्खन यदि काफी ले लो तो दो पौंड दूध काफी है। इसके घटाने बढानेका आधार वजनके ऊपर है। वजनके स्थिर हो जाने तक, और हजम होता रहे तबतक, मक्खनकी अथवा दूधकी या दोनोकी मात्रा बढाते जाना चाहिये। तरकारियोमें लौकी, कद्दू भिन्न-भिन्न प्रकारकी सब्जिया, फूलगोभी, पत्तागोभी, बिना बीजकी सैम, बैगन इन सबकी गिनती अच्छी हरी सब्जियोमे होती है। गेहूका आटा चोकर मिला हुआ होना चाहिये। यदि गेहू बिलकुल साफ करके पीसा गया हो तो उसका कोई भी अश नही फेंकना चाहिये। फलमे ताजे अगूर, मौसमी, सतरे, अनार, सेव, अनन्नास लेने योग्य है। आजकल जो प्रयोग अमेरिकामें हो रहे है उससे मालूम होता है कि एक ही साथ बहुतसी चीजे नही मिला देनी चाहिये, फल अकेला ही खानेसे उसका गुण अधिकसे अधिक हमे मिलता है। और भूखे पेट खाना तो सर्वोत्तम है। अग्रेजीमे कहावत भी है कि सुबहका फल सोना है और दुपहरका चादी है, इसलिए पहला खाना अकेले फलका होना चाहिये। सुबह गर्म पानी पियो तो हर्ज नही। तुमको चौबीसो घटे खुली हवामें रहनेकी इजाजत मिल सकती हो तो लेनी चाहिये। खुली हवामे रोज धीमे-धीमे प्राणायाम कर सको तो अच्छा है। रातकी सर्दीसे डरनेकी बिलकुल जरूरत नही। गले तक अच्छी तरह ओढ लिया हो और सिरपर और कानपर कपडा लपेट लो तो फिर कोई हानि नही। चौबीसो घटे शुद्धसे शुद्ध हवा श्वासके लिए फेफडोमे जाय यह अति आवश्यक है। सुबहकी धूप सहन हो सके तो इस तरह शरीरको खुली हवामे जितना खुला रख सको उतना रखना चाहिये। इस सबकी चर्चा डा कन्ट्राक्टरके साथ कर लेना और फिर जो उचित मालूम हो सो करना।

माधवजीकी गाडी तो ठीक चल ही रही होगी। वहा जो साथी रहते हो और जो आवे उन्हे आशीर्वाद और हम तीनोका यथायोग्य। अस्पृश्यताके सबधमे यहा जो कुछ चल रहा है वह शायद तुम जानते होगे। तुमको जो विचार सूझे वह मुझे लिख सकते हो। उन्हे भेजनेकी इजाजत तुमको वहासे मिल सकेगी।

८-११-१९३२]

बापूके आशीर्वाद

: १२३ :

चि जमनालाल,

अपनी तबीयतके समाचार आज ही देना। तुमसे मिलनेकी तजवीज कर रहा हू। अप्पाका मामला फिलहाल तो सुलझ गया है। अर्ध उपवास और पूर्ण उपवास स्थगित हो गये है। पूरे प्रश्नका निर्णय हो जायगा। मैंने

दो पौड वजन फिरसे प्राप्त कर लिया है। 'आश्रमवासियोके प्रति' खोजकर भेजूगा। और कुछ चाहिये सो मगा लेना। कमलनयनको सीलोन भेजनेकी पूरी आवश्यकता है। कमलनयन लिखता है कि जानकीदेवी भी अब तो अनुकूल है। वहाका जलवायु उसे जरूर माफिक आयगा। अग्रेजीका शौक पूरा हो जायगा। हिंदुस्तानका वातावरण इस समय उसे शात नही रहने देगा। सीलोनमे शात रह सकेगा। वह घरका घर और बाहरका बाहर है। जब इच्छा हो तब लौट आ सकेगा। अग्रेजीका अध्ययन बहुत अच्छी तरह हो सकेगा। अनेक दृष्टियोसे मुझे यह प्रयोग बहुत पसद है। अपना विचार लिखे। उसके बाद उसे भेजनेकी तजवीज करूगा। एक दो जगह लिखना पडेगा।

घनश्यामदास कल गये। तुमसे मिल सकना सभव नही था। देवदास अभी यही है। राजेद्रबाबूकी तबीयत अच्छी नही कह सकते।

७-१२-१९३२] बापूके आशीर्वाद

: १२४ :

चि. जमनालाल,

तुम्हारे दोनो पत्र मिल गये। मेरी व्यस्तताकी कोई सीमा नही, और कमलनयनके बारेमे मेरे विचार भिन्न होनेसे लिखनेकी जल्दी नही थी इसलिए मौका मिलते ही सबसे पहले पत्र लिखनेका सोचा था। आज लिखना ही था कि तुम्हारा दूसरा पत्र आ गया। इससे ऐसा मालूम होता है कि तुम्हारी तबीयत गिरी है। परतु मुझे ऐसा भय नही मालूम होता। मवाद फिरसे निकला, यह तो अच्छा ही हुआ। कृत्रिम उपायोसे मवाद बद हो जाय तो कुछ लाभ नही। पेटमे आव जैसा लगता है, इसका कारण तो यह हो सकता है कि कोई खास चीज खानेमे आगई हो। इधर एक दो दिनसे रोटी ठीक नही होती थी। तुम रोटीका टोस्ट बनाकर खाओ तो शायद ज्यादा अच्छा होगा। दात तो मजबूत है ही। रोटी खूब चबानी चाहिये, यह तो जानते ही होगे। यहासे टोस्ट बनाकर भेज सकते है, क्योकि डबल-रोटी हमारे यार्डसे ही वहा जाती है और रोटी बनानेमे थोडा बहुत मेरा हाथ है। अत टोस्ट बनानेमे कोई कठिनाई नही आवेगी। यदि तीन दफा खाते हो तो टोस्ट ताजे भी बनाकर भेजे जा सकते है।

व्यापार-सबधी भेट-मुलाकातमे बहुत वक्त देते हो, यह भी इस समय न करना ही उचित है। डाक्टर मोदीके कहे अनुसार पूर्ण आरामकी आवश्यकता है। बहुत बोलना भी अच्छा नही है। अत यहाकी आबहवासे पूरा फायदा उठानेके लिए आराम करना, कम बोलना बहुत जरूरी है।

तुम्हारे बारेमे कर्नल डोइलने काफी समयतक बातचीत की है, परसो ही बाते की। उनकी सलाह यूरोप जानेकी ही थी, परतु मुझे

तो इसकी कोई जरूरत मालूम नही होती। इस देशमें प्राप्य सहायतासे जो कुछ हो सकता है वह करके शात रहना। परतु तुम्हारी इच्छा विलायत जानेकी हो तो मुझे जरूर सूचित करना। तुमसे बार-बार मिलनेकी जो माग मैंने कर रखी है, उसका जवाब भी आजकलमें आना चाहिये।

अब कमलनयनके विषयमे। कमलनयनको द आफ्रिका भेजनेके लिए खास इजाजत लेनी चाहिये। वहा उसके लिए अध्ययनका कोई साधन नही है। अग्रेजी स्कूल या कालेजमें उसको स्थान नही मिलेगा। हिंदुस्तानियोके लिए एक अच्छा कालेज है, परतु हमारी दृष्टिसे उसमे कुछ भी नही है। खानगी अध्ययनकी सुविधा भी कमसे-कम है। फिनिक्स तो जगल है। वहा जानेसे उसको छापखानेमे ही लगा रहना पडेगा। अत किसी भी दृष्टिसे दक्षिण आफ्रिकाका विचार करने जैसा नही है। जब कि सीलोनमें इससे उलटा है। वहा जितने स्कूल है उनमेंसे किसीमे भी कमलनयन जा सकता है। न्यूरा-लियाकी आबहवा तो उत्तमोत्तम है। सृष्टि सौदर्य वहासे अच्छा शायद ही कही हो। वहा जानपहचानवाले भी काफी मिल सकते है। वर्नाड आलूविहारी तो घरका ही आदमी है और बहुत विद्वान है, चरित्रवान है। मेरे साथ ही विलायतसे आये थे और सीलोनके प्राचीन महाकुटुम्बोमेंसे है। वहा अगर ठीक न मालूम हो तो तुरत वापस भी बुला सकते है। समय-समय पर पत्र-व्यवहार हो सकता है। इसलिए मेरी दृष्टिसे कमलनयनकी अग्रेजी पढनेकी अभिलाषा पूरी करनेके लिए हमारे सिद्धातोके अनुकूल जगह सीलोन ही है। खुद कमलनयनको भी अच्छी मालूम होती है। परतु तुमको यदि वह ठीक न मालूम दे तो अभी तो भले वर्धा ही रहे। यदि वर्धामे उसे सतोष मिलता हो तो कहनेकी कोई बात ही नही। सतोष नही है ऐसा उसकी बातसे और उसके पत्रसे मालूम हुआ, इसलिए यह प्रश्न उपस्थित हुआ है।

मणिलालका बुधवारको जाना मुल्तवी रहा। अत अब तो फिर २९ ता को ही जा सकता है।

छगनलाल जोशी मेरी मददके लिए कल यहा आ पहुचे है। इससे मेरा काम हल्का तो नही होगा, परतु जो हमेशा अधूरा रहा करता था उसमे फर्क पड जायगा।

मिला, ११-१२-१९३२] बापूके आशीर्वाद

: १२५ :

चि जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। कमलनयनके बारेमें समझा। पूनामे उसका इतजाम नही हो सकता। वकीलके साथ उसके बारेमे बातचीत हो ही गई थी। इतने बडे लडकेको वहा नही रखते। सुविधा भी नही। विशेष बात

तो इस विषयमे जब मिलेंगे तब कर लेगे। तुमको फाउन्टेनपेनकी स्याहीकी जरूरत थी। हमारे पास स्वदेशी स्याही थी। भाई कटेलीको इसका पता था, अत उसमेंसे तुम्हारे लिए एक दवात भेजी है। हमारे पास तो उसका भडार भरा पडा है।

यहाकी डबल-रोटीमें जो शक्कर होती है उसके स्वदेशी होनेकी सभावना है। क्योकि पूनामे विदेशी शक्कर बहुत कम आती है। परतु यदि विदेशी हो तो भी मै इसमे दोष न मानूगा, क्योकि यह शक्कर खमीर उठानेके लिए डाली जाती है। अर्थात् खमीरके साथ मिलकर उसमेंसे एक नया ही पदार्थ पैदा हो जाता है–जैसे अमुक गैस अमुक मात्रामे मिलकर पानी पैदा होता है। इसलिए रोटी खानेवालेके लिए यह नही कह सकते कि वह गेहू और शक्कर दो पदार्थ खाता है। खमीर उठानेके लिए तीन चीजे काममें लाई जाती है। महुवा, शक्कर और नमक। महुआ विदेशी होता है। इसलिए मेरी दृष्टिसे विदेशी शक्कर त्याग करने वालेके लिए भी रोटी निर्दोष मानी जा सकती है। इतने पर भी यह जाननेके बाद अतिम निर्णय तो तुमको ही करना है। यहा जो चपाती बनती है वह यदि तुमको माफिक आती हो तो मुझे डबल-रोटीका आग्रह करनेकी आवश्यकता नही।

तुम्हारी मुलाकातके बारेमे अभी कोई उत्तर नही आया।

आपरेशनके लिए अभी विलायत न जानेके बारमे स्थिति समझी। खुद मुझे तो ऐसी दहशत नही है। हजारो आदमियोके कान बहते है और उन्हे कुछ भी दूसरा उपद्रव नहीं होता। यह सब भाग दिमागके पास है इसलिए अतिम परिणाम आ सकता है, इस विचारसे डाक्टर स्वय चौंक जाते है और बीमारको भी डरा देते है। इसलिए इस देशमे जितनी मदद मिल सकती हो उतनेसे ही सतोष माननेमे मुझे सकोच न होगा। परतु यह बात अभी तो अप्रस्तुत है। शाति होनेके बाद इसका मार्ग अपने आप सूझ जायगा।

मेरी कोहनी जैसी थी वैसी ही है। वजन १०३ है, तबीयत कुल मिलाकर ठीक है।

इसके साथ जानकीबहनका पत्र भेजता हू। उसमे कमलनयनके विषयमें जो कुछ लिखा है वह देख लेना। मैंने जवाबमें लिखा है कि कमलनयनके साथ मास्टर और रसोइया जाय यह मैं कभी मजूर नही करूगा। ऐसा करनेमे बाहर जानेका लाभ वह खो देगा। साथमें यह भी लिखा है कि तुम्हारे साथ इस सबबमें बातचीत चल रही है।

[१५-१२-१९३२] बापूके आशीर्वाद

: १२९ :

चि जानकीमैया,

वाह ! मेरे पत्रका जवाब तक न देना ? मेरा इतना ज्यादा डर है ? हरिजनको देते हुए जी दुःख पाता हो तो ऐसा लिखो। मुझे चतरे भेजते हुए थैली खुल जाती है, किंतु हरिजनके लिए बंद रहती है क्या ?

बापूके आशीर्वाद

कल जमनालाल बंबई गये। वहां डाक्टर मोदी उनकी जांच करेंगे। शरीर तो अच्छा है। तुम्हारे और खुद अपने संतोषके लिए ही गये हैं।
२६-३-१९३३]

: १३० :

चि जमनालाल,

सेठ पूनमचंद रांकासे जितनी जल्दी मिल सको मिलना उचित है। उनसे कहना कि उनके उपवास सत्याग्रहकी नीतिके विरुद्ध हैं। और मैं समझता हूं कि किसी भी तरीकेसे उनका बचाव नहीं हो सकता। कैदियोंके वर्गीकरणके विरुद्ध सभी लोग नहीं हैं। जिन कैदियोंको 'अ', 'ब', वर्ग मिलता है, वे सब 'क' वर्गकी ही स्थितिमें नहीं जाते। जिन्हें ऊंचे वर्गमें रखा जाता है वे उस वर्गकी सुविधाओंको लेनेके लिए बाध्य नहीं है। जो इस सुविधासे लाभ उठाते हैं, अपनी इच्छासे ही उठाते हैं और उसका त्याग करनेके लिए सेठ पूनमचंद उन्हें मजबूर कैसे कर सकते हैं ? उसके लिए उपवास कैसे कर सकते हैं ? वे खुद चाहें जिस सुविधाका त्याग करें, यह दूसरी बात है। यह वर्गीकरण मुझे खुद पसंद नहीं है, किंतु उसमें फेरफार करानेका मार्ग उपवास हर्गिज नहीं है। मुझे आशा है कि सेठ पूनमचंद अपना हठ छोड़ेंगे। उनको यह भी जानना चाहिये कि जबतक वे अपनेको सत्याग्रही मानते हैं तबतक वे उसकी मर्यादाओंको पालन करनेके लिए बंधे हुए हैं। सत्याग्रहके प्रणेताके नाते उसकी मर्यादा स्थिर रखनेका मुझे कुछ तो अधिकार होना चाहिये। इस दृष्टिसे भी उन्हें मेरी सलाह मानना उचित है। ईश्वर तुमको सफलता दे।
८-४-१९३३]

बापूके आशीर्वाद

: १३४ :

चि जमनालाल,

तुम्हारे दो पत्र एक साथ मिले। तार भी मिला। तुम वहां रह गये हो यह मुझे बहुत अच्छा लगा है। इसी तरह निश्चिततासे रहो। मैं मानता हूं कि उपवास निर्विघ्नतासे समाप्त हो जायेंगे।

तुम्हारे दर्दके लिए किसी वैद्य या हकीमकी सलाह लेना भी उचित मालूम होता है। कानमेंसे बहुतोंको पीप निकलकर बंद भी हो जाता है। इससे डरनेकी कोई वजह नहीं, खानपानका ध्यान रखो तो काफी है। गाय सामने

आई हो और उसके थन साफ करके साफ हाथसे दुहा जाय तो वह दूध ताजा ही पियो। खानेमे ध्यान रखो। अटशट कुछ न खाओ। दाल नही, मसाले नही, कच्ची सब्जी कुछ-न-कुछ चाहिये। टमाटर, सलाद अच्छी वस्तु है। कच्चे प्याज खानेका डा देशमुखका खास आग्रह है।

जानकीबहनका समय किस तरह बीतता है? घूमती फिरती है? ओम क्या पढ रही है? प्रभुदास क्या करता है?

शाती रुइयाको समवेदनाका पत्र लिखा है। राधाकृष्णने खबर दी थी।

तुमको पत्र भेजे जाते रहेगे।

७-५-१९३३]   बापूके आशीर्वाद

: १३६ :

चि जमनालाल,

ज्ञानके सबधमे तार दिया है सो मिला होगा। छगनलालका पत्र इसके साथ है, इससे मै समझता हू कि ज्ञान वहा नही आई। ज्ञानने स्वीकार कर लिया, यह किस तरह हुआ, यह यदि तुम जान सके हो तो मुझे बताना।

१२ ता वाली मीटिंगके लिए तुमको बरबस आनेकी बिलकुल जरूरत नही है। अपनी राय भेजना चाहो तो भेज दो। जरूरत होगी तो पढ लूगा। अच्छा तो यह हो कि वह श्री अणेको भेज दो।

कमलाके लिए भी आनेकी जरूरत नही। जो कुछ हो सकता है वह बराबर होते रहेगा। मै पूछताछ करता रहता हू। कमलनयन आता-जाता रहता है। जानकीदेवीसे भी मिला था। कमला भी मिल गई। वह अभी बच्ची ही है। खूब लाड-प्यारमे पली है, इसलिए अपनी जिम्मेदारीका भान कम है। इसमे उसका कसूर नही। जैसे हम वैसी ही हमारी सतति। हमारे अदर उत्तरोत्तर जो फेरफार हुआ करते है उनतक हमारी सतति नही पहुच सकती है। हरिलालका उदाहरण सोलह आने है। वह सब मर्यादाए लाघ गया। उसने ये सब प्रत्यक्ष रीतिसे तोड दी। मैने मनसे भोगोको भोगा और बाह्येन्द्रियोपर धीरे-धीरे अधिकार प्राप्त किया। यदि मनको भी अतमे वश न कर सका होता तो मिथ्याचारीमे मेरी गिनती आसानीसे होती। परतु मुझमे जो फेरफार हुए उनका स्पर्श हरिलालको कैसे होता? बीचमे यह व्याख्यान ही हो गया।

तुम शरीरको सम्हालकर सब काम करो। प्रभुदास यदि वहा आया हो तो उसके क्या हाल है? अब क्या खोजोगे?

विनोबा, बालकृष्ण और छोटेलालकी तबीयत कैसे रहती है?

राधिका आगई। अब देवलाली है। केशू अभी यहा है, शान्त है। अभी किसी निश्चय पर नही पहुच सका। पहुच जायगा। उसे काफी समय दे रहा हू। लक्ष्मीनिवासकी पत्नी सुशीलाने ५००० रुपये हरिजन सेवाके लिए दिये, उसका तुमने क्या फैसला किया?

देवदास, लक्ष्मी रणछोडदासके बगलेमे रहते है। राजाजी घनश्यामदासके साथ। मेरी तबीयत ठीक हो रही है। रोज तीन बार करके ४५ मिनट घूमता हू। वजन ९७ पौड तक पहुच गया है। और बढेगा। अब मेरी चिंता करनेकी कोई बात नही रहती।

नारणदासका पुरुषोत्तम बहुत करके यहा आयगा और डा दिनशाके वहा नर्सगिक उपचारकी शिक्षा लेगा।

वहाका तुम्हारा काम कब पूरा होगा ?

गिरधारी फिर आज गिरफ्तार होगा। कल छूटा था। उसे हैदराबाद जानेका हुक्म है। उसने उसे नही माना।

तुम्हारा खानपान आदि ठीक चल रहा होगा। मुझे सविस्तर लिखना।

बापूके आशीर्वाद

आज १०–११ ३० तक हरिजन सेवकोके साथ बातचीत की।

२-७-१९३३]

: १३७ :

चि जमनालाल,

मुझे जरा भी फुरसत नही रहती। इससे लिखनेकी इच्छा होते हुए भी नही लिख सकता। आश्रमको लिखे पत्रकी नकल इसके साथ है। मेरे विचार इस तरह उडते रहते है। आखिर कहा जाकर ठहरेगे, यह पता नही। मेरा आजकलमें ठिकाना लग जायगा तो फिर ऐसे विचारका आदान–प्रदान नही हो सकेगा। परतु तुम तो विचार करने लग ही जाओगे। जो ठीक लगे वैसी सलाह नारणदासको देना। मेरा पत्र विनोबा पढेगे ही, उनको लिखनेका समय मिला ही नही। और आज मिलनेकी आशा नही।

कमलाके उपवास चल रहे है। सभवत आज छूटेगे। मेहता ध्यान रखते है। मुझे रोज रिपोर्ट देते है। उपवासमें खूब हिम्मत रखी है।

तुम्हारा शरीर ठीक रहता होगा।

तुमको कूद तो पडना ही है। परतु जल्दी न करो। शरीरको ठीकठाक करके आना।

१७-७-१९३३] बापूके आशीर्वाद

: १३९ :

चि जमनालाल,

इधर तुम्हारा कोई पत्र नही। मैंने आशा रखी थी। पूनासे लिखा मेरा पत्र मिला होगा। आश्रमकी आहुति देनेके सबधमे बातचीत कर रहा हू। लगभग निश्चित जैसा है। आज निश्चय हो जायगा। इस आहुतिकी नकल करनेकी जरुरत नही। इसको आदर्श मानकर जो अपना आचरण बनाना

चाहे वे जरूर बनायेगे। वर्धा आश्रमके सबधमे भी फिलहाल साबरमतीका अनुकरण करनेकी आवश्यकता नही। समय मिला तो विशेष लिखूगा।

अब्दुलगफ्फार खाका लडका, जो विलायतमे था और वहासे अमेरिका गया था, मुझसे पूनामे मिला था। अभी बबईमे है। अमेरिकाके शक्करके कारखानेमें काम सीखकर आया है। कितना सीखा है सो तो भगवान जाने। खुर्शेदबहन वगैराकी सलाह है कि वह शक्करके किसी कारखानेमें फिलहाल काम करे तो अच्छा। तुम्हारे कारखानेमे उसे आजमा देखो। उसने मुझ पर अपनी होशियारीकी छाप नही डाली। भलमनसाहतकी डाली है। अभी तो कहता है कि जैसा आप कहेगे वैसा करूगा। इस समय तो उसे वेतन देनेकी बात नही है। एक महीनेके बाद यदि वह काममें कुशलता बतावे तो वेतन ठहराया जा सकता है। अभी तो उसके लिए रहने-खानेका इन्तजाम करना पडेगा।

मेरी तबीयत ठीक है। रणछोडभाईके यहा ठहरा हू। आश्रम रोज जाता हू। आज मीराबहनसे मिलनेकी आशा रखता हू। इजाजतके लिए तार दिया था सो वह मिल गई है।

२१-७-१९३३] बापूके आशीर्वाद

: १४० :

चि जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। प्रश्न तो सब ठीक है। भरसक जवाब देता हू। आश्रम सौप देनेमे मतलब तो यह है कि जो वस्तु अतमे उन्हे लेना ही है वह उन्हे सौप देना अधिक अच्छा। प्रतिवर्ष लगानके लिए माल उठा ले जाय उससे तो शौकसे सारी जमीन ले ले। फिर हजारो लोग बिना इच्छाके बर्बाद हो गये तो सत्याग्रहके नामसे परिचित आश्रम खुद होकर सारा त्याग करे यह इष्ट है और धर्म भी मालूम होता है। परतु इसका अर्थ यह नही कि अभीसे वहाके आश्रमको भी ऐसा ही करना है। इससे उलटा मुझे लगता है कि वहासे जो-जो व्यक्ति निकल सके उससे सतोष मान ले। विनोबा तो अब नही निकल सकते। उन्हे हरिजन सेवाके लिए रहना है। महिला आश्रमका उपयोग पूरा करना चाहता हू। वहा बच्चे भी आवे क्या? कितनी ही बहने तो वहा आयेगी ही। नीला नागिनी और अमलाबहनका प्रश्न है ही। उन्हे वहा भेजे बिना दूसरा उपाय नही है। दोनोंसे हरिजन-सेवाका काम लेना है। अभी तो दोनोको तैयार होना है। नागिनीदेवीका पुरुषोसे सबध कम होना चाहिये। जगम सपत्ति यदि सरकार न ले तो कही खुलेमें रखेगे। गायोका प्रश्न बडा है। विचार कर रहा हू।

तुमको अभी कूद पडनेकी जल्दी नही करनी है। समय आने पर कूदना। इतना ब्यौरा काफी है न? बडी व्यस्ततामें लिख रहा हू।

२२-७-१९३३] बापूके आशीर्वाद

: १४७ :

चि जमनालाल,

नीला फिर रास्तेसे भटक गई है। उसके पत्रोंसे उसकी अव्यवस्था स्पष्ट झलकती है। इतने दिन हिंदू धर्मकी धुन थी, अब ईसाई धर्मकी लगी है। इसमे भी यदि निश्चय हो तो अच्छी बात है, परतु मुझे ऐसा नही लगता। उसकी कल्पनाशक्ति उसे इधरसे-उधर झकझोरा करती है। मौन लेनेसे उसका मन अधिक चक्कर खा गया जान पडता है। साथवाला पत्र पढकर उसे दे देना और फुरसत मिल जाय तो उससे बात भी कर लेना। अथवा विनोबा करे। द्वारकानाथसे कुछ हो सकता हो तो वे आश्वासन दे।

मेरा तार तुमको मिला होगा। तुम्हारे साथ बात तो करनी ही है। परतु मै तुमको यहा घसीटना नही चाहता। पहले तो ऐसा ही लगता था कि बबई थोडे दिन रहकर वर्धा जाऊ, परतु दो-तीन दिनसे कुछ अनिश्चितता आगई है। कदाचित् वहा आकर बबई जाना ठीक होगा, लेकिन देखता हू। जवाहरलाल छूट गया है सो उससे मिलनेकी भी जरूरत है, पर वह मुलाकात तो वर्धामे भी हो सकती है। आखिर तो जो होना होगा वही होगा। इसलिए मै कोई योजनाये नही बनाता।

मेरा शरीर ठीक होता जा रहा है। दो पौड दूध साग और फल लेता हू।

मिला, ४-९-१९३३] बापूके आशीर्वाद

: १५४ :

चि जमनालाल,

कलकत्तेसे लिखा तुम्हारा पत्र मिल गया। लेकिन उसमे यह नही समझ सका कि तुम सतीशबाबूसे मिले या नही। मिले तो होगे। यह भी नही लिखा कि तुम्हारी तबीयत कैसी रहती है। अब लिखना। शिवप्रसाद बच गये यही बडी बात समझनी चाहिये। यात्रा ठीक तरह चल रही है। मेरा शरीर सोचा था उससे ज्यादा काम दे रहा है, इसलिए चिंता करनेका जरा भी कारण नही है। ओमकी गाडी ठीक चल रही है। वह ऐसी नही है जो किसीको अपने लिए चिंता करने दे। मत्रीपदके लिए धीरे-धीरे तैयार हो रही है। इतनी जागरूकता अभी नही आई कि मुझे पूरा सतोष हो, परतु शरीरको खतरेमे डालकर उसपर चाप चढाना नही चाहता। आसानीसे जितना काम कर सकती है उतना ही लेता हू। किसन मेरे साथ है, यह तो तुम जानते ही होगे। बहुत भली लडकी है। ओमके साथ खूब घुल-मिल गई है। इसका शरीर जेलमे छीज गया, नही तो अच्छी मजबूत थी और मन चचल था। यात्रासे उसको फायदा हुआ मालूम होता है। इस बार मेरे साथ

मलकानी है। इनके विषयमे तो पूछना ही क्या। मेहनत कर रहे है। दामोदर ठीक काम दे रहा है। वह मजा हुआ है। अत्यज खातेसे रुपये दिल्ली भेजने थे सो भेज दिये क्या ? गोशीबहनको प्रतिमास कुछ भेजते रहना होगा। वे भी किसी खातेसे निकालकर देना। मथुरादास जितने कहे उतने देना। बबईसे पूरी रकम उनको मिलनी चाहिये थी, परतु उन लोगोने नही दी। अब मै पत्रव्यवहार करूगा, परतु इस बीच उसे रुपया अवश्य मिलना चाहिये।

बापूके आशीर्वाद

ता क बुधवार, सुबह प्रार्थनाके पूर्व—

जानकीबहन तुम्हारे क्रोधके बारमे लिखती है सो क्या बात है ? उसमे तथ्य हो तो उसे निकाल देना। ओमसे पूछा तो वह भी कहती जरूर है कि मदनमोहनको भी तुम कभी-कभी रुलाते हो।

तारा तो अच्छा काम देनेवाली है ही। उसका शरीर अच्छा रहेगा तो वह मज जायगी। डा शर्मा (दिल्ली) का तार है। उसने अपनी सपत्ति १० हजारमे बेची है और ऋणमुक्त हो गया है। अब वह आश्रममे आना चाहता है। अपनी पत्नीके साथ आवेगा। उसको मैने सुझाया है कि वह तुमको लिखे। उसे अपनानेकी आवश्यकता है। जच जाय तो अच्छा, नही जचा तो चला जायगा।

तुम अपने शरीरको सभालकर काम करते होगे। जानकीबाई सोमण यहा रहना चाहती है। जहा विद्या आदि रहते थे वहा उन्हे जगह दी जा सकती है क्या ?

३१-१२-१९३३] बापूके आशीर्वाद

: १५८ :

चि जानकीबहन,

यदि दिमागकी कमजोरीके कारण जमनालालको गुस्सा आता हो तो उसमें शिकायतकी क्या बात ? बीमारके गुस्से पर भला कोई ध्यान देता है ? बीमारकी चिढ तो हमेशा पी ही ली जाती है। या केवल विनोदके लिए मुझे पत्र लिखा है ? मदालसासे कहना कि वह मुझे भूल गई मालूम होती है। ऐसा नही चल सकेगा। ओम मजेमे है।

रामकृष्ण कैसा है ? तुम्हारी तबीयत कैसी है ? बालीका ध्यान रखना।

३०-१-१९३४] बापूके आशीर्वाद

: १५९ :

चि जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। मैने गोदिया तार दिया था और वर्धा भी दिया है। जबतक राजेद्रबाबू खास तौर पर तुमको नही बुलावे तबतक अगीकृत

कार्यको हर्गिज नही छोडना। राजेंद्रबाबू बिना विचारे नही बुलावेगे। मैने भी अपने बारेमें यही वृत्ति रखी है। मुझे इन विषयमे कोई सदेह नही है कि तुम्हारा अगीकृत कार्य जल्दीसे नही छूट सकता। तुम्हारे गये बिना जहा काम नही चल सकता हो वही जा सकते हो। ऐसी हालत मुझे अभी नही दिखाई देती। राजेंद्रबाबूके बुलाने पर आश्रमके छूटे हुए लोगोको भेजा है। कई लोगोके जानेका तार आज आगया है। उनमे भी सुरेंद्रको नही भेज रहा हू। क्योकि वह तुम्हारे पास काम कर रहा है। उसकी जरूरत न हो तो उसे भेज सकते हो। जाय तो गर्म कपडे साथ ले जाय। परतु उसकी वहा जरूरत हो तो अभी उसके जानेकी जरूरत नही। स्वामीको जानेका तार दिया है।

ओमका ठीक चल रहा है।

३०-१-१९३४] बापूके आशीर्वाद

:१६२:

चि जमनालाल,

एलविनका पत्र पढ गया। उसे अलग डाकसे लौटा रहा हू। टिकट खर्च बचानेके लिए। इनकी समस्या देखनेके बाद इन्हे मदद देनी पडेगी ऐसा लगता है। उनके पास जो रुपये आते है वे कहासे? वे गायन सिखाते है सो किस तरह? उनके साथ शामरावके अलावा और कौन है?

ऐसा मालूम होता है कि उनको मांसाहार किये बिना गति नही है। इनकी ऐसी श्रद्धा नहीं है कि दूध-फल पर निर्वाह हो सके। परतु वे कुछ भी खाये, इस कारण उनकी मदद बद करनेका कोई प्रयोजन नही है। परतु कताई बद हो जाय या हलकी पड जाय तो यह सहन नही किया जा सकता। यदि कताईमें उनका विश्वास न हो तो छोड देना चाहिये। मै यह नहीं कहता कि वे काते तभी मदद दी जाय, परतु आशय यह है कि वे सत्यकी रक्षा करे। देखना इतना ही है कि काम सब स्वच्छ हो। एलविन सीधे-भोले है इसलिए खुदको धोखा दे सकते है। इसलिए इस बातकी आवश्यकता है कि मित्र लोग उनकी देखभाल करे।

डा अन्सारीकी पार्टीका निश्चय हो गया होगा। जबतक इसका स्पष्टीकरण न हो जाय तबतक उसमें दिलचस्पी अवश्य लेना। राजा भी दिलचस्पी ले। मालवीयजीको अदर लानेके बाद मदद भी देनी होगी और यह भी देखना होगा कि वे नुकसान भी न करने पावे। विलब या जल्दी करके वे नुकसान पहुचा सकते है।

जुलाई तकका कार्यक्रम तो देख लिया न? इसके अनुसार करनेसे बहुत जगह मुलाकाते मिल सकेगी।

२१-५-१९३४] बापूके आशीर्वाद

: १७० :

चि जमनालाल,

उपवासके बाद यह पहला पत्र लिख रहा हू। मजेमे हू। आज दूध लिया है। ब्लड प्रेशर अच्छा है। इसलिए मेरी चिन्ता न करो। जानकीबहन जबतक रहना चाहे तबतक उन्हे रहने दो। ओमको ज्यादा दिनतक वहा रखनेकी शायद जरूरत न हो। महादेव और मदनमोहन आवे तो आने दो। उनका जाना मुझे आवश्यक मालूम हुआ है। भले ही लौट सके तो वह कल वापस लौट आयें। यहा परेशानी नही होगी। अत हृदयमे रामको अकित करके क्लोरोफार्म लेना। सब कुशल है। ईश्वरको तुमसे अभी बहुत सेवा लेनी है। बहुत अर्पण कराना है।

१५-८-१९३४] बापूके आशीर्वाद

: १७५ :

चि जमनालाल,

कल विनोबाके रवाना होनेके बाद डा जीवराजका बहुत अच्छा तार मिला। उससे मालूम हुआ कि फिर खूनकी शिकायत नही हुई और दर्द भी कम हुआ था। फिर भी ठीक हुआ जो विनोबा वहा डुबकी लगाने चले गये। उनके जानेमे कारण कमलनयन है, यह तो जाना होगा। कमलनयन खुद तुम्हारी शनिवारके दिनकी तकलीफ देखकर घबडा गया, इससे यहा पहुचते ही महादेवके द्वारा उसने मुझे कहलाया। मैंने सूचनाका स्वागत किया और विनोबाको खबर भेजी। वे तुरन्त तैयार हो गये। मदालसाकी भी इच्छा हुई, परन्तु वह तो भक्त है न? इसलिए विनोबाकी मशा देखकर रुक गई। उसका सयम उसे फलेगा। रह गई सो ठीक हुआ। अब यदि दर्द मिटा हो और चित्त शान्त हुआ हो तो विनोबाको जल्दी मुक्त कर देना। परन्तु जरूरत हो तबतक वह भले ही वहा रहे। यहाका तत्र व्यवस्थित हो रहा है। विनोबा उसीमे रातदिन व्यस्त रहते है।

विद्याभ्यास सबधी तुम्हारी प्रतिज्ञाका पालन अवश्य होगा। तुमको आश्वासन देनेके लिए इतना लिख दिया है। इसकी चर्चा विनोबाके साथ करनेकी जरूरत नही। इस समय तुमको इस बातकी साधना करनी है कि तुम्हारा शरीर जल्दी अच्छा हो जाय। यहाकी अथवा दूसरी और कोई भी चिन्ता अपने ऊपर लेनेकी जरूरत नही। मेरी तो बिलकुल ही न करना, क्योकि मेरी गाडी अच्छी तरह चल रही है। राधाकिसन और शिवाजी बहुत अच्छी तरह पहरा दे रहे है। तुम बहुत नही बोलते होगे। डाक्टर जो छूट दे उसका उपयोग कजूसीसे करनेमे ही हित है। डा जो चाहे वह अगर धर्म विरुद्ध न हो तो करना चाहिये। हमारी इच्छाके अधीन होकर कोई छूट दे तो वह दूसरी बात है।

बापूके आशीर्वाद

जाजूजी मिले थे। खबर सुना गये। मदनमोहनको भेजनेकी जरा भी जल्दी न करना। यहा किसीको कोई तकलीफ नही है। यह निश्चित समझना।

२०-८-१९३४]

: १७७ :

चि जमनालाल,

तुम्हारा, ओमका, जानकीमैयाका तथा मदनमोहनका पत्र मिला। विनोवासे समाचार जाने और अभी-अभी डा शाहका तार भी मिला। इससे अब तो ऐसा ही मानना चाहिये कि थोडे दिनमे ही जखम भर जायगा। परन्तु तुम हवाई किले न बाधना। वहाका सब काम धीरजके साथ पूरा करना। किसी तरहकी जल्दी नही है। चिन्ता भी नही है। यहा राधाकिसन सब बातका ठीक इन्तजाम कर लेता है। और मेरी रखवाली तो वह तथा और दूसरे कई लोग कर रहे है।

जिस वाक्यके साथ 'विनोद' लिखना पडे उसे क्या विनोद कहेगे ! जानकीमैया चिल्ल-पुकार मचा दे यह अच्छा या तुम मनमें सब कुछ दबाकर सपने देखते रहो यह अच्छा ? जानकीमैया चिल्लपो मचा देती है तो इससे हम समझ जाते है कि उसे बडा दु ख है और तुम मनमे समझ लेते हो तो हम लोग धोखेमें पड जाते है। कहो अब कौन बढकर है ?

२३-८-१९३४] बापूके आशीर्वाद

: १८० :

चि जमनालाल,

तुम्हारे पत्र आते रहते है और खबर तो मिलती ही रहती है। ईश्वरका पूरा अनुग्रह मालूम होता है कि डाक्टरोकी धारणाओसे भी जल्दी जख्म भर रहा है। जल्दी बिलकुल न करना। जख्म पूरा भर जानेपर ही वहासे निकलना है। सिंहगढका विचार मुझे पसद है। मेहताकी मदद भी मिलती रहेगी। सिंहगढकी हवा तो उत्तम है ही। पानी खूब हलका है। इससे पूरा लाभ मिलेगा। दूर भी नही कह सकते।

बातचीत ज्यादा न करना। करना भी पडे तो पूरी आवाजमे नही, बल्कि बहुत धीमी आवाजसे। आवाज निकालनेका असर कान पर पडे बिना रहता ही नही।

दालभात छोडनेसे जरूर लाभ होगा। दूध पर अधिक आधार रखना। दही खट्टा बिलकुल नही होना चाहिये। जैसे-जैसे इजाजत मिलती जाय कसरत खूब बढाते जाये। चिन्ता तो बिलकुल मत करना। ऐसा करनेसे कानके फायदेके साथ दिमाग भी तरोताजा हो जायगा।

मालवीयजी आज आगये। राधाकान्त भी साथ है। आसफ अली और खलीक आगये है। और लोग कल आयेंगे।

खानभाई खुश रहते है। रोज सुवह घूमते है और शामको ४ से ५ वजेका समय देता हू। धीरे-धीरे वाते हो रही है।

मेरे सबधमे पगलीकी वात तो सुनी होगी। उसमे मै तुमको नही डालना चाहता। वादमे जव विलकुल अच्छे हो जाओ तव जो टीका करनी हो सो करना। मुझे तो लगता है कि तुमको यह सब अच्छा लगेगा।

ओम मेरे पास ही रहती है। आवश्यक मदद करती है। सच पूछो तो एक या दो लडकीका काम चार या पाच लडकियोमे वट गया है। इससे सबके हिस्सेमे थोडा-थोडा आता है। और प्रभावती कहा ऐसी है जो दूसरोको वहुत करने दे। फिर मदालसा तो अपना हिस्सा वटाने आती ही है।

राधाकिसन तुम्हारे सुझावोके कारण इतना चिन्तित रहता है कि मुझ पर ठीक-ठीक पहरा रखते हुए भी घवराता रहता है। मै जल्दी तो उठ ही जाता हू। अधिक सोनेकी जरूरत नही रहती और मेरा काम निपट जाता है तो मन हलका रहता है। वजन अव धीरे-धीरे ही वढेगा। खुराकमे वृद्धि करनेकी गुजाइश नही। जो है उससे धीरे-धीरे वढेगा। वही ठीक है। ताकत वढती रहती है। दिनमे सो लेता हू। रातको ८ वजकर ४५ मिनट पर और ज्यादासे ज्यादा ९ वजे चारपाई पर चला ही जाता हू। इस तरह मैने अपनी तवीयतके वारेमे उलहना मिलने जैसी वात नही रक्खी। तुम्हारे आने तक और उसके वाद भी यही रहूगा। विना कारण यहासे खिसकना नही है।

एडरूज फिर रविवारको आ रहे है।

कुमारप्पा २० दिनकी छुट्टी लेकर आये है। इनको फिर तुरन्त वापस भेज दूगा। यहा मगलवारको आवेगे।

कन्याओका ठीक चल रहा दीखता है। विनोवा ही सव कुछ देखा करते है। इसलिए मुझे किसीमे हाथ डालनेकी जरूरत नही रहती।

वापूके आशीर्वाद

आसामके वारेमे लिखना रह गया। वहा काग्रेसके लोगोको जानते हो तो उन्हे आसामके रुपये भेज देना। यदि न जानते हो तो ज्वालाप्रसादको भेज देना। मारवाडी रिलीफ वहा काम करती है। उसमे यह रकम मिलायी जाय। तुमको जैसा उचित लगे वैसा करना।

८-९-१९३४]

: १८३ :

चि जमनालाल,

वल्लभभाई खबर देते है कि तुम * * में कपडेकी मिलका सौदा करना चाहते हो। तुम यानी तुम्हारी कपनी। मुझे इससे आघात तो पहुचा ही। जो इतनी गहराई तक खादीमे उतरे है वह मिलके मालिक बनेगे, यह बात अनहोनी-सी लगी, फिर भी मै निश्चय नही कर सका कि क्या लिखू। इतनेमे कल जानकीमैया आई। मध्यमाकी परीक्षा दे चुकी है इसमे मन हलका है। उन्होने जबसे यह सुना है तबसे उन्हे भी चैन नही पडी है। वे पूछती है कि यह बला किसके लिए? लडके भी पसद नही करते। नौकर कहते है कि अब तो घरकी ही मिल होगी इसलिए सेठजी खादी पहननेको थोडे ही कहेगे? यह कार्य किसीको पसद नही है इसलिए मिलका विचार छोड देना। यदि सौदा हो गया हो तो नसीबमे आ पडा यह समझकर करना। भागीदारोको लेना हो तो वे भले ले। यदि तुम धधा ही चाहते हो तो बहुतसे व्यवसाय पडे है। परोपकारके लिए ज्यादा कमाना चाहते हो तो परोपकारके बिना हम चला लेगे। ओम् कहती है कि 'आप काग्रेसके लिए धन चाहते है। क्या इसीलिए काकाजीको मिल खरीदनेकी प्रेरणा कर रहे है?' इन सबको क्या जवाब दू? यदि हो सके तो इस विचारके छोड देनेकी खुशखबरी तारसे देना।

२७-९-१९३४] बापूके आशीर्वाद

: १८४ :

चि जमनालाल,

तुम्हारे पत्र मिले। मिलकी झझटसे अच्छे बचे। इस बाघके डरसे यहा जानकीमैया और बालकोके मनका सुन्दर अनुभव मिला। सब व्याकुल हो गये थे, यह मुझे बहुत अच्छा लगा। यह वृत्ति कायम रहे ऐसी आशा हम सदा करे।

जबतक डाक्टर वहासे बिलकुल मुक्त न करे तबतक वहासे हिलना ही नही है।

जितनी हो सकेगी उतनी बाते यहा करेगे। बाकी काग्रेसमें और उसके बाद। काग्रेसके बाद तो फिलहाल वर्धा ही लौटना होगा। काग्रेसके बाद तुरन्त नई बात करनेका कुछ सोचा ही नही है। इसका विचार तो यही होगा।

यहाका चल रहा है।

कमलाको पत्र लिखते रहते होगे। आजकल तो वहा खुर्शेदबहन है उनको लिखो तो भी चलेगा।

५-१०-१९३४] बापूके आशीर्वाद

: १९१ :

चि जमनालाल,

तुम्हारे कानके विषयमे अभी तक कोई खबर क्यो नही ? किशोरलाल और गोमतीने विस्तर पकड लिये है। गोमती ठीक है। किशोरलालको अभी बुखार है, मगर उतार पर है। उद्योग सघको वगीचेमे ले जानेकी तैयारिया हो रही है। मकानके ऊपर दो कोठरिया बनानेकी तजवीज है। एक बनानेकी बात राधाकिसनने की थी। अब दोकी चल रही है। लगभग दो हजारके खर्चका सवाल है। ऐसा जरूरी नही है कि यह किया ही जाय। इसका सही उपयोग तो चौमासेमे होगा। दिनमे तो मै नीचे पडा रह सकता हू। रातको अवश्य ऊपर सोने जाऊगा। ऊपरकी कोठरिया तो भविष्यकी दृष्टिसे ही बनानी चाहिये। बात निकली तो मुझे 'हा' कहनेका प्रलोभन हुआ। तुम इनकार कर दोगे तो काम बन जायेगा और दो हजार रुपया बच जायेगा। पर अब वे कहा तुम्हारे रहे है ? यह लिखते समय मनमे यह विचार आ जाता है कि ऊपर मकान बनवानेको फिलहाल मुझे ही दृढता पूर्वक मना करना चाहिये। ऐसा ही होगा। इसलिए ऊपरका लिखा रद्द समझना।

स्वरूपरानीकी ओरसे कृष्णा फिर धीमेसे प्रभाकी माग कर रही है। मैने तो लिखा है कि प्रभा इस तरह काममे लग गई है कि उसे मुक्त नही किया जा सकता परन्तु वहासे किसी दूसरी बहनको भेज सकते है। उसको एक साथिन चाहिये और मै मानता हू कि ऐसी कोई बहन मिल सकेगी। तुम्हारी हिम्मत पडे तो तुम स्वरूपरानीको तसल्ली देना। नही तो यह बात मुझ तक ही रहने देना।

२२-१२-१९३४]

बापूके आशीर्वाद

: १९३ :

चि जमनालाल,

तुम इस समय दो कोठरिया बनवानेका आग्रह न रखना। मैने सोच समझकर ही मना किया है। सब कुछ ट्रस्ट ही है न ? कौडी-कौडी करके बचानेसे ही बरकत रहती है। भले ही खानगी दुकान हो या दरिद्रनारायणकी। दरिद्रनारायणकी दुकानमे तो और भी अधिक सावधानी चाहिए। मगनलाल स्मारकका मसविदा नही बना सका। भरसक कोशिश तो करूगा।

अभ्यकर बच जाय तो बडा अच्छा हो। उनसे जब मिलो तो कहना कि मै उन्हे बहुत याद करता हू।

खानसाहब मेरे साथ दिल्ली आ रहे है। मेहेर तो साथ होगी ही। मेहेरका भी ठीक चल रहा है। आजकल यहा आनदके पिता और वैकुठ

मेहता है। आनदके पिता दुनियाकी यात्रा करके आये है। उद्योग सघमे बहुत दिलचस्पी लेंगे।

२६-१२-१९३४] बापूके आशीर्वाद

: १९७ :

चि जमनालाल,

तुम नही आ सकोगे यह समझा। जबतक डाक्टर इजाजत न दें तबतक वही रहना ठीक है। बहुत उपाधि मोल न लेना।

रामदासको मणिभवनमे रखनेकी मणिलालकी इच्छा कम है, ऐसा रामदासको प्रतीत होता है। अत वहासे उसका चला जाना ठीक ही है। अब वह अलग कमरा लेकर रहना चाहता है। उसका किराया २५ रु तक होगा, जिसकी उसने माग की है। मै समझता हू कि वह उसे लेने दे। यह सब अनुचित तो मालूम होता है किन्तु रामदासकी बीमारी ही ऐसी है कि उसके विषयमें अनुचित उचित मालूम होता है। इसमें पिताका मोह कहा तक मुझे गलत रास्ते ले जाता होगा, सो नही कह सकता। रामदासकी इस मागमे यदि तुमको दोष मालूम होता हो तो उसके अनुसार उसे कहनेका अधिकार तुमको वर्षो पहले मिल चुका है। जैसा ठीक मालूम हो वैसा करना।

स्वरूपरानीके विषयमे समझा। स्वरूप तार भेजती रहती है। मुझे यहा २५ तक तो रहना ही पडेगा। २८ तो यहासे रवाना होनेकी आखिरी तारीख है।

राजाजी कल लक्ष्मीको लेकर यहा आ रहे है।

जयप्रकाशसे मिलते रहते हो न?

१४-१-१९३५] बापूके आशीर्वाद

: २०५ :

चि जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। डा जीवराजके पत्रसे मुझे सतोष है। वे भोजनमें परिवर्तन करना सुझाते है। मक्खन ज्यादा लेनेको कहते है। उनके साथ बात करके बढाना जरूरी समझो तो बढा देना। मुझे डर है कि तुम बातचीत बहुत करते होगे और कसरत कम। यदि ऐसा हो तो तुमको दोनोमे सुधार करनेकी जरूरत है। मुझे विस्तारसे लिखना।

कमलनयनके साथ बाते की है। मेरी निश्चित राय है कि यदि वह राजी हो जाय तो विवाह करके ही उसका विलायत जाना उचित है। परन्तु अपनी पत्नीको वह साथ न ले जाय। पत्नीको ले जाकर पढ सकना लगभग असभव है। विलायतमें घर-गिरस्ती जोडना भी अनुचित है। हा, दोनो सैर-सपाटेके लिए जाये तो बात दूसरी। पर यहा तो सैर-सपाटेका सवाल है ही नही। मेरी राय इस प्रकार है। अभी सगाई कर ले। मलेरिया शान्त

होने पर कोलम्बो जाय। एक परीक्षा तो पास कर ही ले। फिर विलायत जाय। जानेसे पहले विवाह कर ले। थोडा समय ससारका सुख भोगना चाहे तो भोगे, परन्तु विलायत तो अकेला ही जाय। विलायतसे भले आता-जाता रहे। कोलम्बोका अनुभव कमलनयनको ठीक काम आयेगा। उसका जीवन अभी अध्ययनशील नही बना। यह हो जाने पर फिर कोई कठिनाई नही रहेगी।

उद्योग सघमे छ स्थायी ट्रस्टी नियुक्त किये है, उनमे तुम्हारा नाम लिखा है। यह आवश्यक था। अत तुमको साधारण सदस्य बनानेकी जरूरत है। इसका फार्म इसके साथ भेज रहा हू, उसे भरकर लौटती डाकसे भेज देना। इसमें सकोचका कोई कारण नही है।

बापूके आशीर्वाद

कृष्णदास सगाईके लायक हो गया है। कोई लडकी तुमने निगाहमें रखी है? हो तो लिखना।

६-२-१९३५] बापू

: २०७ :

मुरब्बी भाई,

आपका दूसरा पत्र कल शामको पूज्य बापूको मिला। बापूने लिखाया है कि यदि पैदल चलनेमे चक्कर आनेका डर हो तो मोटरमे घूमने जाया करे। मोटरमे बैठकर खुली हवामे घूमने जाना चक्करके लिए भी अच्छा है।

ग्राम उद्योग सघके सदस्य होनेकी प्रतिज्ञाके सबधमे बापू लिखाते है कि उन्होने आपके विषयमे पूरा-पूरा विचार करके ही दस्तखत करनेकी सलाह दी है। उन्होने सबसे कहा भी है कि वे आपकी सही प्राप्त कर सकेगे। अब यदि आप नही करेगे तो उसका असर खराब होगा। वे समझते है कि आपको सही करनेमे धर्मभीरु होनेका कोई भी कारण नही है। आपने मानसिक त्याग तो पूरा-पूरा किया ही है, आपकी वृत्ति भी ग्रामीण ही है। आज इतना ही उनके लिए काफी है। इसलिए वे जोर देकर लिखाते है कि फिलहाल तो उस पर सही करके भेज दीजिये।

यहा आनेके बाद मेरे साथ इस विषयमें पेट भरके चर्चा कर ले और यदि आप मुझे समझा सके अथवा मै आपको समझा न सकू तो फिर आपके सदस्यतासे त्यागपत्र देनेमे मै कोई आपत्ति न करूगा। सदस्यतासे जब चाहे इस्तीफा देनेकी इसमे छूट है। आपके बिना यह ट्रस्टी-मडल बनाना उन्हे (बापूको) ठीक नही लगता।

चि कृष्णदासको सदेश कह दूगा।

अन्य बातोके विषयमे कलके पत्रमें लिखा है।

९-२-१९३५] किशोरलालके प्रणाम

: २१४ :

चि जमनालाल,

तुम्हारे दोनो पत्र मिले। कुमारप्पासे पूछा। जब ये फार्म छपाये गये थे तब कोई अध्यक्ष नही नियुक्त किया गया था। खजानची तो थे ही। उनका नाम देना आवश्यक मालूम हुआ इसलिए छापा गया। मुझे इसकी कोई खबर नही थी। कागज भी मैने तुम्हारा पत्र आनेके बाद मगाकर देखा। अब आगे जो फार्म छपाया जायगा उसमे परिवर्तन करके छपानेकी सूचना की है। इसमें कोई खास बात नही है।

कमलनयन सरहदमें पहुच गया यह ठीक है। पत्रोमें था कि उसे चोट आई है। पर उसमे कोई खास बात नही मालूम होती।

कमलाका मालूम हुआ। कमलाकी इच्छा है कि जब वह जाने लगे तो बबई जाकर मैं उससे मिल आऊ। तुम वहा हो ही सो मुझे सलाह देना।

कान कैसा रहता है इस प्रश्नका उत्तर नही है। आज ठक्करबापा आये हैं।

१८-४-१९३५]

बापूके आशीर्वाद

: २१७ :

चि जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला।

मदालसा भले ही उबाला हुआ दूध पिये और रोटी हजम हो तो खाये। अपने शरीरकी सभाल रखकर जो जीमें आवे वह खाये पर चार बारसे अधिक नही। बीचमें भी कुछ नही। यह समझमें आ सकता है कि वह कसरत करेगी तो भोजनका परिमाण बढेगा।

चौधरीके बारेमें कल लिख चुका हू। उसे घर कहा दे? या तो पुराने बगलेमेंसे दो कमरे या नयेमेंसे। बगीचेमे दोनो रह सके ऐसी सुविधा नही देखता। चौधरीकी मुझपर अच्छी छाप पड रही है। वह काम किया करता है। दोनोंके लिए उसे १०० रु की आवश्यकता है। उसकी पत्नीको ७५ रु दूसरी जगहमे और उसे २५ रु यहासे, इस प्रकार १०० रु दिये जा सकते हैं। मकानके बारेमें लिखना।

कानका मवाद बद हुआ? राजेन्द्रबाबू और राजा आज आ गये। राजा बहुत थक गये हैं इसलिए अब वह जा रहे हैं।

प्रोफेसर भी आ गये।

बापूके आशीर्वाद

प्यारेलालके विषयमें तारादेवीको लिख चुका हू।

२८-४-१९३५]

: २३४ :

चि जमनालाल,

सुनता हू कि तुम्हारे आनेकी तारीख आगे वढती जा रही है। अलमोडामें रहनेके लिए वढ रही है यह मुझे अच्छा लगता है। तुमको आराम करनेकी आवश्यकता है ही। वहा बैठे-बैठे भी तुम पूरा आराम ले सको यह सभव तो है नही। पत्र तो लिखने ही पडते है। लोग भी वहा मिलने-जुलने आते ही है, और वहाका काम तो है ही। यह होते हुए भी जो परिश्रम यहा उठाना पडता है वह तो वहा नही ही है, इस कारण जाडा शुरू होने तक वहा रहो तो मुझे अच्छा लगेगा। फिर वहाके जाडेकी तो तारीफ है। इससे भी अधिक अच्छा जाडा शिमलाका माना जाता है, और जाडेमें शिमलाका रहन-सहन वर्धासे भी सस्ता होता है। वगले मुफ्तके जैसे किराये पर मिल जाते है। साग-सब्जी, फल वगैरा ढेरके ढेर और सस्ते मिलते है। और दुग्ध उत्तमोत्तम होते है। सरदी लोगोकी कल्पनामें ही होती है। लाहोरमें जितनी ठड लगती है उसकी अपेक्षा वहा कम लगती है, इसलिए मै तो तुमको सरदीके दिनोकी भी छुट्टी दे दूगा। जहा वैठे रहोगे वहासे भी काम तो देते ही रहोगे। पूरा एक वर्ष शातिसे अगर पहाड पर विता दो तो मेरा खयाल है कि तुम्हारा कानका दर्द शात हो जायगा, मदालसाका शरीर विलकुल तैयार हो जायगा और जानकीमैया, हड्डिया न तोड ले तो, वढिया घुडसवार वन जायेंगी। चर्खा सघकी सभामें तुम उपस्थित रहो ऐसी मेरी इच्छा तो जरूर है, पर अगर तुमको सतोप हो जाता हो तो मै तुम्हारी उपस्थितिके विना भी काम चला सकता हू। नई नीतिके वारेमें चर्चा तो खूव की है। तुमको जो कहना हो वह लिखकर भेज सकते हो। खादी-प्रतिष्ठान, मेरठ और कश्मीरके भडारके विषयमें विचार करनेकी वात हो तो इनके वारेमे भी मेरे विचार वन चुके है। इस सवधमे तुम अपने अभिप्राय भेज सकते हो और फिर जो हो जाय उसे सहन करो।

उसके वाद काग्रेस कमेटीकी मीटिंगका सवाल है। इसमे भी न आओ तो चलेगा। इन सवमेंसे मुक्ति इसी शर्त पर मिल सकती है कि तुमको किसी भी पहाड पर यह सारा समय विताना चाहिए। अगर नीचे उतरते हो तो फिर दोनो वैठकोमे शामिल होना यह तुम्हारा धर्म हो जाता है। तुम जालधर जानेवाले थे सो क्या नही गये? राधाकृष्ण और सरदार ऐसा समझते है कि शायद तुम नही गये। सरदारको वहा जाना पडेगा। यहा सव ठीक चल रहा है। वालकोवा गौरीशकरकी देखरेखमे केवल दूधका प्रयोग कर रहे है। अव ठीक है। इसके साथ भगवानजीका पत्र है। तुमने जिस आदमीके लिए लिखा उसे मिलनेको कह दिया है।

२०-९-१९३५]

वापूके आशीर्वाद

: २३९ :

प्रिय मुरब्बी जमनालालजी,

यह पत्र नासिक पहुचते-पहुचते लिख रहा हू। बापूकी तबीयत अच्छी है। बातचीत करनेमें तो बीमार लगते ही नही। गाडी रवाना होते ही सरदारके मजाक शुरू हो गये। डाक्टरसे बोले, "लो गाडी चलने लगी, अब बत्तीकी स्विच बद करो।" और डाक्टर स्विच खोजने लगे। सब जोरोंमे हस पडे। तो बोले, "डाक्टर! थर्ड क्लासमें स्विच नही होती।" बापूजी सुबह पौने चार बजे उठे। अकेले ही प्रार्थना करके फिर सो गये। मैं और मणिबेन चार बजे उठे और यह समझकर कि बापू सो रहे है, हम दोनो भी प्रार्थना करके सो गये। सुबह पता चला कि बापू हमसे पहले ही प्रार्थना कर चुके थे। प्रार्थनाके बाद तुरत जो सोये तो ५॥ बजे उठे। बादमे फिर सो गये। सरदार ६॥ बजे बापूसे कहने लगे, "बीमार आप है या हम? आप तो लकडीकी इस कडी पट्टी पर भी सो जाते है। आपको बीमार कौन कहेगा? लकडीकी इन सीटो पर हम नही सो सकते, इस कारण बीमार तो हमी हुए न?" इस तरह मजाक होते रहते है। डब्बा तो रिजर्व जैसा ही है। क्योकि नासिक तक तो कोई आया ही नही। पर अब नासिक आ गया है और यह पत्र आपको कल मिल सके इस हिसाबसे डाकमे डालना हो तो उसे नासिकमें ही डालना चाहिए।

[१७-१-१९३६] स्नेहाधीन महादेवके प्रणाम

: २४५ :

ग्राम-निवास सबधी मेरी कल्पना

बाकी इच्छा हो तो उसे लेकर, न हो तो अकेले मुझे ही, सेगावमें एक झोपडी बनाकर रहना।

मीराबहनवाली झोपडी शायद मेरे लिए काफी न हो।

झोपडी बनानेमे कमसे कम खर्च करना। १०० रु से ऊपर तो आना ही नही चाहिए।

मुझे जितनी मददकी जरूरत हो वह सेगावमेंसे ही प्राप्त कर लेनी चाहिए।

जब जब जरूरत हो मुझे मगनवाडी जाते रहना चाहिए। ऐसा करनेके लिए जो वाहन मिले उसका उपयोग करना।

के पास ही मीरा रहे। मेरी सेवामें समय न दे, लेकिन गावके काममे मदद दे सकती है।

जरूरत हो तो महादेव, काति आदि वही रहे। उनके लिए सादी झोपडी बनाना।

ऐसा करते हुए वाहरके जिन कामोमे मै भाग ले रहा होऊ उनको जारी रखू।

खास जरूरतके वगैर वाहरके लोग मुझसे मिलनेके लिए सेगाव न आवे। मगनवाडी जानेके जो दिन तय हुए हो उन दिनो वहा मिल लिया करे।

वाहर भ्रमण करनेकी जरूरत मालूम होने पर .

मेरा पूर्ण वि करनेसे खास लाभ होनेवाला है और ग्राम उद्योगका काम अधिक गतिमे चलेगा, लोगोका ध्यान ग्राम उद्योगकी तरफ अधिक झुकेगा।

ऐसा करनेसे मीरावहनकी भारी शक्तिका पूरा उपयोग होगा। और महादेव, काति, आदिको भी नया और अच्छा अनुभव मिलेगा।

मेरे गावमे बस जानेसे मेरी कल्पनामे जो दोष होगे वे ऊपर आ जायेगे। दूसरोको प्रोत्साहन तो मिलेगा ही।

सेगावमे ही बसनेका नही है, पर यह प्रवाह-पतित मालूम होता है। लेकिन कोई दूसरा गाव अधिक ठीक मालूम हो तो उसपर विचार करनेको मै तैयार हू।

[१९-३-१९३६] वापू

: २४८ :

प्रिय भु जमनालालजी,

पूज्य वापू और सरदार दोनो मजेमे है। आज कुमारप्पा पहुच गये। दीवान और डाक्टरकी मनाही होते हुए भी, वापू कुर्सीका उपयोग न करके सारी पहाडी पैदल ही चढ कर गये। पाच मीलकी चढाई २। से २॥ घटेमे पूरी कर सके, पर थकान विलकुल नही आई। यहा शाति तो अपार है, और यहाकी स्वच्छता और निर्जनता आकर्षक है। वापूको बहुत आराम और शाति मिलेगी इसमे शका नही। राज्यने सारा प्रवन्ध हमारी रुचिको ध्यानमे रखकर किया है।

चितलियाने कुछ पर्चे भेजे थे सो उनमेसे एक, जो आपके लिए था इसके साथ भेजता हू। अभी तक भगिनी सेवा मदिरका कब्जा उसने छोडा नही है। और उस सबधकी सारी योजनाकी रूपरेखा वह वना रहा है। वापूने उसे लिखा है कि सेवा-मदिरका कब्जा छोडनेके वाद ही उसकी योजना पर विचार हो सकेगा। इसपर भी विचार करना होगा कि वह ट्रस्टके हेतु तथा वापूकी विचार-सरणीके अनुरूप है भी या नही।

डा अन्सारीकी मृत्युसे वापूको बहुत आघात पहुचा है। अनेक पत्रोमे उन्होने लिखा है कि मृत्यु उनको हिला नही सकती, लेकिन इस मौतसे उनको बहुत आघात पहुचा है। ऐसा लगता है मानो वह अकेले रह गये

है। उनकी मित्रता कोई राजनैतिक मित्रता नही थी, बल्कि गाढ व्यक्तिगत मित्रता थी। हरिजनमें भी बापूने अपना दु ख उडेला है।

जिस बहनके सबधमे डा जाकिर हुसैन साहबका पत्र लखनऊमे आपको मिला था और जिसका उत्तर आपकी ओरसे मैंने दिया था, उस बहनका पत्र इसके साथ भेजता हू। उसे मैं लिख देता हू कि अपने आनेके सबधमें सीधा आपसे पत्रव्यवहार करे।

आप कुशल होगे। सबको यथायोग्य। किशोरलालभाईको प्रणाम। जानकीबहन, गोमतीबहन आदिको भी।

[१३-५-१९३६] सेवक महादेवके प्रणाम

: २६६ :

चि जमनालाल,

उद्योग सघके इतने सारे सदस्य यहा आये, इससे कल मैं शरमिंदा हुआ और दु खी भी। ऐसे कामके लिए मुझे वहा आना चाहिए। इससे ही खर्च वगैरामें बचत होती है। मेरे इतना चलने फिरनसे मेरे शरीरको कोई नुकसान नही होता, पर वहा न जाकर सबको यहा घसीटनेसे मुझे बहुत आघात पहुचा। इसलिए मोटर या बैलगाडी जो भी हो, मुझे समय पर भिजवा देना कि जिससे मैं वहा अधिकमे अधिक पौने दो बजे तक पहुच सकू। सबको बगले पर ही बुला लेना। अगर वहा न हो सके तो खुशीमे मगनवाडी ले जाना। चर्खा सघका सीधा या अटपटा जो काम हो उसे जहा तक हो सके तुम ही निबटा लेना, जिससे हम वहा अत्यन्त महत्वकी ही बाते कर सके।

[१७-९-१९३७] बापूके आशीर्वाद

: २६९ :

चि जमनालालजी,

तुम्हारा पत्र मिला। बहादुरजी आ सकते है।

श्रीमन्के बुखारके बारेमे मालूम हुआ। उसका बुखार खराब है। हठीला मालूम होता है। आज उसे देख आनेकी आशा रखता हू। सुबहकी प्रार्थनाके बाद यह लिख रहा हू। श्रीमन्की बीमारीके कारण शिक्षा परिषदको स्थगित करनेकी सूचना महादेव और किशोरलालने रखी। वह मेरे गले नही उतरी। सौ मनुष्योकी व्यवस्था करनेकी जिम्मेदारी तुम पर तो नही ही होनी चाहिए। पैसे तुम्हारे होगे यह मैं मान लेता हू। इसकी मुझे चिन्ता भी नही है। परन्तु मैं यह मानता हू कि कामकाजका बोझा तुम्हारी सहायताके बिना दूसरे लोग न उठा सके तो ऐसे काम करने ही नही चाहिए। अगर ऐसी शक्ति दूसरोमे भी आ जाये तभी काम शोभित होगे। इसी कारण मैंने आर्यनायकमको कहलवाया था कि उसकी अपनी श्रद्धा और लगन

हो तो ही परिषद भरने दे। नही तो भले ही स्थगित हो जाय। यह कल्पना ही श्रीमन्की थी और श्रीमन्के ऊपर ही मैने आधार रखा था। वह तन्दुरुस्त था तबतक मै निश्चिन्त था। उसके बारेमे मैने मान लिया था कि वह तो बीमार पडेगा ही नही। इस कारण जब उसकी बीमारीका सुना तो मै व्याकुल हो गया। तुम्हारी श्रीमन्की खोजको मैने अत्यत आश्चर्यजनक माना है। उसमे विद्वत्ता, प्रौढता और नम्रताका असाधारण मिश्रण है। उसकी गैरहाजिरीमें परिषद मुझे अटपटी लगेगी। परन्तु हाथमे लिये काम अधूरे नही रखे जाने चाहिए, इस न्यायसे और नायकमकी श्रद्धा कम न हो वहा तक और तुम्हारा विरोध न हो तो परिषद करनेका मैने आग्रह रखा है। मै मानता हू कि तुम्हारा विरोध सही जगह पर होगा। क्योकि तुम्हारी व्यवहार-बुद्धिके बारेमे मुझे श्रद्धा है। तुम्हारे बिना, तुम्हारे बगलेके बिना, परिषदका काम सागोपाग हो सकेगा या नही इसकी पूरी जानकारी तो तुमको ही होगी। इस कारण अगर तुम चाहते हो कि परिषद स्थगित रखनी चाहिए तो मुझे तुरन्त तारसे खबर देना, तो परिषद स्थगित कर दूगा।

तुम्हारी तबीयत ठीक होगी। सावित्रीका ठीक चल रहा होगा।

[१२-१०-१९३७] बापूके आशीर्वाद

: २८३ :

चि जमनालाल,

महादेवके नाम तुम्हारा पत्र देखा। तुम्हारी व्यथा समझ सकता हू। मै चाहता हू कि मेरा कदम उस व्यथाको, थोडे बहुत अशमे भी, कम करनेमे सहायक बने। मैने अखबारोके लिए एक लेख लिख तो रखा है, पर अभी छपाया नही। तुम्हारी सूचना विचारणीय तो है ही। मेरे स्वभावके अनुकूल दूसरी वस्तु है। ऐसी बाते जब मै प्रकट करता हू, तभी मुझे अधिक शाति मिलती है। तुम्हारे पत्रमे जो भय प्रकट किया गया है वह व्यावहारिक चीज है। विचार पूर्वक और धर्म समझकर जो कदम मै उठाऊ उस पर दृढ रहनेकी शक्ति मै खो बैठा हू ऐसा मुझे नही लगता। फिर भी छपानेकी जल्दी नही करूगा। वह स्थगित रहा तो भी जो लोग गुजराती नही समझते उनके लिए तो गुजराती जैसा वक्तव्य अग्रेजीमे होना ही चाहिए।

सावित्रीके पुत्र-जन्मके समाचार कल गोवर्धनदासके द्वारा मिल गये थे। लक्ष्मणप्रसादको पत्र लिख रहा हू।

[११-६-१९३८] बापूके आशीर्वाद

२८४

प्रिय जमनालालजी,

आपका पत्र बापूजीको पढा दिया था। उनका उत्तर इसके साथ है। आपको अब यहाकी परिस्थितिमे वाकिफ कराता हू। बापूके इस प्रस्तावका

मीराबहनको छोडकर और सब स्त्रियोने तीव्र विरोध किया है। राजकुमारीका विरोध तो सबसे अधिक तीव्र हैं। पुरुषोमे सुरेन्द्रजी, बलवतसिहजी जैसोने इसका स्वागत किया है। विरोधियोमे मुझ जैसे है। मैने तो अनेक कारणोसे विरोध करके नीचे लिखे अनुसार सूचना की थी

१ बापूको भी वह स्वतत्रता नही लेनी चाहिए जो दूसरे नही ले सकते। अगर बापूका यह सिद्धान्त तत्वत स्वीकार करे तो, बापूको अपने लिए तथा अपने तमाम साथियोके लिए, बहनोके तमाम व्यक्तिगत तथा एकातिक स्पर्श निषिद्ध मानने चाहिए।

२ जाहिरा तौर पर भी प्रत्येक अनावश्यक स्पर्श निषिद्ध मानना चाहिए।

इसके जवाबमे बापूका कहना है कि नैष्ठिक ब्रह्मचारीके अलावा और सबके लिए ये दो नियम पर्याप्त है। पर जिसे नैष्ठिक ब्रह्मचर्यका पालन करना है उसके लिए तो स्पर्शमात्र वर्ज्य होना चाहिए। मै यह चीज स्वीकार नही करता। पर यह तो मुझ जैसोके क्षेत्रसे बाहरकी बात है। मै तो इतना ही समझता हू कि अनेक बहने बापूके स्पर्शसे पवित्र हुई है और अपनी अनेक व्याधियोमे बापूसे आश्वासन प्राप्त कर सकी है। बापूको इस सेवासे बहनोको वचित नही रखना चाहिए।

इस प्रस्तावको समझानेवाला लबा लेख हरिजनके लिए पिछले हफ्ते बापूने लिखाया था, उसे मैने जोरदार कारण बताकर रोक दिया था। इस हफ्ते भी उसको रोकनेकी पूरी आशा है। फिर तो जो हो सो ठीक।

आपके पत्रसे मै जरा घबरा गया। बापू अमुक काम करे तो हमारा मार्ग सरल हो यह कहना मुझे कठिन लगा। जिसका जितना अधिकार उसका वैसा ही मार्ग। मै समझता हू कि मैने ऊपर जो मर्यादाये बताई है उन सबको हम सब साथी स्वीकार करके बापूको निश्चित कर दे तो बापूको कोई नया प्रस्ताव करनेकी बात नही रहेगी। इस चीजकी जाहिरा चर्चा करनेमे मै आज तो लाभके बजाय हानि ही अधिक देखता हू। अधिक क्या लिखू? सुशीला और प्यारेलाल दो दिन हुए यहा आये है। सुशीलाकी सेवा तो निषिद्ध नही मानी है। पर दूसरी बहनोको यह खटकता है। वे पूछती है कि हम उसकी अपेक्षा क्या कम पवित्र है? इन सरदीके दिनोमे भी ब्लड प्रेशर १८०/१०८ रहता है। इसे चिन्ताजनक तो मानना ही चाहिए। पर इस तरहकी चर्चाओमे जब चौबीसो घटे लगे रहते है, तब ब्लड प्रेशर कम कैसे हो सकता है?

१२-६-१९३८*] आपका महादेव

:२९३:

चि जमनालाल,

अभी अग्रेजीकी एक सुदर उक्ति देखी थी। उसका अर्थ यह है कि मनुष्य को अपने दोपोका चिन्तन न करके गुणोका करना चाहिए। क्योकि मनुष्य जैसा चिन्तन करता है वैसा बनता है। इसका अर्थ यह नही कि दोप देखे ही न। देखे तो जरूर लेकिन उनका विचार करके पागल न बने। ऐसा हमारे शास्त्रोमें भी मिलता है। इस कारण तुमको आत्मविश्वास रखकर यह निश्चय करना चाहिए कि तुम्हारे हाथो कल्याण ही होनेवाला है। हुआ तो है ही।

तुम्हारे लिए अतिलोभ छोडना उचित है। व्यक्तिगत व्यापार परोपकारके लिए भी खत्म कर देना चाहिए। खत्म न कर सको तो कडी मर्यादा निश्चित करनी चाहिए। राजनैतिक क्षेत्रसे भी निकलनेका प्रयत्न करना चाहिए। अगर उसमें रहना ही पडे और तुम अपनी ही शर्तो पर रह सकते हो तो केवल मध्यप्रान्तके सगठनका कार्य करो। पर तुम्हारा क्षेत्र तो पारमार्थिक व्यापार है। इसलिए तुम फिरसे चर्खा सघमें अपनी सारी शक्तिका उपयोग करो। यह काम तुम्हारी बुद्धि, तुम्हारी नीति और तुम्हारी व्यापार-शक्तिका पूरा उपयोग ले सकता है। राजनीतिमे बहुत गदगी होती रहती है। उसके अन्दर तुमको सन्तोप मिले इसकी कम ही सभावना है। चर्खा-सघ पूर्ण सफल हो जाय तो सहज ही पूर्ण स्वराज मिल सकता है। इसमें तुम कूद पडो, तो ग्राम-उद्योग, अस्पृश्यता-निवारण आदिमें भी थोडा बहुत ध्यान दे सकते हो। लेकिन वह तो तुम्हारी इच्छाके अनुसार ही। यह तो अतिलोभको रोकनेके लिए और तुमको मनके मुताबिक पूरा काम मिल सके इसके लिए सूचित कर दिया है।

दूसरी वस्तु विकार है। यह जरा कठिन है। मै अगर तुमको ठीक-ठीक समझा होऊ तो मै यह समझता हू कि तुमको स्त्री-परिचर्या रोकना उचित है। सब इसे पचा नही सकते। यह कह सकते है कि हमारे मडलमें स्त्री-परिचर्या करनेवाला अधिकाशमे मै अकेला हू। मेरी सफलता या असफलताका निर्णय मेरी मृत्युके बाद ही निकल सकेगा। मेरे लिए तो यह प्रयोग ही है। मै स्वय भी दावेके साथ नही कह सकता कि मै सफल ही हुआ हू। मेरी कामना शुकदेवजीकी स्थितिको पहुचनेकी है। उस स्थितिसे मै कई योजन दूर हू। अगर तुमको आत्मविश्वास हो तो मुझे कुछ कहना ही नही है। लेकिन अगर न हो और मेरा समझना ठीक हो तो तुमको गहरे उतरकर उचित परिवर्तन करना चाहिए। इसमे स्त्री-सेवा छोडनेकी बात नही है।

इनमेंसे एक भी चीजकी प्रतिध्वनि तुम्हारे हृदयमे न हो तो कुछ करना नही है। विचारोका आदान-प्रदान करना। निराशाको कही भी स्थान

नहीं है। तुम पतित नहीं हो, सत्यनिष्ठ हो। सत्यनिष्ठका पतन सभव ही नही।

२६-१२-१९३८] बापूके आशीर्वाद

: ३२४ :

चि जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला था। तुम और ५० वर्ष पूरे करो और तुम्हारी शुभेच्छायें परिपूर्ण हो। निराश विलकुल मत होना। शान्तिसे वहा तबीयत सुधारो। यहा ठीक चल रहा है। कमलनयन लबी बाते कर गया था। रामकृष्णका मन अभ्यासमें लग गया मालूम होता है। ओम् मजे करती है। श्रीमन्‌का तो पूछना ही क्या! अपने कर्तव्यमें परायण रहता है। राजाजी आज आये है। एंडरूज यही है। आज डा जाकिर हुसेन आ रहे है।

३-१२-१९३९] बापूके आशीर्वाद

: ३३१ :

चि जमनालाल,

तुम्हारा पत्र और तार मिले। शास्त्रीजीसे बाते की।

तुम्हारी वहाकी मियाद पूरी होने तक जयपुर जानेकी बिलकुल जरूरत नहीं है। फिर मेरा दिल्लीका काम निबटा नहीं है, तब तक जानेकी कोई बात है ही नही। इसलिए १५ तक सहज ही पहुच जाते है। फिर कितने दिन बाकी रहते है? तबीयत ठीक करना भी धर्म है यह समझना जरूरी है। तुम्हारा मसविदा ठीक नहीं मालूम होता। तुमको कोई फरियाद करनी हो तो वह महाराजासे ही करनी है। उसे बीचमें लानेमें कोई सार नहीं समझता। तुम जब घूमने-फिरने लग जाओगे तब उनसे खुद जाकर मिल सकते हो। फिर जो होना हो सो हो।

वाइसरायके साथ जितनी गहराईमे तुम चाहते हो उतना मैं नहीं जा सकता। मूल बातके साथ जितना मेल हो उतने तक ही मैं जा सकता हू। तुम्हारे मिलनेके बारेमें मेरे दिल्लीसे लौटनेके बाद विचार करेंगे।

मैं समझता हू कि इसमें सब उत्तर आ जाते है। बाकी शास्त्रीजी बतावेगे। जानकीदेवी और मदालसा मजेमे होगे।

१-२-१९४०] बापूके आशीर्वाद

: ३४४ :

चि जमनालाल,

तुम्हारा जयपुरवाला आज ही पढा। हरिजनके लिए लिखने बैठा पर विचार किया कि अभी न लिखू। यह सोचकर छोड दिया कि लिखनेसे तुम अधिक निगाहमे चढ जाओगे। लेकिन तुम समझते हो कि मेरे लिखनेसे लाभ

ही होगा तो मैं लिखनेको तैयार हूं। तुम्हारी और राजेन्द्रबाबूकी तबीयत कैसी है? मैं शिमला जा रहा हूं। रविवार या सोमवारको सेवाग्राम लौटूंगा।

वहांका काम तुम्हारे संतोषके लायक चल रहा होगा।

२५-९-१९४०] बापूके आशीर्वाद

: ३४६ :

चि जमनालाल,

मेरा जी तुममें ही लगा रहेगा। वहां इच्छित लाभ मिले तो मुझे बहुत शांति मिलेगी। अधिक आधार तो राजकुमारीके निर्मल प्रेमके ऊपर है। लेकिन तुम्हारी मानसिक दृढ़ताका भी भाग उसमें होगा ही। खानेमें या और किसीमें कुछ परिवर्तन करना हो तो मुझे लिखना या तार देना।

मदालसा आज मीराबहनके पास रह गई है। उसकी भावनायें तो बहुत ऊंची है। उसका शरीर ठीक हो जाय और प्रसूति निर्विघ्न हो जाय तो मैं मानता हूं कि वह जरूर चमकेगी। विनोबाका शिक्षण सफल होना चाहिए।

१६-७-१९४१] बापूके आशीर्वाद

: ३५९ :

चि जमनालाल,

इसके साथ शांताका पत्र है। वहां पहुंचते-पहुंचते अक्षर अस्पष्ट हो जायें और न पढ़े जायें तो पढ़नेकी तकलीफ मत उठाना। उसका सार मैंने आज तारमें दिया है। शांताको इच्छा भी नहीं है और अनिच्छा भी नहीं है। वह तो तुम्हारे अंदर समा गई है। अर्थात् जो तुम्हारी इच्छा वह उसकी इच्छा। यह है भी ठीक। इस कारण प्रश्न केवल उसके हितका रहता है। तुम वहां बहुत अधिक समय रहनेवाले हो तो शांता वहां जाकर कुछ प्राप्त भी कर सकती है। मेरी निगाहमें तो उसे वहां तुम्हारी अनुपस्थितिमें रहना चाहिए। शायद उसे वहां रहनेकी जरूरत भी न हो। भक्ति तो उसमें है। अब यह विचारणीय है कि वहांका वातावरण उसे सक्रिय बनाता है या नहीं। वह इस जन्ममें तो दूसरा गुरु बनानेवाली है नहीं। उसके गुरु तो तुम ही हो, इस कारण तुमको तो उसे आज्ञा ही देनी है। इस पत्र-व्यवहारमें ही तुम्हारा वहां रहनेका समय पूरा हो जायगा। अगर तुमको वहां शांति मिलती हो और जो चाहते हो वह मिल जाता हो तो वहांसे हटना नहीं। अगर वहां रहनेका निश्चय करो या और कुछ तय करो, पर शांताकी वहां उपस्थिति चाहते हो तो तार देना, उसे रवाना कर दूंगा। तुम्हारे तारमें विचारके लिए अवकाश था। इस कारण ही तार भेजा और जवाब मंगाया। महेश और शांता दोनोंके विषयमें विचार करनेकी बात तो थी ही। मैंने ऐसा अर्थ किया

कि दोनोको उनकी खातिर बुलाया गया है, तुम्हारी सेवाकी खातिर नही। अगर बुलानेका हेतु सेवा ही हो तो जुदा विचार करना उचित है।

आज सरदारके कोई खास समाचार नहीं है। कलका पत्र मिला होगा। मदालसा मजेमें है।

२५-८-१९४१] बापूके आशीर्वाद

: ३६८ :

चि जमनालाल,

भाई जुगलकिशोरके पत्रके अनुसार उनसे चर्खा सघ द्वारा काम लेना। कागडामे जितना हो सके उतना पैसा तो अवश्य खर्च करेगे, यही बात पिलानीके बारेमें।

मेरे विचारसे तो ए आई सी सी की बैठक वर्धामें हो यही ठीक होगा। तुमको भी ठीक लगे तो तारसे निमत्रण भेज देना। बैठक मेरे आनेकी तारीखके बाद और १९वी तारीखसे पहले हो जानी चाहिए।

इदु यहा आई है।

मदालसा ठीक होगी। बच्चा बराबर बढ रहा होगा।

मुझे चर्खा सघमें तुम्हारी अनुपस्थिति बहुत महसूस हुई और अब वर्किंग कमेटीमे भी मालूम होगी। पर तुमसे आग्रह न करनेमें ही मैंने श्रेय समझा है।

मेरी तबीयत ठीक रहती है। तुम्हारी ठीक होगी।

२७ जनवरीके बाद गो-सेवा-सघकी सभा रख सकते है।

जानकीमैया आ गई? तबीयत बिगाडी तो नही न?

२१-१२-१९४१] बापूके आशीर्वाद

३७९

चि जानकीबहन,

ईश्वरकी कृपा होगी तो तुम्हारी खबर लेनेके लिए तीसरी तारीखको पहुच रहा हू। 'कृपा' तो भूलसे लिख गया। ईश्वरकी तो हमेशा कृपा ही होती है। हम उस कृपाको न पहचान सके यह हमारी मूर्खता है। पर उसकी इच्छाके तो हम अपनी इच्छा या अनिच्छासे अधीन है ही। अर्थात् उसकी इच्छा होगी तो तीसरीको मिलेगे। मदालसा और ओम् वहा होगी यह ठीक है। सावित्रीकी अनुपस्थिति खलेगी। कमलाका तो कहना ही क्या? वह तो बहुत जजाली है। अब और नाम भरने लगूगा तो दूसरी चिट लेनी पडेगी और फिर वक्त?

३१-७-१९४४] बापूके आशीर्वाद

२. भाग २ के पत्रोंका अनुवाद

: ६ :

चि राधाकिसन,

एक पत्र महिलाश्रमके विषयमें लिखा है वह मिला होगा। जमनालालसे मिलता रहता हू। उनकी तबीयत ठीक रहती है। कल सुना कि लक्ष्मीनारायण मदिरमे दर्शन करने आनेवालोकी सख्या घट गई है। क्या यह ठीक है? हाजिरीका कोई हिसाब रखा जाता है? हरिजनोके लिए खोले गये दूसरे मदिरोके विषयमे भी जानकारी ले लेना।

२८-१-१९३३] बापू

: १५ :

प्रिय रामेश्वरदासजी,

वदे। एक भाईने गुडके पृथक्करणका ब्योरा भेजा है वह इसके साथ भेजता हू। पू बापूजीने कहलाया है कि आप अपने विशेषज्ञसे पूछ देखें कि यह ठीक है या नही? उसका quantitative पृथक्करण हुआ है या हो सकता है क्या? भिन्न-भिन्न प्रकारके नमूने प्राप्त करके उसका quantitative पृथक्करण हो सकता हो तो निकालकर उसकी रिपोर्ट भेज सको तो ठीक।

इस सबधमे देशी तथा मिलकी सबसे शुद्ध शक्करमें, इसी तरह, शुद्ध और अशुद्ध शक्करोमे क्या अन्तर होता है यह भी जाननेकी इच्छा है।

शक्कर बनानेके बाद जो molasses (इसका देशी शब्द क्या है?) बच रहता है उसमें क्या पदार्थ रहते हैं?

Glucose और fructose बनानेकी कोई घरेलू या काम चलाऊ पद्धति है? उसके लिए क्या क्रिया करनी पडती है?

यदि ये सब बाते किन्ही पुस्तकोमे मिलती हो तो उनके नाम भी लिखें। आप कुशल होगे। यहा सब मजेमें ह।

६-१२-१९३४] तुम्हारा किशोरलालके वदेमातरम्

: २० :

चि कमलनयन,

तेरे अक्षर सुन्दर तो लगते है लेकिन स्पष्ट नही है। 'द' और 'ह' एक जैसे होते हैं। 'अच्छा' मे 'अ' अधूरा है। और 'च्छा' मे 'च' अलग पड गया है और 'ट' पढा जाता है। 'छा' 'ध्य' पढा जाता है।

: २८ :

चि कमलनयन,

पिताजीका भेजा अग्रेजी पत्र कल मिला और उसका जवाब भी भेज दिया। तेरा पत्र आज मिला।

मैंने यह सलाह दी है कि तुम्हे हिन्दीमे उत्तमा परीक्षा देनी चाहिए और अग्रेजी पर अच्छा अधिकार प्राप्त कर लेना चाहिए। इस प्रकार तुम परिपक्व हो जाओ और अभ्यासी बन जाओ। उसके बाद फिर पश्चिमकी तरफ जाओ तो पूरा लाभ उठा सकोगे। जब जानेका समय आवे तो मेरी सिफारिश है कि पहले अमेरिका जाओ। उसके बाद इग्लैंड और फिर यूरोपके दूसरे प्रदेश। अन्तमे जापान और चीन।

यह मुझे अच्छा लगता है कि तुम्हे परीक्षाका लोभ नही है। अमेरिकामे तुम एक साल रहकर सूक्ष्म अनुभव प्राप्त करो, अग्रेजीका अभ्यास बढाओ, और फिर दूसरी जगह इच्छानुसार रहो। सब मिलाकर बाहर दो वर्ष रहो। इस प्रकार तुम्हे खूब अनुभव मिल जायगा और अपना भविष्य बना सकोगे। इस विचारमे अनुभवके आधार पर जो परिवर्तन करना पडे वह किया जा सकता है। मुख्य बात यह है कि तुरत तो पश्चिमकी ओर जानेका विचार छोडना चाहिए। हिन्दी पूर्ण करने और अग्रेजी पक्की करनेके लिए मै चार वर्ष जरूरी समझता हू। हिन्दीके लिए ही सस्कृत अभ्यासकी आवश्यकता भी जरूरी समझता हू। चार वर्ष तक राह देखना मै अधिक नही समझता। रामकृष्णको आशीर्वाद। उसे सभालते होगे।

फरवरी, १९३४] बापूके आशीर्वाद

: २९ :

चि कमल,

१ कम बोलना।

२ सबकी सुनना लेकिन शुद्ध हो वही करना।

३ हर मिनिटका हिसाब रखना और जिस क्षणका काम उसी क्षण करना।

४ गरीबके समान रहना। धनका अभिमान कभी मत करना।

५ पाई-पाईका हिसाब रखना।

६ अभ्यास ध्यानपूर्वक करना।

७ इसी प्रकार कसरत करना।

८. मिताहारी रहना।

९ डायरी लिखना।

१० बुद्धिकी तीव्रताकी अपेक्षा हृदयका बल करोडो गुना कीमती है, अत उसका विकास करना। उसके विकासके लिए गीताका, तुलसीदासका मनन आवश्यक है। भजनावली रोज पढना। प्रार्थना रोज दोनो समय करना।

११ अब सगाई की है तो तू छूटनेसे बच गया है। मनको दूसरी स्त्रीकी तरफ कभी न जाने देना।

१२ मुझे अपने कार्यके हिसाबका एक पत्र हर हफ्ते लिखा करेगा तो तेरा कल्याण है।

३-६-१९३५ बापूके आशीर्वाद

: ३३ :

चि कमलनयन,

पिताजीसे सुना कि – + अब तुमसे शादी नही करना चाहती, इस कारण कल उसे मुक्ति दे दी। हमें यही शोभा देना है। तुम स्वस्थ होगे। तेरे नसीब अच्छे ही है। इस कारण तुम्हे योग्य स्त्री ही मिलेगी। अभी तो तुम अपने अध्ययन और अपने चरित्रके गठनकी तरफ ही सब कुछ छोडछाड कर लग जाओ। मुझे पत्र लिखना तो बाकी है ही। अपनी अंग्रेजीका सुधार करना। रसपूर्वक अध्ययन करना, शरीर मजबूत बनाना। मजदूरी करनेमें आलस्य मत करना। उसमें शरमकी तो बात ही क्या है ?

[१६-७-१९३५] बापूके आशीर्वाद

: ३९ :

चि कमलनयन,

तुम्हारा पत्र देरीसे ही सही, पर मिला यह ठीक हुआ।

अरे रामजपन भी अचूक करेगा तो तेरा भला ही होगा।

वहा तू हाथ कागज इस्तेमाल नही कर सकता इसकी चिन्ता नही। इसके लिए तेरे अन्दर उत्साह और गरीबोंके प्रति अत्यन्त अनुकंपा होनी चाहिए। यह तुम्हारे स्वभावमें पैदा हो जाय तब अपने आप तुम यह सब कर लोगे। जो वस्तु तुम अपने मनके उत्साहसे करोगे वही ठीक है, वही तुम्हे फलेगी।

तुम वहा बैठे-बैठे ब्रिटिश और अन्य विदेशीके भेदमें मत पडना।

कपडेके बारेमें भी एक बात कह दू। वहा खादीका आग्रह स्वेच्छासे नहीं रख सकते हो तो उसे छोड देना। जिसमें तुम्हे सुविधा हो वह पोशाक पहनना और जिसकी सुविधा हो उस कपडेकी बनाना। मै समझता हू कि इनमें तुम्हारे सारे प्रश्नोका उत्तर आ जाता है।

अर्थात् विदेशी या मिलके कपडेका ओवरकोट पहन सकते हो। मोजे पहन सकते हो, कसरतका बनियान पहन सकते हो। ये सब चीजे हाथकी ही प्राप्त करनेका प्रयत्न करना बुरा नहीं है। लेकिन ऐसा न करो तो पाप नही माना जायगा।

वहा तुम्हारा मुख्य काम अपना अध्ययन पक्का करना है। निर्भयता, वीरता, दृढता, उद्यम, उदारता, दया, प्रेम इन सबका विकास करना है।

सादगी और नम्रता जरूरी है। रहाके जीवनका निरीक्षण करना। क्षण-क्षणका सदुपयोग करना। डायरी लिखना।

तेरा पत्र लौटाता हू।

कोई बात रह जाती हो तो पूछ लेना।

४-९-१९३५] बापूके आशीर्वाद

: ४० :

चि कमलनयन,

इनके साथ तीन पत्र भेजता हू। ये तीरका काम करेंगे। वुडब्रुक बरमिंघममें है। यह अच्छी संस्था है। उनके सपर्कमें जल्दी ही आ जाना। यह लिखते-लिखते लगा कि प्रोफेसर होरेस एलेक्जडरको भी पत्र भेजू, अर्थात् चार पत्र हो गये। वे वुडब्रुकके है। मुझे नियमित रूपसे लिखना। सुनना सबकी लेकिन करना अपने मनकी और तुमसे जो आशाये बधती जाती है उनके अनुसार ही। वहाके प्रलोभनोकी सीमा नही है। अपना नाम शोभित करना और उसके गुण याद करके 'कमल'के समान कीचडमें रहकर भी अलिप्त रहना। इसमें सब कुछ कुशल ही होगा। अपनी शक्तिके अनुसार ही डुबकिया लगाना। किसीकी प्रतिस्पर्धा मत करना। प्रत्येक क्षणका सदुपयोग करेगा तो तेरी शक्तिया जितनी विकसित होनी होगी, हो जायेंगी। रामायण और गीताका गहरा अभ्यास करना। रोज अध्ययन करना। मूल गीता तो पढोगे ही, लेकिन एडविन अरनोल्डका 'Song Celestial' भी पास रखना।

६-७-१९३६] बापूके आशीर्वाद

: ४३ :

१ चार वर्ष, अथवा कमलनयनका अध्ययन पूरा हो तबतक, विवाह न करना।

२ सावित्रीको अब जो शिक्षा लेनी हो वह हिन्दुस्तानमें ही ले। विवाहके बाद दोनो प्रवासके लिए या और कोई कामसे जहा इच्छा हो जायें।

३ कमलनयन—सावित्रीके बीच पत्र-व्यवहारकी खुली छूट होनी चाहिए। पत्र खानगी होनेकी जरूरत नही समझता।

४ सावित्रीको विवाहसे पहले भी समय-समय पर वर्धा या जानकीबहन वगैरा जहा हो आते-जाते रहना चाहिए।

१९३६] बापू

: ४४ .

चि कमलनयन,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम गहरे उतर रहे हो और यहा सब तुम्हे जल्दी बुलानेकी बात कर रहे है। तुम्हारे ससुर भी जल्दी मचा रहे है। जानकीबहनकी भी यही इच्छा है। पिताजीका भी लगभग यही अभिप्राय है। मै खुद तटस्थ हू। यद्यपि मै नही मानता कि तुम वहासे बहुत कुछ ले आनेवाले हो, परन्तु जबतक वहा रहनेका मोह हो तबतक तुम्हे यहा बुलाना मुझे ठीक नही लगता। अगर तुम्हे व्यापारमे लगना हो तो डिग्रीका मोह छोडना चाहिए। बैरिस्टर होकर क्या करोगे? ग्रेज्युएट होकर क्या करोगे? जहा तक मै तुम्हे समझता हू तुम्हे कमाई करनी है, पिताके धन पर नही रहना। साधू भी नही बनना है। यह ठीक हो तो व्यापारमे ही तुम्हारा पुरुषार्थ है। इतना स्वीकार करो तो तुम बैरिस्टरी अथवा डिग्रीका लोभ छोडो। तुम्हारी अग्रेजी अब ठीक-ठीक हो जानी चाहिए। परन्तु अगर तुम्हे डिग्री लेनी ही हो, कैम्ब्रिज या ऑक्सफोर्डमे रहना हो, तो दीनबन्धु एडरूजसे मिलना। ऑक्सफोर्ड या कैम्ब्रिजमे मै जिन्हे जानता हू उन्हे एडरूजके द्वारा ही पहचानता हू। इसलिए तुम उनसे मिल लो। वह तुम्हारी उचित व्यवस्था करा देगे। वे कैम्ब्रिजमे रहते है। उन्हे तो तुम पहचानते ही हो। फिर भी मै उनको लिखता हू। इसलिए जब तुम उनको लिखोगे तब उन्हे याद आ जायेगी। उनका पता पेमब्रोक कालेज, मास्टर्स लॉज, कैम्ब्रिज है। जो कुछ करो पूर्ण विचार करके करना। मुझे लिखते रहना। लिखनेमे तुम कुछ आलस्य करते मालूम होते हो।

२६-२-१९३७] बापूके आशीर्वाद

: ४८ :

चि कमलनयन,

मै जाऊ तब तक तुम यहा नही पहुचोगे ऐसा समझ कर यह पत्र लिख रहा हू। तुम्हे मालूम होना चाहिए कि नागपुर बैंक जमनालालजीकी है, उन्होने इसे परोपकारके लिए खोली थी। गरीबोके लिए यह सेविंग्स बैंक बन सके, यह उनकी कल्पना थी और आज भी यही होनी चाहिए। इसलिए यह बैंक टूटनी नही चाहिए। यानी बैंक ऑफ इग्लैंड, इम्पीरियल बैंक जब टूटे और यहा कोई उल्कापात हो तो ही नागपुर बैंक टूटे, अर्थात् वह अन्तमे टूटे शुरूमे नही। उसकी ऐसी साख बन जानी चाहिए। तुम जमनालालजीके वारिस हो। उसका सच्चा अर्थ तो यही है कि तुम उस साखके वारिस हो और यह समझकर ही मैने जलियावाला ट्रस्टको सलाह दी कि वहाके पैसे वही रखे और अधिक भेजनेकी चेष्टा करे। यही सलाह मैने कुमारप्पाको दी है कि ग्रामोद्योगके पैसे वही रखे। यह विश्वास गलत साबित नही होना

चाहिए। फिर भी कल आते ही स्टेशनके ऊपर मुझे भारतनने दूसरी ही बात बताई। उसने तो प्रेमपूर्वक बात की और मैं उसका प्रमुख हू इस हैसियतसे उसने पूछा। कुमारप्पाने मुझे पूछा था कि * * बैंकमे ग्रामोद्योगके पैसे रखें या नही? वैकुठभाईने यह सलाह दी थी इसलिए उन्होंने यह मान लिया था कि मैं स्वीकार कर ही लूगा। परन्तु मैंने तो शका उठाई और स्वीकार नही किया। और कुमारप्पा उस बैंकमे पैसे जमा करा चुके थे। लेकिन अब वहासे पैसे वापस निकाल ही लेने चाहिए। पर उस हालतमें व्याज खोना पडेगा। व्याज खोते हुए भी न निकाल सके तो? इसलिए भारतनने मेरी सलाह मागी। कुमारप्पा अभी यहा नही हैं। परन्तु मैंने कहा कि अगर वे लोग आपत्ति करे तो झगडा करके भी पैसे निकाल ही लेने चाहिए। नही तो मैं मानूगा कि वह रकम जोखिममें है। और यह बाघरीके लिए भैंसको मारने जैसा होगा। * * बैंककी स्थिति क्या है, यह तो मैं आज भी ठीकसे नही जानता। अस्पष्ट खयाल जरूर है। नई बैंकोंके प्रति मेरे मनमें अरुचि और अविश्वास है। इसलिए जल्दीमे उनमे पैसा रखनेके लिए मैं तैयार होता ही नही। फिर सवाल यह पैदा हुआ कि * * बैंकमें नही रखते तो नागपुर बैंकमे क्यो? अपेक्षाकृत वह भी नई ही कहलायेगी न? यह भी एक प्रकारसे सच ही है और भारतनने साथ ही यह भी कहा कि नागपुर बैंकके तो एक दो महीनेमे ही बद होनेकी बात सुनी जा रही है। कारण कि उसे नुकसान हुआ है और लोगोंके पैसे डूबनेका अन्देशा है, इसलिए पहलेसे ही क्यो न निपटा ले। मैंने यह बात नही मानी और मनमें दृढ रहा। पर इस अफवाहका मूल जाननेकी इच्छा हुई। उस समय राधाकृष्ण पास था। उससे मैंने पूछा। उसने मुझे समझाया। मुझे धीरज आई और मैंने भारतनसे कहा कि पैसे नागपुर बैंकमे ही रखने हैं। फिर भी मुझे लगा कि मुझे तुमको यह बात बतानी चाहिए इसलिए यह पत्र लिखा है। तुम विचार करना और सावधान रहना। जमनालालका वारिस होना कोई ऐसी वैसी बात नही है। तुम उनके पुत्रके तौरसे वारिस हो। मैं उनके दत्तक यानी माने हुए पिताके रूपमें वारिस हू। मेरा स्वार्थ, उनका नाम अखडित रहे इसमें है। उनका उठाया हुआ काम किसी प्रकार चलता रहे, इतना ही नही, परन्तु अधिक शोभित हो तभी तुम और मैं उनके सच्चे वारिस माने जायेंगे।

तुम पैसे कमाओगे और बडे सेठ माने जाओगे यह सभव है। परन्तु उनके उत्तर जीवनके पारमार्थिक कामका क्या होगा, उत्तर जीवनमें खोली गई बैंकका क्या होगा? गरीब गायका क्या, खादीका क्या, ग्रामोद्योगका क्या? उनकी इच्छासे मैं वर्धामे आकर बसा हू ना—वह भी सरदारका मीठा क्रोध सहकर। वे मुझे एककी जगह दस वर्गीचे विना परिश्रमके दिला सकते थे। लेकिन वे जमनालाल नही दिला सकते थे। इसलिए मैंने दस

बगीचे छोड दिये। परन्तु अब मैं जमनालालको खो बैठा हू, ऐसा जरा भी आभास अपने मनमें नही होने देना चाहता। उसकी कुजी तुम्हारे हाथमें है, राधाकृष्णके हाथमें है, और जानकीदेवीके हाथमें है। जानकीदेवी तो निरक्षर है। और उनमे जिस विकासकी मैंने आशा रखी थी वह तो जमनालालजीके जानेके बाद सून ही गई। इस कारण बैंकके सबधमें मैं उसे समझा भी नही सकता। समझानेकी जरा कोशिश भी नही की। राधाकृष्ण बहुत चतुर है। वह गुना है परन्तु पढा-लिखा तो नही ही कहलायेगा न? तुम तो विलायत हो आये हो। व्यापारीके रूपमें थोडा बहुत नाम भी कमाया है। तुम्हारे अन्दर आत्मविश्वास तो आवश्यकतासे अधिक है। जो भी हो वारिसके तौर पर और गद्दीनशीन होनेकी हैसियतसे तो मुझे तुम्हारी ओर ही देखना होगा। इसलिए कहता हू कि तुम अपने पिताका नाम परोपकारीके रूपमें उज्वल करनेके लिए मर मिटना। ऐसा करनेकी शक्ति तुम अपनेमें न समझते हो तो नम्रतापूर्वक मुझे चेतावनी दे देना। सब लडके अपने परोपकारी पिताके पीछे पीछे भला कहा चल सकते या चलते भी है? इस कारण तुम यह न करो तो कोई तुम्हारी ओर उगली नही उठा सकता। फिर मैं तो उगली उठानेवाला कौन होता हू? परन्तु दादाकी हैसियतसे तुझे सलाह तो दू, चेतावनी तो दू। फिर तुम जो कुछ करोगे उसे चुपचाप स्वीकार कर लूगा। इसमें तो मैंने तुमको बहुत कुछ लिख दिया है। उस पर पुख्ता विचार करना। और नागपुर बैंकके सबधमें मैंने भारतनको जो सलाह दी है वह ठीक है या नही, इसका जवाब तो मुझे पहुचा ही देना।

२२-११-१९४५] बापूके आशीर्वाद

: ८५ :

चि मदालसा,

अभिमान खराब अर्थमें प्रयुक्त होता है, स्वाभिमान अच्छे अर्थमें। तुम बडे आदमीकी लडकी हो यह समझकर फूल जाओ तो तुम अभिमानी कहलाओगी। परन्तु कोई तुम्हारा अपमान करे और उससे तुम डरो नही तो यह माना जायगा कि तुमने अपने स्वाभिमान या स्वमानकी रक्षा की। ओम् पत्र क्यो नही लिखती?

कमला तो लिखेगी ही क्यो?

बाबू अब तो बहुत बडा हो गया होगा। अभी भी उसे मिठाई बहुत चाहिए क्या?

पत्र लिखनेमें आलस्य न करना। बालकृष्णसे लिखनेको कहना।

१७-७-१९३२] बापू

: ८६ :

चि मदालसा,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम भले ही मानो कि तुम्हारे अदर ईर्ष्या, अभिमान वगैरा भरे पडे है, पर मै नही मानता। ये दोष तुमने कहासे लिये होगे? जमनालालमें तो ये है ही नही, जानकीबहनमे भी नही है। न तुमको कोई कुसग हुआ, न तुम्हे किसी प्रकारकी कोई कमी है। क्रोध है यह तो मै भी देखता था। वह जानकीबहनमें भी है। फिर तुम्हारा शरीर भी कमजोर है। लेकिन तुम समझदार हो, इस कारण विचारपूर्वक इस क्रोधको निकाल डालो। जैसे हम है वैसे ही सब है। सबमे एक ही जीव आत्मा है। इसलिए किसी और पर क्रोध करना अपने ऊपर ही क्रोध करनेके समान है। और जिसके अन्दर जीवमात्रकी सेवा-वृत्तिकी लगन पैदा होती है उसमें दोष रह ही नही सकते। तुम अपनी सेवा-वृत्ति बढाना।

मुझे नियमित रूपसे लिखो तो ठीक।

२०-८-१९३२] बापूके आशीर्वाद

: ८७ :

चि॰ मदालसा,

तुम्हारे अक्षर तो बहुत सुधरते जा रहे है। तुम्हारा वाचनक्रम भी अच्छा है। शक्तिसे ज्यादा मेहनत मत करना। शरीर बिगाडकर अध्ययन करनेसे दोनो बिगडेंगे। यह तुम जानती हो कि क्रोध बुरा है, अत धीरे-धीरे वह निकल ही जायगा। इसी प्रकार अभिमानका समझो। चलते-फिरते रोना आ जाता है। यह कमजोरीका लक्षण है। तुम अगर खेल कूदमे लग जाओ तो रोना बद हो जायगा। जरा भी रोने जैसा मालूम हो कि ऊचे स्वरसे गीतापाठ करने लग जाओ तो रोना सूझेगा ही नही। यह करके देखना।

तुम कैसे कहती हो कि मदिरमे रातदिन कोई नही रहता? मदिरके पुजारी तो रहते ही है।

२२-११-१९३२] बापूके आशीर्वाद

: ८८ :

चि मदालसा,

मालूम होता है कि तुम्हारी गाडी ठीक चल रही है। यही क्रम रहा तो थोडे ही समयमें तुम्हारा क्रोध और रुदन शात हो जायगा। जो खुराक लेती हो वह हजम हो जाती हो तो ठीक है।

जो प्रश्न तुम्हारे मनमें उठते है वे सब जिज्ञासुको उठते है। वाचन और विचारसे ये हल हो जाते है। जगत हम ही है। हम उसके अदर है, वह हमारे अदर है। ईश्वर भी हमारे अदर है। हमारे अदर हवा भरी हुई है, यह हम

आखोंसे तो नहीं देखते, लेकिन उसे जाननेकी इन्द्रिय हमारे पास है। ईश्वरको जाननेकी इद्रियका विकास किया जा सकता है। उसका विकास करले तो उसे भी पहचान लेगे। यह तुम्हे विनोबा सिखा रहे है। धीरज रखना।

जानकीमैयासे कहना कि जमनालालसे अकसर मिलता हू। तबीयत अच्छी है।

११-१-१९३३] बापू

: ९० :

चि मदालसा,

तुम्हारा पत्र मिला। यह डर नहीं रखना चाहिए कि विनोबाके लिए तुम भाररूप हो जाओगी। शिक्षकका कार्य है कि वह शिष्यकी अपूर्णताओंको दूर करे। अगर तुम सपूर्ण होतीं तो तुम्हे शिक्षककी मददकी क्या जरूरत रहती?

वाल काट डालनेका इतना डर क्यो? बाल तो घासके समान उगते ही रहते है। यह मैंने देखा है कि बहुतसी लडकियोंके बाल काट डाले और बादमें वे पहलेसे भी ज्यादा लबे हो गये। इस कारण बालोंका मोह न हो तो उनको काट डालो। पोशाकमे चड्डीके अलावा और कोई दूसरा परिवर्तन करनेकी जरूरत नहीं। तुम्हारे समान बालिकाका पोशाक सहज ही सहूलियत-वाला बनाया जा सकता है। पर अब तो हम थोडे समयमें ही मिलेगे।

९-९-१९३३] बापूके आशीर्वाद

: ९९ :

चि मदालसा,

तुमने छोटा पर सुन्दर पत्र लिखा है। जानकीबहनका भय छोड दिया, यह ठीक किया। खूब आनन्दमें रहकर अपना शरीर अच्छा बनाना। श्रीमन् जैसा पति पाकर तुम्हे उनको और जमनालालको शोभित करना है। अनेक पुण्य करने पर ही श्रीमन् जैसा पति मिलता है। ईश्वर तुम्हे जल्दी अच्छा करे।

३-१२-१९३९] बापूके आशीर्वाद

: १०८ :

चि मदालसा,

तेरे बारेमें सोचता ही रहता हू इस कारण मुझे, जिसे कि सपने शायद ही कभी आते है, तुम्हारे बारेमें आया। इस वजहसे लिखनेको प्रेरित हुआ हू। सपना तीन दिन पहले आया। पर लिखनेका समय आज ही मिला है।

बालकको पेटमें रखते हुए जितनी सावधानी रखनी पडती है उतनी ही उसका पालन-पोषण करनेमें। तुम्हारे दूधका गुण तुम्हारी खुराक और तुम्हारे रहन-सहनके ऊपर आधारित है। जैसे तुम्हारी खुराकका असर तुम्हारे दूध पर पडता है उसी प्रकार तुम्हारे स्वभाव और विचारका भी। यह बात

अनुभवसे लिखता हू इसलिए इसे मानना। अत जो कुछ तुम खाओ औपधि समझकर खाना। स्वादके लिए नही। औपधिमेंसे जो स्वाद निकलता है वह सच्चा स्वाद है और पोपक है। औपधिको रूढ अर्थमे लेकर उसकी घिन न रखना। दूध औपधिके रूपमे लिया जा सकता है और स्वादके लिए भी। एकसे शरीर वढता है, दूसरेमे घटता है। वालकको कसरत, हवा, मालिश वगैरा वरावर मिलनी चाहिए। इस सववमें किसीकी वात न सुनना। लाड़-प्यार करनेवाले तो वहुत आ जायेगे, लेकिन कुछ भी हो तुम अपने मनके मुताविक करती रहना।

मेरे सपनेका मतलव पूरा हुआ। तुम मजेमे होगी। वालक वढ रहा होगा। मा वेटी झगडती नही होगी, तुम रोती भी नही होगी। खटिया छोडनेके वाद तुम कुछ महीने यहा रह जाओ तो शायद अच्छा हो।

१५-१०-१९४१] वापूके आशीर्वाद

: ११४ :

चि मदु,

तू पागल है और पागल ही रहेगी क्या? जल्दीसे जल्दी यहा आ जा। रहनेके लिए नही पर मिलनेके लिए तो सही। फिर जितना तुम्हारे दिलमें हो सव उडेल देना और जी भरकर रो लेना। तुम्हे रोनेका इतना सुन्दर मौका दे रहा हू इसलिए वहा रोना वद रखना। वाको जो नियम वताये है उनका पालन करती रहना तो सदा सुखी रहेगी।

तुम दोनोको

२१-११-१९४१] वापूके आशीर्वाद

: ११५ :

चि मदालसा,

सुरेन्द्रनारायणकी वात जानकर दुख हुआ। अभी तो सादी खुराक ही ले रहे होगे। दूध, दही, फलोका रस, सब्जीका रस, खा सकते है। वीज या छिलके पेटमे न जाय। पेडूपर मिट्टीकी पट्टी लाभ करेगी। कराहना नही चाहिए। विना जोर लगाये दस्त न आता हो तो हलकी पिचकारी ले। मौका मिलते ही ववई जाना चाहिए। वहा जाने पर डाक्टर लोग जो कहे वही करना चाहिए। ऐसा भी हो सकता है कि मेरे वताये अनुसार खुराक वगैरा लेनेसे अगर केवल सूजन होगी तो दर्द शायद वद भी हो जाय। रोटी खूव चवाकर ले सकते है। दाल छोडनी चाहिए। जोर डालने वाले व्यायाम न करे। कटि-स्नान वहुत लाभ करेगा। घर्पण-स्नान भी।

वच्चेको कोई दवाई मत खिलाना। उसे सब्जीका पानी, फलोका रस, दवारूप होगा। कसरत तो करे ही। शेष यहा आने पर। श्रीमन् इलाहावाद जावे और सब निवटा आवे।

१५-६-१९४२] वापूके आशीर्वाद

: १२१ :

चि पगली मदालसा,

तेरा पत्र मिला। अब श्रीमन्‌जी आ गये है तो अब जो वे कहे सो करना। तुम्हारे सलाहकार बहुत है। यह खराब है। जिसपर भरोसा वैठे, उसीकी वात सुनो और उसीके अनुसार चलो। दूसरेकी वात सुनो ही मत। और कोई करने आवे तो कान वद कर लो। तब तुम सपाटेसे ठीक हो जाओगी। चिन्ता तो करो ही मत। वालकको जन्म दिया है तो अब उसका अच्छी तरह पालन-पोषण करना ही है। उसके खातिर ही सही, पागल मिटकर ज्ञानी न हो सको तो भी, समझदार बनो तो काफी है।

२३-११-१९४५] वापूके आशीर्वाद

: १२४ :

चि मदु,

तुझ पर दया आती है और झुझलाहट भी। दया आने जैसी वाते तुमने की। झुझलाहट इसलिए कि इतने दिनो तक तुमने उन्हे अपने मनमे दवा रखा।

हम दूसरोके दोष न देखें, अपने ही देखे, इसीसे जीवन सुखी होता है और हम स्वच्छ रहते है। मैंने तुमको कहा है कि तुम्हे कोई ऐसा काम खोज लेना चाहिए जिसमे तुम्हे अपने वारेमे सोचने-विचारनेका मौका ही न मिले। ऐसा काम महिलाश्रम तो था ही। वह ठीक जमा नही। तो अब तुमको अकेले या किसी खास व्यक्तिके साथ अन्य सेवाकार्य खोज निकालना चाहिए। कोई न सूझे तो चर्खेकी सारी क्रियाओका ज्ञान प्राप्त करलेना चाहिए। नैसर्गिक उपचारकी पुस्तके पढ जानी चाहिए। गुजरातीमे है। हिन्दीमें भी है।

मुझे हर मगलवारको जरूर लिखो। और विस्तारसे लिखो। गुस्सा तो किसी पर करना नही चाहिए, अपने खुदके ऊपर भी नही। भजन ऊचे स्वरसे गाना सीख लेना।

२४-८-१९४६] वापूके आशीर्वाद

: १२६ :

चि मदु,

तुम्हारा पत्र मिला।

तुम अपने दोष और दूसरोके गुण ही देखोगी तो सपाटेसे आगे वढोगी और सुख अनुभव करोगी। दु ख जैसी कोई वात नही मालूम होगी। हमें

किसीसे कोई आशा रखनेका अधिकार नहीं है। हम देनदार हैं इसी कारण जन्म लेते हैं। लेनदार तो हैं ही नहीं। यह बात अगर तुम्हारी समझमें आ जाय तो सारा जगत तुम्हें सरल मालूम होगा। यह ज्ञानवार्ता नहीं है, परन्तु जीवन-प्रवाह सरलतासे बहानेका सही मार्ग है।

रसगुल्लोको बहुत-बहुत प्यार।

११-९-१९४६] बापूके आशीर्वाद

: १२९ :

चि मदु,

मैं यह चाहता हू कि तुम अपनी प्रतिज्ञा न तोडो। कामसे फुरसत न मिले तो खाली पोस्टकार्ड ही डालो।

रजत अच्छा हो गया यह ईश्वरकी कृपा।

पति-पत्निमे गाढ मित्रोंके समान प्रेम हो और वह सर्वथा निर्विकार हो। वे सुख-दुखके साथी हो। दोनोमें एक दूसरेको सहन करनेकी शक्ति होनी चाहिए। एक दूसरेके प्रति उदारता होनी चाहिए। दोनोंके बीच पूर्ण स्वच्छता होनी चाहिए। वहम कभी नही, एक दूसरेसे कोई छिपाव नही।

मैं समझता हू कि इतना काफी है। दृष्टात जब मिले तब पूछना।

तुम सबको

१६-१०-१९४६] बापूके आशीर्वाद

: १३१ :

चि मदु,

तुम्हारे पत्र अनियमित हो गये है। वे तुम्हारी अनियमितताके प्रतीक तो नही है न? जो हो, तुम आनद करो और शात-चित्त होओ। तुम्हे और रामको यहा आने देना अच्छा तो लगता है, पर इसे गलत प्रलोभन मानता हू। अखबारोमे जो आता है उसमें कमसे कम ५० फीसदी कम करके पढोगी तो यहाकी हालत कुछ समझ सकोगी। 'दूरके ढोल सुहावने'वाली कहावत सुनी है ना? और जहा रोज गाव बदलने पडते हो वहा तो तमाशबीन लोग भी भाररूप मालूम होते है। बहुतोको इन्कार करता हू। तो तुम दोको कैसे इजाजत दू? मैं जानता हू कि तुम लोग किसी भी प्रकार भाररूप नही बनोगे। फिर भी सयमका पालन करो। वहा बैठे-बैठे जो सेवा कार्य तुम करोगे, यहाके यज्ञमें उतने अशोमें तुमने भाग लिया है, यह मान लूगा। बच्चोको सभालना। अपना शरीर ठीक रखना। राम मजेमें होगा। उसने अपने बारेमे कुछ निर्णय किया क्या?

२६-१-१९४७] बापूके आशीर्वाद

: १३३ :

चि मदालसा,

तुम्हारा पत्र मिला। तुमने तो मुझसे पत्र नही चाहा था। परन्तु मै तो लिखूगा क्योकि अभी तुम बहुत प्रपचमे पडी हो। - - - - - - तुम्हे श्रीमन्मे समा जाना चाहिए। मैने तो देखा है कि श्रीमन् तुम्हारी पूजा करता है। तुम उसे पूजती हो, परन्तु श्रीमन्के पास जो ज्ञान है वह तुममे नही। वासन्तीको सबकुछ कहो इसमे मै कोई दोष नही देखता। वह समझदार है। परन्तु मै यह नही मानता कि वासन्तीमें इतनी शक्ति है कि वह तुम्हे रास्ता दिखा सके। तुम्हारा सुख श्रीमन्के अन्दर समा जानेमे ही है, इस बारेमे मुझे शका नही है। अगर तुम ज्ञानी होती तो मै कहता कि श्रीमन्के साथ लडना। तुम यह मानती हो कि ऐसा ज्ञान तुम्हारे अन्दर नही है। अगर यह बात तुम्हारी समझमें आ जाय तो मै जो कहता हू उसका पूरा अनुभव करना। अगर जरासी भी शका हो तो विनोबाको यह पत्र बताना। वह जैसा कहे वैसा करना। फिर भी विनोबाको तो यह पत्र बता ही देना। वासन्तीको भी दिखाना। रामकी सगाईके बारेमे समझा। इस सबबमे मैने अधिक ध्यान नही दिया। दोनो सुखी हो और शुद्ध सेवा करके पिताजीके नामकी उज्ज्वलतामें वृद्धि करे, यही मेरी कामना है। रामको इतना कह देना।

तुम्हारा दूसरा पत्र मिल गया।

१५-२-१९४७]

बापूके आशीर्वाद

: १३५ :

चि मदालसा,

तुम्हारा पत्र मिला। श्रीमन् १२ तारीखको यहा आ रहे है। अब मैं हरिजनके लिए लिखने लगा हू इसलिए अपनी उलझनें उसके द्वारा सुलझा लेना। तुम्हारा कथन मै ठीक-ठीक समझ न सका। मेरे किसी लेख या आचरणमेंसे छिटक जानेका बहाना मत खोजना। जहा कठिनाई हो उसे दूर करना चाहिए। मेरे लेखमें स्वच्छदताको स्थान होता ही नही। मेरा जीवन सयमके लिए है। यह हो सकता है कि मै उसमें पार न उतरू परन्तु मै स्वेच्छाचारके लिए दरवाजे कभी नही खोजूगा ऐसा मुझे विश्वास है।

२-६-१९४७]

बापूके आशीर्वाद

: १४३ :

चि ओम्,

चाहे जैसे अक्षर बनाकर केवल वचनका पालन करनेकी खातिर बेगार टालनेको तुम पत्र लिखो, तो मुझे तुम्हारे पत्र नही चाहिए। वचनका पालन

करो तो मन और कर्मसे। मनमें तो पालन करनेकी चोरी हो और कर्म पालन करनेका पुण्य प्राप्त करो यह असम्भव बात है। मुझे यह जरा भी पसंद नहीं। मैंने क्या यह नहीं सिखाया कि जो करो वह ठीकसे करो और सुन्दरतासे करो ? छोटे या बड़े किसी काममें वेगार न टालो।

एक पल भी व्यर्थ न जाने दो।

२०-८-१९३४] बापूके आशीर्वाद

: १४६ :

चि ओम्,

तू जबर्दस्त है। मालूम होता है कि मारवाड़ी तो अच्छा लिख लेती है। मारवाड़ीमें और गुजरातीमें बहुत फर्क नहीं है। कोई तो कहते हैं कि गुजराती मारवाड़ीमेंसे ही निकली है और अब तो वह मारवाड़ीसे भी बढ़ जाती है। इसी कारण तुमने मुझे 'दत्तक बाप' बनाया है न ? यहां मदालसा खड़ी खड़ी तुम्हारी टीका कर रही है कि तुमने मारवाड़ी शुद्ध नहीं लिखी। लेकिन जैसा परीक्षक होगा वैसी ही परीक्षा होगी न ? और फिर मदालसी कहांसे मारवाड़ी शिक्षिका या परीक्षिका बन गई ? इस कारण तुम मारवाड़ीमें पास हो।

२९-८-१९३४] बापूके आशीर्वाद

: १४७ :

चि पंडिता ओम्,

इस बारके पत्रमें तो तुमने अच्छा बोध दिया है। पर अपने बोधके अनुसार तुम खुद चलती भी हो ? अगर मैं आराम न करता होऊं, जतन न करता होऊं तो हर रोज आधे पौण्डके हिसाबसे कैसे बढ़ सकता हूं ? तुमने मुझे जिस तरह काम करते देखा है उससे आजकी तुलना करोगी तो तुम मुझे आलसी और अधिक सोनेवाला मानोगी। अच्छा ही है न कि तुम वहां बैठी-बैठी हैंगिंग गार्डनमें चक्कर काटती हो और शेखी बघार रही हो और बदलेमें काकाजीकी थोड़ी सेवा कर लेती हो! हैंगिंग गार्डनकी कथा तुम जानती हो ? मेरा अभिप्राय यह है कि हमारे जैसे गरीबोंके घूमने जानेकी जगह वह नहीं है। वहां तो फक्कड़ लोग जाते हैं। अगर अब तुम जाओ तो देखना और मुझे लिखना कि कितने गरीब लोगोंको तुमने वहां देखा। मैं तो वहां एक या दो बार जाकर तृप्त हो गया।

भले मेरे पास तुमने अपना ज्ञान उंडेला। दत्तक बापके ऐसे ही हाल होते हैं! पर काकाजीको तो नहीं भड़काया न ?

तुम्हारे लिखनेमें भूल है। काकाजीका वजन १०४ बताती है! उसको तो मैं शायद चार दिनमें ही लांघ जाऊंगा। २०४ से तो तुम्हारा मतलब नहीं है ? रामायण पढ़ती है ?

२-९-१९३४] बापूके आशीर्वाद

: १४९ :

चि ओम्,

तेरे पत्रकी आशा रखना व्यर्थ है। मैने तुम्हे लिखा नही पर तुम्हारी याद मुझे बराबर रहती ही है। इस बारका तुम्हारा आचरण मुझे जरा भी अच्छा नही लगा। तेरा पत्र भी अच्छा नही लगा। उसमें गलत बचाव था। मेरे साथ इतने महीने घूमनेके बाद तुमने क्या सीखा? इसका हिसाब लगायेगी? मुझे लिखेगी? काग्रेसके समयमे एक सिरेसे दूसरे सिरे तक जाते हुए तुम मुझे दिखाई दी। उस दिनका तुम्हारा वह पहनाव? मेरे दुख और क्रोधका पार न था। अपने दिये हुए वचनका तू पालन करना। कृत्रिम कभी मत बनना। जैसी हो वैसी ही दिखना। तेरी सगाईकी बाते चल रही है। उस बारेमे स्वतत्रतासे अपने विचार बताना। सच्ची रहना, सच्चा विचारना, सच्चा बोलना। यदि यह तुम्हारी शक्तिके बाहर हो तो मेरा त्याग करना।

साफ अक्षरोमे लिखे तुम्हारे सविस्तर पत्रकी राह देखूगा।

७-११-१९३४] बापूके आशीर्वाद

: १५१ :

चि ओम्,

यह खाते-खाते लिख रहा हू इस कारण पेंसिलसे। खाते हुए लिखना कुटेव है। पेंसिलसे लिखना भी कुटेव है। इसकी नकल मत करना।

अभी भी तेरा कान दुखता लगता है। तुझे बबई जाना चाहिये।

तार देनेकी सोचता हू। मदालसाके भी हाल लिखना।

बापूके आशीर्वाद

: १५२ :

चि ओम्,

बहुत दिनो राह देखनेके बाद तुम्हारा पत्र आया सही। तुझे उलहना थोडे ही दिया जा सकता है। जितना तुम दोगी उतना स्वीकार कर लेता हू। उतनेसे आनद मानना चाहिये। अनुजम्मा भी तेरी बार-बार खबर देती है। वहा तुझे अच्छा अनुभव मिल रहा है। उससे पूरा-पूरा लाभ उठाना। अग्रेजी तो अच्छी करेगी ही। वहाका सगीत भी बहुत ही अच्छा माना जाता है। उसे अच्छी तरह सीख लेना। तामिल तो सीखेगी ही ऐसी आशा है। और यह भी आशा रखता हू कि वहा हिन्दीका प्रचार भी करेगी। चरबी भी कम करना। सक्षेपमे इतना ही कि इतनी दूर जाकर बैठी हो और एक अक्षरका इतना बडा नाम रखा है, उसको शोभित करना। जिसके नामसे कल्याण होता है, ऐसा शास्त्र कहते है, वह नाम लेकर तुम बैठी हो, तो उसका कोई मतलब होगा न? यानी मेरी इच्छा है कि उस अर्थको तुम सार्थक करो।

इसके लिए आवश्यक कुछ गुण तो तुम्हारे अदर है ही। कुछ और आ जायें तो पार उतरे समझो। तुम्हे मालूम न हो तो एक और खबर देता हू। महाराष्ट्रके समान तामिलनाडमे भी सस्कृतके उच्चारण बहुत शुद्ध किये जाते है। महाराष्ट्रमें उच्चार तो है पर उतना उत्तम सगीत नही है। तामिलनाडमें तो मत्रादि मधुर आवाज और सुरमें गाये जाते है। अनुजम्माके द्वारा यह तू सीख सकेगी। यह सब सहजमे ही मिल सकता है। इसके लिए बहुत समय देनेकी जरूरत नही है। यह वर्ष तुम्हारे लिए मगलदायक हो। आरभ किया है सो समय-समय पर पत्र लिखती रहना।

८-११-१९३५] बापूके आशीर्वाद

: १५४ :

चि ओम्,

मैं जानता हू कि मेरी बीमारी तुम्हारे पत्र न लिखनेका अच्छा बहाना बन गई है। पर तुम यह जानती हो कि तुम्हारे पत्र मुझे बोझरूप कतई नही होते। पर यो पत्र लिखने लगो तो तुम 'सोती सुदरी' मिट जाओगी न?

यह पत्र लिखनेका कारण तो यह है कि वहा तुम खुश नही रहती, घरकी याद आया करती है और कभी-कभी आसू भी बहाती हो। ऐसी नाजुक तुम कबसे बन गई? अपने लिए तो जहा रहे उसे ही घर समझना चाहिये। आखिर तो इस जगमे हम लोग 'चद रोजा' मुसाफिर ही है न? मैंने तो वह भाग देखा नही है, पर कहते हैं कि हवा वहाकी बहुत अच्छी है, और उसी प्रकार सुदर भी है। श्री डकनसे मिली होगी। वहाका वर्णन लिखना।

लखनऊमे काकाजी, मदालसा हम सब साथ ही है। तीसरी तारीखको इलाहाबाद जावेगे और बहुत करके आठवीको लौट आवेगे। पद्रहवीके आस-पास वर्धा पहुचनेकी आशा है।

मेरी तबीयत अब ठीक कही जा सकती है। 'हरिजन सेवक' मगाती हो क्या? अब तो अग्रजी भी बराबर समझती होगी।

३०-३-१९३६] बापूके आशीर्वाद

: १५५ :

चि ओम्,

मुझे यहा छोटासा पुस्तकालय बनाना है। उसमे मराठी पुस्तके चाहिये। तेरे पास या मदालसा या और किसीके पास छोटी-छोटी मराठी पुस्तके हो जिनकी वहा अभी जरूरत न हो, तो मुझे यहा भेज देना। सीखनेकी और पढनेकी। यहाका काम नही चला तो वे पुस्तके जिनकी होगी उनको वापस मिल जायेगी। काम चल निकला तो अमुक समयके बाद वे वापस कर दी जायेगी। इसकी कमसे कम मियाद छ महीनेकी है। जो पुस्तके सदाके लिए

दी जा सकती है वे दे देनी है। ऐसी पुस्तकोकी यादी मुझे भेज दो। दस रुपयेमे ज्यादाका पुस्तकालय मुझे नही बनाना है। इसमे तुम्हे अदाज हो जायगा कि मुझे किस तरहकी पुस्तकोकी जरूरत है। मराठी अखबार भी किसीके पास हो तो वे भी, वहा उपयोग हो चुकनेके बाद, चाहिये। इसमें बडे दानकी बात नही है। इसके लिए बडोको परेशान करनेकी भी बात नही है। परतु तुम्हारे जैसे लोग गाववालोकी ओर जरा निगाह रखे तो ऐसे-ऐसे काम सहज ही कर सकते है। इतना तो पीछे लगकर करना। इसमे रस न आवे तो वेधडक होकर इनकार लिख भेजना। ताकि दूसरे ठिकाने आजिजी करू।

११-७-१९३६] बापूके आशीर्वाद

परिशिष्ट २

जमनालालजीकी डायरियों तथा पत्रोंमेंसे गांधीजी संबंधी चुने हुए अंश

: १ :

श्रीमती प्रिय देवी, कलकत्ता, ६–१–१७

श्री गांधीजी महाराज, उनकी धर्मपत्नी व पुत्र यहा आये थे। अपनी तरफसे सब प्रबन्ध किया गया था। इनकी सेवा करनेका १० रोज तक ठीक मौका मिल गया था।

* * *

केवल यही विचार बना रहता है कि ससार मिथ्या है, इसलिए शरीरसे जो-कुछ सेवा बन सके वह निस्वार्थ भावसे करनेका हमेशा प्रयत्न करना ही मनुष्य-जन्मका मुख्य कर्त्तव्य है। आशा है, तुम्हे भी यही ध्येय सामने रखकर कार्य करते रहनेमे अवश्य शान्ति मिलेगी। रायबहादुरकी पदवी सरकारसे मिलनेके कारण कई जगहसे मित्रोके बधाईके तार व पत्र आते है। यह सब आडबर है। फिर भी परमात्माने किया तो इस तरहके आडबरका भी सेवा करनेमें उपयोग हो सकेगा। ईश्वरसे हमेशा यही प्रार्थना करते रहना आवश्यक है कि परमात्मा सद्बुद्धि प्रदान करे और निस्वार्थ भावसे सेवा करनेके लिए बल प्रदान करे।

: २

प्रिय देवी, पटनाके नजदीक चलती रेलमे, १५–८–२१

अब तुम और मै तो विदेशी कपडा पहन नही सकते, इसका पूरा ध्यान रखना। अपना सब घर-कुटुम्ब पूरा स्वदेशी वस्त्र पहनने वाला तथा सादगीसे जीवन बिताने वाला होना चाहिये, इस बातका पूरा उद्योग करते रहना होगा। श्री मदिरमे तो अब विदेशी कपडा स्वप्नके लिए भी नही रहना चाहिये। अगर रहा तो तुम जिम्मेदार हो। अगर तुमसे हो सके तो विदेशी सजावट (फर्निचर) आदि भी घरमें बाहर बगीचेमे रखवा दो। सब बच्चोकी पढाईका पूरा प्रबध रखो, श्री भावेजीकी सलाहसे। योग्य आदमी बच्चोके लिए ढूढनेको उनसे कहा हुआ है। तुम भी आश्रमम बराबर जाती रहना। श्री भावेजीकी सगत, उपदेश-श्रवण करती रहना। भावेजी बहुत विद्वान व चरित्रवान है। इनके सत्सगसे अवश्य लाभ पहुचना सभव है। आश्रमके बालकोसे खूब प्रेमका बर्ताव तथा उनकी बीमारी आदि दुखमें पूर्ण सहायता

तथा शरीरसे सेवा करनेका ध्यान रखना। इस तरह करनेसे तुम्हारी बहुत ज्यादा उन्नति होवेगी, ऐसा मुझे विश्वास है। बने वहा तक नियमसे आश्रममे जाते रहना चाहिये तथा सूत आदि भी वहा पर थोडी देर काता जाए तो और भी ठीक होगा।

पूज्य बापूजीके साथ कलकत्ता, आसाम, मद्रास आदि स्थानोमे जाना होगा। वह तो मुझे पहले ही ले जाना चाहते थे, परन्तु बम्बईके मित्रोने नही जाने दिया। बापूजीके साथ रहनेसे मुझे तो बहुत फायदा पहुचनेकी सभावना है। मेरी इच्छा तो ऐसी होती है कि तुम और मै दोनो बापूजीके साथ भ्रमणमें रहा करे, जिससे इनकी सेवा करनेका भी मौका मिले तथा कई बातोका ज्ञान हो। ईश्वरने किया तो यह इच्छा भी पूर्ण हो सकेगी।

: ३ :

प्रिय देवी, तेजपुर (आसाम), २२-८-२१

गोहाटी (आसाम) ता १८ को पहुचे। श्रावणी पूर्णिमा उसी दिन थी। रास्तेमे रेलवे स्टेशन पर स्नान करके पूज्य बापूजीके हाथसे नया जनेऊ पहना व उसी रोज शामको बापूजीके हाथसे ही रक्षा बधवाई (कलकत्तेसे हाथका कता हुआ और कुसुबी रगमे रगा हुआ सूतका तार साथ ले आये थे)। उन्होने बहुत प्रेम तथा प्रसन्नतासे राखी बाधी। मैने राखी बाधनेकी दक्षिणाके लिए पूछा तो उन्होने विरासत सभालनेको कहा। तब मैने कहा कि आप आशीर्वादके द्वारा आत्मिक बल मुझमे बढा दे। यह बात तुम्हारे ध्यानमे लानेके लिए लिखी है। रक्षा-बधनका दिन खाली नही गया। मेरी समझमे तो बापूजीने इस भावसे अभी तक और किसीको राखी नही बाधी होगी। इस तरह हम लोगोकी जवाबदारी बढती जाती है। उसी तरह परमात्मा ताकत भी बढायेगा, ऐसा भरोसा है। दिनचर्या जितनी सादगीसे और सत्सगसे बितावेगे उतनी ही इष्ट साधनामे सफलता प्राप्त होवेगी। तुमको यही लिखना है कि छोटे छोटे गृहस्थीके प्रपचोकी तरफ विशेष ध्यान न रखकर मनुष्य-कर्त्तव्यकी तरफ अधिक ध्यान रखो। हमेशा प्रेममय बर्ताव तथा आनन्दमय जीवन बिताना है। जितना आनन्द बढेगा उतनी ही जल्दी ध्येयकी प्राप्ति होवेगी। कर्त्तव्य करते जाओ और खूब प्रसन्न रहो। जिंदगीको भार-रूप मत समझो। जबतक स्वराज्य प्राप्त न हो तबतक स्वराज्यके सिवाय दूसरी बातोका स्वप्न भी हमे नही आना चाहिये।

: ४ :

प्रिय देवी, सिलहट (आसाम), अगस्त १९२१

मारवाडी स्त्रियोकी सभा भी हुई। महात्माजीने विदेशी वस्त्र त्यागनेके बारेमे तो कहा ही। साथ ही अपने समाजमे गहने पहननेकी जो बहुत

बुरी प्रथा है उसके बारेमे भी कहा। इससे सुन्दरता नष्ट होती है इसलिए जहातक हो सके गहने न पहने जावे। अगर पहने ही जावे तो बहुत थोडे। कपडे भी साफ स्वच्छ सफेद रगके ज्यादा इस्तेमाल किये जाये जिससे मारवाडकी बहने भी आसामी बहनोकी भाति सीताजीकी तरह दिखने लग जावे। जिस प्रकार हो सके गहने और रग बिरगे कपडे ज्यादा पहननेकी चाल कम करनेकी चेष्टा करनी चाहिये।

\- - *

बापू इतना भारी कार्य करके भी खूब आनदमे रहते है। कभी-कभी तो खूब हसा करते है। मुझसे तो कहते थे कि अगर मुझे फासीका हुक्म होगा तो भी मै तो सब कार्य करते करते हसता हुआ ही फासी पर चढ जाऊगा, ऐसा मेरा मन कहता है। ये सब बाते तुम्हे इसलिए लिखी है कि तुम जो बहुत ज्यादा फिकर किया करती हो सो अब भविष्यके लिए जितने आनन्दका उपयोग लिया जावे उतना लेनेका प्रयत्न करते रहना चाहिये। ज्यादा फिकर या उदास रहनेकी आवश्यकता नही। हमे तो अपना चरित्र शुद्ध रखते हुए आनदमे हँसते हँसते सब शारीरिक कष्ट सहने है तथा मृत्यु प्राप्त करनी है।

* * *

गोहाटीमे बापू जिनके यहा उतरे थे वह श्रीयुत फूकनबाबू विलायतमे बैरिस्टरी पास किये हुए तथा बडे ही शौकीन तबीयतके थे। उन्होने अपने यहाके सारे विदेशी कपडे, स्त्रियोके सुन्दर सुन्दर भारीसे भारी कपडे भी बापूके हाथसे आगमे जलवा दिये। करीब साढे तीन हजारके कपडे थे। और भी लोगोने जलाये। ये सब बाते देखते हुए अब तुम घरमे (कुटुबमे) भारी या हलका विदेशी कपडा नही रख सकती यह विचार कर लेना। श्री फूकनबाबू तो बहुत धनी आदमी भी नही थे।

: ५ :

प्रिय देवी, कलकत्ता, १३-९-२१

मन्दिरमे प्राय सब स्वदेशी कपडा हो गया। मुकुट सोने-चादीका बनवानेका विचार लिखा सो ठीक। वे न बने वहा तक खादीके बना लिये जाये। विशेष फर्निचर जो हो उसे बगीचेके बगलेमे रखवा दे सकेगे। तुमने लिखा कि अपने तो प्राण ही बापूको अर्पण है, स्वप्नमे भी बापू ही दीखते है, यह पढकर बहुत ही समाधान व प्रसन्नता हुई। परमात्मा हमारी इस तरहकी बुद्धि बनाए रखे। परमात्मा अवश्य ही सफलता और शक्ति प्रदान करेगा।

: ६ :

प्रिय देवी, कलकत्ता, १७-९-२१

तुमने लिखा कि पहले पत्रका जवाब आनेमे देरी हुई, इससे चिन्ता हो गई थी, सो इस तरह चिन्ता होना ठीक नही है। कठिन परीक्षाका समय

तो अब आनेवाला है। हम लोगोंका तो जेलमे जाना बहुत जल्दी सभव हो सकता है। अगर इस तरहकी छोटी-छोटी बातोसे चिन्ता हुआ करेगी तो पीछे असली ध्येय प्राप्त करनेमें देर लगेगी और बाधा पहुचेगी। मनको सदैव खूब शात और आनन्दमे रखनेकी पूरी चेष्टा करनी चाहिये। जब हम लोगोका परमात्मा पर पूरा विश्वास है तथा बापूका आशीर्वाद है तब हमे, चिन्ता क्या होती है, यह बिलकुल भूल जाना चाहिये। आशा है, पत्रमें इतना खुलासेवार लिखनेका भावार्थ तुम बराबर समझ जाओगी। भविष्यमें कभी किसी कारणसे चिन्ता मालूम हो तो इस पत्रको स्मरण करनेका ध्यान रखना। परमात्मा जो कुछ करता है वह ठीक ही करता है।

यहा विदेशी कपडे तथा सूतके व्यापारियोमे अच्छी सफलता मिल रही है। परमात्माने किया तो सोमवार तक पूरी सफलता मिल जावेगी। अब सफलतामे सन्देह नही रहा। आज मौलाना मुहम्मद अली, शौकत अली तथा डाक्टर किचलूकी गिरफ्तारीका समाचार मिला। यहा अभी तक खूब शान्ति है। परमात्मा सब जगह शान्ति रखेगा तो हमारा उद्देश्य (स्वराज्य) शीघ्र सफल होगा। अब तो जेलमे जानेमें ही विश्राति तथा शान्ति अधिक मिलना सभव मालूम होता है।

गोहाटीमें सफलता ठीक हुई। मारवाडी व्यापारियोने भविष्यमे विदेशी सूत व कपडा न मगानेकी प्रतिज्ञा कर ली। यह कार्य तो बापूके ही प्रतापसे हुआ। परन्तु विशेष उद्योग किये बिना ही थोडा यश इसमे मुझे मिल गया। वहाके कार्यकर्ता बहुत प्रसन्न हो गये। यहाके लोग थोडे भोले है, परन्तु उनमे बापूजी पर बहुत श्रद्धा व प्रेम है, और त्यागभावना भी है।

: ७ :

प्रिय जानकी, साबरमती आश्रम, २०–३–२२

पूज्य श्री बापूके मुकदमेका हाल सब समाचार-पत्रोमे पढा ही होगा। मुझे इस समय यहा आनेमे बहुत लाभ हुआ। बापूसे खूब बाते हुई। बापूने हमेशाके लिए सग्रहके वास्ते एक बहुत ही सुन्दर पत्र[1] लिखकर दिया है। किसी समय अशान्ति मालूम हो तो उस पत्रसे बहुत लाभ पहुचेगा। अदालतका दृश्य विचित्र था। ऐसा मालूम होता था कि जज तथा उसके साथी पूरे दोषी हैं और बापू उनको दोपसे मुक्त होनेका उपदेश प्रेममे कर रहे है। जज आदिके अग्रेज होते हुए भी उनपर खूब असर हुआ। १८ मार्चका दिन हमेशाके लिए याद रखने योग्य है। यह दिन हमारे भविष्यके इतिहासमें बिजलीकी तरह चमकता रहेगा। अच्छा होता कि तुम भी आ जाती। खैर, कोई बात नही। बापूने मुझे खूब जोरसे पीठ ठोक कर आशीर्वाद दिया। अब मुझे पूरा विश्वास है कि हम लोग अपनी उन्नति अवश्य कर सकेंगे। जिम्मेदारी

[1] देखिए पृष्ठ १५-२२, पत्र सख्या १७।

खूब बढ़ गई है। अब कार्यकी दृष्टिसे जेल जानेकी जरूरत बिलकुल नहीं मालूम होती। हा, शान्ति तथा विश्रान्तिके लिए जानेकी इच्छा होना सभव है। परन्तु इसे रोकना होगा। कार्य करते हुए वैसा मौका आ गया तो आनदकी बात है। फिर भी जानबूझकर नहीं जाना है। बम्बईमें तथा यहा मेरे गिरफ्तार होनेकी बहुत जोरसे चर्चा थी। परन्तु उस चर्चामें कमसे कम हालमें कोई दम नहीं है। अगर मुझे गिरफ्तार होना ही पड़ा तो उस हालतमें हिन्दी नवजीवनके प्रकाशककी हैसियतसे मेरी जगह तुम्हारा नाम रखना चाहिये ऐसा मेरा विचार हुआ था। इस बारेमें मैंने महात्माजीसे पूछा था और उन्होंने भी कहा था कि ऐसे मौके पर उनका नाम रख सकते हो। खैर, अभी तो वह मौका नहीं है। जब आवेगा तब देखा जावेगा।

हा, एक बात लिखना रह गई। १७ ता को सुबह अदालतमें कई मनुष्य रोये, प्रेम-वियोगसे। मेरी भी आखोंमें थोड़े आसू आ गये थे, पर मैंने बाहर जाकर पोंछ लिये। बापू खूब हसते थे व कई लोग खूब हिम्मत रखे हुए थे। ये सब बाते स्मरण करनेमें ज्यादा आनद आवेगा।

: ८ :

प्रिय देवी, बम्बई, ०-४-२२

कार्यका जो भार पूज्य बापूने तथा वर्किंग कमेटीने दिया है, वह बराबर व्यवस्था-पूर्वक होनेसे शान्ति मिलेगी। तुम शान्तिसे अपना कर्त्तव्य करती रहना। बापूको सजा हुई उस दिनसे मनमें ऐसी इच्छा थी कि हो सके वहा तक चर्खा थोड़ी देरके लिए ही सही अवश्य काता जाना चाहिये। परन्तु कई कारणोंसे यह इच्छा पूरी नहीं हो सकी। इससे भी मनमें थोड़ी अशान्ति रहती है। यहा घूमनेका कार्य ज्यादा रहता है। हर रोज कमसे कम एक घटा चर्खा कातनेका तुम प्रयत्न किया करो, घरमें रहो तब तक।

* * *

बापूके जेल जानेके बाद कार्यकी जवाबदारी ज्यादा मालूम होती है। परन्तु बापू जाते समय जो उपहार – अपने हाथका लिखा हुआ उपदेश[1] – दे गये उससे शान्ति मिलती है और जवाबदारीका भान होता है। अब तुम्हें कमसे कम फालतू गहने बेचकर वह रुपया खादीके काममें लगा देना चाहिये। समय मिले तो जो गहना बेचना हो सो अलग निकालकर रख छोड़ना।

: ९ :

प्रिय जानकी, सितबर, १९२२

मेरी बहुत वर्षोंसे यह इच्छा थी कि तुम्हारी व बालकोंकी इज्जत मेरे कारण न होकर तुम लोगोंके पवित्र सेवा-कार्यके कारण हो। उसमें तुम्हारा व बालकोंका भी श्रेय है व अपना भी श्रेय व गौरव है। यह कार्य अब जल्दी ही परमात्माकी दयासे व पू बापूके आशीर्वादसे होता दिखाई

[1] देखिए पृष्ठ १८–२०, पत्र सख्या १७।

दे रहा है। अपने घरमे अब सब छोटे-बडे कम-ज्यादा प्रमाणमे सेवा-कार्य करनेवाले निकलेगे, ऐसा विश्वास हो रहा है। सेवा-धर्ममे भी आनद व सुख मिलता है।

: १० :

प्रिय देवी, बम्बई, ९-१०-२२

पूज्य बापूजी बच्चोकी व तुम्हारी याद करते थे। तुम्हारे ऊपर उनका बहुत प्रेम व श्रद्धा है, ऐसा उनकी बात परसे मालूम होता था।

: ११ :

प्रिय देवी, ओगोल, १०-१-२४

दक्षिण प्रान्तमे एक मास अन्दाज घूमना पडेगा। यहा खादीका कार्य खूब हो सकता है। कई गावोको देखनेका मौका मिला। सूत कातने वाली स्त्रिया तथा बुनने वाले जुलाहे यहा खूब मख्यामे है। इन्हे रुई बराबर देकर, सूत, कपडा लेने व बेचनेकी बराबर व्यवस्था हो जाय तो लाखो रुपयोकी खादी आन्ध्र देश बना सकता है। यहा घूमनेसे पूज्य बापूके खादी पर जोर देनेका महत्व अधिक ध्यानमे आया। अब तो चर्खा रोज काते बिना शाति नही मालूम होती।

* * *

अबकी बार बम्बई पहुचते ही ५-६ परिचित मित्रोकी मृत्युका समाचार एकदम मिला। उसपरसे भी यही मनमे आता है कि व्यर्थ समय बिलकुल न नष्ट करके जितना सेवाकार्य बन सके करनेमे ही लग जाना अपना कर्त्तव्य है। विशेष फिकर न करते हुए खासकर खादी प्रचारका व हिन्दुस्तानी प्रचारका काम करनेका ही निश्चय करनेका विचार है। इससे करोडो देश-भाइयोकी सेवा करनेका थोडा सतोष हो सकेगा। ये दोनो कार्य ऐसे है जिनमे किसी तरहकी भी शका नही हो सकती। आशा है, तुम भी इन दोनो कार्योमे खूब सहायता करोगी।

: १२ :

प्रिय देवी, दिल्ली, १४-६-२५

पूज्य बापूजीसे मिला। बाते हुई। बापूने बहुत बडी तपश्चर्या आरभ की है। बापूका आत्मिक बल, परमात्मा पर जो श्रद्धा है, उसे देखते हुए विश्वास होता है कि उपवास पार पड जावेगे। बा भी आज आ गई है। मेरे पास ही ठहरी है। बापूकी तपश्चर्या देखकर मनमे बहुत तरहकी कल्पनाए आया करती है, परन्तु अपनी कमजोरी देखकर लज्जा होती है। बापूके इस मौकेसे हम लोगोके जीवन व रहन-सहन और आचरणमे फरक हो तो भविष्यका जीवन सुखकर बीतना सभव है। मेरी राय है कि तुम अहमदाबाद आश्रममे

जाकर रहनेका विचार करो तो वहा रहनेसे जरूर आध्यात्मिक लाभ होना सभव है। मनकी कृपणता कम होकर दया-भाव, विश्वप्रेम, आत्मिक बल बढानेका साधन मिलेगा। बच्चोकी पढाई और सगतमे तो पूरा लाभ होना सभव है।

* * *

चर्खा घर-भरमे बराबर चालू रहे। बापूके लिए हृदयसे प्रार्थना होती रहे, इसका खयाल रखना।

: १३ :

प्रिय देवी, पटना, २३-९-२५

तुमने अपने विचार या जो शका थी वह पूज्य बापूजीको कह दी, यह जानकर अधिक सुख हुआ। अभी पूज्य बापूजीसे घरेलू बातोके बारेमे मेरी बात नही हो पाई है। कारण वह बहुत कामोमे लगे हुए है। जब बाते होगी तब मालूम होगा।

: १४ :

प्रिय देवी, बम्बई, ३०-१-२६

मै आज साबरमती जाकर आया। पूज्य बापूजीको ज्वर १०४ डिग्री तक हो गया था। उनका वजन आजकल ९७॥ रतल रह गया है। वहा इस-लिए जाना पडा कि दूसरी जगह बदली जावे या अन्य इन्तजाम किया जावे। इसका विचार करने पर डाक्टरोकी राय हुई कि अभी दूसरी जगह ले जानेकी जरूरत नही। गर्मीमे ले जाया जाय। आश्रममे ही आरामसे रह सके, थोडी विश्राति लेते रहे तो जल्दी वजन बढ जावेगा। एक हाथमे दर्द रहता है, वह भी कम हो जावेगा। पू बापूने दवा और विश्राति लेना स्वीकार कर लिया है। परमात्माने किया तो जल्दी ही ठीक हो जावेगे।

* * *

चि कमलाके विवाहके बारेमे श्री केशवदेवजी यहा आ गये थे। पू बापूजीने तो कहा है कि सब तरहका विचार करनेके बाद मुझे तो आश्रममे ही विवाह करना ठीक मालूम होता है। फिर भी चि रामेश्वरप्रसादकी इच्छा देख लो। वह भी आ गया था और उसने भी कहा मुझे आश्रममे ही विवाह करना सब तरहसे पसन्द है। उसने आश्रममे विवाह करनेके जो-जो कारण बतलाये उससे पूज्य बापूजीको व मुझे बहुत ही सन्तोष हुआ। अब विवाह आश्रममे करनेका ही निश्चय हो गया है।

: १५ :

प्रिय देवी, वर्धा, ६-११-२६

आशा है, तुम पू बापूजीके उपदेश तथा सत्सगसे अधिक उदार तथा सिद्धातसे जीवन बितानेका निश्चय करके यहा आओगी। सच बात तो यह

है कि मेरे तथा अपने घरके सुधार व परिवर्तनमे मुझे तुमसे पूरी सहायता मिलनी चाहिये। अब थोडे वर्ष मानसिक सुधारोकी बागडोर तुम अपने हाथमे ले सको तो आज मुझे कितना सुख और सन्तोष मिले इसका तुम ही विचार कर सकती हो। तुम चाहो तो पू बापूजी व विनोबाकी सहायतासे अपने जीवनको और घरको ठीक कर सकती हो। मेरी कमजोरिया दूर करा सकती हो।

: १६ :

प्रिय जानकी, साबरमती, ५-४-२९

श्री छगनलालभाई गाधीसे तथा पू बासे, रुपये पैसेके मामलेमे, जो दुनियादारीकी दृष्टिसे बहुत भारी कसूर नही समझा जाता है वैसी गलती या कसूर पर, इस बार पू बापूजीने नवजीवनमे अपने हृदयका दुख लिखा है। तुम उसे भली प्रकार पढनेका प्रयत्न करना। यहा आश्रममे रहने वालोकी कमजोरियोसे पू बापूजीको बहुत दुख व कष्ट हुआ करता है।

: १७ :

प्रिय जानकी, साबरमती आश्रम, ७-४-२९

इस बारके नवजीवनमे पू बापूजीका आश्रम सबधी लेख पढकर हृदय फटता है। उपाय नही। तुम खूब विचारके साथ इस लेखको दो-चार बार पढना।

: १८ :

प्रिय जानकी, साबरमती आश्रम, १५-२-३०

पू बापूजीने आजकल खूब उत्साह व जोरोसे लडाईकी पूरी तैयारी कर रखी है। यहाका वातावरण पूरे जोश तथा उत्साहसे भरा हुआ है। छोटे-छोटे बच्चोने भी जेल जानेकी इच्छा कर रखी है। तुम इस समय यहा रहती तो तुम्हे ठीक लाभ मिलता व पू बापूजी तुम्हारा नाम भी जेल जानेवालोकी फेहरिस्तमे, अगर तुम्हारा उत्साह और इच्छा होती तो, लिख लेते।

: १९ :

प्रिय जानकी, नासिक रोड सेन्ट्रल जेल, २१-६-३०

तुम्हारी व दूसरी बहनोकी दो बार थोडे समयकी गिरफ्तारीकी बात जानकर विनोद हुआ। अगर स्त्रियोको गिरफ्तार करना शुरू हो जावेगा तो तुम्हारा नबर जल्दी ही आ जावेगा। तुम तो सब तरहसे तैयार हो ही। तुम्हे तो कुछ समयके लिए जेलकी दुनियाका अनुभव मिल सकेगा व शान्ति भी मिलेगी। साथ ही जनतामे विशेष जीवन व जागृति आवेगी।

* * *

ईश्वरकी अपने पर पूर्ण दया व पू. बापूजीका आशीर्वाद है कि जिसके कारण अपनेको इस प्रकारकी बुद्धि होकर सेवा करनेका यानी अपनी कमजोरी कम करनेका मौका मिला। तुम्हारी बहादुरी व हिम्मत देखकर मनमें सुख होता है। मुझे तो तुम्हारे बारेमें व सारे कुटुबके बारेमें पूरा सन्तोष व अभिमान है। मेरी यह इच्छा अवश्य है कि इस प्रकारके धर्म-युद्धमें हम लोगोंमेंसे सबोंकी या जो सबसे ज्यादा प्रिय हो उसकी आहुति हो तो परम सन्तोष व सुखकी बात होगी। एक दिन मरना तो अवश्य है ही। फिर जिससे देश व जाति व कुलकी प्रतिष्ठा बढ़े इस प्रकारकी पवित्र मृत्यु मिले तो फिर क्या बात! अब तो जेलकी मनमें नहीं रही। अगर इच्छा है तो ऐसी मृत्युकी ही है। खैर, जो होनी होगी सो होगी। चिन्ता करनेका समय नहीं है। अभी तो बहुत खेल खेलने व देखने होंगे, ऐसा दिखाई देता है। भविष्य बहुत ही उज्ज्वल व साफ दिखाई देता है।

: २० :

प्रिय जानकी, नासिक रोड जेल, ७-७-३०

चि. कमलसे कहना कि वह जरा अधिक सभ्यता व नम्रताका व्यवहार करनेका खयाल रखे। अब वह सत्याग्रह-दलमें पू. बापूजीकी टुकडीका स्वयं-सेवक है। उसपर ज्यादा जिम्मेदारी है। मुहसे एक एक बात सत्य व तौलकर निकालनी चाहिये, जिससे आगे चलकर वह जिम्मेवारीके साथ काम कर सके।

: २१ :

प्रिय जानकी, नासिक रोड जेल महल, २३-१०-३०

ईश्वर सब ठीक करेगा। तुम्हारे लिए मनमें स्थान तो पहले ही ठीक था, अबकी बारकी तुम्हारी हिम्मत, सेवा, योग्यताका विचार करके जो सुख व सन्तोष मिलता है वह कैसे लिखूं? हम लोग बहुत ही पुण्यवान् हैं। ईश्वरकी व पू. बापूजीकी दया व आशीर्वादसे मेरी समझमें अपने जितने सच्चे सुखी ससारमें प्राय. बहुत कम लोग होंगे। आशा है, जेलमेंसे हम लोग अधिक योग्य बनकर निकलेंगे।

: २२ :

प्रिय जानकी, सेंट्रल जेल, नासिक, जनवरी १९३१

परमात्माके व पू. बापूजीके आशीर्वादसे, हम लोगोंका, अपने जीवनका आदर्श प्राप्त करनेमें सफलीभूत होना बहुत सम्भव दिखाई देता है। अगर हम अपनी कमजोरियोंको बराबर पहचानते रहे व उन्हे निकालनेका तन-तोड प्रयत्न करते रहे तो अवश्य जीवन पूरी तौरसे नहीं तो कुछ अंशमें तो सार्थक बना सकेंगे।

: २३ :

प्रिय जानकी, चलती रेलमें, प्रयाग, १८—२—३१

पू. बापूजी 'रफल'[1] देखकर बहुत खुश हुए। उन्होंने कहा, मैं इसे अब दो वर्ष और चला सकूंगा। तुम्हारे लिखे समाचार उन्हें कह दिये। तुम्हारी भेजी हुई पूनी उन्होंने आज कातकर देखी। उन्होंने कहा है कि रुई तो अच्छी है, परन्तु पूनी ठीक नहीं बनी। लम्बी ज्यादा है व पोली भी है। आगेसे बहुत अच्छी पूनी बना सको तो थोडी बापूजीको भेजनेका प्रबंध करेंगे।

: २४ :

चि. मदालसा, अक्टूबर, १९३२

अपनी माताके नामके पू. बापूके पत्रकी नकल तुमने भेजी उसे पढ कर सुख मिला। अपनी माताको कह देना कि वह उस मुताबिक पूरी तैयारी करनेमें लग जावे व बापूकी परीक्षामें इस जन्ममें पास हो जावे तो उसमें खूब सुख व लाभ मिलेगा।

— — —

बापूके उपवासकी इस भीष्म-प्रतिज्ञाने तो हम सबकी अस्पृश्यता-निवारणकी जवाबदारी बहुत ज्यादा बढा दी है। परमात्मासे हर रोज मैं तो प्रार्थना करता ही हूं, तुम सब भी किया करो, कि जिससे हम सब लोग अपना कर्त्तव्य व जवाबदारी पूर्णतया समझते रहें व उसे पूरा करनेके लिए जी-जानसे उद्योग करते रहें।

: २५ :

डायरीसे— यरवडा मंदिर, ११—१—३३

रातमें सुखकारक स्वप्न आया, याने आकाशवाणी हुई व प्रत्येक मंदिरोंकी देव मूर्तियां कहने लगीं कि 'गांधी' का कहना ठीक है, उसीके मुताबिक करो। अस्पृश्यताका भेद निकाल डालो, आदि उत्तम विचार।

२६

डायरीसे— यरवडा मंदिर, २८—१—३३

जेलरने आजकी तारीखका बापूका वक्तव्य लाकर दिया, उसे चार-पांच बार पढा। हृदयमें भक्ति, प्रेम, चिन्ता आदि उत्पन्न हुई।

: २७ :

डायरीसे— यरवडा मंदिर, २५—१—३३

बापूका स्टेटमेंट खूब शांतिसे ईश्वर प्रार्थना करके फिर पढ देखा, क्योंकि अभी सुबह ही वापस करना है।

१ देखिए पृष्ठ ९०, पत्र संख्या ११३।

२८

डायरीसे— यरवडा मदिर, २–२–३३

बापूसे १२-१० मे १-१५ तक १४ वी मुलाकात हुई। विविधवृत्त तथा अन्य पत्रोका खुलासा। मुझे किसी प्रकारका विचार व चिंता न करनेको कहा। वे जो कुछ भेजे, बिना विचारके मैं पढता रहू।

२९

डायरीसे— यरवडा मदिर, ६–२–३३

पू बापूसे १२ से १ तक १५ वी मुलाकात। डॉ अबेडकरके विचार, व्यवहार, हिन्दू जातिसे लडनेकी तैयारी आदिके सबधमे विचार प्रगट किये। बापूको इससे दु ख तो पहुचा ही। मदिर-प्रवेशका हाल। अपने स्वास्थ्यके सबधमे मैने बापूसे प्रार्थना की कि आप मेरे बारेमें अधिकारियोसे चर्चा न करे तो मुझे सतोष रहेगा। मै खुद अपनी खुराक, जो कुछ ज्यादा है, घटाना चाहता हू।

३०

डायरीसे— यरवडा मदिर, ७–२–३३

सवेरे बापूकी बकरियोके दर्शन हुए, आनद हुआ।

बापूने मिलने बुलाया। करीब आधा घटा स्वास्थ्यके बारेमे व जेलकी चिन्ता न करनेके बारेमे समझाकर अपने उदाहरण देकर कहा। मैने अपनी अडचने कही। बापूके कहनेसे हरिजन, अग्रेजी पत्र, गुजरातमे किन्हे भेजे जावे, उनकी फेहरिस्त जल्दीमे तैयार करके भेजी।

३१

डायरीसे— यरवडा मदिर, १३–२–३३

पू बापूसे १२-२० से १ बजे तक १७ वी मुलाकात हुई। 'हरिजन'मे एक कालम, उपवाससे लगाकर आज तककी हालत, बापू अपने हाथसे लिखा करे, यह सूचना मैने की। उन्हे पसद आई। हरिजन सोसाइटीके विधानके बारेमे थोडी सूचना की, उन्होने लिखकर भेजनेको कहा। अम्बेडकर, राज-भोज, रा व राजा वगैरहके बारेमे उनका मत जाना।

* — *

बापूने कहा कि 'विनोबा' तीन वर्षके अन्दर ब्रह्मकी प्राप्ति कर लेने वाले है। अप्पासाहबका फैसला हो गया, अब इस बारेमे बापूके उपवासका डर न रहा। हरिजन सोसायटीका विधान तीन बजे दुरुस्त करके वापस भेजा।

३२

डायरीसे— यरवडा मंदिर, ८—३—३३

पूज्य बापूसे तेईसवीं मुलाकात करीब ४० मिनट। स्वास्थ्यका हाल, बापूने मेरे बारेमें बंबई सरकारको जो पत्र लिखा था, वह मुझे दिखा सकते हैं या नहीं, उसपर थोडी चर्चा। मैंने कहा, मेरा पूरा समाधान नहीं हुआ, आदि।

३३

डायरीसे— यरवडा मंदिर, ९—३—३३

स्काउटिंग और ग्राम-सेवाकी श्री श्रीरामजी वाजपेयी लिखित पुस्तक पर बापूने मेरी राय मगाई थी, वह लिखकर भेजी।

३४

डायरीसे— यरवडा मंदिर, १४—३—३३

आज बापूकी बकरियोंसे खेला। उन्हें रोटी खिलाई। उन्होंने गेहू नापास किया, बाजरा पास किया। उनके खान-पान व स्नानकी व्यवस्था करानी है, बाल भी बढ गये हैं।

३५

डायरीसे— यरवडा मंदिर, १५—३—३३

आज बापूको नोट भेजा, उसमें डेविड-योजनामें किनकी ओरसे मदद मिल सकती है उनके नाम लिख भेजे। श्री जानकीदेवी अगर बापूकी प्रार्थना-आज्ञा स्वीकार न करे तो बापूने उनका 'हुक्का पानी' बन्द (असहकार) करनेकी विनोदी सूचना लिख भेजी।

३६

डायरीसे— यरवडा मंदिर, १७—३—३३

बापूसे छब्बीसवीं मुलाकात। स्वास्थ्य, बापूका वजन १०५, वल्लभभाई दूध-फलके ऊपर, डेविड-योजना, म चर्खा संघ, अनन्तपुर खादी-कार्य, हरिजन उच्चवर्णके लोग कैसे बनें, नैतिक व्यावहारिक अडचनें, डॉ अंबेडकरका विरोध संभव, आदि। मेरी शंकाओंका समाधान।

३७

डायरीसे— यरवडा मंदिर, २४—३—३३

पू बापूसे अठ्ठाइसवीं मुलाकात—ईशु चरित, डेविड-योजना। नारायणदास व प्रेमाबहनको महिला-आश्रमके लिए बापू लिखेंगे। आश्रमके बीमारोंकी हालत, गुलजारीलालका स्वास्थ्य ठीक है, हरिजन बिल। बापू डॉ मोदीको पत्र लिखेंगे। बापूने कहा, मुझे बंबईमें दूध लेना चाहिये। मैंने कतल वगैरहका

कारण समझाया। बापूने उसका खुलासा किया। हो सका तो बापू शुक्रवारको पत्र भेजा करेंगे। सत्याग्रह शुद्धतासे याने सत्य व अहिंसासे नही चल रहा है। बापूको पाच वर्ष इसी माफिक निकल जाते मालूम हुए।

३८

डायरीमे— पूना, ७-४-३३

पू बापूसे डेविड-योजना, स्वास्थ्य, मोदी रिपोर्टपर चर्चा। दण्ड किसीने जमा किया। भविष्यका कार्य। वर्धा जाना जरूरी हो गया, पूनमचद राकाके बारेमे बापूने कहा, उनसे खण्डवा मिलना जरूरी है।[1] मेरे कहनेपर राघवेन्द्र रावसे मिलना भी उन्होने पसद किया। मुझे स्टेटमेन्ट देनेकी जरूरत नही। उन्होने कहा, कमसे कम एक महीना तो मुझे ठडी जगह—मसूरी, महाबलेश्वर, पचगनी, वगैरह रहना जरूरी है। मेरे पहनावेकी जानकीदेवीने चर्चा की। प्रश्न-उत्तरके बाद मामूली धोती, कुरता, टोपी, अभी निश्चित हुआ।

३९

डायरीसे— शैल आश्रम, अलमोडा, १०-५-३३

पूज्य बापूके छूटनेकी व पू बापू व श्री अणे द्वारा डेढ मासके लिए सत्याग्रह स्थगित किये जानेकी खबर मिली। बापूका व सरकारका स्टेटमेट पढा। एक प्रकारसे खुशी हुई। परन्तु ज्यादा विचार करनेसे चिन्ता रही। रातको निद्रा बराबर नही आई, पूना जानेके विचार आदिके कारण।

४०

डायरीमे— पूना-बम्बई, ३१-५-३३

पू बापूके दर्शन, इच्छाके विरुद्ध, श्री महादेवभाई व मथुरादासभाईके आग्रहके कारण करने पडे। खूब सुख मिला।

४१

डायरीमे— पूना-बम्बई, १८-६-३३

पू बापूने मुझे फिर अलमोडा जानेको कहा। शरीरकी सभाल रखनेका मैने उनसे वचन लिया। उन्होने कहा कि मुझे अभी जीना है।

४२

प्रिय जानकी, वर्धा, ३०-८-३३

पूज्य बापूजीने तुमको वही रहनेको कहा है सो एक तरह ठीक ही है। अगर तुम उनके कहनेसे वहा बनी रही और खुदा-न-खास्ता प्लेगकी शिकार हो गई तो मुझे तो इतना सतोष रहेगा कि उस हालतमे पूज्य बापूजीका आशीर्वाद मिला और उसके साथ स्वर्ग भी। वहा प्लेगसे मरोगी तो बहुत करके पूज्य बापूका तो आशीर्वाद मिल ही जायगा। इससे अब तुम्हारी तरफकी चिन्ता कम है।

१ देखिए पृष्ठ १०७, पत्र सख्या १३०।

४३

प्रिय जानकी, पटना, २९–६–३४

पूनाकी दुर्घटनासे पू वापूजी तो वचे ही, साथमे चि ओम वगैरह भी वच गई। 'जिसको ईश्वर वचाने वाला है उसे कौन मार सकता है?' इस प्रकारकी घटनासे ईश्वरकी शक्ति (अस्तित्व) मे विश्वास वढता है।

४४

डायरीमे– वर्धा, ५–८–३४

वापूने कानके लिए बम्बई जानेका आग्रह किया। उन्होने कहा कि नही तो मै वम्बई चलूगा, तथा अन्य दवाओकी वाते की। जानेका निश्चय किया।

४५.

प्रिय जानकी, वम्बई, १६–११–३४

पू वापू अगर मेरी चिन्ता करना छोड दे तो मुझे कम तकलीफ हो।

४६

डायरीमे– वर्धा, २८–११–३४

गाधी-सेवा-सघका कार्य प्राय दिनभर होता रहा। वापूजीका प्रवचन हुआ। मेरा ट्रस्टी व सभापतिपदका त्यागपत्र स्वीकार करनेके वारेमे वापूने सदस्योको व ट्रस्टियोको ठीक समझाया।

.४७

डायरीमे– वर्धा, १४–१२–३४

सुवह घूमते हुए वापूके साथ मन स्थितिकी चर्चा, सभापतिका भार लेनेमे निरुत्साह, आदि।

वापूके साथ भी ग्राम-उद्योग मण्डलकी चर्चा, खूब विचारके वाद आखिर खुर्शेदवहनने इन्कार किया। मेरी स्थितिका खयाल करके वापूने हुक्म नही दिया। उन्हे दु ख हुआ। जाजूजी सभापति हुए। मनमे थोडा विचार।

·४८

प्रिय जानकी, वम्बई, २९–१–३५

मुझे तो पू वापूने ठीक प्रमाण पत्र (सर्टिफिकेट) भेजा है। तुम भी इस प्रकारके कामोमे मदद करो तो कितना अच्छा हो।

४९

डायरीसे— वर्धा, २२-२-३५

बापूजीसे २ बजेसे ४ बजे तक बातचीत, खासकर व्यापारके सम्बन्धमे। उन्होने हाउसिंग कपनीका काम ठीक बतलाया, केमिकलका पसद नही किया। रामेश्वर भी साथ था। उससे भी बात हुई।

५०

डायरीसे— वर्धा, २५-२-३५

पू बापूने वर्धासे ता २४-२-३५ को एक मित्रको इस प्रकार लिखकर दिया—"हमें किसीको पापी माननेका अधिकार नही है, क्योकि हम सब दोषसे भरे हुए हैं। जिसको हम अपनेसे ज्यादा पापी मानते है, वह सचमुच ऐसा है, यह माननेका हमारे पास न कारण है, न साधन है। एक पैसा चुराने वाला एक व्यभिचारीकी अपेक्षा अधिक पापी हो सकता है। सम्भव है कि पैसे चुराने वालेने जानबूझकर चोरी की हो और व्यभिचारीने अपनेको रोकनेका बडा प्रयत्न किया तो भी वह अपनेको रोक न सका हो। उसके शुभ प्रयत्नका किसीको ज्ञान हो सकता है ? मनुष्यके हृदयको तो सिर्फ भगवान ही जानता है। इसलिए हम किसीके पापकी तुलना न करे, लेकिन क्षमा-वृत्ति बढाते रहे, यह अहिंसा धर्मका एक लक्ष्य है।"

५१

डायरीसे— वर्धा, २१-७-३५

बापूके पास मगनवाडी; चर्खा-सघसे त्यागपत्र पर चर्चा, विचार। शकरलाल तो पहलेसे विरोधी था ही। बापूसे फैसला हुआ कि सभापतिका काम वह करेगे, सदस्य मैं रहूगा व वह जो काम लेना चाहेगे और मैं कर सकूगा, उतना किया जावेगा।

५२

डायरीसे— वर्धा, १२-१२-३५

बापूसे मगनवाडीमे मिले। उन्हे यहासे महिला-आश्रम या अपने यहा ले जानेको राजी किया, जोकि वह मगनवाडी छोडना नही चाहते थे।

५३

डायरीसे— वर्धा, १३-१-३६

प्रार्थनाके बाद बापूके समक्ष महादेवभाईने लीलावतीको बापूके दर्शन करानेके बारेमे दुराग्रह व जिद्द की। मेरा भी व्यवहार ठीक नही रहा। उसके दुखका अनुभव होता रहा। बापूके सामने यह घटना नही होनी चाहिये थी। उन्हे भी विचार रहा होगा।[1]

[1] उस समय बापू बीमार थे और उनकी रखवालीका काम जमनालालजीके जिम्मे था।

५४

डायरीसे– वर्धा, १४–१–३६

श्री महादेवभाईको दु खसे भरा हुआ पत्र लिखा। उनका भी पत्र आया। दोपहरको सब फैसला हो गया। सरदारका व्यवहार न्यायसे थोडा अलग मालूम हुआ। आज मनमे काफी असन्तोप व दु ख रहा और आँखे भी गीली हुई।

* *

वापूने अपने मनमे दो बाते है ऐसा कहा– एक मगनवाडीको सफल बनाना व दूसरी आखिरी लडाई लडना। वर्धा ही सेंटर रखना जरूरी।

५५

चि कमल, साबरमती आश्रम, १२–२–३६

यदि पूज्य बापू एव विनोबाको तुम सतुष्ट कर सकोगे तो मुझे अधिक कुछ कहना नही रहेगा।

५६

डायरीसे– सावली, ४–३–३६

बापूने कान्फरेन्सकी कार्य-पद्धति पर टीका की। उस समय बहुत ज्यादा क्रोध आया। इतने क्रोधका इन वर्षोमे अनुभव नही हुआ था। बापूसे भी ज्यादा पू वल्लभभाई पर क्रोध आया। मनमे दु ख, विचार खूब रहा। विनोबा, किशोरलालभाईसे बातचीत। आखिर बापू व वल्लभभाईसे खुलासा होनेपर थोडी शान्ति।

५७

डायरीसे– लखनऊ, २८–३–३६

बापूके जेलरका चार्ज लेना पडा।

५८

डायरीसे– इलाहाबाद, ६–४–३६

सुबह बापू मौन होते हुए भी बाहर अकेले घूमने चले गये। थोडी देर तक खूब विचार व चिन्ता होती रही। दौड-धूप रही। मोटर लेकर ढूढना शुरु किया। मिल गये। सरोजिनी साथ थी।

५९

डायरीसे– लखनऊ, १६–४–३६

बापूके साथ पैदल घूमने राजेन्द्रबाबू भी साथ हो गये। जवाहरलाल, सरदार, मेरी स्थिति कही। मेरा नाम (वर्किंग कमेटीमें) आखिर रखा गया, उससे थोडी अशान्ति।

जवाहरलाल आये, साथमें मौलाना आजाद। बापूसे देर तक बातचीत। मुझे भी थोड़ा क्रोध आया, जो कहना था कहा।

: ६० :

डायरीसे— वर्धा, ३०-४-३६

बापू आजसे सेगाव रहने गये, वहा उनकी व्यवस्था देखकर आना।

: ६१ :

डायरीसे— वर्धा, ५-९-३६

सुबह अस्पतालमें बापूसे बाते। उन्होंने अपने स्वप्नकी थोडी बाते कही। मनोरंजक थी। बादमें उन्हें ज्यादा बोलनेको मना किया।

: ६२ :

डायरीसे— वर्धा, १८-९-३६

बापूको करीब ९-४५ बजे भविष्यवाणीकी बात अकेलेमें कही।[१] विनोद, हँसी। उन्होंने अपने बारेमें विचार कहे कि जून १९३७ तकका समय मैंने निकाल दिया तो फिर पाच-सात वर्ष निकल जाना स्वाभाविक है।

: ६३ :

प्रिय जानकी, वर्धा, १८-९-३६

पूज्य बापूके बारेमें भविष्यवाणी, जैसी आशा थी, पूरी तरहसे झूठ साबित हुई। कल ता० १७ को शामको सिविल सर्जनको ले जाकर भली प्रकारसे जाच कर ली थी। ब्लड प्रेशर, हार्ट बहुत ठीक था। बापू खूब विनोद करते थे। आज सुबह बापूको अकेलेमें मैंने ९॥। बजे करीब यह बात कही। वह तो खूब हँसे — विनोद किया। औरोंसे ज्यादा चर्चा नहीं की। अब कल खूब विनोद करेंगे। सरदार भी कल आ जावेंगे। अब आगेसे भविष्यवाणी पर ज्यादा श्रद्धा नहीं रखना।

: ६४ :

डायरीसे— वर्धा, २०-९-३६

दोपहरको घनश्यामदास व सरदारके साथ सेगाव बापूके पास जाकर आये। सरदार व घनश्यामदासने भी मुझसे व्यापार आदि कम करनेके लिए खूब आग्रह किया। बापूने भी मदद करनेको कहा। विचार।

: ६५ :

प्रिय कमल, वर्धा, २८-९-३६

श्री वकीलकी बापूके सबधकी १८ ता० को दिनके १० बजे हार्ट फेल होनेकी भविष्यवाणी गलत ठहरी। इसका तो समाधान है, परन्तु उस भविष्य-

[१] एक ज्योतिषीने जमनालालजीसे १६ सितबरको भविष्यवाणी की थी कि १८ सितबरको दिनमें १० बजे गाधीजीकी मृत्यु हो जायगी।

वाणीसे तुम्हारी मा बहुत चिंतित रही। मुझे भी थोडी चिन्ता रही। व्यवस्था रखनी पडी। बिना कारण तार खर्च भी हुआ। मुझे तो विश्वास नही था, भविष्यमे तुम भी खयाल रखना।

: ६६ :

डायरीसे– वर्धा १८–२–३७

सेगावमे पू बापूजीसे सम्मेलन-सभापति, काग्रेस-सभापति, जाजूजी, ग्राम-उद्योग कार्य, मेरी मानसिक स्थिति व कमजोरीके बारेमे बाते। फिर मिलकर खुलासेवार बाते करना।

: ६७ :

डायरीसे– सेगाव, २१–२–३७

बापूके साथ घूमते समय मन स्थिति, मनकी कमजोरी, ब्रह्मचर्य आदिके सबधमे बाते। स्थिति साफ तौरसे उदाहरण देकर कही। बापूने स्थिति समझी व थोडा उपाय बतलाया। फिर बाते होगी। हिन्दी साहित्य सम्मेलन तथा काग्रेसके सभापतित्व आदि सबसे अलग हट जानेके बारेमे बाते हुई।

: ६८ :

प्रिय कमल, जूहू (बम्बई), ३–६–३७

बापूजीको तुम्हारे विवाहमे ले जानेका आग्रह करनेका उत्साह नही होता है। वह तो वैसे ही कलकत्ता जाना पसन्द नही करते है।

* * * *

मेरा तो विचार है कि अगर तुम्हे जचे तो तुम दोनो भाई विवाहके पहले जैसे जनेऊ लेते है, वैसे ले लो। बापूजीने महादेवभाईके लडकेको व एक औरको इसी प्रकार दिलाया था सो मेरा भी मन करता है। फिर जैसी तुम्हारी मरजी।

: ६९ :

प्रिय जानकी, जुहू (बम्बई), १३–१०–३७

पूज्य बापूजी आ गये। वह तो टाईफाइडके सबसे बडे अनुभवी डाक्टर है। नर्सिंगका इन्तजाम खूब अच्छा रखना।

: ७० :

चि कमल, वर्धा, २–१२–३७

पू बापूजीका स्वास्थ्य इधर ज्यादा नरम रहता है। ब्लड प्रेशर सुबह २००-११४ होता था। दोपहरको कभी-कभी १५४-९० भी होता है। इतना

हमेशा रहे तो बहुत ठीक हो। डाक्टर लोगोको भी थोडी चिन्ता है। इन्हे पूरा आराम मिले इसका खयाल तो रखा जाता है। मै प्राय सेगावमे ही सोता हू। मुलाकात वगैरह बन्द है। यहा आराम नही हुआ तो फिर इन्हे समुद्रतट पर ले जाना पडेगा। वह तो जाना नही चाहते है। तुम चिन्ता न करना। ईश्वरको उनसे सेवा लेनी होगी तो कोई जोखम होनेवाली नही है।

: ७१ :

डायरीसे— वर्धा, ९–१–३८

सेगाव — बापूसे महादेवभाईके साथ बातचीत। उन्हे हरिपुरा काग्रेस तक पूरा आराम लेनेको कहा, परन्तु कोई फल नही निकला। बापूकी इच्छा मुताबिक महादेवभाई मुलाकात प्रोग्राम आदिकी व्यवस्था करेगे।

: ७२ :

डायरीसे— वर्धा, २६–१–३८

सेगाव — बापूसे सेगावका हिस्सा व अन्य इमारते आदि ग्राम-सेवा मडलको देनेके बारेमे विचार-विनिमय। बापूने अपना भावी कार्यक्रम व इच्छा बतलाई। उन्हे अब सेगाव छोडना नही है। फ्रटियर रहना पडे तो हिन्दू-मुस्लिम एकताके लिए विचारणीय है।

: ७३ :

डायरीसे— वर्धा, २९–१–३८

सेगाव — बापूसे सेगाव दान देनेके बारेमें बातचीत। मालगुजारीका हिस्सा दान देनेमे व्यावहारिक अडचन। बगीचा व जमीन दान देनेका निश्चय, वसन्त पचमीसे।

: ७४ :

डायरीसे— विठ्ठलनगर, हरिपुरा, १३–२–३८

सुभाषसे जितनी बाते हुई वे सब घूमते हुए बापूको सुना दी। उन्हे पसन्द आई। सुभाष बापूसे मिल लिये, वही बाते हुई।

: ७५ :

डायरीसे— विठ्ठलनगर, हरिपुरा, १६–२–३८

बापूके साथ बातचीत। मै वर्कीग कमेटीमे नही रहूगा, मुझे इसमेसे निकाले। उन्होने कबूल तो किया और हालत समझाई।

: ७६ :

डायरीसे— विठ्ठलनगर, हरिपुरा, २२–२–३८

बापूके जानेकी तैयारी। उनसे मिलना। बापूने अन्दर बुलवाया व मित्रोका तथा सुभाषबाबूका आग्रह कि मै वर्किंग कमेटीमे रहू, उन्होने चालू रखा। मैने इन्कार किया।

: ७७ :

डायरीमें- वर्धा, ३-३-३८

सेगाव – बापूके पास। विनोबा, महादेवभाई साथमें। बापूसे नागपुर प्रान्तिक कांग्रेस कमेटीसे त्यागपत्र देनेके बारेमें विचार-विनिमय। देर तक बापूने अपनी नीति कही, सब जवाबदार कार्यकर्ताओंको कांग्रेसमें सम्मिलित होना चाहिये।

: ७८ :

डायरीसे- डेलाग, २८-३-३८

बापूने हिन्दू-मुस्लिम दंगेके बारेमें जो प्रस्ताव रखा था, उस बारेमें मेरी शंकाओंका समाधान करते हुए एक घंटे करीब भाषण किया।

: ७९ :

डायरीसे- कलकत्ता, ३-४-३८

वर्किंग कमेटी ८ से ११-३० और २ से ७ तक हुई। दो से पांच तक बापूजीके साथ नागपुर-शरीफ प्रकरण चला। सुबह सुभाषबाबूके घर डॉ. खरेने जो परिस्थिति कही उससे तो स्थिति एकदम बदली हुई मालूम हुई। विचार-विनिमय। बापूजीके सामने मैंने मि. शरीफको यहां बुलानेके बारेमें जो विचार कहे, वे सरदारको बिलकुल पसन्द नहीं आये। कई और मित्रोंको बहुत पसन्द आये। खैर।

: ८० :

डायरीसे- वर्धा, १९-४-३८

सेगाव – बापूसे करीब सवा घंटा बातचीत। जयपुर प्रजा मंडल, खादी प्रदर्शनी, वर्किंग कमेटी, स्वास्थ्य व मानसिक स्थिति, महिला मंडल व परीक्षा, मानसिक अशांति व महर्षि रमण, इत्यादि प्रश्नोंपर विचार-विनिमय।

: ८१ :

डायरीसे- वर्धा, २२-४-३८

सेगावमें बापूने दिल खोलकर स्पष्ट तौरसे मनकी स्थिति, कमजोरीका वर्णन किया। बापूने जवाब दिया। अपनी स्थितिका वर्णन किया। किशोरलालभाई, राजकुमारी, प्यारेलाल, मीराबहन वगैरह वहां मौजूद थे। मन थोडा हलका भी हुआ व दुःख भी हुआ।

: ८२ :

डायरीसे- (रेलमें) सवाई माधोपुर, जयपुर, ३०-४-३८

जिनासे समझौतेकी जो बात चल रही है, उस बारेमें बापूने अपने विचार कहे। मिनिस्ट्रीके बारेमें विचार-विनिमय। फ्रंटियरके बारेमें

महादेवभाईका नोट पढा। थोडा दु:ख हुआ। बापूके पास ही नाश्ता किया। बापू अपनी निराशाकी बाते करते थे, मैं अपनी।

: ८३ :

डायरीमे— वर्धा, २३-६-३८

जानकीसे कहा कि बापूको कहकर मन हलका कर लो, परन्तु वैसा नही हो सका।

: ८४ :

डायरीसे— देहली, १-१०-३८

पू बापूके पास सरदार, घनश्यामदासजी, तीन बजेसे साढे चार बजे तक। सरदार वल्लभभाईका व मेरा मतभेद था, उसका खुलासा। आखिरमे यह भेद बहुत तीव्र स्वरूपका व दु:खदायक हो गया था। और तो कारण थे ही, यह भी एक कारण महत्वका था, जिससे वर्किंग कमेटीसे मुझे निकलना आवश्यक मालूम हुआ। पू बापूने स्वीकृति दी। त्यागपत्रके मसविदेमे थोडी दुरुस्ती बापूने की।

: ८५ :

डायरीमे— देहली, २-१०-३८

'वर्किंग कमेटीके पदसे त्यागपत्र दिया। बापूजीने सुन्दर व साफ तौरसे मेरी वकालत की। मैंने भी जो कहना था थोडेमे कहा। मेम्बर लोग स्वीकार करना नही चाहते थे। पू बापूने विश्वास दिलाया कि वह ठीक कर लेगे।

: ८६ :

डायरीसे— वर्धा, १७-१०-३८

सुभाषबाबूसे देर तक बातचीत। उनका आग्रहपूर्वक कहना था कि वर्किंग कमेटीसे मेरे त्यागपत्र स्वीकार करनेमे बहुत ज्यादा गलतफहमी फैलेगी। कई उदाहरण दिये। कमलसे बात हुई वह कही। वर्किंग कमेटीके सभी मेम्बरोकी इच्छा है कि मुझे त्यागपत्र नही देना चाहिये, इत्यादि। मैंने अपनी मानसिक स्थिति समझाकर कही। उन्होने आराम लेने व छुट्टी लेनेको कहा। उन्होने कहा, वह पू बापूको पत्र लिखेगे।'[1]

: ८७ :

डायरीसे— वर्धा, २७-११-३८

बापूसे बात करनेके नोट तैयार किये।

१ देखिए पृष्ठ ३६१-२, पत्र सख्या ३६।

सेगाव – बापूसे सवा घंटेके करीब बातचीत। मेरे जन्मदिनका पत्र[1] उन्हें नहीं मिला। आश्चर्य हुआ। प्यारेलालसे बातचीत। उसे भी पत्र नहीं मिला। बापूसे खुलासा।

मेरे त्यागपत्रोंके बारेमें वर्किंग कमेटीके समय मैं बाहर रह सकता हूं, उन्होंने कहा। जयपुरकी जिम्मेदारी नहीं छोडी जा सकती। नागपुरकी भी। परन्तु नागपुरकी तो शायद छोडी भी जा सकती है, अगर वह मेरा कहना न माने तो। राजकोटका उदाहरण जयपुर, उदयपुर, हैद्राबादको नहीं लागू करना चाहिये, बापूने साफ व जोरसे कहा।

: ८८ :

डायरीसे– मोरा-सागर, २८-२-३९

मुझे विनोबाके सत्संगमें अधिक रहना चाहिये। इसीमें मेरा मार्ग साफ निष्कंटक हो सकेगा व जीवनमें असली उत्साह प्राप्त हो सकेगा।

बापूके प्रेमका व उदारताका खयाल करता हूं तो अपनेको बहुत नीचा व नालायक समझने लगता हूं। बापूको समय बहुत कम मिलता है, इसलिए उनसे भी कई बार न्यायके मामलेमें गलतियां होती दिखाई देती हैं। परन्तु उनके मनमें द्वेष, ईर्षा, किसीका बिगाड हो यह वृत्ति न होनेसे उसका परिणाम ज्यादा कर ठीक ही होता है।

: ८९ :

डायरीसे– मोरा-सागर, ८-३-३९

बापूके उपवास करनेकी, छोडनेकी व राजकोटका मामला सुलझनेकी खबरें पढकर सुख मिला। दो तीन रोजसे जो निरुत्साह था, वह चला गया।

: ९० :

डायरीसे– मोरा-सागर, ३-५-३९

बापूने जयपुर-कैदियोंके बारेमें जो लिखा वह देखा। मेरा भी उल्लेख किया है। इन दिनोंमें मेरी तो इच्छा रही कि मेरे स्थान बदलनेके बारेमें या साथी देनेके बारेमें कोई भी कोशिश न हो तो ठीक रहे। अब लगता है कि मुझे यहांसे जल्दी ही दूसरे स्थान पर ले जावेंगे।

: ९१ :

डायरीसे– (जयपुर कैदी) कर्णावतोंका बाग, २-८-३९

आज दोपहरको स्वप्न आया कि महादेवभाई व पू बापू मुझे देखने आये। स्वास्थ्य व जयपुर स्थिति पर बातचीत। बादमें उन्होंने ए जी जी (राजपूताना रेजिडेंट) से मिलने जानेकी तैयारी की। इतनेमें आंख खुल गई।

१ देखिए पृष्ठ २०२-४, पत्र सख्या २६१।

: ९२ :

डायरीमें— वर्धा, १९-८-३९

सेगांव—बापूजीके पास गये। बापूजीने मेरे बारेमें डॉ भरूचा, जीवराजजी व डॉ मेहताकी रिपोर्ट ध्यानपूर्वक सुनी। विचार-विनिमयके बाद पूना रहकर डॉ मेहताकी देखरेखमें इलाज करानेकी बापूने सलाह दी। जयपुर जाना जरूरी है, इसलिए एक महीने तक इच्छा हो तो डॉ दासकी होमियोपैथिक चिकित्सा करके देख लूं। बापूने कहा, अनाज खाना एक बार बन्द कर दो। फल, साग, दूध लो। आजसे शुरू तो किया है।

: ९३ :

डायरीमें— वर्धा, २०-८-३९(?)

बापूके पास जाकर आये। जयपुर राज्य प्रजा मंडलके बारेमें नाममें थोड़ा परिवर्तन करना जरूरी मालूम दे तो कर लिया जावे। प्रजा मंडलके आफिस-बेअरर दूसरी राजनैतिक संस्थाके नहीं हों, यह बात बिल्कुल स्वीकार न की जावे। अगर अधिकारी लोग लड़ना ही चाहते हों तो हम लड़ेंगे। थोड़े चुने हुए साथियोंको लेकर मुझे स्वास्थ्यके लिए व संचालनके लिए बाहर रहना जरूरी होगा। त्रावणकोरमें सत्याग्रह करनेकी मैं इजाजत देनेवाला हूं। बाहरके लोगोंकी सलाह महासभाके प्रश्नके विरोधके बारेमें बापूको कहा। मेरे त्यागपत्र, कांग्रेस-सभापति, गान्धी सेवा संघ सभापतिके बारेमें विचार-विनिमय।

: ९४ :

डायरीसे— दिल्ली, ८-१०-३९

बापूके सामने वाइसरायसे मिलनेके बारेमें मौलानाने ना कहा। बापूको बुरा लगा। समझाना। मुझे तो मौलानाके कहनेमें सार मालूम हुआ।

बापूने शामकी प्रार्थनाके बाद खानगीमें अपनी कमजोरियोंका पूरा चित्र खोलकर कहा। उन्होंने हिम्मत व उत्साह दिलाया।

: ९५ :

डायरीसे— ८-१०-३९

वर्किंग कमेटी ८॥ से ११ व २ से ८ तक हुई। बापूका खुलासा दोपहरकी वर्किंग कमेटीमें ठीक रहा। लड़ाईके समय अगर ब्रिटिश सरकारने वर्किंग कमेटीकी मांग मंजूर कर ली तो बापूके व्यवहारका खुलासा ठीक हुआ। बापूको चोट तो खूब पहुंच रही है, परन्तु उपाय क्या?

देशी रियासतकी कार्यकारिणी जवाहरलालजीके सभापतित्वमें हुई। वहां १० बजे रात तक बैठना। जवाहरलालजीका स्टेटमेंट ठीक हुआ। मेरे

बारेमे भी जिक्र किया। वर्किंग कमेटी यह पोर्टफोलियो मुझे सौंपना चाहती है। बापूने मुझसे कहा, तब मैंने कहा कि मेरी अभी तैयारी नही है।

: ९६ :

डायरीसे— रामगढ कांग्रेस, १८–३–४०

वर्किंग कमेटी सुबह हुई। बादमे दोपहरको बापूकी उपस्थितिमे हुई। बापूको जवाबदारीसे मुक्त करनेके प्रस्तावको मौलाना, सरदार, जवाहरलाल वगैरहने नही माना। मै मुक्त करनेके पक्षमे था। प्रफुल्लबाबू, देव, पट्टाभी, और राजाजीकी राय मेरे साथ थी।

: ९७ :

डायरीसे— वर्धा, २२–३–४०

बापू रामगढसे आये, उनके साथ पैदल बगले तक आया। टॉगमे थोडा दर्द तो था ही। बापूने माके कान पकडे, माने बापूके कान पकडे। हँसा-हँसी।

: ९८ :

डायरीसे— पूना, २८–७–४०

ऑल इडिया काग्रेस कमेटी ८–१५ से ११–१५ तक व २ से ८–३० तक हुई। आज काम समाप्त हुआ। देहली प्रस्ताव पर मत पक्षमे ९५, विरुद्धमे ४७। तटस्थ नही गिने गये। सब मिलकर उपस्थिति १९० के करीब होनी चाहिये। प्रस्ताव पास तो हुआ, परन्तु मनमे समाधान नही मिला। जवाहरलालका भाषण ठीक हुआ। राजाजीका भाषण व जवाब तो ठीक था, परन्तु बापूके बारेमे अव्यवहारिक आदि समालोचना जो उन्होने व सरदारने की वह थोडी बुरी मालूम दी, क्योकि इन लोगोके मुहसे इन बीस वर्षोमे पहली बार ही इस प्रकार सुननेको मिला। वैसे तो मेरी भी राय इनके साथ ही थी, परन्तु वह कमजोरी आदिके कारणोको लेकर।

: ९९ :

डायरीसे— नई दिल्ली, १–१०–४०

बापूजीने शिमलाकी बातचीतका साराश कहा। बापूजीके साथ घूमना। नीचे लिखे प्रश्नोका खुलासा व उन्होने वाइसरायसे जयपुरके बारेमे बाते की, वे सुनी। वाइसराय व आजादीका खुलासा सुना। मुझे जयपुरकी स्थिति सुलझानेमे ही विशेष समय लगानेकी सलाह दी। राजा ज्ञाननाथजी चिढकर जेल आदि भेजे तो ठीक ही है। राजेन्द्रबाबूको सीकरमे ही आराम लेने देना। वर्किंग कमेटीमे न आनेसे चलेगा, कहा। खादीकी जो रकम बम्बईमे जमा हुई, उसमे राजस्थानकी रकम राजपूतानाके लिए ईअरमार्क करनेको मैने कहा। उन्होने सुन लिया – विरोध नही किया। एक लाख तक। भावी प्रोग्रामकी थोडी रूपरेखा समझी।

: १०० :

डायरीसे— वर्धा, १३-१०-४०

पू बापूके साथ पौनार। विनोबासे बातचीत। प्रथम सत्याग्रहीके नाते विचार-विनिमय। विनोबा अपना बयान तैयार करेगे। बापू स्टेटमेंट बनावेगे। विनोबा बापूसे ता १५ मगलवारको दो बजे मिलेगे। बादमे निश्चित होगा। बहुत करके पौनारसे विनोबा बुध या गुरुवारको सत्याग्रह शुरू करेगे।

: १०१ :

डायरीमे— नागपुर जेल, १५-१-४१

विनोबाके प्रति दिन-दिन श्रद्धा बढती ही जाती है। परमात्मा मुझे अगर इस देहसे उनकी श्रद्धाके योग्य बना सके तो वह दिन मेरे लिए धन्य होगा। मुझे दुनियामे बापू पिता व विनोबा गुरुका प्रेम दे सकते है, अगर मै अपनेको योग्य बना सकू तो।

: १०२ :

डायरीसे— नागपुर जेल, १४-५-४१

बापूजी इतना प्रेम क्यो करते है? विनोबा भी। बापूजीको मेरी इस बीमारीके कारण दो तीन रोज बहुत बेचैनी रही। डा दास कहते थे वे यहा मुझे देखने आनेको भी तैयार थे। परन्तु मेरे मना कराने पर व डॉ दासने भी कहा कि जरूरत नही है, तब नही आये।

१०३

डायरीसे— सेवाग्राम, १४-६-४१

बापूजीसे जेल जानेके बाद आज प्रथम बार खानगी बातचीत। किशोरलालभाई, राजकुमारी अमृत कौर, गोमतीबहन, डॉ सुशीला वहा थे। मैने अपनी मानसिक स्थिति कही। ता १४ मईको नागपुर जेलमे डायरीमे जो नोट किया था, वह पढकर सुनाया। अन्य विचार-विनिमय। बापूको डायरी सुनानेके बाद मन थोडा हलका हुआ।

: १०४ :

डायरीसे— सेवाग्राम, १९-६-४१

पू बापूसे स्वास्थ्य, प्रोग्राम, मन स्थिति पर थोडी देर बात। उनकी इच्छा यह रही कि इस समय मुझे यही रहना चाहिये। मुझे एकान्तमे १५-२० मिनट रोज कुछ समय तक देना सम्भव हो तो, जो समय बापूको अनुकूल हो, देनेको कहा।

: १०५ :

प्रिय जानकी, सेवाग्राम, २४-६-४१

पू. बापूसे, मौका लगने पर, मैं ही मेरे क्रोध आदि आने व मेरा व्यवहार तुम्हें प्रायः असन्तोष देनेवाला होता है, इत्यादिके बारेमें कहना चाहता हूं। तुम्हें तो कहनेका पूर्ण अधिकार है ही। कोई रास्ता निकल सके तो सन्तोष ही होगा। ज्यादा क्या लिखूं?

: १०६ :

डायरीमें– सेवाग्राम, २६-६-४१

पू. बापूसे आज घूमते समय व बादमें १० से ११ तक एकान्तमें मन स्थिति पर साफ-साफ बातें। अपनी स्थिति ज्यादा स्पष्ट तौरसे समझा सका। अब मुझे आशा हो गई है कि वे मेरी स्थिति पूरी तौरसे समझ गये हैं। परमात्माने चाहा तो कोई मार्ग निकल आवेगा।

: १०७ :

चि. मदू, शिमला वेस्ट, १९-७-४१

यहां एक तोफाबाई है। इसमें घरके सब लोग इतना प्रेम करते हैं व सेवा इतनी ज्यादा करते हैं कि सचमुच आश्चर्य होता है। तुम्हारी मा व बाप इतना प्रेम व सेवा पू. बापू, विनोबा या अन्य गुरुजनोंकी या बालकोंकी कर सकें तो कितना अच्छा हो! यह तोफाबाई[1] कौन है, यह पू. बापूसे पूछ लेना। वह जानते हैं। उनकी गोदमें भी बैठनेका इसे सौभाग्य मिला है।

: १०८ :

चि. मदू, शिमला वेस्ट, २४-७-४१

बापूको पत्र इसलिए नहीं लिखता कि उन्हें जवाब लिखना पड़ेगा। बहन तो रोज लिखती ही है। बापू भी उन्हें लिखते रहते हैं, फिर दुहेरा क्यों बापूका काम बढ़ाऊं? तुम कह ही देती होगी।

तुझे तो बापू ग्वारपाठेका पाक खिलाते हैं और मुझे पेट भरकर रोटी भी नहीं देते! मिठाईकी तो बात ही कहां? क्या यह इन्साफ है?

: १०९ :

चि. मदू, मनोर विले, शिमला, २८-७-४१

एक बात अगर तुम्हारी मा कर सके याने पू. बापूके ऊपर हृदयसे पूरी श्रद्धा बढ़ा सकें तो मुझे आशा है उसे खूब लाभ पहुंचेगा। बीच-बीचमें उसे बापूसे बात करनेका मौका मिलता रहे तो ठीक रहेगा। तुम भी इस बातका खयाल रखना। मैंने भी बापूको सूचित तो कर दिया है। बापू पर बोझ न

१ राजकुमारी अमृत कौरकी कुतियाका नाम।

पडते हुए उनके अनुभवोंमे हम लोगोंको लाभ अवश्य उठाना चाहिये। बापूसे ज्यादा शुद्ध प्रेम और कहामे मिलनेवाला है ?

११०

चि मद्दू, रायपुर ग्राट, देहरादून, २१–८–४१

मुझे बाप तो बापू मिल ही गये थे, मा आनन्दमयीजी मिल गई । अब भी मुझे शान्ति नही मिली तो मेरा ही कोई भारी पाप आडे आना सम्भव होगा। मुझे आशा है, शान्ति जरूर मिल जावेगी। मा आनन्दमयीसे मिलनेकी सूचना तो पूज्य बापूने ही की थी।

: १११ :

चि मद्दू, १०–९–४१

पू बापूजीसे मिलने पर खानपानके बधन थोडे ढीले करनेकी इच्छा है, अन्यथा सफरमे थोडा कष्ट होता है। खर्च भी ज्यादा आता है। मौका लगे तो मेरे पत्रका साराश पू बापूसे कह देना।

: ११२ :

डायरीसे– १–१–४२

पू बापू काग्रेससे अलग हुए। वह सब पढकर थोडा बुरा मालूम हुआ। परन्तु विचार करने पर लगा कि ठीक ही हुआ।

. ११३ :

डायरीसे– गोपुरी, १३–१–४२

वर्किंग कमेटी सुबह ९ से ११, दोपहरको २–१५ से ६–१५ तक हुई। दोपहरकी मीटिंगमें पू बापूजी भी आये। ठीक चर्चा, विचार-विनिमय हुआ। मेरे त्यागपत्रके बारेमे बापूजीने कहा कि मौलाना तथा अन्य सदस्योकी वृत्ति त्यागपत्र स्वीकार करनेकी नही है तो फिर मुझे इस समय आग्रह नहीं करना चाहिये। मै अपने मन पर बोझ नहीं रखू, इत्यादि।

परिशिष्ट ३

हिन्दी नवजीवन, यंग इंडिया, हरिजन सेवक तथा हरिजनसे जमनालालजी संबंधी चुने हुए अंश

THE ISSUE IN NAGPUR

In one of his memorable articles on Civil Disobedience Mahatma Gandhi has expressed his dream of ideal civil resisters They would be, he said, like flocks of innocent lamb, being led to the slaughter house, with full consciousness of the fact

* * * *

When I visited Nagpur last week, and when I saw batches of volunteers with the Swarajya Flag, being led to the scene of Satyagraha by Seth Jamnalalji, I saw with my own eyes the dream of Mahatmaji realised It was a privilege to watch these valiant bands march through the town to the Civil Lines, doomed to be arrested and led to prison They were marching cheerfully on

* * * *

The Mussalman community has also given more than its full quota, and the fair sex is also represented

And what is it that has drawn such devoted fighters to this movement? Surely it is the unique sacrifice of the men who are leading the movement, and their simple faith But no less is the justice of the cause responsible for the hearty response 'Surely you should not offend the susceptibilities of those who are devoted to the Union Jack?' was the question put to Shriyut Jamnalalji by one of the police officers Straight went the reply 'Why should they resent the Swarajya Flag? They might to-morrow resent my white cap and my Khadi dhoti Am I therefore to discard them when I enter those sacred precincts called *the Civil Lines*?' That is the position so truly put by the man, than whom no one has sacrificed more for the Constructive Programme, but who feels that even his absorbing interest in that programme should not allow him to swallow the insult

* * * *

I want to emphasise the fact that there is not a trace of aggression in Shriyut Jamnalalji's movement

* * * *

Here therefore is a fight which the rest of the country cannot look on with indifference or even amused interest I think the least that the All India Congress Committee can do is to set the seal of their approval on the Nagpur movement

* * * *

It is a fight which if it is fought to the finish is fraught with great potentialities It is a fight which will prepare people for an undertaking of a larger magnitude, viz, Mass Civil Disobedience I hope, therefore, that the Working Committee and the next All-India Congress Committee will give the question the consideration that it deserves

Young India, 17-5-23] —*Mahadev Desai*

GO TO NAGPUR

"I trust that by God's grace and the blessings of Bapu and all other elders I shall be able to pass the incarceration with courage and peaceful mind and utilise the time in spiritual meditation"

So wrote Jamnalal Bajaj, the beloved of the nation, on 16th June in a letter written the day before his arrest "There is every probability of the leading workers being arrested possibly before 18th instant," he said in the same letter, and the statement has proved true Those who have known Seth Jamnalal Bajaj and his work during these last three years, will understand the true sincerity and depth of feeling hidden in the simple words reproduced above which he wrote in expectation of his arrest Of Jamnalalji's generosity and unlimited readiness for sacrifice of any sort that the cause demanded, the nation knows No one had tasted like Jamnalalji the sweets of domestic happiness, wealth, position, influence and what is coveted by men more than anything else—friendship with the great and the powerful, in short everything that makes for abstinence from the sufferings and privations involved in the great enterprise initiated by Mahatmaji Yet in a moment he changed his life completely and spurning all the ease and pleasures that could be purchased by his wealth and the power and influence that lay at his feet he

plunged into the thick of the fight like the humblest worker Who can say our nation has not risen in stature?
Young India, 21-6-23] —*C Rajagopalachari*

धर्मवीर जमनालालजी

"जिस दिन मैं महात्माजीके पुत्र-वात्सल्यके योग्य हो सकूँगा, वही समय मेरे जीवनके लिए धन्य होगा। महात्माजीकी अनुपम दयासे अपनी कमजोरियोको तो कमसे कम थोडा वहुत पहचानने लगा हूँ।"

इन मृदुल वचनोमे मृदुल-हृदय जमनालालजीका सारा जीवन समा जाता है। दो वर्ष पहले, जब वे नागपुर-महासभाकी स्वागत-समितिके सभापति थे, मैंने उनका कुछ परिचय पाठकोको कराया था। पर आज मैं देखता हूँ कि उनके थोडे परिचयसे जमनालालजीका जो वर्णन मैंने किया था वह अब गाढ परिचय हो जाने पर भी, ज्योका त्यो बना हुआ है। इसकी कुजी है उनके जीवनकी सरलता। सिर्फ दो ही दिनके सहवाससे आप उन्हे पहचान सकते है और फिर वर्षो तक उनके सबधकी अपनी धारणाको बदलनेकी जरूरत आपको न रहेगी।

जमनालालजी स्वभावत बडे प्रेमी और उदार है। इससे जिन लोगोका साबका उनसे पडता है उनका हृदय वे अपने लडकपनसे ही जीतते आये है। धनाढ्य जनको आश्रित, खुशामदिये तथा अगरेजी हाकिम आम तौर पर घेरे रहते है। उन सबने उनकी अमियभरी चितवनका अनुभव किया है। पर वे यह मन्त्र लडकपनसे ही सीखे है कि लक्ष्मी दुर्लभ रत्न है। उसका नाश करनेसे दुलत्तियाँ खानी पडती है। वह तो तभी श्रेय कार्योमे बाधक नही हो सकती जब उसे अपने काबूमे रक्खा जाय। इसलिये वे तभीसे साधु-समागम करने लगे। "लक्ष्मीके बदौलत प्राप्त प्रतिष्ठा क्षणिक है, परन्तु सच्छील प्राप्त प्रतिष्ठा चिरस्थायी है," यह जानकर ही उन्होने लो तिलक, मालवीयजी, इत्यादिका समागम किया। 'जयन्ती अक' मे आप लिखते है-"इन सब महान् नरोका परिचय मेरे लिए लाभदायक हुआ, पर महात्माजीने तो मेरी मनोभूमिका ही बदल दी।" अनेक सत्पुरुषोका समागम करते करते बापूजी उन्हे मिले। उन्हे उन्होने अपना हृदय-देव बनाया। १७वी महासभाके समय उन्हे 'रायबहादुर' का खिताब मिला। कलकत्तेमे वे बापूजीके पास आकर कहते है-"मुझे आशीष दीजिएगा?" बापूजीने कहा-"आशीर्वाद क्या दूँ? इसका सदुपयोग करो। अपमान सचित करना आसान है, पर खिताबकी रक्षा करना मुश्किल है। खिताब बुरी चीज है। उसका सदुपयोगकी अपेक्षा दुरुपयोग ही अधिक होता है। आप हर मौके पर इसका सदुपयोग कीजिए। मै चाहता हूँ कि यह आपके उत्कर्ष और देशभक्तिके लिए

बाधक न हो।" सच पूछिए तो उसी दिन उन्होंने दीक्षा ली। उसके बाद दिन-पर-दिन उन्होंने अपना उत्कर्ष ही किया है—दिन-पर-दिन वे अपने गुरु, अपनेको पुनर्जन्म दिलानेवाले पिताके पात्र होनेके लिए अधिकाधिक योग्य होते गये हैं।

नागपुर-महासभाके समय वे अपनी 'रायबहादुरी' छोडकर राजनीतिके क्षेत्रमे उतरे। असहयोगके कामके लिए एक लाख रुपये बापूजीके चरणोमे अर्पण किये। उस समय उनके मनकी स्थिति अद्भुत थी। एक दिन बापूजीने मुझसे कहा' "इनकी नम्रताका तो कोई ठिकाना ही नही। मुझसे कहते हैं कि मुझे देवदासकी तरह मानिए। मुझे आज्ञा कीजिए, मेरी भूले सुधारिए, मुझे पाचवा पुत्र समझिए।" मित्र और स्नेहीके बदले वे नागपुरमे पाचवे पुत्र बने। उस दिन उनकी जिम्मेदारी पहलेसे अधिक बढी। उस दिनसे वे प्रत्येक काम करते समय अपने दिलसे यही पूछने लगे "बापूजी मुझे यदि यह काम करते समय देखे तो उनके दिल पर क्या असर हो?" और उनके अनुसार वे काम करते है। तबसे लेकर अबतकके उनके कार्योका रहस्य इससे जाना जा सकता है।

ये बहुत पढे-लिखे नही है। हिन्दी, मराठी, गुजराती थोडा-बहुत जानते है। कुछ ही दिनोंसे वे राजगोपालाचार्यजीके साथ वैसी ही टूटी-फूटी अगरेजी बोलना सीख गये है जैसी कि राजगोपालाचार्यजी टूटी-फूटी हिन्दी बोल लेते है। पर इस कमीसे, शानदार शिक्षाके अभावसे, उनका काम नही अटकता। उनकी व्यवहार-दक्षताको देखकर राजगोपालाचार्यजी ही नही, बल्कि विट्ठलभाई पटेल जैसे भी दग रह जाते है। पर जैसा कि मै ऊपर कह चुका हूँ यह बाहरी व्यवहार-दक्षता नही। उसके मूलमे उनका यही भाव रहता है कि—"यह काम बापूजीको पसद होगा या नही?" जो टाटा-कपनी मुल्शी-पेटावालो पर अत्याचार करती है, उसके शेअर कैसे भर सकता हूँ? कलकत्तेकी दुकानके सिलसिलेमे अदालतोमे बहुत जाना पडता है, इसलिए क्या कलकत्तेकी दुकानका काम बन्द कर देना ठीक नही? ऐसे सवाल ये बारबार पूछा करते है, और उत्तर प्राप्त करके उनका फैसला तुरन्त कर देते हैं।

उनके साथ रहने पर हम यह जान सकते हैं कि त्याग तो उनके लिए एक मामूली बात है। जब डाक आती है तब उनके पास बैठकर देखना चाहिए। एक भारी पुलन्दा डाकका आता है। सबके उत्तर तेजीसे लिखाते चले जाते है। कितने ही पत्र आर्थिक सहायता चाहनेवालोके होते हैं। "कहाँ काम करते है? कामके सबधमे इन्हे कोई पत्र लिखा है? फला शख्स बडा अच्छा काम कर रहा है। अच्छा, इतने रुपये भेज दो।" यह नित्यका काम है। बापूजी जेलमे गये। चन्देके बारेमे लोगोकी अश्रद्धा बढ गई। वे

शिथिल हो गये। उनकी श्रद्धा बढानेके लिए इसी भावसे उन्होने २॥ लाख रुपये 'सेवक सघ' स्थापित करनेके निमित्त निकाले है कि बापूजीके समयमे जितना त्याग किया उससे अधिक त्याग करनेकी अब आवश्यकता है। पर मै कह चुका हूँ कि त्याग तो उनके लिए एक मामूली बात है। लेकिन, त्यागसे मिलनेवाली शोहरत उन्हे पसद नही। वे ऐसा ही दान करनेमे आनन्द मानते है कि, 'दाहिने हाथकी खबर बाये हाथको न हो।' इस त्याग और दानसे अधिक बढी-चढी उनकी पूर्वोक्त प्रवृत्ति है—एक ही शब्दमे कहूँ तो उनका धर्म-भाव है। इस धर्म-भावके कारण वे यदि किसी दिन मनुष्य-जातिके लिए फकीर बन बैठे तो आश्चर्य नही। अमेरिकाके करोडपति लोग लाखो-करोडो रुपया दान करते है। पर उसमे उनका यह भाव प्राय रहता है कि इस अतुल सम्पत्तिका विनियोग किस प्रकार किया जाय। मानव-जातिके हितके लिए फकीर होनेका भाव शायद ही उनके दिलमे होता हो। जमनालालजीके त्यागमे यही विशेषता है।

आज जो वे असहयोग-आन्दोलनके सिद्धान्तो पर इस प्रकार अटल है उसकी कुजी उनका यही धर्म-भाव है। इसी कारण विट्ठलभाई और पण्डित मोतीलालजी जैसे मानते है कि हम सब लोगोको अपनी तरफ कर सकते है, पर इस बनियेको मिलाना मुश्किल है।

वे शान्तिके साथ खादीका काम करते थे। धन एकत्र कर लाते थे। व्याख्यानबाजीकी हवस तो उन्हे हो ही क्यो? और लडाईको न्योता देनेकी लालसा तो उससे भी कम। पर नागपुरमे ऐसी स्थिति आ खडी हुई जिसकी कल्पना भी उन्हे न थी। उन्होने अपनी शक्तिको तौलकर लडाईका शख फूँका।

'प्रारब्धचोत्तम जना न परित्यजन्ति' के भावसे वे लडाईमे कूदे और आज जेलमे बैठे हुए है।

जमनालालजी उन लोगोमेसे है जिन्हे साबरमती जेलसे बापूजीका पत्र मिलनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उनके नामका लबा पत्र[1] प्रकाशित करनेका मुझे अधिकार नही। पर उसका कुछ अश जो मदरासके 'स्वराज्य' मे आया है यहा दे देता हूँ। बापूजीने लिखा था –

"स्त्री, पुत्रादि, मित्र, परिग्रह, बन्धु ये सब सत्यके अधीन रहने चाहिए। सत्यकी खोज करते हुए यदि इन सबके सर्वथा त्याग करनेमे तत्पर रहे तभी सत्याग्रही हो सकते है। मै इसी हेतुसे इस आन्दोलनमे पडा हूँ कि इस धर्मका पालन अधिक आसानीसे हो जाय। और इसीलिए आप जैसोकी आहुति देते हुए हिचकिचाता नही। उसका बाहरी स्वरूप भारतीय स्वराज्य है।

१ देखिए पृष्ठ १५-२०, पत्र सख्या १७।

उसका सच्चा स्वरूप तो है प्रत्येक व्यक्तिका स्वराज्य। यह जो देर हो रही है उसका कारण यह है कि अभी एक भी ऐसा शुद्ध सत्याग्रही तैयार नही हुआ है। पर इससे घबडानेकी जरा भी आवश्यकता नही।"

भविष्यमें ऐसे आदर्श सत्याग्रही होनेवालोका दर्शन मै जमनालालजीमे करता हूँ। कायिक अहिंसा-परायण तो बहुत लोग होगे, परन्तु वाचिक अहिंसा-परायण कम लोग है। उनमे एक जमनालालजी भी है। सरकारी हाकिम उनके प्रेम-भावसे चक्करमे पड जाते है और मेरा ख्याल है कि उन्हें गिरफ्तार करते हुए उन्हे बहुत ही दुख हुआ होगा। ऐसे सत्याग्रहीका कारावास सच्चा कारावास है।

हिन्दी नवजीवन, २४-६-२३] — महादेव हरिभाई देसाई

नागपुर-संग्राम

"मै धर्म समझकर इसमें शामिल हुआ हूँ"

वर्धाका मेजिस्ट्रेट जमनालालजीको 'एक मशहूर षड्यन्त्री' की पदवी देता है, और फिर पुलिसके गवाहसे पूछता है—"यह जमनालाल कौन है?" उधर नागपुरमे इसी जमनालालको जेलमे बैठाकर उनपर मुकदमा चलानेका जोड-तोड हो रहा था। वर्धाके मेजिस्ट्रेटने जहाँ जमनालालजीको षड्यन्त्रका मुजरिम करार दे दिया, वहाँ नागपुरके मेजिस्ट्रेटने उन परसे 'षड्यन्त्र आदिका' आरोप उठा लिया! सिर्फ खिलाफ कानून लोगोका दल इकट्ठा करनेमे मदद करनेका जुर्म उनपर लगाया गया है।

* * * *

उनके मुकदमेकी एक मनोरजक घटना यहाँ दिये विना नही रहा जाता। जमनालालजीसे अनेक सवाल पूछे जाते थे। उनके जवाब वे हिन्दीमे देते थे। मि स्लोनीके साथ एक हिन्दुस्तानी मेजिस्ट्रेट दुभाषियेके तौर पर बैठा था। जमनालालजीने कहा—"मुझे जितनी कडी सजा दी जा सके उतनी दीजिए।" दुभाषिये मेजिस्ट्रेटने उसका जो तरजुमा किया उसका यह अर्थ होता था—"दूसरे सब लोगोमे मैने ज्यादा अपराध किया है, इसलिए मुझे सबसे अधिक सजा दीजिए।" सरकारी वकील चक्करमे पडा। उसने कहा—"जमनालालजीके कहनेका आशय तो यह मालूम होता है कि कानूनके अनुसार मुझे जितनी अधिक सजा दी जा सकती हो उतनी दीजिए।" इस बात पर चर्चा होने लगी। आखिर इन्साफ करनेका भार जमनालालजी पर पडा। उनसे पूछा गया — आपका आशय क्या था? जमनालालजीने शात भावसे उत्तर दिया, "दोनो बाते कहनेका भाव एक ही था।" मेजिस्ट्रेट दग रह गया।

* * * *

जमनालालजीकी शान्तिकी तो मर्यादा ही नही थी। उनका पेश किया गया बयान गभीरतासे भरा हुआ था। उसमे एक भी शब्द आवश्यकतासे अधिक नही था।

"मै धर्म समझकर इस आन्दोलनमे शरीक हुआ हूँ। धर्मके मार्गमे आनेवाले कष्टोको सहन करना मेरा परम कर्तव्य है। उन्हे सहन करनेके लिए ईश्वर मुझे पूरी शक्ति और उत्साह दे।"

हिन्दी नवजीवन, १–७–२३] —महादेव हरिभाई देसाई

JAMNALALJI

Seth Jamnalal Bajaj has been awarded rigorous imprisonment for eighteen months and a fine of Rs 3,000/- with a further term of four and a half months in default Almost every national worker in India knows him personally as an affectionate brother, and will be glad to know that he is happier today in prison than at any time before Words fail when the heart is full.

If there be any doubt still in any one's mind as to the Executive power carrying the magistracy as bond-maid, it will be cleared by the sentence imposed on Jamnalalji Government was not satisfied that the movement would die in six months So three counts had to be made up in order to get thrice the maximum sentence provided by the law So the indictment was laid that he was present and abetted on three days "I was present on many more days, not only on three," said innocent Jamnalalji, not knowing the purpose of the Magistrate

We were there the other day in the great big house of Sethji's It did not seem a big house when the large heart of its owner filled it with his presence But now it was so empty We had a meeting and on the platform for the first time his picture was installed This was enough to move the weaker among us to tears, which they tried to hide We appealed to the people not to let Jamnalalji's great sacrifice run to waste like water in desert sand Does Satan whisper in your ears about family, property, affairs, during this national struggle? Then think of Jamnalalji Had not Jamnalalji wife, children, property and affairs to manage? I have not seen any father love his children more than Jamnalalji I have rarely met men so fond of children whether they be his own or other people's It may be that this element of his character it was that impelled him to undertake suffering and imprisonment so readily What is this Government of ours under which the best of us, the rich and propertied and

men of responsibility, position, and education are in prison, instead of looking after their affairs? When I saw Jamnalalji inside the walls of Nagpur Jail the other day, I found him more happy and cheerful than at any time before, when he was in our miserable company There was a beautiful smile and a satisfaction in his face, which I had not seen before and which I truly envied
Young India 19-7-23] — C Rajagopalachari

भिक्षां देही

हजारो सैनिकोको नागपुर सत्याग्रहके युद्धमे भेजना हो तो कमसे कम पाँच लाख रुपये सिर्फ रेल-भाडेके चाहिए। यह कोई बहुत भारी रकम नही है। यदि चाहे तो एक ही मारवाडी भाई दे सकते है। महासभाके कार्यके लिए जब मैं जमनालालजीके साथ भारतमे घूमनेके लिए निकला, तब अनेक मारवाडी भाइयोसे मेरा परिचय हुआ था। मारवाडी महासभामे भी मैं हाजर था। मारवाडी जातिका जमनालालजी पर बेहद प्रेम मैने देखा। अपनी जातिकी उन्होने खूब सेवा की है। क्या इस समय जमनालालजीकी तपश्चर्या उनके मारवाडी भाइयोका दिल नही पिघलायेगी? मुझे विश्वास है कि यदि उस जातिको यह खबर पहुँचा दी जाय तो इतनी रकम तो आसानीसे मिल सकेगी।

हिन्दी नवजीवन, २२-७-२३] — वल्लभभाई पटेल

अलवर हत्याकांड

लोग जिसे 'अलवर हत्याकाड' कहते हैं उसके सम्बन्धमें कलकत्तेकी कार्यसमितिमे श्री जमनालाल बजाजने एक प्रस्ताव उपस्थित किया था कि एक जाँच-समिति नियत की जाय। बरसोसे महासभाकी यह परपरा चली आयी है कि वह देशी राज्योके भीतरी मामलोमें हस्तक्षेप न करे। कार्य-समितिके सदस्योने अनुभव किया कि यह परपरा अच्छी है और इसको तोडना नादानी होगी। तब श्री जमनालालजीने इस पर जोर न दिया। फिर भी मैंने उनसे यह कहा था कि मै य इ मे इस प्रश्नकी चर्चा करूँगा।

हिन्दी नवजीवन, २०-७-२५] — मो क गाधी

एक स्मरणीय विवाह

श्री जमनालाल बजाजकी पुत्री बहन कमलाबाईके विवाहकी विधि गत रविवार ता २८ को सत्याग्रहाश्रममें की गई थी। रूढि और परपराको अधिकसे अधिक पकड कर बैठी हुई मारवाडी कौमके अग्रगण्य नेता

श्री जमनालालजीने परपराका त्याग करके वडी सादगीके साथ, किसी भी प्रकार आडम्बरके विना, भोजनादिके बडे भारी खर्चके विना यह विधि होने दी, इसलिये श्री जमनालालजी और उनके सम्बन्धी श्री केशवदेवजी धन्यवादके पात्र है। इस अवसर पर श्री गाधीजीने वर-वधूको जो आशीर्वाद दिया, उसमें इसका महत्त्व स्पष्ट समझाया गया है और इस आदर्श विवाहके सम्बन्धमे उनके उद्‌गार प्रत्येक हिन्दूके लिए विचारणीय है –

"आप लोग, भाई और बहने दोनो, जो बाहरसे परिश्रम उठाकर रामेश्वरप्रसाद और कमला इन दोनोको आशीर्वाद देनेको आये हो, इससे मुझे आनन्द होता है और मैं आपको धन्यवाद भी देता हूँ।

* * * *

"जमनालालजीका और मेरा जो सम्बन्ध है वह तो आप खूब जानते ही है। हम दोनोमे यह निश्चय हुआ कि जितनी सादगीसे और कम खर्चसे विवाह कर सके करना चाहिए। इस तरहसे विवाहकी क्रिया करनी चाहिए कि जिससे दोनो पर ऐसा प्रभाव पडे कि वे विवाहका सच्चा अर्थ समझ सके। विवाहको आडम्बर-रहित बनाना, भोजनादिको और गान-तानको स्थान नही देना। ऐसा अच्छी तरहसे कहा हो सकता है? अगर बम्बईमें किया जाय तो मारवाडी समाजको और जमनालालजीके मित्रोको इससे पाठ मिलेगा। आजकल सुधारोके नामसे जो अधर्म चल रहा है, वह वायु नष्ट हो जावेगा। जो धर्म समझना चाहे उनके लिए दृष्टात हो जावेगा। परन्तु मुझे यह भय था कि जितनी सादगीके साथ यहा विवाह हो सकता है उतनी सादगीके साथ वहा नही हो सकेगा। इसकी दलीलोमे मैं उतरना नही चाहता। इसी कारणसे मैंने वर्धाको भी छोड दिया और बम्बईको भी छोड दिया। परन्तु इस कार्यको कैसे किया जाय? जमनालालजी और उनके माता-पिताकी सम्मतिसे ही काम नही चल सकता था। रामेश्वरप्रसादके वडील वर्गकी भी सम्मतिकी जरूरत थी। प्रभुका अनुग्रह था कि केशवदेवजीने भी इसे स्वीकार कर लिया।

* * * *

"हम दोनोने सोचा कि बिलकुल सादगीसे विवाह किया जाय। इसमें स्वार्थ और परमार्थ दोनो है। जमनालालजी और केशवदेवजीका, रामेश्वर-प्रसाद और कमलाका भला सोचना यह तो स्वार्थ, और दूसरोको मार्ग बताना यह परमार्थ। आप देखेंगे कि इस विवाहमे आडम्बर नही होगा। नाच-गान नही होगा, विवाहके समय केवल धार्मिक विधिया ही की जायेगी। आप लोगोको निमत्रण इस भावसे दिया गया है कि आप इसके साक्षी हो और इसमें आप सम्मत हो और ऐसी प्रतिज्ञा करे कि आप इसका अनुकरण करेगे।

* * * *

"अन्तमें मैं इन दोनोको आशीर्वाद देता हू कि ये दोनो दीर्घायु हो और अपने वडिलोको भी सुशोभित करे और धर्मकी रक्षा तथा देशकी सेवा करे।"
हिन्दी नवजीवन, ४-३-२६]

मुमुक्षु जमनालालजी

(१)

श्री जमनालालजीके जीवनचरितके लेखकने जब गाधीजीसे पूछा कि उनका जीवनचरित लिख सकते हैं कि नहीं, तब गाधीजीने उत्तर दिया कि सामान्य नियम तो यही है कि जीवित मनुष्योकी जीवनी लिखना उचित नही समझा जाता है, परन्तु मुमुक्षुकी जीवनी तो लिख सकते है, क्योकि उसमेंसे कुछ-न-कुछ नीतिकी शिक्षा मिलती है और श्री जमनालालजीको मैं मुमुक्षु या आत्मार्थी मानता हू।

यह आज्ञा मागनेवाले श्री रामनरेश त्रिपाठी थे। उन्होने सोचा कि अग्रवाल महासभाकी इस वर्षकी बैठकके जमनालालजी प्रमुख है और इस अवसर पर जमनालालजीका जीवन-परिचय मारवाडी भाइयोको करा देना अच्छा होगा। यह अवसर अच्छा था। और समयानुसार किया गया यह कार्य अवश्य प्रशसनीय है। त्रिपाठीजीको जमनालालजीका ठीक परिचय है और उन्होने इतना हाल इकट्ठा किया है, तब भी इस पुस्तकको जीवन-चरितका बडा नाम नही दे सकते हैं। जमनालालजीकी अवस्था ३७ वर्षकी है। कमसे कम ४०-५० वर्षकी लोक-सेवा तो उनकी राह देख ही रही है। और अबतकके थोडेसे जीवनमें भी जितनी लोक-सेवा अथवा लोक-सेवा द्वारा जो मोक्ष-साधन उन्होने किया है इतना अधिक है कि इस थोडेसे परिचयमे उसकी केवल भूमिका मात्र ही आ सकती है। इनका पूरा पूरा इतिहास यदि लिखने लगे तो सौ पृष्ठोकी पुस्तक कमसे कम ५०० पृष्ठोकी तो बन ही जाय। उदाहरणार्थ इनकी मारवाडी कौमकी सेवा ही ले लीजिए। यदि उसीका उल्लेख करने लग जाये तो मारवाडी कौमकी १० वर्ष पीछेकी दशा और आजकी दशाका सारा इतिहास ही बताना पडेगा। उन्होने महासभाकी सेवा किस प्रकारसे शुरू की, किस क्रमसे उन्होने अपना सेवाका छोटा क्षेत्र विस्तृत कर दिया, इसका सारा रोचक इतिहास देना पडेगा।

परन्तु जमनालालजीके जीवनकी दृष्टिसे ऐसे छोटे परिचयकी भी आवश्यकता है। उसका कारण स्पष्ट है। जमनालालजीके जीवनका आरम्भसे लेकर अबतक जो शान्त और स्थिर प्रवाह रहा है उससे भावी जीवनकी भी झलक मिलती है। जिस सिद्धान्तको उन्होने आज अपना लिया है उसको कार्यमें परिणत करनेका प्रयत्न तो वह खूब करेगे, परन्तु उन सिद्धान्तोसे

हटनेका मौका कदाचित् ही आवेगा। इसलिए यह छोटासा परिचय भी अनुचित नही है। जमनालालजीका जीवन दूसरे पुरुषोके समान वदलता नही रहा है। एक समय विलासी और व्यसनी रहनेके वाद पीछे फिर यकायक सयमी वन गये हो और जीवन विल्कुल वदल गया हो, ऐसा जमनालालजीके विषयमे कोई नही कह सकता। उनके जीवनने किसी भी समय पर यकायक पलटा नही खाया। उन्हे ईश्वरने धर्मवृत्ति जन्मसे ही दी थी। इस धर्मवृत्तिका दिन-प्रतिदिन अधिकाधिक विकास होता गया। जो दैवी सपत्ति मोक्ष देनेवाली होती है उस दैवी सपत्तिके वहुतसे लक्षण उनमें थोडे-वहुत अशमें सदा ही से दिखाई देते थे। अवसर आने पर और भी अधिक प्रकट होने लगे और वे उनमे विशेष रूपसे दृढ होने लगे।

यह वात कुछ विस्तारसे मैं इसलिए लिखता हू कि कोई ऐसा न समझे कि असहयोगमे जमनालालजी १९२१ मे शामिल हुए तवसे ही वे प्रसिद्ध हो गये, अथवा असहयोगमे आ जाना ही उनके जीवनकी वडी घटना है। यह वात तो इस छोटेसे परिचयमे भी वडी अच्छी रीतिसे वतलाई गई है। १९२१ पर्यंतका यानी जमनालालजीका ३०–३२ वर्षकी आयु तकका इतिहास भी वहुत रोचक है और वडा शिक्षाप्रद है। गरीव मा-वापके यहा सीकर नामकी रियासतमें एक वगैर कुवेवाले निर्जल गाँवमें वचपन गुजारा। वडी मुश्किलसे वच्छराज सेठने उनको गोद लिया। लडका गोद देने पर उनके माता-पिताने जन-कल्याणके लिए यह सौदा किया और वच्छराज सेठने यह वालक लेनेके वदलेमे गावमे एक वडा पक्का कुआ वनवा दिया। तवसे यह वालक वच्छराज सेठका हुआ और वर्धा चला गया। वचपनमें रोज इनको एक रुपया दुकानसे मिलता था। इसीमेंसे वचा वचा कर इन्होने जो धन इकट्ठा किया उसमेंसे १०० रुपयेका सोलह वर्षकी छोटी उम्रमे ही एक छापखानेको दान दिया।[1] उन्होने एक दफा कहा था कि यह सौ देनेमे मेरी छाती ऐसी फूली कि वैसी कभी फिर लाख देनेमें भी नही फूली। इस समय भी भोग-विलासमे इनकी रुचि न थी। सतरह वर्षकी छोटी उम्रमे किये हुए उनके एक और कार्यमे दैवी सपत्तिके करीव करीव सव लक्षण — अभय, अहिंसा, सत्य, शाति, तेज, क्षमा और धृति— मौजूद थे। भावी जमनालालजीका उसी एक प्रसगमें पूरा पूरा दर्शन होता है। उनके यह नये पिता वडे क्रोधी थे। जरा जरासी वातमे उनका मिजाज विगड जाता था और हर किसी आदमीका अपमान कर वैठते थे। एक दिन इन्होने जमनालालजीका भी वैसा ही अपमान किया और अपनी दी हुई धन-दौलतके छीन लेनेकी धमकी दी और वडे कठोर वचन कहे। इस पर इन्होने पिताको जो पत्र लिखा वह

१ यह दान १९०६ में, लोकमान्य तिलकके 'केसरी' पत्रका हिन्दी सस्करण नागपुरसे निकालनेका तय हुआ, तव उसे दिया गया था।

वैसाका वैसा उद्धृत करने योग्य है और उसमे ऊपर कहे गये सब लक्षण स्पष्ट दिखाई देते हैं। पत्र मारवाडी भाषामे है इसलिए मारवाडीमें ही देते हैं।[1]

॥ श्री गणेशजी ॥

"सिद्धश्री वर्धा शुभस्थान पूज्य श्री बच्छराजजी रामधनदाससे चि. जमनका चरणस्पर्श। सर्वत्र श्री लक्ष्मीनारायणजी महाराज सदा सहाय हैं। समाचार एक निगाह करें। आप आज मुझ पर निहायत नाराज हो गये सो कोई चिन्ता नहीं। श्री ठाकुरजीकी मर्जी। मैं गोद लिया हुआ था तब आपने ऐसा कहा। पर आपका कुछ भी कसूर नहीं है। कसूर है उनका, जिन्होंने मुझे गोद दिया।

"आपने कहा, नालिश करो, सो ठीक। पर मेरा आप पर कोई कर्ज तो नहीं है। आपका कमाया हुआ पैसा है। आपकी खुशी हो सो करें। मेरा आप पर कुछ अधिकार नहीं।

"आजतक मेरी बाबत या मेरे लिए जो कुछ आपका खर्च हुआ सो हुआ। आजके बाद आपसे एक छदाम-कौडी भी मैं लूगा नहीं, और न मगाऊगा ही। आप अपने मनमे किसी किस्मका खयाल न करें। आपकी तरफ आजसे मेरा किसी तरहका हक नहीं रहा है। श्री लक्ष्मीनारायणजीसे मेरी अर्ज है कि आपका शरीर ठीक रखें और आपको अभी बीस-पचीस वर्ष तक कायम रखें। मैं जहा जाऊगा, वहींसे आपके लिए ठाकुरजीसे इसी प्रकार विनती करता रहूगा। मुझसे आजतक जो कुछ कसूर हुआ वह माफ करें।

"आपके मनमें यह हो कि सब पैसोंके साथी हैं, और यह भी पैसेके लिए सेवा करता है, सो मेरे मनमें तो आपके पैसेकी चाह बिलकुल नहीं है। और ठाकुरजी करेंगे तो आपके पैसेकी भविष्यमे भी मनमे आयगी नहीं, क्योंकि मेरी तकदीर मेरे साथ है। और पैसे मेरे पास हों भी तो मैं क्या करूगा? मुझे तो पैसोंके नजदीक रहनेकी बिलकुल परवा नहीं है। आपकी दयासे श्री ठाकुरजीका भजन-सुमरन जो कुछ होगा सो करूगा, जिससे इस जन्ममें सुख पाऊ और अगले जन्ममे भी। आप प्रसन्न-चित्त रहें। किसी किस्मकी फिक्र न करें। सब झूठे नाते हैं। न कोई किसीका पोता है, न कोई किसीका दादा। सब अपने अपने सुखके साथी हैं। सब झूठा पसारा है। आप अभी तक मायाजालमें फस रहे हैं। मैं आज आपके उपदेशसे मायाजालसे छूट गया। आगे श्री भगवान ससारसे बचावे।

"अपने मनमें आप इस तरह कदापि न समझें कि हमारे पर नालिश-फरियाद करेगा। मैंने अपनी राजी-खुशीसे टिकिट लगाकर सही कर दी है कि आप पर अथवा आपकी स्टेट, पैसे, रुपये, गहना-गाठी आदि किसी सामान

१ यद्यपि 'नवजीवन'में यह पत्र मारवाडी भाषामें ही छपा था, तथापि यहां उसका हिन्दी अनुवाद दिया जाता है।

पर, आजसे मेरा कतई हक नही रहा है। और मेरे हाथका न कोई कर्ज बाकी है। किसीका एक पैसा भी देना नही है।

"अन्य समाचार कुछ है नही। समाचार तो बहुत है, पर मेरेसे लिखे नही जाते।

"सवत् १९६४ मिती वैशाख कृष्ण २, मगलवार। पूज्य श्री १०५ दादाजी श्री बच्छराजजीसे जमनका चरणस्पर्श।

"बहुत बहुत सम्मानसे। आपकी तरफ मेरा कोई रीतका लेन-देन नही रहा है। श्री ठाकुरजीके मन्दिरका काम बराबर चलावे। आपसे दान-धर्म जो बने सो खूब करते जावे। ब्राह्मण साधुको गाली बिलकुल न दें। और किसीको भी हाथका उत्तर दे, मुहका उत्तर नही। ज्यादा क्या लिखू ? इतनेमे ही समझ ले।

"और मै आपकी कोई चीज साथ नही लूगा। सब यही छोड जाता हू। सिर्फ अग पर कपडे पहने हू।"

इस पत्रका असर क्या हुआ होगा, यह बताना कुछ कठिन नही है। सेठ बच्छराजजीका कण्ठ रुध गया और वह बडे प्रेमसे जमनालालजीको मना लाये। गया हुआ रत्न फिर पा लिया। "म्हाने तो पीसा नजीक रहनेकी बिलकुल परवा छे नही"—यह वचन 'अर्थमनर्थं भावय नित्यं' समझके चलनेवालेका वचन है, और इस बातको समझनेवालेका जीवन कैसा बनेगा, इसकी आज कल्पना करना मुश्किल है।

हिन्दी नवजीवन, ८-७-२६]　　　　　　　　　　　— महादेव हरिभाई देसाई

मुमुक्षु जमनालालजी

(२)

बच्छराजजी ४½ लाख रुपया छोड गये थे, परन्तु जमनालालजीने अपनी व्यापार-दक्षतासे, जो उन्होने किसी विद्यालयमे पढ कर नही, परन्तु अनुभवसे प्राप्त की थी, चारसे चौवीस लाख कमाये। और इन चौवीस लाख कमानेमे असत्यसे जितने दूर यह रहे उतना कदाचित् ही कोई दूर रहा होगा।

*　　*　　*　　*

जिस विवेकसे उन्होने धन कमाया उसी विवेकसे उन्होने अपने धनका दान दिया। लाखो रुपया देकर 'सर' हो सकते थे। प्रवाहके अनुसार युनिवर्सिटीम स्कॉलरशिप देकर और सरकारको सरकारी सस्थाओके स्थापनार्थ धन देकर वे मान पा सकते थे। परतु असहयोगी होनेके पहलेसे उनमे सच्ची विवेक-बुद्धिसे व्यवहार चलानेका स्वभाव था। हा, यह बात ठीक है कि असहयोगने उनका क्षेत्र बढा दिया। वे कुल अपने ११ लाख

रुपयेका दान देनेमें वहुत विवेकपूर्ण रहे हैं। सर जगदीशचन्द्र बोसकी विज्ञान-शालाके लिए ३५,००० दिया और काशी विश्वविद्यालयके पुस्तकालयके लिए ५१,००० का दान दिया। इनीमे उनके विवेक और दूरदर्शिताका पता लग जाता है। ११ लाख रुपयेके दानमेंसे केवल दो लाखके करीव उन्होंने अपने समाजके लिए दिया। मुसलमानोको ही २१ हजारका दान दिया।

असहयोगी होनेसे पहलेसे ही आप बडी निर्भयताका व्यवहार करते रहे है। गवर्नरने एक बार आपको दरबारमे बुलाया और इस अवसर पर एक विशेष पोशाक ही पहन कर जानेकी आपको सूचना मिली। आपने वह पोशाक पहननेसे इन्कार कर दिया। आखिरकार आपसे कहा गया कि आप जिस तरह चाहे, आवे। गवर्नरको पार्टी देनेके समय भी आपने कलक्टरको साफ कहला भेजा कि अडे, मास या शराब न दिया जायगा। भारत सचिव मिस्टर मॉटेग्यु जिस समय भारतवर्षमे आये थे, दरभगाके महाराजा सनातनधर्मियोका एक डेप्युटेशन उनके पास ले जाना चाहते थे। जमना-लालजीने उनको लिखा कि यदि आप लोग भारत-सचिवके सामने यह माग रक्खे कि लश्करके लिए जो गोवध होना है वह वन्द हो जाय तो मैं डेप्युटेशनमें शामिल हो सकता हू। महाराजा दरभंगाने यह बात स्वीकार नहीं की और इसलिए आप डेप्युटेशनमें सम्मिलित नहीं हुए। वर्दवानके महाराजाने जमी-दारोके डेप्युटेशनमें सम्मिलित होनेका आपको न्यौता भेजा, परन्तु इसको खुशामदियोका डेप्युटेशन समझ कर आप उसमे सम्मिलित नही हुए। रेलमे सफर करते समय भी 'टामियो' से न डर कर उन्हे डाट दिया करते थे और एक असभ्य यूरोपीयनको तो एक दफा लात मारनेको भी तैयार हो गये थे। यह सब आपकी असहयोगके पहलेकी निडरताके नमूने है।

सेवा द्वारा मोक्ष पानेकी इच्छा आपको पहले ही से थी। एक ब्रह्म-मार्गी सन्यासीका सत्सग कई वर्षोसे आप करते आये और अब भी आप उनकी सेवा करते है। अब भी अकसर हर शुभ कार्यमे आप उनका आशीर्वाद माग कर ही हाथ डालते है। उनमें निर्भयता, वीरता, धर्मबुद्धि और सेवाभाव तो पहले ही से मौजूद थे, परन्तु गाधीजीके सत्सगसे वह और विस्तृत हो गये है। ससारके प्रत्येक व्यवहारमे हर कामको वे धर्मके तराजू पर तौल लेते है। असहयोगी होने पर नये नये सिद्धान्तोके पालन करनेका भार बढा और उनकी सत्यनिष्ठाने उनके सम्मुख कई एक नयी नयी समस्यायें खडी कर दी। टाटा कम्पनी मुलशी पेटावालो पर अत्याचार कर रही है तो फिर उस कपनीके शेयर मैं कैसे रख सकता हू? कलकत्ताके व्यापारके कारण वार बार अदालतमे जाना पडता है तब फिर वहाका व्यापार वन्द ही क्यो न कर दू? मै अस्पृश्यतामे विश्वास नही रखता हू, यह लोगोको किस तरह बताऊ? बहुतसी रीतरिवाजोको मैं बुरा समझता हू तो फिर लडकीके विवाहमें ही उनको तिलाजलि क्यो न दे दू?

आप गरीबसे गरीबके साथ एकसा व्यवहार करते है और भरसक गरीबीसे रहनेका प्रयत्न करते है। ऐसे ही बहुतसे प्रश्नोको उन्होने स्वय बडे कष्ट सहन करके हल किया। ऐसे प्रयत्नोके कई एक वर्णन इस जीवन परिचयमे आये है और ऐसे सैकडो प्रसग उनके भविष्यके जीवनचरितमे लिखे जा सकते है। एक छोटीसी बात है, परन्तु यहा बिना लिखे जी नही मानता। खादीका व्रत खद्दर पहननेमे है, परन्तु जो चरखा-सघके सभ्य है, और रात दिन खद्दरका प्रचार करते है, वे दूसरे कामोके लिए भी खद्दरको छोडकर और दूसरे कपडेका उपयोग किस प्रकार कर सकते है? वर्धामे एक नया ही प्रश्न खडा हुआ। घरमे ५०—१०० निवाडके पलग थे। वैसे घरमे श्रीमती जानकीबाई और बालक सभी नखशिख खद्दर पहनते थे और सूत भी कातते थे, परतु किसीको इस निवाडका कभी ध्यान नही आया। जमनालालजीने कहा कि यह मिलके सूतके निवाडवाले पलग काममे लानेकी क्या जरूरत है? व्यवहार कुशल जानकीदेवीने कहा "आपके लिए हाथोसे काते हुए सूतको निवाडका पलग आया जाता है, परन्तु घरमे बहुतसे पलगोकी निवाड है उसको व्यर्थ नष्ट न कीजिये। परन्तु जमनालालजीने निश्चय कर लिया था कि घरमे मिलके सूतकी निवाडवाले पलग नही रक्खेगे।

इस पुस्तकका परिचय मै अधिक लम्बा बनाना नही चाहता हू। इसी प्रकारके बहुतसे उदाहरण जो पुस्तकमें नही आये है, दिये जा सकते है। परन्तु उनके लिए यहा स्थान नही। उनकी असहयोगकी प्रवृत्ति आज ससारको विदित है। राय-बहादुर और आनररी मेजिस्ट्रेटीको तिलाजलि देकर देशके खजाची बन कर महासभाकी कार्यकारिणी समितिमे काम किया। अपना व्यापार-धन्धा कम करके तीन वर्ष तक देशमे भ्रमण किया। नागपुर-सत्याग्रहका सचालन करते हुए स्वय जेलमे गये। हिन्दू-मुसलमानोके झगडेमे मुसलमानोको बचानेमे स्वय जख्मी हुए। खद्दरके कामका व्रत धारण किया और गोरक्षाका प्रश्न हाथमे लिया। गोरक्षा और खद्दरका वाणिज्य—वैश्यके इन दोनो धन्धोको—उत्साहपूर्वक उठा लेनेके लिए मारवाडी समाजसे आग्रह किया। ये सब बाते सब समाचारपत्र पढनेवाले अच्छी तरह जानते है। इन सब बातोका इस पुस्तकमे वर्णन आ गया है, परन्तु उनके जीवनकी सारी जटिल समस्याओ अथवा अपनी धर्मपत्नीके प्रति व्यवहारकी सारी कहानी तो उनके विस्तृत जीवन-चरितमे ही लिखी जा सकती है। भविष्यमे जमनालालजी क्या करेगे, यह जाननेके लिए यह छोटीसी पुस्तक भी लाभदायक हो सकती है। हमारी सबकी यही प्रार्थना है कि जिस ध्येयके लिए जमनालालजीने अपना जीवन समर्पण किया है उसमे उन्हे दिन-प्रतिदिन सफलता प्राप्त हो।

हिन्दी नवजीवन, १५—७—२६] — महादेव हरिभाई देसाई

A TRIUMPH OF JUSTICE

There is in Wardha a well-known and very well decorated shrine dedicated to Shri Lakshminarayan It was built by Seth Jamnalalji's grandfather It is a private temple made accessible to the public Jamnalalji has been endeavouring to have this temple available to the so-called untouchables also, as he has been trying with great success to have wells in Wardha made accessible to them and generally to procure for them all the facilities available to the other classes He had difficulty with the trustees in bringing them round to his view that this select temple should be thrown open to those whom blind orthodoxy has suppressed Success has at last attended his effort On the 17th inst the trustees unanimously passed the following resolution

"Whereas the question of admitting the so-called untouchables inside the temple of Shri Lakshminarayan has been before the committee on several occasions * * * the trustees hereby resolve * * * that the above named temple dedicated to Shri Lakshminarayan in Wardha be declared open to the 'Untouchables' and that the managing trustee, Seth Jamnalalji Bajaj be authorized to enforce this resolution in such manner as may appear to him to be best"

* * * *

It is a striking demonstration of the tremendous headway that the movement against untouchability has made It shows too what quiet determination and persistence can do to create healthy public opinion in favour of a genuine movement for reform I congratulate Seth Jamnalalji and his fellow trustees on the bold step that they have taken and hope that this example will be followed all over India

Young India, 26-7-28] —*M K Gandhi*

शास्त्रके अनुकूल

भारत-भूषण पडित मदनमोहन मालवीयजी सनातन धर्मके स्तभ हैं। उन्होंने वर्धामें श्री लक्ष्मीनारायण देवस्थानके बारेमें श्री जमनालालजीको निम्नलिखित पत्र लिखा है —

"आपने अपने भगवद्भक्त पूर्वजोंके स्थापित किये भगवान लक्ष्मीनारायण मदिरमें ब्राह्मणसे लेकर चाण्डाल पर्यन्त सब श्रद्धालु भाइयोको जगत्पिताकी पावन मूर्तिका दर्शन करनेकी स्वतत्रता दी और कूवे बनवाये

उनपर सब जातिके भाइयोको स्वच्छ बरतनसे पानी भरनेका अधिकार दिया, यह सुनकर मुझको बहुत सतोष हुआ। आपके ये दोनो काम शास्त्रके सर्वथा अनुकूल है और घट घट वासी विश्वात्मा इससे प्रसन्न होगा।"

हिन्दी नवजीवन, २३–८–२८] –मो क गाधी

रूढ़िपंथियोंसे मुठभेड़

इस आश्रमके सरक्षक श्रीयुत जमनालालजी बजाजने अपने पूर्वजो द्वारा स्थापित श्री लक्ष्मीनारायण देवस्थानमे अछूतोको भी प्रवेशाधिकार देकर रूढिपथियोके क्रोधको आमन्त्रित कर लिया है। इस पर चिढकर उन्होने सेठजीको जाति-बहिष्कृत कर दिया है। मगर इसका सेठजी पर कुछ असर तो पडा ही नही, बल्कि उल्टे वे एक पग और आगे बढकर रेवाडीमें अछूत लडकोका पकाया भोजन कर आये। इसी सम्बन्धमे मारवाडी अग्रवालोका एक शिष्ट मण्डल गाधीजीके पास आया था। इनकी शिकायत यह थी · "हम तो जमनालालजीके विधवा-विवाह, बाल-विवाह-निषेध आदि समाज-सुधार सम्बन्धी कामोमे उन्हे सहायता देना चाहते है। वे मन्दिरमे भले ही अछूतोको भी जाने दें। हम वह भी सह लेगे। मगर अछूतोके हाथका भोजन करना तो असह्य है। जब हम उनके लिए इतना आगे बढते है तो उन्हे भी तो हमारे लिए कुछ करना चाहिए।"

जमनालालजी बोले, "जब मै यहाँ आश्रममें अछूतोके साथ छूतछात नही रखता तो बाहर किस मुहसे रख सकता हूँ ?"

मण्डलने कहा, "आप आश्रममे कुछ भी कीजिए। आश्रम तो जगन्नाथ-पुरी है। मगर बाहर तो समाजका कुछ खयाल रखिए।"

गाधीजीने टोक कर पूछा कि मण्डलका एतराज धार्मिक है या सामाजिक रूढि है और मण्डलके यह कहने पर कि हम तो सामाजिक परपराके आधार पर उज्र करते है, गाधीजीने यो समझाया –

"तब तो आपको सेठजीका आचरण सह लेना चाहिए। अगर आप अपवित्रतासे रहनेवाले अछूतोका छुआ खानेका विरोध करते तो ठीक था। मगर केवल किसी खास परिवारमे जन्म लेनेके ही कारण किसीको अछूत मानना तो धर्मको ही इन्कार करना है। मै कबूल करता हू कि समाजकी रक्षाके लिए सामाजिक परपराको मान लेना चाहिए, चाहे हमे व्यक्तिगत रूपमें भले ही उसका पालन करनेकी आवश्यकता न जान पडे। मगर जब कि वह परपरा अत्याचारी हो जाय, तब भी उसे मान देनेसे तो मौत ही आती है। जमनालालजीने अपने लिए बडा कार्यक्षेत्र चुना है। वे किसी खास समाजमे ही अपनेको डुबा नही दे सकते। उनके लिए सारा ससार परिवार है और सारे मनुष्य-समाजकी सेवाके द्वारा ही वे अपने समाजकी सेवा कर सकते है।

इसलिए जमनालालजीको आप उनके अपने रास्ते जाने दीजिए। विरोधको हम प्रेमके द्वारा ही जीत सकते है। असत्य पर, सत्यको छोडकर नही, बल्कि सत्यके ही द्वारा विजय प्राप्त कर सकते हैं। हम जरा अपने समाजकी ओर नजर दौडावे। इसलिए हम तपस्या करके, अपने अधिकारोके लिए कष्ट सहकर, पचोको सुधारे। जमनालालजी यही तो कर रहे हैं। अगर आप उनका अनुकरण नही कर सकते तो उन्हे आशीर्वाद तो दीजिए। एक दिन वह भी जरूर आवेगा जब केवल आप ही नही, बल्कि कट्टर लोग भी इसे स्वीकार करेगे कि जमनालालजीने अपने कामोसे हिन्दू धर्मकी बडीसे बडी सेवा की ह और इसके लिए आगे आनेवाली पीढिया उन्हे असीसेगी, धन्यवाद देगी।"

जान पडता था कि गाधीजीके दिलसे निकली हुई सच्ची अपीलका प्रभाव श्रोताओ पर खूब ही पडा।

हिन्दी नवजीवन, ६-१२-२८] — प्यारेलाल

HINDI IN THE SOUTH

Sjt Jamnalalji's tour in the South on behalf of Hindi should result in a double response in men and women desirous of learning Hindi and in contributions for conducting the Hindi Prachar Office Accounts received from Madras show that Sjt Jamnalalji's earnestness is producing the desired effect

Young India, 31-1-29] —*M K Gandhi*

HINDI IN EXTREME SOUTH

From Trivandrum Sjt Sesha Iyer, President of the Kerala Hindi Prachar Conference, writes to say that this conference was held at Ernakulam (Cochin) on 10th February last where the following resolution was unanimously adopted

"This conference expresses its deep sense of gratitude to Gandhiji and Seth Jamnalal Bajaj for their untiring efforts in pushing on the Hindi Movement in South India and trying to make Hindi the National Language of India, and urges on all patriotic sons and daughters of India to help the movement by studying the language themselves and also by contributing to the Central Fund"

I have not published this resolution to advertise either myself or Seth Jamnalalji or the parties to the resolution Everybody knows my keenness about Hindi Prachar in the South Seth Jamnalalji was a confirmed lover of Hindi before I returned to India in 1915 His tour in the South has given a fresh impetus to Hindi propaganda there

Young India, 7-3-29] —*M K Gandhi*

सेठ जमनालालजीका सत्कार्य

एक स्वाभिमानी पुरुषके नाते सेठ जमनालालजीने पण्डित सुदरलालजीकी 'भारतमे अग्रेजी राज्य' पुस्तकके सम्बन्धमे बम्बई-पुलिसके डिप्टी कमिश्नरकी प्रार्थनाका जो उत्तर दिया है, वह सर्वथा उनके अनुरूप ही ह। उनका कहना सच है कि युक्त प्रान्तीय सरकारकी यह कार्रवाई 'निरकुश और अन्याय्य है,' और पुस्तकको लेकर देश-भरम मकानोकी जो तलाशी ली गई ह वह 'अत्यन्त अपमानजनक, आक्षेपयोग्य और वदलेकी भावनासे पूर्ण है।' वह कहते है कि उन्होने पुस्तक पढी है और उनकी रायमे वह न केवल विलकुल 'निर्दोष ही है, वल्कि अहिंसाका पाठ पढानेका एक स्तुत्य प्रयत्न भी है।' उनके विश्वास दिलाने पर भी कि पुस्तक न उनके मकानमे है, न कार्यालयमे, पुलिसका दोनोकी तलाशी लेना, इस वातका एक योग्य प्रमाण है कि जमनालालजीने पुलिसके कार्योको जिन शब्दोमे निन्दा की है, वे उचित ही है। इस खानातलाशीका मकसद पुस्तककी तलाशी न थी, वल्कि जमनालालजीकी वेइज्जती करना था। ऐसे अपमानोका उचित उत्तर तो यही होना चाहिये कि जिन लोगोके पास पण्डित सुदरलाल-जीकी पुस्तक है, वे उसकी इत्तिला अपने जिलेके पुलिस दफ्तरमें दे दे, समाचार-पत्रोमे छपा दे, और सरकारको तलाशी लेने या मुकदमा चलाने या दोनोके लिए चुनौती दे। अगर जनता इस नीतिको अपनाकर चलेगी, और यदि अवतक भी पुस्तककी कई प्रतियाँ लापता होगी तो सरकारको जल्दी ही पता चल जायगा कि इस तरह लगातार असख्य मकानोकी निरर्थक खानातलाशी लेते रहना अपनी हँसाई आप कराना है।

हिन्दी नवजीवन, २०–६–२९] —मो क गाधी

ANTI-UNTOUCHABILITY CAMPAIGN

Sjt. Jamnalalji, the Secretary of the Congress Anti-Untouchability Committee, has succeeded in having the famous Dattatreya temple of Ellichpur, the former capital of Berar, thrown open to the so-called untouchables He performed the opening ceremony before a distinguished gathering on 31st July last

* * * *

The organisers of the ceremony deserve congratulations for the service they have rendered to Hinduism and the nation Let us hope that Jamnalalji will be able to induce the trustees of other temples to follow the example of Wardha and now of Ellichpur

Young India, 29-8-29] —*M. K Gandhi*

APPEAL TO TEMPLE TRUSTEES

Sjt Jamnalalji in his capacity as Hony Secretary, Anti-Untouchability Committee of the Indian National Congress, has addressed the following forcible appeal to the trustees of the Public Hindu temples

"You are probably aware that the Indian National Congress has appointed a separate committee this year for making special efforts for the removal of untouchability The work has obviously to be done through the Hindus, and the Congress resolution is explicit on the point In these days of terrific advance in material sciences, while the world is shrinking fast, India has constantly to be weighed in the scale of nations as a single individual unit, and when an evil within the fold of a community apart from its inherent injustice becomes a nuisance to its neighbours and a reproach to the entire nation, it is only appropriate, you will agree, that the premier national institution such as the Congress should interest itself in it, and help the community concerned to achieve its speedy elimination

"Untouchability among the Hindus is no ordinary evil That a community known throughout the world's history for its religious toleration and its most catholic culture should have established and maintained for centuries, and should still countenance in the name of religion, a social code which brands for life human beings as unworthy of ordinary intercourse and capable of polluting others by mere touch or sight, is a tragedy and riddle that baffles every right-minded Indian today

"You have only to visualize the spirit of the Hindu Scriptures and the whole of its culture through centuries to perceive, that such treatment of those lower in the social scale, who are in fact termed the 'young brothers' by the Dharmashastras, is most reprehensible It must be unnecessary for me to tax you with a host of Sanskrit texts in support of my contention Suffice it to say that it is now a matter beyond dispute that the system of untouchability, whatever may be its origin or former justification, is now only a social usage fossilised and hardened into rank inhumanity that is usurping the place of intelligent religious conviction and conduct

"If we turn to tradition, we find even less justification for anything like untouchability The Hindu tradition, founded on Vedic and scriptural lore, and nurtured by the most dynamic teachings of Kabir, Gaurang, Jnaneshvar, Eknath, Tukaram,

Narsinha Mehta and a whole galaxy of Dravidian saints, not only broke the barriers in social intercourse between man and man, but emphatically repudiated and positively set their face against any such cruel distinctions

"It is an irony of fate, that such glorious inheritance notwithstanding, we should have come to treat today one-third of our own kith and kin as pariahs worthy of treatment which we may not mete out even to dogs or to domesticated animals Our weavers, our artisans, our sweepers and scavengers, who are the real toilers of the land and producers of national wealth, who help to keep us clean and healthy and fit for life's vocations—to these our benefactors, meek and lowly little brothers—we deny social and civic rights, protection, knowledge, intercourse, everything that makes life worth living No wonder if under the inexorable law of Karma we are in turn ourselves treated the world over as pariahs and untouchables

"But the evil consequences of this sin do not terminate here The manifest injustice underlying such treatment, and the humiliation it involves for the victim, expose him to unrighteous influences outside, and make of him a disintegrating factor This not only does enormous harm to the community itself, but it corrodes the social foundations of the entire nation. You have no doubt read how movements and counter-movements are launched and conducted with these unfortunate 'young brothers' of the Hindus as pawns and targets, and how it has sown in recent years seeds of unending bitterness and discord among our prominent communities, how some of the most responsible and respected leaders of the communities have suggested and discussed elaborate schemes of converting these 'Untouchables' to their respective faiths for non-religious and sometimes even unworthy considerations

"With the modern growth of ideas, with the efforts of the reforming sections from amongst the Hindus themselves, and as a consequence of general self-consciousness born of the great awakening that has come upon the land during the last decade, the untouchables themselves are slowly beginning to feel their plight, and demand better treatment as a matter of birthright

* * * *

"All this must be painful and humiliating to you, as it should be to every good Hindu The remedy, however, lies in our own hands We must admit with open arms these 'little brothers' of ours in the social fold without reservation The barest justice

requires us to let them draw from the village well drinking water, to let their children have the same benefit of learning the three R's at the village school as our own, and to fling open for them the temples of God that we open to the rest of the Hindus We have got to take these unfortunate brethren of ours to our bosom, and befriend them in all humility as a matter of penance for all our sins of omission and commission

"To you, a custodian of Hindu religion and a trustee not of its monuments in brick and mortar only but of its true import and dignity, I have ventured to address this appeal It is the Mandir which has been to the Hindu throughout centuries the repository of all his religious and social idealism It is blasphemy for him to look upon or think of any living being as inferior or unworthy of Narayan's grace It is one of the proudest legacies left to us by our great saints, most of whom by the by came from lower classes, not excluding untouchables, that we shall consider no human being as inferior to us It would therefore be a tardy performance of duty for you to throw open the temple under your charge to the so-called untouchables

"I shall be thankful if you will let me know what action you propose taking in response to my appeal to you"

Let us hope that the appeal will not fall on deaf ears Wardha has led the way

Young India, 5-9-29] —*M K Gandhi*

ANOTHER PICTURE

By way of an interesting contrast, here is another picture. Gandhiji spent an evening with Sir Chinubhai who had invited a few friends also to meet him The same day a few hours before this, Seth Jamnalalji had been Sir Chinubhai's guest Seth Jamnalalji, we may know, is a great propagandist, and I was told by the friends at Sir Chinubhai's house, that during one or two hours that he had spent there, he had been good enough to entertain his hosts with stories from his own life He had told the Baronet, how years ago he had entertained Commissioners and Collectors to choicest wines, then felt that it meant a woeful sacrifice of principle, had later on asked the same dignitaries to be satisfied with what a strictly vegetarian teetotaller bania like him could give them, and how later he had burnt his boats and cast in his lot with Gandhiji The same orthodox bania had during recent years shocked the orthodoxy of Wardha by opening his temple to all the so-called 'untouchables' and carrying on a vigorous campaign for having all the Hindu temples opened to these classes Would not Sir Chinubhai open his own temple in Ahmedabad to the 'untouchables'? Sir Chinubhai had given him

no reply, but the whole story was narrated to Gandhiji, and as the latter asked him what reply he had given, the Baronet looked at his mother "He is looking at you, Lady Chinubhai," said Gandhiji smiling, "which means that he is ready but waits for your permission" The dowager lady paused for a few seconds and said "If it be your wish, so shall it be"

Young India, 28-5-31] —*Mahadev Desai*

WHY WARDHA?

A friendly Englishman asked Gandhiji the other day a question which rather surprised me "You are a Gujarati, you belong to Gujarat Why should you have selected a Marathi-speaking part for your work and experiments? And why Wardha of all places?" Gandhiji was no less surprised, but he calmly replied "I do not belong to Gujarat, I belong to the whole of India Wardha I selected, because it afforded so many facilities for work There is Jamnalal Bajaj who is interested in my programme of work and my experiments, and he gave me his valuable garden and his garden house for the Village Industries Association of which I made Wardha the headquarters"

* * * *

Gandhiji's brief reply makes me feel like adding something about Jamnalalji that Gandhiji himself said publicly the other day, and which even the Indian readers do not know

In the course of his little talk (to the students of the Marwadi Vidyalaya) * * * Gandhiji asked the boys to be not only worthy of the Principal, but of Jamnalalji who was such a capable 'fisher of men' But he was more "He had long ago broken the bonds of sect and community and creed," said Gandhiji, "and though the institution owed its existence to donations from Marwadis only—that is what gave it its name—Jamnalalji would not be satisfied until it was thrown open to boys of all castes and creeds He had no interest in it until he had found his way to destroy its exclusive character, to throw it open as much to the Harijans as to any other section of Hindus, as much to the Mussalmans as to the Hindus He has no room in his heart for untouchability, and he has none at all for any feeling that Hinduism is in any way superior to any other religion He has helped Muslim institutions no less than he has done Hindu ones, and he has several Muslim friends whom he treats as blood-brothers * * * And let me tell you one thing which you may not know, and perhaps many do not know This passion for removal of untouchability and freedom from communal feeling, as well as equal regard for all religions, Jamnalalji does not at all owe to me It is not

possible for anyone to transfer his conviction to another All one can do is to help another to manifest that conviction which is already in him But in respect of Jamnalalji I could not take the credit for having even helped him to arrive at or to manifest those convictions in his life He had the convictions in him long before he met me and he had lived up to them It was these inner convictions of his that brought him and me together and made possible the close co-operation in which we have been able to work together for so many years You children have to be worthy of a man like him"

Harijan, 24-10-36] —*Mahadev Desai*

OUR BRETHREN THE SHOP ASSISTANTS

As these lines are being written the shop assistants in Bombay are meeting in conference under the presidency of Seth Jamnalal Bajaj Gandhiji in a message to the Conference emphasized the significance of the Conference "To have the Conference presided over by Jamnalalji who has numerous shop assistants in his employment is significant," he said 'Significant, because Jamnalalji knows in his heart no distinction between a seth and a servant, and his shop assistants, cooks, coachmen, and other servants are treated as *members of the family* He knows that they need leisure as he needs it, he knows that they need a holiday occasionally as he needs it (but rarely takes it), he knows that they need to live with their wives and children in fair comfort, in clean and well-ventilated habitations and capable of looking after their own and their children's educational and medical needs even as he needs to do so And he also knows the wretched lot of the average shop assistant, sweating for ten to thirteen hours, without a holiday, on a miserable salary, having to go on leave, if he can get it, without pay, losing every day in health, living a life without cheer, an eternal grind from morning till night"

* * * *

Gandhiji in his message also emphasized the necessity of peaceful and persuasive agitation, again ensured by the presence and guidance of Seth Jamnalal Bajaj

Harijan, 23-10-37]

कार्य-समितिके प्रस्ताव

[कॉंग्रेसकी कार्य-समितिने वर्धाकी बैठकमें जो प्रस्ताव पास किये उनमेंसे महत्त्वके प्रस्ताव नीचे दिये जाते है।]

* * * *

(१) "जयपुर-सीकरके झगडेके सम्बन्धमे समझौता होनेकी खबर

कमेटीने सेठ जमनालालजी बजाजसे सुनी, और कमेटी जनताको इसके लिए बधाई देती है कि उसने सशस्त्र मुकाबला करनेका विचार त्यागकर अहिंसात्मक उपायोको ग्रहण किया जिससे रक्तपातका निवारण हुआ। कार्य-समितिको इसपर दुःख है कि ४ जुलाईको सीकरमें गोलियां चलनेके कारण व्यर्थ कुछ मनुष्योंकी जानें गईं। मृतकोंके परिवारोंसे कमेटी अपनी समवेदना जाहिर करती है।

"कार्य-समितिको आशा है कि भविष्यमें सीकरकी जनतासे व्यवहार करनेमें जयपुरके अधिकारी सद्भावसे काम लेंगे, ताकि राज्य, रावराजा और सीकरकी जनतामें मैत्रीभाव पुनः जारी हो जाय।"

हरिजन सेवक, १३–८–३८] — मो० क० गांधी

जयपुरकी स्थिति

मालूम होता है कि जयपुरके अधिकारी उस समय तक खुश न होंगे जबतक कि वे जयपुरके देशभक्तोंके होश-हवास अच्छी तरह दुरुस्त न कर देंगे। क्योंकि अब उन्होंने जयपुर राज्य प्रजा-मण्डलको, जिसके कि जमनालालजी प्रेसीडेण्ट हैं, गैरकानूनी घोषित कर दिया है। जयपुरकी कौंसिल ऑफ स्टेटके प्रेसीडेण्टके नाम लिखे अपने पत्रको जमनालालजीने प्रकाशित कर दिया है।[1] उम्मीद थी कि वह पत्र अधिकारियोंको अपना पुराना हुक्म वापस लेनेकी प्रेरणा करेगा, मगर जयपुर कौंसिल (जिसके बारेमें भूलसे पिछले सप्ताह मैंने यह लिखा था कि उसमें सब बाहरके ही आदमी हैं, मगर अब मुझे मालूम हुआ है कि उसके चार सदस्य जयपुर राज्यके ही हैं) प्रकट-रूपसे इस बातके लिए उतारू दीखती है कि उन सब कार्योंका अस्तित्व ही मिटा दिया जाय, जिनसे जमनालालजी और उनके सहयोगियोंका सम्बन्ध है, फिर वे चाहे सामाजिक हों, या मानव-सेवाके अथवा ऐसे ही कोई और।

अधिकारियोंका उन लोगोंसे, जिनको वे पसन्द नहीं करते, पेश आनेका यह एक नया तरीका है। मैं केवल आशाके विरुद्ध आशा कर सकता हूं कि जयपुरके अधिकारी अखिल-भारतीय सकटको उत्पन्न करनेमें जल्दबाजीसे काम न लेंगे, क्योंकि इस बातके तीन कारण हैं जिससे जयपुरका सवाल वह महत्त्व धारण कर लेगा।

जमनालालजी खुद ही एक मस्या है। इसके अलावा वह कॉंग्रेसके खजाची और उसकी वर्किंग कमेटीके मेम्बर भी हैं। फिर जयपुरमें जो तरीका अख्तियार किया जा रहा है, वह इतना भीषण है कि पूरी शक्तिके साथ उसका मुकाबला करना ही चाहिए, क्योंकि उसका मुकाबला न किया

१. देखिए पृष्ठ ३९३-३९६, पत्र सख्या ४१।

गया तो रियासतोमे होनेवाली ऐसी हरेक हलचलका ही अत हो जायगा, जिसका प्रजाकी वैध राजनैतिक आकाक्षाओसे जरा भी कोई सम्बन्ध हो।

जयपुरके बारेमे विचित्र बात यह है कि वहाँ असली शासन महाराजका नही, बल्कि एक ऊँचे अंग्रेज अधिकारीका है। क्या इसका मतलब यह है कि वे केन्द्रीय सत्ताकी इच्छानुसार चलते है ? अगर ऐसा न हो, तो क्या कोई अग्रेज दीवान ऐसी नीति पर चल सकता है जो खुद राज्यके लिए विनाशक हो ? मै समझता हूँ कि जयपुरका खजाना इतना भरा-पूरा है कि सर्वनाशके आधुनिक हथियारोका सहारा लेनेके बावजूद प्रजा आत्मसमर्पण न करे और राज्यका लगातार बहिष्कार करती रहे तो भी उसमे हर हालतमे राज्यका काम चलता रहेगा। लेकिन यह वक्त है कि राजा लोग और केन्द्रीय सरकार इस सम्बन्धमे अपनी कोई समान नीति बना ले। या, जैसा कि कुछ लोग कहते है, यह समझा जाय कि जयपुरने जो तरीका अख्तियार किया है, वही उनकी समान नीति है ? मै तो केवल यही उम्मीद कर सकता हूँ कि ऐसा नही है।

हरिजन सेवक, २१-१-३९] —मो क गाधी

जमनालालजी पर प्रतिबन्ध

जमनालालजी पर जो प्रतिबन्ध लगाया गया है, वह बडा अजीब है। उन्हे मिला हुआ हुक्म इस प्रकार है —

"वर्धा (मध्यप्रात) के सेठ जमनालाल बजाज,

चूकि जयपुर-सरकारको यह मालूम हुआ है कि जयपुर राज्यमे तुम्हारी मौजूदगी और हलचलसे अमनमे खलल पडनेकी सम्भावना है, लिहाजा सार्वजनिक हित और सार्वजनिक शान्ति बनाये रखनेके लिहाजसे जयपुर राज्यके अदर तुम्हारे प्रवेशकी मनाई करना आवश्यक मालूम पडता है।

इसलिए तुम्हे चाहिए कि जबतक कोई और हुक्म न हो, तुम जयपुर राज्यमे न आओ।"

दरअसल तो जमनालालजी एक ऐसे आदमी है कि जिनकी उपस्थितिसे कही कोई खतरा होनेकी कमसे कम सम्भावना है। लोग तो हमेशा शान्ति करानेवालेके रूपमे ही उन्हे जानते रहे है। सरकारी अधिकारियोके साथ उनके सम्बन्ध बहुत ही सुखद रहे है। उनके इन गुणोकी कद्र भी इतनी हुई है कि सन् १९१६ या उसके आसपास उन्हे रायबहादुरका खिताब दिया गया था, जिसे असहयोगके दिनोमे उन्होने छोडा है। व्यापारी दुनियामें वह एक बहुत प्रसिद्ध व्यक्ति है और बहुत बडे व्यापारी होनेके अलावा वह बैंकर भी है। यो तो वह बडे उत्साही काग्रेसवादी है, मगर आन्दोलनके रूपमे वह

कभी मशहूर नहीं हुए। हाँ, रचनात्मक कार्य और समाज-सुधारमें वह सबसे आगे हैं। यह जरूर सच है कि अपनी अन्तरात्माके अनुसार चलनेका उनमें साहस है और उसके लिए वह कई बार अपने सर्वस्वकी भी बाजी लगा चुके हैं। जेलसे वह कभी नहीं डरते। जमनालालजी पर तामील किये गए हुक्ममें जो कुछ कहा गया है, स्पष्टत वह गलत है और उन पर बिलकुल लागू नहीं होता। शायद यह कहा जाय कि हुक्मकी शब्दावली तो खाली जाब्तेके लिए है, क्योंकि बिना उसके कानूनन उन पर ऐसा हुक्म तामील नहीं किया जा सकता। अगर ऐसा हो, तो उससे निश्चितरूपसे यही साबित होता है कि जमनालालजी जैसे लोगों पर लागू करनेकी मंशासे यह कानून हरगिज नहीं बना था। जमनालालजी जैसे व्यक्तियोंको जयपुर या देशके किसी अन्य भागमें न आने देनेके लिए उसका प्रयोग करना तो कानूनका शुद्ध और स्पष्ट दुरुपयोग मात्र है।

और इसमें भी मजेदार अंश वह है जिसमें जमनालालजीको 'वर्धाका' कहा गया है, क्योंकि दरअसल तो वह जयपुर राज्यके ही हैं। वहीं उनकी जायदाद है और वहीं उनके मा-बाप व अनेक सगे-सम्बन्धी रहते हैं।

ऐसे हुक्मके आगे मेरी ही सलाह पर जमनालालजीने पूरी तरह सिर झुकाया है। इस बातकी बड़ी अफवाह थी कि अगर उन्होंने जयपुरमें दाखिल होनेकी कोशिश की तो शायद उन्हें गिरफ्तार कर लिया जायगा। इसलिए इस बारेमें उन्होंने मुझसे सलाह ली कि अगर इस तरहका हुक्म उनपर तामील हो तो वह क्या करें। जयपुरके उनके कार्यकर्ताओंका तो यह मत था कि ऐसा कोई हुक्म हो तो वहीं फौरन वह उसका भंग करें। लेकिन मेरा मत इससे भिन्न था। अपनी राय पर पछतानेकी कोई वजह मुझे मालूम नहीं पड़ती। मैंने अपने मनमें सोचा कि ऐसा हुक्म देना तो बड़े पागलपनका काम होगा और जो पागल हैं उनकी बातों पर ज्यादा ध्यान नहीं देना चाहिए, बल्कि उन्हें शांत होनेका मौका दिया जाय। मुझे मालूम हुआ है कि गिरफ्तारीके खयालसे उसके लिए बड़ी-बड़ी तैयारियाँ भी की गई थीं। अत जो लोग गिरफ्तार करनेके लिए आये थे उन्हें जरूर एक तरहकी निराशा हुई होगी।

जल्दबाजी न करने और अधिकारियोंको यह समझानेकी कोशिश करनेमें कि उन्होंने जल्दबाजीसे और गलत काम किया है, जमनालालजीका कोई नुकसान नहीं हुआ। जयपुरकी प्रजा और एक जिम्मेदार आदमी होनेके नाते, शायद यह उनका फर्ज ही था कि वे अधिकारियोंको अपने निश्चय पर फिरसे विचार करनेका मौका दें। फिर भी वे ध्यान न दें और जमनालालजी इस हुक्मको भंग करनेका निश्चय करें, जैसा कि उन्हें करना ही होगा, तो वह ऐसा और भी ज्यादा नैतिक शक्ति और प्रतिष्ठाके साथ करेंगे। और अहिंसात्मक कार्यमें तो नैतिक शक्तिकी ही जरूरत भी है।

यह स्मरण रहे कि महाराजा तो अपने उन मंत्रियोंके हाथोंकी कठपुतली मात्र हैं, जो सब बाहरी हैं, बल्कि उनमेंसे कुछ तो अंग्रेज हैं। वहाँकी प्रजा या वहाँके प्रदेशके बारेमें वे कुछ नहीं जानते। वे तो एक तरहसे उनपर जबर्दस्ती लदे हुए हैं। जयपुरके पढे-लिखे घाटेमें हैं, हालाँकि बाहरी अधिकारियोंके आनेसे पहले, किसी-न-किसी रूपमें, जयपुर राज्यका काम चल ही रहा था। पिछले सप्ताह मुझे उन दुःखद बातोंकी चर्चा करनी पडी थी, जो राजकोटमें अंग्रेज दीवानने अपने बहुत थोडे कार्य-कालमें ही कर डाली। इसमें कोई शक नहीं कि जयपुरके मुहकमा खासका, जिसमें सब बाहरी आदमी ही भरे हुए हैं, कमसे कम यह कृत्य उनकी गैरजिम्मेदारी और अयोग्यताका एक दुःखद प्रदर्शन है। एक आदमीका, फिर वह कितना ही बडा क्यों न हो, निर्वासन नगण्य-सी बात मालूम पडेगी। लेकिन घटनाएँ शायद यही सिद्ध करेंगी कि यह मामला कमसे कम मूर्खतापूर्ण और महँगा तो रहा ही है, क्योंकि पाठकोंको शायद ही यह पता हो कि जयपुरमें प्रजामंडल भी है, जो पिछले छः सालसे जमनालालजीकी प्रेरणासे काम कर रहा है। इस समय जमनालालजी ही उसके अध्यक्ष हैं। मंडल एक शक्तिशाली संस्था है, जिसके सदस्य जिम्मेदार आदमी हैं, और उसने काफी रचनात्मक कार्य किया है। अगर यह प्रतिबन्ध न उठा तो मंडलको भी अपना फर्ज अदा करना पडेगा। क्योंकि यह प्रतिबन्ध तो, ऐसा कहते हैं, मंडलके रचनात्मक और वैध कार्योंको भी रोकनेकी पेशबन्दी है। अधिकारी लोग ऐसी संस्थाके बढते हुए प्रभावको बर्दाश्त नहीं कर सकते, जिसका उद्देश्य महाराजाकी छत्रछायाके अन्दर जयपुरमें उत्तरदायी शासन प्राप्त करना है, फिर उसके साधन कितने ही अच्छे क्यों न हों।

जमनालालजी पर लगाया गया यह एक अपशकुन है। ऐसा मालूम पडता है कि जिन संस्थाओंकी किसी भी रूपमें कोई राजनैतिक आकांक्षा हो उनकी हलचलोंको रोकनेके लिए अख्तियार की जानेवाली सम्मिलित नीतिकी यह पेशबन्दी है और अफवाह तो यह भी है कि राजपूतानेकी रियासतों द्वारा ग्रहण की जानेवाली यह एक संयुक्त नीति है। यह सिर्फ जयपुरके लिए ही सच हो या अन्य सभी रियासतोंके लिए, यह सब पर्याप्त अपशकुन है और जमनालालजी तथा जयपुरकी जनताके लिए अपनी पूरी शक्तिके साथ इसका मुकाबला करना आवश्यक है। यह जरूर है कि ऐसा किया जाय सत्य और अहिंसाके काँग्रेसी सिद्धान्तके अनुरूप ही।

हरिजन सेवक, २१–१–३९] — मो० क० गांधी

CONGRESS AND STATES

In reply to the correspondent's question as to what Gandhiji meant by saying in the last week's *Harijan* that "an all-India

crisis would occur if the Jaipur authorities persisted in prohibiting the entry of Seth Jamnalal Bajaj into the State, Gandhiji replied

"Seth Jamnalal is an all-India man, though a subject of Jaipur He is also a member of the Congress Working Committee, and essentially and admittedly a man of peace He is the president of an organization which has been working and has been allowed to work in Jaipur for some years Its activities have always been open It contains well-known workers who are sober by disposition and who have done much constructive work, both among men and women There is at the head of affairs in Jaipur a distinguished politico-military officer He is shaping the policy of the State in connection with the ban pronounced against Jamnalalji and his association, the Jaipur Rajya Praja Mandal I take it that Sir Beauchamp St John, Prime Minister of Jaipur, would not be acting without at least the tacit approval of the Central authority, without whose consent he could not become the Prime Minister of an important State like Jaipur

"If the action of the Jaipur authorities precipitates a first-class crisis, it is impossible for the Indian National Congress, and therefore all India, to stand by and look on with indifference whilst Jamnalalji, for no offence whatsoever, is imprisoned and members of the Praja Mandal are dealt with likewise The Congress will be neglecting its duty if, having power, it shrank from using it and allowed the spirit of the people of Jaipur to be crushed for want of support from the Congress This is the sense in which I have said that the example of Jaipur, or say Rajkot, might easily lead to an all-India crisis"

Harijan, 28-1-39]

राजकोट और जयरपु

जयपुरका मामला बहुत ही सीधा और राजकोटसे भिन्न है। अगर मुझे मिली हुई खबर सही है, तो वहाँके अंग्रेज प्रधानमत्री इस बात पर तुले हुए है कि उत्तरदायी शासनकी भावनाको लोगोमे फैलानेका भी कोई आन्दोलन न चलने दिया जाये। इसलिए जयपुरमे सविनय अवज्ञा उत्तरदायी शासनके लिए नही, बल्कि प्रजामडल और उसके अध्यक्ष सेठ जमनालाल बजाज पर लगाये गये प्रतिबन्धको हटानेके लिए की जा रही है। मेरी रायमे वाइसरायका कर्तव्य है कि राजकोटके रेजीडेण्टसे कहे कि उस कौल-करारको चलने दे और जयपुरके प्रधानमत्रीसे कहे कि पाबन्दी हटा ले। वाइसरायके ऐसा करनेसे किसी हालतमे यह नही समझा जा सकता कि उन्होने देशी रियासतोके मामलेमे अनावश्यक दस्तदाजी की।

हरिजन सेवक, ४-२-३९] —मो क गाधी

विज्ञप्तियाँ संतोषकारक नहीं

भारत सरकार और जयपुर सरकारने जो विज्ञप्तियाँ निकाली हैं, उन पर गांधीजीने नीचे लिखा वक्तव्य ३ फरवरीको वर्धासे प्रकाशित कराया है —

"जयपुरके बारेमें मुझे केवल एक शब्द कहना है। मैं यह बात अच्छी तरह जानता हूँ कि ब्रिटिश प्रधानमंत्री जयपुर राज्यकी कौंसिलके सदस्य हैं। इसलिए मेरा कहना यह है कि वही सबकुछ हैं। उन्होंने प्रजामंडल तथा सेठ जमनालाल बजाजसे बदला चुकानेकी शपथ ले ली है और मैं यह घोषित करता हूँ कि प्रजामंडलके सम्बन्धमें राज्य जो कार्रवाई कर रहा है उसके बारेमें वह चाहे जो शब्दाडम्बर रचे, प्रजामंडल गैरकानूनी संस्था घोषित की जा चुकी है। अगर प्रजामंडल गैरकानूनी संस्था नहीं घोषित की गई है तो अधिकारियोंको चाहिए कि वे सेठ जमनालाल बजाजको जयपुर राज्यमें प्रवेश करनेकी स्वतंत्रता दे दें और उन्हें तथा मंडलको बगैर किसी प्रकारकी छेड़खानी किये प्रजाको उत्तरदायी शासनकी शिक्षा देने दें। और अगर वे प्रत्यक्षरूपसे या अप्रत्यक्ष-रूपसे हिंसात्मक भाव जागृत करनेका प्रयत्न करें, तो अधिकारी गण उन्हें सजा भी दें।"

हरिजन सेवक, ११-२-३९]

अहिंसा बनाम मशीनगन

अभी कुछ दिन हुए कि सीकरके राव-राजाके कानूनी सलाहकार बैरिस्टर चुडगरकी जयपुरके ब्रिटिश प्रधानमंत्रीके साथ बातचीत हुई थी। बातचीतके सारांशकी नीचे लिखी रिपोर्ट श्री चुडगरने जमनालालजीके पास भेज दी।

(श्री चुडगरका यह पत्र पृष्ठ ३६७-८ पर फुटनोटमें देखें)

मैं तो यह पढ़कर दिग्विमूढ़-सा हो गया। मुझे यह इतना अधिक चकित कर देनेवाला मालूम हुआ कि मैंने जयपुरके प्रधानमंत्रीके पास ऊपरका वक्तव्य १८-१-३९ को भेज दिया और साथ ही निम्नलिखित पत्र भी उन्हें लिखा।

(यह पत्र पृष्ठ ३६७-८ पर देखें)

प्रधानमंत्रीने २०-१-३९ को मुझे इस पत्रका जवाब दिया।

(यह पत्र पृष्ठ ३६६ पर देखें)

इसका जवाब फिर मैंने २२-१-३९ को नीचे लिखे अनुसार भेजा।

(यह पत्र पृष्ठ ३६६ पर देखें)

यह सारा पत्र-व्यवहार मैंने श्री चुडगरको दिखाया और उन्होंने इस सम्बन्धमें २८-१-३९ को श्री जमनालालजीको पत्र लिखा था, उसकी निम्नलिखित नकल मेरे पास भेज दी।

(यह पत्र पृष्ठ ४०१ पर फुटनोटमें देखें)

जयपुरके प्रधानमत्रीके पत्र विस्मयमे डाल देते है। मैंने मागी उनसे रोटी, पर उन्होने दिया मुझे पत्थर! अब अगर वह अपना बयान देनेमें असमर्थ हो, और इस स्थितिमे मै श्री चुडगरके बयानको सच्चा मान लू, तो वह (सर बीचम) मुझे क्षमा करेगे। उनका महज इन्कार करना, साथ ही धमकी देना, इसमे कोई वजन नही।

कॉंग्रेसमे ताकत होते हुए वह इतजार करती रहे और चुपचाप देखा करे, और जयपुरकी प्रजाको मानसिक तथा नैतिक भूखसे मरने दे–खासकर जबकि एक प्राकृतिक अधिकार पर लगाई गई ऐसी पाबन्दीके पीछे ब्रिटिश साम्राज्यका पजा हो–कॉंग्रेसके लिए यह सम्भव नही। जयपुरका प्रधानमत्री अगर बगैर सत्ताके यह सब कर रहा हो तो कमसे कम पद परसे तो उसे हटा ही लेना चाहिए।

हरिजन सेवक, १८–२–३९] –मो क गाधी

जमनालालजी

आखिरकार जयपुर दरबारको जमनालालजीको गिरफ्तार करना ही पडा। कहते है कि उन्हे एक अपरिचित स्थानमे मजबूत चौकी-पहरेके नीचे, अच्छे बढिया मकानमे रखा गया है। जान पडता है, हर बातमे गुप्तता रखी जाती है। मेरी सूचना यह है कि अधिकारियोको उनके पते-ठिकानेकी उन्हे दी जानेवाली सुविधाओ तथा उनके साथ पत्र-व्यवहार व मुलाकात करने सबधी शर्तोको प्रकाशित कर देना चाहिए। जमनालालजीको जहाँ उन्होने रखा है वहाँ क्या डाक्टरी मदद आसानीसे मिल सकती है?

मगर शेखावाटीके बारेमें जो खबरे आ रही है, वे अगर सच है तो उनके आगे जमनालालजीकी नजरबदी और उनके साथ किये जानेवाला बर्ताव गौण हो जाता है। राज्यकी ओरसे तफसीलवार खबरे प्रकाशित न होनेसे जनता अखबारोमें आनेवाली तरह-तरहकी खबरोको ही सत्य मानेगी।

हरिजन सेवक, ४–३–३९] –मो क गाधी

जयपुरके राजबंदी

जयपुर सरकारने सेठ जमनालाल बजाज तथा दूसरे राजबदियोके साथ किये जानेवाले बर्तावके बारेमे जो वक्तव्य प्रकाशित किया है, वह ऐसा मालूम होता है, जैसे कि अपने बचावके लिए खास प्रयत्नके साथ लिखा गया हो। सेठजीके सबधका प्रश्न तो बिल्कुल सीधा-सादा है। यह स्वीकार किया गया है कि उन्हे ऐसी जगह रखा गया है, जहाँका पानी बहुत भारी बताया जाता है। यह भी कबूल कर लिया गया है कि वहाँ पहुँचना आसान नही है। उनका वहाँ कोई साथी भी नही। यह सारा अकेलापन किस लिए? क्या वे कोई खतरनाक आदमी है? क्या वे कोई षड्यत्री है?

उनको नजरबद रखना तो समझमे आजाता है, क्योकि वे उस हुक्मकी अदूली करना चाहते है, जो उनको अपने जन्म-प्रदेशमे प्रवेश करनेसे रोकता है। अधिकारियोको यह मालूम है कि सेठजी एक आदर्श कैदी है, वे जेलके नियत्रणका पूरी तरह पालन करनेमे विश्वास रखते है। उन्हे जिस प्रकार बाहरकी सारी दुनियासे अलग कर दिया गया है, क्या वह अत्याचार और निर्दयता नही है?

कैदियोकी सबसे बडी जरूरत ऐसे साथीकी होती है, जो आचार-विचार, रहन-सहन और व्यवहारमे उनका-सा हो। मेरा खयाल है कि बगैर कठिनाईके उनको एक ऐसे स्थान पर रखा जा सकता है, जहाँ पहुँचना कठिन न हो, साथ ही जहाँ उनके कुछ साथी हो।

* * * *

सत्याग्रहके ध्येयसे सम्बन्ध रखनेवाले अनेक और महत्त्वपूर्ण सवालोका हल होना अभी बाकी है। लेकिन फिलहाल जो सवाल है, वह बहुत बडा नही है। इसका सम्बन्ध तो केवल प्रजामडलको मजूर करवानेके साथ है। सरकारने उसके लिए एक ऐसी शर्त रख दी है, जिसका स्वीकार करना अशक्य है। वह यह कि इसके अधिकारी वे लोग नही हो सकेंगे, जो राज्यसे बाहरकी राजनैतिक सस्थाओंके सदस्य होगे। इससे तो खुद जमनालालजी ही प्रजामडलके प्रमुख नही रह सकते, क्योकि उनका सम्बन्ध कॉंग्रेससे है।

दूसरी रियासतोकी तरह मेरे कहने पर जयपुरमे भी सत्याग्रह स्थगित कर दिया गया है। पर वह हमेशा स्थगित नही रह सकता। मुझे अब भी आशा है कि रियासत अपनी प्रजाके जाग्रत समुदायको सतुष्ट करेगी। मै जयपुर-सरकारको यह सुझाना चाहता हूँ कि सत्याग्रह स्थगित होने पर भी इन सबको जेलमें रखकर वह उल्टे रास्ते पर जा रही है। इतना तो मै फिर भी कहूँगा कि राजबन्दियोके साथ, जिनमे सेठ जमनालाल भी शामिल है, होनेवाले इस अमानुषिक बर्तावको तुरन्त बन्द कर देना चाहिए।

हरिजन सेवक, ६-५-३९] —मो क गाधी

गांधी-सेवा-संघ सम्मेलन

१९२२-२३मे जब गाधीजी जेलमें थे और कॉंग्रेसका रचनात्मक काम बिलकुल ढीला पड गया था, तब जमनालालजीने सोचा कि जो लोग सत्य और अहिंसाको अपना ध्येय मानकर गाधीजीका रचनात्मक कार्य करनेके लिए प्रतिज्ञाबद्ध हो उन लोगोका एक सगठन बनाया जाये। कई बरसो तक वर्किंग कमेटीके केवल तीन सदस्य ही गाधी-सेवा-सघके सदस्य रहे, और तीन साल पहले जमनालालजीने सघकी सदस्यतासे इसलिए इस्तीफा दे दिया, क्योकि उन्हे ऐसा लगा कि सघकी नीतिके नैतिक और आध्यात्मिक

फलितार्थोकी कसौटी पर वह पूरे नही उतर सके। अगर यह राजनैतिक दल होता तो उन्हे अपनी सदस्यतासे इस्तीफा देनेकी कोई वजह नही थी।[1]

*　　*　　*　　*

हरिजन सेवक, १३-५-३९]　　　　-महादेव देसाई

फिर जयपुर

जयपुरमे बहुत ही सुस्तीसे काम लिया जा रहा है। अखबारोमे यह प्रकाशित हुआ था कि दरबार और प्रजाके बीच समझौता होनेवाला है और सेठ जमनालालजी तथा उनके साथी कार्यकर्ताओको रिहा कर दिया जायगा। जिस बात पर झगडा है वह तो बहुत ही मामूली मालूम पडती है। केवल नागरिक स्वाधीनताकी रक्षाके लिए ही वहाँ सविनय-भग करनेका निश्चय किया गया था। और तभी उसका सहारा लिया गया जब कि प्रजा-मडल द्वारा लोगोको वैध तरीकेसे राज्यके अन्दर स्थानीय उत्तरदायी शासनके लिए आन्दोलन करनेकी शिक्षा देनेके अधिकार तक पर आपत्ति की गई। कुछ समय पूर्व दरबारकी एक विज्ञप्ति निकली थी, जिसमे प्रजा-मडलकी स्वीकृतिके लिए शर्ते दी हुई थी। दरबारने चाहा होता तो निश्चय ही उनको ऐसे रूपमे रखा जा सकता था जिससे सविनय-भगके नेता उन्हे मजूर कर लेते। उदाहरणके लिए यह शर्त कि स्थानीय सघका कोई पदाधिकारी ऐसा न होगा जो राज्यसे बाहरकी किसी राजनैतिक सस्थाका भी सदस्य हो, केवल परेशान करनेके लिए ही रक्खी गई मालूम पडती है। भला, सेठ जमनालालजीको इस बिना पर प्रजामडलका अध्यक्ष बननेके अयोग्य क्यो करार दिया जाये कि वह राष्ट्रीय महासभा (काँग्रेस) की कार्यसमितिके सदस्य है? या खास उन्हीकी खातिर यह शर्त रक्खी गई है? इसका स्पष्टीकरण आवश्यक है। और भी ऐसी शर्ते है, जिनके स्पष्टीकरणकी आवश्यकता है। आखिरी दो शर्ते ये है-(१) "मडल श्रीमान महाराजा साहब बहादुर द्वारा स्थापित विधानके मातहत समय-समय पर निश्चित किये जानेवाले उपयुक्त जरियोसे जयपुर राज्यकी प्रजाकी आकाक्षाओ और शिकायतोको पेश करनेका वचन देगा", और (२) "जयपुर राज्यमे बसे हुए लोग ही इसके सदस्य हो सकेगे।"

ये दोनो ही शर्ते अस्पष्ट है। भला राज्य, जो सुधार देनेके लिए तैयार है, उनका पहलेसे ही प्रतिपादन करनेकी आजादी प्रजाको क्यो न दे दे? लेकिन आखिरी शर्त तो, मालूम पडता है, इस स्वाभाविक अधिकार पर बन्दिश लगानेके ही लिए है। और 'बसे हुए' शब्द तो ऐसा खतरनाक कानूनी शब्द

१ इस बारेमे अधिक जानकारीके लिए श्री किशोरलाल मशरूवाला व जमनालालजीके बीच हुआ पत्रव्यवहार पृष्ठ ३८५-३६० पर देखें।

है कि जिसका राजनैतिक रूपमे कम ही व्यवहार किया जाता है। इसके बजाय अधिक प्रचलित 'निवासी' शब्दका प्रयोग क्यो न हो ?

हरिजन सेवक, १०–६–३९] —मो क गाधी

जयपुर

जो लोग जयपुरके मामलेमे दिलचस्पी रखते है, वे आजकल बडे शशोपजमे पडे है, क्योकि उन्हे मालूम हुआ था कि सेठ जमनालालजी बजाज और रियासतके प्रधानमन्त्रीके बीच कुछ बातचीत चल रही थी। उन्हे यह सूचित करते हुए मुझे दुःख होता है कि उस बातचीतका कोई फल नही निकला, इसलिए हमारी लडाई जारी है। सत्याग्रह भी अपने एक तरीकेसे जारी है, भले ही अब गिरफ्तार होनेवाले नये जत्थोका जाना बन्द हो गया है। जो लोग सत्याग्रहके सिलसिलेमे गिरफ्तार हुए थे, वे अब भी जेलमें शाही बन्दी है। उन्हे अभीतक रिहा नही किया गया। वे अपनी सजाकी पूरी मियाद भुगतकर ही बाहर आवेगें। सेठजी ही अनिश्चित कालके लिए नजरबन्द है। वे रिहा होते ही रियासत छोडनेका वचन देकर कभी बाहर नही आयेगे और रियासतके अधिकारी, गिरफ्तारीके लिए नये जत्थोका जाना बन्द होनेके बावजूद, उन्हे एक स्वतत्र व्यक्तिकी भाति जयपुरमे नही रहने देगे। इस तरह वे सेठजीको जयपुरके लोगोमे रचनात्मक कार्य-क्रम चलानेकी इजाजत तक भी नही देगे। वे जानते है कि सेठजीकी ओरसे किसी गुप्त आदोलनका — या कहे कुछ करे कुछ इसका — कोई भय नही है। वे अपनी खरी ईमानदारीके लिए प्रसिद्ध है और उनकी ईमानदारी पर कोई सदेह नही कर सकता।

सेठजीके घुटनोमे दर्द रहनेके कारण सवाल कुछ पेचीदा हो गया है। रियासतके मेडिकल अफसरने सेठजीको इलाजके लिए यूरोप या कमसे कम किसी समुद्री किनारे पर जानेकी सलाह दी है। वे खुद अपनी ओरसे भरसक इलाज कर रहे है, लेकिन उनकी राय स्थान-परिवर्तनकी है। इधर सेठजी जबतक नजरबन्द है, अपने इलाजके लिए भी जयपुरसे बाहर जाना पसन्द नही करेगे। उनके खयालमे आत्म-सम्मानका तकाजा है कि रिहाई बगैर किसी शर्तके हो। जबतक उनके ऊपर ऐसी पाबन्दी लगी हुई है, जिसे किसी भी तरह जायज नही सिद्ध किया जा सकता, वे स्थान-परिवर्तनकी बात तक नही सोच सकते। जब सत्याग्रह ही स्थगित हो गया है, तब जमनालालजीको नजरबन्द रखनेका कोई कारण मालूम नही होता। क्यो नही रियासती अधिकारी उन्हे छोड देते और जब वे रियासती कानूनोका फिर भग करे, उन्हे गिरफ्तार कर ले ? अगर हम नरमसे नरम शब्दोमे कहना चाहे, तो कह सकते है कि सेठ जमनालालजीके इलाजमे कुछ गैबी-सी चीज है। जयपुरके

अधिकारियोका यह फर्ज है कि या तो वे उनकी अनिश्चित काल तककी कैदको उचित सिद्ध करे या उन्हे बिना किसी शर्तके रिहा कर दे।

जयपुरी लोग मुझसे पूछते रहते है कि उनके सत्याग्रह पर कवतक पावन्दी लगी रहेगी ? मै उन्हे सिर्फ यही जवाव दे सकता हूँ कि जवतक वातावरणकी दृष्टिसे उसका स्थगित रहना आवश्यक हो। इस अरसेमे उन्हे रचनात्मक कार्य जारी रखना चाहिए। मेरी अव भी यही राय है कि ऐसा कोई भी व्यक्ति सत्याग्रह करनेका अधिकारी नही है, जिसने उन शर्तोको पूरा नही कर लिया, जो शर्ते मैने सत्याग्रहके लिए वताई है। लेकिन मेरी सव सलाहोमे एक वात ऐसी है, जिससे गुजायश निकल सकती है। जवतक किसीके दिल व दिमागमे मेरी वात वैठ नही जाती, वह उसपर अमल करनेके लिए वाध्य नही है। जवतक किसीको सच्चे दिलसे आन्तरिक प्रेरणा नही होती, तबतक "यह गाधीजीकी सलाह है," इस खयालसे उसे मानकर रुकना लाजिमी नही है। दूसरे शब्दोमे, यह उन्ही पर लागू होती है, जो आन्तरिक प्रेरणाका अनुभव नही करते और जो मेरे परिपक्व अनुभवो तथा मेरी सलाहकी गभीरता पर विश्वास करते है।

हालाँकि समझौतेकी वातचीत टूट गई है, तो भी रियासतके अधिकारी इस गुत्थीका हल ढूढनेकी जिम्मेदारीसे मुक्त नही हो गये। सत्याग्रह न करनेका यह अर्थ नही है कि स्वाधीनताके मौलिक अधिकार, जिनके लिए लडाई शुरु की गई थी, लेनेके लिए किसी भी प्रकारका आदोलन न चलाया जाय। लोकमत अधिकारियोको चैन नही लेने देगा। इसलिए जयपुरियोको यह समझ लेना चाहिए कि जवतक उनमे दृढ सकल्प मौजूद है, उनके हाथमे शक्ति भी है। और इस शक्तिको अपने नियत्रणमे रखनेसे यह सदा वढती ही है। प्रत्येक शक्ति इसीलिए नही होती कि उसका इस्तेमाल किया जाय। शक्तिके पैदा होते ही उसे इस्तेमालमे लानेकी अपेक्षा उसका सचय कर लेना प्राय अधिक प्रभावकारी होता है।

हरिजन सेवक, १५-७-३९] —मो क गाधी

SETH JAMNALALJI

Seth Jamnalalji is an extraordinary prisoner He believes that as a prisoner he has not to care about his body beyond what the doctors provided for him do And so I have only now come to know the true state of his health Shri Shankarlal Banker, who happened to go to Jaipur to see Jamnalalji, got concerned about his health and told me how bad it was

For the moment I refrain from publishing the correspondence which has come into my hands According to the Jaipur Civil Surgeon his is a case for special treatment If it is, the onus is on the State to release him unconditionally, leaving it to Jamnalalji whether he will take special treatment within the State or

without It is futile to suggest to Jamnalalji that he should undertake to leave Jaipur if he is discharged He will rather die in prison than be free under the very condition for the breach of which he has courted imprisonment As I have already pointed out there is no fear of Jamnalalji promoting civil disobedience in the State For it stands indefinitely suspended The authorities know that Jamnalalji is essentially a non-violent man They also know him to be a man of his word To me his detention is a mystery and, in the present state of his health, a crime

The public generally do not know that though the place where he is detained is good and accessible, it is a haunt of ferocious animals * * * My purpose is to protest against Jamnalalji being kept in a tiger-infested place I understand that even his keepers are not very happy over their job There is no fear of Jamnalalji running away If he must be kept in prison, why should he not be kept in an unobjectionable place where medical and other assistance is easily available?

There is also another point which calls for notice Though repeated requests have been made, he has not yet been permitted to keep a companion He has been given no nurse Instances are on record when he was badly in need of night attendance That he himself has made no complaint is no reason for the authorities' negligence in not providing necessary attendance Their attention has been drawn to the matter more than once by Sethji's secretary

—*M K Gandhi*

[The above was written on the 6th inst, but after we had gone to press the happy news has been received that Jamnalalji has been released Ed]

Harijan, 12-8-39]

जयपुर सत्याग्रह

जैसा कि सेठ जमनालालजीने अपने सार्वजनिक वक्तव्यमे घोपित किया है, जयपुरका सत्याग्रह सफलताके साथ समाप्त हो गया। महाराजा साहवसे उनकी कई मुलाकाते हुई है। उनके फलस्वरूप सभाओ और जुलूसो पर पावन्दीवाला कानून (रेग्युलेशन) उठा लिया गया है, इसी प्रकार अखवारो पर लगा हुआ प्रतिवन्ध भी उठ गया है, और कई दूसरे सुधार जारी करनेका भी आश्वासन दिया गया है। इस सुखद परिणामके लिए महाराजा साहव और सेठ जमनालालजी दोनो ही धन्यवादके पात्र है – महाराजा साहव तो अपनी न्यायवुद्धिके लिए और सेठ जमनालालजी जयपुर प्रजामण्डलकी ओरसे वातचीत करनेमे प्रदर्शित अपनी वुद्धिमत्ता और विनम्रताके लिए। यह एक

ऐसे आन्दोलनका सुखद अन्त है, जो बड़े सयम और शान्तिके साथ चलाया गया था। यह अहिंसाकी विजय है। इसमें बिल्कुल शुरूसे ही अपनी मांग इतनी कमसे कम रखी गयी थी जितनी कि राजनैतिक शिक्षा और अपने विचारोंको प्रकट करनेके लिए आवश्यक है। उत्तरदायी शासनका ध्येय तो हमेशा रहा है, लेकिन उसे इस उग्र या आक्रमणात्मक रूपमें कभी नहीं रखा गया, मानो फौरन ही पूर्ण उत्तरदायित्व देने पर आग्रह हो। प्रजा-मडलने अपनी मर्यादा और जनताकी पिछड़ी हुई हालतका बुद्धिमानीके साथ ध्यान रक्खा है। व्यावहारिक रूपमें राजपूतानेके अनेक राज्योंमें अभी तक कोई राजनैतिक शिक्षा नहीं देने दी गई है। अत यदि जयपुरकी प्रजाको नागरिक स्वाधीनता उसकी असली भावनामें मिल गई हो तो यह एक ठोस लाभ होगा। पर यह जितना जयपुरके अधिकारियों पर निर्भर है उतना ही इस बात पर भी निर्भर है कि प्रजा किस बुद्धिमानीके साथ उसका उपयोग करती है।

इस सम्बन्धमें सेठ जमनालालजीने एक बहुत महत्त्वपूर्ण बात कही है। उनका आग्रह है कि किसी अंग्रेजको दीवान न बनाया जाय। मुझे इस राज्यके अंग्रेज दीवानके शासन-प्रबन्धकी आलोचनाका दुखदायी फर्ज अदा करना पड़ा है। मुझे इसमें कोई सन्देह नहीं कि किसी भी देशी राज्यमें अंग्रेज दीवान कभी भी उपयुक्त नहीं हो सकता।

* * * *

इसलिए, आशा की जाती है कि, अगर महाराजा साहबको अपना दीवान चुननेकी सचमुच छूट हो, तो वह किसी ऐसे भारतीयको ही चुनेंगे, जो अपनी ईमानदारी, योग्यता और प्रजाकी आकांक्षाओंके प्रति सहानुभूतिके लिए प्रसिद्ध हो। साथ ही, यह भी आशा की जाती है कि अगर ब्रिटिश सरकार ही चुनाव करे, तो वह किसी अंग्रेज दीवानको महाराजा साहबके ऊपर न थोपेगी।

हरिजन सेवक, २३–९–३९] —मो क गांधी

जयपुर राज्य और प्रजा-मंडल

आखिर प्रजा-मडल और राज्यके बीच एक समझौता हो गया है। इस सुखद अन्तका श्रेय राज्याधिकारियों और सेठ जमनालालजी, दोनोंको है। आशा है कि इस समझौतेके फल-स्वरूप राज्याधिकारियों और प्रजामडलके बीच सुन्दर सम्बन्ध स्थापित हो सकेगा, और इन दोनोंके सहयोगके परिणाम-स्वरूप हर दिशामें रियासती प्रजाकी दिन-दिन उन्नति होगी। इसके लिए राज्यको सहिष्णुताका परिचय देना होगा, और मडलको अपने सभी कामों और वक्तव्योंमें सयमसे काम लेना होगा।

हरिजन सेवक, २०–४–४०] —मो क गांधी

जयपुर

सेठ जमनालालजी जयपुरमे मुसीबतोके घने जगलमेंसे अपना रास्ता निकालनेका यत्न कर रहे है। एक समझौता पिछले दिनोमे हो चुका है। उसमे उनका काफी हिस्सा था। उसमे रियासतको भी वाहवाही मिली थी और मुसीबते भी कम हो गई थी। इसीलिए उन्होने सोचा था कि इस बार उनका काम सुगम व सरल हो जायगा। मगर ऐसा नही हुआ। सेठजीके कहनेके अनुसार वहाके दीवान राजा ज्ञाननाथजी एक बिलकुल गैरजिम्मेदार व तरक्कीके दुश्मन व्यक्ति है। जयपुरके चिरकालसे पीडित काश्तकारोको जरा भी तसल्ली नही दे सके है। वहाकी प्रजामे उनको हटाने और एक ऐसे दीवानको नियुक्त करनेके लिए आदोलन चल रहा है जो प्रजामतकी कदर कर सके। सार्वभौम सरकारका यह कर्त्तव्य हो जाता है कि जब वह राजाओके लिए किसी दीवानकी नियुक्ति करे तो यह अवश्य देख ले कि वह रैयतकी जरूरतोकी तरफ सहानुभूति रखनेवाला है या नही। जब कोई दीवान जिस राजाकी नौकरी करता है उससे भी बढकर स्वेच्छाचारी बन जाय, तो यह इस बातका सूचक है कि वह हटा दिया जाय।

हरिजन सेवक, १९–१०–४०] — मो क गाधी

स्वर्गीय जमनालालजी

सेठ जमनालाल बजाजको छीनकर कालने हमारे बीचसे एक शक्ति-शाली व्यक्तिको छीन लिया है। जब-जब मैने धनवानोके लिए यह लिखा कि वे लोक-कल्याणकी दृष्टिसे अपने धनके ट्रस्टी बन जाये, तब-तब मेरे सामने सदा ही इस वणिक शिरोमणिका उदाहरण मुख्य रहा। अगर वह अपनी सम्पत्तिके आदर्श ट्रस्टी नही बन पाये, तो इसमे दोष उनका नही था। मैने जानबूझकर उनको रोका। मै नही चाहता था कि वे उत्साहमे आकर ऐसा कोई काम कर ले, जिसके लिए बादमे शान्त मनसे सोचने पर उन्हे पछताना पडे। उनकी सादगी तो उनकी अपनी ही चीज थी। अपने लिए उन्होने जितने भी घर बनाये, वे उनके घर नही रहे, धर्मशाला बन गये। सत्या-ग्रहीके नाते उनका दान सर्वोत्तम रहा। राजनैतिक प्रश्नोकी चर्चामे वह अपनी राय दृढतापूर्वक व्यक्त करते थे। उनके निर्णय पुख्ता हुआ करते थे। त्यागकी दृष्टिसे उनका अन्तिम कार्य सर्वश्रेष्ठ रहा। वे किसी ऐसे रचनात्मक काममे लग जाना चाहते थे, जिसमे वे अपनी पूरी योग्यताके साथ अपने जीवनका शेष भाग तन्मय होकर बिता सके। देशके पशुधनकी रक्षाका काम उन्होने अपने लिए चुना था, और गायको उसका प्रतीक माना था। इस काममे वह इतनी एकाग्रता और लगनके साथ जुट गये थे कि जिसकी

कोई मिसाल नही। उनकी उदारतामें जाति, धर्म या वर्णकी सकुचितताको कोई स्थान न था। वे एक ऐसी साधनामे लगे हुए थे, जो कामकाजी आदमीके लिए विरल है। विचार-सयम उनकी एक वडी साधना थी। वे सदा ही अपनेको तुस्कर विचारोसे बचानेकी कोशिशमे रहते थे। उनके अवसानसे वसुन्धराका एक रत्न कम हो गया है। उनको खोकर देशने अपना एक वीरसे वीर सेवक खोया है। जिस कार्यके लिए उन्होने अपना शेष जीवन समर्पित कर दिया था, उसे अब उनकी विधवा जानकीदेवीने स्वय करनेका निश्चय किया है। उन्होने अपनी समस्त निजी सम्पत्तिको, जो करीब ढाई लाखके आसपास है, कृष्णार्पण कर दिया है। ईश्वर उन्हे अपने इस अगीकृत कार्यमे सफल होनेकी शक्ति दे।

हरिजन सेवक, १५–२–४२] —मो क गाधी

क्रूर प्रहार

डाक रवाना होनेके बाद फोन आया कि जमनालालजी अचानक बेहोश हो गये है। गाधीजी तुरन्त ही उन्हे देखनेको चल पडे, लेकिन उनके वर्धा पहुचनेमे पहेले ही खबर मिली कि जमनालालजी चले गये।

कल रात उन्होने फोन पर मुझसे देर तक बाते की। चीनके तारणहार श्री चाग काई-शेकके वर्धा आने पर उन्हे कहा टिकाया जाय, क्या-क्या प्रबन्ध किया जाय, वगैरा अनेक बाते मुझसे पूछी और उन्हे अपने पास ही टिकानेकी उत्कण्ठा प्रकट की। फिर हँसते-हँसते बोले "बापू मुझसे गोसेवाका काम लेना चाहते है, मगर वह हो कैसे ? काम तो ऐसे-ऐसे आते रहते है।" मैने कहा · "लेकिन आपको तो ससारके एक महापुरुषको अपना अतिथि भी बनाना है, और गोसेवा भी करनी है, फिर क्या हो ?" इस पर आप बोले "मेरे यहा तो ससारका सबसे बडा महापुरुष पहलेसे अतिथि बनकर बैठा है। क्या वह काफी नही ?" फिर कहने लगे "अब मै गोपुरी जाता हूँ।" मैने कहा "अगर वे आये, तो आपको कुछ दिनोके लिए गोपुरी छोड जानकी-पुरीमे आना पडेगा।" बोले "गोपुरी भी तो आज जानकीपुरी बन गई है, क्योकि जानकीदेवी गोपुरीमे ही आ बसी है।" इस प्रकार उन्होने अपने सदा सुलभ हास्यके साथ रात बाते की। सवेरे भी वही प्रसन्नता, वे ही उल्लासभरी बाते, उतनी ही उत्कण्ठाभरी पूछताछ "चाग काई-शेकके आनेकी कोई खबर है ?"

क्या सपनेमे भी किसीने सोचा होगा कि इन्ही जमनालालजीको दोपहर बाद अचानक खूनके दबावका दौरा २५० और १२५ का हो जायगा, और गाधीजीके उनके समीप पहुचनेसे पहले ही वे हम सबको छोडकर चल देगे ?

कालकी गतिको कौन जान पाया है? आज वर्धाकी सभी सार्वजनिक संस्थायें और उन संस्थाओंके कार्यकर्ता उनके अभावमें अनाथ हो कर बैठे हैं। सब बिलख रहे हैं। वे तो मरते दम तक सेवा करते और सेवाका ही ध्यान करते हुए चले गये। उनके समान धन्य मृत्यु बिरलोंको ही प्राप्त होती है। लेकिन उनके अभावमें अपंग बैठे हुए हम लोग क्या करें? गांधीजी क्या करें? जानकीबहन क्या करें? उनके प्रेम और पोषणसे पुष्ट होनेवाली संस्थायें क्या करें? इस समय तो आंखोंके सामने अंधेरा छा रहा है और कलम आगे बढ़नेसे इनकार करती है।

हरिजन सेवक, १५-२-४२] —महादेव देसाई

कड़ी परीक्षा

बाईस वर्ष पहलेकी बात है। तीस सालका एक नवयुवक मेरे पास आया और बोला. "मैं आपसे कुछ मांगना चाहता हूँ।"

मैंने आश्चर्यके साथ कहा "मांगो। चीज मेरे बसकी होगी तो मैं दूंगा।"

नवयुवकने कहा· "आप मुझे अपने देवदासकी तरह मानिये।"

मैंने कहा "मान लिया! लेकिन इसमें तुमने मांगा क्या? दर-असल तो तुमने दिया और मैंने कमाया।"

यह नवयुवक जमनालाल थे।

वह किस तरह मेरे पुत्र बन कर रहे, सो तो हिन्दुस्तानवालोंने कुछ-कुछ अपनी आँखों देखा है। जहांतक मैं जानता हूँ, मैं कह सकता हूँ कि ऐसा पुत्र आज तक शायद किसीको नहीं मिला।

यों तो मेरे अनेक पुत्र और पुत्रियां हैं, क्योंकि सब पुत्रवत् कुछ-न-कुछ काम करते हैं। लेकिन जमनालाल तो अपनी इच्छासे पुत्र बने थे और उन्होंने अपना सर्वस्व दे दिया था। मेरी ऐसी एक भी प्रवृत्ति नहीं थी, जिसमें उन्होंने दिलसे पूरी-पूरी सहायता न की हो। और वह सभी कीमती साबित हुई, क्योंकि उनके पास बुद्धिकी तीव्रता और व्यवहारकी चतुरता दोनोंका सुन्दर सुमेल था। धन तो कुबेरके भण्डार-सा था। मेरे सब काम अच्छी तरह चलते हैं या नहीं, मेरा समय कोई नष्ट तो नहीं करता, मेरा स्वास्थ्य अच्छा रहता है या नहीं, मुझे आर्थिक सहायता बराबर मिलती है या नहीं, इसकी फिक्र उनको बराबर रहा करती थी। कार्यकर्ताओंको लाना भी उन्हींका काम था। अब ऐसा दूसरा पुत्र मैं कहांसे लाऊं? जिस रोज मरे, उसी रोज जानकीदेवीके साथ वे मेरे पास आनेवाले थे। बातोंका निर्णय करना था, लेकिन भगवानको कुछ और ही मंजूर

रहा। ऐसे पुत्रके उठ जानेसे बाप पगु बनता ही है। यही हाल आज मेरे है। जो हाल मगनलालके जानेसे हुए थे, वे ही ईश्वरने इस बार फिर मेरे किये है। इसमे भी उसकी कोई छिपी कृपा ही है। वह मेरी और भी परीक्षा करना चाहता है। करे। उत्तीर्ण होनेकी शक्ति भी वही देगा।

हरिजन सेवक, २२–२–४२] –मो क गाधी

JAMNALALJI

"The angel
Came again with a great wakening light,
And showed the names whom love of God had blessed,
And lo! Sheth Jaman's name led all the rest"

Those who knew Jamnalalji — and the hundreds of telegrams that have been pouring in from places far and near show that the number of that blessed company was great — will not feel unhappy over the alteration I have made in Leigh Hunt's famous lines about Abou Ben Adhem I do not know if on the fateful afternoon of the 11th Jamnalalji had a vision of any Angel come to receive him in the region of the blessed But if he had, I am sure he must have spoken to him

"Low but cheerly still, and said,
I pray thee then,
Write me as one that loves his fellowmen"

Never since the sudden and premature death of Manganlal Gandhi in 1928 had any bereavement dealt such a staggering blow on Gandhiji as the sudden and premature death of Jamnalalji Words fail me when I attempt to describe his feeling of desolation For two days he bore up bravely consoling the bereaved widow and the aged mother, but on the third day he broke down as he was saying "Childless people adopt sons But Jamnalalji adopted me as father He should have been an heir to my all. Instead he has left me an heir to his all" The feeling of desolation is, if I may say so, universal Wardha and Sevagram, even with Bapu and Ba in it, look dreary without Jamnalalji The numerous institutions he had founded or helped in founding will experience a piercing sense of void without his sunny presence Even the meetings of the Congress Working Committee must be dull and dreary without his scintillating and outspoken commonsense

The feeling of loneliness that has come over most of us may be judged from these few lines from Vallabhbhai's letter

"He had vowed not to sit in a train or a motor car, and his vow was to terminate on the 15th He had promised thereafter to come and have rest with me in Hajira Instead he has gone

to his eternal rest No death could have been better But as the proverb goes, 'Let a hundred die, but not the nourisher of a hundred' Hundreds upon hundreds of our workers in various parts of our country must be shedding silent tears in their cottages Bapu has lost a true son, Jankidevi and the family a true shelter, the country a loyal servant, the Congress a stately pillar, the cow her true friend and many institutions their patron, and we have lost a beloved blood brother I feel so desolate and forlorn"

Everyone mourns his loss Amongst the mourners are not only his friends of the Working Committee, not only his friends in the business world like the Birlas and the Tatas, Sir Purushottamdas and others, not only his numerous co-workers the humblest of whom he had brothered and befriended, but countless others who received his help without the world ever knowing it The meeting to mourn his death held in Wardha was addressed by members of the Hindu Mahasabha and the Muslim League, and a Muslim barrister paid him a fine tribute He said without Jamnalalji's sympathy and timely help the Anglo-Urdu School would not have been in existence He had the priceless gift of friendship which endeared him to all, and everyone under his roof felt completely at home He had literally broken the barriers of the family of his blood relationship, and made himself member of a vaster family to which men and women of all races and creeds belonged Above all he had broken the barrier that wealth and position often create His employees and his servants were members of his family, and they shared their joys and sorrows with him in an unstinted measure There are few wealthy men on earth so utterly void of affectation and snobbery, so utterly innocent of possession and propriety (I mean ownership), so utterly free from communalism or provincialism, and so overflowing with the milk of human kindness

Like some of those rare men who are gifted with the power of sublimating their desires and their passions, he was gifted with the power to sublimate his sense of possession He followed the master cheerfully through all the numerous vicissitudes of the latter's life, because although 'he had great possessions', he had divested himself of the sense of proprietorship in them Born of an obscure family in a waterless village in Jaipur State, he was adopted by a rich man from the same State who had settled in Wardha Even the poor parents would not part with their child, until the rich Bachhrajji from Wardha promised to dig a well in the village The boy was brought up by the adoptive father, and after two or three years in a Hindi school was put into business

Once he incurred the rage of his hot-tempered father who reminded him of the riches he had come into possession of without labouring for them He was just 17 then He addressed a letter to the father couched in terms of humility and firmness characteristic of the Jamnalalji of future years[1]

* * * *

The father relented, implored the son tearfully to stay, and he stayed Sturdy commonsense and innate business skill enabled him to earn lakhs and give in charity five times the wealth he had inherited from the adoptive father If he stayed home in response to the father's importunations, he knew he was a trustee of the father's wealth Consciously or unconsciously that was his first lesson in the theory of trusteeship The father who had adopted him taught that first lesson, the father he later adopted initiated him into the deep implications of it

Similarly he had the virtue of fearlessness which the absence of a slavish education had left unimpaired He had silenced Tommies travelling first and second and trying to bully him, he would not serve wines at a party he gave in honour of a Governor, to a Commissioner who said that the Chief Commissioner would not open his school unless he promised to be more loyal, he had said he would do without that costly privilege, and to a DSP whom he was interviewing and who had remarked "How I wish the boat that is carrying Tilak to England may go to the bottom of the sea,' he had said "You forget that there are numerous Englishmen on the boat!"

The fearlessness came into full play during the twenty years of his public life under Gandhiji's leadership President Kruger was unlettered and Generalissimo Chiang Kai-shek knows no English Ignorance of English was no handicap to them It had in fact left the native vigour of their minds unspoilt Even so with Jamnalalji He could see the implications of an intricately worded Congress resolution quicker than many other members, and he would often raise his warning voice lest the Committee should put their foot into seemingly innocent propositions It was he who raised earliest the question of moral and material co-operation in the war and who said that a nation of shop-keepers could not be duped by the promise of moral co-operation.

Treasurer of the nation's wealth, he was also the treasurer of the nation's honour He was among the very few capitalists who recklessly threw themselves in the fray for the nation's freedom and bore the rigours of imprisonment every time the

1 *The English translation of the letter given here is deleted. Please see pp 519-520 for its Hindi version*

call was made His faith burnt brightest when that of others flickered in times of stress and strain and dark despair It was to revive the faith of others when Gandhiji was in jail under a six years' term of imprisonment that he donated Rs 2,50,000 and founded the Gandhi Seva Sangh Politics he could understand, but he *often regarded it as a sorry game which might soil one's* heart and soul And so he had early set his heart on the constructive part of the Congress programme Khadi to which he gave his wealth, his time, his organizing ability and his devotion, Harijan uplift for which he risked the wrath of his hide-bound community, threw open the first big temple in India to the Harijans, and gave to Gandhiji the whole of the income of the *Harijan village—Sevagram—for the Harijans'* welfare, Hindu-Muslim unity for which he cheerfully bore heavy blows in the course of a riot, and earnestness for which won him distinguished men like the Khan Sahebs as brothers and women like Raihanaben and the Captain Sisters as sisters, Village industries, for which he gave away a precious part of his patrimony, women's cause to which he devoted a good deal of his wealth and time, and the Cow to whose cause he dedicated his life

Who could have been blessed with a richer life of service? And yet one could notice in various utterances of his a longing for something he had not yet achieved His sense of truth and justice was keen even to harshness, so far at any rate as he was concerned Before he met Gandhiji he had worshipped at many shrines Gandhiji seemed to settle his mind, and Gandhiji's fierce passion for truth made him long to be his son "Blessed will be the moment when I shall be worthy of being known as Mahatmaji's son," he wrote in 1923 "It is due to his infinite mercy that I have learnt at least to see my weaknesses and failings" He was often overwhelmed by a sense of his spiritual shortcomings, and he often longed to retire from all public activities It was this spirit that endeared him to Gandhiji more than the sacrifice of material possessions, almost incomparably great as this was

* * * *

Nourished on food like this, he grew from self-introspection to more self-introspection Constant companionship with Vinoba, who had managed the Satyagrahashram at Wardha since the beginning, was a great help in the process He had immense self-confidence He knew that, if some day the crown of thorns of Congress Presidentship were to be bestowed on him, he would be equal to the burden But his heart quailed when he thought of the spiritual journey he had still to do before entering the Kingdom of Heaven It was not because he had riches Owner-

ship in these he had cast away But there were other things needed And in order to purge himself of all dross he took the greatest step of his life — dedicating himself to the service of the cow He left his house — the house which had lodged guests like Presidents of the Congress, Lord Lothian, H E Tai Chi Tao, Dr John Mott, and the Egyptian Delegation — and went to live in a hut which he called Gopuri Here he did his spinning, tended his cows with the devotion of King Dileepa, and kept a careful record of his thoughts and acts from day to day As we visited the hut on the day he passed away, we saw on the little desk in front of his feet his diary written up complete to the day of his death Even so his life was complete and regular and God-fearing He had dedicated this to Mother Cow, in order that she may be for him the *Kamadugha*[1] that Cow Nandini had been to King Dileepa Whether the death that came to him was the blessing given him by the Cow it is difficult to say Perhaps it was For no death could be more desirable Almost until the last moment he was thinking of his Cow and his Gopuri, and when the end came it was so sudden and so quick that it seemed as though he had slipped into blissful peace But whether the Cow had really proved his *Kamadugha*, there is no doubt that by his dedicated life he had rendered himself Gandhiji's *Kamadugha* It was he who had made it possible for Gandhiji to settle first in Wardha and then in Sevagram, and it was he who was the living link between the outside world and Gandhiji His death removes the link and leaves both Gandhiji and the outside world much poorer

Harijan, 22-2-42] — *Mahadev Desai*

सतीका संकल्प

गत बुधवार ता ११ फरवरीको दोपहर बाद करीब तीन बजे यकायक फोन पर गांधीजीसे कहा गया कि जमनालालजीको खूनके दबावका दौरा हुआ है, और ११० व २५० डिग्री दबावके बीच वे बेहोश पडे है। खूनके दौरेको उतारनेके लिए जो दवा गांधीजी लिया करते है, वह डॉक्टरोने तुरन्त ही मगाई थी और उसके लिए एक मोटर भी रवाना की थी। मोटरके आते ही गांधीजी दवाके साथ उस पर सवार होकर वर्धा रवाना हुए। सेठ घनश्यामदासजी बिडला भी, जो कार्यवश उन दिनो यही थे, उनके साथ गये। मोटरमे बैठते-बैठते गांधीजीके मुहसे अचानक यह उद्गार निकला "अगर वे जिन्दा न मिले, तो बडा ही दुर्दैव होगा।" परन्तु उनके सहज

1 *Fulfiller of all desires*

आशावादने यहाँ भी उनका साथ न छोडा। उन्होने इसी सिलसिलेमे फौरन कहा "मगर मुमकिन है कि हम उन्हे वहाँ हमेशाकी तरह हँसते-खेलते ही देखे।" लेकिन जमनालालजी तो उनके वर्धा पहुँचनेसे पहले ही गोलोकवासी बन चुके थे। जिसने सुना, वही स्तब्ध रह गया। किसीको विश्वास ही न होता था, क्योकि न तो उनकी उम्र ही अभी इस लायक थी और न तन्दुरुस्ती ही इतनी खराब थी, कि वे अचानक चले जाते! उस दिन दोपहरको बारह बजे तो वे फोन पर हमसे बाते कर रहे थे। वही हँसी, वही मीठा मजाक। सेवाकी अभी उन्हे बडी बडी उमगे थी। पिछले दिनो जब नागपुर जेलमें हम सब साथ थे वे अकसर बातचीतके दौरानमे मुझसे कहा करते थे "ऐसा कोई काम या प्रवृत्ति मुझे चाहिये, जिसमे मैं सारी शक्ति और समय लगाकर देशकी सेवा कर सकू।" इसी दरमियान एकाएक तबीयत खराब हो जानेकी वजहसे वे अपनी मियादके कोई पाँच-छ हफ्ते पहले ही जेलसे रिहा कर दिये गये। रिहा होते ही वे एक सत्याग्रही सिपाहीके नाते सीधे गाधीजीके सामने हाजिर हुए। हुक्म मिला कि जब तक सजाकी मुद्दत पूरी न हो, दुबारा सत्याग्रह करना मुनासिब न होगा। यह वक्त तन्दुरुस्तीको सभालनेमे ही खर्च होना चाहिये। अतएव स्वास्थ्य-सुधारके विचारमे वे करीब एक महीने शिमला रह आये, और जिस दिन उनकी नौ महीनेकी सजाकी मुद्दत पूरी होती थी, ठीक उसी दिन वापस गाधीजीके पास आ पहुँचे। बहुत सोच-विचारके बाद गाधीजीने तय किया कि उनके शरीरकी जर्जरित अवस्थाको देखते हुए उन्हे फिरसे जेल जानेकी इजाजत तो वे न दे सकेंगे। चुनाँचे उन्होने जमनालालजीको गोसेवाका काम उठा लेनेकी सलाह दी। और जमनालालजी किसी कामको आधे दिलसे तो कभी करते ही न थे। जिस चीजको हाथमे लेते थे, उसके पीछे अपना सर्वस्व लगा देते थे। वे तुरन्त ही गोसेवाके भेखधारी बन गये। वर्धा और नालवाडीके दरमियान उन्होने अपने रुपयोसे बहुत-सी खुली जमीन खरीद ली और उस पर अपने लिए घास-फूसकी एक कुटिया बनाकर उसीमे रहने लगे। फिर क्या था? जमनालालजी थे और उनकी गोसेवा थी। रात-दिन उसीकी लगन – उसीकी धुन! सचमुच गोसेवाको उन्होने अपने लिए 'मोक्षका साधन' ही मान लिया था। ऐसा मालूम होता था मानो वशिष्ठकी नन्दिनीके इस वरदानको उन्होने अपने जीवनका सूत्र बना लिया हो "न केवलाना पयस प्रसूतिमवे हि माम् कामदुघा प्रसन्नाम्।" (अर्थात् यह न सोचो कि मैं केवल दूध ही दे सकती हूँ, मैं कामधेनु हूँ, प्रसन्न हो जाऊँ तो जो चाहूँ दे सकती हूँ।)

इसलिए जब उनके अग्निदाहका प्रश्न उठा, तो गाधीजीने उसके लिए गोपुरीकी भूमि ही पसन्द की। वहीं उनकी अर्थी पहुँचाई गई। वर्धाकी अधिकाश जनता तो उन्हे अपने पिताके रूपमे देखती थी। शामके वक्त

उनकी शव-यात्राके साथ सारा शहर गोपुरीमे उमड आया। वही गाधीजी भी जमनालालजीकी अस्सी वर्षकी वयोवृद्ध माता, पत्नी जानकीदेवी और अन्य कुटुम्बीजनोके साथ आये। अतिशय स्नेह और आदरके साथ उन्होने जमनालालजीकी सूनी कुटियाके कोने-कोनेकी 'यात्रा' की।

गाधीजीके लिए यह कोई साधारण अवसर न था। जमनालालजीके कुटुम्बियोके लिए तो यह अग्निपरीक्षाका समय था ही, किन्तु स्वय गाधीजीके लिए भी यह एक कडी कसौटीका समय था। गाधीजीका अपना यह जीवन-सिद्धान्त है कि आदमी खुद जो कहता या करता है, उससे उसकी इतनी जाँच नही होती, जितनी उसके कहने या करनेसे उसके अपने निकटके साथियो और कुटुम्बियोके आचरण पर पडनेवाले प्रभावसे होती है। इसलिए जमनालालजीके स्वर्गवासके बाद, ईश्वरके भेजे हुए इस वज्रपातका जवाब उनके कुटुम्बीजन किस तरह देते है, इसीमे उन्होने उनकी और अपनी परीक्षा समझी। एक ओर उन्होने जमनालालजीकी माताको दिलासा दे-देकर शान्त किया, दूसरी ओर जानकीदेवीजीको, जो 'सती' होनेके विचारमे चिता पर बैठनेको तैयार थी, 'सती' का सच्चा अर्थ समझाया और उनसे चिताग्निकी साक्षीमे पतिके अपूर्ण कार्यको पूरा करनेके लिए अपना सर्वस्व दे देने और शेष जीवन यज्ञबुद्धिमे बितानेका सकल्प करवाया। श्री विनोबा तो वहाँ थे ही। कुष्ठरोगसे पीडित श्री परचुरे शास्त्री भी अपनी रोगशय्या छोडकर सेवाग्रामसे पैदल गोपुरी आये थे और वहाँ मौजूद थे। श्री विनोबाके और शास्त्रीजीके मत्रोच्चारकी ध्वनिसे सारी गोपुरी गूँज उठी। श्रीमती अम्तुल सलामने 'फातेहा' पढा, कुरानकी कुछ आयते पढी। इतनेमे काफी अधेरा हो गया। चिता धू-धू जल रही थी। थोडे ही समयमे जमनालालजीका भौतिक शरीर जलकर भस्म स्वरूप बन गया, किन्तु चिताग्निकी लाल-नीली लपटोके उस प्रकाशमें जब सब लोग विसर्जित होकर अपने-अपने घर लौटे तो बजाय शोक या रुदनके सबके चेहरो पर सतीके पुण्य सकल्पकी झलक ही नजर आई। ऐसा प्रतीत होता था मानो सब अपने किसी महानुभाव साथीको किसी लम्बी पुण्य-यात्राके लिए विदा करके उसके पदचिन्हो पर चलनेका निश्चय लिये लौट रहे हो।

* * * *

उस दिन सेवाग्राम लौटने पर शामकी प्रार्थनाके बाद गाधीजीने आश्रमवासियोके सामने सारी घटनाका वर्णन करते हुए अपने हृदयके जो उद्गार प्रकट किये, श्री महादेवभाईके शब्दोमे उनका सार इस प्रकार है –

"सवाल यह था कि अग्निदाह कहाँ किया जाय – सेवाग्रामके पास टीले पर, सार्वजनिक श्मशान-भूमिम या गोपुरीमे। आखिर यह तय हुआ कि जिस गोपुरीको उन्होन अपना घर बनाया था, जहाँ अपन जीवनके अन्तिम

कार्यके लिए अपना सर्वार्पण करके उन्होने फकीरीको अपनानेका निश्चय किया था, अग्निदाह भी वही किया जाय। मै इस बारेमे तटस्थ था, लेकिन मुझे यह निर्णय अच्छा लगा।

"उनके शवके साथ हजारो लोग गोपुरी तक आये। अग्निदाहके बाद विनोबाने अपने मधुर कण्ठमे सारेका सारा ईशोपनिषद् सुनाया। फिर मैने उनसे 'गीताई' का बारहवाँ अध्याय सुनानेको कहा, ताकि वहाँ उपस्थित सब लोग उसे समझ सके। बारहवाँ अध्याय मैने इसलिए सुझाया था कि वह छोटा है, किन्तु उन्हे तो अठारहो अध्याय जबानी याद है, इसलिए उन्होने नवाँ सुनाया। मगर उतनेसे मुझे तृप्ति नही हुई। मैने कहा कोई अभग सुनाओ। इस पर उन्होने तुकारामका एक अभग भी सुनाया। अन्तमे मैने कहा अब 'वैष्णव जन तो तेने कहिये' भी सुना दो। उन्होने वह भी सुनाया। श्री परचुरे शास्त्री वहाँ पहले ही पहुँच चुके थे। उन्होने वेद-मत्र पढे और मेरे कहने पर लोगोको उन मत्रोका अर्थ भी सुनाया। मत्र बडे अर्थ-गभीर और सामयिक थे। थोडेमे उनका सार यह था 'जो ज्योति जमनालालजीमे सीमित थी, वह अब सीमारहित विश्व ज्योतिमे समा गई है, यानी हम सबमे आ मिली है। शरीर तो मिट्टीका था, मिट्टीमे मिल गया। परन्तु उसमें जो शाश्वत था, मगर एक सीमामे बधा हुआ था, वह अब हम सबका हो गया है। जब तक जीवित थे, जमनालालजी कुछ ही लोगोके थे, किन्तु अब वे सारे विश्वके बन गये है। उनके शरीरका अन्त हुआ है, किन्तु उनके व्रत, उनकी प्रतिज्ञाएँ, उनकी गोसेवा, उनकी खादी-सेवा, सत्य और अहिंसाकी उनकी लगन, ये सब तो अब हममे आकर मिल गई है—हमारी विरासत बन गई है। उन्होने इन सब व्रतोको सिद्ध करनेके लिए जो जो कुछ भी किया, सो सब तो अब हमारा है ही, लेकिन जितना कुछ वह अधूरा छोड गये है, उसे पूरा करनेका जिम्मा भी हमारा है। अपनी मृत्यु द्वारा वे आज हमे यही सिखा गये है।'

"इससे ज्यादा सच्चा सदेश और क्या हो सकता है? यह मै कैसे कहूँ कि मुझे उनके जानेका दुख नही हुआ? दुख होना तो स्वाभाविक था, क्योंकि मेरे लिए तो वही मेरी कामधनु थे। आफत-मुसीबत हो तो बुलाओ जमनालालजीको, कुछ काम करना हो, कोई जरूरत आ पडी हो, तो बुलाओ जमनालालजीको, और जमनालाल भी ऐसे कि बुलावा गया नही, और वे आये नही। ऐसे जमनालालका दुख कैसे न हो? लेकिन जब उनके किये कामोको याद करता हूँ और हमारे लिए जो सन्देश वे छोड गये है, उसका विचार करता हूँ, तो अपना दुख भूल जाता हूँ।

"आज हमे विचार तो यह करना है कि हम उनकी जमीन पर बैठे है। सेवाग्रामके लिए उनके मनमे कितना अनुराग था, सो मै जानता हूँ। यहाँ

एक-एक कौडी उन्हीकी खर्च होती है। उन्हे इस वातकी चिन्ता रहती थी कि यहाँ खर्च होनेवाली एक एक पाईका ठीक-ठीक हिसाव रहता है या नही, क्योकि वे खुद अपनी कौडी-कौडीका हिसाव रखते थे। वे हमेशा इस वातका आग्रह रखते थे कि सेवाग्रामका कोई आदमी वाहर जाय, तो उसका वर्ताव और उसकी रहन-सहन सेवाग्रामको शोभित करनेवाली होनी चाहिये।

"उनका अपना जीवन भी कैसा अनोखा था? एक दिन आकर कहने लगे 'मानता हूँ कि आपका मुझ पर वडा प्रेम है, लेकिन मुझे तो देवदासकी तरह आपका पुत्र वनना है।' पहाडी डीलडौलवाले जमनालालजीको मैं अपना पुत्र कैसे वनाता? परन्तु आखिर उनके प्रेम और आग्रहके सामने मुझे झुकना ही पडा। मैंने कहा 'अच्छी वात है।' लोग वेटेको गोद लेते है, लेकिन यहाँ तो वेटेने वापको गोद लिया! और गोद भी किस तरह लिया? वोले 'वस, अव तो मुझे अपना अन्तर्वाह्य सव सदाके लिए आपके चरणोमे चढा देना है। मेरे मनमे मलिन विचार तो आते ही रहते है, लेकिन अव मैं उन सवको आपके सामने उगल दिया करूँगा, ताकि मेरी शुद्धि हो और मुझे शाति मिले।' अपने इस सकल्पका उन्होने मरते दम तक पालन किया। वे रायवहादुर थे। लेकिन मेरे साथ उनका सम्वन्ध रायवहादुरीसे पहले ही कायम हो चुका था। मैंने उन्हे रायवहादुरी लेने दी, क्योकि उन दिनो मैं सोचता था कि उसका भी कुछ सदुपयोग हो सकेगा। जव उसे छोडनेकी वात आई, तो उन्हे उसका त्याग करनेमे एक क्षणकी भी देर न लगी। उनकी निर्भयता तो असाधारण ही थी। जवसे 'पुत्र' वने तवसे वे अपनी समस्त प्रवृत्तियोकी चर्चा मुझसे करने लगे थे। अन्तमे जव उन्होने गोसेवाके लिए फकीर वननेका निश्चय किया, तो वह भी मेरे साथ पूरी तरह सलाह-मशविरा करके ही किया। वे जिस कामको हाथमे लेते थे, उसमे जी-जानसे जुट जाते थे। यही उनका स्वभाव था। जव रुपया कमाने लगे तो ढेरो रुपया कमाया, लेकिन जहाँ तक मुझे मालूम है, मैं दावेके साथ कह सकता हूँ कि अनीतिसे उन्होने एक पाई भी कभी न कमाई। और जो कुछ कमाया, सो सव उन्होने जनता-जनार्दनके हितमे ही खर्च किया।

"जानकीदेवीके दुःखकी तो हम सव कल्पना कर सकते है। वे तो पागल ही हो गई थी। कहती थी 'वस, मुझे तो इनके साथ सती होना है। इनके विना मैं जी ही नही सकती।' मैंने कहा 'यह न समझो कि इस तरह सती होनेसे लोग तुम्हारी पूजा करेगे। इससे तो उलटे निन्दा होगी। हाँ, अगर कर सको, तो योगाग्नि पैदा करो और उसमे भस्म होकर सती हो जाओ। न मैं तुम्हे रोकूगा और न दूसरा ही कोई तुम्हे रोक सकेगा। लेकिन वह तो सम्भव नही। इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ कि अव तो उनके पीछे जोगिन वनकर ही तुम्हे सच्ची सती वनना होगा।' घनश्यामदासजी

पास ही थे। उन्होंने कहा 'हमारे यहाँ तो ऐसे मौको पर कोई शुभ सकल्प करनेका रिवाज है। जानकीदेवीसे ऐसा कोई सकल्प कराइये।' जानकी-बाईने खुद ही कहा 'मेरा सकल्प तो यही है कि वे मेरे लिए जो कुछ छोड गये हैं, सो सब मैं उनके कामके लिए अर्पण करती हूँ।' उन्होंने मुझे अपना हिसाब भी बताया · दो-ढाई लाखकी रकम थी। यह सब उन्होंने गोसेवाके लिए अर्पण कर दी। इसके बाद जब वह चिताग्निके प्रकाशमे खडी थी, मैंने एक और बात भी उनसे कही। मैंने कहा 'सिर्फ इससे काम न चलेगा। अपना सारा धन कृष्णार्पण करके तुम भिखारिन बन गई हो। अब लडके तुम्हे खिलायेंगे तो तुम खाओगी, और नही खिलायेंगे तो मेरे पास आ जाओगी और मेरे भिक्षान्नमे शरीक हो जाओगी। लेकिन इसके साथ ही अब तुम्हे इस चिताकी साक्षीमे अपने आपको भी इसी कामके लिए समर्पित कर देना है। अब तुम्हे अपने लिए नही, बल्कि जमनालालजीके इस गोसेवा-कार्यके लिए ही जीना है। अब न तो लडकोका घर तुम्हारे लिए है, न लडकियोका। तुम्हे या तो गोपुरीमे रहना है, या मेरे पास सेवाग्राममे। तीसरी जगह तुम्हारे लिए नही। और चूंकि तुम अपना सर्वस्व इस कार्यके लिए दे रही हो, इसलिए अब शोक करनेका भी कोई अधिकार तुम्हे नही रह जाता।' जानकीदेवीने इसे भी स्वीकार किया और स्वय जमनालालजीकी गोपुरीमें गड जानेका निश्चय कर लिया। इस तरह वे सच्चे अर्थमे सती बनी। यह सब शुद्ध वैराग्यसे हुआ है, या स्मशान वैराग्य ही है, सो तो समय ही बतायेगा। वह खुद पूछती थी 'क्या ईश्वर मुझे यह सब करनेकी शक्ति देगा?' विनोबा वही थे। उन्होने कहा: 'जहाँ शुभेच्छा होती है, वहाँ ईश्वर उसको पूर्ण करनेकी शक्ति भी देता ही है।' इस पर मुझे महारानी विक्टो-रियाकी याद हो आई। राजगादी पर बैठते समय उनकी उम्र सिर्फ १९ बरसकी थी। जब उनका प्रधानमत्री रानीके रूपमें उनको सलाम करने आया, तो वह अपने सिंहासनसे नीचे उतर आई और बूढे प्रधानके आगे सिर झुकाकर खडी हो गई। जब उनके राज्याभिषेककी घोषणा की गई, तो उन्होने ईश्वरसे प्रार्थना की और प्रतिज्ञा ली I will be good —अर्थात् मैं भली बनूँगी। बस, यह उनका एक शुद्ध सकल्प था, जो उनके मत्रियोकी सहायतासे चमक उठा। हिन्दुस्तानकी वह सम्राज्ञी थी। यह मैं नही कहता कि उनके राज्यमें हमें कोई तकलीफ ही नही हुई। फिर भी इतिहास इस बातका साक्षी है कि वह अपने उस शुभ सकल्पके अनुसार अपनी प्रजाकी सेवा करना चाहती थी। जो काम उन्होंने किया, वही जानकीदेवी भी कर सकती है। वे गोसेवाका सारा काम अपने हाथमें लेकर उसे पूरी तरह सफल बना सकती है।

"मै फिर कहता हूँ कि हमे हमेशा यह याद रखना होगा कि हम जमनालालजीकी भूमि पर बैठे है। हमे उनके नामको सुशोभित करना है। ऐसा कोई काम हमारे हाथो न हो, जिससे उनकी कीर्तिमे बट्टा लगे। उनकी शुद्ध कमाईको हमे खूब सोच-विचारकर खर्च करना चाहिये, और एक-एक पाईका हिसाव रख कर हमेशा अपव्ययसे बचना चाहिये। उनका सयम हमारे लिए मार्ग-दर्शक हो।"

किन्तु गाधीजीको इससे भी सतोष नही हुआ। उस रात वे एक मिनट भी नही सो पाये। मुझे याद नही पडता कि इससे पहले कभी किसी प्रियजनकी मृत्यु पर उन्होने इस तरह सारी रात आँखोमे काटी हो। दूसरे दिन उन्होने जमनालालजीके सारे परिवारको इकट्ठा किया, और जिससे उन्हे जो आशा थी, सो उसे बता दी। जमनालालजीके सबसे बडे पुत्र चि कमलनयनसे उन्होने कहा "हिन्दू धर्ममे सबसे बडा पुत्र दूसरे पुत्रोकी तरह अपने पिताकी सम्पत्तिका वारिस तो होता ही है, मगर साथ ही वह कुलधर्मका और अपने पिताकी नीति और सिद्धान्तोका सरक्षक भी बनता है। इसलिए मै तुमसे कहता हूँ कि तुम व्यापारमे लगे हो, तो लगे रहो, धन कमाना हो, कमाओ, लेकिन तुम्हारी सारी कमाई जमनालालजीकी तरह धर्मकी कमाई होनी चाहिये। साथ ही, यह भी याद रखो कि, जमनालालजीकी तरह तुम्हे भी लोकहितके लिए अपनी सम्पत्तिका सरक्षक बनकर रहना है। तुम अपनी कमाईका रुपया अपने लिए नही, लोकसेवाके लिए खर्च करोगे, तभी तुम्हारा ट्रस्टीपन सार्थक हो सकेगा।" इसके बाद छोटे भाई चि रामकृष्णको समझाते हुए कहा "तुमसे तो मै यह आशा करता हूँ कि तुम अपना सारा जीवन सेवाके लिए और जमनालालजी द्वारा छोडे हुए अधूरे कामोको पूरा करनेके लिए समर्पित कर दोगे। लेकिन मै तुम्हे इसके लिए मजबूर करना नही चाहता। तुम्हारी हिम्मत हो, तो सकल्प करो। याद रखो कि जो शुभ सकल्प हम करते है, उन्हे निबाहनेकी शक्ति भी ईश्वर हमे दे ही देता है। और मान लो कि हम सफल नही हो पाये, तो भी कोई नुकसान नही। गीताकी भाषामे 'योगभ्रष्ट' की गति भी शुभ ही होती है।" फिर उन्होने जमनालालजीके भतीजे श्री राधाकृष्णजीसे कहा "जानकीदेवीके व्रतको तो तुम जानते ही हो। मै मानता हूँ कि अगर उन्हे एक योग्य सचिव मिल जाय, जैसा महारानी विक्टोरियाको मेलबोर्न मिल गया था, तो वह अवश्य ही गोसेवा-सघकी सभानेत्रीके पदको सुशोभित कर सकेगी। वह गोमाताकी 'पुत्री' है, अतएव वह अपनी 'माँ' की अच्छी सेवा कर सकेगी। आजकी इस गिरी हुई तन्दुरुस्तीमे मै उन

पर ज्यादा बोझ नहीं डालना चाहता। किन्तु मैं जानता हूँ कि 'त्याग-मूर्ति' के संकल्पका बल उसकी देहको वज्रवत् बना दिया करता है। तुम याद रखो कि और सब काम बँट जाने पर जो बाकी रह जायगा, उस सबकी जिम्मेदारी तुम्हारे कन्धो रहेगी।" अन्तमें जमनालालजीकी पुत्रियोंसे बात करते हुए उन्होंने कहा "अभी जो बातें मैंने चि कमलनयन और रामकृष्ण वगरासे कही हैं, वे सब तो तुमने सुनी ही हैं। याद रखो कि तुम्हें भी वही सब करना है। तुमसे भी मैं तुम्हारी शक्तिके अनुसार त्यागकी आशा रखूँगा। यह कभी न भूलो कि जमनालालजीकी जितनी कमाई थी, सो सभी असलमें कृष्णार्पण थी। अगर उसका कुछ हिस्सा तुम्हें मिला है, तो वह भी ट्रस्टीशिपकी शर्तके साथ ही मिला समझो। वह तुम्हारे भोग-विलासके लिए नहीं, बल्कि इसलिए है कि जमनालालजीकी तरह तुम भी उसकी ट्रस्टी बन कर रहो।"

हरिजन सेवक, २२-२-४२] —प्यारेलाल

जमनालालजी और स्त्री-समाज

गांधीजीने स्व जमनालालजीके जीवनकी चर्चा करते हुए महिला-आश्रमकी बहनोंके सामने नीचे लिखा प्रवचन किया —

"महिला-आश्रमकी बहनें तो जमनालालजीकी खास तौर पर ऋणी हैं। वे इस ऋणको किस तरह चुकायेंगी? सिर्फ रोने-धोनेसे तो यह ऋण नहीं चुकेगा। सेवा ही उनका उत्तम स्मारक है। आत्मा तो अमर है। शरीर ही नाशवान है लेकिन जमनालालजीकी तरह हर आदमी लोगोंके दिलमें अमरता नहीं पाता।

* * * *

"जमनालालजीने स्त्री-कार्यकर्ता तैयार करनेके विचारसे महिला-सेवा-मण्डलकी स्थापना की थी। आप और कुछ न करें, तो कमसे कम उनके सेवाभावको तो अवश्य ही तन-मनसे अपना लें, और जब जीवनके विशाल क्षेत्रमें प्रवेश करें, तो उसे अपने कवचके रूपमें धारण करलें। आपमें जो कुवारी हैं, उनमेंसे अधिकतर तो ब्याह करके घर-गृहस्थी संभालेंगी। यह स्वाभाविक है। जमनालालजी तो जोडे जुडानेका काम भी बडी निपुणताके साथ करते थे, इसलिए मैं तो उन्हें मजाकमें 'शादीलाल' ही कहा करता था। मेरी तरह उनकी भी यह प्रबल इच्छा थी कि कुवारी बहनें अपनी अभागिन बहनोंकी सेवाके लिए स्वेच्छा-पूर्वक अविवाहित रहें। लेकिन ऐसी स्त्रियां तो इनी-गिनी ही हो सकती हैं।

* * * *

"जमनालालजी एक बेजोड आदमी थे। वे सेवाके लिए ही पैदा हुए थे, और उनकी सेवाका जन्म भी सकुचित क्षेत्रमें रहनेके लिए नही हुआ था। कोई काम वे आधे दिलसे न करते थे। उनकी लगन आश्चर्यजनक थी। जिस गायका दूध वे पीते थे, उसकी सारी सार-सभाल वे खुद करने लगे थे। उनकी तन्मयता कुछ ऐसी ही थी। वे चाहते थे कि काम करते-करते मरे। ईश्वरने उन्हे वैसी ही मृत्यु दी। उनकी हर चीजका हर आदमी अनुसरण नही कर सकता, लेकिन जिन जमनालालजीने आप लोगोके लिए इतना किया है, उनके लिए आपके दिलमें सचमुच ही प्रेम और आदर हो, तो आपको उनके जीवनसे कमसे कम एक पाठ तो सीखना ही चाहिये। स्त्रीत्वका जो ऊचा आदर्श उन्होने आपके सामने रक्खा है, उसे सिद्ध करनेका आप सब प्रयत्न कीजिये और उसके लिए अपना जीवन समर्पित कर दीजिये।"

हरिजन सेवक, ८–३–४२] — अमृत कुवर

जमनालालजीका सच्चा स्मारक

(१)

सत्यशोधकको तो हर बातमे अपना रास्ता दुनियासे न्यारा ही निकालना पडता है। और, जमनालालजीने तो गाधीजीसे सत्य-शोधक बनना ही सीखा था। गाधीजीने सत्यकी ही तलाशमे अपने परिवारका त्याग किया, और सारी दुनियाको अपना परिवार माना। जमनालालजीने जगतकी सेवाको अपना जीवन-कार्य बनाया। यही वह अमर गाठ थी, जो दोनोको एक-दूसरेसे जोडे रही। इसलिए गाधीजीने बडी खूबीके साथ जमनालालजीकी मृत्युके शोकको एक नया ही रूप दे दिया।

जमनालालजी अकेले एक व्यक्ति ही नही थे, वे सच्चे अर्थमे देशकी एक सस्था थे। उनके आकस्मिक स्वर्गवासके बाद गाधीजीने तय किया कि उनकी तमाम सार्वजनिक प्रवृत्तियोको पहलेकी तरह अखण्ड रूपसे चलाते रहना ही उनका सच्चा स्मारक हो सकता है। इस हेतुको सफल बनानेके लिए उन्होने जमनालालजीके करीब दो सौ ऐसे मित्रोको, जिन्हे उनके जीवन-कार्यसे सहानुभूति थी, अपनी सहीसे निमत्रण भेजकर सलाह-मशविरेके लिए वर्धा बुलाया। जमना-लालजीके राष्ट्र-भाषा-प्रचारके सिद्धातको ध्यानमे रखकर निमत्रण-पत्र हिन्दी और उर्दू दोनो लिपियोमे छापा गया था। वर्धाके नवभारत विद्यालयमे २० और २२ फरवरीको दोपहर बाद इस निमित्त आये

हुए भाई-बहनोकी दो सभायें हुईं। इस अवसर पर गांधीजीने जो भाषण किया, वह अपनी मिसाल आप ही है। उनके मुहसे ऐसे वचन, इस प्रकारके अवसर पर शायद पहले कभी सुननेमें नही आये। रुपये-पैसे द्वारा ईंट-पत्थरका स्मारक बनानेकी बातको छोडकर जमनालालजीकी मृत्युको आत्मोन्नतिका और उनके जीवन-कार्योको आगे बढानेका एक साधन बना लेनेकी सलाह देते हुए उन्होने वहाँ एकत्र मित्र-मण्डलीसे कहा —

बोझ बटाइये

"आजका-सा अवसर मेरे जीवनमे इससे पहले कभी नही आया था, और जहा तक मैं सोच पाता हूँ आगे भी कभी नही आयेगा। आप देखते है कि जो कार्रवाई आज हम यहा करने जा रहे है, उसके लिए कोई सभापति नही चुना गया है। मैं तो सभापति हूँ ही नही। क्यो नही हूँ, सो आप खुद ही थोडे समयमे समझ जाइयेगा।

"कहा जा सकता है कि मेरे साथ जमनालालजीका सम्बन्ध करीब-करीब तभीसे शुरू हुआ, जबसे मैंने हिन्दुस्तानके सार्वजनिक जीवनमे प्रवेश किया। उन्होने मेरे सभी कामोको पूरी तरह अपना लिया था। यहा तक कि मुझे कुछ करना ही नही पडता था। ज्योही मैं किसी नये कामको शुरू करता, वे उसका बोझ खुद उठा लेते थे। इस तरह मुझे निश्चिन्त कर देना, मानो उनका जीवनकार्य ही बन गया था। यो, हमारा काम मजेमें चल रहा था। लेकिन अब तो वे खुद ही चले गये है और उनके सब कामोको चलानेका भार मेरे कन्धो पर आ पडा है। इसलिए मैंने सोचा कि मैं उनके सब मित्रोको जो उनके अनेकानेक सेवा-कार्योमे सहायक होते रहते थे, यहा बुलाऊ और उनसे निवेदन करू कि वे इस असह्य बोझको उठानेमें अपनी ताकतभर मेरी मदद करके इसे हलका करे। आज मैं आपके सामने एक भिक्षुककी हैसियतसे यहा खडा हू। फिर इस सभाका सभापति कैसे बन सकता हूँ?

भिक्षा कौन देगा?

"अपना भिक्षा-पात्र लेकर मैं आपके सामने खडा तो हू, लेकिन मैं धन-दौलतकी भीख नही चाहता। वैसी भीख भी मैंने अपने जीवनमे खूब मागी है। गरीबकी कौडी और अमीरके करोडोकी मुझे जरूरत रही है। लेकिन आज जो काम मुझे करना है, उसमे रुपये-पैसेकी कम ही जरूरत है। अगर मैं चाहता तो आजके दिन जमनालालजीके सब धनिक मित्रोको यहा इकट्ठा करके उन पर दबाव

डाल सकता था, उनकी खुशामद कर सकता था, और उनकी भावना-ओको द्रवित करके थैलियोके मुह खुलवा सकता था। यह धन्धा भी मैने अपने जीवनमे जी भरकर किया है, और वह मुझे अच्छी तरह आता भी है। लेकिन अगर वही सब आज मै यहा करने बैठता, तो उस व्यक्तिके नामको बडा धब्बा लगता, जो मुझे अपना सर्वस्व देकर चल बसा है, जो मेरे पास आया तो मेरी परीक्षा लेने था, मगर पुत्र बनकर बैठ गया, और मेरा सारा बोझ उठाता रहा। मुझे जो भिक्षा आज आपसे मागनी है, वह तो यह है कि जमना-लालजीके उठ जानेसे जो बोझ बढ गया है उसको उठानेमे कौन-कौन मेरी मदद करेगे। अकेले एक आदमीकी मददसे नही चलेगा, मदद तो सबको मिलकर देनी होगी और काम बाँट लेना होगा।

अब तक क्या हो सका है?

"इस सम्बन्धमे आगे कुछ कहनेसे पहले मै आपको यह बता दू कि अभी तक मैने क्या किया है। ११ फरवरीको जब मै जमनालालजीके द्वार पर पहुँचा, तो उनका देहान्त हो चुका था। मेरे पास वर्धासे सदेशा तो सिर्फ यही आया था कि खूनका दौरा कम करनेकी दवा भेजें। मै दवा भेजकर अपने दिलकी तसल्ली कर सकता था। लेकिन उस दिन मैने महसूस किया कि नही, मुझे खुद ही जाना चाहिए। जब वहा पहुचा, तो मामला कुछ और ही पाया। मै उस अवसर पर भी निर्दय बन गया। जानकीदेवी तो पतिके शवके साथ सती होनेकी ही बात करती थी। मैने कहा 'सचमुच सती होना है, तो जीती-जागती सती बन जाओ। धनका जितना त्याग कर सको, कर दो।' यह तो उनके लिए एक मामूली बात थी। आखिर धनसे वह कितना सुख और आराम भोग सकती थी? लेकिन दूसरी चीज उतनी आसान नहीं थी। सम्भव है, वह अब भी उतनी आसान न हो। मैने कहा, वह अपने पतिका स्थान ले ले। उन्हे सकोच हुआ, फिर भी मैने उनसे प्रतिज्ञा करा ही ली। इतना कठोर मै बन गया।

"इस तरह जानकीदेवीने तो त्यागकी दीक्षा ली, लेकिन फिर मैने सोचा कि उनके लडको, लडकियो और दामाद वगैराको भी ऐसा ही त्याग करना चाहिये। मै उनके साथ भी कठोर हो गया। मैने उनसे कहा 'बेशक, आप जमनालालजीकी तरह व्यापार कीजिये, लेकिन उसमे उनकी विशेषताको निवाहते रहिये, यानी व्यापार भी सेवाभावसे अथवा धर्मभावसे कीजिये। जितना कमाये, नीतिपूर्वक कमाइये और उसे खर्च भी पुण्यकार्यके लिए ही कीजिये, अपने ऐश-आरामके लिए नही। यानी आप अपने कमाये धनके भी सरक्षक बनकर रहिये।'

"जमनालालजी करीब छ लाख रुपया अपने लड़कोंके पास छोड गये थे, ताकि वे उनका उपयोग सेवार्थ करें, यानी उससे मेरे जैसे भिखारियोंकी झोलिया भरे। लड़के कह सकते थे, कि एक बार हमें जी भरकर ऐश-आराम कर लेने दीजिये, फिर हम त्याग भी करते रहेंगे। लेकिन नहीं, एक-दो दिनके गभीर विचारके बाद उन्होंने वह सारी रकम सेवा-कार्यके लिए दे दी। इसके सिवा, जमनालालजीके जीवन-कालमें काग्रेस-जनोंके और दूसरे कार्यकर्त्ताओं वगैराके आतिथ्य पर हर साल करीब २० हजार रुपया खर्च होता था। उन्होंने इसको भी पहलेकी तरह जारी रखनेका निश्चय किया, और सारे खर्चकी जिम्मेदारी बच्छराज-जमनालाल फर्मकी तरफसे अपने कन्धो पर उठा ली। सेठजीने बजाजवाडीका एक हिस्सा जानकीदेवीके लिए और बच्चोंके लिए रक्खा था। लेकिन उनके परिवारवालोंने यह तय किया कि उनमेंसे कोई उन बगलोमें नही रहेंगे। उनका उपयोग सिर्फ अतिथि-सत्कार अथवा सार्वजनिक कामके लिए ही होगा। वे खुद तो अभी गोपुरीमें ही रहना पसद करते है।

स्वराज्य-प्राप्तिसे भी कठिन

"इस तरह शुभ सकल्पोंके साथ यह काम शुरू हुआ है। जमना-लालजीकी आख बन्द होते ही मैंने उनके बोझका बँटवारा शुरू कर दिया है। आप देखेंगे कि जमनालालजीके कामोंकी जो फेहरिस्त आपको भेजी गई है, उसमें उनके आखिरी कामको पहला स्थान मिला है। यह काम स्वराज्य-प्राप्तिके कामसे भी कठिन है। स्वराज्य मिलनेसे यह अपने-आप नहीं हो जायगा। यह सिर्फ पैसेसे होनेवाला काम नहीं। मैं इस बातका साक्षी हू कि आजीवन अलौकिक निष्ठासे काम करनेवाले उस व्यक्तिने किस अपूर्व निष्ठासे इस कामको शुरू किया था। उन्हें इस तरह काम करते देखकर एक दिन सहज ही मेरे मुहसे यह निकल गया था कि जिस वेगसे वे इस कामको कर रहे हैं, उसको उनका शरीर सह सकेगा या नहीं? कहीं बीच ही में वह धोखा तो न दे जायगा? आज मेरा वह कथन भविष्यवाणी साबित हुआ है— मानो उस समय भगवान् ही मेरे मुहसे बोल रहे थे। साराश यह कि यह काम पैसेसे नहीं, एक-निष्ठासे ही होनेवाला है।

* * * *

"जानकीदेवीके दानकी रकमके साथ मिलकर यह रकम हमारी आजकी आवश्यकताके लिए काफी है। लेकिन कार्यकर्त्ता काफी नहीं है। गोसेवाका काम आज तक जिस तरह चला, उससे न जमना-लालजीको सतोष था, न मुझे। इस कामको सतोषजनक रूपसे चलानेके

लिए मुझे आपकी तन-मनसे मदद मिलनी चाहिए। जबतक यह न हो जायगा, मुझे चैन न पडेगा। असलमे वारिस तो उन्हे मेरा बनना चाहिये था, पर वह तो चले गये और जीत गये। अब परीक्षा मेरी है। मै एक नये रूपमे उनका वारिस बन गया हू, यानी उनके सारेके सारे कामोको मैंने अपने जिम्मे ले लिया है। लेकिन यह तो एक ऐसी चीज है, जिसके वारिस आप सब बन सकते है। जब आप सब मिलकर इन कामोको उठा लेगे, तो ये पहलेसे भी ज्यादा व्यवस्थित और सतोषजनक रीतिसे चलेगे, और तभी मै इस परीक्षाओमे उत्तीर्ण हो पाऊगा।

* * * *

खादी और ग्रामोद्योग

"अब दूसरी चीज लीजिये। मिसालके तौर पर, खादीके काममें उनकी दिलचस्पी मुझसे कम न थी। खादीके लिए जितना समय मैंने दिया, उतना ही उन्होने भी दिया। उन्होने इस कामके पीछे मुझसे कम बुद्धि खर्च नही की थी। इसके लिए कार्यकर्त्ता भी वे ही ढूढ-ढूढ कर लाया करते थे। थोडेमे यह कह लीजिये कि अगर मैंने खादीका मत्र दिया, तो जमनालालजीने उसको मूर्तिरूप दिया। खादीका काम शुरु होनेके बाद मै तो जेलमे जा बैठा। मगर वे जानते थे कि मेरे नजदीक खादी ही मे स्वराज्य है। अगर उन्होने तुरन्त ही उसमे रत होकर उसे सगठित रूप न दिया होता, तो मेरी गैरहाजिरीमे सारा काम तीन-तेरह हो जाता।

"यही बात ग्रामोद्योगकी थी। उन्होने इसके लिए मगनवाडी तो दी ही थी, साथ ही उसके सामनेकी कुछ जमीन भी वे मगन-वाडीके लिए खरीदनेका सकल्प कर चुके थे। अब चि. कमलनयनने वह जमीन भी मगनवाडीको दे दी है।

* * * *

"अब तक इस देशकी आजादीको खोनेमे व्यापारी-समाजकी खास जिम्मेदारी रही है। जमनालालजीको यह चीज बराबर खटका करती थी। इसीलिए आज आपके सामने मुझे ये सारी बाते रखनी पडी है।

* * * *

"जमनालालजीके दूसरे कामोके बारेमे मैं आपका इस वक्त ज्यादा समय लेना नही चाहता। वे सब आपकी आखोके सामने ही है। महिला-आश्रमको ही लीजिये। यह उनकी अपनी एक विशेष कृति है। उन्हीकी कल्पनाके अनुसार यह अबतक काम करता रहा है। जमनालालजीके सामने सवाल यह था कि जो लोग देशके काममे जुट कर भिखारी बन जाते है, उनके बाल-बच्चोकी शिक्षाका क्या

प्रबन्ध हो ? उन्होंने कहा कि कमसे कम उनकी लड़कियोंको तो यहां सरकारी मदरसोंके मुकाबले अच्छी ही तालीम मिल सकेगी। बस, इसी खयालसे महिला-आश्रमकी स्थापना हुई।

* * * *

"बुनियादी तालीम और हरिजन-सेवक-संघके कामका भी यही हाल है। आप इनमें शरीक हो सकते हैं। हिन्दू-मुस्लिम एकताके लिए उनके दिलमें खास लगन थी। उनके अन्दर साम्प्रदायिक द्वेषको बू तक न थी। आप उनके जीवनसे इस गुणको ग्रहण कर सकते हैं।

सच्चा स्मारक

"जमनालालजीका स्मृति-स्तंभ खड़ा करके हम उनकी यादको चिरस्थायी नहीं बना सकते। स्तंभ पर खुदे हुए शिलालेखको तो लोग पढ़ कर थोड़े ही समयमें भूल जायेंगे, परन्तु जिस आदमीने दुनियाके लिए इतना-कुछ किया है, उसके कामको चिरस्थायी रखनेका संकल्प कोई कर ले, तो वह उसका सच्चा स्मारक हो रहेगा।

* * * *

"मैं इसे अपने जीवनका एक अत्यन्त गंभीर अवसर मानता हूं। जो शुद्ध धर्मभावना अन्तिम समयमें जमनालालजीकी थी, उसे मैं कायम रखना चाहता हूं। इसलिए जिसे जो कुछ करना हो, उसी भावनासे करे। एकान्तमें बैठे, अन्तर्मुख बने और ईश्वरको साक्षी रख कर जो संकल्प करना हो, करे।"

हरिजन सेवक, ८-३-४२] — प्यारेलाल

जमनालालजीका सच्चा स्मारक

(२)

* * * *

दूसरे दिन सभाकी कार्रवाई शुरू करते हुए गांधीजीने कहा —

"अगर जमनालालजीकी मृत्युसे हम फायदा उठाना चाहते हैं, तो हमें बहुत ज्यादा सावधान बनना होगा, बहुत ज्यादा संयम और त्याग सीखना होगा।

* * * *

"मैं अकसर सोचता हूं कि अगर हममेंसे हरएकको एक सालके फौजी अनुशासनका तजरबा रहता, तो आज हमारी हालत कुछ और होती। जमनालालजी किसी फौजी विद्यालयमें तालीम लेने नहीं गये थे। मगर उन्होंने खुद अपनी कोशिशसे अपने अंदर फौजी अनुशासनके गुण पैदा कर लिये थे। वैसी ही तालीम हममेंसे हरएकको खुद ले लेनी होगी।

* * * *

"इसलिए कल मैंने अपनेमे यह तय कर लिया था कि अगर इस मौके पर पैसा इकट्ठा करनेके बजाय मैं आपको सावधान कर पाऊ, तो वही मेरा सच्चा व्यापार होगा। मैं फिर आपसे कहता हूँ कि आप अपने दिलको खूब टटोल कर देखिये, और जहा कहीं जडता नजर आये, उसे उखाड फेकिये। और भविष्यके लिए यहासे यही सकल्प करके उठिये कि जो अच्छी सलाह आपको मिलेगी या अन्तरसे जो प्रेरणा उठेगी, उसके अनुसार आप तुरन्त काममे जुट जाया करेगे। जमनालालजीके स्मारककी सच्ची स्थापनाका इससे अच्छा या महत्त्वपूर्ण आरम्भ और क्या हो सकता है?"

* * * *

हरिजन सेवक, १५-३-४२] — प्यारेलाल

एक अंग्रेजकी श्रद्धाञ्जली

[मेरे नाम लिखे अपने एक पत्रमें श्री वेरियर एल्विनने स्व जमनालालजीके सम्बन्धमे नीचे लिखे उद्‌गार प्रकट किये है।

— महादेव देसाई]

पिछले कुछ सालोंमें मैं जमनालालजीको बहुत ही कम देख पाया था। हालाकि एक वक्त ऐसा था, जब हम एक-दूसरेके काफी नजदीक थे। ऐसा कोई वक्त मुझे याद नही पडता, जब मैंने प्रेम और कृतज्ञताके साथ उनका स्मरण न किया हो।

* * * *

दस साल पहले जब मैं धूलिया जेलमे जमनालालजीसे मिलने गया, और उन्हे 'सी' क्लासमे रहते देखा, तो मुझे इतना आघात पहुचा कि मैंने उसी समय प्रतिज्ञा की कि जबतक हमारे देशमे ये बातें होती रहती है, मैं नगे पैर ही घूमूगा। * * * मैं आज भी नगे पैर ही घूमता हूँ और यह एक ऐसी घटना है, जो प्राय मुझे अपने मित्रका स्मरण करा दिया करती है।

* * * *

आजसे दस बरस पहले वर्धामे जमनालालजीके उस छोटेसे सीधे-सादे घरमें उनके मेहमान बन कर रहना एक अद्‌भुत चीज थी। अपने जीवनमे जमनालालजीने कभी सादगीका त्याग नही किया। बादमें जब वर्धाने राजधानीका रूप ले लिया, तो सहज ही वहा बहुतसी नई इमारते और सस्थायें खडी हो गईं, और जो थी वे भर गईं। मगर १९३१-३२ में तो उनके घरमें साधुकी कुटियाकी तरह शान्ति और सादगीका वातावरण मानो मुहसे बोलता था।

* * * *

जमनालालजीमें कई ऐसे गुण थे, जो पश्चिमवालोंको खूब पसन्द आते। उनकी सादगी और स्वाभिमान, उनकी सच्चाई और स्पष्टवादिता, और जीवनके प्रति क्वेकरोंसी उनकी वृत्ति पश्चिमवालों पर अपना प्रभाव डाले बिना न रहती।

* * * *

उनके जैसे धनी आदमीमें सत्यका इतना आग्रह क्वचित ही पाया जाता है। उनके मुहसे निकलनेवाले प्रत्येक शब्दको आप जब चाहे कसौटी पर पूरा उतार सकते थे, आपको विश्वास रहता था कि उनकी भावुकतामें कोई परिवर्तन न होगा, और उनके आदर्शमें कोई कमी न आयेगी। मै उनको दिलसे प्यार करता था, और आज जब वे चले गये है, मै अपने जीवनमें एक बडे अभावका अनुभव कर रहा हू, हालाकि पिछले कुछ सालोमे मैने शायद ही उन्हे देखा हो। मै यह भी अनुभव करता हू कि आज वर्धामे रहते हुए आप सब लोगोको और देशकी जनताको उनके समान शुद्ध हृदय, प्रेमी, उदार और व्यापक सहानुभूतिवाले व्यक्तिका अभाव कितना खटक रहा होगा।
हरिजन सेवक, २९–३–४२]

पशुपालन

"वर्धामें जो केन्द्रीय गोसेवा-सघ चलता है, वह स्वर्गीय श्री जमनालालजीकी अन्तिम कृति है। उनकी लोकोपयोगी प्रवृत्तियाँ अनेक थीं। वर्षोंसे धन कमानेका मोह उन्होंने छोड रखा था। जो कुछ धन कमाते थे, सो लोकसेवामें लगानेके लिए। ११ फरवरीको उनकी पाचवी पुण्यतिथि थी। उनके अनुयायियो और साथियोंने उस पुण्यतिथिका समय जमनालालजीकी अन्तिम प्रवृत्तिका विचार करनेमे विताया और इस तरह तिथि मनाई। सब जानते हैं कि अपने देहान्तके एक घण्टे पूर्व भी वे कुछ-न-कुछ गोसेवाका कार्य कर रहे थे। गोपुरी नामका क्षेत्र भी उन्होंने बनाया था। उनकी समाधि गोपुरीमें ही है।
हरिजन सेवक, १७–२–४६] — मो क गाधी

महादेव देसाई

महादेवभाईके मरनेके बाद मैंने बापूसे एक रोज पूछा "आज तक आपने जितनी मौते देखी, उन सबमे महादेवभाईकी मौतसे क्या आपको सबसे ज्यादा सदमा नही पहुँचा?" उन्होंने जवाब दिया "जमनालालजी, मगनलाल और महादेव — इनमेंसे हरएक अपने-अपने क्षेत्रमें अनूठे थे। मेरा खयाल है कि उनकी जगह दूसरे नही ले सकते।"
हरिजन सेवक, १८–८–४६] — सुशीला नय्यर

"क्रोध नहीं, मोह नहीं"

* * * स्व भाई जमनालालजीकी इच्छासे हिन्दुस्तानी प्रचार सभा कायम हुई। इससे उर्दू रिसाला निकालना लाजमी हो गया।

* * * *

मै साहित्यके प्रचारकी दृष्टिसे हिंदी साहित्य सम्मेलनका सदस्य नही बना था। स्व भाई श्री जमनालालजी और दूसरे अनेक मित्रोने मुझे बताया था कि नाम चाहे कुछ भी हो, उन लोगोका मन साहित्यमे नही था, उनका दिल राष्ट्रभाषामे ही था और इसीलिए मैने दक्षिणमे राष्ट्रभाषाका जोरसे प्रचार किया।

हरिजन सेवक, २५–१–४८] –मो क गाधी

उनकी अन्तिम चिन्ता

* * * *

सारे दिन लोग लगातार मुलाकात करनेके लिए आते रहे। उनमे दिल्लीके मौलाना लोग भी थे। उन्होने गाधीजीके वर्धा जानेके बारेमे अपनी सम्मति दे दी। गाधीजीने उनसे कहा कि मै सिर्फ थोडे दिनोके लिए ही यहासे गैरहाजिर रहूगा, और अगर भगवानकी कुछ और ही मर्जी न हुई और कोई आकस्मिक घटना न घटी, तो ११ तारीखको स्वर्गीय सेठ जमनालालजीकी पुण्यतिथि मनानेके वाद वहुत करके १४ वी तारीखको मै लौट आऊगा।[1]

* * * *

हरिजन सेवक, १५–२–४८] –प्यारेलाल

"सवाल जवाब"

सवाल–क्या आप उन सस्थाओको यादी देनेकी कृपा करेगे जिन्हे गाधीजीने स्थापित किया है या जिन्हे उनके उपदेशोसे प्रेरणा मिली है?

जवाब–वर्धा और उसके आसपासके गाँवोकी नीचे लिखी सस्थाये श्री जमनालालजीके उत्साह, श्री विनोवाजीके मार्गदर्शन और हमेशा मिलते रहनेवाले गाधीजीके आदेशोके कारण ही कायम हुईं, वन्द की गईं या उन्हे नया रूप दिया गया।

क कन्या आश्रम, वर्धा। १९३५ मे वन्द हो गया।

ख महिला आश्रम, वर्धा, १९३५।

१ यह अश प्यारेलालजीके लेखमेंसे लिया गया है जिसमें उन्होंने गाधीजीके देहान्तके वाद उनके अतिम दिनोंका वर्णन किया है। ३० जनवरी १९४८ को गांधीजीका देहान्त हो गया था और वे वर्धा नही जा सके थे।

ग गोसेवा मण्डल, नालवाडी, वर्धा ।
घ गोसेवा चर्मालय, नालवाडी, वर्धा ।
ङ महारोगी (कोढ) आश्रम, दत्तपुर, वर्धा ।
च गोसेवा सघ, गोपुरी, वर्धा ।
छ ग्राम-सेवा मण्डल, वर्धा ।
ज स्वराज्य भण्डार, वर्धा ।
झ परमधाम, पवनार, वर्धा । पिछले कुछ सालोसे श्री विनोबा यही रहते थे ।

हरिजन सेवक, १२-१२-४८] — किशोरलाल मशरूवाला

'दादीजी' बजाज

'दादीजी'—स्व जमनालालजी बजाजकी माता श्री बिरदीबाईका देहान्त ३१ मई (वैशाख-ज्येष्ठ कृ ११) को शामके करीब साढे चार बजे लगभग ९० वर्षकी उमरमे हुआ। गुजरातीमे साखी है कि

जननी जण तो भक्त जण, का दाता का शूर।
नही तो रहेजे वाझणी, मा गुमावीश नूर।।

श्री जमनालालजी जैसे भक्त, दाता और शूरकी जन्मदात्री वर्धावासियोकी 'दादीजी' ने इस आदेशको सफल करके अपना जीवन आदरणीय किया था। जब तक आख, कान और हाथ-पैरोने काम दिया, वे अपने निजी कामोमे सदा स्वावलम्बी रही। जवानीमें उन्होने बहुत सख्त परिश्रम किया था और अभी-अभी तक घण्टो बराबर सूत कातती रही। कितने ही प्रियजनोको उन्होने अपने सूतकी खादी दी होगी। शरीरके अवयवो और ज्ञानेद्रियोकी शक्ति कम हो जानेसे चरखा चलाना मुश्किल हो गया, तब समय कैसे काटे इसकी उन्हे बेचैनी मालूम होने लगी। फिर भी विनोबाजीकी सलाहसे जबतक बन पडा वे कातती रही। अपने ही सूतके वस्त्रोमे उन्होने आखिर अग्निस्नान किया।

उनका शरीर पूरे पके पानकी तरह हो गया था। अपना काम पूरा करके उसका गिर जाना उचित ही हुआ है। परन्तु जिस तरह 'वृक्ष सूना इक पर्ण बिना', वैसे ही बजाजवाडी और गोपुरी जो उनके दो निवासस्थान थे, उस पीले पानसे भी शोभावान मालूम होते थे। वे अब परिचित मित्रोको फीके मालूम होगे। उनके जीवनकी सौम्य सुगधकी स्मृति स्वजनोको प्रेरणा देती रहेगी।

हरिजन सेवक, ९-६-५१] — कि घ मशरूवाला

काकीनाडा,
शनिश्चर

भाई जमनालालजी,

अग्रवाल भाईयोको मे इतना हि कहना चाहता हु की हिंदुस्तानकी जो कोइ कोम शुद्ध बलीदान दे सकती है हिंदुस्तानकी और स्वधर्मकी रक्षा कर सकती है। मेरी उमीद है इस समय अग्रवाल जाति स्वराज्यका महान् जगमे अपना पूरा हिस्सा दे देगी। मै जानता हु की मारवाडी कोममे धन है, धर्म-प्रेम है, दान देनेका भाव है। आधुनिक प्रवृत्ति आत्मशुद्धिकी और धर्मरक्षाकी है। उसमे अग्रवाल भाईको बलीदान देनेकी शक्ति ईश्वर दे दे ऐसी मै प्रार्थना करता हु।[1]

आपका

१ यह पत्र, किताब करीब करीब छप चुकने पर मिलनेके कारण, पहले भागमें नहीं दिया जा सका, इसलिए यहाँ दिया जाता है।

परिशिष्ट ४

गांधीजीके अपने हाथों लिखे पत्र

जो पत्र गाधीजीने अपने हाथो लिखे है उनकी भाषा बिना कुछ फरक किए ज्यो की त्यो (गलतियो सहित) रखी गई है। ऐसे पत्रोकी क्रमसख्या निम्नाकित है –

भाग १ १ से ९, १७, १८, २२ मे २६, २८, २९, ३२ से ३४, ४४ से ४६, ४८, ५५, ६०, ६२, ६६ से ७२, ७४ से ८०, ८९, ९०, ९५, ९६, १००, १०५, १०६, १०८, १११ से ११३, ११५, १२७, १२९ से १३२, १३४ से १३७, १४०, १४४, १४६, १४७, १४९, १५२ मे १५५, १५८ मे १६०, १६२ से १६६, १७०, १७२, १७४ से १७८, १८० मे १८७, १८९ से १९३, १९५, १९७, १९८, २०० मे २०२, २०४, २०५, २०८ से २१०, २१२ से २१७, २२० से २२२, २२४ से २२६, २२९, २३६, २४५ से २४७, २५० से २५२, २५६, २६२ से २६५, २६९, २७८, २८१, २८२, २८५, २८६, २९२, २९३, २९५, ३०५, ३१२, ३१४, ३१५, ३२०, ३२३ से ३२७, ३३१, ३३९, ३४०, ३४२ से ३४४, ३४६, ३४९, ३५१ से ३५४, ३५७, ३५९, ३६४ से ३६६, ३६८, ३७०, ३७१, ३७४ से ३७६, ३७९, ३८०।

भाग २ ३, ४, ६, ९ मे ११, १३, १६, १८, १९, २१ से २३, २६, २७, २९, ३३, ३७, ४०, ४३, ४५, ४६, ४९ से ५१, ५३, ५४, ५७ से ६३, ६५ से ७२, ७४, ७५, ७७, ७९, ८२ से ८६, ८८ से ९३, ९५ मे १०४, १०६ मे १२१, १२३ से १३०, १३४ से १३६, १३८ मे १४७, १४९ मे १५१, १५४, १५६ से १५८, १६०, १६२ से १६४, १६६, १६७।

भाग ३ १५, २२, २६, ३१, ३३, ३७, ४० से ४२, ४५।

परिशिष्ट ३ अतिम पत्र (पृष्ठ ५७०)।

शुद्धिपत्र

पत्र सख्या	पृष्ठ	पॅरा	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
१४	१४	२	२	ह ।	है ।
१७	२१	३	६	रुड	रुड़ु
३६	३९			म भाईश्री	मु भाईश्री
५६	५४	३	१	भाईलालजीनु	भाई लालजीनु
७१	६२			फा व १	का व १
१०९	८४	४	८	वै रहा	और वहा
११४	९१	५	२	ी होसकते	ही हो सकते
११६	९४			२७–९–३२	२१–९–३२
१३६	१०९	१	२	थय	थयु
१४०	११२			च जमनालाल	चि जमनालाल
१४०	११२	१	१	वन तेटलो	वने तेटलो
१४४	११४	१	२	तेनु	तेनु
१५४	१२१	ता क	१	पूव	पूर्वे
१५६	१२२	१	२	nterrupt	interrupt
१८०	१३५	४	२	नाखवापण	नाखवापणु
१८४	१३९	१	२	सदर	सुदर
१९१	१४३	२	५	सतोषजो	सतोषजो
२०७	१५२	२	२	म	मे
२१६	१५७	१	१	थयो छ	थयो छे
२४८	१७९	?	१	चीतलीआ	चीतलीआए
२६२	१८७	३	२	जाओ ो	जाओ तो
२७८	१९५	१	२	जो जो।	जोजो।
२८५	१९९	?	१	आज	आजे
२९०	२०२	२	२	ोशिश	कोशिश
२९१	२०३	१	१६	मरा पतन	मेरा पतन
३०६	२१३	फुटनोट २	४	कद	कैद
३२७	२२६	१	१	जपुर	जेपुर
३३४	२३०	१	४	लये	लिये
३४०	२३५	१	३	दा पटलना	दा पटेलना

अनुक्रमणिका